Printed and published by K Mittra, at The Indian Press, Ltd,
Allahabad

विषय-सूची ।

श्रीगणेशाय नमः ।

भू-प्रदक्षिण ।

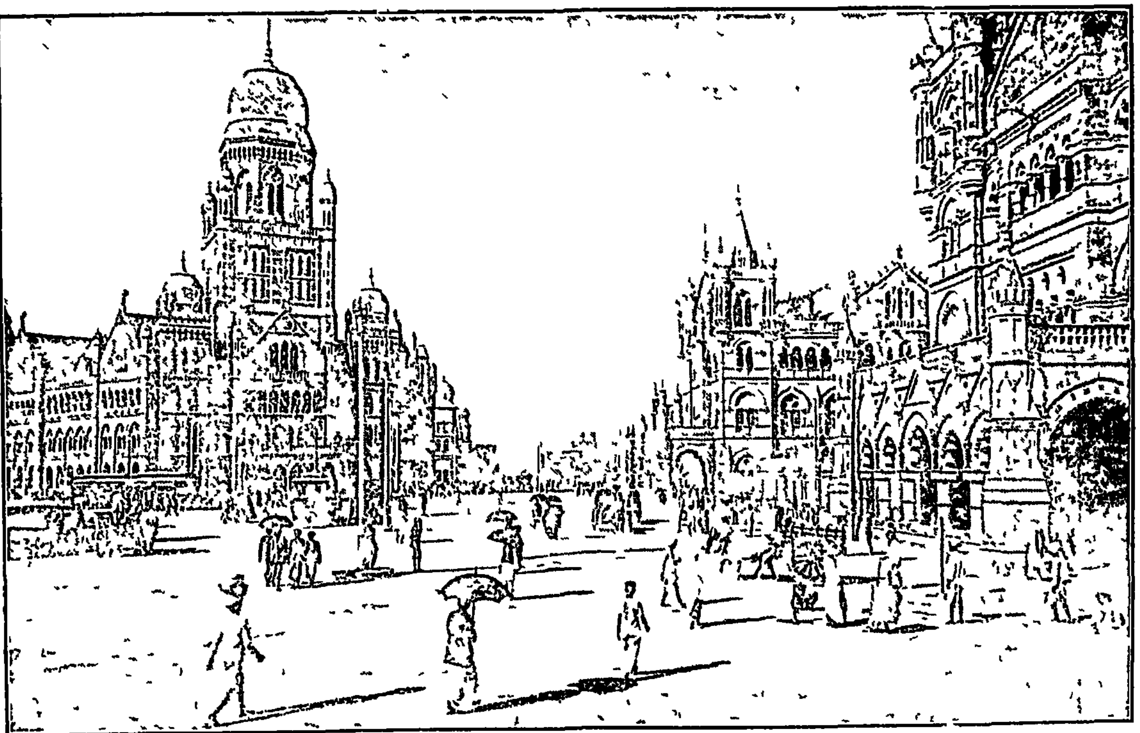
यात्रा ।



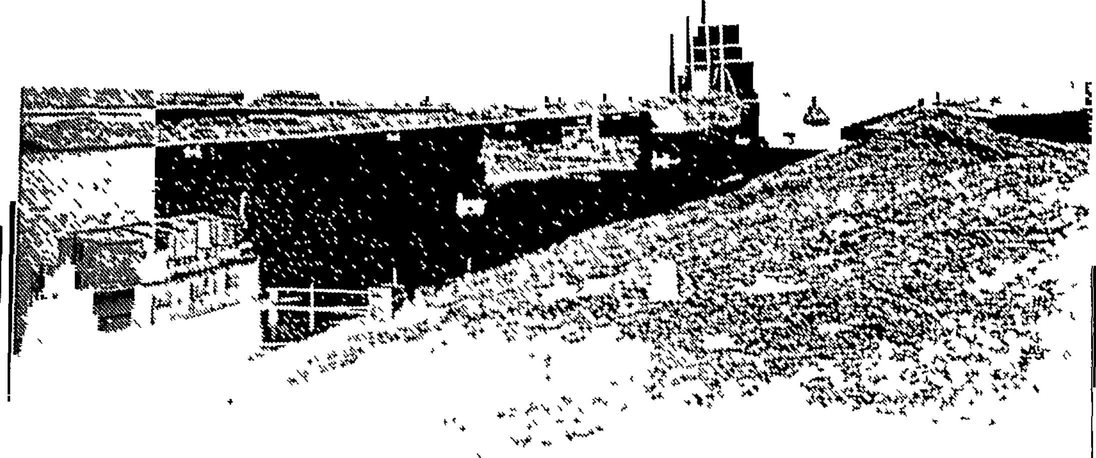
मैंने बहुविस्तृत एशिया-खण्ड के अनेक देशों में भ्रमण किया है। एशियाखण्ड के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक—ओर से छोर तक—पर्यटन करके भी मैंने भिन्न भिन्न देशो के समाजों मे एक भाव के सिवा दूसरा भाव नहीं देखा। आसाम की अन्तिम सीमा 'डिहिंग' नदी के दूसरे किनारे से कच्छ द्वीप तक और हिमालय के तीर से सेतुबन्ध रामेश्वर तक, जिन जिन स्थानों को मैंने देखा, सब जगह, वही एक तरह के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं; वही एक तरह के शिया, सुन्नी, मुल्ला और हेदाती हैं; वही एक तरह के मठ, मन्दिर, शिव और गणेश हैं; वही एक तरह के दरगाह, मसजिद, पीर और पैग़म्बर हैं। अतएव, यद्यपि भारतवर्ष में पर्यटन करने से यह लाभ है कि पूर्वी ढंग से लोक-चरित्र का ज्ञान होता है और अनेक अवस्थाओं में पड़ने से जानकारी बढ़ती है; तथापि घूमने वाले एतद्देशीय मनुष्य की आंखों के आगे ऐसी कोई नई सामग्री नहीं

उपस्थित होती जिसे देखने का उसे अभ्यास ही न हो अथवा जिसे देखने के लिए वह बिल्कुल तैयार ही न हो। इसी कारण अनुसन्धान की इच्छा रखने वाले हिन्दुस्तानी के मन में, यूरोपखण्ड की सैर करने की—पश्चिमी जनसमाज की रीति-नीति और रंग-ढंग देख कर नेत्रों को और मन को तृप्त करने की—वासना आप ही जग उठती है। बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी कि एक दफ़ा पश्चिमी भूमिखण्ड में कुछ दिन रह आऊँ। मगर अनेक कारणों से कुछ दिनों तक मेरी यह इच्छा पूरी नहीं होसकी। अन्त को विधाता की विशेष कृपा से सन् १८८६ ईसवी के आरम्भ में मैंने अपने शरीर को भी लंदन में पहुँचा दिया; क्योंकि मन तो बहुत दिन पहले ही से यूरोपखण्ड के चक्कर लगाया करता था। राह का हाल सुनने के लिए बहुत लोग उत्सुक होंगे। इस लिए मैं वहीं से आरम्भ करता हूँ।

सन्ध्या के उपरान्त हवड़ा स्टेशन में मैं रेल पर चढ़ा। राह में, रेल पर ही, ६१ घंटे का सफ़र करके चौथे दिन सवेरे मैं बम्बई पहुँचा। गाड़ी में केवल दो अँगरेज़ों के साथ मेरी जान पहचान और बातचीत हुई। वे दोनों सज्जन थे मेथोडिस्ट चर्च (Methodist Church) के अध्यक्ष विख्यात पादरी थोबरन (Revd. Dr. Thoburn) और बाम्बे पाइलट सर्विस (Bombay Pilot Service) के मिस्टर यूरिज (Mr. Uridge) पादरी थोबरन के साथ ब्राह्मसमाज के सम्बन्ध में मेरी बहुत सी बातें हुईं। प्रताप बाबू के "प्राच्य ख्रीष्ट" (Oriental Christ) नामक ग्रन्थ का उल्लेख करके उन्होंने कहा—"Mr. Mozoomdar has taken a wrong view of Christ" अर्थात् मिस्टर प्रतापचन्द्र मजूमदार ने ख्रीष्ट के सम्बन्ध में भ्रान्त मत ग्रहण कर लिया है। फिर उन्होंने कहा—"Christ lives among us as a reality, but the other saints and great men do



वम्बई—पृ० २



स्वेज़ नहर—पृ० ११

not"—अर्थात् ख्रीष्ट यथार्थ सत्ता के रूप से हम लोगों में अवस्थित हैं; अन्यान्य साधु-महात्मागण नहीं। उनके इस कथन के उत्तर में मैंने कहा—"मैं तो साहब यह समझता हूँ कि जिस जगह पिता है उस जगह पुत्र की बड़ी ज़रूरत है। नहीं तो 'पिता' कह कर पिता को पुकारेगा कौन ? जब पिता नित्य है तब पुत्र का नित्य होना अनिवार्य है"। मेरे यों कहने पर साहब ने हँस कर कहा—"ठीक है, अच्छा यह भाव तुमने कहाँ से पाया ?"। मैंने कहा—"मुझे याद नहीं पड़ता कि मैंने किस व्यक्ति या ग्रन्थ से इस भाव को पाया है। जान पड़ता है, यह मेरा अपना ही भाव है"। थोबरन साहब एक महा पण्डित थे। किन्तु साम्प्रदायिकता का पक्षपात वह भी नहीं छोड़ सके थे। उनकी बातचीत से स्पष्ट जान पड़ा कि वह नसरीन ईसा को मनुष्यदेहधारी ईश्वर मानते थे। उनका यह दृढ़ विश्वास था। पालास्टिन प्रदेश के बढ़ई यूसुफ़ के पुत्र ईसा के शरीर मे केवल तीन साल के लिए किसी बहुत ऊँचे दरजे की आत्मा का आविर्भाव हुआ था—इस बात को स्वीकार करने या समझने के लिए वह तैयार नहीं थे। उनके मन में यह विश्वास भी जमा हुआ था कि एक ईसा ही केवल ईश्वर के औरस पुत्र (The only begotten son of God) थे; और कोई वैसा नहीं हुआ और न अब होही सकता है। यही कारण था कि वह ऊपर लिखे हुए मेरे वाक्य को अपने मत के अनुकूल समझ कर खूब .खुश हुए।

बम्बई मे एक रात रह कर दूसरे दिन चार बजे इटली के स्टीमर पर चढ़ कर मैंने सिंगापुर की यात्रा की। कलकत्ते मे जब मैंने कुक कम्पनी के आफ़िस से लन्दन तक का टिकट ख़रीदा था तब यह अनुरोध कर दिया था कि एक आदमी के गुज़र लायक़ एक कैबिन (Cabin) मेरे लिए ठीक कर दिया जाय। किन्तु मेरी

प्रार्थना के अनुसार काम नहीं हो सका। क्योंकि हर एक कैबिन में दो या इससे भी अधिक आदमियों के लिए स्थान निर्दिष्ट रहता है। बन्दरगाह से नाव पर चढ़ कर जहाज़ के ऊपर जाने के समय मैं बहुत ही उत्कण्ठित हुआ कि किस तरह एक कैबिन में यूरोपियन यात्री के साथ रहूँगा! परमेश्वर की कृपा से जहाज़ पर जाकर मैंने देखा कि पहले दर्जे में केवल दस बारह यात्री हैं, और दूसरे दर्जे में केवल मैं अकेला हूँ। मैं एक पूरे कैबिन की चिन्ता में था, पर यहाँ तो सारा दूसरा दरजा ही मेरे लिए रिज़र्व (Reserved) था। उसी दिन पी. एण्ड ओ. कम्पनी का 'मेल' छूटा था। इस कारण विलायत के बहुत से यात्रियों ने उसी पर यात्रा की थी और इसी से यह जहाज़ ख़ाली था। जहाज़ के सब कर्मचारी इटलियन थे। एक अफ़सर (Officer) के सिवा कोई अँगरेज़ी नहीं जानता था। बड़ी मुश्किल में पड़ा। मेरा कहना कोई नहीं समझता था और उनकी बातचीत मेरी समझ में नहीं आती थी। उस अफ़सर के साथ थोड़ी देर तक तो बातचीत होती रही; उसके बाद वह अपने काम पर चला गया। डेक-यात्री (Deck passenger) आठ थे। आठों हिन्दुस्तानी थे। उनमें से छः तो काठियावाड़ के वैष्णव और जैन बनिये थे और एक श्रीहट्ट का बूढ़ा खलासी और एक उसके लड़के की स्त्री थी। ये ही उस समय मेरे अपने देश के साथी हुए। साढ़े चार बजे जहाज़ छूटा। हवा भी धीरे धीरे ज़ोर पकड़ने लगी। अन्त को भोजन के समय ऐसे ज़ोर का तूफ़ान आया कि मैं कुछ भी भोजन न कर सका। कैबिन के दरवाज़े पर डेक के ऊपर एक कुरसी डाल कर मैं बैठ गया। स्टुवार्ड (Steward) ने एक रोटी और कई केले ला दिये। मैंने यही भोजन किया। डेक के ऊपर लहरें आकर यात्रियों का सब सामान भिगोने लगीं। यात्रियों के कष्ट को देख कर बड़ा दुःख हुआ। किन्तु

कोई उपाय न था। हमारे सैलून (Saloon) में बहुत सी जगह रहने पर भी मैं उनको आश्रय नहीं दे सकता था। रात को आठ बजे कैबिन में जाकर मैं सो रहा।

दूसरे दिन सवेरे छः बजे उठ कर मैंने देखा, जल स्थिर था, जैसे वह—कल का—समुद्र ही न था। 'काफी' पीकर सामने के ऊपरी डेक पर जाकर बैठा। चारों ओर अपार जल देख कर चित्त पुलकित हो उठा। घड़ी भर तक मेरी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। वे आँसू दुःख के नहीं, 'भाव' के वेग के थे। जब कुछ हृदय शान्त हुआ तब मैं प्रसन्न मन से धीरे धीरे एक गान गाने लगा।

सातवें दिन सन्ध्या से कुछ पहले ही मेरा जहाज़ अदन बन्दर में पहुँचा। इस जीवन में मैंने कभी घास-फूस और पेड़ों व लताओं से हीन पहाड़ नहीं देखा था। अदन बन्दर में प्रवेश करने के समय इस तरह का ऊसर पहाड़ देख कर हृदय में एक प्रकार के भयानक—सूनसान उदास—भाव का अनुभव होने लगा। पहाड़ तो मैंने बहुत से देखे थे, फिर यह पहाड़ देखकर हृदय में हाहाकार क्यों होने लगा? कुछ देर तक तो इसका कारण मैं कुछ भी नहीं समझ सका। अन्त को, बहुत देर बाद, जान पड़ा कि ऐसा रूखा और सूखा पहाड़ यही पहले पहल देखने को मिला है; इसी से यों हो रहा है। मैंने जिस समय बम्बई छोड़ी थी उस समय वहाँ हैजा शुरू हो गया था। इसी कारण हमारा जहाज़ क्वारन्टाइन (Qurantine) के अधीन था। अर्थात् यात्रियों को अपनी इच्छा के अनुसार किसी बन्दरगाह में उतरने का अधिकार नहीं था। कोई यात्री जहाज़ से उतरते ही किसी स्थान में नहीं जा सकता था। कुछ निर्दिष्ट समय तक घाट में जहाज़ पर ठहरना पड़ता था। इसी कारण हमारे जहाज़ के बन्दर पर पहुँचते ही कोई नाव उसके पास नहीं आई। जो लोग वहाँ उतरने वाले थे उन्हें सवेरे तक

जहाज़ पर ठहरना पड़ा। वहाँ पर उतरने वाले सब हिन्दुस्तानी थे। जब वे सब चले गये तब मेरे मन में एक तरह की उदासी सी छा गई। यहाँ पर उतरने वाले हिन्दुस्तानी लाल-सागर (Red Sea) के पश्चिमी तट पर स्थित, इटली के उपनिवेश, मसावा-प्रदेश में रोज़गार के लिए जा रहे थे। यहाँ से दूसरे जहाज़ पर बैठ कर उन्हें जाना होगा। उनसे मालूम हुआ कि बहुत से गुजराती बनिये उक्त प्रदेश में दूकानें किये हुए हैं और उन्हें अच्छी आमदनी होती है। काठियावाड़ और कच्छ आदि देशों के बहुत से हिन्दुस्तानी, जहाज़ के रास्ते से, भारत-समुद्र के दूसरे किनारे पर स्थित जंजिबार टापू तक हमेशा जाया-आया करते हैं। ये लोग जिन जहाज़ों पर यात्रा करते हैं वे 'बान' कहलाते हैं। उन पर के मल्लाह और खलासी सभी हिन्दुस्तानी होते हैं। देश की प्राकृतिक अवस्था वहाँ के रहनेवालों के मन के संगठन में विशेष काम करती है—इस बात का यह बहुत अच्छा प्रमाण है। समुद्र के किनारे रहने वाले होने के कारण इन लोगों को समुद्र-यात्रा बहुत ज़रूरी जान पड़ती है, और ये लोग हम लोगों की तरह समुद्र-यात्रा में किसी प्रकार की विभीषिका या बुराई नहीं देखते। कच्छ-द्वीप के माण्डवी-बन्दर में इन जहाज़ों के बनाने और मरम्मत करने का प्रधान स्थान है। इन कई दिनों में, लैटिन-भाषा की सहायता से, मैं इटलियन लोगों की बातचीत कुछ कुछ समझने और उन लोगों से दो एक बातें बोलने भी लगा। मतलब यह कि एक दिन के लिए भी मुझे रत्ती भर कष्ट नहीं हुआ। भगवान् की कृपा से पहले ही से मैं अपना काम चला लेने लगा।

सवेरे उठ कर मैंने देखा, जहाज़ पर माल लादा जा रहा है। किनारे पर से डोंगियों पर बैठे हुए नाटे नाटे काले काले हबशी लोग जहाज़ के पास आये। वे ग़ोतेख़ोर थे। चवन्नी, दुअन्नी समुद्र में आप

फेकं दीजिए, वे चट ग़ोता लगा कर, अपने मुँह में, चवन्नी, दुअन्नी आदि निकाल लावेंगे ।

अदन से सक्कोनी-नामक एक इटलियन नौजवान जेनोवा जाने के लिए जहाज़ पर चढ़ा । वह भी सेकिंड क्लास का यात्री था । अब सेकिंड क्लास में हम दो यात्री हो गये । आठ बजे वहाँ से जहाज़ रवाना हुआ ।-साढ़े तीन बजे हमारे जहाज़ ने बाबू-दरवाज़ा (बावेल माण्डेब नहर) मे प्रवेश किया । यह लाल-सागर में प्रवेश करने का द्वार है । इस नहर के दोनों किनारों पर प्रवल प्रतापी अँगरेज़ों के दो अड्डे हैं । बाईं ओर पेरिम-टापू मे एक क़िला भी है । दोनों किनारों के अड्डों पर से झंडे के द्वारा प्रश्न किये गये । हमारे जहाज़ के कप्तान ने चार पांच झण्डों के द्वारा उन प्रश्नों का पूरा पूरा उत्तर—अपने जहाज़ का पूरा परिचय—दिया । देखो, राह कैसी सुरक्षित है । किसी ओर धोखा देकर निकल जाने की गुंजाइश नहीं है । जितने जहाज़ लाल-सागर मे प्रवेश करेंगे या उधर से इधर आवेंगे उनको अपना परिचय देना होगा । परिचय पाने पर अदन के रज़ीडंट के पास तार से उसकी ख़बर दी जायगी । यूरोप से भारत मे आने के सब फाटकों की कुंजियाँ अँगरेज़ों के हाथ मे हैं । छिप कर कोई भी नहीं निकल जा सकता । पेरिम एक छोटा सा उजाड़ टापू है । सुना कि वहाँ बहुत से बम्बई के बैपारी रोज़गार करते हैं । वहाँ पाँच छः सौ लोग रहते हैं । नहर के दोनों किनारो का दृश्य अत्यन्त भयानक है; उसमें भयानक उदास भाव देख पड़ता है ।

दूसरे दिन सबेरे सात बजे उठ कर लाल-सागर मे स्थित "सात-भाई का पहाड़" देखा। यूरोपियन लोग उसे "द्वादश-प्रेरित"(Twelve Apostles) कहते हैं । लेकिन अरब लोग जिस नाम से उसे पुकारते हैं उस का अर्थ है सात भाई । हमारी राह से कुछ दूर पर, दक्षिण ओर,

छोटे-बड़े सब मिला कर तेरह पहाड़ समुद्र के भीतर से ऊपर निकले हुए थे। लाल-सागर में इस तरह के बहुत से पहाड़ देखे जाते हैं। बहुत से चोर-पहाड़ (पानी के भीतर छिपे हुए पहाड़) भी हैं। इस समय तो जहाज़ के जाने लायक़ रस्ता बहुत कुछ जान लिया गया है; लेकिन पहले बहुत से जहाज़ ऐसे चोर-पहाड़ों से फट कर डूब चुके हैं।

किताबों में पढ़ा था कि लाल रंग के कीटाणुओं की अधिकता से अनेक समय लाल-सागर का जल ख़ूब लाल हो जाता है। मगर मुझे कहीं पर यह दृश्य देखना नसीब नहीं हुआ। केवल किसी किसी जगह साधारण गुलाबी रंग की झलक दिखाई दी।

नव बजे के समय हमारा जहाज़ जल के भीतर स्थित एक पहाड़ के बहुत ही पास होकर निकला। उस पहाड़ पर हरियाली के नाम एक तिनका तक न था। तथापि एक विशेष प्रकार की निर्जनता होने के कारण वह पहाड़ एक तरह से मन को रमानेवाला ही था। कौए से कुछ बड़े एक तरह के समुद्र पक्षी (Sea-gull) झुंड के झुंड आकर जहाज़ पर मड़राने लगे। शायद वे पहाड़ पर रहते और समुद्र की मछलियों का शिकार करके उन्हीं को खाते हैं।

दिन को दोपहर के समय डेक के ऊपर बड़ी गरमी जान पड़ने लगी। इस ओर अरब देश और उस ओर आफ़्रिका देश था। दोनों ओर की तप रही वालू के ढेरों पर से आनेवाली हवा गरम के सिवा और क्या होगी? इसी समय तीन इटलियनों के साथ धर्म के सम्बन्ध में बातचीत होने लगी। वे लोग रोमन कैथलिक (Roman Catholic) धर्म और 'पोप' पर बहुत नाराज़ थे। नफ़रत इतनी बढ़ी हुई थी कि वे लोग साक्रामेन्टो (Sacramento = ईश्वर), जेसूक्रस्टो (Jesu Christo = ईसा) और स्पिरिटोसान्टो (Spirito Santo = पवित्रात्मा) इत्यादि नामों

तक को सुनना नहीं चाहते थे। तरह तरह से मेरे समझाने की चेष्टा करने पर किसी तरह उन्होंने धर्म और ईश्वर को तो स्वीकार कर लिया; लेकिन "पेपा" (Papa = पोप) का विरोध वे करते ही रहे। "पोप" की जलन और "फ़ादर" "मादर" आदि के अत्याचार से रोमन-कैथलिक लोग बेचैन हो चुके हैं। ऊपर गरमी असह्य हो उठी। मुझे लाचार कैबिन में जाना पड़ा।

इसी दिन रात को आठ बजे हमारे जहाज़ से लगभग चार मील के फ़ासले पर एक बहुत भारी बिजली की रोशनी दिखाई पड़ी। सन् १८८५—८६ ईसवी में इसी जगह एक चोर-पहाड़ से टकरा कर "पी.ऐन्ड ओ." कम्पनी के तीन डाक ले जानेवाले जहाज़ नष्ट हो गये थे। आगे जिस मे किसी को ऐसी विपत्ति का सामना न करना पड़े, इस लिए उक्त कम्पनी ने पास के एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर एक घर बनवा दिया है। उस जगह दस बारह मर्द और औरतें पारी पारी से तीन तीन महीने रहते हैं और रोज़ बराबर रोशनी किया करते हैं। उस रोशनीघर का नाम है पी.ऐन्ड ओ.कम्पनी का फ़नेल (Funnel)।

दूसरे दिन ग्यारह बजे के समय आफ़्रिका का अट्लास (Atlas) पहाड़ दिखाई पड़ा। उसके बाद दिन के छः बजे स्वेज़-नहर मिली। किनारे पर से थोड़ी ही दूर पर जहाज़ का लंगर डाला गया; इससे बन्दरगाह का सारा दृश्य बहुत अच्छी तरह देखने को मिला। फ़ान्स की स्वेज़-नहर-कम्पनी ने उस स्थान को बहुत ही मनोहर बना रक्खा है। स्ट्राण्ड (Strand) डेक (Deck) और गिर्जा आदि का दृश्य बहुत ही सुन्दर था; एक सुन्दर चित्र सा जान पड़ता था। असल स्वेज़ किनारे पर से कुछ ही माइल के फ़ासले पर है। जहाज़ पर से वहाँ का दृश्य स्पष्ट दिखाई पड़ता है; क्योंकि बीच में केवल ऊसर मैदान है। मैंने

इसी जगह पर पहले पहल यह तमाशा देखा कि मनुष्य गधे पर भी घोड़े की तरह सवारी लेता है। घोर काले रंग के गधे भी मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। क्वारन्टाइन के लिए सुलतान के दो कर्म्मचारी हमारे जहाज़ पर चढ़ कर सईद वन्दर (Port Said) तक गये।

बारह बजे के समय हमारे जहाज़ ने स्वेज़-नहर में प्रवेश किया। दो बजे के समय दूसरी ओर से आ रहे दो जहाज़ों को राह देने के लिए हमारे जहाज़ को किनारे हट कर खड़ा होना पड़ा। नहर की चौड़ाई कम है। केवल एक ही जहाज़ आ-जा सकता है। एक सुन्दर स्टेशन के सामने हमारे जहाज़ को बहुत देर तक राह साफ़ होने की प्रतीक्षा करनी पड़ी। धन्य है फ़रासी इञ्जीनियर लेसेप्स (Ferdinand Lesseps), जिसने यह नहर बनाई ! नहीं तो किसकी सामर्थ्य थी जो इस अपार मरुभूमि के भीतर नहर निकालता। जब तक चन्द्रमा और सूर्य रहेंगे तब तक उसकी यह कीर्त्ति बनी रहेगी। यह नहर फ़ान्स वालों की विद्या और बुद्धि-बल की साक्षी है। नहर की व्यवस्था बहुत ही अच्छी है। दोनों किनारों पर बड़ी बड़ी तोपें लगी हुई हैं। फ़ासला जानने के लिए दो दो रशी (एक प्रकार की फ़ान्स की माप) पर एक एक चिह्न बना हुआ है। हर एक घंटे के बाद एक एक स्टेशन मिलता है। जल को हमेशा साफ़ और ठीक रखने के लिए बहुत से कीचड़ निकालने वाले जहाज़ हैं, और, और भी तरह तरह के बन्दोबस्त हैं। बीच बीच में इञ्जीनियरों के बँगले बने हुए हैं। उनमें वे सपरिवार रहते हैं। जगह जगह पर मिसर के, अरब के और आफ़्रिका के हबशी मज़दूर मिट्टी काट रहे हैं, ऊँटों पर मिट्टी लाद रहे हैं। कम्पनी के छोटे, बड़े और मँझोले जहाज़ इधर उधर जाँच करते हुए घूम रहे हैं। कहाँ तक कहें, प्रबन्ध में किसी तरह की कमी नहीं है।

तीन बजे के समय जहाज़ ऐसी जगह पहुँचा जहाँ पर नहर एक भारी झील से मिल गई थी। इधर कई दिनों तक सूर्यदेव समुद्र ही मे अस्त हुआ करते थे, आज उनको मैं असीम 'सहारा'—मरुभूमि मे छोड़ गया।

दूसरे दिन तीन बजे के समय झील के किनारे इस्मालिया नगर के पास पहुँचा। एक तो मरुभूमि के भीतर भारी झील, और फिर उसके किनारे एक छोटा सा सुन्दर नगर बसा हुआ—यह कुछ कम मज़े की बात न थी। पाँच बजे के समय, दूसरी ओर से आरहा और बाताविया की ओर जा रहा एक ओलन्दाजी जहाज़ मिला। उस पर सब फ़ौजी सिपाहीसवार थे। आज ही शाम को हमारा जहाज़ सईदबन्दर में पहुँच जाता, मगर कारन्टाइन के कारण उसे बन्दरगाह से दो मील के फ़ासले पर ठहरने के लिए लाचार होना पड़ा।

सवेरे हमारा जहाज़ सईद-बन्दर के नीचे जा लगा। मैंने ऊपर डेक पर चढ़ कर देखा, समने भूमध्य-सागर था, बाईं ओर सुन्दर बन्दरगाह था। देखते ही आनन्द से हृदय नाच उठा। मैंने ऊँचे स्वर से, आनन्द के आवेश मे, कहा—"भगवन्, यह कैसा सुन्दर और अद्भुत दृश्य दिखलाया! इस कंगाल पर इतनी कृपा! तुम्हारी इस छोटी सी पृथ्वी पर जब ऐसे बड़े बड़े कारख़ाने भरे पड़े हुए हैं तब सारे विशाल ब्रह्माण्ड मे न जानें कैसी कैसी अपूर्व लीलायें भरी पड़ी होंगी!"। मेरा कलेजा भर आया। मुझसे न रहा गया। कैबिन मे उतर कर मैं जी भर कर रोया। ठंडक सी पड़ गई।

भोजन के बाद फिर डेक के ऊपर चढ़ा। मेरा जहाज़ यहाँ कोयला लेने के लिए ७। ८ घंटे ठहरा। बन्दरगाह में कितने ही देशों के तरह तरह के जहाज़ थे। फ़ान्स के बोट, ओलन्दाजी बोट, टर्की के मनावार बोट—तरह तरह के बोट खड़े थे। उन पर अनेक देशों के

लोग थे। उनके पहनावे और रूप-रंग जुदे जुदे थे। स्ट्राण्ड (Strand) की विचित्र इमारतें सिर उठाये गर्व के साथ खड़ी थीं। इन सब चीज़ों की विचित्र शोभा से वह स्थान स्वर्ग के समान जान पड़ता था। यूरोप, तुम धन्य हो! तुमने इस मुसलमान-साम्राज्य की कैसी उन्नति कर डाली है! सुलतान-रूम सौ बरसों में भी जितनी उन्नति न कर पाते उतनी उन्नतिं अँगरेज़ सौदागरों ने अत्यन्त सहज में इतनी जल्दी कर दी है।

सुलतान की ओर से कारन्टाइन डाक्टर जब हमारे जहाज़ की जाँच कर गया तब स्वेज़ से जो दो कर्मचारी हमारे जहाज़ पर आये थे वे उतर गये।

दो बजे वहाँ से जहाज़ चला। कैबिन में बैठे बैठे, आँखों में आँसू भरे हुए मैं एशिया से विदा हुआ। जैसा यूरोपखण्ड है वैसा ही उसका सागर है। भूमध्यसागर में जब से हमारे जहाज़ ने प्रवेश किया तभी से आँधी-पानी का आरम्भ हुआ।

एक बजे रात से भयानक तूफ़ान शुरू हो गया। सवेरे जहाज़ ने लौट कर काण्डिया-द्वीप (Candia or Crete) के सामने आकर आश्रय-ग्रहण किया। ग्यारह बजे के समय और भी चार जहाज़ आ कर पास ही पास खड़े हुए। ट्रियेस्ट (Trieste) से आये हुए एक आस्ट्रियन जहाज़ का एञ्जिन बिगड़ गया था। उसके कप्तान ने झंडा दिखा कर अपनी अवस्था की सूचना दी और हमारे जहाज़ को आगे बढ़ने से रोका। धीरे धीरे तूफ़ान बढ़ने लगा। मैंने मन में कहा—अब यह क्या आफ़त आई! मगर मेरी चिन्ता व्यर्थ थी; भगवान् की इच्छा को कौन टाल सकता है। केशवचन्द्र सेन की "प्रार्थना" और "एमरसन" (Emerson) पढ़ कर वह दिन मैंने बिताया। बीच बीच में जहाज़ थरथरा उठता था; लहरें लोहे के मुद्गर की तरह आ आकर

धक्के मारती थीं। लगभग ४५ घंटे के बरावर तूफ़ान रहा। शाम के वक्त तूफ़ान कुछ रुका। जहाज़ के लंगर उठा लिये गये। क्रमशः आकाश और समुद्र दोनों ऐसे शान्त हो गये कि मानों तूफ़ान था ही नहीं। सागर एक तालाव के समान स्थिर था। मुझे ऐसा तूफ़ान और उसके वाद ऐसी शान्ति देखने का यह पहला ही मौक़ा पड़ा।

दूसरे दिन सवेरे, सूर्योदय के पहले, उठ कर पूर्व की ओर सामने के डेक के ऊपर वैठ कर मैं एक गीत गाने लगा।

उसके दूसरे दिन सवेरे उठ कर मैंने देखा, दक्षिण की ओर इटली (कालाब्रिया Calabria प्रदेश) है, वाईं ओर सिसिली-द्वीप है। धीरे धीरे हमारे जहाज़ ने मेसिना (Messina) प्रणाली मे प्रवेश किया। यहाँ से इटली ठीक वूट की तली की तरह दिखाई पड़ती है। प्रणाली के जिस किनारे इटली है वहाँ सिला (Scylla) का पत्थर का स्तूप है। और जिस किनारे सिसिली है वहाँ सिसिली के किनारे पर कारिव्डिस (Charybdis) का भयानक भारी 'चक्कर' है। इधर से जाइए तो जल का ऐसा तोड़ है कि पहाड़ से टकरा कर जहाज़ चूर चूर हो जायगा और दूसरी ओर जाओ तो उस पानी के 'चक्कर' मे डूव मरो। इसी अर्थ मे उभय-सङ्कट के अवसर पर, अँगरेज़ी भाषा में कहा जाता है कि "सिला और कारिव्डिस के वीच में" जैसे हमारे यहाँ कहते हैं "भइ गति साँप-छछूँदर केरी"। लैटिन भाषा के प्रसिद्ध दोनों कवि—होमर (Homer) और वर्जिल (Virgil) अपने अपने काव्य के नायकों को इसी उभय-सङ्कट के वीच से ले गये हैं। पन्द्रहवीं शताव्दी में एक प्रसिद्ध ग़ोतेख़ोर ने दो वार इस जगह पर ग़ोते लगाये और ऊपर आकर वहाँ के समुद्र के भीतरी भाग के सम्वन्ध मे तरह तरह की अद्भुत वातें सुनाईं। तीसरी वार राजा ने उसे लालच दिया। राजा ने एक सोने का पात्र इसी स्थान पर छोड़ा।

उस गोतेखोर ने उस पात्र के लालच मे तीसरी वार गोता लगाया और उसी में उसकी जान गई। मेसिना के नीचे नहर की चौड़ाई (पाट) चार मील की है। प्रवाह में वड़ा प्रवल वेग है।

सात वजे हमारा जहाज़ मेसिना-बन्दर में पहुँचा। वहाँ के डाक्टर ने जहाज़ पर आकर यात्रियों की गिनती की। मुझे देख कर उसने पूछा—आप किस देश के हैं? मैंने उत्तर दिया—हिन्दुस्तानी। मेसिना के पहाड़ के ऊपर तह के तह, सीढ़ियों की तरह, जलपाई के पेड़ हैं। पहाड़ के ऊपर ड्यूक-महल (Duke's castle) है। शहर की वस्ती कुछ पहाड़ के ऊपर है और कुछ नीचे। शहर तीन-चार हज़ार फ़ुट ऊँची अर्द्धचन्द्राकार पर्वत-श्रेणी से घिरा हुआ है। यहाँ से एटना पर्वत (Mount Etna) पच्चीस कोस है; अच्छी तरह देख पड़ता है। सईद-बन्दर से आये हुए यात्रियों से वातचीत आज हुई। ये सव औरत मर्द मिला कर १२ आदमी थे। ये लोग दक्षिण अमेरिका के बुन्जायरा (Buenos Ayres) को जारहे थे। ये सब एक ही देश के नहीं थे। इनमें छः आस्ट्रियन, तीन ग्रीक, दो जर्मन और एक रूसी था। हमारा जहाज़ जब बन्दर पर पहुँचा तब कुछ औरतें नावों पर फल-मूल लेकर वेचने के लिए आईं। जहाज़ के खलासी लोग घर की चिट्ठियाँ पाकर आनन्द से पढ़ने लगे। वहुतों के इष्ट-मित्र स्वजन आदि ने जहाज़ पर आकर उनसे मुलाक़ात की।

मैं अपने साथी सक्रोनी साहव के साथ एक वोट पर वैठ कर किनारे गया। घाट पर चढ़ते ही मछली, मांस और तरकारी का एक भारी वाज़ार और लम्बा-चौड़ा म्यूनिसिपल आफ़िस देख पड़ा। सड़कें और छोटी गलियाँ वहुत साफ़-सुथरी थीं, पत्थर जड़े हुए थे। प्रधान सड़कों को वहाँ टरेन्टी (Torrente) कहते हैं; जिसका अर्थ है 'सोता'। इस नामकरण का कारण यह है कि पहले पीछे के

पहाड़ से जल का प्रवाह जो आता था वह इन्हीं मार्गों से होकर समुद्र मे गिरता था। समय पा कर जब जल का आना बन्द होगया तब वे ही मार्ग सड़कें बन गये। सड़कों के किनारे जगह जगह पर 'मेरी' और ईसा की पत्थर की मूर्तियाँ देख पड़ीं। राह चलने वालों मे से अनेक ही इन मूर्तियों के आगे आकर सिर झुकाते हैं। वहाँ के आदमी बहुत ही सुन्दर और कोमल स्वभाव के, किन्तु साथ ही घोर पौत्तलिक—प्रतिमापूजक—और कुसंस्कारों से आच्छन्न देख पड़े। शहर में जहाँ देखो वहाँ प्रतिमा-पूजन की धूम है। शहर समुद्र के किनारे लम्बा लम्बा बसा हुआ है। दो लाख के लगभग आदमी उसमें बसते हैं।

मेसिना नगर प्रायः ढाई हज़ार बरस का पुराना है। विदेशियों की चढ़ाइयों से और भू-डोल से बारम्बार विध्वंस हो जाने के बाद सन् १७३८ ईसवी मे यह फिर से बनाया और बसाया गया। हैजा आदि बीमारियों का उपद्रव भी यहाँ कुछ कम नहीं हुआ। क्रमशः बहुत दिनों तक भिन्न भिन्न विदेशी जातियों के अधीन रहने के कारण नगर के प्रधान गिर्जे मे तरह तरह के—भिन्न भिन्न जातियों के भाव मौजूद हैं। सुना जाता है कि इस गिर्जे में ईसा की माता मेरी के हाथ की लिखावट मौजूद है। और एक छोटे गिर्जे के दर्वाज़े पर अरबी का लेख आज तक बना हुआ है, उसकी छतें भी मुसलमानी ढंग की हैं। मुसलमानों के राज्य-काल मे यह गिर्जा नहीं, मसजिद थी। इसमें कोई सन्देह नहीं। सन् ८३१ से सन् १०६१ तक सिसिली-द्वीप मुसलमानों के अधिकार मे रह चुका है। प्रधान गिर्जे से थोड़ी ही दूर पर प्रधान-विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में दो लाख ग्रन्थो का संग्रह है। वहाँ स्थानीय चित्रकार अन्टोनेलो (Antonello di Messina) के हाथ के बने हुए कई एक उत्तम

चित्र भी सुरक्षित हैं। इस चित्रकार को इटलियन चित्र-विद्या का गुरु कहा जा सकता है। इसने विख्यात चित्रकार एईक (John Van Eyck) के तैल-चित्र के आविष्कार की बात सुन कर फ्लण्डर्स (Flanders)—वर्त्तमान समय के वेलजियम—की यात्रा करके यह विद्या सीखी और वहाँ से लौट कर अपने देश को चला आया। उसके वाद वेनिस (Venice) नगर में जाकर यह इटलियन चित्रकारों को चित्रकला की शिक्षा देने लगा।

मेसिना नगर महात्मा गेरीवाल्डी (Garibaldi) का लीलाक्षेत्र है। उन्होंने सन् १८६० में सिसिली द्वीप, जो नेपल्स के राजा के अधिकार में था, जीता और इटली के राजा विक्टर एमानुएल (Victor Emmanuel = इटली की भाषा में Vittorio Emmanuele) को दे दिया। गेरीवाल्डी ने इसी जगह पर समुद्र पार हो कर नेपल्स की ओर युद्ध-यात्रा की थी। पहले ज़माने में, इस नगर में, बहुत से अनेक श्रेणी के धी-शक्ति-सम्पन्न विद्वान् पैदा हो चुके हैं। महाकवि शेक्सपियर ने अपने एक नाटक में मेसिना नगर का दृश्य, वर्णन करके, दिखलाया है। बहुत दिनों तक यहाँ के लोगों का विश्वास था कि एट्ना पर्वत के ऊपर अपना सिंहासन स्थापित करके यहाँ—इस द्वीप में—जुपिटर (Jupiter) देव राज्य करते हैं। उन्होंने अपने आसन के नीचे एक राक्षस (Enceladus) को समाधि दे रक्खी है। वह राक्षस जब अपनी अग्निमय साँस छोड़ता है तब ज्वालामुखी पर्वतों से आग निकलने लगती है। और, जब वह राक्षस करवट बदलता है तब भू-डोल आता है। यद्यपि इस समय यह विश्वास वहाँ के शिक्षित लोगों में नहीं है, तथापि अपढ़ मूर्खश्रेणी के लोग अभी तक ऐसा ही समझते हैं।

मेसिना के लोग मुझे बहुत ही सरल और बालकों की तरह

खेल-तमाशा पसन्द करने वाले जान पड़े। सड़क और दूकानों पर के लोगों मे से वहुत से लोग आश्चर्य की दृष्टि से मुझे ताकने लगे। मेरे साथी सक्कोनी ने मुझसे कहा—"आप जानते हैं, ये सव लोग आपकी तरफ़ इस तरह आँखें फाड़ फाड़ कर क्यों ताक रहे हैं? इन्होंने गोरे आदमी भी देखे हैं और काले आदमी भी; मगर आपका ऐसा आधा काला और आधा गोरा (Half black, half white) आदमी नही देखा। इसी से इस तरह ताक रहे हैं"।

मेसिना के वन्दरगाह मे, साल भर में, औसत के हिसाव से, प्राय: १३०० स्टीमर और ९००० पाल वाले जहाज़ लंगर डाला करते हैं। लेकिन यहाँ का स्थानीय (Local) वाणिज्य-व्यवसाय सव अँगरेज़, फ़रासी, जर्मन और उत्तरीय इटलियन लोगों के हाथ में है। वन्दरगाह ख़ूव लम्वा चौड़ा है। वह सुन्दर और सुरक्षित भी है सिसिली-द्वीप के आदमी, हमारी ही ऐसी, एक उद्यमहीन जाति हैं; नहीं तो ऐसे उपजाऊ देश में रह कर, इतने सुभीते रहने पर भी, अपने देश का व्यापार दूसरों के हाथ मे क्यों जाने देते? "*Ora et aboral*" (मुख से भगवान् के निकट प्रार्थना करो और हाथ से परिश्रम करो) इस महावाक्य का महत्त्व शीत-प्रधान उत्तर-यूरोप के आदमी ही ख़ूव समझते हैं। हमारे देशों की तरह मेसिना की सड़को पर भी वहुत से संन्यासी भिक्षु (Mendicants) घूमा करते हैं। जिस देश मे दो-चार पैसे की एक मोटी रोटी और कई एक जलपाई मिलती हैं, जिनसे दिन भर का आहार मज़े मे हो जाता है, और जहाँ सूर्यदेव गरम कपड़े का काम चला देते हैं वहाँ तो आलस्य को आश्रय मिलेगा ही। इसी से "आर्किमिडिस" (Archimedes, the Great Geometrician of antiquity) और "थिओक्रा-

इटस” (Theocritus, the prince of pastoral poets) के देश की यह अवस्था होती !

रात को दो नवागत इटलियन युवकों के साथ मैंने भोजन किया। ये दोनों युवक बड़े ही सुशील और सज्जन थे। इनके साथ भारत और अँगरेज़ों के सम्बन्ध में बहुत सी बातें हुईं। एक युवक ने विशेष दुःख के साथ कहा—“तुम्हारे देश में क्या अब भी कोई गेरीवाल्डी या मेज़िनी (Mazzini) नहीं पैदा होगा ? ”। जर्मनी के भूतपूर्व सम्राट् फ्रेडरिक की चिकित्सा और सर मोरेल मेकेन्जी के सम्बन्ध में बहुत सी बातें चलीं। एक युवक ने हिन्दू और बौद्धों के सम्बन्ध में बहुत सी बातें कीं।

दूसरे दिन सवेरे मेसिना को छोड़ कर हमारा जहाज़ आगे बढ़ा। क्रमशः सन-जुआन (San Juan) नगर नाँघ कर हमारा जहाज़ इटली के दूसरे किनारे पर पहुँचा। कलाब्रिया-प्रदेश की दशा सुन कर बड़ा दुःख हुआ। सुना कि वहाँ के लोग प्रायः उजड्ड, और उनमें से अधिकांश डकैत और ख़ूनी हैं। इटली के भले आदमी हम लोगों से बहुत मिलते-जुलते हुए हैं। वे हमारी ही तरह ग़पशप उड़ाना और खेल-तमाशा बहुत पसन्द करते हैं। उनकी आदत होती है कि वे थूकते बहुत हैं और दूसरे के बदन में टहोका मार मार कर बात चीत करने में मज़बूत हुआ करते हैं। उनमें बहुत से तो ऐसे देख पड़े कि अगर वे अपनी पोशाक उतार कर हमारे कपड़े पहन लें तो उनके व्यवहार से कोई यह नहीं कह सकता कि वे बंगाली या हिन्दुस्तानी नहीं हैं।

इटली के पश्चिमी किनारे के समुद्र के भीतर तीन-चार ज्वाला-मुखी पहाड़ देख पड़े। एक बजे के समय हमारा जहाज़ एक ज्वालामुखी के बिलकुल पास से निकला। उससे ख़ूब धुआँ निकल

रहा था। इसका नाम स्ट्रम्बोली (Strambouli) है। यह समुद्र के भीतर एक पहाड़ है। जिस तरफ़ ज्वालामुखी से निकल निकल कर गली हुई धातुएँ वरसती हैं उसकी दूसरी ओर एक छोटा सा मछुओं का गाँव है। उसमें ढाई हज़ार के लगभग आदमी वसते हैं। मछलियों के सिवा और सब ज़रूरी सामान हफ़्ते मे एक दफ़े मेसिना से वहाँ आता है। ऐसी जगह पर, ऐसी विपत्ति के पास, अगर ये लोग न वसते ते क्या इनका काम न चलता ? यह प्रश्न आप ही आप मन मे उठता है। मगर नहीं; इनके यहाँ वसने का अवश्य कोई कारण है। हमारे जहाज़ का एक खलासी इसी गाँव का आदमी था।

सत्रह घंटे के वाद, रात के ११ वजे, हमारा जहाज़ नेपल्स नाम (Naples, इटलियन भाषा में Napoli) में पहुँचा। पास ही विस्यूवियस (Vesuvius, इटलियन भाषा मे Vesuvio) नामक ज्वालामुखी से वरावर धुआँ और आग की लपटें निकल रही थीं। वीच वीच में उसकी अग्नि-शिखा प्रवल वेग से धक-धक करके जल उठती थी। कैसा भयानक दृश्य था !

सवेरे भोजन के वाद नगर देखने निकला। 'नेपल्स' को इटलियन लोग 'नपोली' कहते हैं। अँगरेज़ लोग जैसे अन्य देशों के नामों को मनमाने ढंग से संक्षिप्त कर लेते हैं वैसे ही इटलियन लोगों ने अँगरेज़ों के देश इँगलेंड के छोटे नाम को खींच कर "इंगिलटेरा" (Inghilterra) वना डाला है।

नपोली का गिर्जा वहुत वड़ा है और अपेरा-हाउस (एक प्रकार का नाटक-घर) भी वुरा नहीं है। मैंने गिर्जे के भीतर जाकर देखा कि वहाँ के वृद्ध पादरी ने धूप-दीप फूल नैवेद्य आदि से पूजा शुरू कर दी है। नपोली वहुत वड़ा शहर है। उसमें सात लाख आदमी वसते हैं। वन्दरगाह भी वहुत वड़ा है। नपोली के निकट ही विस्यूवियस की

ज्वालामुखी के उत्पात से विध्वंस को प्राप्त पंपी (Pompeii) नगर का ध्वंसावशेष एक महातीर्थ के रूप से विराजमान है। इटली के स्वाधीन होने के पहले वहुत से विदेशी राजे यहाँ राज्य कर चुके हैं। उनकी अनेक कीर्त्तियाँ अभी यहाँ मौजूद हैं। इस दफ़े मैं नेपल्स में दो दिन रहा। इसके वाद और भी दो दफ़े मैं यहाँ आया हूँ। इस देश का पूरा हाल अन्यत्र वर्णन किया जायगा।

यहाँ से जहाज़ चला। ३२ घंटे के वाद हमारा जहाज़ जिनोआ (Genoa), स्थानीय नाम (Genova) के वन्दरगाह में पहुँचा। जहाज़ ने जिस समय लंगर डाला उस समय सवेरे के ४ वजे थे। उस समय भी खूव अँधेरा था। जहाज़ बहुत दिनों के वाद अपने देश में पहुँचा। जहाज़ के सभी कर्म्मचारी वहुत खुश थे। किन्तु मेरे सिर पर जैसे गाज गिर पड़ी। सवेरे आठ वजे के समय केविन में बैठ कर उपासना और प्रार्थना करने के वाद रोता हुआ मैं जहाज़ से विदा हुआ। इस समय की वात मैं कभी नहीं भूलने का। २५ दिन मैं जहाज़ पर रहा। जहाज़ पर अपने घर की ऐसी ममता मुझे होगई थी। मैं ऐसी कमज़ोर तवियत का आदमी हूँ कि जहाज़ छोड़ने में भी मुझे बड़ा कष्ट हुआ। आँखें पोंछते पोंछते मैं जहाज़ के कर्म्मचारियों से विदा हुआ। एक इटलियन खलासी को साथ लेकर मैं जहाज़ से उतरा। चीज़-वस्तु सव परमिट (Custom House) में पास कराना पड़ता है। इस कारण मुझे पहले वहीं जाना पड़ा। वहाँ से छुट्टी मिलने पर मैं सीधा रेल्वे-स्टेशन की ओर रवाना हुआ। स्टेशन के सामने सुप्रसिद्ध जहाज़ी अमेरिका का पता लगाने वाले कोलम्वस की सफ़ेद पत्थर की एक वड़ी भारी मूर्त्ति देख पड़ी। स्टेशन पर पहुँच कर देखा कि मेल ट्रेन के छूटने में सिर्फ़ दस मिनट की देर है। कुछ खाना-पीना नहीं हो सका। वैसे ही गाड़ी पर चढ़ कर वैठ गया। जिनोआ से लन्दन

तक के लिए मेरे पास फ़र्स्ट क्लास का टिकट था। केवल लगेज (luggage) करने मे जल्दी करनी पड़ी। गाड़ी पर चढ़ कर मैंने देखा कि दो जवान और एक बुढ़िया उस पर बैठी थी। ये लोग रोम-नगरी मे महात्मा पोप के चरण-स्पर्श के लिए गये थे। डेढ़ बजे ट्यूरिन (Turin, असल नाम Torino) स्टेशन पर पहुँच कर मैंने सोते-सोते जाने की गाड़ी का टिकट ख़रीदा। इस गाड़ी का टिकट बेचने वाले साहब कुछ दिनों कलकत्ते और बम्बई मे रह चुके थे। उनसे बहुत सी बातें मुझे मालूम हुईं। यद्यपि कुक-कम्पनी, जो यहाँ विलायत के टिकट बेचती है, उसके आदमियों से वहाँ सहायता मिलनी चाहिए, मगर उसके आदमियों का वहाँ कहीं पता न था। यहाँ स्लीपिङ्ग कार (Sleeping car) के सिवा और किसी गाड़ी मे पेशाब करने या पाख़ाने जाने का प्रबन्ध नहीं है। प्रथम श्रेणी की गाड़ियों मे पैर रखने के लिए ताँबे के चिपटे चोंगे रहते हैं, जिनके भीतर गरम जल भरा रहता है। स्लीपिङ्ग-गाड़ियाँ बहुत ही आराम की चीज़ हैं।

ट्यूरिन से दो बजे गाड़ी छूटी। धीरे धीरे बरफ़ से ढका हुआ बहुत ही ऊँचा आल्प्स (Alps) पहाड़ देख पड़ा। गाड़ी पहाड़ के ऊपर चढ़ कर चलने लगी। नीचे—बहुत नीचे—गाँव दिखाई पड़ते थे। हमारे दोनों ओर और भी ऊँचे पहाड़ी सिलसिले थे। कैसा भयानक दृश्य था! इसी जगह कवि पोप का स्मरण आया। हमारे यहाँ जमालपुर के पास जैसे पहाड़ तोड़ कर रेल की राह बनी है वैसे टनेल (Tunnel) न-जाने कितने नाँघने पड़े। दिन भर गाड़ी में रोशनी रही। बीच बीच में पहाड़ पर अंगूर के खेत और सुन्दर मार्ग देख पड़ते थे। मोडान (Modane) स्टेशन के आगे का टनेल नाँघने मे १५ मिनट लग गये। रात के ११ बजे तक गाड़ी मे मैं अकेला ही था। उसके बाद एक स्वीस (Swiss) बुड्ढा गाड़ी पर सवार हुआ। सबेरे

पेरिस में पहुँच कर गाड़ी बदलनी पड़ी। तीन बजे के समय कैले (Calais) बन्दर में जहाज़ पर चढ़ कर चार बजे डोवर (Dover) में पहुँचा। वहाँ से फिर रेल पर सवार हुआ। थोड़ी ही देर में गाड़ी छूटी। गाड़ी बीच में किसी स्टेशन पर नहीं ठहरी। एक घंटे में सीधी लन्दन पहुँच गई। गाड़ी घंटे में ६० मील की तेज़ चाल से चली थी।

पाँच बजे के समय मैं लन्दन में पहुँचा। अँगरेज़ों का देश—अँगरेज़ों का ख़ास शहर इँग्लैंड है। मुझ सरीखे साधारण आदमी के द्वारा इँग्लैण्ड के वृत्तान्त का पूरा पूरा वर्णन होना सर्वथा असम्भव ही समझिए। सारी पृथ्वी में जो बात नहीं देख पड़ती—यहाँ तक कि यूरोप के भी और प्रदेशों में जो बात नहीं देख पड़ती वही बात अँगरेज़ों के देश इँग्लैण्ड में देखने को मिलती है। भारत-प्रवासी अँगरेज़ों और यहाँ के अँगरेज़ों में आकाश और पाताल का अन्तर है। असल बात यह है कि अँगरेज़ों के ऐसे अच्छे गुण यूरोप की और किसी जाति में नहीं देखे जाते। इँग्लैण्ड किसी भी सभ्य देश से किसी बात में छोटा नहीं है। ऐसे देश की राजधानी, पृथ्वी भर के सब से प्रधान नगर, लन्दन का वर्णन मैं क्या कर सकता हूँ? तथापि अपनी शक्ति के अनुसार इँगलैंड और लन्दन के सम्बन्ध में कुछ कहने की चेष्टा करता हूँ।

लन्दन ।

इँगलैंड की राजधानी लन्दन की भीड़भाड़ में पड़ कर मैं तो जैसे अपने को भूल ही गया । मुझ सरीखे मुक्त-कच्छ अहमक तो साधारण भीड़भाड़ में ही भटक जाते हैं; फिर लन्दन की ऐसी भारी भीड़ ! चारो ओर रूप और गुण का बाज़ार लगा हुआ था । मैं इसी को अपना परम सौभाग्य समझता हूँ कि उस शक्ति के मेलेमे—विद्या, वुद्धि और सभ्यता के मैदान मे—मेरा व्यक्तित्व एकदम मिट ही नहीं गया । कभी कभी जान पड़ता था कि मेरा पुनर्जन्म हुआ है । यह देश जैसे दूसरा ही जगत् है ।

मुझ सरीखे अल्पवुद्धि को ऐसी आशा करना नहीं सोहता कि लन्दन का हाल लिखकर मैं अपने पाठकों को तृप्त कर सकूँगा । वहुत से वड़े वड़े आदमी जव इस चेष्टा में सफलता नहीं प्राप्त कर सके तव मैं किस गिनती में हूँ ! सुप्रसिद्ध वक्ता महात्मा जान ब्राइट (John Bright) ने एक दफ़े एक जगह अपनी वक्तृता मे कहा था कि "तुममे से अनेक लोगों ने लन्दन देखा है, परन्तु तुम उसका कुछ भी हाल नही जानते । मैं प्राय: चालीस वरस तक, साल मे छ: महीने के लगभग, लन्दन मे रहा हूँ । मगर मैं भी उसका कुछ हाल नहीं जानता" ।* एक जर्म्मन विद्वान् ने लन्दन को पृथ्वी भर में सवसे वढ़

---

* A great many of you have been to London, but you know nothing about it. I have spent six months there every year for nearly forty years, and I know nothing about it. I do not believe there is a man in it who is fairly acquainted with all the parts and districts of the vast city You have our four millions of people there.—*John Bright*.

कर विचित्र दृश्य बतलाया है† । लन्दन के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न लेखकों के लिखे इतने ग्रन्थ हैं कि केवल उनसे ही एक अच्छी लाइब्रेरी सजाई जा सकती है । जो कुछ हो; लन्दन में जाकर वहाँ जो कुछ मैंने देखा-सुना और सोचा-विचारा है वही यथाशक्ति पाठकों को कुछ कुछ बतलाने की चेष्टा करता हूँ । लन्दन के लोगों का चरित्र देख कर जितना मैं मोहित हुआ उतना वहाँ के कल-कारख़ाने मुझे नहीं मुग्ध कर सके । लन्दन नगर में जब से मैंने पैर रक्खा तब से जैसे एक कल के बीच में पड़ कर बराबर घूमता ही रहा; दम लेने की भी छुट्टी नहीं थी । सभी कामों और बातों में कठोर नियम जैसे लोहदण्ड हाथ में लिये हर घड़ी सिर पर सवार है । ज़रा भी असावधान हुए कि खोपड़ी पर नियम का वह लोह-दण्ड पड़ा ।

शाम के पहले मैं विक्टोरिया-स्टेशन में पहुँचा । यह कुछ भी निश्चय न था कि कहाँ जाऊँगा, कहाँ रात बिताऊँगा । मैं पहले कह चुका हूँ कि यूरोप की रेलगाड़ी में मुझे एक स्वीस बुड्ढा मिला था । उसका नाम ओजिया था । उसने मुझे लन्दन के मेट्रोपोल होटल (Hotel Metropole) का पता बता दिया था । उसी वृद्ध के उपदेशानुसार मैंने उक्त होटल मे ही जाना ठीक किया और वहाँ जाने के लिए एक गाड़ी भाड़े पर की । शराब, तम्बाकू, चाय, बारूद-बन्दूक़ आदि किसी तरह की कोई निषिद्ध चीज़ साथ लेकर नगर में कोई प्रवेश नहीं कर सकता । मुझे भी जाँच के लिए अपना असबाब स्टेशन के पास के परमिट (चुंगीघर) में ले जाना पड़ा । वहाँ जाँच हो जाने पर मैं

† I have seen the greatest wonder the world can show to the astonished spirit. I have seen it and am still astonished, for ever will there remain fixed indelibly on my memory the stone forest of houses, amid which flows the rushing stream of faces of living men with all their varied passions, and all their terrible impulses of love, of hunger, and of hatred,—I mean London.—*Heinrich Heine.*

गाड़ी पर सवार हुआ। असवाब इस तरह उथला पुथला हुआ था कि उसे उतारना-चढ़ाना जी का जंजाल ही था। असवाब की यह हालत थी, उसके ऊपर अपनी पोशाक भी बहुत ही बढ़िया थी। मुझे तो यह डर मालूम पड़ा कि होटल में उतरने से कहीं वे लोग मुझे पशुशाला में पकड़ कर न बन्द करदे। होटल का जैसा भारी और साफ़ घर था वैसा ही अच्छा काम-काज और वैसा ही उत्तम प्रबन्ध था। लिख कर उसका पूरा वर्णन करना बहुत ही कठिन है। मैं यहाँ संक्षेप में उसका वर्णन करूँगा।

होटल के दरवाज़े पर मेरी गाड़ी रुकते ही दरवान आकर हाज़िर हुआ। उसका चेहरा और साफ़-सुथरी पोशाक देख कर मुझे होश हुआ कि "मैं लन्दन मे हूँ"। लन्दनर (Londoner) अर्थात् लन्दन के लोग परदेशी का विशेष सम्मान करते हैं। इसी से मुझे कभी किसी बात की तकलीफ़ या असुविधा नहीं हुई। नियमानुसार दूसरे खण्ड में एक कमरा जब मुझे मिल गया तब मैं कल पर बिठला कर उसी खण्ड मे, उसी कमरे के पास, पहुँचा दिया गया। होटल का दूसरा देखने लायक़ दृश्य था वहाँ की दासी (Chamber-maid)। जैसे मैं अपने कमरे मे पहुँचा वैसे ही ४, ५ मिनट के बाद एक साफ़ सुथरी नौजवान सुन्दरी स्त्री, सुन्दर पोशाक पहने हुए, मेरे सामने आकर मौजूद हुई। उस हँसमुख स्त्रीने आकर कोमल और मधुर वाणी से पूछा कि मुझे किस चीज़ की ज़रूरत है। मैंने कहा कि मुझे पहले गरमी की ज़रूरत है। बस, वह चटपट बैठ कर आग बनाने लगी। इस समय मेरे मन मे कितने और कैसे भाव उठने लगे सो यहाँ पर लिखना कठिन है। मैं अपने मन मे सोचने लगा कि हमारे देश की लड़ाकी, आधे शरीर से नंगी, असभ्य, टाँय टाँय करने वाली, कभी सन्तुष्ट न रहने वाली दासी और ये चतुर, सभ्य, सन्तुष्ट, मीठी वाणी से प्रसन्न

कर देने वाली, अच्छी पोशाक पहनने वाली "चेम्बरमेड" एक ही चीज़ हैं; किन्तु देश-भेद के अनुसार इन में और उनमें कैसा आकाश और पाताल का अन्तर है!!! यूरोप की सभ्यता, तू धन्य है! धन्य है! तूने साधारण मनुष्यों को भी कितना उन्नत बना दिया है! इसी जगह मेरी समझ में आगया कि निर्दय-प्रकृति के कोई कोई अँगरेज़ एकाएक हमारे देश में उपस्थित हो कर क्यों ग़रीब नेटिवों पर इतना अत्याचार करते हैं। आत्मा का आदर-सम्मान करना जिन्होंने नहीं सीखा, केवल बाहरी लक्षणों को देखकर ही जो लोग सभ्य असभ्य का विचार करते हैं, वे अपने देश के आदमियों के मुक़ाबले आत्म-मर्यादा-हीन, ख़ुशामदी, असभ्य, गन्दे, निकृष्ट नेटिवों को ठीक पशु-सरीखा समझते और इसी से नेटिव की हत्या और पशु की हत्या को एक दृष्टि से देखते हैं। कहाँ तक कहूँ, इच्छा होती थी कि अपने देश के बत्तीस करोड़ आदमियों को यहाँ लाकर दिखलाऊँ कि मनुष्यत्व क्या चीज़ है। लोग कहावत के तौर पर कहा करते हैं कि "पूर्व और पश्चिम का ऐसा अन्तर"। यहाँ कार्यतः वही अन्तर मुझे देख पड़ा। पूर्व और पश्चिम में जितना फ़र्क है उतना ही फ़र्क भारत और इँगलेंड की हर एक बात में है। सब काल की महिमा है। काल की महिमा से ही संसार में सब उलटफेर हुआ करते हैं। जिस भारतवर्ष ने किसी समय 'षट्दर्शन' के समान अमूल्य रत्न संसार को दिये थे आज उसी भारत की कैसी हृदय-विदारक, भयंकर, शोचनीय हीन अवस्था है! इस के विरुद्ध जिस देश में एक समय बाघ और भालुओं के साथी असभ्य जंगली रहते थे उस देश को देखो। आज वह पृथ्वी भर का शिरोमणि होकर मनुष्यत्व के गौरव से परिपूर्ण हो रहा है! हम लोग नरक के भी नीचे चले गये हैं और अँगरेज़ लोग स्वर्ग के ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हैं। अपने इस अधःपात का ख़याल करने

से सचमुच हृदय फटने लगता है। हमारी—हमारे देश की—क्यों ऐसी दुर्दशा है? किस प्रकार हमारे इस दुर्दिन का अन्त होगा? क्या हर एक भारतवासी को इन प्रश्नों पर मन लगा कर विचार न करना चाहिए? दल-बन्दी, घराऊ लड़ाई-झगड़े, छुटप्पन और बड़प्पन के लिए वाद-विवाद, विदेशियों के गुणों की ओर दृष्टि न डालना, पराये गुण को छोटा करने की चेष्टा, मिथ्या कलंक लगा कर महात्माओं की निन्दा करना, तरह तरह की व्यर्थ की कचकचाहट, झगड़ा-बखेड़ा, द्वेष-हिंसा, निकृष्ट स्वार्थपरता—यहाँ तक कि खेल-तमाशा खाना पीना सोना तक—छोड़ कर हम लोगों मे से हर एक को यही सोचना चाहिए कि हम किस तरह दस, बीस, पचास, या सौ, दो सौ बरस मे यूरोप के समकक्ष हो सकेंगे। कपट छोड़ देने से ही हर एक काम आधा कठिन रह जाता है। इच्छा में सरलता, बात चीत में सरलता और कामकाज मे भी सरलता का व्यवहार सीखने से उन्नति की राह भी सरल और सहज हो जाती है। हमारे देश में सोचते कुछ हैं, कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। सोचने, कहने और करने मे इस तरह आकाश-पाताल का अन्तर होने से हमारी बुरी स्थिति और भी भयानक होती जाती है। असल बात यह है कि यथार्थ मे सत्-इच्छा अगर हृदय में नहीं होती तो हर एक काम नष्ट होजाता है—बिगड़ जाता है। जहाँ जिसने जो काम बेगार के तौर पर किया है अथवा स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किया है वहाँ उसके उस काम का नतीजा बहुत ही ख़राब हुआ है। और, सरल भाव से, अच्छे इरादे से, असहाय अवस्था में भी, महात्माओं ने जितने बड़े बड़े कामो में हाथ डाला है उनको अन्त को उन सब कामों मे सफलता प्राप्त हुई है और बहुत ही अच्छा फल प्राप्त हुआ है। हम लोगो का इस पर ध्यान ही नहीं है कि 'काल' हमारे सारे कपट का भंडा फोड़ कर

हमारे हृदय का हाल सब पर प्रकट करदेगा। हम इस समय किसी तरह 'वर्तमान' की आँखों में धूल झोंक कर अपनी असली हालत को छिपाना ही बड़ी होशियारी या बहादुरी समझते हैं। लेकिन 'समय' को धोखा नहीं दिया जा सकता—उससे ठग विद्या नहीं चल सकती। विधाता का ऐसा कौशल है कि सत्य को कोई छिपा नहीं सकता; वह किसी न किसी समय अवश्य ही प्रकट होगा। 'सत्य' के प्रति समुचित सम्मान और 'झूठ' के प्रति आन्तरिक घृणा हुए बिना मनुष्यत्व नहीं प्राप्त होता। "मैं मनुष्य ईश्वर की सन्तान हूँ। नीचता या हीनता मुझे नहीं सोहती"—यही जीवन का मूल-मन्त्र हुए बिना आत्म-मर्यादा की स्थापना सर्वथा असम्भव ही है। गंभीर भाव से, एकाग्र होकर, यही सोचने की इस समय हमको अत्यन्त आवश्यकता है।

पश्चिम (यूरोप) के भयानक शीत में वहाँ के सभी लोग सिरतोड़ परिश्रम में लगे हुए हैं। सब को यही चिन्ता है कि हम किस तरह अपने देश को उन्नति के शिखर पर चढ़ा दें। और पूर्व (एशिया) के लोग वसन्त की मृदु मन्द वायु में गंभीर चिन्ता में मग्न हैं। उन को यही चिन्ता है कि किस तरह बिना परिश्रम के बाबूगीरी के साथ आराम से पैर के ऊपर पैर रख कर जीवन के दिन बिता सकेंगे। जिस देश का मूल-मन्त्र है कि "जान बची लाखों पाये" उस देश का मङ्गल या अभ्युदय 'भविष्य' के किस सुदूर प्रदेश में अपेक्षा कर रहा है—इस बात को बता सकने वाला बुद्धिमान् पुरुष अभी तक संसार में पैदा नहीं हुआ। "और सबको ऊपर उठाओ तब तुम भी ऊपर उठ सकोगे" (Raise others, and then you would rise yourself) इस महावाक्य का अर्थ जब तक हम नहीं समझ सकेंगे तब तक हमारे अभ्युदय की कोई आशा नहीं है। इसी बात को न समझने के कारण प्लिबीयन (Plebeian) लोगों को दबा

कर पेट्रिसियन (Patrician) लोगों ने ऊपर उठने की चेष्टा की थी और उनकी इस चेष्टा से रोम का सत्यानाश होगया। ऐसे ही, इसी कारण, ग्रीक लोग विदेशियों को "वार वेवियन" कह कर घृणा की दृष्टि से देखने लगे और वैसे ही उन की अधोगति का आरंभ होगया। पृथ्वी पर सब जगह एक ही नियम है। इतिहास इस का प्रधान साक्षी है। हमारे घर मे उस का प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद है। तब भी हमको होश नहीं है। इस समय भी हम आपस मे छुटाई-वड़ाई का भेद भाव वनाये रखने की चेष्टा मे लगे हुए हैं।

भारत के लोग स्वभाव से ही हंगामा पसन्द करते हैं, एक संकुचित घेरे में, या पगडंडी पर, चलना उन को रुचता है। केवल अपढ़ अशिक्षित किसान या देहाती ही नही, किन्तु वहुत से अर्धशिक्षित या किसी तरह अपना नाम लिख ले सकने वाले नगर-निवासी भी सुभीता देख कर "जैसी वहै वयार पीठ तव तैसी दीजै" वाली नीति के अनुगामी वन जाते हैं। कोई ऊँचे पद पर स्थित या रईस वड़ा आदमी अगर किसी कुराह पर पैर रखता है तो वहुत लोग न्याय अन्याय का विचार न करके उसका विरोध करना तो दूर रहा और उसके ऐव को छिपाने की कोशिश करने लगते हैं। संसार में जो सव वड़ों से वड़ा (परमेश्वर) है उसे भूल जाते या उसकी पर्वा नहीं करते। यथार्थ 'शिक्षा' के विना यह रोग नही दूर हो सकता। जिस के द्वारा मनुष्य अपने सम्वन्ध मे आप अच्छी तरह विचार करने में समर्थ होता है—पृथ्वी के, सौर जगत् के और क्रमशः सारे विश्व के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान प्राप्त कर ईश्वर-पद-लाभ के अधिकारी होने की राह मे उपस्थित होने को समर्थ होता है—वही यथार्थ शिक्षा है। भारत में आज कल शिक्षा का अर्थ ठीक इस के विपरीत है। किसी तरह दो चार संस्कृत श्लोक कंठ कर लेना या सौ पचास अँगरेज़ी के शब्द वोल लेना

ही यहाँ यथेष्ट शिक्षा समझी जाने लगी है। बहुत लोगों को मालूम ही नहीं कि स्वतन्त्र चिन्ता या स्वतन्त्र विचार कहते किसे हैं। फल यह होता है कि 'सनातनता' की दुहाई देकर बहुत सी, समयानुसार अनावश्यक, रीतियों को आश्रय दिया जाता है और बहुत से नासमझ जीव अनायास ही भ्रमपूर्ण और हानि-कारक मार्ग मे खिँच आते हैं। देश के साधारण लोगों को दृढ़ विश्वास है कि दुनिया के बाज़ार में जिन्होंने कुछ अधिक नाम कमा लिया है उनकी सभी बातें भ्रांति-रहित हैं—वे जो कुछ करते हैं, सब ठीक है। कम से कम इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि लोग उनका कहना खूब मानते हैं। भारत के जीव यह सुनना ही नहीं चाहते कि मनुष्य की बुद्धि सब ओर समान भाव से विकास को नहीं प्राप्त हो सकती। वे नहीं जानते कि प्रसिद्ध दार्शनिक डार्विन सरीखे वैज्ञानिक पण्डित को काव्य और गाना बिलकुल नही रुचता था। जो लोग यह जानते या समझते हैं कि "प्रबल भाव" (Dominant idea)—वह चाहे अच्छा हो, चाहे बुरा और चाहे सच हो, चाहे झूठ—मानसिक जगत् में भयानक सामर्थ्य रखता है,उनकी बात मैं नहीं कहता। मैं यह कहता हूँ कि जो लोग मनोराज्य के नियम (Mental Physiology) आदि की कुछ भी ख़बर नहीं रखते वे लोग, बड़े लोगों को अगर गङ्गा में डूबते देखते हैं तो उनके साथ आप भी, गङ्गा में डूबने का साहस कैसे करते हैं! मन के क्षोभ से मैं असल विषय को छोड़ कर इधर बहुत बढ़ आया; इसके लिए, आशा है, पाठकगण मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।

मेट्रोपोल होटल लन्दन का एक प्रधान होटल है। अन्दाज़न उसमें सात आठ सौ कमरे होंगे। वहाँ का प्रबन्ध जैसा अच्छा है वैसा ही वहाँ रहने का ख़र्च भी है। मुझे प्रायः १५) रु० रोज़

देने पड़ते थे। परन्तु इससे कम मे भी वहाँ रहा जा सकता है। पहली रात को मैं वहाँ बड़ी ही मुश्किल में पड़ गया था। उस समय मुझे दिन-चढ़े सो कर उठने का अभ्यास नहीं हुआ था। सवेरे चार बजे आँख खुलते ही मैं झटपट टट्टी जाने के लिए अपने कमरे से बाहर निकला। बाहर से कमरे का दरवाज़ा बन्द करने पर जान पड़ा कि वह एकदम बन्द हो गया, अब चाभी के बिना नहीं खुल सकता। टट्टी से लौट कर देखा कि जो सोचा था वही हुआ। बिलकुल उजियाला होने मे उस समय भी दो-तीन घंटे की देरी थी। अब क्या करूँ, बड़ी मुशकिल हुई। इसी समय होटल का चौकीदार रौंद मे घूमता घूमता वहाँ आ पहुँचा। उससे कहते ही उसने बहुत ही नम्रता के साथ मेरे कमरे का नंबर पूछा और नंबर बतलाने पर वह उसी दम एक चाभी ले आया। चाभी देकर वह बड़ी ही नम्रता के साथ विदा होकर अपने काम पर चला गया। कमरे मे जाकर मैंने सोचा कि यहाँ के साधारण नौकर चाकर तक कैसे सभ्य, नम्र और होशियार हैं। हमारे देश के किसी होटल मे अगर ऐसी घटना होती तो वहाँ का चपरासी चाहे और कुछ न कहता, मगर गँवार समझ कर कुछ मधुर उपदेश दिये बिना कभी न छोड़ता। किन्तु इस यूरोप के चपरासी ने इस तरह विनीत भाव से सब काम किया जैसे उसीसे कुछ चूक हो गई है। पहले पहल यूरोप मे मैंने यह शिक्षा पाई।

तीन दिन होटल में रहने के बाद एक दूसरा स्थान (Boarding House) मैंने रहने के लिए ठीक किया और वहीं उठ आया। उस स्थान का भी सब प्रबन्ध नियमानुसार ही होता है। जो समय जिस काम के लिए नियत था उसी समय वह काम होता था। अपनी इच्छा के अनुसार, जब चाहे तब, कोई काम करने की

विलकुल गुंजाइश नहीं थी। अँगरेज़, स्काच, आयरिश, स्वीस, जर्मन और मैं (भारतीय) सब एक साथ वैठ कर भोजन करते थे। भोजन अच्छा ही होता था। खाना पकता भी अच्छा था और पच भी जाता था। लन्दन में जैसा भयानक जाड़ा पड़ता है उसी के अनुकूल वैज्ञानिक आहार (Physiological diet) था। वह बुरा नहीं था; स्वादिष्ट होता था। वहाँ वीच वीच में मसूर की दाल (Lentil soup), भात और तरकारी भी मिलती है। मगर उससे तवियत ठीक नहीं रहती। यह भोजन वहाँ के जलवायु के उपयुक्त नहीं है। मैं जहाँ ठहरा था वहाँ की मालकिन (Landlady) और उस घर के सब आदमी बड़े ही भले आदमी और सीधे थे। भारत के साहव लोगों में और यहाँ के इंग्लिशमैनों में आकाश-पाताल का अन्तर है। दोनों जैसे भिन्न भिन्न प्रकृति के भिन्न भिन्न देश के लोग हैं। यहाँ सव देश के सब मनुष्य समान हैं, कोई अन्तर नहीं है। चाहे जिस देश का आदमी हो, इँगलैंड उसका सव के समान ही आदर करेगा। एक भद्र पुरुष के साथ वातचीत करते करते एक दिन मैं कह उठा कि हम लोग तो विदेशी (Foreigner) हैं। वह जैसे चौंक पड़े और उन्होंने मेरी बात का प्रतिवाद करके कहा कि "यह क्या, आप विदेशी कैसे हैं? आप लोग हमारे ही समान (Fellow-citizen) हैं"। फ़्रांस के लोग जर्मन लोगों को "फ़रेनर" कहते हैं, किन्तु हम लोगों को एक भारत-सम्राट् की प्रजा (Subjects of the same Kaiser-i-Hind) कहते हैं। यहाँ किसी की भी मजाल नहीं कि वह "डैम-निगार" कहकर हम लोगों से घृणा करे!!! यहाँ सव स्वाधीन हैं। कोई किसी को कुछ कह नहीं सकता। स्वाधीनता की जन्मभूमि इँगलैंड! इस वात के लिए तुम्हारे चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम!!! "इँगलैंड मे" क्रीत दास का होना असम्भव है। यहाँ की ज़मीन को छूते ही उसके

वन्धन खुल जाते हैं" (No slave can breathe in England ; no sooner does he touch the land than his shackles fall.)—इस महावाक्य को पहले केवल कानों से सुना ही था, किन्तु तुम्हारे हृदय (लन्दन) मे उसे जीता जागता, प्रत्यक्ष, देख कर मैं कृतार्थ हो गया। नहीं जानता, हृदय के महान् उल्लास से किस जगत् मे पहुँच गया हूँ। "मैं इँगलेड में हूँ" इस भाव के साथ साथ कैसी निर्मल, सब वन्धनों से छुड़ाने वाली, पवित्र, और गौरवमयी स्वाधीनता की हवा हृदय को स्पर्श करती है—यह वात उस आदमी को, जिसने खुद इँगलेंड मे जाकर उसका अनुभव नहीं किया, समझाना कठिन ही है। स्वाधीनता ही जीव की प्रधान सम्पत्ति है। उसी स्वाधीनता का उद्धार करने के लिए, परमेश्वर के प्रतिनिधि-रूप से, जगद्व्यापी अपरिमित उद्यम और उत्साह के साथ, इँगलेंड ने जैसी उन्नत और वीरोचित चेष्टा की है और अव भी कर रहा है उसके शतांश क्या, लक्षांश का भी वर्णन मुझसे नही हो सकता। इस वारे में सारी पृथ्वी उसके निकट ऋणी है, और उसका यह ऋण कभी चुकाया नहीं जा सकता। स्वेच्छाचार के अत्याचार से जहाँ जो पददलित हुआ उसी ने निराश्रय के लिए आश्रय-स्वरूप इँगलेड के मुँह की ओर ताका। अपने देश के लोगों के अत्याचार से जान बचाकर भागे हुए अनेक देशों के अनेक वीरो को इँगलेड ने आश्रय दिया और उनके प्राण वचाये हैं। इँगलेंड का यह प्रशंसनीय काम अभी तक जारी है। फ्रांस के सेनापति महावीर वुलांजे (Boulanger) इँगलेड की ही गोद में आश्रय पाकर वेखटके सुख की नींद सो सके थे। युद्ध मे हारने के कारण विगड़ी हुई प्रजा के भय से कम्पायमान अन्तिम फ्रांस-सम्राट् तीसरे नेपोलियन ने हाँफते हाफते इँगलेड के जहाज तक पहुँच कर, उसी पर इँगलेड मे आकर, अपनी जान वचाई थी। संसार मे डंके की चोट

"शरणागत-रक्षा" की घोषणा करके इँगलेंड कह रहा है कि "आओ भाई आओ! स्वेच्छाचारी के अन्याय-अत्याचार से कहाँ कौन सताया जा रहा है? आओ! मैं उसे अपने हृदय मे जगह दूँगा। किसी तरह समुद्र पार हो कर मेरी मिट्टी पर पैर रख दो; फिर तुमको कोई खटका नहीं है। मैं हर तरह तुम्हारी रक्षा करूँगा। किसकी मजाल है जो तुम्हारा बाल बाँका कर सके!" ऐसा उदार धीरभाव, ऐसी गहरी सहानुभूति, ऐसा मनुष्यत्व का सम्मान, किसने कब कहाँ दिखलाया है!!! "मनुष्य-जीवन उपेक्षा की चीज़ नहीं है, ज्वलन्त सत्य है" (Life is earnest, life is real)—यह पहले पुस्तकगत भाव मात्र था। इँगलेंड ने, अनेक तरह के उज्ज्वल रत्नों से अलंकृत कर, इसे अपने देश में प्रत्यक्ष स्थापित कर रक्खा है। इँगलेड, तू धन्य है! और, तेरी महिमा धन्य है!

इँगलेंड की ऐसी प्रशंसा सुन कर बहुतों के हृदय मे ईर्षा की आग जल उठती है। जब मैं इँगलेड में था तब इसी तरह की दो-एक चिट्ठियाँ भी मुझे मिली थीं। ऐसे आदमियों से मेरा केवल इतना ही अनुरोध है कि भाई, यदि मनुष्यत्व के ऊँचे, उदार, शान्त, गम्भीर और जीतेजागते भाव को देख कर कुछ सीखना चाहते हो तो समुद्र-पार होकर इँगलेंड में जाकर कुछ दिन निवास करो—इँगलेंड से कुछ दिन व्यवहार करो, तुम सच्चे द्विज होकर लौटोगे। जिसके हृदय में सद्गुणों के बीज हों, वह पृथ्वी के चाहे जिस स्थान में पैदा हुआ हो, उससे मैं अनुरोध करता हूँ कि वह इँगलेड में अवश्य कुछ दिन रह आवे। वह वहाँ देखेगा कि जल-वायु के गुण से मिट्टी में दबे हुए बीज किस तरह फूलों और फलों से सुशोभित होकर, बड़े बड़े पेड़ बन कर, संसार-पथ के कितने ही थके हुए पथिकों की आँखों को और मन को तृप्त, आत्मा को प्रसन्न और पुष्ट करते हैं। देश के बहुत

से आदमियों के मन में, मेरी ये बातें सुन कर, अवश्य इस प्रकार का प्रश्न उठ सकता है कि "इँगलेंड अगर ऐसा उदार और महान् है तो फिर वह हमारे दुःखों की सुनाई क्यों नहीं करता—उन्हें दूर क्यों नही करता ?" मगर मेरा कहना यह है कि ऐसा प्रश्न जिनके मन मे उठे वे लोग ज़रा अपने पक्षपात को छोड़ कर सोचें-विचारें तो आप सब समझ मे आजायगा। सच बात तो यह है कि आत्म-मर्यादा की रक्षा करके चलना न जानने से जो दुःख उपस्थित होते हैं वे अनिवार्य हैं; स्वयं ब्रह्मा भी उनको दूर नहीं कर सकते। अपने ही बीच भयानक भेदभाव (उच्च-नीच भाव) बनाये रखने का सर्वदा यत्न करते रह कर विजातीय शासक के निकट बराबरी के व्यवहार की आशा करना अत्यन्त हीन स्वार्थपर जीव के पागलपन के सिवा और कुछ नही है। जहाँ के प्रबल नियम के अनुसार मनुष्य यहाँ तक घृणित हो सकता है कि उसकी छाया तक छूने मे परहेज़ किया जाता हो; जहाँ दुर्बल के ऊपर सबल का अत्याचार, नीच जाति के ऊपर उच्च-जाति का अनादर, ग़रीब के ऊपर अमीर का विजातीय का ऐसा घृणित और बुरा बर्ताव धर्म समझा जाता हो, वहाँ, प्रबल प्रताप-शाली राजा की जाति के विरुद्ध कोई नालिश नही चल सकती। आज अगर हम लोग कुछएक कुसंस्कारों और कुरीतियों की ग़ुलामी से छूट कर स्वदेशी भाइयों को समान-दृष्टि और सरल भाव से प्यार करना सीखें, मनुष्यमात्र को भाई कह कर पुकार सकें, और मनुष्य-जीवन का कर्तव्य पालने के लिए मन-वाणी-काया से यत्न करते हुए मनुष्यत्व के परम श्रेष्ठ गौरव की रक्षा करना ही जीव का यथार्थ धर्म है—ऐसा विश्वास कर सके, तो देखे कौन हमको दुःख दे सकता है ! उस समय उन्नत चरित्र के रूप से स्वयं ईश्वर हम में विद्यमान रह कर जीवन मे ऐसा बल ला देगे कि उस अप्रतिहत शक्ति के आगे, इँगलेंड

की तो कोई गिनती ही नहीं, सारे संसार के लोग सिर झुकावेंगे। हम लोग इस समय जैसे पद-दलित होकर दिन बिता रहे हैं सो सब हमारे ही कर्मों का फल है। विधाता सो नहीं रहे हैं; वह कभी अन्याय नहीं कर सकते। ढाल नहीं है, तरवार नहीं है, पर तीसमारखाँ बनेंगे; ऐसा कभी हो नहीं सकता। जिसमें चरित्र का बल नहीं है उसमें मनुष्यत्व नहीं है; और, जिसमे मनुष्यत्व नहीं है उसमें आत्ममर्यादा भी नहीं हो सकती। जिसमे आत्ममर्यादा नहीं है उसके कुछ भी नहीं है। वह अकिञ्चन है, मिट्टी के बराबर है। बिना माल-मसाले के, केवल गलेबाज़ी से ही, इमारत नहीं तैयार होती। पहले अपना घर सँभालों, पीछे सब ठीक हो जायगा। जब तक घर के आदमियों में ही बिगाड़ है—प्रेम का व्यवहार नहीं है—तब तक बाहर के आदमियों से मोहब्बत या मुरव्वत की आशा करना सरासर भूल है—अपने को हँसाना है। अस्तु।

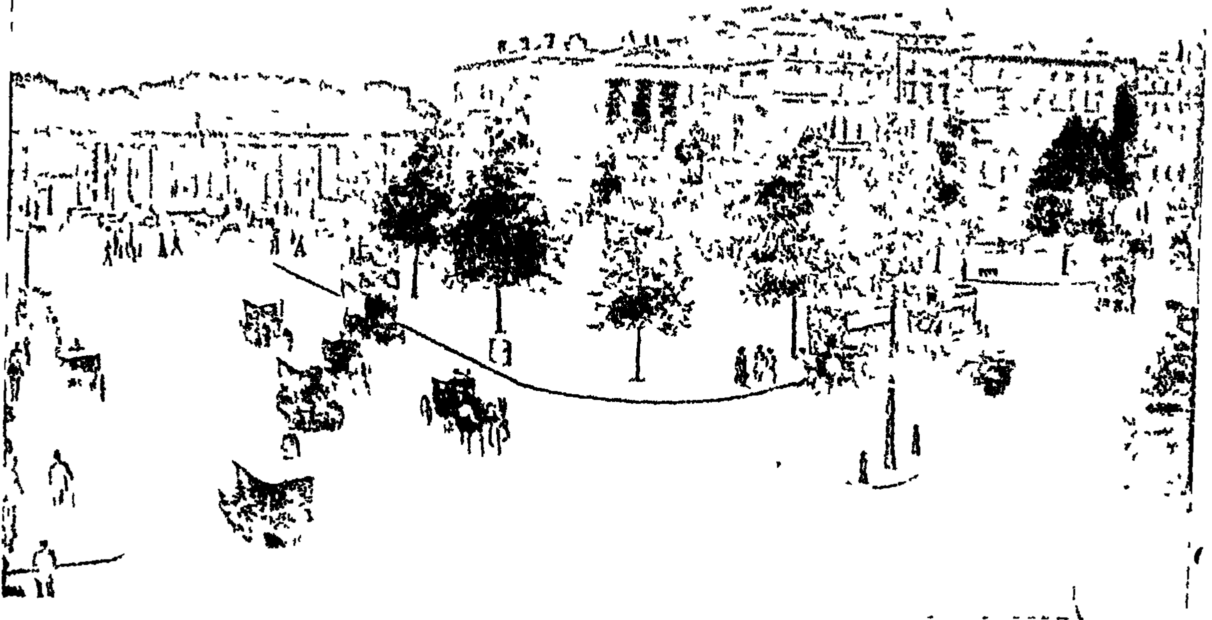
लन्दन मे, विलायती क़ायदा सीखने में—यूरोप के ढंग से समय की पाबन्दी करने में—मुझे कुछ भी देर नहीं लगी। किन्तु मन में एक प्रकार का कष्ट अवश्य जान पड़ा। इसका कारण यही था कि यूरोप-सरीखे सभ्य जगत् में जो अमल-दस्तूर—ज़रा ज़रा सी बात में क़ायदे की पाबन्दी—है उसका मुझे बिलकुल ही अभ्यास न था। यही नियम-सम्बन्धी पराधीनता मुझको अखरती थी। हमारा भारत बहुत सी बातों में पराधीन है। परन्तु चिरकाल से एक प्रकार की व्यक्तिगत स्वाधीनता उसकी वैसी ही बनी हुई है। भारत विचार और व्यवहार में सदा स्वतन्त्र रहा है और अब भी है। विचार की स्वतंत्रता के फल से भारत मे कल्पना की लम्बी दौड़ और परस्पर-विरोधी भावों से भरे तरह तरह के धर्ममतों और दर्शन-शास्त्रों की उत्पत्ति हुई है। ऐसे ही समाज के सब लोगों को व्यवहार में स्वतन्त्रता होने

का फल यह हुआ है कि यहाँ के पहनावे आदि का कोई ख़ास नियम नहीं है और यहाँ के लोगों मे एटिकेट (क़ायदे) की प्रवलता नही देख पड़ती। बृहस्पति ने चार्वाक (नास्तिक) दर्शन की रचना की है, तथापि हम उन्हे देवगुरु मान कर उनका यथेष्ट आदर करते हैं। बुद्धदेव ने ईश्वर-विमुख होकर धर्म का प्रचार किया है, तथापि हम उन्हे विष्णु का अवतार मान कर उनकी पूजा करते हैं। किन्तु यूरोप में सर्वसाधारण के मत के विरुद्ध अपने विशेष विचार प्रकट करने के कारण कितने ही स्वाधीनचेता साधु-महात्मा मार डाले गये हैं। पहले जो होगया उसे जाने दीजिए; वर्त्तमान समय मे, जान ब्राइट क्वेकर (Quaker) थे इस कारण, हज़ार हज़ार चेष्टा होने पर भी उनकी लाश को वेस्टमिनिस्टर एवी (Westminster Abbey) मे स्थान नही मिला। हमारे यहाँ कपड़े-लत्ते पहनने का, मिलने-जुलने का कोई वँधा हुआ नियम नहीं है। परन्तु यूरोप मे ये सव नियम वँधे हुए हैं। ख़ैर जो कुछ हो, देश की दशा और जलवायु के अनुसार पोशाक़-पहनावे के, और सभ्यता की रक्षा के लिए मिलने-जुलने आदि के, विशेष नियमों का होना, इमें अखरने पर भी, अनुचित नहीं कहा जा सकता। किन्तु जान ब्राइट वाले उदाहरण का भाव वास्तव मे औचित्य की सीमा से वाहर है। उसे अँगरेज़ों के चरित्र-चन्द्र में कलङ्क कहना ही पड़ेगा। किन्तु, वर्त्तमान समय मे, यूरोप मे—ख़ास कर इँगलेड मे—स्वाधीन विचारों का अप्रतिहत प्रवाह प्रवल वेग से वह रहा है। उससे पूर्ण आशा की जा सकती है कि शीघ्र ही इस सम्बन्ध मे वहाँ युगान्तर उपस्थित हो जायगा। आज कल इँगलेड और यूरोप-अमेरिका के अनेक देशों के वहुत से शिक्षित लोग उदार धर्म-मत का पोषण करते हुए पृथिवी के सम्पूर्ण साधु-महात्मा लोगो का आदर करते हैं। और, वे उन सज्जनों

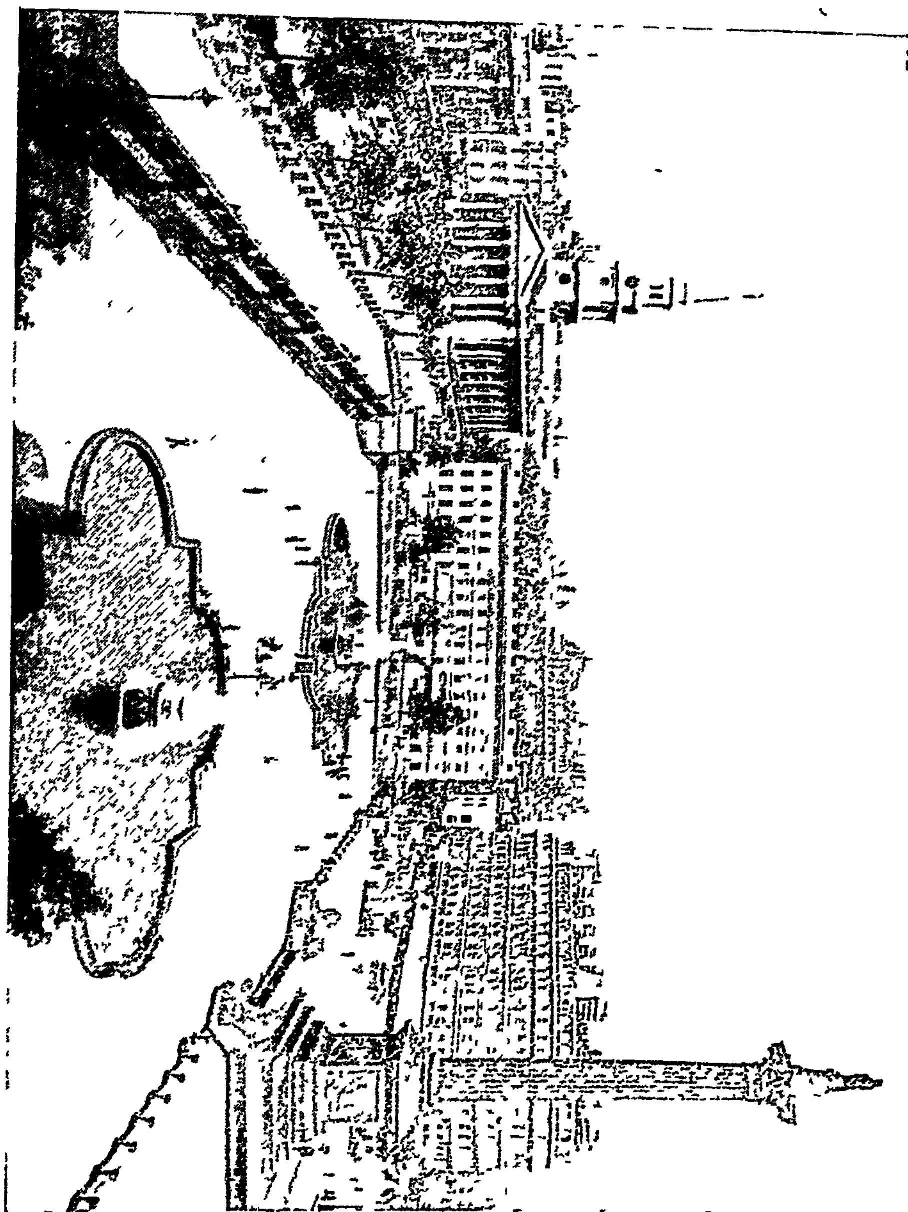
के प्रचारित मत विश्वासों पर विचार करते हुए उन्हें ग्रहण भी करने लगे हैं ।

ख़ास लन्दन ।

अलवर्ट मेमोरियल (Albert Memorial) । यह स्वर्गीया महारानी विक्टोरिया के स्वामी अलवर्ट महाशय का स्मारक चिह्न है । उक्त महोदय ने इँगलेंड की प्रजा का हित करने की चेष्टा में ही अपना जीवन विताया । इसी से महारानी विक्टोरिया और इँगलेंड की प्रजा ने श्रद्धा के साथ उनके नाम पर यह भारी मकान वनवाया है । मकान के ऊपर लिखा है कि "महारानी विक्टोरिया और उनकी प्रजा के द्वारा महात्मा प्रिन्स कन्सर्ट अलवर्ट के स्मरणार्थ वनवाया गया ।" यह मकान वीस वरस में बना है और इसके वनने में डेढ़ लाख पौंड (१ पौंड १५) रु० का होता है) के लग भग ख़र्च पड़ा है । चारों ओर के चारों कोनों के चवूतरों पर चार भारी भारी, एशिया-यूरोप-अफ़्रिका-अमरीका की, मूर्तियाँ हैं । एशिया की मूर्ति—पूर्वी स्त्री, हाथी की पीठ पर बैठी हुई, पूर्वदेशीय सहचर और साज-सरंजाम से संयुक्त है । यूरोप की मूर्ति—विलायती साज और साथियों से संपन्न, वैल पर सवार है । अफ़्रिका की मूर्ति—'मिसर' के साज और मिसरी अनुचरों के साथ ऊँट पर सवार है । अमरीका की मूर्ति-अमरीकन जंगली भैंसे (Bison) पर सवार है; असभ्य लोग उसके सहचर हैं । वीच में एक संगमरमर की वेदी है । उसके चारों ओर, पृथ्वी भर के साहित्य और विज्ञान के ज्ञानी पण्डित और शिल्पियों की, दो सौ के लगभग, मूर्तियाँ हैं । वेदी के ऊपर चारों कोनों में वाणिज्य, शिल्प, खेती और इञ्जिनियरी की साङ्गोपाङ्ग मूर्तियाँ हैं । वीचोवीच में एक राजासन (State chair) पर, गार्टर श्रेणी के



हाइड पार्क का एक छोर—पृ० ३९



नाइट के पहनावे से बैठी हुई, अलवर्ट की वड़ी भारी धातुमयी मूर्ति है। उस पर मुलम्मा किया हुआ है। चोटी-समेत उस मकान की ऊँचाई १७५ फुट है। यह स्मारक-भवन केन्सिंगटन-नामक वाग़ (Kensington Gardens) मे वना हुआ है।

इस भवन के सामने ही, सड़क के उस पार, अलवर्ट-हाल है। यह वड़ा भारी गोल आकार का एक भवन है। यह काच के गुम्वज से छाया हुआ है। इस मे १०००० आदमियों के वैठने की जगह है। दो लाख पौंड ख़र्च कर के यह वनवाया गया है और तीन साल में वना है। यहाँ पर प्रदर्शिनी, नाच, गाना, वजाना आदि हुआ करता है।

हाइड पार्क (Hyde Park)। लन्दन मे ऐसे २१ पार्क या रमणीय वाग़ीचे हैं। उन सव में यद्यपि इस पार्क का, घेरे मे, दूसरा नम्बर है तथापि वहुत सी और वातों मे यही प्रधान है। यह वाग़ १२०० वीघे में है। इसकी स्थापना राजा अष्टम हेनरी ने की थी। किन्तु इसकी वर्त्तमान उन्नति का आरम्भ सन् १८३० ईसवी से हुआ है। इसमे ६ फाटक हैं। उत्तर-पूर्व कोने का फाटक सव की अपेक्षा सुन्दर है। उसका नाम है Marble Arch। राजा चौथे जार्ज ने एक लाख पौंड के लगभग ख़र्च करके उसे वनवाया था। इस पार्क मे अनेक विस्तृत भूमिखण्ड हैं, जिन पर हरी घास लगी हुई है। इस पार्क के भीतर एक सर्पाकार टेढ़ो-मेढ़ी कृत्रिम नदी (The Serpentine) वहती है। जगह जगह पर दो तीन सौ वरस के पुराने जीर्ण वृक्ष खड़े हुए हैं। इन पार्कों मे दिन भर के परिश्रम से थके हुए वहुत से लोग आकर आराम करते हैं। हाइड-पार्क के एक कोने मे कवि वायरन (Lord Byron) और आकिलेस (Achilles) की मूर्तियां हैं। स्पेन और वाटर्लू के युद्ध मे जीती हुई तोपें गला कर आकिलेस की मूर्ति

ढाली गई है । महावीर वेलिंगटन और उनके सहचरों के स्मरणार्थ स्त्रियों ने इस मूर्ति की स्थापना की है ।

ब्रिटिश म्यूज़ियम (British Museum) । यह लन्दन का पुराना म्यूज़ियम या अजायब घर है । सन् १७५३ ईसवी में यह स्थापित हुआ था । लन्दन में सब मिला कर ६ म्यूज़ियम हैं ; उनमें अनेक बातों मे, यही प्रधान है । इसके सम्बन्ध में यात्रियों का मत है कि पृथ्वी में यह अतुलनीय (unequalled in the world) है । वास्तव में यहाँ कैसा भारी संग्रह है ! देखने से होश उड़ जाते हैं । भिन्न भिन्न विभागों मे छपी हुई पुस्तकें, यूरोप की हस्तलिपियाँ, एशिया की हस्तलिपियाँ, जीव-जन्तु (स्थानाभाव के कारण यह विभाग अलग एक स्थान मे है), एशिया की प्राचीन कीर्त्तियों के चिह्न, ग्रीस और रोम की प्राचीन कीर्त्तियों के चिह्न, सिक्के और तमगे, ब्रिटिश और यूरोप के मध्यकाल (Mediæval) की कीर्त्तियों के चिह्न, पृथ्वी की सारी जातियों के व्यवहार में आनेवाली चीज़ें, चित्र और मुहरें रक्खी हुई हैं । इस म्यूज़ियम में प्रवेश करते ही दक्षिण ओर एक भारी पुस्तकालय देख पड़ता है । अलमारियों में ठसाठस भरे हुए ग्रन्थ रक्खे हैं । यहाँ पुस्तकों का बड़ा भारी संग्रह है । इस घर के भीतर होकर दूसरे 'हाल' में जाने से काच से ढके हुए डेस्कों में बहुत लोगों के हस्ताक्षर सजाये हुए रक्खे देख पड़ते हैं ।

१—इँगलेंड और विदेशों के प्रसिद्ध लोगों के हस्ताक्षर (Autographs of English and Foreign eminent men) । मार्टिन लूथर (Martin Luther), जान कालविन (John Calvin), सर वाल्टर रेले (Sir Walter Raleigh), सर फिलिप सिडनी (Sir Philip Sidney), गेलीलियो (Galileo), सर आइज़क न्यूटन (Sir Isaac Newton), कवि पेप (Alexander Pope), एडीसन (Joseph

Addison), कवि ड्राइडन (John Dryden), स्विफ्ट (Swift), अमेरिका का उद्धार करने वाले वाशिंगटन (George Washington), फ्रान्स के दार्शनिक वाल्टेयर (François Marie Aronet de Voltaire), महावीर नेपोलियन (Napoleon I), आदि २८ प्रसिद्ध पुरुषों के हाथ के लिखे काग़ज़-पत्र यहाँ बड़े यत्न से सुरक्षित हैं।

यहाँ पर महामति वाल्टेयर के पत्र की नक़ल देना उचित समझ कर उसकी नक़ल नीचे दी जाती है। इसके द्वारा अँगरेज़ जाति के सम्बन्ध मे एक दार्शनिक पण्डित का मत हमारे पाठकों को मालूम हो जायगा। उक्त विद्वान् को इँगलेड के स्वाधीन भाव और युद्ध-वीर तथा पण्डित मनुष्यों पर आन्तरिक श्रद्धा थी। उसने इस पत्र मे मुक्त-कण्ठ होकर इस बात को स्वीकार किया है।

AUX DELICES,
16th January 1760.

" * * * * * *

Had I not fix'd the seat of my retreat in the free corner of Geneva, I would certainly live in the free kingdom of England, for tho' I do not like the monstruous irregularities of Shakespear, tho' I admire but some lively and masterly strokes in his performances, yet I am confident nobody in the world looks with a greater veneration on your good philosophers, on the crowd of yr good authors, and I am these thirty years the disciple of yr way of thinking. Yr nation is at once a people of warriors and of philosophers. You are now at the pitch of glory in regard to publick affairs. But I know not whether you have preserv'd the reputation yr island enjoy'd in point of literature when Adisson, Congreve, Pope, Swift, were alive

Francios Marie Aronet de Voltaire
George Keate, Esq , F. R. S"

(पाठकगण, इस पत्र में जो स्पेलिङ्ग की भूलें हैं वे खुद वाल्टेयर की हैं। मेरी नहीं हैं।)

२—इँगलेंड के राजों और रानियों के हस्ताक्षर (Autographs of English Sovereigns)। इस डेस्क में इँगलेंड के २९ राजा-रानियों के हस्ताक्षर हैं। महारानी विक्टोरिया के, चार वर्ष की अवस्था के, पेन्सिल के, हस्ताक्षर देखने लायक़ चीज़ हैं। राज्याभिषेक करने को उपस्थित होने के लिए पुरोहित को जो महारानी विक्टोरिया ने पत्र लिखा था वह भी यहाँ सुरक्षित है। उसमें महारानी की लिखावट पक्की है। उस पत्र की नक़ल नीचे दी जाती है।

VICTORIA RG.

Right Reverend Father in God, we greet you well.

Whereas the Twenty-Eighth day of June next is appointed for the Solemnity of Our Royal Coronation, These are to Will and Command you (all excuse set apart) to make your personal attendance on us at the time above mentioned, furnished and appointed as to your Rank and Quality appertaineth, there to do and perform all such services as shall be required and belong unto you.

Whereof you are not to fail,

And so

We bid you most hearty farewell given at our Court at St. James's, the ninth day of May 1838, in the first year of Our Reign.

TO SAMUEL,
LORD BISHOP OF LICHFIELD,
By Her Majesty's Command,
Norfolk, E. M.

३—ब्रिटिश राजमन्त्री और सेनापतियों के हस्ताक्षर (Autographs of British Statesmen and Commanders)। हैम-डेन (John Hampden), मार्लबरो (Duke of Marlborough),

वालपोल (Sir Robert Walpole), लार्ड चाथम (Earl of Chatham), क्लाइव (Robert Clive), हेस्टिंग्ज़ (Warren Hastings). वेलिंगटन (Duke of Wellington), खार्तूम के प्रसिद्ध गार्डन (General C George Gordon) इत्यादि बीस आदमियों के पत्र आदि यहाँ सुरक्षित हैं। उनमें से कासिम बाज़ार की कोठी के वारेन हेस्टिंग्ज़ के नाम लार्ड क्लाइव के हाथ के लिखे पत्र की नक़ल नीचे दी जाती है।

SIR,

I have wrote to the Nabab desiring he would advance a lack of Rupees for the payment of the Troops, you will therefore wait on him in order to receive it and you must insist upon the demand being complied with, whatever objections he may chance to make

The Forces began their march yesterday morning, and I shall set out from hence myself on Thursday at furthest.

I am,

CALCUTTA, 27th February, 1759 } SIR, Your most obd and humble servant, ROBERT CLIVE

लार्ड क्लाइव हेस्टिंग्ज़ को लिखते हैं कि उन्होंने मुर्शिदाबाद के नवाब, अर्थात् मीरजाफ़र, को फ़ौज की तनख़्वाह के लिए एक लाख रुपया पेशगी देने के वास्ते पत्र लिखा है। हेस्टिंग्ज़ साहब इस रुपये के लिए नवाब से मुलाक़ात करें और नवाब अगर कुछ उज्र या हीला-हवाला भी करें तो उसे न सुन कर रुपये के लिए विशेष रूप से तक़ाज़ा करें।

इस पत्र को पढ़ कर मेरे मन में जैसे जैसे भाव उठे उनका वर्णन करना सहज नहीं है। यह सन् १७५९ ईसवी की २७ वीं मई का पत्र, पलासी-युद्ध के एक बरस आठ महीने के उपरान्त की बात, है। एक दिन वह था और एक दिन यह है! इन एक सौ तीस

वरसों में, भारत में, सब प्रकार से दूसरा ही युग उपस्थित हो गया है। बंगाल के नवाब के ख़ज़ाने से एक लाख रुपये अगौढ़ी पाने के लिए क्लाइव की कैसी व्यग्रता, उतावली और चेष्टा इस पत्र से झलकती है ! उस समय ऐसी ही अवस्था थी। और आज जो क्लाइव के स्थानापन्न हैं वह सागर और द्वीप सहित भारत-भूमि भर के हर्ता-कर्ता-विधाता हैं ! इस समय ऐसी ही अवस्था है। काल ! तुम सब कर सकते हो ! तुमको विधाता ने अपने श्रेष्ठ कर्मचारी, अर्थात् प्रतिनिधि, के रूप से इस संसार में स्थापित किया है। अँगरेज़ों ने एक ही शताब्दी में जैसी भारत की हालत बदल दी है वैसा परिवर्तन हज़ारों वर्षों में भी दूसरी जाति के किये नहीं हो सका। पलासी का युद्ध जब से हुआ तब से भारतवर्ष में नवीन युग का आरम्भ हो गया। यह कहना अनुचित न होगा। अस्तु।

इस स्थान में सर्वसाधारण की शिक्षा और आगे होने वाले वंशधरों की जानकारी के लिए जिस तरह यत्नपूर्वक ये पत्र सुरक्षित हैं उसकी एक मुख से बड़ाई नहीं हो सकती। केवल इसी घर मे शिक्षा प्राप्त करते करते ज़िन्दगी गुज़र जा सकती है।

४—ऐतिहासिक हस्तलिपि (Historical Autographs), इसमें लेडी जेन ग्रे (Lady Jane Grey), रानी मेरी (Queen Mary), रानी एलिज़ाबेथ (Queen Elizabeth), राजा प्रथम चार्ल्स (बन्दी की अवस्था में) (Charles I [when prisoner]), और क्राम्वेल (Oliver Cromwell) आदि ३३ लोगों के पत्र आदि रक्खे हैं।

५—६—साहित्य-संसार के सुप्रसिद्ध ८० पण्डितों के हाथ की लिखावट और उनके ग्रन्थ आदि की उन्हीं की लिखी कापियाँ इन डेस्कों में सुरक्षित हैं। उनमें हैं—गोल्डस्मिथ (Oliver Goldsmith), जानसन (Dr. Samuel Johnston), बासवेल (James Boswell),

गैरिक (David Garrick), ग्रे (उनकी एलिजी) (Thomas Gray [a fair copy of the "Elegy written in a country churchyard"]), बर्न्स (Robert Burns), कीट्स (John Keats), शेली (Percy Bysshe Shelley), सदी (Robert Southey), वर्ड्सवर्थ (William Wordsworth), कार्लाइल (Thomas Carlyle), स्मिथ (Sydney Smith), डिकेन्स (Charles Dickens), बीथोवन (Ludwig Van Beethoven), गोथे (Johann Wolfgang Von Goethe), शीलर (Johann Christoph Friedrich Von Schiller), बेन जानसन (Ben Johnston), मिल्टन (John Milton), रूसो (Jean Jacques Rousseau), हार्वी (William Harvey) लक (John Locke), पोप (Alexander Pope), डिफ़ो (Daniel Defoe), स्काट (Sir Walter Scott), बायरन (Lord Byron) मेकाले (Lord Macaulay) आदि हैं। किन्तु दुःख और आश्चर्य की बात है कि इस संग्रह मे 'एडीसन' का कुछ भी देखने को नहीं मिला।

हाथ के लिखे प्राचीन ग्रंथ आदि(Manuscripts)। A डेस्क मे ग्रीक भाषा की २२ पुस्तकें हैं। उनमे एक कविवर होमर (Homer) का इलियड (Illiad) काव्य है। उसकी यह प्रति मिसर के एक 'पिरामिड' मे मिली थी। यह भोजपत्र (Papyrus) पर एक प्रकार के गोल आकार के अक्षरों (Uncial characters) मे लिखी हुई है। B और C डेस्कों में लैटिन और अन्यान्य यूरोपियन भाषाओं की ७४ पुस्तकें रक्खी हुई हैं।

D डेस्क में केवल ॲंगरेज़ी की हस्तलिपियाँ हैं।

E डेस्क मे पूर्वी १३ पुस्तकें हैं। इनमे सिरीय भाषा में लिखी

हुई दसवी शताब्दी की एक बाइबिल, मगरबी अरबी मे लिखा हुआ बारहवी शताब्दी का एक क़ुरान, आठवी और नवी शताब्दी के लिखे हुए दो क़ुरान के अंश-विशेष, दसवीं शताब्दी के किसी प्रसिद्ध अरब चिकित्सक का बनाया हुआ एक शरीर-तत्त्व का ग्रन्थ और फ़ारसी भाषा में लिखा हुआ सुलतान महम्मद गज़नी का एक जीवन-चरित रक्खा हुआ है।

F डेस्क मे ३३ पुस्तकों का संग्रह है। उसमें अनेक मूल्यवान् चीज़ें हैं। उनमें से कुछ ये हैं—अभिधम्मपिट्टकम्—नामक बौद्ध शास्त्र के पठनप्पकरणम्-नामक सातवे अध्याय का बुद्धघोस कृत भाष्य, जो पाली भाषा में काम्बोज देशीय अक्षरों मे लिखा हुआ है; यव-द्वीप के अक्षरों में तालपत्र पर लिखा हुआ एक ग्रंथ; पाली भाषा में सिंहली अक्षरों मे लिखा हुआ धम्मशकप्पट्टन सूत्त—अर्थात् बुद्धदेव का काशी-धाम (सारनाथ) में प्रचारित प्रथम उपदेश; पाली भाषा में लिखे हुए अनेक बौद्धग्रन्थ; बहुत छोटे छोटे अरबी अक्षरों मे बहुत पतले काग़ज़ पर लिखा हुआ एक क़ुरान; फ़िरदौसी की फ़ारसी कविता 'यूसुफ़-ज़ुलेख़ा' और दिल्ली के प्रसिद्ध कवि मीर खुसरो की फ़ारसी कविता 'ख़िजर ख़ाँ'; फ़ारसी के कवि हाफ़िज का दीवान (ये दोनों पुस्तकें सुनहले काम के काग़ज़ पर लिखी हुई हैं); अवध के अन्तिम नवाब वाजिदअली शाह की एक उर्दू कविता; पतले सोने के पत्र पर खुदा हुआ यवद्वीप के किसी राजा का एक पत्र; एक पतले काग़ज़ पर लिखी हुई संस्कृत सचित्र भगवद्गीता; इसी तरह के ६५ फुट से भी कुछ अधिक चौड़े सुनहले काम के काग़ज़ पर सुन्दर अक्षरों में लिखी हुई एक संस्कृत श्रीमद्भागवत की पुस्तक; बहुत छोटे अक्षरों में पतले काग़ज़ पर लिखी हुई एक संस्कृत दुर्गा की पुस्तक; तीन, एक में सटे हुए, भोजपत्रों पर लिखी हुई और एक गीता की पुस्तक; सुवर्णाक्षरों में लिखी हुई और

एक दुर्गा की पुस्तक और एक काले रंग के काग़ज़ पर रुपहले अक्षरों मे लिखा हुआ एक शिवकवच।

सनदों (Charters) वाले डेस्क मे राजा अल्फ़्रेड (Alfred the Great) की ८५७ ई० सन् की पुरानी एक सनद है। उसमे सन् १२१५ ई० की, राजा जान (King John) की, जगत्प्रसिद्ध मैग्नाचार्टा (Magna Charta) और रोम के पोप (Pope Eugenius IV) का, सन् १४४५ ई० का एक अनुज्ञापत्र (Bull) भी अन्यान्य बहुत से काग़ज़-पत्रों के साथ यत्न से सुरक्षित है।

एक डेस्क मे ब्रिटिश राजगण की सील-मोहरें और अन्यान्य डेस्कों मे और और बड़े आदमियों के नाम की मोहरें भी इस कमरे में रक्खी हुई हैं।

दूसरे एक हाल मे सुनहली स्याही से लिखी हुई (Illuminated) हस्त-लिपियाँ और तरह तरह के पुराने ग्रन्थ आदि डेस्कों और अलमारियों मे अच्छी तरह सजाये हुए रक्खे हैं।

यह राज-पुस्तक-संग्रह (King's Library) राजा तीसरे जार्ज की सम्पत्ति था। उनके कुलपावन वंशधर चौथे जार्ज अपनी घोर फ़िज़ूलख़र्ची के कारण जब बहुत अधिक ऋणी हो गये तब उन्होंने इस अमूल्य ज्ञान-भाण्डार को बहुत थोड़े दामो मे म्यूज़ियम के वर्त्तमान सञ्चालकों के हाथ बेच डाला। हमारे देश में शायद 'एक राजा का ऋण चुकाने के लिए पुस्तकें बेच डालने का व्यापार बहुत लोगों की समझ में ही न आवेगा।'

असीरिया-संग्रह (Assyrian Gallery)। यहाँ प्राचीन असीरिया राज्य की जितनी चीज़ें हैं उनका वर्णन कैसा, उनकी गिनती करना भी कठिन है। असुर वेणीपाल, नेबुकाद्नेजर, सेनेकारिब आदि राजों की अनेकानेक कीर्त्तियाँ यहाँ सुरक्षित हैं। सब से बढ़ कर अद्भुत

चीज़ एक टूटा हुआ पत्थर का टुकड़ा (Tablet) है। यह टुकड़ा सृष्टि के वाद जो भारी वहिया, सारे संसार मे, आई थी उस समय का कहा जाता है। पत्थर के टुकड़े कई हैं और वे, वहुत दिन हुए, असीरिया-प्रदेश के खँडहरों से उठा कर लाये गये हैं। किन्तु उन सब का ठीक और पूरे विवरण का पता कोई नहीं लगा सका। इस म्यूज़ियम के एक कर्मचारी स्मिथ साहव (George Smith) पुरातत्त्व के अच्छे जानकार थे। उन्होंने एक दिन पुराने पत्थरों की जाँच करते करते एक टुकड़े पर कुछ लिखा हुआ देखा। उसमें लिखा था—"जहाज़ निजी पर्वत पर टकराया था" "नूह ने कबूतर भेजा था" इस जानकारी से उत्साहित हो कर उक्त साहव ने और टुकड़ों की भी जाँच की। और तीन टुकड़ों में भी ऐसी ही लिपियाँ मिलीं। सब को इकट्ठा कर, यथाशक्ति उनका अनुबाद करके, उक्त साहव ने वाइविल-पुरातत्त्व सम्वन्धिनी सभा (Biblical Archæological Society) में महात्मा ग्लाडस्टन आदि श्रोतागण के सामने एक वक्तृता दी। उसमे उन्होंने अपनी जाँच का सब वृत्तान्त वर्णन किया। दूसरे दिन एक दैनिक समाचारपत्र (Daily Telegraph) में पत्थरों की लिपि का सारा अनुवाद प्रकाशित हुआ; और, उस पत्र के सञ्चालकों ने पण्डित-प्रवर स्मिथ साहव को असीरिया-प्रदेश में जाकर जाँच करने के लिए १००० गिनी देने का वादा किया। म्यूज़ियम से पूरी तनख़ाह पर छुट्टी पाकर स्मिथ साहव एशियाई टर्की में जाकर कुछ दिन रहे। वह वहुत कुछ जाँच करके वाविलन, निनेवा आदि नगरों के खँडहरों से स्थानीय पुरातत्त्व के सम्वन्ध में विशेष प्रमाणों के साथ वहुत सी जानकारी हासिल कर आये हैं। उन पत्थरों की कई लिपियाँ और वाइविल के कुछ अंश विलकुल मिलते हैं। ऐसी लिपियों का अनुवाद और उससे मिलते हुए वाइविल के अंश आगे उद्धृत किये जाते हैं। प्राच्य-पुरातत्त्व

के पण्डित आक्सफ़ोर्ड के प्रोफ़ेसर सेईस (Professor Sayce) ब्रिटिश म्यूज़ियम के प्राच्य-पुरातत्त्व की खोज करने वाले मिस्टर स्मिथ और पिन्चेस (Mr. Pinches), इन तीन पण्डितों ने पत्थर के टुकडों की लिपियों का अनुवाद किया है। लन्दन के अन्तर्गत हाईवरी न्यूपार्क कालेज के प्रिन्सिपल प्रवीण भूतत्त्ववेत्ता वन्धुवर डाक्टर किन्स महोदय (Revd. Dr Samuel Kinns, Ph D, F. R S., &c., Principal, Highbury Newpark College) ने नीचे के नक़्शे को तैयार किया और मुझे अनुग्रह-पूर्वक अपनी पुस्तक मे प्रकाशित करने को दिया है। पत्थर के टुकड़ों मे जो वृत्तान्त है वह नूह का निज का वर्णन है।

पत्थर की लिपि का अनुवाद	वाइविल की वात।
* (क) "घरों को तोड़ डालो, जहाज़ वनाओ"।	(क) "तुम गोफर-काठ का एक जहाज़ तैयार करो"। (जेनिसिस ६—१४)
* (ख) "रात को मैं आकाश से भयानक वृष्टि भेजूँगा"।	(ख) "देखो, मैं पृथ्वी के ऊपर वहिया लाऊँगा, सव जीवों का नाश करने के लिए"। (जेनिसिस ६—१७)
(ग) पृथ्वी डूव गई।	(ग) पृथ्वी जलमय हो गई, जल क्रमशः वढ़ने लगा। (जेनिसिस ७—१८)
(घ) समुद्र सूखने लगा। तूफ़ान और वहिया मिट गई।	(घ) समुद्र का फुहारा और आकाश का झरोखा वंद हुआ, वर्षा थमगई। (जेनिसिस ८—२)

* ये नूह के प्रति भगवान् की आज्ञायें हैं।

पत्थर की लिपि का अनुवाद	बाइबिल की बात
* (ङ) खिड़की खोली, मुख में प्रकाश लगा ।	(ङ) चालीस दिन बाद नूह ने जहाज़ की खिड़की खोली । (जेनिसिस ८—६)
* (च) कबूतर भेजा, कबूतर गया, मगर लौट आया । उसे आश्रय नहीं मिला; इस लिए लौट आया ।	(च) नूह ने कबूतर भेजा, यह देखने के लिए कि कहीं जल के सूखने से मिट्टी बाहर निकली है कि नहीं । कबूतर ने पैर रखने की जगह नहीं पाई, इसीसे जहाज़ में लौट आया । (जेनिसिस ८—९)
* (छ) पहाड़ की चोटी पर मैंने एक वेदी बनाई ।	(छ) नूह ने प्रभु के लिए वेदी बनाई और वहाँ दूध का नैवेद्य लगाया । (जेनिसिस ८—२०)

देखो अँगरेज़ों की मुस्तैदी ! ज्ञान की बढ़ती के लिए, रुपया तो कोई चीज़ ही नहीं, वे अपना ख़ून और जान तक देने को तैयार हैं। हमारे देश के महापुरुष लोग रुपये की थाती को छाती से लगाये अथाह निद्रा में डूबे पड़े हैं; और, अँगरेज़ लोग वैपार के लिए, ज्ञान के लिए, अपनी जाति के लिए, लोक-हित के लिए दोनों हाथों से चारों ओर रुपये लुटा रहे हैं । इस तरह जी खोल कर अच्छे कामों में—लाभ के कामों में—रुपये लुटाने से उन की सम्पत्ति बढ़ने के सिवा घटती नहीं है । वे जितना ख़र्च करते हैं उस का दस गुना धन अनेक उपायों

* ये नूह की निज की बातें हैं ।

से उनके घर मे आता है। विधाता का नियम ही यह है कि "जो एक देता है वह हज़ार पाता है"। दुःख की बात है कि हमारी सहानुभूति, उद्यम, उत्साह, सद्व्यय आदि सब कुछ अपने घर की दीवार के घेरे में ही हुआ करता है। हाय! कब हम लोग सङ्कोच, सङ्कीर्णता, भयानक प्रबल कुसंस्कार आदि के अत्याचारों से छुटकारा पाकर पृथ्वी भर को अपना घर और मनुष्यमात्र को अपना भाई समझ सकेंगे—शुद्ध सरल हृदय से उन्हें गले लगा सकेंगे।

इस म्यूज़ियम के एक हिस्से मे मिसर देश की बहुत सी ममी (Mummy)—रोग़न की हुई लाशें—रक्खी हैं। उन मे कोई कोई तीन हज़ार बरस की पुरानी है।

एशिया-भवन (Asiatic Saloon) मे कुछ हिन्दुओं के देव-देवियों की मूर्त्तियाँ रक्खी हैं। वे धातुओ की और पत्थर की बनी हैं। प्रयाग के निकट, यमुना के किनारे, मिली हुई एक भारी कछुए की मूर्त्ति इस घर मे रक्खी हुई है। यह एक मूल्यवान् पत्थर की बनी है।

अनेक देशों की तरह तरह की चीज़ों का घर (Ethnological Gallery)। इस गेलरी के उस अंश मे, जो भारत-सम्बन्धी है, बहुत सी भारत की चीज़ें हैं। उनमें पाँच तरह तरह की मुँहनालें, दो जोड़ा खड़ाऊँ, चमरौधा जूता, एक भारी नारियल का हुक्का और तबला तक है।

मिसर, ग्रीस, रोम आदि बहुत स्थानों के खुदाई, नक़ाशी और थवईगीरी की कारीगरी के अनेकों नमूने यहाँ रक्खे हुए हैं। वे इतने हैं कि उनकी गिनती करना ही कठिन है। इनके सिवा एक 'हाल' में प्राचीन बहुमूल्य रत्नो का इतना संग्रह है कि उस के दाम आँकना सर्वथा असम्भव है।

ब्रिटिश म्यूज़ियम का पूरा वृत्तान्त वतला सकना तो मनुष्य की शक्ति से परे है। लन्दन मे आकर यदि कोई केवल इस म्यूज़ियम की ही सैर करके अपने देश को लौट जाय तो भी उसके हृदय में सदा अँगरेज़-जाति का अतुल गौरव अंकित रहेगा। एक पुस्तकालय (Library) ही उसे आश्चर्य से अभिभूत करदेगा। इस पुस्तकालय की सार्वभौमिकता—सर्वव्यापकता—अतुलनीय है। उसका पता इतने ही से लगजायगा कि जो जिस देश की भाषा है उस देश के सिवा, उस भाषा के, उतने ग्रन्थ और कहीं नहीं मिलेंगे जितने कि इस पुस्तकालय में हैं।

ब्रिटिश-म्यूज़ियम का पुस्तकालय और पाठ-भवन (British Museum Library and Reading Room)। इस पवित्र ज्ञान-मन्दिर में प्रवेश करने के लिए मंजूरी लेनी पड़ती है। टिकिट मिलने पर, दिखलाने के लिए नियुक्त एक कर्म्मचारी अपने साथ भीतर ले जाता है। इस पाठ-भवन मे प्रवेश करते ही मैं तो एकदम भौचक सा रह गया। परिचालक पंडे ने इस पुण्य-तीर्थ का कुछ माहात्म्य वर्णन किया। कई दिन वाद टिकिट पा लेने पर मैं भी इस लाइब्रेरी का पाठक होगया। कई वर्षों तक वरावर लन्दन में रह कर और नित्य इस लाइब्रेरी में आकर मैंने जो कुछ इस पुण्य-धाम के सम्वन्ध में अभिज्ञता प्राप्त की है उसे नीचे लिखता हूँ।

इस गोल घर का घेरा ३०० हाथ है और इसका गुम्वद ७० हाथ के लगभग ऊँचा है। रोम के गोल-मन्दिर पन्थियन (Pantheon) को छोड़ कर पृथ्वी पर इतना ऊँचा गुम्वद दूसरा नहीं है। सन् १७५९ मे यह पाठागार स्थापित हुआ था। किन्तु यह नवीन लम्वा चौड़ा मकान सन् १८५७ ई० में डेढ़ लाख पौण्ड रुपया ख़र्च करके वनवाया गया है। पहले (सन् १७५९ में) प्रसिद्ध कवि ग्रे (Poet

Grey) और अन्य चार सज्जन केवल इसके नियमित पाठक थे। किन्तु वर्त्तमान समय मे नित्य के नियमित पाठकों की औसत संख्या ६०० से अधिक है। इन नियमित पाठकों मे बहुत से पंडित, ज्ञानी और ग्रन्थकार हैं। ग्लाडस्टन, डिजरेले आदि देश (इँगलेड) के सब बड़े आदमी इस लाइब्रेरी के नियमित पाठक थे। लिबरल वृद्ध राज-मन्त्री गण इस समय भी बीच बीच में आकर पुस्तकावलोकन करते हैं। ऐसा गंभीर दृश्य पृथ्वी के और किसी स्थान मे देख पड़ता है या नहीं—इसमे सन्देह है।

२० लाख से भी अधिक पुस्तकों की दीवार से घिरे हुए घर के भीतर न्यूनाधिक ५०० आदमी (पाठक और कर्म्मचारी) मन लगाये अपना अपना काम कर रहे हैं। ज़रा सा भी शब्द नहीं होता—मेज़ो पर रबर की चादर बिछी हुई है। बिना मूल्य के ज्ञान बाँटने के लिए ऐसा सुभीता और आराम की जगह पृथ्वी भर पर और नहीं है। इसमे बिजली की रोशनी और गर्मी पहुँचाने का बहुत ही अच्छा बन्दोबस्त है। बहुत से कर्म्मचारी घर के नौकर की तरह पाठकों के लिए पुस्तके निकाल निकाल कर, ला ला कर, दे रहे हैं। लिखने पढ़ने के लिए स्याही, क़लम, ब्लाटिंग—काग़ज़, टेबिल, गद्दोदार कुर्सी, पढ़ने की पुस्तक सामने खोल कर—रखकर—आराम के साथ पढ़ने के लिए एक प्रकार का आधार (Lectern), अन्यान्य ग्रन्थ रखने के विशेष स्थान (Shelf) आदि का बहुत अच्छा प्रबन्ध है। यद्यपि पुस्तकों की संख्या मे, पृथ्वी भर में, इस पुस्तकालय का दूसरा नंबर है—पेरिस का प्रधान पुस्तकालय सर्वोत्तम है—तथापि प्रबन्ध के सम्बन्ध में यह उससे भी अच्छा है। प्राय: ५००० छपी हुई पुस्तक-सूची (Catalogue) ढंग से सजाई हुई रक्खी हैं। उनसे छाँट कर, पुस्तक का नाम लिख कर टिकिट देते ही दस मिनट के बाद वह

पुस्तक पाठक के सामने आजाती है। पेरिस के पुस्तकालय में कोई कोई ग्रन्थ दिन भर खोजने से भी नहीं मिलता। इसका कारण यही है कि फ़ान्स और इटली आदि अन्यान्य देशों की यूरोपियन जातियों के लोग बहुत कुछ हमारे ही समान गप्पी और गोलमालानन्द होते हैं। और अँगरेज़ एक अद्भुत जीव हैं! ये एकता में सबसे बढ़े हुए, धीर, स्थिर, शान्त, एकाग्र, कर्म्मनिष्ठ—'कल' की पुतली की तरह हमेशा हर घड़ी ठीक हिसाब से चलने और काम करने वाले हैं। ये लोग बाल भर भी नियम का उल्लङ्घन करना नहीं जानते। ये मनुष्य इस छोटे से टापू में ही देखने को मिलते हैं। पृथ्वी के अन्य स्थान में इनके दर्शन दुर्लभ हैं। मिट्टी के असर से, ये कलियुगी भू-देव, लन्दन की सीमा पार करके, जहाँ बाहर निकले वहाँ इनकी प्रकृति बदल गई। अस्तु।

इस पुस्तकालय का प्रबन्ध सब तरह से ऐसा उत्तम है कि बहुत लोग कहते हैं—बडे बड़े आदमियों की ख़ास लाइब्रेरियों मे भी ऐसा आराम और सर्वाङ्ग-सुन्दर व्यवस्था नहीं है। इस पुस्तकालय के संग्रह में १५००० हिब्रू भाषा की पुस्तके, ७००० चीनी भाषा के ग्रन्थ, १५००० साधारणतः पूर्वी भाषाओं के ग्रन्थ, १२००० स्वर-सङ्गीत-विषयक पुस्तकें, ७००० बाजों के सुर से सम्बन्ध रखने वाली पुस्तके, १२०००० मान-चित्र (नक़शे), ५०००० यूरोप की हस्तलिपियां, १०००० एशिया की हस्तलिपियाँ और ७५००० सनद आदि (Charters and Rolls) हैं। अँगरेज़ी ग्रन्थों के सम्बन्ध मे तो केवल इतने ही से अनुमान कर लिया जा सकता है कि एक स्मिथ-नाम के २५०० ग्रन्थकारों की पुस्तकें यहाँ जमा की गई हैं। हर साल २५००० से ऊपर नई पुस्तकों का यहाँ संग्रह किया जाता है। केवल ब्रिटिश-द्वीप में ही साल में ६००० के लगभग नये ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं

या पुराने ग्रन्थों के नवीन संस्करण निकलते हैं। दो हज़ार से ऊपर अख़बार भी निकलते हैं। यहाँ के आईन के अनुसार सबकी एक एक कापी इस पुस्तकालय में अवश्य आती है। इसके सिवा दाम देकर देश-विदेश से नई और पुरानी किताबें भी ख़रीदी जाती हैं। कर्म्म-चारियों की तनख़ाह, घर की मरम्मत और सफ़ाई आदि का ख़र्च और पाठकों के आराम के प्रबन्ध का ख़र्च है। इसके सिवा जिल्द बँधवाने का सालाना ख़र्च ६०००) से १००००) के भीतर है। हर-साल १००००) की नई पुस्तकें ख़रीदी जाती हैं। हस्त-लिपियों के संग्रह करने में हर साल १००००) रु० ख़र्च किया जाता है। हर साल टिकिट, सूचीपत्र आदि छपवाने में ३००० पौण्ड की लागत आती है।

जब तक २१ बरस की अवस्था नहीं होती तब तक इसका कोई नियमित पाठक नहीं हो सकता। लन्दन के किसी निज के घर वाले या जाने-पहचाने भले आदमी की सिफ़ारिश का पत्र दिखाने से पाठक को प्रवेश-पत्र मिल जाता है। खोज के प्रेमी पंडित-गण अनेक देशों से इस पुस्तकालय में पढ़ने आते हैं। सच्चे विद्यार्थी के लिए यह स्थान स्वर्ग से भी बढ़ कर रमणीय है। बहुत से लोग यहाँ केवल गर्म होने, हवा खाने या दिल बहलाने के लिए ही आते हैं। यहाँ बहुत से स्त्री-पुरुषों की पहली भेंट से लेकर ब्याह तक हो गये हैं। यह मेरी आँखों देखी बात है। कितने ही लोग यहाँ पुस्तक-प्रणयन करते हुए अपने अध्ययन का फल समाचार-पत्रों और मासिक पत्रों में लेखरूप से प्रकाशित कर मज़े में अपनी जीविका चला लेते हैं। इसके सम्बन्ध में अब मैं केवल एक अँगरेज़ पंडित का मन्तव्य नीचे उद्धृत करके अपने वक्तव्य को समाप्त करता हूँ। उक्त विद्वान् पहले इसे "Central home of English culture," "a veritable

earthly paradise to the serious student" आदि नाम देकर अन्त में कहते हैं—

"There is no end to all that might be written of the strange people who congregate here, of the little stories enacted every day. Friendships are begun, and sometimes ripened into love, under this solemn room. Lives earnest as well as frivolous are spent here; and the conclusion of the whole matter is that the great outside world is not of such infinite variety as we had supposed All its greatnesses, its weaknesses, its affections, its insincerities, and its pathos—all may be seen and studied in the persons of those who read books or make them, at the British Museum"

जो कुछ हो, इस ज्ञान-मन्दिर का पाठक होना—इस महातीर्थ का यात्री होना—सौभाग्य की बात है, इसमें सन्देह नहीं । धन्य-धन्य ! बलिहारी-बलिहारी ! आदि साधारण किन्तु आन्तरिक शब्दों से ही मैं इस म्यूज़ियम का वर्णन समाप्त करता हूँ ।

मुसलमान-साम्राज्य के अन्त मे अँगरेज़-राज्य के अभ्युदय की बात इस समय के पाठकों के लिए अवश्य रोचक और कौतूहल तथा आदर की चीज़ होगी—यह जान कर, यहाँ पर, मैं म्यूज़ियम के पुस्तकालय में रक्खे हुए दो सन्धिपत्रों की नक़ल नीचे दी जाती है । इनमें एक तो वह फ़रमान है, जिससे ईस्ट-इंडिया कम्पनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसे की दीवानी मिली; और दूसरा वह सन्धिपत्र है जो इसके बाद दिल्ली के बादशाह, बंगाल के नवाब नाज़िम, अवध के नवाब—वज़ीर और ईस्ट-इंडिया कम्पनी के बीच लिखा गया था । समय के फेर से कहाँ गये वे बादशाह और नवाब, और कहाँ गया वह सन्धिपत्र !!! सभी इतिहास के सपने की सी घटनायें हो गईं । विधाता, तेरी लीला अपरम्पार है ।

पहला पत्र ।

Copy of the General Firman from the Emperor Shah Alum granting the Company the Dewanee of Bengal, Behar and Orissa. Dated the 12th August 1765

At this happy our Royal Firman, indispensably requiring obedience, is issued, that whereas, in consideration of the attachments and services of the high and mighty, the noblest of exalted nobles, the chief of illustrious warriors, our faithful servants and sincere well-wishers, worthy of our royal favours, the East India Company, we have granted them the Dewanee of the provinces of Bengal, Behar and Orissa from the beginning of the Fussul Rubby of the Bengal year 1172, as a gift and ultumgoh, without the association of any other person, and with an exemption of the payment of the customs of the Dewanee which used to be paid to the court; it is requisite that the Company engage to be security for the sum of 26 lacs of rupees a year, for our royal revenue, which sum has been appointed from the Nawab Najum-ul-Dowlah Bahadur, and regularly remit the same to the royal Sircar; and in this case, as the said Company are obliged to keep up a large army for the protection of the provinces of Bengal, Behar and Orissa, we have granted to them whatsoever may remain out of the revenues of the said provinces, after remitting the sum of 26 lacs to the royal Sircar, and providing for the expenses of the Nizamat; it is requisite that our royal descendants, the Viziers, the bestowers of dignity, the Omrahs high in rank, the great officers, the Mutsaddees of the Dewanee, the managers of the business of the Sultanat, the Jaghirdars and Croories, as well as the future as the present, using their constant endeavours for the establishment of this our royal command, leave the said office in possession of the said Company, from generation to generation, for ever and ever, looking upon them to be insured from dismission or removal, they must on no account whatsoever give them any interruption, and they must regard them as excused and exempted from the payment of all the customs of the Dewanee, and royal demands Knowing our orders on the subject to be most strict and positive, let them not deviate therefrom.

Written the 24th of Sophar, of the 6th year of the Juloos

दूसरा पत्र ।

Copy of the new agreement, or treaty jointly entered into between the Nawab Najum-ul-Dowlah, the Nawab Shujah-ul-Dowlah, the Emperor Shah Alum, and Lord Clive and the Secret Committee of Calcutta; upon the letters revoking all former treaties, and new modelling the affairs of the Company, by assuming the Dewanee Dated the 16th August 1705

(SEALED AND APPROVED BY THE EMPEROR.)

"Whereas the Right Honourable Robert Clive, Baron Clive of Plassey, Knight Companion of the Most Honourable Order of the Bath, Major-General and Commander of the Forces, President of the Council, and Governor of Fort William, and of all settlements belonging to the United Company of Merchants of England trading to the East Indies, in the provinces of Bengal, Behar and Orissa; and John Carnac, Esq, Brigadier-General, Colonel in the service of the said Company, and Commanding Officer of their Forces upon the Bengal establishment, are invested with full and ample powers, on the behalf of His Excellency The Nawab Najum-ul-Dowlah, Subahdar of Bengal, Behar and Orissa, and likewise on behalf of the United Company of Merchants of England trading to the East Indies, to negotiate, settle, and finally to conclude a firm and lasting peace with His Highness The Nawab Sujah-ul-Dowlah, Vizier of the Empire. Be it known to all those to whom it may or shall in any manner belong that the abovenamed plenipotentiaries have agreed upon the following articles with His Highness.

I.—A perpetual and universal peace, sincere friendship and firm union shall be established between H H. Sujah-ul-Dowlah, and his heirs, on the one part; H. E Najum-ul-Dowlah, and the English East India Company on the other; so that the said contracting powers shall give the greatest attention to maintain between themselves, their dominions, and their subjects, this reciprocal friendship, without permitting, on either side, any kind of hostilities to be committed henceforth from any cause, or under any pretence whatsoever, and everything shall be carefully avoided, which might hereafter prejudice the union so happily established

II.—In case the dominions of H. H. Sujah-ul-Dowlah shall at any time hereafter be attacked, H. E Najum-ul-Dowlah and the East India Company shall assist him with a part or the whole of their forces, according to the exigencies of his affairs, and so far as may be consistent with their own security; and if the dominions of H. E Najum-ul-Dowlah or the East India Company shall be attacked, H. H. Sujah-ul-Dowlah shall in like manner assist them with a part or whole of his forces; in the case of the East India Company's forces being employed in H. H. Sujah-ul-Dowlah's service, the extraordinary expense of the same is to be defrayed by him

III—H. H. Sujah-ul-Dowlah solemnly engages never to entertain or receive Cassimally Khawn, the late Subahdar of Bengal and Sumroo,

the assassin of the English, nor any of the European deserters within his dominions, nor to give the least countenance, support or protection to them He likewise solemnly engages to deliver up to the English whatever Europeans may in future desert from them into his country

IV —The King Shah Alum, shall remain in full possession of Korah and such part of the province of Illahabad as he now possesses, which are ceded to His Majesty as a royal demesne for the support of his dignity and expenses.

V —H H Sujah-ul-Dowlah engages, in the most solemn manner, to continue Bulwant Singh in the zamindaries of Banaras, Ghazipore, and all those districts he possessed at the time he came over to the late Nawab Jaffer Ally Khawn and the English, on condition of his paying the same revenue as heretofore

VI —In consideration of the great expense incurred by the East India Company in carrying on the late war, H. H Sujah-ul-Dowlah agrees to pay them fifty lacs of rupees, in the following manner, *viz*, 12 lacs in money, and a deposit of jewels to the amount of 8 lacs, upon the signing of this treaty; 5 lacs one month after, and the remaining 25 lacs by monthly payments, so that the whole amount may be discharged in thirteen months from the date hereof

VII —It being firmly resolved to restore H H Sujah-ul-Dowlah the country of Banaras, and the other districts now rented by Bulwant Singh, notwithstanding the grant of the same from the King to the East India Company; it is therefore agreed that they shall be ceded to H. H. Sujah-ul-Dowlah in the following manner, *viz*, they shall remain in the hands of the English Company with their revenues till the expiration of the agreement between the Rajah Bulwant Singh and the Company, being on the 22nd November next; after which H H Sujah-ul-Dowlah shall enter into possession, the Fort of Chunar excepted, which is not to be evacuated until the sixth article of this treaty be fully complied with

VIII —H H Sujah-ul-Dowlah shall allow the English Company to carry on trade, duty free, throughout the whole of his dominions

IX.—All the relations and subjects of H H Sujah-ul-Dowlah, who in any manner assisted the English during the course of the late war, shall be forgiven and no ways molested for the same

X —As soon as this treaty is executed the English forces shall be withdrawn from the dominions of H H Sujah-ul-Dowlah, excepting such as may be necessary for the garrison of Chunar, or for the

defence and protection of the King in the city of Illahabad, if His Majesty should require a force for that purpose.

XI.—H. H. Nawab Sujah-ul-Dowlah, H E. Nawab Najum-ul-Dowlah and the East India Company promise to observe sincerely and strictly all the articles contained and settled in the present treaty, and they will not suffer the same to be infringed, directly or indirectly, by their respective subjects; and the said contracting powers generally and reciprocally guarantee to each other all the stipulations of the present treaty.

Clive (L. S.)	Mirza Cossim Khawn.
John Carnac (L S)	Rajah Shetabroy.
Sujah-ul-Dowlah (L S)	Meer Masha Allah.

Signed, sealed, and solemnly sworn to, according to their respective faiths, by the contracting parties at Illahabad, this 16th day of August in the year of our Lord 1765, in the presence of us.

Edmund Maskelyne.
Archibald Swinton.
George Vansittart.

दीवानी मिलने के चार दिन बाद क्लाइव ने इस सन्धि-पत्र के द्वारा साम्राज्य का नया बन्दोवस्त करके ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी को एक प्रकार से हर्त्ता-कर्त्ता—सब का मालिक—बना लिया । बेचारे दिल्ली के बादशाह पहले ही से कुछ करते धरते न थे। इस समय कुछ थोड़ा सा साधारण अधिकार उनके हाथ में रख कर अधिकांश अधिकार और साम्राज्य अन्य पक्ष के लोगों ने आपस में बाँट लिया।

इँगलैंड बैंक (Bank of England)। पाठकगण अब प्रधान ज्ञान-भाण्डार (म्यूज़ियम और पुस्तकालय) से इँगलैंड के खज़ाने में चलिए। क्योंकि ज्ञान के बाद धन का ही दर्जा है। बल्कि साधारणतः देखा जाता है कि हम मनुष्य-गण ज्ञान की अपेक्षा धन को ही अधिक चाहते हैं। ८ बीघे ज़मीन के ऊपर इस बैंक की इमारत है। केवल ज़मीन के भाड़े का हिंसाब लगाओ तो वह सालाना ५०००० पौण्ड

होता है। लन्दन के इस अंश की ज़मीन के दाम सुन कर पाठकों को वड़ा अचरज होगा। कभी कभी ३०००० पौंड से भी ऊपर एक विस्वा ज़मीन विक्री होती है। वैंक के वुलियन खंड (Bullion Yard) का जो प्रवेश-द्वार है उस पर टेम्स (The Thames) और गंगा नदी की मूर्त्तियाँ हैं। वुलियन आफ़िस (Bullion Office) में सोना तौलने के लिए सात फुट ऊँचा और ५६ मन भारी एक तराज़ू है। वह काच के घेरे के भीतर रक्खा हुआ है। यह तराज़ू इतना वड़ा और भारी होने पर भी ऐसा सच्चा है कि १/८०० तोले तक की कमीवेशी तक सहज ही इसमे मालूम पड़ जाती है। एक डाक-टिकिट के वोझ से ऊपर का काँटा ६ इंच नीचे झुक जाता है! पृथ्वी भर पर इसके समान दूसरा काँटा नहीं है। इसके वनने में २००० पौंड की लागत आई थी। इसका नाम है—लार्ड चीफ़ जस्टिस (Lord Chief Justice)। चाँदी तौलने के लिए और एक काँटा है। उसमें इसका इतना सूक्ष्म अन्तर नहीं जान पड़ता। उसका नाम है—लार्ड हाई चान्सलर (Lord High Chancellor)।

इस वैंक से रोज़ ५०००० किता से अधिक नोट जारी होते हैं और ५। ६ दिनों में फिर इसी वैंक मे लौट आते हैं। केवल एक नोट ऐसा है जो जारी होने के वाद १११ वरस तक वरावर वाहर ही वाहर घूमता रहा और तव अपने जन्मस्थान को लौट कर आया। पाँच पौंड से कम का नोट नहीं जारी होता। एक वार, सन् १८२८ ईसवी मे, भूल से एक पेनी, अर्थात् १०) के एक पौंड के हिसाव से, तीन पैसे से भी कुछ कम दाम का एक नोट जारी हो गया था। वह नोट वरावर ५० वरस के लगभग वाहर रह कर वैंक मे आया और उसका नीलाम भी हो गया! प्राचीन दुर्लभ चीज़ समझ कर एक साहव ने ५ पौंड देकर उसे ख़रीद लिया।

नोट जैसे बैंक में लौट कर आते हैं वैसे ही वे रद्द कर दिये जाते हैं। उसके वाद पाँच वरस तक रक्खे जाकर वे नोट जला दिये जाते हैं। केवल एक दस लाख पौंड का नोट; बैंक से सब से पहले जो ५०० पौंड का नोट वाहर निकला था वह नोट; और, एक २५० पौण्ड का नोट; ये तीन नोट वहाँ वड़े यत्न से सुरक्षित हैं। सत करोड़ सत्तर लाख से भी अधिक, एक सौ पिछत्तर करोड़ पौंड सेभी अधिक मूल्य के, ख़ारिज नोट वहाँ जमा हैं। ये नोट १४०० संदूकों में गड्डी की गड्डी तहाये हुए रक्खे हैं। इनको जोड़ कर फैलाइए तो ये साढ़े वारह सौ मील लम्बे होंगे। एक के ऊपर एक रख कर तह जमाइए तो साढ़े पाँच मील ऊँचा एक ढूह वन जायगा। अगर इन्हें बिछाइए तो ये ११६४ वीघे ज़मीन घेर लेंगे।

बैंक के ख़ज़ाने (Vault) में हमेशा वेशुमार नोटों के गड्डे और गिन्नियों की थैलियाँ भरी रहती हैं। नोटों को छोड़ कर नगद आठ करोड़ पोण्ड की गिन्नियाँ बनी रहती हैं। पृथ्वी भर में ऐसा धन-पूर्ण दूसरा बैंक नहीं है। यह बैंक "सारे बैंकों का बैंक" है। क्योंकि और और बैंकों के सञ्चालक भी अपना रुपया-पैसा और क़ीमती सामान कागज़-पत्र तमस्सुक आदि इसी बैंक में जमा कर देते हैं। बैंक की साख के बारे में बहुत कहना व्यर्थ है, केवल नीचे लिखे एक उदाहरण से ही पाठकगण समझ जायँगे। पार्लियामेंट की आज्ञा है कि एक निर्दिष्ट परिमाण से अधिक ख़ालिस सोना जो जहाँ से जब यहाँ बेचने के लिए लावेगा तव—उसी समय—बैंक को वह सोना ख़रीदना पड़ेगा। नहीं ख़रीद सकेगा तो वह "दिवालिया" समझ लिया जायगा। और उसे काम वन्द कर देना पड़ेगा! पाठक इसी से समझ लेंगे कि इँगलेंड का धन-वल कैसा है।

ऐसे ख़ज़ाने को ठग, चोर, आग वग़ैरह से वचाये रखने के

लिए पुलीस, पल्टन, विजली और पानी का कैसा वन्दोवस्त होगा, इसका अनुमान कर लेना पाठकों के लिए कुछ कठिन न होगा। मनुष्य की विद्या-वुद्धि से जितने वन्दोवस्त हो सकते हैं वे सभी वन्दो-वस्त वहाँ हैं।

आग मे जला हुआ अथवा और किसी तरह वेकाम हो गया नोट वैंक मे दाख़िल करने पर, यदि उस पर से मूल्य आदि का कुछ भी पता चला तो, वैंक उसी समय उसके रुपये दे देता है। ऐसी घट-नाये' अनेक हुई हैं।

पृथ्वी-पर्यटन के समय इँगलेड का नोट मैंने जिस देश मे दिया वही के लोगों ने आदर के साथ उसे लेकर कहा कि "यह सोने के सिक्के के समान या उससे भी अधिक है" (As good as gold, if not better.)। और अन्यान्य देशों के नोटों को उन देशों की सीमा के वाहर कोई नहीं पूछता। धन और साख में इँगलेड ऐसा ही वढ़ा-चढ़ा है!

ट्राफलगर स्क्वायर (Trafalgar Square)। इस महातीर्थ के प्रधान देवता जगत्प्रसिद्ध नौ-सेना-पति महामति नेल्सन् हैं। यहाँ का प्रधान दृश्य नेल्सन् का स्मारक एक भारी स्तम्भ है। स्थान वड़ा ही मनोहर है। महात्मा पील (Sir Robert Peel) ने इस रमणीय स्कायर को सारे'यूरोप मे सर्वोत्तम दृश्य वतलाया है। यह स्थान चारों ओर से, सव तरह से, गुलज़ार है। और वीच में महान् वीर नेल्सन् के स्मारक में उसके योग्य कई एक चिह्न हैं। वहाँ का यह दृश्य सच-मुच ही हृदय को आनन्द से उन्मत्त कर देता है। स्कायर के दक्खिनी हिस्से मे, वीच मे, नेल्सन्-स्तम्भ (Nelson Column) है। यह ज़मीन से छः हाथ के लगभग ऊँचा है। खूव चौड़े चवूतरे के चारों कोनों मे धातु-मयी चार भारी भारी सिंह-मूर्तियाँ हैं। वीच मे

२४ हाथ ऊँची वेदी है। वेदी के चारों ओर, उसके पहलों में, नील (Nile), सेन्ट विन्सेन्ट (St. Vincent), कोपेन हेगेन Copenhagen और ट्राफलगर—इन चार महायुद्धों के चित्र अंकित हैं। हर एक युद्ध में हारे हुए शत्रुओं से छीन ली गई तोपें गला कर ये मूर्त्तियाँ ढाली गई हैं। इस वेदी के ऊपर ११६ हाथ ऊँचा एक स्तम्भ है और उसकी चोटी पर पराक्रमी महावीर नेल्सन् की धातु की मूर्ति खड़ी हुई है।

स्तम्भ के निकट उपस्थित होकर, उस वेदी के पहलों में बनी हुई मूर्त्तियों को—जो जीती जागती जान पड़ती थीं—देख कर, मुझ से आँसुओं की धारा बहाये बिना नहीं रहा गया। हृदय जैसे उछलने लगा और आनन्द के आँसुओं की झड़ी लग गई। उस समय, उस स्तम्भ को देख कर, मेरे मन में जो भाव उठे उनका अनुभव करके ही विशेष सुख भोग किया जा सकता है; वे भाव—वह सुख शब्दों से प्रकट करना असम्भव ही है। जान पड़ता है, उन भावों को प्रकट करने लायक़ शब्द और शक्ति संसार में न होने के कारण कहीं उन सुकोमल भावों की बेइज़्ज़ती न हो, इसीलिए विधाता वैसे हृदय के धन को हृदय के गहरे से गहरे स्थान मे—साधारण आँखों की आड़ में विरलावस्था में रखना चाहता है। जो लोग इस संसार मे उस जगह पहुँचने मे समर्थ हैं वे अच्छी तरह समझ सकेंगे; किन्तु साधारण लोगों के आगे उस हृदय के धन को—उन सुन्दर भावों के सुख को—प्रकट करना निपट असम्भव है। वे भाव इतने सुकुमार हैं कि बाहर की ठंडी हवा को वे ज़रा भी नहीं सह सकते। मतलब यह कि अँगरेज़ों की वीरता, नेल्सन की शूरता-वीरता, धैर्य, महान् उच्च हृदय और सब,से प्रधान कठोर कर्त्तव्य-परायणता, तथा गुणी के गुण का मान करने में अँगरेज़ों की उदारता और तत्परता ने एक साथ मेरे हृदयाकाश को छा लिया।

किन्तु जब मैंने अपने उन हृदय के भावों पर पूर्ण रूप से दृष्टि डाली तो मुझे स्पष्ट देख पड़ा कि मेरे हृदय के भीतर उन भावों का एक अंकुर भी नहीं है। दूसरे व्यक्ति में उन भावों का भारी विकास देख कर भी, सतृष्णा-विस्मय का अनुभव तो दूर रहा, मैं उनसे उसी तरह उदासीन रहता हूँ जैसे अन्धा आदमी अपने सामने के सुन्दर दृश्य से, देखने की शक्ति न होने के कारण, उदासीन रहता है। मेरे मन पर उन मे से एक की भी, ज़रा सी भी. छाप नहीं पड़ती। यह ठीक भी था। एक विचित्र चित्र को देख कर चित्रकार को जैसी प्रशंसा-पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त होगी वैसी प्रसन्नता—वैसा आनन्द—क्या सब लोगों को मिल सकता है? कभी नहीं। सब को वैसा अधिकार ही कहाँ है? हो सकता है कि ज्योतिष के अद्वितीय पण्डित भास्कराचार्य ने और रामू मोची ने किसी रात्रिको एक ही समय आकाश की ओर देखा हो, किन्तु उस ग्रह-नक्षत्र-मण्डित आकाश-मण्डल को देख कर दोनों के मन मे जिन भावो का उदय हुआ होगा उनमे आकाश और पाताल का अन्तर है। ऐसे ही सब बातों मे समझ लीजिए।

किन्तु जो भाव हम मे सोया हुआ है, उसकी जीती जागती मूर्त्ति अगर कहीं देख पड़ती है—अपने मन के मनुष्य की प्रभापूर्ण सत्ता के सामने हम जब उपस्थित होते हैं, अथवा सोलहों आने अपने मन का काम कहीं देख पाते हैं, तब हृदय उछल पड़ता है, उतनी देर के लिए वह जैसे पूर्ण हो जाता है। जान पड़ता है, जैसे कुछ गँवा दिया था, कोई बहुत प्यारी चीज़ खोगई थी, सो वह एकाएक जैसे किसी दैवी शक्ति से फिर हाथ लगगई। उस समय स-प्रेम-विस्मय (Admiration), जिस की जगह साधारणतः 'प्रशंसा' शब्द का व्यवहार करते हैं, शरीर और मन को पुलकित कर देता है, मुखमण्डल पर प्रफुल्ल ज्योति झलका देता है, और हृदय के हर परदे से "वाह वाह, बलिहारी बलिहारी"

कहला देता है। ऊँचे स्वर से, सौ सौ वार, हज़ार हज़ार वार, "धन्य धन्य" कहने पर भी सन्तोष नहीं होता। जी में यही आता है कि फिर भी कहे ही जायँ; अभी उसकी पूर्ण प्रतिष्ठा नहीं हुई—यथोचित सम्मान नहीं दिखाया गया।

प्रेम विस्मय का अनुगामी है। विस्मय को आगे किये विना प्रेम कभी नहीं आता। हम में जो बात थोड़ी सी है, पर हम चाहते हैं कि वह बहुत सी हो, उस बात को हम जहाँ या जिस में यथेष्ट अधिक देख पावेंगे तो भीतर ही भीतर विस्मित होंगे। हमारा हृदय उस ओर विना किसी संकोच के आपही आकृष्ट होगा। यथार्थ 'चाहना' यही है। ऐसी ही जगह पर हृदय का आकर्षण होता है। जी खोल कर जिसके गुण हम गा नहीं सकते उस को पाने का हमें अधिकार ही क्या है? हमें जिसकी उपलब्धि नहीं हो सकती, अथवा यों कहो कि हम जिसका अनुभव नहीं कर सकते उस पर हमारा हक़ जमाना अत्यन्त असम्भव है। भाव-राज्य का यहा कठिन नियम है। और एक वात है। प्रेममय जगदीश्वर के राज्य में प्रेम के सिवा या प्रेम से वढ़ कर ऐसी कौन शक्ति हो सकती है जिसके द्वारा मनुष्य देवतों के समान उन्नति कर सकता है? एक प्रेम में ऐसी शक्ति है कि वह अन्य शक्तियों को परास्त कर देता है—वाधा-वन्धनों को दूर हटा देता है। प्रेम का ऐसा ही बल है—प्रेम का ऐसा ही प्रभाव है। ऐसा परम तेजस्वी प्रेम भी 'विस्मय' का अनुगामी या वशवर्त्ती है! इस स्वर्गीय वृत्ति का और एक नाम है औदार्य'; क्योंकि असल में केवल इसी के द्वारा हृदय की सङ्कीर्णता दूर होकर विचार ऊँचे या उदार होते हैं। जो लोग विशुद्ध ज्ञान की प्रत्याशा में, यथार्थ विद्यार्थी के भाव से, अपने ही हृदय के भीतर प्रवेश—अर्थात् मनोनिवेश—करते हुए, न्याय के वशवर्त्ती हो कर, अपने हृदय की वृत्तियों का विश्लेपण करने की चेष्टा

करते हैं वेही विवेक के द्वारा अनुमोदित उल्लिखित बातों की सचाई समझ कर उन्नति के अधिकारी बनते हैं।

सब प्रकार से हृदय को उन्नत बनाने वाली सप्रेम-विस्मय-वृत्ति (Feeling of admiration) को जबसे हमने गँवा दिया तभी से हमारी यह दुर्दशा हुई! यह तो ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि किस समय हमने उसे गँवाया; लेकिन यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि अपने आर्य पितृपुरुषों के प्राचीन ज्ञान, धर्म, आचार-व्यवहार, नियम आदि को छोड़ कर वर्त्तमान प्रथा के अनुसार अनेक कुरीतियों के फेर मे पड़ने के बहुत पहले ही से इस अमूल्य वृत्ति को गँवा कर हम आदर्श-हीन जीवन बिता रहे हैं। इस समय हम किस अवस्था में आपड़े हैं, सो सभी जानते हैं; अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। "शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि।" या "दूध और पानी को अलग करने वाले हंस की तरह सब जगह से केवल गुण-ग्रहण करना चाहिए।" आदि उच्च श्रेणी की नीतियाँ न-जाने किस कूड़े-करकट के ढेर के नीचे दबी पड़ी हैं। दो-चार शताब्दियों में भी उनके फिर पाने की कोई आशा नहीं है। इस समय तो हम लोगों में परस्पर जैसे इसी बात की होड़ लगी हुई है कि पराये दोषों को छाँट छाँट कर ग्रहण करने मे और दूसरों की बुराइयाँ खोजने में कौन कहाँ तक नीचे गिर सकता है! हम लोगों मे जैसे इसी बात की लाग डाँट चल रही है कि अपनी झूठी बड़ाई और दूसरों के गुणों की ओर से आँख फेर कर उनकी झूठी निन्दा करके अपने सर्वनाश की राह को कौन कितना साफ़ कर सकता है! व्यक्तिगत सांसारिक नीच स्वार्थपरता को चरितार्थ करने के उद्देश्य से, जो जितना ही गलेबाज़ी के ज़ोर से मतमतान्तरों और कुरीतियों का प्रचार करता हुआ आपस में दारुण भेदभाव को दृढ़ करके घृणा, द्वेष

और डाह फैलाने में सफलता प्राप्त करता है वह उतना ही श्रेष्ठ समझा जाता है ! निकृष्ट दुष्टता के द्वारा जो जितनी जल्दी 'विश्व-निन्दक' की उपाधि प्राप्त कर सकता है वह उतना ही बहादुर समझा जाता है ! हाय, जिस स्वार्थपरता या खुदगरज़ी को आर्य्य ऋषिगण अत्यन्त निन्दित और नीचों का काम बता गये हैं वही इस समय 'भारत' के बाज़ार में खूब काम की चीज़ समझी जा रही है—उसकी खपत भी बहुत है । "गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः" इसी वाक्य का प्रतिपादन अगर वर्त्तमान भारत करता तो भी वैसे आक्षेप की कोई बात न थी । किन्तु यहाँ तो और ही मामला है । अवनति के अनिवार्य और ज़ोरदार प्रवाह के आगे कहीं भी खड़े होकर ज़रा दम लेने का उपाय नहीं है । उस प्रबल प्रवाह ने इतने नीचे—इतने गहरे अन्धकार में—हमें ले जा कर पटका है कि हमारी हिये-कपार की आँखें बेकाम हो गई हैं; कुछ नहीं सूझता । वर्त्तमान भारत को गुणों की निन्दा, अवगुणों की प्रशंसा, सत्य के सिर पर लात मारने और असत्य का सब तरह से आदर करने का ऐसा अभ्यास हो गया है कि इन बातों को बहुत से लोग हिन्दुस्तानियों का जातीय स्वभाव कहने लगे हैं । मुझे नहीं मालूम कि मनुष्य की इससे अधिक और क्या अधोगति हो सकती है । देश की इस हृदय-विदारक शोचनीय अवस्था पर विचार करने से अवश्य ही सहृदय मनुष्य के आगे निराशा का घोर अन्धकार छा जायगा और दुःख के मारे हृदय फटने लगेगा ! पृथ्वी भर के पैरों के नीचे पड़ कर इस घृणित लाञ्छित जीवन की रक्षा करने से, अपना या देश का, क्या लाभ है ? अब तो यह देश की दुर्दशा—दुराचार का दौरात्म्य—नहीं देखा जाता । पृथ्वी भर के और लोग फुर्ती और प्रसन्नता के साथ हँसते हैं, खेलते हैं, केवल हम ही शोकाभिभूत और उदास हैं ! फिर भी मज़ा यह कि हम

अपने इस दुःख को दूर करने की, यहाँ तक कि अपनी दुर्दशा को समझने की भी, चेष्टा नहीं करते ! बिलकुल ही मुरदों के समान अचेत हो रहे हैं !

हे भगवन् ! कृपा करके हमारा मोह दूर करिए। केवल आप ही का आसरा या सहारा है। आप के दयामय नाम पर विश्वास और सत्य-स्वरूप की ओर लक्ष्य स्थिर करने के सिवा हमारे उद्धार का और कोई उपाय नहीं है। मैं भारत की माताओं के चरणों पर सिर रख कर उनसे यही प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने पुत्रों को रोज़ दूध पिलाते समय उनके कानों में इस शोक-समाचार की ख़बर कर दें, वर्त्तमान विपत्ति से उद्धार के लिए उन के हृदयों में सत्यानुराग भर दें। पाठकगण, हार्दिक शोकोच्छ्वास के कारण मैं इधर बहुत बढ़ आया। इसके लिए मैं आपसे क्षमाप्रार्थी हूँ।

यह स्तम्भ जिन महापुरुष की अक्षय कीर्त्ति की घोषणा कर रहा है उनका वृत्तान्त बहुत लोगों को मालूम है। मैं यहाँ पर उनके जीवन की दो एक बातें और मरने के समय का हाल लिख कर यही स्मरण कराने की चेष्टा करूँगा कि किन किन सद्गुणों के कारण वह एक श्रेष्ठ अँगरेज़ थे। महाशय नेल्सन लड़कपन से ही पूर्ण कर्तव्य-परायण थे। भय को तो वे जानते ही न थे कि कैसा होता है ! लड़कपन में एक दिन नेल्सन ने अपनी नानी से पूछा था—"नानीजी, मैंने भय को कभी नहीं देखा, भय किसे कहते हैं ?" नेल्सन का शरीर दुर्बल, काम न करने लायक़ और अस्वस्थ रहने पर भी उन्होंने हठ करके अपने मामा की मातहती में जंगी जहाज़ में नौकरी कर ली। समुद्र ही उनकी शिक्षा का स्थान, उनके कार्य का क्षेत्र और गौरव की लीला-भूमि हुआ। अन्त को ट्राफलगर के महायुद्ध में, समुद्र के बीच, कर्तव्य का पालन करते करते महान् वीर के योग्य महत्त्व को प्रकट करने के

उपरान्त उन्होंने उज्ज्वल कीर्त्ति के प्रकाश में, दीप्तिमान् यश के दिव्य आलोक में, सुस्थ सबल और शान्त चित्त से प्राण-त्याग किया। नेलसन हमारे सगे नहीं थे, हमारे परिवार के नहीं थे। मगर इस जीवन में मैंने जब उनके मरने के समय के वाक्यों को पढ़ा है तब अपने आँसुओं को नहीं रोक सका। उनकी वे बातें ऐसे ही ऊँचे दरजे की और ऐसी ही हृदय पर असर डालने वाली हैं। नेलसन के मरने के समय का वृत्तान्त, संक्षेप में, नीचे लिखा जाता है।

सन् १८०५ ईसवी के अक्तूबर महीने की २१ वीं तारीख़ को स्पेन के दक्षिण-पश्चिम किनारे पर ट्राफलगर अन्तरीप के सामने स्पेन-राज्य के बेड़े (Fleet) के साथ सम्मिलित नेपोलियन का भेजा हुआ फ़्रांस का बेड़ा नेलसन के द्वारा छिन्न-विच्छिन्न होकर हार गया। इससे पहले काल्वी (Calvi) के युद्ध में नेलसन की एक आँख नष्ट हो गई थी। टेनरिफ़ (Teneriffe) के युद्ध में उनका दाहना हाथ भी बेकाम हो चुका था। अब की बार सुप्रसिद्ध ट्राफलगर के युद्ध मे ब्रिटिश-गौरव की रक्षा करते हुए महावीर नेलसन ने समुद्र के भीतर अपने प्राण भी दे दिये। घोर युद्ध हो रहा था। सेनापति नेल्सन कार्टर डेक (Quarter deck) के ऊपर टहल रहे थे। एकाएक शत्रुओं के जहाज़ से एक गोली आकर उनकी पीठ मे घुस गई। उस समय १ बज कर १५ मिनिट हुए थे। उनके असिस्टेन्ट कप्तान हार्डी (Captain Hardy) ने पीछे फिर कर देखा कि घायल होकर गिरे हुए वीर नेल्सन को तीन जने पकड़ कर उठा रहे हैं। हार्डी साहब झटपट झपट कर उनके पास आ गये।

हार्डी—मैं आशा करता हूँ कि आप के गहरी चोट नहीं लगी होगी।

नेल्सन—चोट गहरी नहीं है हार्डी।

हार्डी—नहीं, चोट तो गहरी ही जान पड़ती है।

नेल्सन—गोली मेरी पीठ की हड्डी तोड कर भीतर घुस गई है।

नेल्सन के हृदय में ऐसा अमानुषिक वल था कि उस समय भी वह जहाज़ की व्यवस्था के सम्वन्ध में कर्मचारियों को आज्ञा देते रहे। आज्ञा देने के वाद जेब से रूमाल निकाल कर उन्होंने मुँह पर डाल लिया, जिसमें युद्ध में लगे हुए योद्धा लोग उन्हे न पहचान सकें; शायद उनकी यह अवस्था देख कर शोक से उनका उत्साह कम न हो जाय। कई अफ़सर और ४० सिपाही उसी समय घायल हुए और नीचे लाये गये। डाकृर वेटी (Surgeon Beatty) उस समय उनकी देखरेख मे उलझे हुए थे। उसी समय उन घायलों मे से अधिकांश लोग चिल्ला कर कहने लगे कि "डाकृर साहव! हमको क्या देख रहे हो? लार्ड नेलसन यहाँ घायल पड़े हैं!", "डाकृर साहव! सेनापति घायल हो गये हैं!"। डाकृर साहव झटपट नेलसन के पास आये।

नेल्सन—"आः मिस्टर वेटी मुझे वारी से देखना। और तुम देख कर ही क्या करोगे? मैं तो कुछ ही घड़ियों का और मेहमान हूँ। गोली मेरी पीठ छेद गई है।"

डा० वेटी—"मैं आशा करता हूँ, आप जैसा सोच रहे हैं वैसी चोट नहीं होगी। आशा है, आप इस महाविजय का गौरव भोगने के लिए अभी वहुत दिनों तक जीते रहेगे।"

इसी समय शोकविह्वल पादरी डाकृर स्काट (Revd Dr. Scott) के पास आने पर नेल्सन ने कहा—"डाकृर, मैं तो तुम से पहले ही कह चुका हूँ। डाकृर, वस अव मेरा अन्तकाल निकट है।"

घाव की जगह की जाँच हो जाने के वाद डाकृर के प्रश्न के उत्तर मे नेल्सन ने कहा—"हर साँस पर हृदय के भीतर जैसे रह रह कर ख़ून उछलता है। कमर के नीचे का हिस्सा सुन सा हो गया है।

साँस लेने और छोड़ने में कष्ट जान पड़ता है और रीढ़ के भीतरी हिस्से में भारी जलन और पीड़ा है।"

इन लक्षणों से डाक्टर को निश्चय हो गया कि हालत अच्छी नहीं है।

शत्रुपक्ष का एक एक जहाज़ नष्ट होता जाता था और नेल्सन के जहाज़ "विजया" ('Victory') के सिपाही और माँझी उच्च स्वर से आनन्द-ध्वनि करते जाते थे। एक बार ऐसी आनन्द-ध्वनि के सम्बन्ध में नेल्सन ने पूछा। हाल मालूम होने पर मरने की घड़ी देख रहे वीर नेल्सन के प्रशान्त मुखमण्डल पर ख़ुशी की लाली दौड़ गई। धीरे धीरे प्यास और जलन बढ़ने लगी। केवल 'जल, जल' और 'हवा, हवा' की रट लग गई।

इस विषम जलन और पीड़ा की हालत में ही एक फ़ौजी कर्मचारी बर्क (Burke) ने आकर ख़बर दी कि "प्रभो! (My Lord) शत्रु-पक्ष पूर्ण रूप से परास्त होगया। मैं आशा करता हूँ कि आप जीते रह कर स्वयं यह सुख का समाचार देशवासियों को सुनावेंगे"।

इसके उत्तर में नेल्सन ने कहा—"तुम्हारी यह आशा पागलपन है बर्क। मेरे इस समय बड़ी जलन और पीड़ा हो रही है। मगर बहुत शीघ्र सब समाप्त हो जायगा"।

पा० डा० स्काट—"आप निराश न हों। मुझे आशा है कि ईश्वर और एक बार आपको अपने देश और देशबन्धुओं के साथ मिलावेंगे"।

नेल्सन—"डाक्टर, सब समाप्त! सबसमाप्त!"

इसके बाद प्रिय कप्तान हार्डी को देखने के लिए व्यस्त होकर व्याकुलता के साथ नेल्सन ने कहा—"कोई क्या हार्डी को मेरे पास नहीं लावेगा? जान पड़ता है, वह मारा गया"। उसी समय ख़बर

आई कि हार्डी युद्ध में ऐसे व्यस्त हैं कि उन्हें दम लेने की भी फ़ुरसत नहीं है। जहाँ तक जल्द हो सकेगा, आवेंगे।"

वास्तव में उस समय हार्डी के सिर पर बड़ी भारी ज़िम्मेदारी थी। एक घंटे दस मिनट के बाद हार्डी नीचे आये और अपने परमबन्धु और पिता के समान मुरव्वी सेनापति नेल्सन की मृत्युशय्या के निकट पहुँच सके। स्नेहपूर्वक हाथ मिलाने के बाद दोनों में इस तरह बात-चीत होने लगी।

नेल्सन—"युद्ध की ख़बर क्या है? हमारे पक्ष की जीत होगी या हार?" (पाठकगण, देखिए, कैसा धैर्य है!)

हार्डी—"बहुत अच्छी ख़बर है। प्रभो, शत्रुपक्ष के १२ जहाज़ हमारे हाथ लगे हैं"।

नेल्सन—"जान पड़ता है, हमारा कोई जहाज़ नष्ट नहीं हुआ"।

हार्डी—"नहीं, प्रभो, इसकी आप चिन्ता न करें"।

नेल्सन—"अब मैं मरा हार्डी; बहुत फुर्ती से मेरी जीवनी शक्ति का क्षय हो रहा है; शीघ्र ही सब समाप्त हो जायगा। और भी पास आओ हार्डी"।

हार्डी—"जान पड़ता है, आपके जीवन के सम्बन्ध में डाक्टर बेटी एक दम निराश नहीं हुए हैं"।

नेल्सन—"अरे नहीं हार्डी, मेरा जीवन असम्भव है। मेरी पीठ की हड्डी टूट गई है। डाक्टर से तुमको सब हाल मालूम होगा"।

इतनी बातचीत करके हार्डी अपने स्थान (Post) पर चले गये। नेल्सन को निश्चय होगया कि अब उनके जीने की कोई आशा नहीं है। उन्होंने बारम्बार विशेष अनुरोध करके ज़बरदस्ती डाक्टर बेटी को अपने पास से अन्यान्य घायलों की सेवा के लिए भेज दिया। किन्तु वैसे ही फिर बुलवाया।

नेल्सन ने डाक्टर से कहा—"मि० बेटी, तुमसे मैं एक बात कहना भूल गया था, इसी से बुलाया है। छाती के नीचे अब किसी तरह की आहट का पता नहीं है। इसी से मुझे जान पड़ता है कि अब अधिक विलम्ब नहीं है"।

डा० बेटी—"प्रभो, यह बात तो आपने पहले ही कही थी"।

हाथ-पैर एक दम ठंडे पड़ गये कि नहीं, यह देखने की इच्छा डाक्टर ने ज़ाहिर की। इस पर नेल्सन ने कहा—"मि० बेटी, मैं तुमसे निश्चित रूप से कहता हूँ कि अब मेरा अन्त समय निकट है। मि० स्काट और मि० बर्क अच्छी तरह जाँच कर गये हैं"।

तब डाक्टर से नहीं रहा गया; उनकी आँखों में आँसू भर आये। उन्होंने गद्गद वाणी से कहा—"प्रभो, हमारे देश का यह विशेष दुर्भाग्य है कि आपको बचाने के लिए कुछ भी उपाय नहीं किया जा सका"।

इतना कह कर, शोक के वेग को न सँभाल सकने के कारण उन्होंने मुँह फेर लिया। ऐसे कठिन समय में नेल्सन ने कहा—"मेरे हृदय से प्राण जैसे ठेले जा रहे हैं डाक्टर। बस, अब कुछ देर नहीं है"।

इसके बाद उल्लास के मारे नेल्सन ऊँचे स्वर से कह उठे—"जगदीश्वर धन्य है! यह तेरी ही कृपा है कि मैं मरते दम तक अपने कर्त्तव्य का पालन करता रहा"।

युद्ध के आरम्भ में जब नेल्सन का यह उत्तेजक महावाक्य (Signal) बेड़े भर में प्रचारित हुआ कि "इँगलेंड को आशा है कि कोई भी आदमी अपने कर्त्तव्य के पालन में कमी नहीं करेगा" ('England expects every man will do his duty.') और सारी सेना ने बढ़े हुए उत्साह के साथ हुंकार-शब्द करके समुद्र के हृदय को

कँपा दिया तब नेल्सन ने प्रसन्न होकर कहा कि "मेरे द्वारा इससे अधिक होना असम्भव है। अब सब के स्वामी भगवान् के ऊपर और अपने पक्ष की न्यायनिष्ठा पर निर्भर होकर रहना ही हमारा कर्त्तव्य है। परमेश्वर ने मुझे अपने कर्त्तव्य के पालन का मौक़ा दिया इसके लिए उन्हें अनेकानेक धन्यवाद हैं"।

नेल्सन स्वयं अपने इष्टदेव 'कर्त्तव्य' का स्मरण करके और अपने अधीन-स्थ कर्मचारियों को स्मरण कराकर अमरत्व-लाभ की आशा से युद्ध के मैदान मे आये। वह यहाँ अपनी विजय-वैजयन्ती उड़ा कर स्वर्ग मे, देवमण्डली मे मिलने, जाने की घड़ी तक षोड़शोपचार से अपने मनोमन्दिर की अधिष्टात्री देवता कर्तव्य की पूजा कर सके, इसलिए उन्होंने वारम्वार विधाता को धन्यवाद दिया। जिसको ऐसा कर्त्तव्य का ज्ञान और ध्यान था उन्हें देवता न कह कर पृथ्वी का जीव कहने में निस्सन्देह जिह्वा को महापाप होता है।

डाक्टर ने नेल्सन से जब पीड़ा के बारे मे पूछा तव उन्होंने कहा—"असह्य पीड़ा हो रही है; अब मौत ही मुझे चाहिए"। इसके साथ ही धीरे से उन्होंने कहा—"किन्तु और भी थोड़ी देर अभी जीते रहने की इच्छा है"।

अब की बार सन्तान-तुल्य कप्तान हार्डी के साथ नेल्सन की आखरी वातचीत हुई। पहली भेंट के बीस मिनट वाद कप्तान हार्डी अपने गुरु-तुल्य महावीर नेल्सन के निकट अन्तिम साक्षात् करने के लिए आये। उन्होंने कहा—"आज आप की जीत का झंडा सागर के बीच जब तक चन्द्र-सूर्य रहेंगे तब तक के लिए गड़ गया। हम लोगों की पूर्ण रूप से जीत हुई है। १४ या १५ शत्रुओं के जहाज़ों ने आत्म-समर्पण कर दिया है"।

नेल्सन—“ठीक है। मैंने आशा की थी कि शत्रुओं के बीस के लगभग जहाज़ हाथ लगेंगे”।

इसके बाद नेल्सन ने ऊँचे स्वर से कहा—“लंगर करो हार्डी”।

हार्डी—“प्रभो, जान पड़ता है, अब एडमिरल कलिंगऊड (Admiral Collingwood) अध्यक्षता ग्रहण करेंगे”।

नेल्सन—“जब तक मैं हूँ तब तक नहीं। (इस समय हृदय में इतना जोश आगया था कि उन्होंने उठने की चेष्टा की थी) लंगर करो हार्डी”।

हार्डी “तो इशारा (Signal) करूँ?”

नेल्सन—“हाँ। क्योंकि अगर मैं जीता रहा तो निश्चय लंगर करूँगा”।

इस बात को विशेष तेज के साथ ऊँचे स्वर से कहने के बाद थोड़ी देर चुप रह कर नेल्सन ने कहा—“मुझे अच्छी तरह जान पड़ता है कि बस दो चार मिनट में ही सब समाप्त हो जायगा। (धीरे से) मुझे समुद्र में न फेंक जाना हार्डी”।

हार्डी—“नहीं नहीं, कभी नहीं”।

नेल्सन—“क्या करना होगा सो तुम सब जानते हो। मुझे चूम कर विदाई दो हार्डी”।

हार्डी ने दोनों घुटने टेक कर नेल्सन का मुख चूमा। तब नेल्सन ने कहा—“अब मैं प्रसन्न हुआ। ईश्वर को धन्यवाद है कि, अब तक मैं अपने कर्त्तव्य का पालन कर सका”।

हार्डी ने फिर मुख-चुम्बन किया तब उन्हें नेल्सन ने आशीर्वाद दिया। इसके पहले नेल्सन के पास पड़े हुए एक घायल सिपाही के पास से जाते समय एक कर्मचारी के पैर की ठोकर उस घायल के लग गई थी। उच्च-हृदय महावीर को मरते समय भी कर्त्तव्य का पूरा

ध्यान था। उन्होंने उस अपराधी कर्म्मचारी को लक्ष्य करके कहा—"सावधान भैया, जीवों पर ज़रा अधिक दया करना आवश्यक है"।

धन्य कर्त्तव्यपराणता !

हार्डी के चले जाने पर नेल्सन ने पादरी स्काट से कहा—"मैंने महापाप कोई नहीं किया डाक्टर। कन्या होरेशिया (Horatia) और लेडी हैमिल्टन (Lady Hamilton) को देश के हाथ में सौंपे जाता हूँ।"

धीरे धीरे प्यास और जलन वढ़ने पर स्वर धीमा पड़ गया। परन्तु उस समय भी अत्यन्त धीमे स्वर से नेल्सन कहते ही गये कि "जगदीश्वर को धन्यवाद है कि मैं अन्त समय तक कर्त्तव्य का पालन करता रहा। परमेश्वर! मेरे देश!"। इसके वाद कुछ नहीं कहा। साढ़े चार वजे महावीर नेल्सन का आत्मा शान्त एकाग्र भाव से इस पञ्चतत्त्वरचित शरीर को छोड़ कर ज्योतिर्मय शरीर से स्वर्गलोक को चला गया।

(नेल्सन के अन्त समय की इन वातों से उनके स्मारक-चिह्न की व्याख्या अच्छी तरह हो सकेगी, यही समझ कर यह अंश कुछ विस्तार से लिखा गया है, आशा है, पाठकगण क्षमा करेंगे।)

ट्राफलगर महायुद्ध मे जय-लाभ के साथ ही नेल्सन ऐसे अमूल्य रत्न को गँवा कर इँगलेंड को वड़ा ही शोक हुआ। जिस युद्ध में जय प्राप्त करने से विश्वग्रासी नेपोलियन की शक्ति तीन हिस्से तोड़ दी गई उसकी ख़वर कैसे आनन्द का समाचार होगा—इस वात का पाठकगण स्वयं अनुमान कर सकते हैं। किन्तु उसके साथ ही नेल्सन के स्वर्ग सिधारने के समाचार से इँगलेंड को घोर दुःख हुआ। परन्तु विधाता की इच्छा मे किसी का क्या ज़ोर! अनेक प्रकार से शोक-मिले आनन्द को प्रकाशित करने के वाद यथोचित सम्मान और ख़ूव

धूम धाम के साथ नेल्सन की अन्तिम इच्छा के अनुसार, नेल्सन का शव सेन्ट पाल गिरजे मे समाधि-स्थ किया गया । मिट्टी के नेल्सन मिट्टी में मिल गये । किन्तु अमर महापुरुष कर्त्तव्य-पालन का साक्षात् अवतार नेल्सन चिरकाल तक मनुष्यों के हृदय में पूजा पाते रहेंगे । उसी हार्दिक पूजा का चिह्न यह विराट् स्तम्भ है ।

ट्राफलगर-युद्ध में लड़ने वाला एक पेन्शनर सैनिक सन् १८८६ ई० तक ज़िन्दा था । नहीं मालूम कि अब भी वह ज़िन्दा है कि नहीं । उसका नाम कार्टिनी (Emanuel Louis Cartigny of Hyeres) था । उक्त सन् मे उसकी अवस्था ६६ वरस की थी । जिस फ्रान्स के जहाज़ ('Redoubtable') से गोली आकर नेल्सन की पीठ में लगी थी उसी जहाज़ पर यह सिपाही था । इस सिपाही के सिवा है नेल्सन का 'विजया' ('Victory') जहाज़, जो इस समय तीर्थस्थान के समान माना जाता है ।

नेल्सन स्तम्भ के दाहनी ओर सिन्धु-विजेता नेपियर (Gont Sir C. J. Napier) हैं ।

ठीक पीछे की तरफ़ खार्तूम के, अपनी वलि देने वाले, अमित-तेजा, क्रिस्तान-धर्म-वीर, अमर, गार्डन पाशा की मूर्त्ति है । उसके पैरों के पास लिखा है—

"Charles G Gordon, killed at Khartoum, 26th January, 1885."

वाईं ओर सिपाही-विद्रोह के महामति हावलक वीर की मूर्त्ति खड़ी हुई है । उसकी वेदी पर लिखा है—

To Major-General Sir Henry Havelock
And his brave Companions in Arms
During the campaign in India, 1857 :—

"Soldiers, your labours, your privations, your sufferings, and your valor will not be forgotten by a Grateful Country.—H. HAVELOCK"

Erected by public subscription.

(अर्थात् सैनिकगण, तुम्हारे परिश्रम, दुःख, क्लेश, और साहस को कृतज्ञ देश (ब्रिटन) कभी नहीं भूलेगा ।)

यह उक्ति हावलक की ही है । जब कानपुर का उद्धार करने के लिए इलाहाबाद से हावलक साहब ने कूच किया, उस समय राह मे बराबर मूसलधार पानी बरसने से और भादों के कड़े घाम की तपन से गोरों की फ़ौज बिलकुल पस्त हो गई । भारी थकन और कमज़ोरी के मारे उनके शरीर शिथिल हो रहे थे, एक पग भी नहीं चला जाता था । उसी समय मे—उसी दारुण कठिन समय में केवल सजीव और उत्तेजना से भरी वीर हावलक की वाणी ही उनके हृदय में बल का सञ्चार करने मे समर्थ हुई थी । महावीर तुम धन्य हो ! और सैनिक-गण, तुम भी धन्य हो !

महात्मा हावलक के अन्त समय के वाक्य भी महान् तेज और उच्च श्रेणी के उपदेशों से पूर्ण हैं । वे वाक्य ये हैं—

"I die happy and contented See how a Christian can die" To Outram —"I have forty years so ruled my life, that when death came, I might face it without fear"

अर्थात् "मैं सुखी और संतुष्ट चित्त से मरता हूँ । देखो, क्रिश्चियन किस तरह शरीर-त्याग कर सकता है ।" परम बन्धु आउट्राम से कहा—"मैंने चालीस बरस तक अपने जीवन की गति को ऐसे नियम से चलाया है, जिससे अन्त समय निर्भय होकर मृत्यु को गले लगा सकूँ"।

देखो भाई, एक साथ ही ज्ञान, धर्म, और शूर-वीरता कैसे देव-तुल्य उज्ज्वल चरित्र का संगठन कर सकते हैं । संसार मे कै जने इस तरह शान्ति के साथ प्राण-त्याग कर सके हैं ! हावलक साहब ६२ बरस की अवस्था में मरे । २२ बरस की अवस्था से ही उन्होंने युद्ध का महाव्रत ग्रहण कर लिया था । केवल मरने के समय हरिनाम जपने

से कोई फल नहीं है। जन्म भर मृत्यु के सम्बन्ध में विचार न करने से अन्त को उस भयङ्कर दिन में मृत्यु की भयानक मूर्त्ति और भी भयानक जान पड़ती है। अतएव भगवान् के निकट हमारी यही प्रार्थना है कि उस अन्तिम समय को सदा हम अपनी आँखों के आगे रख सकें। नहीं जानते, मृत्यु के समय भय से हमारी कैसी शोचनीय अवस्था होगी! जो हावलक की तरह ज्ञान और धर्म के वल से वरावर अपने जीवन को ठीक राह पर चला सका है उसके लिए मृत्यु सचमुच ही स्वर्ग की सीढ़ी है। और हमारे लिए तो वह यथार्थ ही नरक का द्वार है। अन्त-समय सभी छोड़ देते हैं। केवल ज्ञान और धर्म ही सहायक होते हैं। वे ही इस लोक और परलोक के वीच में सेतु निर्माण करके विना किसी वाधा-विघ्न-विपत्ति के आराम के साथ प्रसन्न हृदय से भव-सागर के पार कर देते हैं।

हावलक के मरने के वाद ब्रिटिश द्वीप मे कुछ दिनों तक घर घर हावलक की पूजा चली थी। गुणी के गुण की मर्यादा करना—इज़्ज़त करना—अगर कोई जानता है तो वह ब्रिटिश जाति है। और हम लोग दिन रात इसी चेष्टा में लगे रहते हैं कि किस तरह यशस्वी लोगों के दोष खोज कर उन्हें अपने दल में घसीट लावें! वाह! वाह! कैसी गुणग्राही जाति है! आश्चर्य तो यही है कि ये सव जीव इसी शरीर से स्वर्ग को क्यों नहीं जाते!

पादरी स्पियर्स साहव (Unitarian Revd. Spears)। इन महात्मा के निकट वहुत से हिन्दुस्तानी आदमी हमेशा सव तरह की सहायता पाते रहते हैं। लन्दन पहुँचने के कुछ ही दिनों वाद इन महाशय के दर्शन मुझे मिले। यह स्वर्गीय केशवचन्द्र सेन के परम वन्धु थे। इँगलेंड में रहने के समय उन्हें इन से ख़ूव आदर मिला था। इन्होंने सेन महाशय की सेवा और सहायता पूर्ण रूप से

की थी। साहव के साथ, उनके आफ़िस में, जान-पहचान और वात-चीत होने के दूसरे ही दिन अपने सम्प्रदाय के एक नये गिरजे की प्रतिष्ठा के उत्सव मे साहव मुझे अपने साथ ले गये। उस समय में मैं कोरा वंगाली था; अँगरेज़ी ढंग मुझे विलकुल ही मालूम न था। मेरे जीवन मे यह पहला ही अवसर था कि दो सौ से अधिक श्वेताङ्ग नर-नारियों के वीच मे अकेला मैं काला आदमी वैठा था। मैं तो अपनी जान एक विलकुल नये जगत् मे पहुँच गया। इस अवस्था में मेरे मन में जो जो भाव उठे उन्हें शब्दों से प्रकट करना वहुत ही कठिन है। वहाँ के साहव और मेम, सभी, मानों परस्पर होड़ कर के, एक दूसरे से अधिक आदर और आग्रह से—जिसकी कि मुझे स्वप्न मे भी आशा नहीं थी—मुझे चाय और मिठाई आदि देने लगे। वे लोग मीठी वातचीत से मुझे प्रसन्न करने की चेष्टा मे भी कुछ कसर नहीं कर रहे थे। यह देख कर मैं तो सन्नाटे में आगया। क्योंकि पहले मैं स्वप्न मे भी यह विश्वास नहीं कर सकता था कि एक काले आदमी की, चाहे वह हज़ार वड़ा आदमी हो, गोरे लोग और ख़ास कर उनकी स्त्रियाँ, ऐसी सेवा और ऐसा आदर कर सकती हैं। यहीं पर मुझे यह मालूम हुआ कि विलायत मे पैर रखते ही हमारे देश के कच्ची समझ के नौजवानों का सिर क्यों फिर जाता है। भारत के आईन के अनुसार जिन काले आदमियों से नफ़रत करने वाली, घमंड में चूर मेम साहवों की छाँह से भी हज़ार हाथ हट कर हाथ जोड़ कर किनारे खड़ा होना पड़ता है उन्हींसे वहाँ, लन्दन मे, इसतरह मिलना-जुलना, इतना हेल-मेल, जव देखो तव "हा-डू-डू" कह कर हाथ मिलाने का अधिकार !!! सचमुच ही मेरे लिए यह कम आश्चर्य की वात नहीं थी। पठकगण, आप क्या कहते हैं? कहाँ तो नरक के गहरे अन्धकार में डूवना और कहाँ एक दम स्वर्ग के दिव्य प्रकाश में पहुँच जाना! ये सव इसी

बात के सजीव प्रमाण हैं कि हम क्रमशः मनुष्य-नाम के भी योग्य नहीं रहगये हैं।

इस के बाद साहब के निमन्त्रण को पाकर मैं उनके हाईगेट के मकान में गया। जैसा वह बुड्ढा था वैसे ही सब उस के परिवार के लोग थे। सभी जैसे साँचे में ढली स्वर्गीय सोने की पुतली थे। जिस घर में यह परिवार रहता है उस का नाम है अरेन्डल-हाउस (Arundel House) यह लार्ड अरेन्डल की सम्पत्ति है। इसी घर में लार्ड बेकन(Lord Bacon) मरे थे।

महात्मा स्पियर्स के गुणों का बखान एक मुख से नहीं किया जा सकता। उनकी गुणवती भार्या उनसे भी अधिक थीं। उस बुढ़िया ने अत्यन्त यत्न के साथ रक्खी हुई सारी सम्पत्ति की सैर कराई। उस में पृथ्वी भर के अनेक स्थानों के अनेक बड़े आदमियों के पत्र और चित्र ही अधिक थे। उन में भारतेश्वरी विक्टोरिया की कन्या एलिस, ग्लाडस्टन, डाक्टर मार्टिनी और केशवचन्द्र के कई पत्र मैंने मन लगा कर पढ़े। स्पियर्स साहब और केशव बाबू में परस्पर कैसा प्रेम का नाता था, स्पियर्स साहब केशवबाबू के कैसे प्रिय बन्धु थे, यह जताने के लिए नीचे उनके एक पत्र की नक़ल दी जाती है।

ON BOARD THE "AUSTRALIA."
21st September, 1870.

MY DEAR MR. SPEARS,

The Captain of our vessel has kindly made arrangements to send off a mail bag to-morrow morning from Gibraltar. I, therefore, take this opportunity to transmit a hasty message assuring you and all our English friends of our best regards and warmest thanks. *Above all, to you I owe an immense debt of gratitude which no words of mine can sufficiently describe. You have always been to me a kind and sympathizing friend, ever ready to meet my wishes and supply my wants. , ever did you allow me to feel that I was in a foreign country. It was chiefly*

with your aid that I found brothers and sisters in England and forgot to a great extent the pains of separation from family and friends Nay, it was you who arranged for feeding and clothing me and meeting my daily requirements How can I repay your kindness? I feel ashamed when I think how much trouble and vexation and anxiety I have caused you, and how you overworked yourself for my sake and sacrificed only to render me happy. If I have on any occasion taken advantage of your kindness, forgive me I can assure you that I will never forget your unfeigned brotherly love, but will always be grateful to you and Mrs Spears for your kindness and hospitality Give her my love and say she had my best wishes for the welfare of the family Dear Margaret and sweet little John have an abiding hold on my affection May the God of mercy shower His blessings on you and your excellent family, and give you all peace everlasting Give my love to Mr and Mrs Keating, Miss Florence, Miss Calphan, Miss Watrall, Mr and Mrs Taylor and other friends at and near Camberwell Miss Calphan's (१) affectionate services I can never forget Remember me to Mr Roy and also to Dr. Roy, with my kindest regards

Please inform Miss Collet that I have posted this day the lecture on Christ and Christianity, duly revised and corrected, to her address Request her to write to Mr Strahan, asking him to send 200 copies of the new edition of my lecture to Calcutta The first copy I received has been forwarded to Her Majesty

It is needless to say that I look forward to the pleasure of receiving kind and affectionate messages from all my English friends Any newspaper or periodical containing notice of the Brahmo Samaj or my movements will be thankfully received.

BELIEVE ME,
Yours affectionately,
KESHUB CHANDER SEN.

---

(१) यह एक स्वाधीन रमणी सदा दासी की तरह केशवचन्द्र सेन की सेवा करती थीं। यह श्रीमती इस समय सेन बाबू का नाम लेने से रोने लगती हैं। केशव बाबू की कन्या, कूचविहार की रानी, जब विलायत में गई थीं तब इस पत्र में जिन महिलाओं का उल्लेख है वे सब उन्हें, देखने के लिए विशेष उत्सुक रहने पर भी, नहीं देख सकीं। इस लिए रानी साहब को बड़ा दुःख हुआ। जिन उच्चपदस्थ लोगों के साथ, संगति में, धूमधाम के बीच रानी साहबा थीं वहाँ वे स्त्रियाँ पहुँच नहीं सकीं। यही उनका मनोरथ पूरा न होने का प्रधान कारण था।

पाठकगण, देखिए, एक ओर कैसा स्वर्गीय प्रेम है ! और, दूसरी ओर कैसी सरल कृतज्ञता है ! सेन बाबू लिखते हैं कि "सबसे बढ़ कर तुम्हारे निकट मैं जैसे भारी कृतज्ञता के ऋण मे बँधा हुआ हूँ उसका वर्णन शब्दों से नहीं हो सकता। तुमने मुझे खिलाया-पिलाया है, मेरी सब तरह की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए विशेष यत्न किया है। मुझे सुखी करने के लिए समय समय पर कितनी हानि उठाई है कितने कष्ट सहे हैं। तुमने मुझे कभी विदेश का क्लेश या बन्धु-बान्धवों के विछोह की वेदना के अनुभव का अवसर ही नहीं दिया। तुम्हारी चेष्टा ही से मैंने इँगलेंड में भाई और बहनों को पाया है। नहीं जानता, किसतरह तुम्हारी इस दया के ऋण को चुका सकूँगा। यदि कभी किसी तरह मैंने तुम्हें विरक्त किया हो अथवा तुम्हारी दया का अनुचित फल भोगने की चेष्टा की हो तो उसे माफ़ करना। तुम्हारे शुद्ध भ्रातृ-स्नेह और तुम्हारी पत्नी की दया और मेहमानदारी को मैं कभी नहीं भूलूँगा; उसके लिए मैं चिर कृतज्ञ रहूँगा। बालिका मार्गरेट और बालक जान (स्पेयर्स साहब की कन्या और पुत्र Margaret and John) मेरे हृदय में बसे हुए हैं। मिस क्लैपहैन ने जो प्रीति के साथ मेरी सेवा की है उसे मैं कभी नहीं भूलूँगा"।

महापुरुष का कैसा गंभीर प्रेम है !

सन्ध्या के बाद स्पियर्स साहब ने मुझे अपनी मण्डली में लेजाकर सबसे जान पहचान करादी। वहाँ पर प्राय: ५०० भले आदमियों ने मुझ पर जैसी दया दिखाई उसका पूरा हाल सन् १८८९ ई० २७ वीं मार्च को एक स्थानीय साप्ताहिक समाचार पत्र (The Christian life) में प्रकाशित हुआ था। उसका वह अंश नीचे उद्धृत किया जाता है।

A welcome —Mr.— received on the 17th instant a hearty welcome at the Unitarian Church, Highgate Hill, London, Mr. Spears said, for more

प्रेम हुई तस्वीरों का लिस्ट

१ चित्र श्री गोपाल कृष्ण — हस्थ कलम
२ ” वस्तु चित्रण (modelling) ” ”
३ ” घोड़ा रेखाचित्र
४ ” चीनी व्यायाम कला रेखा चित्रण
५ ” फोटो ग्रुप 'मान नोबल्स स्कूल गोनेर २४ नवम्बर १९३८ को
६ ” श्री विनोबा के साथ
७ ” अखिल भारत सर्व सेवा संघ (कार्यकर्ता) श्री विनोबा २६ दि ६० पोर्ट्रेट
८ ” तरबूज तैल
९ ” फ्रेम महाराजा माधो सिंह जी का कोई लगा सजावट के लिये बिना हालत में
१० ” महाराजा मानसिंह जी वर्तमान तैल
११ ” नथमल — — — तैल
१२ ” राष्ट्र कृष्ण पुरानी कल्पना
१३ ” शबीह (पुरानी पोर्ट्रेट) कलमी पुरानी
१४ ” सर्टिफिकेट M.A. श्री पूर्णचन्द जैन Teacher.
१५ ” ” ” B.A. ” ” ”
१६ ” कैमल्स वारे का.मा. गोवर्धन राजेन्द्र करणपुर
१७ ” श्री ऋषभदेव भगवान
१८ ” महात्मा गांधी
१९ ” राधा कृष्ण
२० ” श्री लघु मुनि राज
२१ ” शबीह कलमी पुरानी

२२, चित्र हैंगार — – .

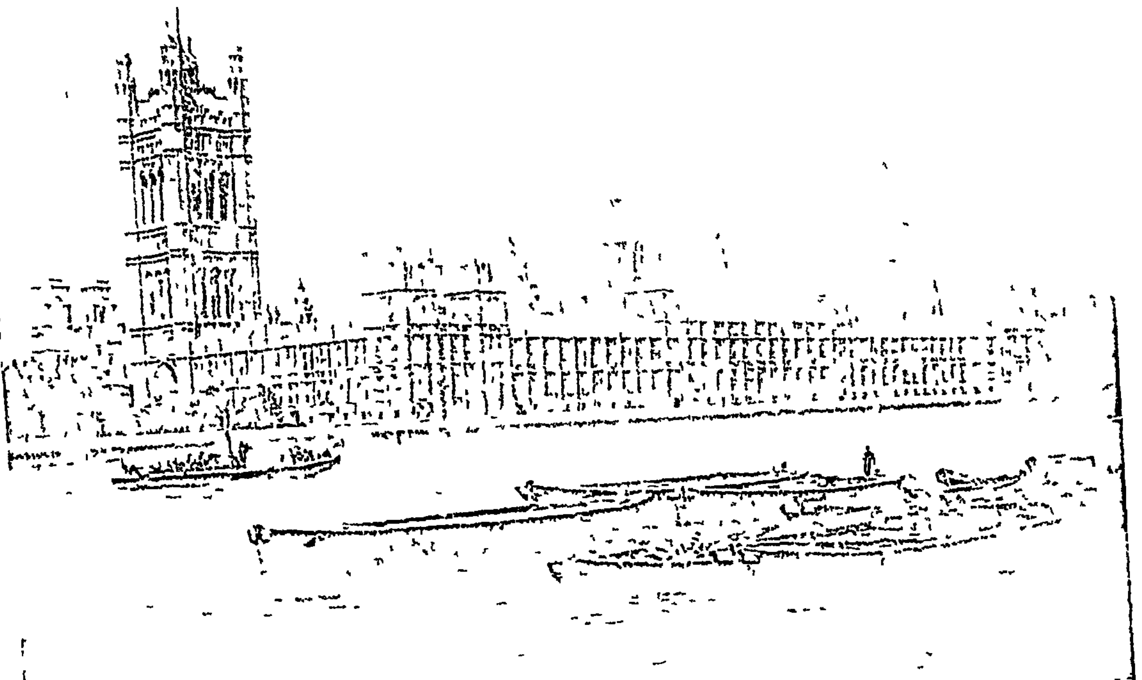
२३. रैशन of Merit Certificate.

than twenty years, he has been interested—as nearly all Christians were—in the remarkable movement in India called the Brahmo Samaj They all understood that we were, to a large extent, the rulers of some two hundred and fifty millions of the people in that great empire, and therefore a native movement to uproot idolatry, caste, vice, ignorance, and to bring the millions of the people to worship the one true and living God, could not fail to have their best wishes Although the Brahmos did not call themselves Christians, they had an intense reverence and admiration for Christ, and faithfully endeavoured to place before the people of India the character of Christ as a religious leader and teacher from God There was present that evening one of the leaders of this important religious movement, and he in the name of the congregation welcomed him into their midst This welcome was heartily responded to by the congregation Mr — ascended the pulpit, and said, he profoundly felt the kindness they had shown in the way they had responded to their minister, and it was all true what Mr. Spears had said They were endeavouring to make a great reformation of the religious life of their empire and, though not calling themselves Christians, their admiration for Christ and their reverence for him were deep and sincere In India he had on Sundays conducted religious services and was pleased to meet such a welcome from religious men and women He had only been in London a few days, and had seen nothing but kindness. After a few more words he concluded an interesting address. He is from Calcutta, and intends to stay in London for a few years—" "The Christian Life," 23rd March, 1889

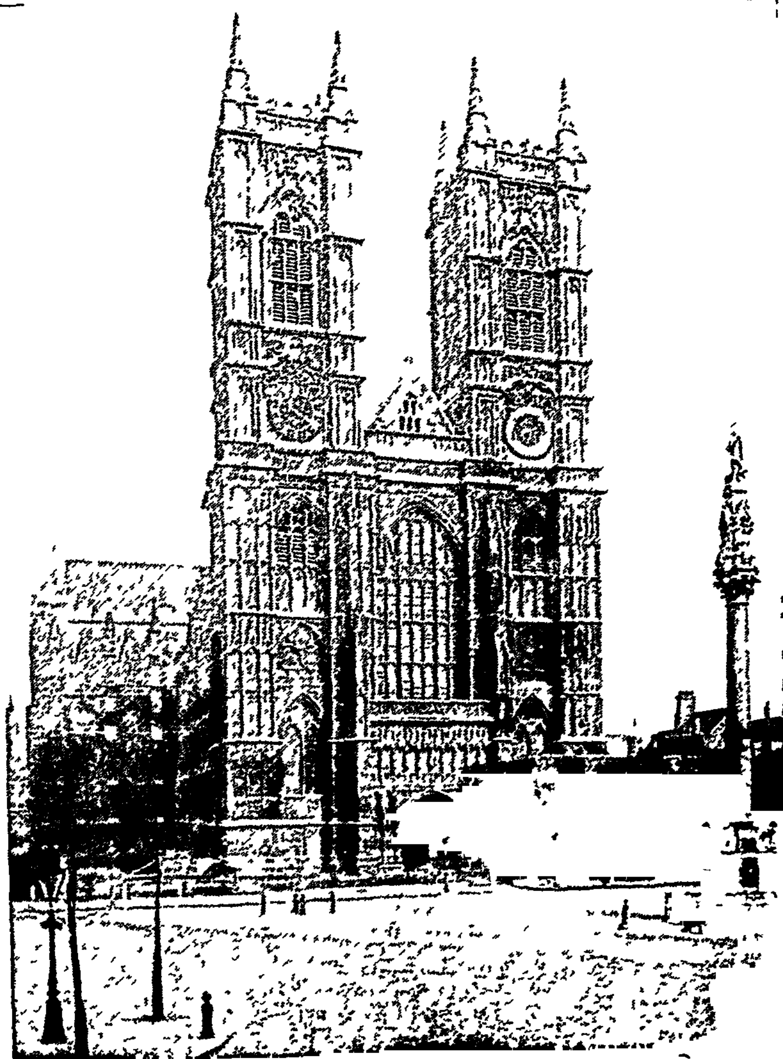
इँगलेंड-प्रवास के समय प्रायः स्पियर्स साहब के घर मेरा जाना-आना हुआ करता था। घर के लड़के वाले तक ऐसे धीर और शान्त तथा धीरे धीरे सहूलियत से वातचीत करने वाले थे कि हमारे यहाँ के वहुत से बुड्ढ़े भी वैसे न होंगे। ख़ास कर लड़कियाँ सुघर, सुन्दर, शान्त और मृदुभाषिणी थीं। उनकी अवस्था ९।१० वरस से अधिक न होगी; मगर वातचीत मे जैसे पुरखिन थीं। उनके माता-पिता की अनुपस्थिति के समय घर में जाने से वे वड़े आदर से विठातीं और जव तक माता-पिता नहीं आते थे तव तक आगन्तुक को सन्तुष्ट रखने

के लिए विशेष चेष्टा करती थीं। केवल स्पियर्स साहब के घर के ही बाल-बच्चे ऐसा व्यवहार करने में प्रवीण नहीं, अँगरेज़ गृहस्थ-मात्र के बाल-बच्चे ऐसे ही होशियार होते हैं। उनके यहाँ बालकों को बचपन से ही शिष्टाचार की शिक्षा मिलती है। वह शिक्षा ज़बानी नहीं दी जाती। लड़की-लड़के घर में माता-पिता और परिवार के आचरणों को देख कर उनसे ही ऐसा व्यवहार सीखते हैं। इँगलेंड—लन्दन—में भले आदमियों के लड़की-लड़के ते ऐसे भव्य शिष्ट शान्त व्यवहार के द्वारा लोगों को मोहित किया ही करते हैं, किन्तु उस देश की आब-हवा ही ऐसी है कि सड़कों पर मारे मारे फिरने वाले नीच श्रेणी के लड़की-लड़के भी बातचीत और व्यवहार में अत्यन्त नम्र और विनीत हैं। वे हम लोगों को भी "मास्टर" कह कर पुकारते और पूछे हुए प्रश्न का उत्तर पाने पर धन्यवाद दिये बिना नहीं जाते।

पार्लियामेंट महासभा-भवन (Houses of Parliament)। सन् १८३४ ई० में १६ अक्तूबर को आग लग जाने से पार्लियामेंट का पुराना घर नष्ट हो गया तब सन् १८४० में २७ अपरैल के दिन इस नये घर की नीव पड़ी और सन् १८५६ में, ३० लाख पौंड की लागत से, यह बन कर तैयार हो गया। सन् १८८० में यह भवन सर्वाङ्ग-सम्पन्न हुआ। इस बार यह इमारत ऐसे ढङ्ग से और ऐसे माल-मसाले से बनाई गई है कि सहसा कोई दैवी आपत्ति उसका कुछ बना नहीं सकती। सारी इमारत को एक छोटा सा गाँव ही कहना चाहिए। २७ बीघे ज़मीन में इमारत का घेरा है। यह इमारत टेम्स नदी के किनारे, ६४० फुट लम्बी, है। इसका क्लाक-टावर (Clock-Tower) ३२० फुट ऊँचा है। जिस समय पार्लियामेंट की कोई बैठक होती है उस समय इसी टावर में एक बिजली की रोशनी



पार्लियामेंट महा-सभा-गृह—पृ० ८६



वेस्ट मिन्सटर एबी—पृ० १०६

जला करती है। इस क्लाक-टावर में जो मिनट की सुई है वह साढ़े ग्यारह फुट लम्बी है! इसका घंटा वज़न में ३८० मन का है। सायंकाल के सन्नाटे मे सारे लन्दन के लोगों को उसका शब्द सुन पड़ता है। उस भारी घंटे का नाम है "बिग-बेन" (Big-Ben)। वजने वाली साधारण घड़ियों मे जैसे दो चाभी दी जाती हैं वैसे ही इसमे भी दो चाभी दी जाती हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि इसकी एक चाभी देने मे दस मिनट और दूसरी चाभी देने मे पांच घंटे का समय लगता है। इस प्रकार एक सप्ताह में केवल दो वार चाभी देने की—कूकने की—ज़रूरत पड़ती है। इसका समय इतना ठीक रहता है कि दिन-रात में तीन या चार सेकिंड से अधिक अन्तर कभी नहीं पड़ता। कभी कभी तो एक सेकिंड से भी कम अन्तर पड़ता है। इसकी सब से ऊँची चोटी का नाम है विक्टोरिया-टावर (Victoria Tower)। उसका घेरा ७५ वर्ग-फुट और उँचाई ३४० फुट है। इस लम्बे-चौड़े भवन में लार्ड्स्-सभामंडप (House of Lords) और कामन्स सभामण्डप (House of Commons), मध्य-हाल (Central Hall), राज-प्रकोष्ठ (Royal State Apartment) के सिवा ग्यारह चौक (Open Quadrangular Courts), पाँच सौ प्रकोष्ठ (Apartments) और अट्ठारह महल (Official residences) हैं। इनके सिवा सुसज्जित और सुप्रशस्त वत्तीस कमेटी-घर, पुस्तकालय, आफ़िस, भोजन-भवन आदि न-जानें कितने स्थान हैं। सुविशाल ब्रिटिश-साम्राज्य के शासन-कार्य के उपयुक्त ही यह सभागृह है; इसमें कोई सन्देह नहीं। इस इमारत में प्रवेश करने के उपरान्त पहले हाल के दोनों ओर हैमडेन (Hampden) और फ़ाक्स (Fox) आदि नौ राज-मन्त्रियों की मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं। इसके वाद ८० फुट ऊँचा अष्टकोण सेन्ट्रल हाल है। इसी के वाईं ओर से कामन्स

सभा में और दाहिनी ओर से लार्ड-सभा में जाना होता है। सभासदों की आँखों को जिसमें आराम हो इसलिए सभामण्डप के ऊपर काँच की छत पर रोशनी होती है। इस सभा के किसी एक सभासद की सिफ़ारिश से इस सभामण्डप में प्रवेश करने का टिकट मिल सकता है। मैं कई दिन इस सभामण्डप में उपस्थित हुआ। उन दिनों में किसी विशेष बात पर आलोचना नहीं हुई। कामन्स-सभा के ६७० सभासद हैं। किन्तु सभा-भवन में कुल ४७६ सभासदों के बैठने की सीटें हैं। ख़ास ख़ास मौक़ों पर, (जैसे ग्लाडस्टन के होमरूल-बिल (Gladstone's Home-Rule Bill) के समय), अधिक कुर्सियाँ रख दी जाती हैं।

इस विराट्-भवन में नर्मन-राजा विजयी विलियम (William the Conqueror) से लेकर सब राजों की मूर्त्तियाँ, अपने अपने राज-चिह्नों के साथ, स्थापित हैं। इस भवन में न-जानें कितनी बातों और मामलों की आलोचनायें और निश्चय हो चुके हैं और अब भी होते हैं। उन सब का वर्णन सम्भव नहीं। अतएव कवि की कुछ पंक्तियाँ लिख कर इसका वृत्तान्त समाप्त किया जाता है।

" The echoes of its vaults are eloquent,
The stones have voices, and the walls do live ;
It is the house of memory."—Maturin.

कालेज की बोट-दौड़ (The University Boat-race)। सन् १८८६ ई० में ३० मार्च को यह जगत्प्रसिद्ध बोट-दौड़ हुई थी जिसका वर्णन किया जाता है। सन् १८२९ से यह बोट-दौड़ प्रचलित हुई है।

चारों ओर वसन्त की हवा डोल रही थी। पृथ्वी के नर-नारी, पशु-पक्षी, यहाँ तक कि चेतना-रहित जड़-जगत् (वृक्षादि) तक के

आनन्द से रोमाञ्च हो आया था। स्फूर्त्ति की हवा शीत-पीड़ित संसार (यूरोप) मे नवीन जीवन का सञ्चार करती हुई अभिनव सुन्दर दृश्यों के द्वारा सब जीवों को प्रसन्न और प्रफुल्ल बना रही थी। किन्तु पाठकगण, उस देश मे हमारे यहाँ के वसन्त की कोई बात नहीं देखी जाती। ऋतुराज का वह आधिपत्य वहाँ नहीं है। ब्रिटिश-राज्य के बाहु-बल के प्रताप के आगे सार-जगत् के हर्त्ता-कर्त्ता-विधाता प्रचण्ड सूर्य्यदेव भी वहाँ भय से सकुचे से रहते हैं; वसन्त किस गिनती मे हैं। हमारे यहाँ के वे तमाल-तरु के नये पत्ते, खिले हुए टेसू के फूल, सुगन्धित नीबू के फूल, अपनी भीनी भीनी महक से सब दिशाओं को दूर दूर तक सुगन्धित बना देने वाली आम की मञ्जरियाँ, चटकीली चाँदनी, चन्दन-सुगन्धित मलयाचल का मन्द पवन, कोमल हरे पत्तों से सुशोभित पेड़ों पर कलोले कर रही कोकिलाओं का हृदय और मन को विह्वल बना डालने वाला सुमधुर कुहूरव यूरोप मे असम्भव है। वहाँ शरीर और मन को शिथिल कर देने वाला कवि-वर जयदेव का वसन्त-राग का यह गीत नहीं सुन पड़ता—

"ललितलवङ्गलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे।
मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकूजितकुञ्जकुटीरे॥
विहरति हरिरिह सरसवसन्ते।
नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते॥"

जिस वसन्त ऋतु के आने पर भारत मे क्रीड़ा करने को निकुञ्ज-वन मे कृष्ण के पास शीघ्र जाने के लिए सखियाँ राधिका को—

"रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशम्।
न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनमनुसर तं हृदयेशम्॥

धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली।
पीनपयोधरपरिसरमर्दनचञ्चलकरयुगशाली" ॥

—कह कर उत्तेजित करती हैं, उस समय पृथ्वी के प्रधान नगर लन्दन के लोग कवि वर्जिल के साथ "Cuncti adisnt, meritœque expectent præmia palmœ." (आओ, सब उपस्थित हों और उपयुक्त पुरस्कार की आशा करें) यह गीत गाते गाते कालेज-बोट-दौड़ के लिए विशेष उद्योग करते देख पड़ते थे। इँगलेंड के नेत्र-स्वरूप आक्सफ़ोर्ड (Oxford) और केम्ब्रिज (Cambridge) विश्वविद्यालयों के चुने हुए सोलह वलिष्ठ नौजवान (उनमें एक लार्ड एम्पथिल [Lord Ampthill] भी थे) डांड़ चलाने में शक्ति और होशियारी दिखला कर अपनी वीरता का परिचय देंगे। इसी के लिए एक महीने से तरह तरह की तैयारियाँ हो रही थीं। मानसिक उत्कर्ष के साथ साथ शारीरिक वल-विक्रम आदि के विकास पर जिनका ऐसा ध्यान है उनकी जाति की उन्नति कैसे न हो? केवल शरीर या मन की उन्नति से यथार्थ उन्नति का लाभ असम्भव है। एक साथ दोनों की पुष्टि करना हर एक विज्ञ (समझदार) जाति का कर्तव्य है। आर्यलोगों के अभ्युदय-समय में उनकी हठ-योग के अभ्यास पर विशेष दृष्टि थी। प्राचीन ग्रीक लोग इस बात में यूरोप के लिए आदर्श थे। वर्तमान समय में यूरोप और अमेरिका, ख़ासकर इँगलेंड, इस वात को वहुत अच्छी तरह समझते हैं।

आक्सफ़ोर्ड का चिह्न हलका, नीला और केम्ब्रिज का चिन्ह घने नीले रंग का है। लड़के, जवान, बूढ़े नर-नारी दूकानदार, पंसारी, गाड़ीवान, क़ुली-मज़दूर, ग़रीव दीन-दुखी सन्तान (Children of the gutter) तक—सब दों में से एक तरह का फ़ीता (Ribbon), नेकटाई (Necktie) या फूल (Rosette) लगाये हुए थे। यहाँ

तक कि जिन्हें यह भी नहीं मालूम कि आक्सफ़ोर्ड या केम्ब्रिज कहाँ है, या विश्वविद्यालय किसे कहते हैं*, जो नाव पर कभी चढ़े नहीं, जिन्होंने वोट-दौड़ कभी देखी तक नहीं, उन्होंने भी एक-न-एक पक्ष ग्रहण करके भक्ति-सूचक उस पक्ष का चिह्न धारण किया था। कितने ही लोगों ने केम्ब्रिज की ओर से और कितने ही लोगों ने आक्सफ़ोर्ड की ओर से ढेर के ढेर रुपयों की बाज़ी लगाई थी †।

अनेक ओर से अनेक रंग के लोग अनेक प्रकार की सवारियों पर और पैदल सवेरे वोट-दौड़ की जगह को जाने लगे। दस बजे तक पटनी (Putney) से मोरलेक (Mortlake) तक, साढ़े चार मील तक, नदी के दोनों ओर खचाखच भर गये। वोट-दौड़ के आरम्भ होने के तीन घंटे पहले ही वेस्टमिनिस्टर-पुल (Westminister Bridge) से मोरलेक तक, पाँच कोस तक टेम्स नदी का जल अनेक ढंग के, अनेक तरह की पोशाके पहने बुड्ढे-बुढ़िया, युवक-युवती और बालक-बालिकाओं से परिपूर्ण था। बिजली और भाफ़ से चलने वाले वोटों

---

*Grand-daughter—Grand-ma, What they by these light and dark blue?

Grand-mother,—Eton and Harrow are going to row a cricket match.

बालिका पौत्री—दादी, यह सब हलके नीले और घने नीले के माने क्या हैं?

बूढ़ी दादी—ईटन और हारो (लन्दन के निकटस्थ दो प्रधान स्कूल) क्रिकेटमैच (गेंद का खेल) खेलेंगे।

कालेज—वोट-दौड़ के सम्बन्ध में बहुत से लोगों को ऐसा ही ज्ञात है।

† यहाँ के लोग बाज़ी लगाने में बड़े बहादुर हैं। इसी दौड़ में न्यूनाधिक एक करोड़ पौण्ड का जुआ हो गया। मैं जिस होटल में ठहरा था उसके सब लोगों ने एक-न-एक पक्ष लिया था। केवल मैं ही तटस्थ था। उन में से ५।६ आदमियों ने बाज़ी भी लगाई थी। यहाँ घोड़-दौड़, वोट-दौड़ और पार्लियामेंट के मेम्बरों के चुनाव में ख़ूब बाज़ियों की धूम होती है।

से लेकर गधा-बोट तक अनेक तरह के जलयान देख पड़ते थे। उन जलयानों में एक केम्ब्रिज का, एक आक्सफ़ोर्ड का, एक अम्पायर (Umpire) का और एक एक समाचारपत्र का बोट विशेष गंभीरता के साथ धीरे धीरे मोरलेक की ओर जारहे थे। व्यवसायी लोग अपने विज्ञापन-प्रचार के लिए अनेक तरह के बोटों को अनेक तरह से सजाकर लोगों का ध्यान खींचने के लिए विशेष यत्न किये हुए थे। किनारे सात आठ जगह प्रायः २०००० दर्शकों के खड़े होने और बैठने की व्यवस्था की गई थी। देखते ही देखते सब स्थान भर गये। टिकिट तीन रुपये से लेकर एक गिन्नी तक के थे।

नियत समय पर, चार बजे, सुन्दर सुस्थ सबल सोलह जवानों ने बहुत साफ़-सुथरी दो छोटी डोंगियाँ 'पटनी' से छोड़ीं। दस ही मिनट में वे हमारे सामने आकर उपस्थित होगये। जैसे शान्त और एकाग्र भाव से, गौरव और मर्य्यादा के साथ, आसन जमाये हुए वे डाँड़ चला रहे थे उसे देखने से यह नहीं जान पड़ता था कि इन लोगों में किसी तरह की लांग-डाँट है। हमारे देश में ऐसी दौड़ होती तो बार बार उछल कूद कर, डाँड़ से पानी उथल-पुथल कर, चिल्लाकर, गोलमाल किये बिना पराक्रम प्रकाशित न होता। असल बात तो यह है कि जिस देश पर विधाता की कृपा होती है वहाँ नीम भी मीठी हो जाती है।

थोड़ी ही देर में यह ख़बर फैल गई कि केम्ब्रिज ने दस हाथ आगे बढ़कर आक्सफ़ोर्ड को जीत लिया। पटनी से मोरलेक तक पहुँचने में बीस मिनट चौदह सेकिंड समय लगा था। जैसे फल प्रकाशित हुआ वैसे ही मैं डेरे को लौट पड़ा। राह में देखा, दौड़ की सारी ख़बर सहित अनेक अख़बार बिक रहे हैं। देखो, अँगरेज़ों की फुर्ती और उद्योग !

यहां जल और स्थल में पाँच लाख लोगों का उत्साह, उद्योग और निर्मल प्रफुल्लता देख कर मुझे बड़ा ही आनन्द मिला। इस प्रकार की भारी भीड़ के ऐसे आमोद और आह्लाद प्रकाशित करने से देश के नवयुवकों को शारीरिक कसरत आदि के सम्बन्ध में जैसा उत्साह दिया गया उसका फल निस्सन्देह बहुत ही अच्छा हुआ होगा। ऐसा उत्साह हज़ारों पुस्तकों और उपदेशों से कभी नहीं हो सकता। और भी एक बहुत ही सुखदायक भाव इस समय मेरे मन में उठा था। मैंने सुना था कि जगन्नाथ जी के मन्दिर में पंडा लोगों के बालक जगन्नाथ जी के सामने हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हैं कि "भगवन्, संसार को सुखी करो"। सचमुच इससे बढ़ कर मनुष्य की उच्च कामना हो ही नहीं सकती। पहले मुझे विश्वास ही नहीं था कि व्यक्तिगत-स्वार्थपरता-प्रधान देश के देवमन्दिर मे—"धन दीजिए, पुत्र दीजिए" के स्थान मे—ऐसी उदार उन्नत प्रार्थना की जा सकती है। इसी से उल्लिखित समाचार सुनते ही हृदय में एक अभिनव आनन्द की बिजली सी दौड़ गई थी। "भगवन्, संसार को सुखी करो" यह बात ऐसी मीठी मालूम पड़ी कि जब तब याद आने से और जी भरकर कहने से मुझे अद्भुत सुख और शान्ति मिलती है। इस भारी भीड़ का समारोह मैं समझ सका। यह भी मुझे मालूम पड़ा कि इतने लोगों को एकत्र पवित्र सुख का भोग करते देखने से अपने को कैसा अतुल और अनिर्वचनीय सुख मिलता है। यदि संसार इसी तरह चिरकाल के लिए सुखी हो तो मेरी समझ में इस मनुष्य-लोक के निकट स्वर्गलोक भी अत्यन्त तुच्छ है।

शीश-महल (Crystal Palace)। यह ख़ास लन्दन से ज़रा बाहर हट कर सिडेनहम नामक उपनगर मे है। सन् १९५१ की महा-प्रदर्शिनी के भवन के माल-मसाले से यह भवन बनाया गया है।

यह भारी महल एक बहुत ऊँची जगह पर बना हुआ है। इस कारण इसके ऊपर से लन्दन महानगरी और बहुत दूर तक चारों ओर के देहातों का दृश्य बहुत ही सुन्दर देख पड़ता है। यह महल एक लम्बे-चौड़े सुसज्जित बाग़ के भीतर बना हुआ है। यह २०८ फुट ऊँचा, १६०८ फुट लंबा और ३८४ फुट चौड़ा है। इसके चारों ओर की, बाग़ वग़ैरह की, ज़मीन ६०० बीघे के लगभग है। इसमें शीशे की छवाई है, इसीसे इसका नाम शीशमहल है। यह जब बना था उस समय शीशे का ऐसा घर कोई न था; इसीसे इसका नाम शीश-महल रक्खा गया। किन्तु आज कल तो यूरोप में अनेकों महल ऐसे ही शीशों से छाये हुए बने हैं। महल के सारे खण्डों की लम्बाई-चौड़ाई का हिसाब ८ फुट के 'गुणे' के अनुसार—अर्थात् ८, १६, २४, इस हिसाब से—है।

इस भारी भवन के भीतर की सजावट सामान आदि एक प्रकार से अनिर्वचनीय ही है। नित्य यहाँ अनेक प्रकार के आमोद-प्रमोद हुआ करते हैं। इसके लिए भिन्न स्थानों में तीन गेलरियाँ हैं। हर एक गेलरी में चार हज़ार आदमियों की जगह है। जैसी बड़ी व्यवस्था है वैसा ही एक बहुत बहुत बड़ा बाजा (Organs) भी यहाँ रक्खा है। अनेक कमरों में प्राचीन काल से लेकर वर्त्तमान शताब्दी के स्थापत्य-शिल्प की नक़लें यहाँ मौजूद हैं। इसके सिवा कई कमरों में बहुत सी कारीगरी की चीज़ें बिक्री के लिए रक्खी हैं।

The Pompeian Court, representing a Roman house of the time of Titus.

The Egyptian Court containing a model of the Temple of the Ptolemies, B. C. 300, with an Avenue of Lions in front of it, the Pillared Hall of Karnak with Tomb; the rock of Beni Hassan.

The Greek Court exhibiting a model of the Acropolis, copies of the Venus of Milo, etc.

The Roman Court containing models of the Pantheon, the Colosseum, and the Forum; busts of the Roman Emperors, etc.

The Alhambra Court is a copy of part of the Moorish Palace at Granada.

The Byzantine and Romanesque Court, with various art specimens from the sixth to the thirteenth century.

Mediæval Courts, with examples of the Gothic period, showing the styles of German, English, and French-Gothic of different periods.

The Italian Court exhibiting copies of Raphael Frescoes in the Vatican and a number of works by Michael Angelo.

The Industrial Courts

महल के अन्तर्गत चित्रशाला में भी अनेक प्रकार की अनेक तसवीरों का संग्रह है। उसके एक हिस्से में वहुजातीय जंगली जीवों के १५०० मृत-शरीरों के ढाँचे सजीव भाव से, ऐसे ढंग (Wurtemburg Collection of Animals) से सजाये रक्खे हैं कि अचानक देखने से जान पड़ता है, वे अपनी इच्छा के अनुसार जंगल में घूम फिर रहे हैं। अन्य एक स्थान में, अनेक देशों की असभ्य जातियों का दैनिक जीवन दिखाने के लिए, उनकी नक़ली मूर्त्तियाँ और उनके घर-द्वार असवाव सामान आदि, सव रक्खा हुआ है। विभिन्न रुचि वाले सव तरह के लोगों की शिक्षा और मन-वहलाव के लिए इस तरह के अनेकानेक सामान इस भारी महल में देखे जाते हैं। एक हिस्से में कई एक पानी-भरे कुण्डों में सील, मगर आदि कई जलचारी जीव भी सुरक्षित हैं। इनके सिवा नित नये रंग-तमाशे तो यहाँ हुआ ही करते हैं।

महल के वीच के हाल में जगह जगह पर पेड़ लता आदि तो हैं ही; इनके सिवा उसके पास के एक कमरे में यथोचित गर्मी पहुँचा कर अनेक गर्म देशों के फूलों के पेड़ और लतायें आदि भी यत्न से सुरक्षित हैं।

यहाँ की घड़ी भी एक देखने की चीज़ है। यह पार्लियामेंट महासभा की घड़ी बनाने वाले कारीगर के हाथ की बनी हुई है। इस का डायल (Dial) पार्लियामेंट की घड़ी के डायल से भी बड़ा है। बहुत लोगों का कहना है कि घड़ी का इतना बड़ा डायल और कहीं नहीं है। डायल का घेरा ४० फुट है। दोनों सुइयों का वज़न साढ़े सात मन है। बड़ी सुई १९ फुट लम्बी है और हर दफ़ा आध इंच के हिसाब से सरकती है। यह घड़ी भी खूब ठीक चलती है— दो दिनों में केवल एक सेकिंड का अन्तर पड़ता है।

इस शीशमहल से संयुक्त एक शिल्प, विज्ञान और साहित्य का विद्यालय भी बहुत दिनों से अच्छे प्रबन्ध के साथ चल रहा है।

बाहर के भारी कुंड मे तीन नक़ली द्वीप (टापू) बने हुए हैं। उनमें से दो मे पुराकाल (Early Geological periods) के बहुत से विशाल-काय जीव-जन्तुओं की, सजीव-सी जान पड़ने वाली, मूर्तियाँ इस ढंग से रक्खी गई हैं कि जान पड़ता है, चलने ही चाहती हैं। इसके पास ही एक जगह, भूतत्त्व के प्रमाणानुसार सारी पृथ्वी की तहें अच्छी तरह दिखलाई गई हैं। इन्हें देख कर बालक भी इस दुरूह विद्या के मौलिक तत्त्वों को अनायास ही समझ ले सकता है। दो एक जन्तुओं के नाम और माप का उल्लेख करने ही से पाठकगण इसका रहस्य कुछ कुछ समझ सकेंगे।

इक्थिओसरस (Ichthyosaurus)—मत्स्य-मगर। जिस समय का यह जीव है उस समय का जल गँदला था। उस जल में अनायास अपना शिकार देख लेने के लिए विधाता ने इसकी आँखें भी बहुत बड़ी बनाई हैं। यह जन्तु ३५ फुट लम्बा है।

मेगालोसरस (Megalosaurus) अतिकाय मांसभोजी कीड़ा। यह

३९ फुट लम्बा है। इसके शरीर का घेरा साढ़े बाईस फुट है। शरीर के देखते इसका सिर बहुत ही बड़ा है।

इगुअनोडन (Iguanodon)—घास फूस खाने वाला दन्तहीन कीड़ा। यह यद्यपि मेगालोसरस की अपेक्षा छोटा है, पर उससे कम नहीं है। टिलगेट जंगल (Tilgate Forest) में, सन् १८५३ में, जब इसका ढांचा पाया गया था तब २१ वैज्ञानिक पण्डितों ने इसके पेट मे बैठ कर खाना खाया था। यहां उसका नक़ली शरीर बनाने में ६५० बुशेल नक़ली पत्थर, १०० फुट लोहे का पत्तर, ६०० ईंटें, २० फुट इश्चवार आदि सामान लगा था।

इसी तरह की बहुत सी चीज़े देखने में आईं। कुण्ड के जल में बहुत से प्राचीन सीपी शम्बूक (mollusca) आदि की भी नक़लें हैं। मन-बहलाव के साथ विज्ञान-शिक्षा देने वाला स्थान इससे बढ़ कर और कहीं नहीं है। धन्य अँगरेज़ों की उद्योगशीलता!

चारों ओर ६०० बीघे ज़मीन के ऊपर बाग़ीचा, तालाब, फुहारा, मैदान आदि सब है। ८०००० आदमी अनायास मज़े में—यहां विचर सकते हैं। यहां निशानेबाज़ी, क्रिकेट, फुटबाल, लनटेनिस, बाइसिकिल चलाना, नाव चलाना, स्विच-बैक रेल (Switch-back Railway) आदि सब तरह की कसरतों का सुन्दर प्रबन्ध है। गर्मी के दिनों मे फुहारे के खेल और रात को आतशबाज़ी के द्वारा दर्शकों का मनोरञ्जन किया जाता है।

दुःख की बात है कि कल के द्वारा शतरंज का खेल यहां नहीं देख पड़ा। जान पड़ता है, कारीगरी प्रकाशित हो जाने से वह इस स्थान से हटा दिया गया है। एक बड़ा आइना यहां था, जिसमें देखने से अपना चेहरा बन्दर और भालू का ऐसा देख पड़ता था, वह भी अब यहां नहीं है। यहां एक छोटी सी नाव भी थी जिस

पर एक आदमी एक कुत्ते के साथ अटलान्टिक महासागर को पार हुआ था। वह भी नहीं देखने को मिली।

लन्दन टावर (The Tower of London)। हमारे यहाँ कलकत्ते में जैसे भारी क़िला है और उसमें फ़ौज तोप गोला वारूद आदि युद्ध का सामान जमा रहता है वैसा क़िला या उतना सामान—कुछ भी—लन्दन में नहीं है। क्योंकि समुद्र ही इँगलेंड का क़िला है। कहा जाता है कि रोमन सम्राट् जूलियस सीज़र (Julius Cæsar) ने, इँगलेण्ड पर अधिकार कर लेने के वाद, इसी जगह पर नदी के किनारे एक क़िला वनाया था। किन्तु इस वर्त्तमान भारी प्रवन्ध की नींव नर्मनराज-विजयी विलियम ने ही डाली। वहुत दिनों तक नगर की रक्षा के लिए यह टावर क़िले के काम में लाया जा चुका है। इसके सिवा यहाँ सुलह-लड़ाई आदि के लिए राज-सभा भी लगती थी। राजविद्रोही भी यहाँ क़ैद रहते थे। सारे इँगलेंड की टकसाल भी यहाँ थी। इसके भीतर वहुत से राजघराने के आदमियों और प्रतिष्ठित पुरुषों को प्राणदण्ड भी दिया जा चुका है। किन्तु इस समय यह स्थान प्राचीन अस्त्र-शस्त्र, कवच आदि और राजकीय मुकुट, आभूषण, वहुमूल्य रत्न आदि रखने के काम में ही लाया जाता है। इस ऐतिहासिक स्थान का वर्णन करना एक कठिन काम है। इँगलेंड के इतिहास को जिन्होंने पढ़ा है वे यहाँ के माहात्म्य को वहुत अच्छी तरह जानते हैं। इस क़िले के पहरेदार लोग आज तक वैसी ही पोशाक पहनते हैं जैसी पोशाक पहले के पहरेदार पहनते थे। ये 'गोखादक' नाम से प्रसिद्ध हैं। अँगरेज़ी 'वुफेटियर' शव्द विगड़ कर 'वीफ-इटर' [Beef-eaters (Buffetiers) or Yeomen of the Guard] वन गया है।

लन्दन-टावर अनेक विभागों में वँटा हुआ है। जैसे—

Tower Hill, Middle Tower, Byward Tower, Bell Tower, Traitor's Gate, Wakefield Tower, Regalia, White Tower, St. John's Chapel, St Peter's ad Vincula Chapel, Banqueting Hall, State Floor, Council Chamber, Armoury, Parade, Tower Green, Beauchamp Tower, Wellington Barracks, &c

यह ७८ बीघे ज़मीन पर बना हुआ है। पहले चारों ओर जो क़िले की खाई थी वह इस समय सूखी पड़ी है। सड़क से टावर हिल में प्रवेश करते ही बाईं ओर प्राणदण्ड का स्थान था। यह स्थान इस समय रेल-गाड़ी के द्वारा घिरा हुआ है। जिस काठ के टुकड़े पर सिर काटा जाता था वह, सिर काटने का शस्त्र और जल्लाद का टोप आदि चीज़ें टावर मे, प्राचीन वस्तुओं में, रक्खी हुई हैं।

बोचाम्प-टावर मे क़ैदी लोग रक्खे जाते थे। इनकी दीवारों मे बहुत से क़ैदियों के हाथों की लिखावटें मौजूद हैं। क़ैदियों ने हृदय का शोक या दुःख प्रकाशित करने के लिए जो कुछ लिखा या अंकित किया है उसे देख कर मन में एक साथ ही अनेक भावों का आविर्भाव होता है।

जिस घर में युद्ध का सामान रक्खा है उसमें, पहले समय मे काम मे लाये जाने वाले युद्ध-कुठारों से लेकर वाटर्लू के युद्ध में जीती हुई तोपे और भारतवर्ष के युद्ध और एशिया-खंड के अस्त्र-शस्त्र तक रक्खे हुए हैं। अवध की नवाबी अमलदारी की जल्लादी तरवारें और नेपोलियन का नर-बलि करनेवाला खड्ग भी यहाँ देख पड़ा। यहाँ विजयी विलियम से लेकर दूसरे जार्ज तक, इँगलेंड के राजाओं की सुसज्जित घुड़सवार मूर्त्तियाँ मौजूद हैं।

टावर में राजा की आज्ञा से मारे गये व्यक्तियों मे से सन् १५५४ में मारे गये सफोक के ड्यूक (Henry Grey, Duke of Suffolk) का सिर लन्दन के मिनोरिस गिरजे (Church Minories) में एक

काच के घेरे में रक्खा देखने में आया। वह सिर किस तरह वहाँ पहुँचा, इस बारे में वहाँ कोई कुछ नहीं बता सका। वहाँ के पादरी ने गिरजे की अस्थावर-सम्पत्ति की प्राचीन सूची (List) में उसका उल्लेख दिखलाया।

लन्दन-टावर में प्रधान देखने की चीज़ है शाही रत्नागार। इसमें सुवर्ण-रचित बहु-मूल्य मणि-मुक्ता-जटित अनेक राजमुकुट और राज-दण्ड हिफ़ाज़त के साथ यत्नपूर्वक सुरक्षित हैं। हमारे यहाँ के प्राचीन कोहनूर हीरे की नक़ल भर यहाँ है। असल हीरा विण्डसर के राज-महल (Windsor Castle) में है। बहुत लोग इसी को असल समझते हैं; पर यह उनकी भूल है। यहाँ पर कोहनूर का इतिहास लिख देना ठीक समझ कर उसका भी संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जाता है।

पञ्जाब-केसरी महाराज रणजीतसिंह के हाथ लगने के पहले भारत में कभी कोहनूर था कि नहीं, इसका कोई प्रमाण नहीं है। मध्य-एशिया के किसी मुसलमान राजा को जीत कर उससे यह रत्न रणजीतसिंह ने पाया था। यह हीरा सदा उनके दहिने हाथ के बाज़ू में विराजमान रहता था। एक समय किसी ने इसकी क़ीमत के बारे में पूछा तो राजा साहब ने उसके उत्तर में कहा—"पांच जूते"। अर्थात् उन्होंने एक आदमी के पाँच जूते मार कर—उसको परास्त कर—यह हीरा छीन लिया। यदि कोई और अधिक शक्ति-शाली होगा तो वह उनके पाँच जूते मार कर इसे छीन लेगा। मूल्य तो इसका कुछ है ही नहीं; यह अमूल्य है। पञ्जाब पर अधिकार कर लेने के बाद वह हीरा ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी के हाथ लगा। और, वह प्रसिद्ध राजपुरुष जान लारेंस (John Lawrence) के पास जमा रहा। असावधानी के कारण लारेंस उसकी डिबिया वेस्ट-कोट (Waist-coat) की जेब में रख कर भूल गये। इसके डेढ़ महीने बाद

लार्ड डलहौसी (Lord Dalhousie) के खोजने से, वहुत घवराहट और कष्ट के उपरान्त हीरे की डिविया का पता लगा। वात यह हुई कि लारेंस साहव का जो सर्दार वैरा था उसने उसे मामूली कांच का टुकडा समझ कर, वेस्ट-कोट की जेव से निकाल कर, उसे एक टीन के वक्स मे डाल दिया। सन्तोषपूर्वक खोज करने के समय लारेंस को याद आई कि उन्होंने उस हीरे की डिविया को वेस्ट-कोट की जेव में रख लिया था। उन्होंने अपने वैरा से पूछा तो उसने खोज कर उस हीरे को निकाल दिया। मूर्ख वैरा नहीं जानता था कि उस डिविया में ऐसा अमूल्य रत्न रक्खा हुआ है। जो कुछ हो। उसके फिर मिल जाने से महात्मा लारेस की इज्ज़त वच गई। इसी से उन्होंने अपने अहोभाग्य समझे। जिस कोहनूर को पाने के लिए राजों में परस्पर कितने ही युद्ध तक हो गये हैं, जिसके लिए एक आदमी ने दूसरे आदमी की आंखें तक निकाल लीं, उसी हीरे को हस्तगत करके लारेस यों भूल गये, यह कम आश्चर्य की वात नहीं। वास्तव में असल वैराग्य या सन्तोष का यह एक विशेष लक्षण है। एक मामूली चाँदी की चवन्नी को भी कहीं रख कर हम इस तरह नहीं भूल जाते, और लारेन्स साहव ऐसी अमूल्य निधि को रख कर लारेन्स को कुछ भी उसका ध्यान नहीं रहा। वास्तव मे वह एक श्रेष्ठ विरक्त थे।

इसके वाद सन् १८५० मे वह हीरा महारानी विक्टोरिया के महल मे पहुँचाया गया। रत्न-तत्त्व के पूर्ण ज्ञाता व्रुस्टर (Sir David Brewster) की सम्मति के अनुसार विक्टोरिया के स्वामी प्रिन्स अलवर्ट ने उसे फिर से कटवाया। उसका एक ऐव साफ़ करने में वहुत मेहनत करनी पड़ी थी। छेदकचक्र (Cutting Wheel) का चक्कर एक मिनट में तीन हज़ार वार की तादाद से घुमाने पर भी उसे विलकुल वे-ऐव वनाने में लगातार ३८ दिन लगे थे। पहले इसका

वज़न १८६$\frac{१}{१६}$ करात था। इस काट-पीट में यह ८० करात कम होकर १०६$\frac{९}{१६}$ करात रह गया है। ८६$\frac{१६}{९९}$ करात का एक तोला होता है। इसके तरशवाने में आठ हज़ार पौंड की लागत आई थी। पहले वज़न में इसकी क़ीमत एक लाख चालीस हज़ार पौंड कूती गई थी।

जो कुछ हो, महात्मा लारेन्स के हाथों कोहनूर का अच्छा इस्तेमाल हुआ। उन्होंने यह अच्छी तरह दिखा दिया कि जवाहरात का वास्तव में कुछ मूल्य नहीं है। विधाता ने लारेन्स के हाथों उस हीरे को उसके योग्य स्थान में पहुँचा कर हमको यह शिक्षा दी है कि जड़ वस्तुओं को अत्यन्त अधिक आदर देना केवल अपने महत्त्व या गौरव को कम करना है। जड़ वस्तु को, चाहे वह अत्यन्त ही दुर्लभ क्यों न हो, जड़ के योग्य ही सम्मान या महत्त्व देना उचित है। ख़ास कर जो जड़ चीज़ लोगों को कोई लाभ नहीं पहुँचाती, उनके किसी काम नहीं आती, उसकी इज्ज़त कैसी? फिर मनुष्य के अहंकार को ही केवल बढ़ा देना जिसका काम है उस वस्तु को ज्ञानी लोग, दोष की खान समझ कर, घृणा की दृष्टि से ही देखते हैं।

विण्डसर-महल (Windsor Castle)। विण्डसर एक छोटा सा क़स्बा है। यहाँ का राजमहल अत्यन्त प्राचीन है। पहले ठीक इसी जगह पर विजयी विलियम राजा ने एक इमारत बनवाई थी। उसके बाद तीसरे एडवर्ड (Edward III) के शासन-काल में यह महल बना। चौथे जार्ज के समय में और उसके बाद दस लाख पौण्ड ख़र्च करके इसकी विशेष उन्नति की गई है। यहाँ के एक कमरे में मार्लबरो, नेल्सन और वेलिंगटन, इन तीनों वीरों के अनेक स्मारक-चिह्न इस समय भी मौजूद हैं। अन्य एक कमरे में वाटर्लू-युद्ध के वीरों के चित्र सुशोभित हैं। एक कमरे में एक सजा हुआ

हिन्दुस्तानी इक्का देख पड़ा। महल के आँगन में एक फुहारा है। राजा तीसरे जार्ज के समय में उनकी प्यारी लाल मछलियाँ इस फुहारे के पानी में क्रीड़ा किया करती थीं। प्रसिद्ध है कि उक्त राजा एक दिन तीसरे पहर इन मछलियों की क्रीड़ा देख रहे थे, इसी समय प्रधान मन्त्री पिट पार्लियामेंट में एक बिल पेश करने के लिए राजा की आज्ञा लेने को वहाँ उपस्थित हुए। उनकी सूचना पाकर राजा ने कहा कि "अगर मेरी प्यारी लाल मछलियों की बात पहले उठा कर बिल पेश करो तो मैं तुमको अनुमति दे सकता हूँ; अन्यथा नहीं"। मन्त्री ने और कोई उपाय न देख कर लाचार यही स्वीकार कर लिया और पार्लियामेंट महा-सभा मे बिल पढ़ने के पहले "लाल मछली" उच्चारण किया। सभा मे उपस्थित कोई भो सभ्य इस रहस्य को उस समय नहीं समझ सका। पीछे बहुत दिनों के बाद असल बात ज़ाहिर हो पड़ने पर लोगों में ख़ूब हँसी-दिल्लगी हुई।

इसी स्थान के अन्तर्गत, महल से कुछ दूर पर, एक नक़ली कुण्ड और फुहारा (Virginia Water and Falls) है। कुण्ड मे एक छोटे जंगी जहाज़ की नक़ल (Miniature Man of War) रक्खी हुई है। यह कुण्ड १½ मील लंबा और ⅓ मील चौड़ा है। इस पार से उस पार जाने के लिए बीच बीच में कई पुल बने हुए हैं।

क्यू-बाग़ (Royal Botanic Gardens, Kew)। क्यू पहले एक गांव था। अब उसकी गिनती लन्दन के उपनगरों में है। यहाँ का बोटानिक गार्डेन (उद्भिदुद्यान) पृथ्वी भर में सर्वश्रेष्ठ है। और कहीं भी वृक्षों आदि का ऐसा संग्रह मैंने नहीं देखा। अँगरेज़ों के सभी काम ऐसे ही हैं। यह भारी बाग़ ७५० बीघे ज़मीन में है। इस का शीशे का बना हुआ उष्ण-गृह (Hot-house) इतना ऊँचा है कि उस मे ६६ फुट ऊँचे ताड़ के पेड़ खड़े हैं। उन के सिवा केला,

नारियल, काफी, कपास, अदरख, जायफल और जावा द्वीप के 'उपास' वृक्ष तक अच्छी तरह वढ़ कर शोभायमान हैं। एक पानी के कुण्ड में कमल, कोकावेली तक के फूल खिल रहे हैं।

इसी के अन्तर्गत कई भवनों में उद्भिद्विद्या की शिक्षा के लिए अनेक चीज़ों की नक़लें मौजूद हैं। नक़ली फूल-फल आदि देखने में ठीक असली के ही माफ़िक़ हैं। वैज्ञानिक खोज आदि के लिए और भी बहुत सी सामग्री यहां रक्खी हुई है। इस बाग़ मे एक ऊँचा पगोडा है, उसका नाम है सूर्य-मन्दिर (Temple of the Sun)। सन् १८६१ में लगाई गई एक ध्वजा (Flagstaff) यहां देखने में आती है। वह ब्रिटिश-कोलम्बिया देश के डगलस फर वृक्ष (Douglas Fir of British Columbia) की १५९ फुट लम्बी एक लकड़ी है। यहां एक मान-मन्दिर (Observatory) भी स्थापित है।

हैमटन-कोर्ट महल (Hampton Court Palace)। क्यू से थोड़ी ही दूर पर यह विशाल राज-महल है। सन् १५१५ में कार्डिनल ओल्ज़ी ने इसको बनवाया और पीछे उन्होंने ही राजा अष्टम हेनरी (Henry VIII) को इसे दे डाला। मेरी समझ में, राजा को प्रजा की दी हुई, इससे क़ीमती चीज़ पृथ्वी पर और न होगी। महल के ठीक सामने, ३००० बीघे ज़मीन में, एक उपवन (Busbey Park) विराजमान है। महल के चारों ओर भी फलों और फूलों से शोभित वृक्ष-पूर्ण चमन १३२ बीघे ज़मीन को घेरे हुए है। इँगलेंड के राज-महलों भर में यही महल सब की अपेक्षा बड़ा है। महल के भीतर का बड़ा हाल १०६ फुट लम्बा, ४० फुट चौड़ा और ६० फुट ऊँचा है। यहां के भिन्न भिन्न भवनों में हज़ार से भी अधिक चित्र-पट शोभायमान हैं। उनमे भूतपूर्व राजों के दरबार की अनेक सुन्दरी स्त्रियों के

चित्र भी हैं। इस महल के इतिहास की दो तीन पुस्तकें हैं। इस महल की अस्थावर सम्पत्ति की सूची एक सौ से भी अधिक पृष्ठों की पुस्तक है। यह महल टेम्स नदी के किनारे पर होने के कारण इसकी शोभा और भी बढ़ गई है। अष्टम हेनरी की एक रानी को यहाँ से विचारालय में जाना पड़ा था और उसे वहाँ प्राणदण्ड दिया गया था। इसी आधार पर लोगों की धारणा है कि उसके रहने के घर मे भूतों का उत्पात हुआ करता है। यहां की ज्योतिषी घड़ी (Astronomical Clock) के सम्बन्ध में भी एक विचित्र बात सुनी जाती है। सन् १५४० में अष्टम हेनरी के लिए किसी जर्मन ज्योतिषी ने यह घड़ी बनाई थी। इस घड़ी में तिथि, राशिचक्र आदि अनेक बाते देखी जा सकती हैं। उस समय के भ्रान्त मत के अनुसार इसमे सूर्यदेव को पृथ्वी के चारों ओर घूमते दिखाया गया है। कहा जाता है कि पहले जेम्स की रानी की मृत्यु के समय, सन् १६१९ के मार्च महीने की दूसरा तारीख़ को चार बजे, यह घड़ी बन्द हो गई थी। तब से जब जिस किसी ने यहाँ अधिक दिन रह कर शरीर-त्याग किया तभी, उसी घड़ी, यह घड़ी बन्द हो गई। महल में और भी एक अद्भुत चीज़ है। वह है सन् १७६८ मे लगाई गई एक अंगूर की बेल। यह पृथ्वी भर में, सब अंगूरी बेलों से बड़ी बतलाई जाती है। बाग़ की भूलभुलइयाँ भी बड़े मज़े की चीज़ है। उस के भीतर जाकर बाहर निकलना सहज काम नहीं है।

सुनीति-संरक्षिणी सभा (Vigilance Society)। एक दिन रात को ९ बजे के समय थियेटरों की ओर होकर सड़क पर मैं चला आता था। सहसा एक आदमी एक लीथो का छपा हुआ पत्र मेरे हाथ में देकर फुर्ती से चला गया। पास की रोशनी के निकट जाकर देखा,

वह पत्र अँगरेज़ी में इस तरह लिखा था और उसके नीचे "एक स्त्री और एक माता" के हस्ताक्षर थे।

DEAR FRIEND,

I live in London, so probably do you. But perhaps like me you have not always lived there, but have known a pure home in the country to which *you look back* now sometimes with longing and regret.

I often have occasion *to pass through the gaily lighted thoroughfares* of London at night; and at first sight the streets look so cheerful that one is inclined to think "What a fine city ours is, what a grand place to live in!"

But the longer one looks the less cheerful one feels it, and now I cannot see these *gay streets and think of them without real anguish* of heart.

Who are these degraded women and girls of the pavement? For whose benefit do they come out so gaily dressed? Whose money pays their wretched wages? Through whose complicity; through whose temptation *have they fallen so low that the world calls them out-casts,* and feeling themselves so, they ever more recklessly throw body and soul away?

Have you any responsibility in this? Have you in your selfishness and unrestrained passions given yourself over *to the vile sin* which defiles the body *given you for the noblest purposes,* and ruins the soul created lower depths than those with whom you consort, you are forging for yourself chains of a slavery which before long not even a desire to reform will enable you to break.

Let me entreat you by all that is manly in you, by the remembrance, it may be, of a good mother, *of a pure* home, by the terror of the certain consequences to your body here, and to your soul here and hereafter. Let me constrain you by the love of Christ who gave himself to save you *from this awful slavery of sin, to flee* with horror from the accursed thing, *to shut the door of your mind from the unlawful* thought and desire which *prompt* such vile action, to repent in dust and ashes and turn to Him who can save to the uttermost.

Bitter tears come to my eyes as I think what you men might be, and what you are Now you might help and protect weak women from temptation, while, in fact, you push them down to hell

I ask myself, are these who call themselves men lower than the beasts of the field? Is there no nobility of heart, no humanity left? I cannot believe it You and I will probably never meet in this world, but

on that day when the secret of all hearts shall be open, may you be able to date from the day you receive this letter, the putting away of the sins of the flesh and the resurrection to the life of the spirit, which is indeed Life Eternal. I have spoken these words to you, dear friend as,

A WIFE AND A MOTHER.

अर्थात्—"प्रियबन्धु,

मैं लन्दन में रहती हूँ। शायद आप भी यहीं रहते हैं। किन्तु मेरी समझ में आप मेरी तरह जन्म से ही यहाँ के निवासी नहीं हैं। किसी देहात में आप का पवित्र निवास था; जिसके अभाव का, समय समय पर, उत्कण्ठा के साथ, आप अनुभव किया करते हैं।

मुझे रात को इन अच्छी तरह प्रकाश-पूर्ण लन्दन की सड़कों से हो कर अक्सर आना जाना पड़ता है। एकाएक देखने से ये सब सड़कें ऐसी प्रसन्नता देने वाली जान पड़ती हैं कि जान पड़ता है "हमारा यह नगर कैसा सुन्दर है। यहाँ रहने मे कितना आराम है!" मगर जितना ही अधिक दिन रह कर देखा जाता है उतना ही वह खुशी—वह प्रसन्नता—कम होती जाती है। आज कल मैं जब इन सड़कों की ओर देखती हूँ तब मेरा हृदय दुःख और शोक के भार से पीड़ित हुए बिना नहीं रहता।

आप जानते हैं, ये फुटपाथ पर टहलनेवाली हीनावस्था की स्त्रियाँ कौन हैं? किसके लिए ये इस तरह सज धज कर टहल रही हैं? किसके धन से ये पलती हैं? किनकी सोहबत और लुभाने मे ये इतना नीचे गिर गई हैं कि संसार इनको "समाज-भ्रष्टा" के नाम से पुकारता है और ये भी अपने को वैसा ही समझ कर अपने देह और आत्मा को मिटाने मे लगी हुई हैं?

आप क्या इसमें किसी तरह की अपनी भी ज़िम्मेदारी समझते हैं? आप भी क्या स्वार्थपरता और इन्द्रिय-रूप शत्रुओं के वश में

आकर इस निन्दित पाप कर्म में लिप्त हो चुके हैं जिससे आप का पवित्र शरीर और अमर आत्मा कलङ्कित हो रहा है ? क्या सचमुच ही आप इन स्त्रियों के सहवास से अपने को उनकी भी अपेक्षा अधम बना रहे हैं और अपने बँधने के लिए ऐसी एक कठिन ज़ंजीर गढ़ा रहे हैं जो अन्त को, हज़ार सुधार करने की इच्छा होने पर भी, किसी तरह कट नहीं सकेगी। यदि ऐसा ही हो तो मैं आप के आगे मनुष्यत्व की दोहाई देकर प्रार्थना करती हूँ कि आप अपनी पूजनीया मातादेवी और निष्कलङ्क गृह का स्मरण कर के, यहाँ शरीर की और इहलोक-परलोक में आत्मा की भारी ख़राबी निश्चित जान कर, ईसा-मसीह के प्रेम के लिए—जिन्होंने हमको भयानक पाप के बन्धन से छुड़ाने के लिए अपनी बलि देदी, इस पाप-प्रवाह से बच कर भाग़िए; अपने हृदय से इन सब बुरे विचारों और ख़राब इच्छाओं को दूर कर पश्चात्ताप करते हुए हम लोगों के एक मात्र रक्षक भगवान् के चरणों की शरण में उपस्थित होइए।

मैं जब सोचती हूँ, आप लोग पुरुष की जाति कितने अच्छे हो सकते हैं, किन्तु क्या हो गये हैं, तब लगातार शोक के आँसू बहाये बिना मुझसे नहीं रहा जाता। आप लोगों को उचित था कि कमज़ोर असहाय अबलाओं को सहायता पहुँचा कर उनकी रक्षा करते; किन्तु मैं देखती हूँ, आप लोग उलटे उन्हें धक्के देकर नरक की राह में ढकेल रहे हैं! मैं सोचती हूँ कि ये सब मनुष्य क्या पशुओं से भी अधम—गये-बीते—हैं ? इन में क्या कुछ भी मनुष्यत्व नहीं है ? ये लोग मनुष्यत्व को क्या एक दम गँवा बैठे हैं ? नहीं, मुझे विश्वास नहीं होता। बहुत सम्भव है कि इस जीवन में अब फिर मेरी और आपकी मुलाक़ात न होगी। पर मैं आशा करती हूँ कि उस दिन, जिस दिन सब के हृदयों का हाल प्रकाशित होगा, आप आज की तारीख़ को

इस भाव से स्मरण कर सकेंगे कि इस पत्र को पाने के बाद आप सब पाप छोड़ कर नवीन अमर यथार्थ आध्यात्मिक जीवन पाने के लिए तैयार हुए थे। प्रिय बन्धु, मैंने आप से एक पत्नी और एक माता के भाव से ये कई एक बातें कही हैं।

इस पत्र के सम्बन्ध में और कुछ कहना अनावश्यक है। पाठक लोगों ने सहज ही समझ लिया होगा कि कैसे उच्च हृदय और महान् उद्देश्य से यह पत्र लिखा और बांटा जाता है। पता लगाने से मुझे मालूम हुआ कि समाज की उन्नति के लिए विशेष रूप से यत्न करने वाली एक शक्तिशालिनी सभा लन्दन में स्थापित है। अनेक अच्छे घरानों की स्त्रियां उसमे नाम लिखाये हुए हैं। उन्हीं का यह सब उद्योग है। देश के हित के लिए, मनुष्य-समाज के कल्याण के लिए अँगरेज़ स्त्री-पुरुष दिन रात क्या नहीं करते। बुरे को भला बनाने के लिए परिश्रम करने में ये कभी नहीं थकते। तभी तो इनके ऊपर विधाता की ऐसी कृपा है। धन्य है इनका उद्योग, उत्साह और शुभाकांक्षा!

वेस्टमिनिस्टर एबी (Westminster Abbey) :—"The spaciousness and gloom of this edifice produce a profound and mysterious awe We step cautiously and softly about as if fearful of disturbing the hallowed silence of the tomb; while every footfall whispers along the walls, and chatters among the sepulchres, making us more sensible of the quiet We have interrupted It seems as if the awful nature of the place presses down upon the soul and hushes the beholder into noiseless reverence We feel that we are surrounded by the congregated bones of the great men of past times, who have filled history with their deeds, and the earth with their renown."—Washington Irving

वास्तव में इस स्थान का इससे अधिक उत्तम वर्णन हो नहीं सकता। इस स्थान का बहुविस्तृत घेरा, चारों ओर की गंभीरता, दर्शकगण का धीरे धीरे चलना, साधारण शब्द की कोमल प्रतिध्वनि, ये सब एकत्र

हो कर इस विराट् समाधि-मन्दिर में चिरनिद्रा में सोये हुए यहां के निवासियों की पवित्र अमर आत्मा को जैसे शोक-सन्तप्त कृतज्ञ हृदय का सरल सम्मान प्रदान कर रहे हैं। यहां जिन लोगों की समाधियां हैं उनके और इस भवन के सम्बन्ध में दो एक बातें यहां पर लिखी जाती हैं।

यहां पर मैं मन्त्रीवर 'पिट' (लार्ड चैथम); भारत के लाट पहले वाइसराय महात्मा 'कैनिङ्ग;' 'ब्राइट' के मित्र उन्नत-हृदय वार्त्ता-शास्त्रवेत्ता 'काब्डेन'; नवाबी अमल के ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नौ-सेनापति 'वाट्सन' (यह चोग़ा पहने पंखा हाथ में लिये बैठे हैं, दाहिनी ओर कलकत्ता नगरी घुटने टेके विजेता के निकट दरख़ास्त दे रही है, बाईं ओर ज़ंजीर में बँधा हुआ चन्दननगर-रूपी एक भारतीय पुरुष उपस्थित है); दासत्व-प्रथा को उठा देने में प्रधान उद्योग करने वाले 'विल वारफ़ोर्स;' जगद्विख्यात 'न्यूटन' (माध्याकर्षण की मूर्त्ति न्यूटन के दोनों ओर दो देव-मूर्त्तियाँ 'ज्ञान' का लिपटा हुआ काग़ज़ खोल रही हैं। ऊपर भारी गोलक के ऊपर ज्योतिर्विद्या की मूर्त्ति है। नीचे संगमरमर के टुकड़े में बुद्धिमान् न्यूटन की खोज और आविष्कार की मूर्त्तियाँ दिखलाई गई हैं); विवर्त्तनवाद अर्थात् क्रमविकास के प्रचार द्वारा ज्ञान-राज्य में युगान्तर उपस्थित करने वाले पण्डित 'डार्विन'; प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्या-विशारद 'हार्शेल'; भूतत्त्व के पण्डित महात्मा 'लायेल'; सुप्रसिद्ध राजमन्त्री 'विलियम पिट'। (यह चान्सलर की पोशाक पहने खड़े हुए जैसे वक्तृता दे रहे हैं। इन की मूर्त्ति के नीचे दहिनी ओर खड़ी हुई इतिहास की मूर्त्ति एकाग्रता के साथ जैसे उसे सुन रही है। बाईं ओर अराजकता-रूपी ऊधमी पुरुष ज़ंजीर से जकड़ा खड़ा है); भारतबन्धु सरल-हृदय 'लार्ड लारेन्स'; सिपाही-विद्रोह की आग को बुझाने वाले महावीर 'आउट्राम' (बीच में कुछ

ऊँचे पर हावलक साहब की मूर्त्ति है, और नीचे इधर उधर से आउट्राम और लार्ड क्लाइड [सर कैलिन कैम्बेल] दोनों हाथ मिला रहे हैं। आसपास भारत के अनेक जातीय लोगों की शोकार्त्त मूर्त्तियाँ खड़ी हुई हैं); आफ्रिका के सुप्रसिद्ध धर्म-प्रचारक और परिव्राजक प्रेमवीर 'लिविंग्स्टन' (दो हवशी सेवक अत्यन्त कष्ट उठा कर विपत्ति-पूर्ण मध्य-आफ्रिका के पर्ण-कुटीर से इन प्रातःस्मरणीय महा-पुरुष के शव को यहाँ लाये थे। हवशी लोगों की कृतज्ञता से उत्पन्न प्रेम और आत्मत्यागी महासेवक परम भक्त को सम्मान देने वाले दयालु हरि की कृपा तथा प्रत्यक्ष शक्ति की सहायता के विना ऐसी घटना का होना सर्वथा असम्भव ही था); कविवर 'गे' और दीर्घजीवी 'पार' तथा मनुष्य-सेवक अमेरिकन सौदागर 'जार्ज पीबडो'।

कविवर गे की समाधि के पत्थर पर उन्हीं की कविता का निम्नलिखित अंश खुदा हुआ है—

> "Life is a jest, and all things show it;
> I thought so once, but now I know it"

अर्थात्—जीवन असार है, सब पदार्थ इसके साक्षी हैं, इस बात को एक समय मैं सोचता था, किन्तु अब प्रत्यक्ष देखता हूँ।

मि० पार ने १२० बरस की अवस्था मे दूसरी शादी की थी और उससे कई लड़की-लड़के भी उनके हुए। १५२ बरस की उम्र में इन का देहान्त हुआ। अन्त समय तक यह खूब सबल और सुस्थ थे। राजा ने इनको देखने की इच्छा से बुलाया। यह लन्दन में आये और राजभवन के गरिष्ठ भोजन करने से कब्ज़ हुआ, बीमार पड़े और कूच ही कर गये।

इसी तरह चासर, शेक्सपियर, मिल्टन, मेकाले आदि पण्डितों, राजे-रजवाड़ों तथा अमीर-उमराओं (स्त्री और पुरुष, दोनों) की ३००

के लगभग संगमरमर की समाधियाँ, मूर्त्तियाँ और अनेक स्मृति-चिह्न इस घर में स्थापित हैं। हर एक जगह नाम और मरने का सन् लिखा हुआ है। जैसे—

William Pitt, Lord Chatham, died 1778; Charles John Viscount Canning, died 1862; Richard Cobden, Champion of Free Trade, died 1865; William Wilberforce, died 1833; Sir Isaac Newton, died 1726; Charles Darwin, died April 19, 1882; Sir John Herschel, died 1871; Sir Charles Lyell, the geologist, died 1855; William Pitt, Chancellor of the Exchequer, died 1809; Lord Lawrence, died 1879; Sir James Outram, General, died 1863; Dr. David Livingstone, died 1873; John Gay, the poet, died 1732; Thomas Parr, a husbandman of Shroffshire, died 1635.

इसके एक अंश में सेन्ट पीटर का गिर्जा है। वहाँ नियमानुसार उपासना आदि हुआ करती है। गिर्जे की दीवार में मूसा, दाऊद, पाल और पीटर की मूर्त्तियाँ खुदी हुई हैं। इसी गिर्जे में इँगलेंड के राजा और रानी का अभिषेक हुआ करता है। सन् १०६६ ई० के राजा हेरल्ड (King Harold) से लेकर भारतेश्वरी महारानी विक्टोरिया के पौत्र वर्त्तमान सम्राट् पञ्चम जार्ज तक का अभिषेक इसी गिर्जे में हुआ है। अभिषेक के लिए दो सिंहासन हैं। चार सिंहमूर्त्तियों पर सिंहासन के चारों पाये रक्खे हैं। पहले सिंहासन को सन् १२९७ में राजा प्रथम एडवर्ड (Edward I) स्काट्लेंड से लाये थे। इसी के साथ एक पत्थर की पिंडी सी आई थी। उसका पहला नाम "जेकब की तकिया" (Jacob's Pillow) था। किन्तु जबसे यह पत्थर इस गिर्जे में आया तब से बराबर राज्याभिषेक के समय सिंहासन के नीचे रक्खा जाता है और अभिषेक-प्रस्तर (Coronation Stone) कहलाता है। पहले इसके ऊपर स्काट्लेंड के राजों का अभिषेक होता था। सन् ८५० ई० में आयर्लेंड के राजा केनेथ (Kenneth) इसकी पीठ में एक लेख खुदवा कर प्रकाशित कर गये थे कि "जहाँ यह पत्थर का

टुकड़ा जायगा वहाँ के सिंहासन पर स्काट्लैंड के राजा का अधिकार होगा"।

If fates go right, where'er this stone is found,
The Scots shall monarchs of that realm be found.

प्रथम जेम्स के इँगलैंड पर अधिकार करने से केनेथ की भविष्य-द्वाणी पूरी हुई। जिस समय दूसरी मेरी (Mary) और उनके स्वामी तृतीय विलियम (William III) का एक साथ इँगलैंड में अभिषेक हुआ, उसी समय दूसरा सिंहासन तैयार किया गया।

सन् १८३६ ई० के जून महीने की २८ वीं तारीख़ को, राज्य-भार ग्रहण करने के एक साल उपरान्त, विशेष धूमधाम के साथ महारानी विक्टोरिया का राज्याभिषेक हुआ। उस महायज्ञ के सभी अङ्गों में बहुतायत थी। इस कारण उसके वर्णन से ग्रन्थ बहुत बढ़ जाने का भय है। यहाँ पर केवल मन्त्र लिखा जाता है, जिससे अभिषेक किया जाता है। पुरोहित को आध सेर सोने का टुकड़ा और एक मोहर दक्षिणा में दी जाती है। मन्त्र यह है—

"Be thou anointed with holy oil, as kings, priests, and prophets were anointed. And, as Solomon was anointed King by Zodak the priest and Nathan the prophet, so be you anointed, blessed and consecrated Queen, over this people, whom the Lord your God hath given you to rule and govern, in the name of the Father of the Son and of the Holy Ghost. Amen."

महावीर नेपोलियन के सहकारी और वाटर्लू आदि अनेक युद्ध-क्षेत्र मे अँगरेज़ों के विरुद्ध शस्त्र धारण करनेवाले सेनापति स्यूल (Soult) उक्त अभिषेक के अवसर पर निमन्त्रित होकर इस उत्सव में उत्साह-सहित सम्मिलित हुए थे। इससे ब्रिटिश-गौरव की महिमा और भी बढ़ गई। अभिषेक के समय से अब तक वह ब्रिटिश-प्रताप वैसा ही उज्ज्वल बना हुआ है और नित्य बढ़ता ही जाता है।

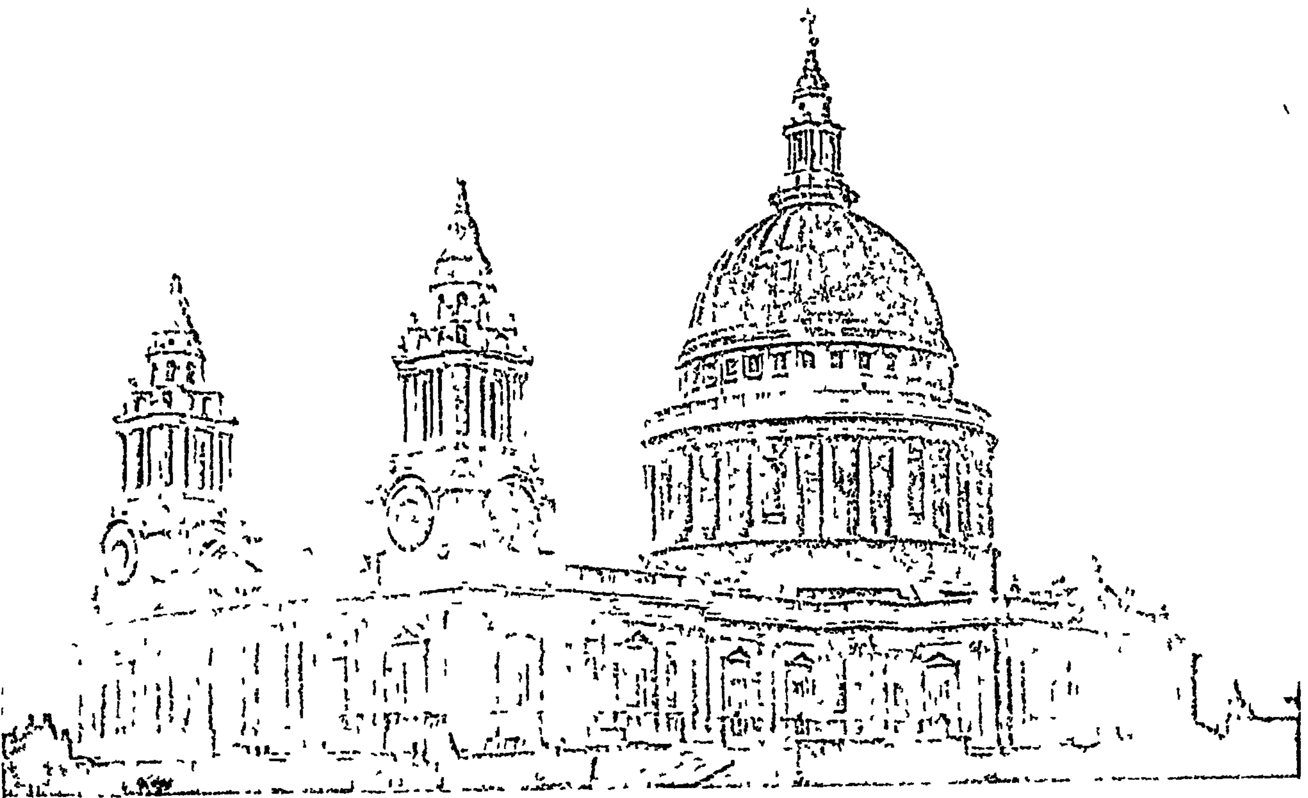
इस गिर्जे के अन्यान्य अंशों में राज-पुरोहितों के रहने के स्थान

(Deanery), सभागृह (Chapter-house), जेरूसलम-चेम्बर, सप्तम हेनरी का अतुलनीय (लासानी) चैपेल, कालेज-स्कूल आदि दस बारह भवन हैं। यह सब इमारत पाँच बीघे ज़मीन में है। गिर्जा १०२ फ़ुट ऊँचा है और उसकी चोटी २२५ फ़ुट ऊँची है।

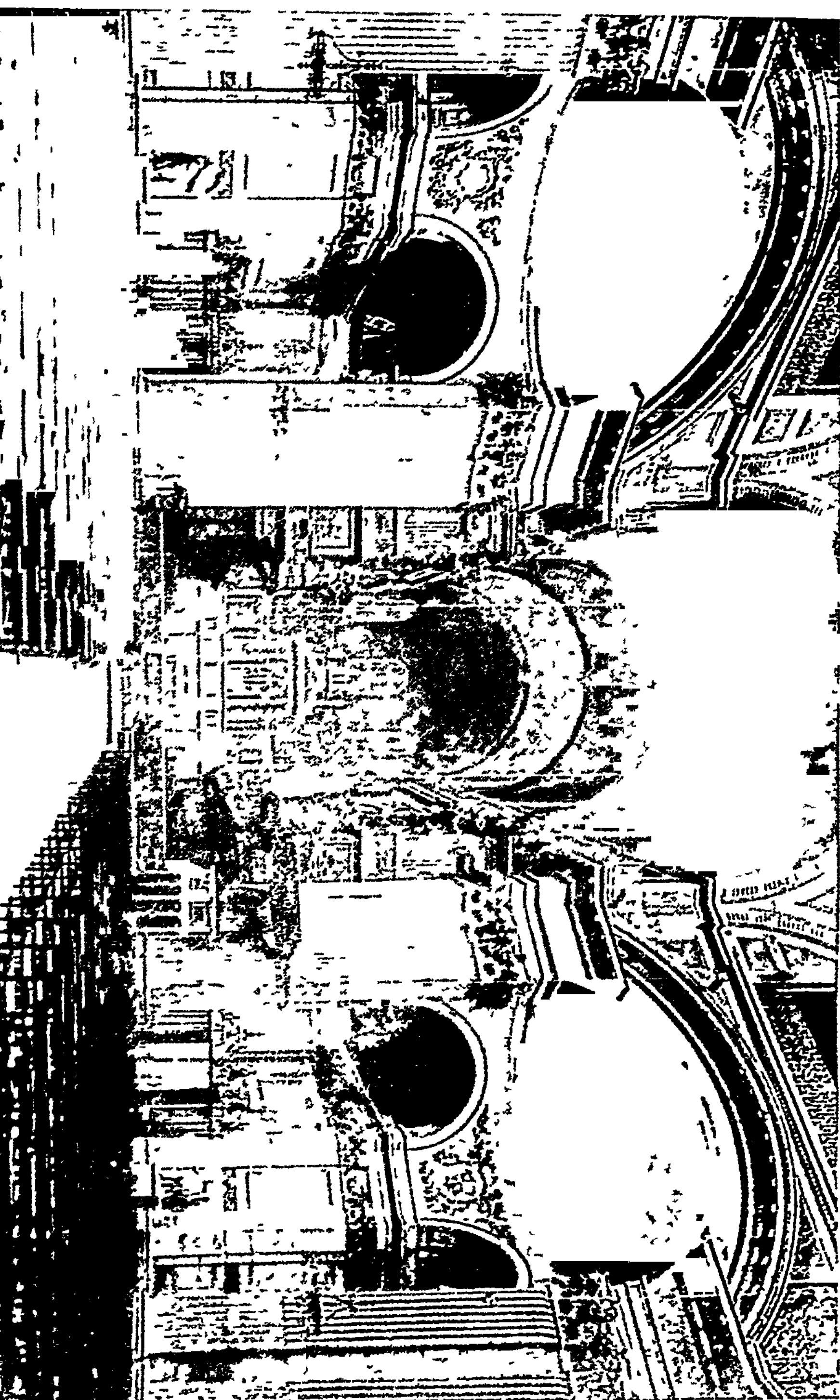
सन् ६१६ में राजा सिबर्ट (Sebert) ने, टेम्स नदी के किनारे, चारों ओर जल से घिरी हुई एक टुकड़े ज़मीन पर, सेन्ट पीटर के नाम से एक गिर्जा बनवाया था। ऐसी ज़मीन कभी बैठ जाना सर्वथा सम्भव समझ कर नेल्सन ने अन्त समय अपने शव के वहाँ समाधि-स्थान किये जाने की इच्छा प्रकट की थी। इस गिर्जे के निर्माता नरपति सिबर्ट इसी स्थान में गड़े हुए हैं। डिनामर लोगों के द्वारा विनष्ट होने पर इस गिर्जे को, सन् ९८५ में, नरपति एडगर (Edgar) ने फिर बनवाया। भिन्न भिन्न राजाओं की अधीनता में क्रमशः बढ़ती होते-होते इस गिर्जे को वर्त्तमान विशाल आकार प्राप्त हुआ है।

राज्य में इस तरह के समाधि-मन्दिर की विशेष उपयोगिता देख पड़ती है। वहाँ वेस्ट-मिनिस्टर एबी में गाड़ा जाना एक ऊँचे दर्जे की आशा समझी जाती है। मनुष्य-जीवन चार दिन का है। परन्तु वह नश्वर शरीर संमान के साथ ऐसे स्थान में स्थापित होने से निःसन्देह संसार में अमरत्व प्राप्त होता है। इसी विचार से, उसी महा-गौरव के लिए, वहाँ अनेकों लोग कर्त्तव्य-पथ में आगे बढ़ते हैं; और, उससे संसार की विलक्षण उन्नति हो रही है। उससे मनुष्य-जीवन की उन्नति के आदर्श का पृथ्वी पर प्रचार होता है और निःस्वार्थ-सेवा की जगती हुई ज्योति जगत् में फैल कर सबका कल्याण करती है।

इस गिर्जे की उपासना के समय के सम्बन्ध में एक कवि कहता है:—



सेन्ट पाल का गिर्जा—पृ० ११५



"All without is mean and small
All within is vast and tall.
All without is harsh and shrill,
All within is hushed and still."

अर्थात्—"बाहर सब क्षुद्र और हीन है। भीतर सब महान् और विराट है। बाहर सब कठोर और कर्कश है। भीतर सब धीर और स्थिर है"।

सेन्ट पाल गिर्जा (St. Paul's Cathedral)। यह लन्दन का प्रधान भजनालय है। प्राचीन समय में, रोमन-साम्राज्य में, यहाँ 'डायना' देवी का एक मन्दिर था। यहाँ पहले पहल क्रिस्तानी गिर्जा, सन् ६१० में, स्थापित हुआ था। सेन्ट अगस्टाइन ने आकर राजा एथेल्वर्ट (Ethelbert) को क्रिस्तान बनाया। उसके बाद उक्त राजा ने यह गिर्जा बनवाया और इसके लिए एक सम्पत्ति (Manor of Tillingham) दान कर दी। उसी सम्पत्ति की आमदनी से अब तक इसका ख़र्च चल रहा है। इसके बाद, दो बार आग लग जाने के उपरान्त, इस स्थान पर जो गिर्जा बनाया गया, वह भी अच्छा और ऊँचा था। किन्तु सन् १६६६ में, लन्दन में, जो भारी आग लगी, उसमें वह भी भस्मीभूत होगया। उसके ९ बरस बाद, सन् १६७५ की २१ वीं जून को, इञ्जीनियर रेन (Sir Christopher Wren) और उनके फ़्रीमेसन (Freemason) भाइयों के द्वारा इस चर्च की वर्त्तमान इमारत की नींव डाली गई। इसके बनने में १२ लाख पाउण्ड की लागत आई है। रेन का शव इसी चर्च में समाधि-स्थ है। उत्तर द्वार के ऊपर लैटिन भाषा में, सुवर्णाक्षरों में, जो लेख है, उसका अर्थ यह है कि "इसके नीचे इस नगर के और इस गिर्जे के स्थपति-विद्या-विशारद इञ्जीनियर रेन गड़े हुए हैं। ये ९० बरस से भी अधिक जिये, लेकिन अपने लिए नहीं—सर्वसाधारण के हित के लिए"।

इस मन्दिर के सम्बन्ध में पण्डितवर कार्लाइल, जिन्हें मैं अपने गुरु के समान समझता हूँ, कहते हैं—"(St. Paul's was the only edifice which struck me with a proper sense of grandeur." (केवल यही इमारत मेरे मन में महत्त्व का यथार्थ भाव लाई थी)। यह लम्बाई में ५५०, चौड़ाई में १२५ और १८० तथा ऊँचाई में ३७० फुट है। गुम्बद के नीचे की गेलरी में एक ओर धीरे से भी कुछ कहने से वह दूसरी ओर बहुत स्पष्ट सुन पड़ता है। इस गेलरी का नाम है Whispering gallery। यहाँ की घड़ी भी छोटी नहीं है। आधी रात के सन्नाटे में उसकी आवाज़ २० मील तक सुन पड़ती है। यहाँ की सबसे ऊँची गेलरी से सारा लन्दन और आसपास के क़स्बे ख़ूब स्पष्ट देख पड़ते हैं। वहाँ पर से सड़क पर के गाड़ी-घोड़े और आदमी खेलने के खिलौने सरीखे चलते-फिरते देख पड़ते हैं; और सारे लन्दन का गुल-गपाड़ा किसी मेशीन के चलने का शब्द जैसा जान पड़ता है।

यहाँ जो लोग गड़े हुए हैं उनमें से अधिकांश लोग बहादुर हैं। इसी से इसे "Pantheon for heroes" कहते हैं। यहाँ महान् सेवक पूज्यपाद हावर्ड, पण्डित-प्रवर जान्सन, संस्कृत के सुपण्डित बङ्गाल-हाईकोर्ट के जज सर विलियम जोन्स, गवर्नरजनरल लार्ड कार्नवालिस, जगद्विख्यात प्रातःस्मरणीय खार्तूम के गार्डन, नौ-सेनापति लार्ड नेलसन और प्रसिद्ध ड्यूक आफ़ वेलिंगटन आदि बहुत से महापुरुषों की, संगमरमर की, मूर्त्तियाँ इस गिर्जे के भीतर सुशोभित हैं। पहले ही कहा जा चुका है कि वेस्ट मिनिस्टर एबी की ज़मीन पहले जल से घिरी हुई या पानी की ज़मीन थी, और नेलसन ने उसी में अपने गाड़े जाने की इच्छा इसलिए प्रकट की थी कि उनकी समाधि कभी ज़मीन धस जाने से पानी में मग्न हो जायगी। नेलसन और वेलिंगटन के समाधि-

स्थान पर राजकवि का एक सुन्दर अँगरेज़ी पद्य इस भाव से लिखा हुआ है, मानों वाटर्लू के वीर वेलिंगटन के यहाँ आने पर नेल्सन पूछते हैं कि:—

"कौन आता है प्रतिष्ठित अतिथि की तरह, बाजे, पताका, सेना और पुरोहित के साथ ! सब लोगों के रोने से मेरी विश्राम की शान्ति नष्ट होगई" ।

इसके उत्तर में कवि कहता है कि:—

"पराक्रमी वीर, तुम जैसे महान् थे समुद्र में, यह वैसे ही हैं पृथ्वी पर । तुम्हारा द्वीप तुमको खूब प्यार करता है, संसार में तुम्हारा ऐसा सागर-वीर दूसरा नहीं पैदा हुआ । अब शोकवाद्य और कोलाहल के साथ तुमसे मिलने आ रहे हैं वह प्रधान योद्धा, जो पृथ्वी पर वैसे ही महान् हैं, जैसे तुम समुद्र में थे ।"

अँगरेज़ी पद्य बहुत ही सुन्दर है । देखिए—

"Who is he that cometh, like an honour'd guest
With banner and with music, with soldier and with priest,
With a nation weeping, and breaking on my rest ?"

"Mighty seaman, this is he
Was great by land as thou by sea
Thine island loves thee well, thou famous man,
The greatest sailor since the world began,
Now, to the roll of muffled drums,
To thee the greatest soldier comes ·
For this is he
Was great by land as thou by sea

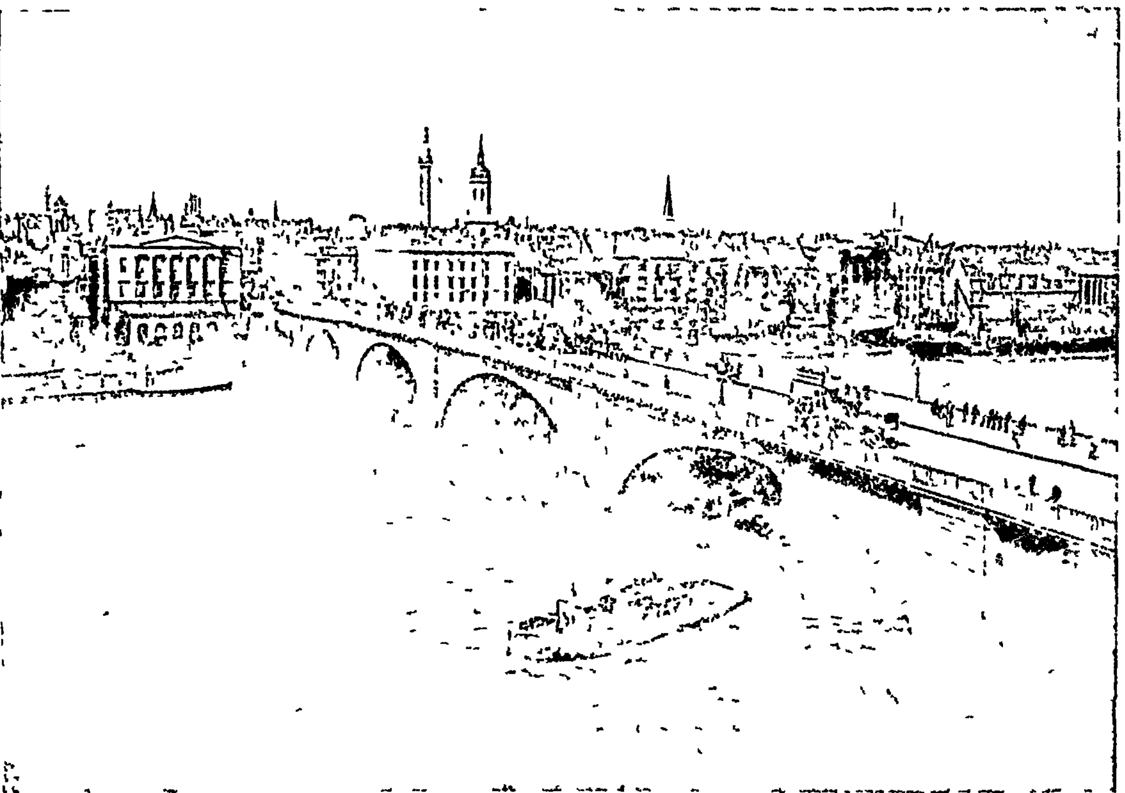
यहाँ पर महामति हावर्ड के सम्बन्ध में कुछ कहना अनुचित न होगा । बहुत से पाठक जानते होंगे कि इनका पूरा नाम "हावर्ड दि फिलान्थरोपिस्ट" था । इन्होंने अपना सारा जीवन रोगियों की सेवा करने में ही बिताया, और अन्त को रोगी की सेवा में ही स्वयं रोग का शिकार बने । यह कह गये हैं कि "मैं मृत्यु को ज़रा भी नहीं डरता । बल्कि और सब बातों की अपेक्षा अधिक प्रसन्नता के साथ में मृत्यु

के बारे में विचार किया करता हूँ। मेरी समाधि पर किसी तरह की सज-धज न की जाय, और कोई स्मारक चिह्न भी स्थापित न हो। चुप-चाप मेरे शव को गाड़ कर उस पर एक सूर्य्य-घड़ी स्थापित कर दी जाय, जिसमें मुझे लोग एकदम भूल जायँ"।

"(Death has no terrors for me; it is an event I always look with cheerfulness, if not with pleasure; and be assured, the subject is more grateful to me than any other. Suffer no pomp to be used at my funeral, no monument to mark the spot where I am laid; but put me quietly in the earth, place a sundial over my grave, and let me be forgotten."—*John Howard.*)

महापुरुष के योग्य ही यह उक्ति है। किन्तु यद्यपि ऐसे महापुरुष मान की चाह नहीं करते, तथापि भक्तवत्सल भगवान् अपने भक्त का मान बढ़ाये बिना नहीं रहते।

लन्दन-पुल (London Bridge)। एक शताब्दी पहले लन्दन-राजधानी में केवल एक ही पुल था। वह पुल यही है। सन् ११७६ में, दूसरे हेनरी के राज्य-काल में, इसका बनना शुरू हुआ और सन् १२०६ में, राजा जान के समय यह बन कर तैयार हुआ। साधारण सड़कों की तरह इस पुल के ऊपर एक गिर्जा था। दोनों ओर दस्तूर के माफ़िक रहने के घर आदि और दोनों निकासों पर दो बड़े बड़े दुर्ग के ऐसे फाटक लगे हुए थे। इन्हीं दोनों फाटकों के ऊपर लोगों को शिक्षा देने के लिए राजद्रोहियों या और किसी भारी अपराध के करनेवालों के कटे हुए सिर लटकाये जाते थे। पुराने स्थान से ६६ हाथ के फ़ासले पर, सन् १८३२ में, यह नया पुल हटा दिया गया है। इस समय उस पर गिर्जा या आसपास रहने के घर, कुछ भी नहीं है। यह पुल ६२८ फ़ुट लम्बा, ५४ फ़ुट चौड़ा और



लन्दन ब्रिज—पृ० ११८



ग्रेनिट पत्थर के पाँच खम्भों पर रक्खा हुआ है। बीच के खम्भे का घेरा (span) १५२ फुट है। नेपोलियन के समय में स्पेनिश-युद्ध (Peninsular War) में जीती हुई तोपों की धातु से इस पुल के दोनों ओर के लाल्टेनों के खम्भे (Lamp-posts) ढाले गये हैं। गिन कर हिसाब लगाया गया है कि रोज़ १५,००० गाड़ी और १ लाख आदमी पैदल, औसत के हिसाब से, इस पर से गुज़रते हैं। पृथ्वी पर सब मिलाकर १४ पुल उत्तम हैं। उन सबमें वेस्टमिनिस्टर ब्रिज (Westminster Bridge) श्रेष्ठ है। बीच में रेल-लाइन और दोनों ओर पैदल चलने का रास्ता है। आत्महत्या करने की इच्छा रखनेवालों के लिए ऐसे स्थान बड़े सुभीते के होते हैं। कवि क्राब (Crabbe) ने किसी समय असहाय अवस्था से दुःखित होकर इसी पुल पर से टेम्स नदी में फाँदने की इच्छा की थी। इस बारे में वाटर्लू-ब्रिज (Waterloo Bridge) विशेषरूप से प्रसिद्ध है। उस पर से असंख्य लोगों ने कूद-कूद कर आत्महत्या कर डाली है। इसी लिए उसे "दीर्घ-निःश्वास का पुल" (English "Bridge of Sighs") कहते हैं। दोनों ओर की इमारत आदि मिला कर उसके बनने में दस लाख पाउण्ड की लागत आई है।

टेम्स-टनेल (Thames Tunnel)। इस पर से अब लोगों को चलने नहीं देते। केवल रेल चलती है। यह १२०० फुट लंबा, १७ फुट चौड़ा, ६३/४ फुट ऊँचा और १६ फुट नदी के नीचे है। इसके बनने मे चार लाख अड़सठ हज़ार पाउण्ड ख़र्च हुए हैं। सन् १८४३ में यह सर्वसाधारण के लिए खोला गया था। उसके बाद, सन् १८६५ में, दो लाख पाउण्ड देकर ईस्ट-लन्दन-रेलवे कम्पनी ने इसे ख़रीद लिया। इससे कभी एक पैसे की आमदनी नहीं हुई। यह एक अद्भुत इञ्जीनियरी का नमूना अवश्य है। टावर के नीचे

और एक छोटा सा टनेल १६,००० पाउण्ड की लागत से बनवाया गया है। इसमें लोग आते-जाते हैं। यह १३३० फुट लम्बा है। इसका नाम सव्वे (Subway) है।

मनूमेंट (Monument)। सन् १६६६ में दूसरी से लेकर सातवीं सितम्बर तक लन्दन में एक भयानक आग (The Great Fire of London) लगी थी। इस अग्निकाण्ड में ४६० सड़कें, ८६ गिर्जे और १३,२००- घर जले थे। सब मिला कर कोई एक करोड़ पाउण्ड की सम्पत्ति स्वाहा होगई थी। यह स्तम्भ उसी अग्निकाण्ड का स्मारक चिह्न है। इसी स्थान के निकट पुडिंगगली (Pudding Lane) में पहले आग लगी थी, इसी से यह स्तम्भ यहाँ पर बनाया गया है। यह २०० फुट ऊँचा है। कहा जाता है कि जिस घर से आग शुरू हुई थी उस घर से यह स्थान जितना दूर है उतनी ही इस मनूमेंट की ऊँचाई है। ३४५ गोल सीढ़ियों पर चढ़ कर ऊपर जाना होता है। पहले बहुत लोगों ने ऊपर से गिर कर आत्महत्या कर डाली है। इसी से अब ऊपर के प्लेटफ़ार्म पर लोहे का जाल लगा दिया गया है।

विक्टोरिया पार्क (Victoria Park)। लन्दन के पूर्वी हिस्से की ग़रीबों की बस्ती के लिए यह पार्क ३०० बीघे के लगभग ज़मीन के ऊपर एक लाख पाउण्ड ख़र्च करके बनवाया गया है। इसके पूर्व ओर खुला हुआ मैदान है। उसमें लोग कसरत के खेल खेलते हैं। पश्चिम ओर टहलने का स्थान है, फूलों की क्यारियाँ और दो जलाशय हैं। यहाँ के फूलों की बहार मुझे कभी नहीं भूलने की। जगह जगह क्यारियाँ ऐसे ढंग से बनाई गई हैं कि उनके आगे बेलबूटेदार गलीचे बिलकुल तुच्छ हैं। 'प्रकृति' को कारीगरी के अधीन बना कर संसार की शोभा बढ़ाने

और सुभीता कर देने में अँगरेज़ों को अतुलनीय क्षमता प्राप्त है—इस सिद्धान्त का यहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण देखने को मिला। वृक्ष, पत्र, लता, पुष्प आदि जगह जगह पर इस ढंग से लगाये गये हैं कि वे सुख-सेज जान पड़ते हैं और उन पर लोट रहने की इच्छा होती है। यहाँ की शोभा देख कर सचमुच मेरे नेत्र सफल हो गये। ग़रीबों की बस्ती के लिए ऐसा सुन्दर प्रबन्ध देख कर मुझे परम प्रसन्नता प्राप्त हुई। यहाँ सर्वसाधारण के व्यवहार के लिए एक बड़ा भारी महल (People's Palace) भी बन गया है।

भारतेश्वरी विक्टोरिया महारानी के दर्शन। हम भारतवासी चिरकाल से एक राजभक्त जाति हैं। हम लोग राजा को ईश्वर का अंश समझ कर उसकी पूजा किया करते हैं। यहाँ तक कि राजा अगर यवन हो तो भी उसे हम राजसंमान देने में ज़रा भी कमी नहीं करते। मुसलमान-सम्राटों को भी "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" कह कर पूजने में हमें संकोच नहीं हुआ। युग-युगान्तर से चला आ रहा हमारा यह विश्वास तीन दिन की पाश्चात्य जातियों की संगति से एक-दम मिट नहीं सकता। यूरोप में भी बहुत दिनों तक राजा के ईश्वर-नियुक्त (Divine right of Kings) होने पर लोग विश्वास करते थे। नहीं मालूम, देश या जाति के ऊपर संमान का भाव या आसक्ति हम में कभी थी या नहीं। अँगरेज़ी पेट्रियाटिज्म (Patriotism) शब्द का प्रतिशब्द शायद हम लोगों में कभी नहीं प्रचलित था। इस समय उस शब्द को अँगरेज़ों से लेकर हम लोग उसके लिए "देश-हितैषिता" इस यौगिक शब्द का व्यवहार करने लगे हैं। हमारे यहाँ युद्ध में राजा के भागने या मारे जाने पर सैनिक लोग तुरन्त शस्त्र-त्याग कर देते थे।

राजा के न रहने पर वे किस के लिए युद्ध करते? राजा के ऊपर हम लोगों की ऐसी ही अटल भक्ति है। देश के प्रति वैसी भक्ति नहीं है! आधुनिक 'वन्दे मातरम्' मन्त्र यूरोप की नक़ल या अनुकरण-मात्र है। इसी से इँगलैंड में पैर रखने के समय से एक बार महारानी विक्टोरिया को देखने की मुझे बड़ी प्रबल इच्छा थी। ख़ास कर व्यक्तिगत भाव से 'क़ैसरेहिन्द' विक्टोरिया के ऊपर मुझे इतनी श्रद्धा है कि मैं उन्हें ईश्वर के विशेष अनुग्रह का पात्र मानता हूँ। सौभाग्य-लक्ष्मी बहुत ही थोड़े लोगों के यहाँ अटल अचल भाव से रहती है। किन्तु इन पुण्यवती महारानी ने जीवन की अन्तिम घड़ी तक सौभाग्य-लक्ष्मी का उपभोग किया। महारानी विक्टोरिया लन्दन में बहुत कम रहा करती थीं। इसी कारण मुझे सहसा उनके दर्शन मिलना कठिन था। सन् १८८६ के मई महीने में महारानी की पहली पोती के ब्याह के उपलक्ष में बकिंगहम-महल (Buckingham Palace) में जाकर पहले पहल मैंने उनके दर्शन किये। महारानी का स्वरूप देख कर मुझको बड़ी ही प्रसन्नता हुई। महारानी साधारण पोशाक में थीं। यह देख कर उन पर और भी श्रद्धा बढ़ गई। जैसी आशा करके मैं गया था उससे कुछ कम वहाँ नहीं देखा। अवश्य ही उस हाई-लेंडर स्काच-मैन की तरह मेरे निराश होने का कोई कारण नहीं था। कहा जाता है कि एक समय स्काटलेंड के उत्तर के किसी गाँव होकर विक्टोरिया के जाने की ख़बर पाकर पास के गाँव का एक किसान बड़े ही आग्रह के साथ राजदर्शन के लिए सड़क के किनारे जाकर खड़ा हो गया। जब महारानी की गाड़ी निकल गई तब वह आदमी बहुत ही उदास होकर अत्यन्त विस्मय के साथ दूसरे साथी से कह उठा—" Jack! Jack! She is nothing but

a woman" (अर्थात् यह तो साधारण स्त्री के सिवा और कुछ नहीं है)। वह आदमी अपने मन में आशा करके आया था कि महारानी न-जाने कौन अद्भुत जीव होंगी। किन्तु अन्त को उसने देखा, वह एक साधारण स्त्री हैं। ज़रा धूमधाम और पोशाक की तड़कभड़क ही होती तो भी उसे कुछ सन्तोष होता। किन्तु वह भी कुछ न था। इसी से उसे यों निराश और दुःखित होना पड़ा।

महारानी के वर्णन के साथ ही इँगलेंड के प्रधान राजमुकुट के सम्बन्ध मे कुछ कह देना उचित जान पड़ता है। यह मुकुट लन्दन-टावर में सुरक्षित है। इसमे सब मिलाकर १ बड़ा मानिक, २६ नीलम, ११ पन्ना, ४ छोटे मानिक और १,३६३ अन्य प्रकार के रत्न, १,२७३ गुलाबी हीरे, ४ अण्डे के आकार के मोती और २७३ छोटे मोती लगे हुए हैं। योरोप के सब राजमुकुटों से यह भारी वज़न का है।

श्रीगुरुदेव कार्लाइल (Thomas Carlyle)।—

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

बड़े दुःख की बात है कि गुरुदेव की जीवितावस्था में मैं उनके निकट उपस्थित नहीं हो सका। ऐसे प्रेमावतार विश्वदर्शी महापुरुष के शरीर को देखना और पैर छूना मुझ सरीखे नराधम को कैसे नसीब हो? अन्त समय वह जहाँ रहने लगे थे, उस लन्दन के चेल्सी कस्बे के बाँध (Chelsea Embankment) के ऊपर नदी के किनारे एक मूर्त्ति के सिवा उनका और कोई चिह्न नहीं देख पड़ा। कार्लाइल के रहने का घर ख़रीद कर उसकी रक्षा करने की

चेष्टा उस समय हो रही थी। यद्यपि अब तक कार्लाइल को समुचित संमान नहीं दिया गया, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि समय पाकर कार्लाइल विश्वभर में प्रसिद्ध हो जायँगे। उनके शिष्य कह कर अपना परिचय देने की योग्यता मुझमें नहीं है। अपने को उनका शिष्यानुशिष्य कहना भी मुझे नहीं सोहता। मैं केवल इतनाही कह सकता हूँ कि समकालीन मनुष्यों में मैं उनको सबसे श्रेष्ठ भक्ति-भाजन समझता हूँ। सन् १८६८ में एक बार महारानी विक्टोरिया ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। प्रसिद्ध साधु डीन स्टानले (Dean Stanley) ने अपने घर पर इनकी मुलाक़ात का प्रबन्ध किया। उस समय महारानी से बातचीत करते करते कार्लाइल इतने मुग्ध हुए कि अपनी कुर्सी खिसकाते-खिसकाते महारानी के सामने इतने निकट आगये कि उनके हिलने-डुलने तक की जगह नहीं रही। इस मुलाक़ात के बाद इस बारे में कार्लाइल ने अपनी बहन को जो पत्र लिखा था, उसमें उनके किये हुए भारतेश्वरी के वर्णन का अंश नीचे उद्धृत किया जाता है।

"The Stanleys and we were all in a flow of talk, and some flunkeys had done setting coffee-pots and tea-cups of a sublime pattern, when Her Majesty, punctual to the minute, glided in, escorted by her dame in wating (a Duchess Dowager of Athol), and by the Princess Louise, decidedly a very pretty young lady, and clever too, as I found out in talking to her afterwards The Queen came softly forward, a kindly little smile on her face, gently shook hands with all the three women, gently acknowledged with a nod the silent bows of us *male monsters*; and directly in her presence every one was at ease again She is a *comely little lady with a pair of kind, clear, and intelligent grey eyes, still looks almost young* (in spite of one broad wrinkle which shows on each cheek occasionally); *is still plump; has a fine low, soft voice; indeed, her whole manner is melodiously perfect.* It is impossible to imagine a *'politer' little women; nothing the least imperious; all gentle, all sincere, looking unembarrassing—rather attractive even; makes you feel, too* (if you have any sense in you), *that she is Queen* Coffee fairly done, Lady

Augusta, the Dean's wife, called me to come and speak to Her Majesty. I obeyed, first asking, as an old infirmish man, Majesty's permission to sit, which was graciously conceded. Nothing of the least significance was said, nor needed; however, my bit of dialogue went very well"

उन्नीसवीं शताब्दी के लोकशिक्षक धर्मवीर के साथ पृथ्वी की प्रधान सम्राज्ञी की मुलाक़ात निःसन्देह एक विशेष दृश्य कही जा सकती है। एक पण्डित-प्रजा के साथ मुलाक़ात करने में ठीक समय पर उपस्थित होकर अपने सुन्दर व्यवहार से उसे प्रसन्न करने में महारानी विक्टोरिया का और अँगरेज़ जाति का जैसा महत्त्व प्रकाशित हुआ, वैसा ही उसके सम्बन्ध में कार्लाइल का मन्तव्य भी महापुरुषों के योग्य ही है। वह लिखते हैं कि "महारानी के व्यवहार में ज़रा भी अभिमान नहीं देखा गया। आदि से अन्त तक उनका व्यवहार भले आदमियों का ऐसा सरल, कोमल, प्रसन्न करनेवाला और मनोहर रहा। तथापि जिसमे ज़रा भी बुद्धि होगी वह उन्हें देखते ही समझ लेगा कि यह रानी हैं।" कार्लाइल और विक्टोरिया ने किसी साधारण विषय की भी आलोचना नहीं की, इसका कोई कारण भी नहीं था; तथापि बातचीत ख़ूब अच्छी तरह हुई।

इस घटना के बाद महारानी ने कार्लाइल को 'लार्ड' की उपाधि देनी चाही; किन्तु उन्होंने योग्य उत्तर के साथ उसे लेने से इन्कार कर दिया। विधाता ने जिसे संसार भर के मनोराज्य का लार्ड बनाया है, वह मनुष्य राजा से साधारण 'लार्ड' की उपाधि क्यों लेने लगा?

भारतेश्वरी विक्टोरिया के ऊपर अन्यान्य जातियों की भी श्रद्धा कम नहीं थी। आस्ट्रिया की राजधानी वियेना नगर के किसी समाचार-पत्र में प्रकाशित हुआ था कि "पृथ्वी के सर्व-प्रधान साम्राज्य की अधीश्वरी विक्टोरिया वर्त्तमान समय में एक यथार्थ

श्रद्धा के योग्य व्यक्ति हैं । 'राजराजेश्वरी' और 'वर की पुरखिन' के रूप में उन्होंने जिन सद्गुणों का परिचय दिया है, उनसे केवल उनकी प्रजा ही नहीं, सब जातियों के लोगों की भक्ति उन पर बढ़ती जाती है ।"

दो बंगवासी ओसवाल जैनी युवकों की विलायत-यात्रा । विधाता की लीला कैसी अद्भुत है ! एक समय भारतमाता की अन्धकारमयी गोद में रोग-शय्या पर पड़े रहने की अवस्था में बङ्गाल के जैन भाइयों के लिए भगवान् के निकट कितनी ही प्रार्थनायें की थीं । उन प्रार्थनाओं का इतनी जल्दी कुछ फल होते (लन्दन में दो जैन-युवकों का आगमन) देख मैं तो आनन्द से गद्गद हो गया । हमारे अपराध की सीमा है, किन्तु दयामय भगवान् की दया असीम है । नहीं तो मेरे इस पाप-पूर्ण जीवन में ऐसी अनहोनी घटना दिखा कर वह सदुपदेश न देते । चिरकाल से जानता हूँ कि पाप का दण्ड अत्यन्त तीव्र—भयानक कष्ट-दायक—है । परमपिता परमेश्वर पापियों को असह्य यन्त्रणा-रूप दण्ड देकर उनका उद्धार करते हैं । बिलकुल न रुचनेवाली कड़वी दवा जैसे रोग-मुक्त होने का एक-मात्र उपाय है, खोटे सोने को खरा बनाने के लिए जलती हुई आग जैसे एक-मात्र राह है, वैसे पापपीड़ित आत्मा की शुद्धि के लिए घोर नरक-यन्त्रणा भोगना ही एक-मात्र प्रायश्चित्त है । किन्तु इस क्षुद्र जीवन में मैंने अनेक बार इस नियम के विरुद्ध होते देखा है । नरक की ओर तेज़ी से बढ़े जा रहे आत्मा को फिरा कर प्रेम के मार्ग में—पुण्य के मार्ग में—ले जाने के लिए वह परमपिता कैसे कोमल और मधुर व्यवहार करते हैं, सो कहने की नहीं, देखने और समझने की बात है । ऊपर लिखी हुई घटना, अर्थात् दो जैन-युवकों का लन्दन जाना, इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण है ।

इन सब अतर्कणीय घटनाओं के भीतर जो करुणानिधान की करुणा का आभास मिलता है, संसार के आगे, उसकी साक्षी न देना घोर कृतघ्नता है—इसमें कोई सन्देह नहीं।

प्रेम अपने घर से ही शुरू होता है (Charity begins at home)। कुछ दिनों मैं बङ्गाल के जैनियों के बीच रहा हूँ। वहाँ उनकी गिरी हुई हालत देख कर कभी कभी मुझे बड़ा खेद हुआ है। रूप, गुण, धन, मान, कुल, शील में ऐसे सुन्दर जीवों को शिक्षा में शोचनीय रूप से पिछड़े देख कर किस सहृदय पुरुष को कष्ट न होगा? इसके सिवा और भी अधिक दुःख की बात यह है कि वे लोग हम में से जिनको अपना बन्धु और हितचिन्तक समझते हैं उनमें अधिकांश ऐसे हैं जो स्वार्थ-साधन के लिए धनियों की सन्तानों को और भी अन्धकार में ले जाने की चेष्टा में सदा लगे रहते हैं। इन सब कपटी लोगों की कुयुक्ति और ख़ुशामद का रसायन धनी-सन्तानों के कानों में अमृत की वर्षा करता है। इसका कारण यही है कि धनियों के लड़के प्रायः शिक्षा में बिलकुल कोरे या अधकचरे होते हैं। ऐसी विषम अवस्था में, विधाता की विशेष कृपा के सिवा इन फूलों की सेज में सुख से पले हुए मारवाड़ियों की नींद टूटने का और कोई उपाय नहीं था। दो मारवाड़ी युवकों का विलायत जाना उस ईश्वर की करुणा का विशेष विधान है, इसमें कोई सन्देह नहीं। अविश्वासी नास्तिक आँखें खोल कर देखें कि कैसी असम्भव बात सम्भव होगई। भारत के धनिक-सन्तान, खास कर बड़े आदमी मारवाड़ी बाबू, जिनकी भारी शौकीनी, अच्छा खाना, बढ़िया पोशाक और सबसे बढ़ कर जड़भावमय आलस्य (Unconquerable inertia) किसी से छिपा नहीं, जिनको साधारणतः बङ्गाली

लोग 'असभ्य, मूर्ख, गँवार' कह कर घृणा करने में कुछ भी सङ्कोच नहीं करते, उन्हीं में से दो उज्ज्वल रत्न—जिनकी जोड़ के युवक भारत भर में थोड़े ही निकलेंगे—अभिज्ञता प्राप्त करने की लालसा से, भारत से सात समुद्र पार, १०,००० मील की दूरी पर, ईंगलेंड में उपस्थित हुए। यह कम आश्चर्य की बात नहीं है। स्वप्न में भी किसी ने नहीं सोचा होगा कि ये शौकीनी में डूबे हुए मारवाड़ी युवक, जो मोहरों की थैली सिरहाने रक्खे लेटे-लेटे सदा से सोने के कटोरे में दूध पीते आ रहे हैं, इस तरह प्रकृति-पर्यवेक्षण के द्वारा उन्नत होकर मनुष्यत्व की प्राप्ति के लिए घर, परिवार, सुख और ऐश-आराम को छोड़ कर सुदूर लन्दन में जा पहुँचेंगे। किसने उन्हें ऐसी अच्छी सलाह और शुभ बुद्धि दी? किससे उनको ऐसा भारी हार्दिक बल मिला? किसने उन्हें ऐसे साहस के काम में प्रवृत्त होने के लिए उत्तेजित उत्साहित किया और अन्त को उस पुण्यक्षेत्र में पहुँचा दिया? जिसकी कोई गति नहीं उसकी गति उन्हीं भगवान् के सिवा और किसकी शक्ति है, जो अज्ञान से अन्धे हो रहे जीव की हृदय की आँखों के आगे से मोह का पर्दा हटा सके? भक्तवत्सल भगवान् इन उत्साही युवकों की कामना पूरी करेंगे। वे ऐसे उत्साही उद्योगी पुरुषों की अवश्य सहायता करेंगे। भविष्यत् में जो भारत का इतिहास बनेगा, उसके ओसवाल-पर्व में अवश्य ही इन युवकों के नाम स्वर्णाक्षरों से लिखे जायँगे।

इसी समय भारत में इन युवकों की जाति में बड़ी खलबली मची। कितने ही बुरे लोग कितनी ही तरह से बुरी बातें फैला कर इन युवकों के आत्मीय-स्वजनों को कष्ट पहुँचाने की चेष्टा करने लगे। कितनी ही झूठी गपें उड़ाई गईं। निकम्मे

और बेकार लोगों को कुछ दिनों तक गप्पाष्टक लड़ाने का सामान मिल गया। युवकों को जातिभ्रष्ट करने के मनसूवे बाँधे जाने लगे। भाई मारवाड़ियो! ऐसे लोगों की बातों पर ध्यान न देना। डरने का कोई कारण नहीं है। सोच-विचार करने की कोई बात नहीं है। तुमको तो ख़ुशी मनानी चाहिए। तुम अपने को इससे गौरवान्वित समझो कि तुम्हारे बच्चे परमप्रतापशाली अँगरेज़ों के घर में जाकर उनके साथ सब बातों में समान अधिकार प्राप्त कर सके। जहाज़ के ख़लासी से लेकर बड़े लाट तक जिन अँगरेज़ों की असंख्य मूर्त्तियों को देवता के समान मान कर सादर षोड-शोपचार से पूजते हो, जिनके एक चपरासी का भी भारी आदर करते हो, तुम्हारे लड़कों को वहाँ उन्हीं अँगरेज़ों की जाति के सबमें प्रधान व्यक्ति के बराबर बैठने का पूरा अधिकार है। तुम जिसकी कल्पना भी नहीं कर सकते, तुम्हारे कुलपावन पुत्रों ने उसी का उपभोग किया। जिस प्रकार की स्वाधीनता को तुम ध्यान में ही नहीं ला सकते, वैसी ही देव-दुर्लभ स्वर्गीय स्वाधीनता तुम्हारे पुत्रों को प्राप्त है। यह सब क्या तुम्हारे लिए कम गौरव की बात है! कहाँ भारत की यह हाथ-पैर जकड़े रहने की दशा, और कहाँ वह श्वेत-द्वीप में निर्मल स्वाधीन हवा मे घूमना! ये दोनों युवक धन्य हैं! जिनके गर्भ से ये पैदा हुए, वे मातायें भी धन्य हैं!

पशुशाला (Gardens of the Zoological Society)। यहाँ १,४०० के लगभग पक्षी, ७०० से अधिक चौपाये और न्यूना-धिक ४५० कीड़े अत्यन्त सुन्दर ढंग से यत्नपूर्वक सुरक्षित हैं। उद्भिद्-उद्यान के गर्मघर मे जैसे गर्म देशों के पेड़, लतायें आदि गर्मी पहुँचा कर रक्खे जाते हैं, वैसे ही यहाँ गर्म देशों के जीव, थर्मामेटर के हिसाब से, आवश्यक भाप की गर्मी में रक्खे गये हैं।

उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध की यथोचित व्यवस्था करने में भी कुछ त्रुटि नहीं की जाती। अँगरेज़ों के और और कामों के समान यह काम भी पृथ्वी भर पर अपने ढंग का एक ही है। ऐसा संग्रह मैंने और कहीं नहीं देखा। पशुशाला में दर्शक को विशेष आनन्द मिलता है। लोक-शिक्षक थैकरे (Thackeray) ने कहा है कि "जब मुझे अधिक चिन्ता सताती है तब मैं पशुशाला में जाता हूँ। जान पड़ता है, यह मानसिक चिन्ता उस पशु-निवास के दरवाज़े के भीतर जाने की अधिकारिणी नहीं है। वहाँ अगणित पींजड़ों में मुझे अपने (मनुष्य-जाति के) मित्र और शत्रु देखने को मिलते हैं"।

यहाँ कई बार 'भूली' के सम्बन्ध में परीक्षा हो चुकी है। प्रबल जन्तु जो अपने से निर्बल जन्तु को अपनी बिजली की शक्ति से आच्छादित निश्चेष्ट करके खा जाता है उसे 'भूली' कहते हैं। वैज्ञानिकों का मत है कि बाघ, सिंह आदि बिलाव की जाति के जो जीव हैं, उनकी रोमावली में अधिक बिजली रहती है। किन्तु यह निश्चय करना कठिन है कि ये खूनी जानवर अपने शिकारों को इसी बिजली की शक्ति से अभिभूत करके मारते हैं या किसी और अज्ञात शक्ति से। रोम-विद्युत् अगर इसका कारण होती तो सर्प आदि जीवों में, जिनके रोएँ बिलकुल नहीं होते, यह शक्ति कहाँ से आई?

पण्डितवर काम (Professor Kalm) ने लिखा है कि अजगर (Rattlesnake) सर्प के जन्म-स्थान उत्तर अमेरिका में उक्त सर्प-गण वृक्ष के नीचे से डाल पर बैठी हुई गिलहरी को अपनी इसी शक्ति से अभिभूत करता है। सर्प यदि उसकी ओर देखता है तो उसमें भागने की शक्ति नहीं रहती। वह शोकसूचक चीत्कार करती हुई पेड़ के ऊपर कुछ दूर चढ़कर फिर नीचे उतरती है। इसी तरह लगातार करते-करते हर बार ज़रा ज़रा नीचे खिसकती

आती है। अब तक सर्प अपने आसन और शिकार पर स्थिर दृष्टि जमाये हुए ऐसा एकाग्र अवस्था (concentrated) में तन्मय रहता है कि उसके पास खड़े होकर मनुष्य खूब गुलगपाड़ा मचावे तो भी वह उस पर ध्यान न देगा—तिल भर भी विचलित न होगा। अन्त को वह गिलहरी नीचे फाँद पड़ती है और एक वार फिर चीत्कार करके जल्दी से साँप के फैले हुए मुख मे समा जाती है।

कारोलिना (Carolına) देश से लौट कर आये हुए प्रकृति-तत्त्ववेत्ता फ्रांस के पण्डित काटेस्वी (Maık Catesby) और लासन (John Lawson) साहब के इस वात की साक्षी देने पर स्वीडन के सर्प-विद्या-विशारद आक्रेल (John Gust de Acrell) ने वहाँ की पशुशाला में परीक्षा करके प्रकट किया कि एक अजगर सर्प के लोहे के पिंजड़े में एक मूसा छोड़ दिया गया। वह पहले उस साँप के पीछे के कोने मे जा छिपा। फिर सर्प ने भयङ्कर तेज के साथ जब उसके ऊपर स्थिर दृष्टि जमाई, तब वह काँपता हुआ कूद कर उसके मुख मे चला गया। इस बात को देखने के लिए इस पशुशाला मे भी ठीक इसी तरह परीक्षा की गई और बात सच निकली।

यहाँ भारत का एक हाथी और एक हथनी है। दोनों ही भारत से प्रिंस आफ़् वेल्स के साथ वहाँ गये हैं। हाथी का नाम "जङ्गप्रसाद" है। हैदराबाद के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्वर्गीय सर सलारजंग ने यह हाथी प्रिंस आफ़् वेल्स को तोहफ़े के तौर पर नज़र किया था। हथनी बलरामपुर के राजा की दी हुई है; उसका नाम है "सफ़ाकुल्ली"। गर्मियों में तीसरे पहर हाथी पर हौदा रखकर दर्शक लोग उस पर चढ़ाये भी जाते हैं। इसके लिए दर्शकों को कुछ पैसे देने पड़ते हैं।

चित्रशाला (National Gallery)। यहाँ ५०० के लगभग स्वदेशी और विदेशी चित्रकारों के हाथ के बने चित्र सुशोभित हैं। लन्दन के अनेक स्थानों में इस तरह की चित्रशालायें हैं। इस कारण अन्यान्य नगरों के इस प्रकार के चित्र-संग्रहों में इसका स्थान उतना ऊँचा नहीं है।

कवि किंगस्ली कह गये हैं कि "A man who cannot spare time for daily country walk may well slip into the National Gallery or other collection of pictures. That garden flowers as gaily in winter as in summer ; there in the space of a single room, the townsman may take a walk beneath mountain peaks, through green meadows, and by rushing brooks, where he lingers till he almost seems to hear the ripple of the stream and to see the fishes leap."—*Charles Kingsley.*

अर्थात् नित्य प्रति देहात में घूम आने का समय जिन नगरवासियों को नहीं है वे ऐसे स्थान में अगर आवें तो सर्दी और गर्मी में समान भाव से खिले हुए फूलों के बाग और दुःख-शोक के विकार से रहित उज्ज्वल मुखमण्डल निहार कर अवश्य वे तृप्त होंगे। एक ही जगह पर्वत, मैदान-जङ्गल, नदी आदि के सब दृश्यों को वे ऐसे जीते-जागते रूप में देख पावेंगे कि कानों से झरनों की ध्वनि सुन कर और आँखों से मछलियों की उछलकूद देख कर मुग्ध हुए विना नहीं रहेंगे।

छोटे बड़े म्यूजियमों की तरह चित्रशालायें भी लन्दन के अनेक स्थानों में देखी जाती हैं। अँगरेज़ों का कहना है कि "वर्त्तमान में धनवान् और दरिद्र दोनों के लिए ये सब अन्तर्व्यवस्थान एक विशेष प्रयोजनीय वस्तु गिने जाते हैं।"—(Public museums

and galleries of art are a recognised necessity of modern life for rich and poor alike.)

दक्षिण केन्सिंगटन म्यूज़ियम (South Kensington Museum) । यहाँ का नया घर सन् १८५७ से बनने लगा है, पर उस समय तक वह बन कर तैयार नहीं हुआ था। नया इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट (Imperial Institute) यहीं पर स्थापित है। इस भारी इमारत की चीज़ों का वर्णन कैसा, उनके नाम गिनना भी सर्वथा असम्भव है। यहाँ पर स्थूल रूप से कुछ बातें लिख कर ही इस वर्णन को समाप्त करूँगा; क्योंकि केवल कुछ चीज़ों का नामोल्लेख कर देने के सिवा और कोई उपाय नहीं है।

प्रवेश करते ही महात्मा डार्विन की मूर्त्ति देख कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ। युगान्तर उपस्थित कर देनेवाले महात्मा को ऐसा संमान देना निस्सन्देह अँगरेज़ों के योग्य काम है। यहाँ अलग अलग न-जानें कितने विभाग हैं और उन विभागों में न-जाने कितनी चीज़े हैं।

स्थपति-विभाग (Architectural Court) मे प्राचीन समय के कितने ही देशों की प्राचीन कारीगरियों की हूबहू नक़लें बनी हुई हैं। देखकर दर्शक सन्नाटे में आ जाता है। भास्कर्य-विभाग का भी यही हाल है। इसके बाद वस्त्रादि-विभाग मे स्वदेशी और विदेशी कारपेट, दुलीचा, गलीचा, शतरञ्जी आदि के अतिरिक्त कपास, पशम, रेशम आदि के सादे और कारचोबी के काम का ऐसा संग्रह है कि बग़ैर देखे उसका महत्त्व समझ में नहीं आ सकता। ठीक ऐसा ही बाजों का संग्रह है। पृथ्वी भर की सभ्य और असभ्य जातियों के सब तरह के प्राचीन और आधुनिक

असंख्य बाजे यहाँ रक्खे हुए हैं। अधिक क्या कहूँ, भारत में अब तक घूम कर भी मैंने जिन चीज़ों को नहीं देख पाया, वे सब चीज़ें यहाँ देखने को मिलीं। वैज्ञानिक विभाग में न-जाने कितने समय की कितनी ही तरह की घड़ियाँ ही जमा हैं। अन्यान्य यन्त्रों का तो कहना ही क्या है। इस अंश का प्रधान दृश्य है फूको का पेण्डुलम (Foucault's Pendulum)। बहुत ही ऊँचे टावर पर एक बहुत बड़ा पेण्डुलम लटक रहा है। उसके नीचे के स्थान में इस तरह निशान दिये हुए (Graduated) हैं कि सवेरे और शाम को अच्छी तरह देख पड़ता है कि पृथ्वी के घूमने से उसके डोलने में कितना अन्तर हुआ है। यहाँ पर रेलवे की सृष्टि करनेवाले स्टिफेन्सन के हाथों सन् १८२९ में बना हुआ पहला एञ्जिन "राकेट" (George Stephenson's "Rocket') भी रक्खा हुआ है। उक्त महात्मा की सोने की घड़ी, सीलमोहर, माप का फ़ीता, नक़्शा खींचने का सामान, हुलासदानी आदि कुछ चीज़ें, उनके हाथ का लिखा हुआ एक पत्र और उनके सिर के बालों का एक गुच्छा भी वहाँ देख पड़ा। वास्तव में स्टिफ़ेन्सन जैसे महात्मा का ऐसा ही संमान होना चाहिए। यहाँ पर प्राणिवृत्तांत का विभाग, जो ब्रिटिश-म्यूजियम में स्थानाभाव के कारण यहाँ आ गया है, एक अद्भुत संग्रह है। कलकत्ते के म्यूजियम को जिन लोगों ने देखा है वे इतना ही कहने से समझ जायँगे कि इसमें कलकत्ता-म्यूजियम के संग्रह से सात आठ गुना अधिक संग्रह है। पक्षियों के रखने की व्यवस्था बहुत ही सुन्दर है। एक एक काच के घेरे में हर एक जाति के पक्षियों की सब हालतें—गर्भप्रसव से लेकर सब अवस्थायें—इसमें दिखलाई गई हैं। तार से वे ऐसे बँधे हैं कि दूर से उड़ते हुए जान पड़ते हैं। उनके रहने की जगह की मिट्टी और पत्थर तक हूबहू वैसे ही सजाये गये

हैं। भूतत्त्व और खनिज पदार्थों के विभाग में सब प्रकार के धातु और रत्न इतने रक्खे हैं कि उनकी गिनती नहीं की जा सकती। इस खण्ड में, भिन्न भिन्न समयों में, अनेक देशों में गिरे हुए उल्का-पिण्ड भी रक्खे हैं। पृथ्वी की तहों मे मिले हुए आदमियों के ढाँचे और उस समय व्यवहार में आनेवाले अस्त्र, शस्त्र, पात्र आदि उसी उसी तरह की मिट्टी मे—ठीक जैसे पाये गये हैं उसी अवस्था में—रक्खे हुए हैं। ये सब चीज़ें बड़े यत्न से सुरक्षित हैं। एक विभाग में अण्डे से लेकर सब अवस्थाओं की मछली, सीप, घोंघे आदि काच के कुण्ड में विचर रहे हैं। इनके सिवा चित्रशाला, प्राचीन मणि-माणिक्य आदि का विभाग इत्यादि अनेक विभाग हैं। अब मैं केवल भारतीय विभाग की दो एक बातें लिख कर इस वर्णन को समाप्त करूँगा। भारतीय विभाग में प्रवेश करते ही जो 'हाल' मिलता है उसमें बर्मा के राजा थीबो के सोने के असबाब के ढेर के ढेर पड़े हुए हैं। केवल यही 'हाल' मिल जाने से एक आदमी धनकुबेर बन जा सकता है। इसके बाद अनेक प्रदेशों के लकड़ी और पत्थर, घर, दरवाज़े, झरोखे आदि देखने को मिलते हैं। उनमें नक़्क़ाशी की बढ़िया कारीगरी है। यहीं एक कमरे में भारत के जवाहरात का इतना संग्रह है कि बहुत लोगों के मत से उसकी क़ीमत लगाई नहीं जा सकती—("In the *Inner Room*, the visitor will be able to form some idea of India's gorgeous jewels. The value of this collection of stones is almost inestimable."—H. Fry.)। इसके सिवा भारत-विभाग मे पञ्जाब-केसरी रणजीतसिंह का स्वर्ण-सिंहासन, टीपू सुलतान की घड़ी, प्रसिद्ध अर्गन बाजा, शिरस्त्राण (Helmet-टोप), चश्मा और हाथी-दाँत की पालकी भी है। सन् १७९९ की चौथी मई को युद्ध समाप्त होने पर, रात को, लोथों के ढेर में

टीपू का शव मिला था। उसी शव के साथ टोप और चश्मा भी मिला था। सुन पड़ता है कि चश्मा बहुमूल्य है।

मैडम टूसो की प्रदर्शिनी (Madame Tussaud's Exhibition)। मैडम टूसो एक फ़ान्स की कारीगर औरत थी। फ़ान्स में जब राजविप्लव का अन्त हुआ और शान्ति स्थापित हुई तब वह वहाँ से १९ वीं शताब्दी के आरम्भ में इँगलेंड चली आई। यहाँ वह सोलहवें लुई, उसकी रानी, रोबस्पेयर (Robspierre), डान्टन (Danton), मिराबो (Mirabeau), वाल्टेयर आदि कई लोगों की मोम की मूर्त्तियाँ दिखा कर अपनी जीविका चलाने लगी। यद्यपि इस फ़ान्स-विप्लव के साथ इँगलेंड का कोई सम्बन्ध नहीं था, तथापि अँगरेज़ जाति को उस विप्लव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि नित्य हज़ारों आदमी उस स्त्री की प्रदर्शिनी में आने लगे। इँगलेंड के अनेक स्थानों में घूम-फिर कर अन्त को मैडम टूसो ने लन्दन में अपनी प्रदर्शिनी स्थायी रूप से स्थापित कर दी। यह प्रदर्शिनी एक सौ बरस के लगभग पुरानी है। इसमें ३०० के लगभग मोम की मूर्त्तियाँ हैं। मूर्त्तियों के सिवा बहुत सी ऐतिहासिक सामग्रियाँ—असल और नक़ल भी—बड़े अच्छे ढंग से यहाँ रक्खी हुई हैं। ख़ास कर फ़रासी-विप्लव के सम्बन्ध में यहाँ इतनी सामग्री का संग्रह है कि जिन्होंने कार्लाइल टियर्स (Tiers) की पुस्तक को कभी खोला भी नहीं, वे भी यहाँ आकर फ़्रान्स के उस भयानक विप्लव का ज्ञान अच्छी तरह प्राप्त कर सकते हैं। नेपोलियन के सम्बन्ध की इतनी सामग्री यहाँ पर है कि जिसने नेपोलियन का कोई भी जीवनचरित नहीं देखा, वह भी यहाँ आकर उक्त महावीर के जीवन का सारा वृत्तान्त जान लेगा। अँगरेज़ों के बालक इस प्रदर्शिनी को देख कर अपने देश का इतिहास

पढ़ने के लिए उत्सुक होते हैं। अनेक कमरों में पृथ्वी के अनेक देशों के राजा, रानी, पण्डित, वीर आदि जीते और मरे प्रसिद्ध स्त्री-पुरुषों की मूर्त्तियाँ हैं। इनमें हमारे सेंधिया, कश्मीर और बरोदा के नरेश भी हैं। इन मूर्त्तियों में अमरीका के एक बौने की मूर्त्ति है। इसका नाम जेनरल टाम-थम्ब (Charles S. Stratton, known as General Tom Thumb) है। सन् १८३२ में इसका जन्म हुआ था। जन्म के समय इसका शरीर केवल सवा चार सेर का था। इसके विपरीत एक लम्बे-चौड़े रूसी सिपाही की मूर्त्ति है। उसका नाम लुस्किन था। वह ८½ फुट लम्बा था।

नेपोलियन-रूम्स (Napolean-Rooms) में महावीर नेपोलियन के कई एक कीर्त्ति-चित्रों, चित्रों और डाकूर के उखाड़े एक दाँत के सिवा उसकी निम्नलिखित चीज़ें सुरक्षित हैं। एक अटलस, जिसमें उसके हाथ के खिँचे युद्ध के नक़शे हैं; सेन्ट हेलिना (St. Helena) में व्यवहृत एक कुर्सी और एक पलँग; मृत्यु-शय्या—गद्दा और तकिया, अभिषेक की पोशाक; प्रसिद्ध एल्बा पताका (Elba Flag); राज-गाड़ी (State Carriage); सेंट हेलिना मे जिस पेड़ के नीचे जीवित अवस्था में नेपोलियन बैठा करता था और मरने के बाद गाड़ा गया उस पेड़ की लकड़ी का एक टुकड़ा; नेपोलियन का बहुत ही विचित्र टायलेट-बक्स (Toilet box) और प्रसिद्ध युद्ध-यान (Highly curious Military Carriage), जो वाटर्लू-युद्ध के अन्त मे भागते समय गिनापे (Genappe) ग्राम में पकड़ा गया था। यह गाड़ी जब पहले इँगलेंड मे पहुँची, तब आठ लाख आदमी टिकट ख़रीद कर इसे देखने गये थे। राजा चौथे जार्ज को ढाई हज़ार पाउण्ड क़ीमत देकर यह गाड़ी ख़रीद ली गई है। इनके सिवा प्रसिद्ध सम्राट् नेपोलियन के इस्तेमाल की बेशुमार चीज़ें यहाँ भरी पड़ी हैं। इन कमरों में वाल्टेयर के बैठने की कुर्सी, भारत

के गवर्नर जेनरल मार्कुइस वेलेस्ली के बालों का गुच्छा, वेलिंगटन ड्यूक का कैम्प-पलँग—जिस पर वाटर्लू-युद्ध की पहली रात को वह सोये थे, और नेपोलियन से सम्बन्ध रखनेवाले बहुत से प्रसिद्ध व्यक्तियों के इस्तेमाल में आई हुई अनेक चीज़ें और पोशाकें भी रक्खी हैं।

यहाँ के एक स्थान का नाम है भीषण-भवन (Chamber of Horrors)। उसमें दो-एक विदेशियों के सिवा इँगलेंड के प्रायः साठ चोर, डाकू, खूनी आदि दुराचारी लोगों की मूर्त्तियाँ सुरक्षित हैं। उनमें सुप्रसिद्ध नर-पिशाच पीस (Charles Peace) की भी मूर्ति है। नाम तो उसका 'शान्ति' था, परन्तु काम उसके महा अशान्ति के थे। मांस-पेशियों के हेरफेर (contortion of the muscles) से चेहरे की शकल बदल लेने की इसमें विचित्र शक्ति थी। यह मिनट भर में ऐसा चेहरा बदल लेता था कि पुराने से पुराना चतुर पुलीस-कर्मचारी भी उसे नहीं पकड़ सकता था *। वहाँ पर थर्टेल (John Thurtell) की मूर्त्ति और जिस पर उसे फाँसी दी गई थी वह लकड़ी भी है। दण्ड की आज्ञा सुनने के बाद थर्टेल ने खुद अपनी फाँसी के लिए इस सूली का नक़्शा (Design) तैयार कर दिया था और उसी के अनुसार यह बनी है। यहाँ प्रधान देखने की चीज़ है फ़रासी विप्लव की एक

---

* लन्दन में, ऐसी सामर्थ्य रखनेवाले दो आदमियों का तमाशा एक थियेटर में मैंने देखा था। वे दोनों आदमी स्टेज के ऊपर केवल एक बार मुख फेर कर दो ही एक मिनट में ऐसे ऐसे परिवर्त्तन दिखाने लगे कि हम लोग सन्नाटे में आगये। दोनों आदमी पहले ग्लाडस्टन और डिजरेली के रूप में खड़े हुए। मिनट ही भर में वे नेपोलियन और वेलिंगटन बन गये। फिर दम भर में बिस्मार्क और वान-मल्क बन गये। इसी तरह उन्होंने संसार के अनेक प्रसिद्ध लोगों के चेहरे दिखलाये। इनको Contortionist कहते हैं। जान पड़ता है, यह इनकी सीखी हुई विद्या है।

गिलाटीन-छुरी और एक मुखोस (Guillotine-knife and Lunnette)। सोलहवें लुई, उसकी रानी, रोवूस्पेयर आदि २२,००० अच्छे और बुरो के सिर काटने में ये दोनें चीज़ें काम आई हैं। उस समय के जल्लाद सान्सन (Sanson) के पोते से ये दोनों चीज़ें ख़रीदी गई हैं। असल गिलाटीन यहाँ नहीं है; उसकी नक़ल है।

लुई टूसो की प्रदर्शिनी (Louis Tussaud's Exhibition)। मोम की मूर्त्तियों की कारीगरी की इतनी उन्नति इन्हीं लुई टूसो के पूर्वपुरुषों के द्वारा हुई है। मैडम टूसो ने ही इस प्रदर्शिनी की सृष्टि की है। उन्हीं के पौत्र लुई टूसो ने लन्दन में एक नई प्रदर्शिनी स्थापित की है।

यहाँ अनेक वड़े आदमियों की मूर्त्तियों में निम्न श्रेणी के प्रतिनिधि जान वर्न्स (John Burns) और वेन टिलेट (Ben Tillet) की मूर्त्तियाँ भी देख पड़ीं। इसी से जान पड़ता है कि लन्दन मे धीरे धीरे इस श्रेणी के लोगों का आदर वढ़ता जाता है। लड़कों के मनोरञ्जन के लिए यहाँ एक नया विभाग खोला गया है, जिसमें राविन्सन क्रूसो, अलादीन, अलीवावा आदि के जीते-जागते से सव दृश्य हूवहू दिखलाये गये हैं।

(अँगरेज़ों में अनेक गुण हैं। मुझे पहले विश्वास ही न था कि एक जगह इतने गुण हो सकते हैं। अँगरेज़ी अत्यन्त उत्कृष्ट भाषा है। वयोवृद्धि के साथ ही साथ साहित्य-संसार में इसका आदर दिन-दिन वढ़ता जाता है। अनेक चेष्टा और भारी तत्परता के द्वारा वहुत से महामूल्य सत्य-रत्नों का संग्रह इसमें किया जा रहा है और उस संग्रह से यह भाषा अत्यन्त उज्ज्वल होती जा रही है। अतएव, अँगरेज़ों के चरित्र का ज्ञान प्राप्त करने, और वर्त्तमान सभ्य जगत् की गहरी चिन्ता और वैज्ञानिक आविष्कार आदि की आलोचना तथा शिक्षा के

द्वारा उन्नत बनने की इच्छा हो तो अँगरेज़ी भाषा को अच्छी तरह जानना बहुत ज़रूरी है । हमें संसार में सबसे बढ़ कर अँगरेज़-चरित के अध्ययन की ज़रूरत है । विधाता ने उन्हीं के हाथों में हमारे उद्धार का काम सौंपा है । इसलिए यथार्थ अच्छे अभिप्राय से अँगरेज़ी पढ़ने में भारी लाभ के सिवा हानि का कोई कारण नहीं देख पड़ता । मेरी समझ में तो अँगरेज़ी न पढ़ने से हमारी भारी हानि ही है । विदेशी भाषाओं को मथ डालने में तो अँगरेज़ बड़े बहादुर हैं । इस बात में वे बड़ी उदारता से काम लेते हैं । पृथ्वी भर की सारी भाषाओं को यथाशक्ति सीख कर उनके ज्ञान का सञ्चय करना, अँगरेज़ जाति अपना प्रधान कर्त्तव्य समझती है । यही उनकी भाषा और जाति की उन्नति का प्रधान कारण है । बड़े भाग्यशाली हैं हम लोग जो भगवान् ने हमें ऐसी ज्ञान-भक्त उद्योगशील महाजाति के आश्रय में रक्खा है । इस समय कर्त्तव्य यही है कि इन श्वेताङ्ग महापुरुषों के आश्रय में जब तक भगवान् हमें रक्खें तब तक हम इनके सारे सद्गुणों को ग्रहण करने की चेष्टा करें; और, किस किस उपाय से ये लोग इतने ऊँचे स्थान पर पहुँच सके हैं, इसकी आलोचना करके उसी राह को पकड़ने का पूरा प्रयत्न करें । इनकी भारी भाषा से माल-मसाला लेकर अपनी प्राणों से प्यारी मातृभाषा के कुछ सुन्दर महल बना लें । निकंमे नाटक और नाविल लिख कर समय, उद्योग और धन को नष्ट करने की अपेक्षा अँगरेज़ी से अच्छे भाव और अच्छी बातों का संग्रह करते हुए मातृभाषा की उन्नति और पुष्टि करना लाख गुना अच्छा है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ योग्य पुरुष यदि इस कार्य में लग जायँ तो शीघ्र ही बहुत कुछ काम हो सकता है । कालिदास और भवभूति के देश में 'कल्पना में' यश प्राप्त करने की चेष्टा विडम्बना-मात्र है । इसके सिवा ऐसी गन्दी और निकंमी पुस्तकों

के ढेर के ढेर लग गये हैं; अब वैसे मौलिक, किन्तु हानिकारक साहित्य की आवश्यकता नहीं है।

एक पण्डित का कथन है—"Language is most commonly studied for practical purposes only, to gain greater assurance and accuracy in the use of one's own vernacular, or to acquire the use of other tongues which afford commercial, social or literary advantages." अर्थात् वाणिज्य, साहित्य या सामाजिक जगत् में सुविधा के लिए विदेशी भाषा का सीखना बहुत ज़रूरी है। नित्य के व्यवहार मे मातृभाषा के सिवा अन्य भाषा का प्रयोग करना अस्वाभाविक है।

अपनी साधारण समझ से मैं कह सकता हूँ कि हिन्दुस्तानी के लिए अँगरेज़ी में मन का भाव पूरी तौर से प्रकट करना सर्वथा असम्भव है। यह ज़रूर है कि हम लोग अँगरेज़ी मे अच्छी पुस्तक लिख सकते हैं, अच्छा व्याख्यान दे सकते हैं, किन्तु अपने हृदय की बातें—जिनके साथ देश, काल, पात्र, आदि की घरेलू बातें विजड़ित हैं—जी भर कर आसानी से अँगरेज़ी मे प्रकट करना सर्वथा असम्भव ही जान पड़ता है। हमारे और इँगलेंड के दैनिक आचार-व्यवहार, कार्य्य-कलाप, रीति-नीति, जल-वायु, दिन-ऋतु आदि में इतना अन्तर है कि केवल देखने-सुनने-चलने आदि शारीरिक चेष्टाओं के और किसी बात में हमारी उनकी समानता नहीं देख पड़ती। ऐसी अवस्था मे हम अपने ख़ास भावों को पूर्णरूप से अँगरेज़ी में कभी नहीं प्रकट कर सकते। साल के शुरू से अन्त तक, सवेरे से सवेरे तक, हम लोग जिन जिन कामो को नियमित रूप से या प्रयोजनवश करते हैं अथवा सोचते-विचारते हैं, उनके प्रकट करने लायक़ शब्द केवल हमारी ही भाषा में होना सम्भव है। विदेशी लोगों की भाषा में उन शब्दों का न होना ही स्वाभाविक है। क्योंकि

उन्हें जो कुछ दरकार है वह उनके यहाँ मौजूद है । फालतू चीज़ किसी के नहीं रहती । लड़कपन में सुना था कि किसी आफ़िस के बड़े साहब को ढेंकी के द्वारा 'सुरख़ी' कूटना समझाने के लिए एक क्लर्क ने मज़दूरों की तरह सुरख़ी कूटने की नक़ल करके बतलाया था कि "वन् मैन धापुड़-धुपुड़ टू मैन रखता है तब साहब 'सुरख़ी' बनता है" । लड़कपन में यह हँसी-दिल्लगी की बात थी, किन्तु अब समझ में आता है कि विलायत से तुरन्त आये हुए गोरे को 'सुरख़ी' के कारख़ाने का ठीक भाव समझाना कितना कठिन काम है । फ़रासी भाषा में 'लात' का प्रतिशब्द नहीं है । इसका कारण यही है कि वहाँ लात मारने की चाल नहीं है । किसी फ़्रान्सीसी को 'लात' समझाने के लिए 'पैर मारना' कहना होगा ।

इसी तरह सबके यहाँ थोड़ी बहुत कमी है । तुम्हारे जो है वह हमारे नहीं है, हमारे जो है वह तुम्हारे नहीं है । इसी से इस संसार में विचित्रता देख पड़ती है । हर एक जाति में, देश की अवस्था के अनुसार, प्रयोजन में आनेवाली ऐसी चीज़ें, बात-चीतें, कहावतें और कहानियाँ हैं जो दूसरों के लिए बिलकुल नई हैं, या उनको बहुत ही भद्दी जान पड़ती हैं । हमारे देश की तरह "महाशय का क्या नाम है ? कहाँ निवास-स्थान है ?" इत्यादि प्रश्न करना वहाँ असभ्यता या भद्दा-पन समझा जाता है । वैसे ही अँगरेज़ों का "It is a nice morning?" कहना भी हमारे देश के लोगों के लिए एक नई बात है । वहाँ दो आदमियों में मुलाक़ात होने पर ऐसी बातचीत होती है कि "आज का प्रातःकाल कैसा है ? दिन कैसे बीतेगा ?" । ऐसी बातचीत के दो कारण समझ में आते हैं । एक तो इँगलेंड की हवा ऐसी दम दम में बदला करती है और उज्ज्वल-सुन्दर प्रातःकाल ऐसी महामूल्य चीज़ समझा जाता है कि ऐसे प्रश्न में एक प्रकार की

विशेषता है । दूसरे, वहाँ के सामाजिक नियम के अनुसार एक आदमी दूसरे आदमी से और किसी तरह का सवाल कर नहीं सकता । अपने अपने काम-धन्धे में सब लगे रहते हैं । दूसरे की किसी बात का खोज लगाना वहाँ भले आदमियों की दृष्टि में नियमविरुद्ध और निन्दित समझा जाता है । इसी लिए "आज बड़ा सुहावना दिन है, साफ़ दिन है" इत्यादि आलोचना से ही बातचीत शुरू की जाती है । शायद ये बातें अनेक अँगरेज़ी के अनन्यभक्त बाबुओं को नहीं रुचेंगी—ग़रीब हिन्दुस्तानियों की मातृभाषा का यों गुण-गान करना उनके कानों में विष-वर्षा सा जान पड़ेगा । जो कुछ हो, सत्य के अनुरोध से यह मैं लिख रहा हूँ । जो देखा या समझा है उसे सुनाना हर एक मनुष्य का कर्त्तव्य है । मैं यह स्वीकार करता हूँ कि प्राचीन शेक्सपियर, मिल्टन, एडीसन, बायरन, मेकाले आदि के अतिरिक्त मेरे आगे के कार्लाइल, एमर्सन, मार्ले, रस्किन आदि अँगरेज़ा के महामहोपाध्यायों के अत्यन्त उदार सुप्रशस्त स्वर्गीय भावों की और उन भावों के योग्य गम्भीर अर्थबोधक होने पर भी सुललित स्पष्ट भाषा की प्रशंसा किये बिना कोई नहीं रह सकता । वह गँवार आदमी बिलकुल ही रसिक या गुणज्ञ नहीं है जो अँगरेज़ी भाषा के साधारण वैज्ञानिक साहित्य के सुयश का बखान नहीं करता । इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऊपर जिन पण्डितों के नाम लिखे जा चुके हैं उनकी टक्कर का एक भी आदमी अगर भारत में पैदा होता तो हमारी यह दुर्दशा न होती । किन्तु अपने अनुभव के अनुसार यह कहने में मुझे कोई सङ्कोच नहीं है कि रोज़मर्रा के कामों—प्रयोजनों—को सिद्ध करने में अपनी मातृभाषा जो काम करती है, वह काम अँगरेज़ी से नहीं निकल सकता । बहुत से बङ्गाली भाई जानते होंगे कि कलकत्ते के मिचेल (Murray Mitchell, LL. D.) नाम के एक स्काट्लेंडदेशीय

भाषा-तत्त्ववेत्ता पण्डित फ्री-चर्च-कालेज के प्रिन्सिपल थे। इन गुणग्राही सज्जन ने बहुत भाषाओं से अनेक प्रकार के सङ्गीतों का संग्रह करके अँगरेज़ी में उनका अनुवाद किया था। उन्होंने बँगला के संगीतों का अनुवाद करने के उपरान्त यह स्वीकार किया था कि अन्य किसी भाषा में इतने थोड़े शब्दों में ऐसे गम्भीर अर्थ-पूर्ण भावों को प्रकट करने की शक्ति नहीं देखी। उनका कथन है कि बँगला के निधू के टप्पे के ऐसा गान उनको अन्य किसी भाषा में नहीं मिला। सङ्गीत का हर एक शब्द सुननेवाले के हृदय में चुभ कर उस पर असर डाले—यह बात उनको पहले-पहल निधू के टप्पों में ही देख पड़ी। ऐसा क्यों न हो? ज्ञान, धर्म, राज्य, समाज, व्यवसाय, वाणिज्य, अन्न-वस्त्र आदि सब खो कर बङ्गाली बहुत काल से कविता करने ही में लगे हुए हैं। ऐसे कठिन आत्मत्याग-व्रत का कुछ फल भी तो मिलना चाहिए। जो कुछ हो, जब सब लोग आज-कल इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी भाषा के सम्बन्ध में विचार करना हो तो उस भाषा के सङ्गीतों की अच्छाई-बुराई देखनी चाहिए, तब केवल सङ्गीत की दुहाई देकर मातृभाषा के महत्त्व की घोषणा करने का हमको सोलहो आने अधिकार है। अब यह देखना चाहिए कि केवल सङ्गीतों पर विचार करने से अँगरेज़ी भाषा कैसी ठहरती है। पहले जब मैं इँगलेंड में पहुँचा तब पाँच-छः बरसों से इँगलेंड में रहनेवाले एक बङ्गाली युवक ने बातचीत करते करते कहा कि "अँगरेज़ी के गीतों की भाषा और स्वर बहुत ही श्रेष्ठ हैं। हम लोग अपने पहले अभ्यास के कारण उनकी श्रेष्ठता का अनुभव नहीं कर पाते। कुछ दिनों इस देश में रहने से धीरे धीरे कानों को विलायती गीतों के सुर-तान-लय की खूबी और अर्थ की मधुरता का अनुभव होने लगता है।" उस समय उनकी बातों पर विश्वास करके मैंने इस बार मे अपने अज्ञ होने की बात

स्वीकार कर ली थी। उसके उपरान्त स्वयं अनुसन्धान करके अँगरेज़ी गीतों के बारे में मुझे जैसा ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसे मैं एक दिन का हाल लिखकर पाठकों को बतलाने की चेष्टा करूँगा।

एक भले ख़ानदान के यहाँ शाम को मेरा निमन्त्रण था। हमारे देश में जैसे निमन्त्रित व्यक्ति को भोजन के बाद ही पान देकर, या बहुत जगह शीघ्र विदा कर देने की इच्छा से पतली में ही पान का बीड़ा रख कर, लोग उससे पीछा छुड़ाते हैं, वैसी चाल यहाँ नहीं है। यहाँ निमन्त्रित व्यक्ति को भोजन कराकर दो-तीन घंटे तक उससे बात-चीत या उसके मनोरञ्जन की चेष्टा करना हर एक गृहस्थ का विशेष कर्त्तव्य समझा जाता है। प्रचलित प्रथा के अनुसार हम सब लोग भोजनोपरान्त बैठक-ख़ाने (Drawing-room) मे इकट्ठे हुए। घर के पुरखा ने पियानो लेकर गाना शुरू कर दिया। दो-तीन गीत गा चुकने के उपरान्त उन्होंने मुझसे पूछा कि "आपको ये गीत कैसे लगे?"।

गाने-बजाने में ये महाशय बड़े चतुर हैं, यह बात मैं पहले ही सुन चुका था। इसी से मैंने उत्तर दिया—"आप इस काम मे उस्ताद आदमी हैं, आपका गाना-बजाना अवश्य ही अच्छा होगा। दुःख की बात है कि मैं इस बारे में विचार करने मे सम्पूर्ण असमर्थ हूँ; मुझे इस विषय की कुछ भी जानकारी नहीं है"।

वह—"गानों का मतलब तो आप सब समझ गये? भाव कैसा है?"

मैं बड़ी मुश्किल में पड़ा। शब्दों को जोड़ कर उनका भाव निकालना सहज काम न था। इसी से मैंने कह दिया—"भावों को मैं अच्छी तरह समझ नहीं सका"।

वह—"ठीक है। ये गीत उतने मनोहर हैं भी नहीं। अच्छा, अब 'टीटविलो' गीत सुनिए। यह हमारी भाषा की अत्यन्त उत्कृष्ट रचना समझी जाती है"।

उन्होंने 'टीटविलो' गान गाया। मैंने आदि से अन्त तक विशेष आग्रह के साथ कान खड़े करके एकाग्र मन से उस गीत को सुना कि शायद उसके किसी टुकड़े से कोई रत्न निकल पड़े। परन्तु उस गीत में ऐसा ही रस भरा हुआ था कि उसका एक एक शब्द जैसे जैसे कान में पड़ता था, वैसे वैसे मेरा कण्ठ सूखता जाता था! मैं यही सोचता था कि अब की अगर यह इस गीत के बारे में मेरी राय पूछेंगे तो बड़ी आफ़त होगी। परन्तु भगवान् ने मुझे इस विपत्ति से बचा लिया। उक्त गान की रचना-चातुरी और पदविन्यास का बखान करके मैं सुरसिक पाठकों के सरस हृदय को नीरस बनाना नहीं चाहता। यहाँ पर बानगी की तौर पर केवल उस गीत का अर्थ लिखे देता हूँ, उसी से पाठकगण समझ लेंगे। उस गीत का अर्थ यह है:—

"एक छोटा सा पक्षी किसी नदी-किनारे के पेड़ की डाली पर बैठ कर 'टीटविलो, टीटविलो' कह कर विलाप करता हुआ पसीने से तर हो गया और छाती पीटते पीटते पानी में फाँद पड़ा।"

सुर के सम्बन्ध में मुझे यही कहना है कि केवल दस बारह दफ़े 'टीटविलो, टीटविलो' सुन पड़ा; और कुछ भी समझ में नहीं आया। पाठकगण, अब आपको भी छुट्टी मिली और मेरी भी जान बची। किन्तु प्रश्न यह है कि इसमें बहादुरी किसकी अधिक है? खूब तारीफ़ किसकी करनी चाहिए? गीत बनानेवाले की, स्वर-निर्देश करनेवाले की, गानेवाले की, या इस तरह के विशुद्ध सुर-तान-लय और मधुर भाव में मोहित उस बङ्गाली युवक की? आप चाहे जो कहें, पर मेरी समझ में तो सर्वोपरि निर्लज्ज और मूर्ख वह

बङ्गाली युवक ही सबसे बढ़ कर बड़ाई का अधिकारी है। शाबास! शाबास बङ्गाली भाई! तुम धन्य हो! सङ्गीत-रत्नाकर की उपाधि को सार्थक करनेवाली भारतमाता की कोख धन्य है, जिसमें तुम ऐसे समझदार सपूत पैदा हुए! भाई बङ्गाली युवक! 'नाद-ब्रह्म' इस महावाक्य का अर्थ तुमने ही खूब समझा! दूसरी ख़िलत गीत रचनेवाले को मिलनी चाहिए! इस बरफ़ के मुल्क में पत्ती के मस्तक में पसीना, और उसका छाती पीटना! कल्पना की बलिहारी और रचना की वारी! ऐसी नई लिपि-चातुरी और भाव-माधुरी की बलायें लेने को जी चाहता है। 'टीटविलो' के बाद ब्रिटन-विख्यात 'गिनावडी' प्रेम-गात गाया गया। इसका सुर तो बहुत बुरा नहीं था, किन्तु और और बातों में यह 'टीटविलो' से भी बढ़ा चढ़ा था।

अब की मेरी पारी आई। सब मुझको एक बँगला गीत गाने के लिए लाचार करने लगे। फ़रमाइश हुई कि कोई प्रेम का गाना हो। पहले मैंने सोचा कि कृष्ण की प्रेम-लीला का कोई गीत गाऊँ। परन्तु फिर महात्मा मिचेल का स्मरण हो आने से मैंने निम्नलिखित गीत गाया।

"भालोबासिबे बोले भालोबासिने।
आमार चरित एई, तोमा बई आर जानिने॥
अधरे मधुर हासी, देखिले आनन्दे भासी,
ताई देखिते आसी, देखा दिते आसिने"॥

गीत समाप्त होने पर सबने एक स्वर से कहा—"Languishing air." अर्थात् मोहित कर देनेवाला स्वर है। इसके बाद ही चारों ओर "अर्थ? अर्थ?" की पुकार पड़ी। बालक-बालिकाओं को छोड़ कर युवक-युवती बुड्ढे-बुढ़िया सब अर्थ जानने के लिए उत्कण्ठा प्रकट करने लगे। अर्थ की व्याख्या हो चुकने पर सब कह उठे—

"बहुत ही अच्छा है, बहुत ही मनोहर है"। घर की पुरखिन और उनकी मँझली लड़की ने एकमत होकर अपनी राय ज़ाहिर की कि इस तरह का ऊँचे दरजे का प्रेम इस देश में भी है। किन्तु भारत में यह प्रेम शायद सब जगह देखा जाता है, नहीं तो साधारण गीत में ऐसा प्रेममय भाव आ नहीं सकता था।

उन लोगों ने प्रश्न किया कि "भारत में निःस्वार्थ-प्रेम के कितने गीत हैं?"। मैंने कहा—"उनकी गिनती नहीं की जा सकती"। मेरा यह उत्तर सुन कर उन लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। अन्त को युवतियों ने भारत की कोई कथा सुनने की इच्छा प्रकट की। मैंने उनको नल-दमयन्ती की पूरी कथा सुना कर कहा—"इस उन्नीसवीं शताब्दी में ऐसी स्त्री देख पड़ना सहज नहीं है"। इसी बात पर, जब सब लोग उठ कर चले गये और उन दो बहनों के और मेरे सिवा और कोई नहीं रह गया तब, गृहस्वामी की अविवाहिता मँझली कन्या ने कहा—"आपका यह कहना ठीक नहीं। सच्चा प्रेम होने पर सर्वदा सब कुछ किया जा सकता है। क्यों बेटी?

बेटी उसकी छोटी बहन का नाम था। उसने कुछ मुसकराकर कहा—"मैं नहीं जानती कि किस अवस्था में क्या करूँगी"।

पाठकगण, मेरे इस तरह यहाँ तक बढ़ आने के लिए मैं आपसे क्षमा-प्रार्थी हूँ। यहाँ के भद्र-परिवार, जिनको यथार्थ "English Home" कहते हैं, सचमुच ही सरल-प्रेममय स्वर्ग के दृश्य हैं। उन्हीं की मोहिनी शक्ति से विवश होकर मैं आप लोगों को यहाँ तक ले आया हूँ। यदि कहीं भी पवित्र सुख है तो इँग्लिश-होम में। अँगरेज़ों का "Home, sweet home" गाना सर्वथा सार्थक है। जाने दीजिए, फटे चीथड़ों पर पड़े पड़े लाख रुपये की इमारत का स्वप्न देखने से कोई लाभ नहीं। हमें अपने उन्हीं कलह-पूर्ण, अशान्तिमय, विष-भरे, गन्दे घरों को ही

साफ़ करके स्वर्ग बनाना होगा। क्योंकि हमको उन्हीं से काम है। हम लोग रूप, गुण, धन, मान, विद्या, बुद्धि, ज्ञान, धर्म आदि सब गँवाकर राह के फ़क़ीर बन बैठे हैं। अब हमारा ऊपर उठना सहज बात नहीं है। बूँद बूँद रुधिर से धोये बिना हमारी यह मलिनता दूर होने की नहीं।

बातों ही बातों में पुस्तक बढ़ी जाती है। इस कारण अब दो-एक उदाहरणों के द्वारा मातृभाषा की प्रधानता और उपयोगिता दिखाने की चेष्टा करके इस प्रसंग को समाप्त करूँगा। "प्यारे भैया!" इस सम्बोधन ही को ले लीजिए। देखिए, इसमें कैसी भारी शक्ति भरी हुई है। चिन्ताशील प्रेमी-मात्र इस शब्द की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। इस छोटे से शब्द के द्वारा दो आदमियों में कैसा अपूर्व प्रिय सम्बन्ध खड़ा हो जाता है और दोनों के मन और हृदय एक दूसरे के प्रति कैसे एक अनिर्वचनीय मधुर भाव से आकृष्ट होते हैं, यह बात अनुभव के बिना प्रकट करना कठिन ही है। अज्ञता से हो, या मातृभाषा के प्रति अत्यधिक स्वाभाविक प्रेम के कारण हो, अथवा कठिन सत्य के अनुरोध से हो, किसी तरह इस बात पर विश्वास नहीं होता कि इस सुन्दर सम्बोधन के अमूल्य भाव ठीक इसी तरह अँगरेज़ी भाषा में भी प्रकट किये जा सकते हैं। और, यदि कोई प्रकट कर सकता हो वह मेरे गुरु के समान है; उसे मैं निःसङ्कोच गुरु मानने के लिए तैयार हूँ। ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनका अँगरेज़ी में अत्यन्त उत्तम अनुवाद होने पर भी वह अनुवाद अर्थ और भाव में—अर्थात् कहनेवाले के मतलब को अच्छी तरह व्यक्त करने में—थोड़ा-बहुत हीन ही होगा। वैसे ही अँगरेज़ी में वीर-रस के जैसे शब्द हैं वैसे शब्द हम गुलामों की भाषा में नहीं हैं। "Onward!" "Forward!" "Quick march" इत्यादि शब्दों के भावों को हम लोग अपनी भाषाओं के हज़ारों शब्दों से भी व्यक्त नहीं कर सकते।

अँगरेज़ी में, सदा व्यवहार में आनेवाले शब्द, हमारी भाषाओं की अपेक्षा कम हैं। इस कारण अँगरेज़ो के एक एक शब्द को कई अर्थ प्रकट करने पड़ते हैं। प्रमाणस्वरूप "glove" और "bang bang" शब्द को ही ले लीजिए। जहाँ तक मुझे मालूम है "glove" शब्द का मुख्य अर्थ है दस्ताना। किन्तु भाषा में शब्दों की कमी के कारण लिहाफ़, तकिया, कुर्सी इत्यादि के आवरणों के लिए भी इसी शब्द का प्रयोग होता है। ऐसी चीज़ों के लिए "case" "cover" आदि शब्दों का जैसे व्यवहार किया जाता है, वैसे ही "glvoe" शब्द का भी। विशेष शब्दों के अभाव से इन तीन तीन साधारण शब्दों का एक ही अर्थ में अनिश्चित रूप से प्रयोग किया जाता है। ऐसे ही "bang bang" शब्द का भी बहुत सी अवस्थाओं में प्रयोग होता है। हाथ से कोई चीज़ गिर पड़ने से जो शब्द होता है उसके लिए, शीशे के कई बर्तन गिरने से जो शब्द होता है उसके लिए, कोई चीज़ गिर कर सीढ़ियों से लुढ़कने पर जो शब्द होता है उसके लिए, और वार बार दरवाज़ा खटखटाने से जो शब्द होता है उसके लिए भी, उसी एक ही "bang bang" शब्द का व्यवहार किया जाता है। इसी तरह के बहुत से दृष्टान्तों का संग्रह किया जा सकता है।

दो अँगरेज़ों के दम भर बातचीत करते ही इस तरह की बातें बारंबार सुनने को मिलती हैं। यथा—"Do you see what I mean?" (मैं क्या कहता हूँ, समझे?), "Do you mean this?" (तुम्हारे कहने का क्या यही मतलब है?), "Yes, that is exactly what I mean to convey" (हाँ, मेरे कहने का यही अर्थ है)। बातचीत में हमेशा इस तरह के सवाल-जवाबों से क्या यह नहीं प्रकट होता कि इस भाषा में शब्दों की कमी होने के कारण कहने और सुननेवालों को परस्पर अपना भाव प्रकट करने में कठिनता का

सामना करना पड़ता है? इसके सिवा 'well' (भला), 'you know' (समझे), don't you see? (समझते हो न?), 'I will tell you what it is' (उसके बारे में मैं तुमसे कहता हूँ)—इत्यादि बातों का उद्देश केवल समय बिताना ही है। जो भाव सूझता है, तो उसके प्रकट करने लायक़ शब्द नहीं ढूँढ़े मिलते। कभी कभी एकदम व्यर्थ वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। जैसे—"It is something —I do not know what to call it" (अर्थात् किस विशेषण का प्रयोग करना चाहिए, खोजे नहीं मिलता)। कभी कभी नाम न होने से या नाम न जाना रहने से (ये ऐसे नाम होते हैं जो भाषा में नये नये चलाये जाते हैं, या किसी विदेशी भाषा से लिये जाते हैं, किन्तु बातचीत में हमेशा उनका उतना व्यवहार नहीं किया जाता)। कोई कोई आदमी 'things' कह कर काम चला लेते हैं। ये सब बातें तो भले आदमियों के सम्बन्ध में कही गईं। किन्तु छोटे आदमियों की बातें इससे भी विचित्र हैं। उनके द्वारा अगर अँगरेज़ी भाषा का विचार किया जाय, तो ठीक न होगा।

मनुष्य-समाज की सबसे नीचे की श्रेणी में स्थित जङ्गली असभ्य बुशमैन आदि की भाषा में बातचीत के शब्द बहुत ही थोड़े रहने के कारण, वे आपस में बातचीत करते समय अधिकांश बातों को इशारे, हाव-भाव, अङ्ग-भङ्गी और हाथ-मुँह मटकाने के द्वारा प्रकाशित किया करते हैं। उस देश के अर्धशिक्षित और मूर्ख लोगों मे यह अभ्यास बहुतायत से देख पड़ता है। यहाँ तक कि दो-एक भद्र-महिलाओं में भी मैंने यह दोष देखा है*। जहाँ शब्दों के द्वारा भाव प्रकट करने में विलम्ब या कष्ट जान पड़ता

---

*लन्दन के बंगालियों में से किसी किसी ने इस अभ्यास में ख़ूब निपुणता प्राप्त कर ली है। वे बुरी बातों का—दोषों का—अनुकरण करने में—सिद्धहस्त हैं। ऐसे दो-एक आदमियों को मैंने देखा है, जो अँगरेज़ों की देखादेखी पोरों के हिसाब

है, या अर्थ समझाने के लिए वक्ता अपनी शारीरिक शक्ति के प्रयोग की आवश्यकता समझता है, वहाँ मनुष्य आप ही शरीर के भिन्न भिन्न अङ्गों के सञ्चालन द्वारा मन के भाव को स्पष्ट करके व्यक्त करने की चेष्टा करता है । किन्तु सुसभ्य शिक्षित भले आदमी, साधारण बातचीत में ऐसे अभ्यास को दोष की बात समझ कर, इस दोष से बचे रहते हैं । विलायत के सुशिक्षित समाज में इस दोष का लेश भी नहीं देखा जाता । वे बहुत धीरे धीरे बातचीत करते हैं, और पाण्डित्य के ज़ोर से किसी तरह का भाव प्रकाशित करने में ज़रा भी नहीं अटकते । मगर शब्दों का आडम्बर बढ़ाने में वे भी कृपण नहीं हैं । इसी श्रेणी के लोगों के द्वारा अनेक नये शब्दों की सृष्टि हुई है, और अभी तक होती जा रही है । भाषा में शब्दों की कमी अधिक अखरती है मध्यम श्रेणी के अर्धशिक्षित लोगों को । यह हमारी भाषा की उत्तमता है कि हमारे यहाँ के नीच श्रेणी के लोग भी अनायास बातचीत कर सकते हैं, और शरीर को नहीं हिलाते-डुलाते ।

मातृभाषा पर अश्रद्धा या घृणा का भाव रखना घोर कृतघ्न पुरुष का काम है । केवल इसी दृष्टि से, इसी कारण से, हर एक शिक्षित पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह मातृभाषा की आलोचना और पुष्टि करने में सदा लगा रहे । बँगला में विद्यासागर, अक्षय कुमारदत्त और

से नहीं, बल्कि उँगलियों के हिसाब से गिनती गिनते हैं । शायद वे नहीं जानते कि सुसभ्य यूरोप में असभ्य अवस्था का यह चिह्न रह गया है । जब मनुष्य हाथ-पैरों की उँगलियों के हिसाब से केवल २० तक गिन सकता था, इसके आगे गिनती नहीं जानता था, उसी समय का यह अभ्यास है । दोनों हाथों की उँगलियों पर दस तक गिना जा सकता था । इसी से १ से १० तक की दस संख्याओं को उँगली (Digit) कहते हैं ।

बङ्किमचन्द्र के 'कल' के जल से और केशवचन्द्र सेन * के स्वाभाविक सतेज सरल 'फुहारे' के शीतल जल से साहित्य की भूमि खूब उपजाऊ हो चुकी है। अब मामूली परिश्रम से बहुत सी सफलता प्राप्त करने की आशा है †।

लन्दन-पुलिस। पहले ज़माने में जितना बड़ा शहर था उतने अंश को इस समय भी सिटी आफ़् लन्दन (City of London) कहते हैं। इस हिस्से के शासन, विचार, आय-व्यय आदि सब काम जुदे हैं। नगर का यह अंश पूर्णरूप से लार्ड मेयर (Lord Mayor) के अधीन है। वही यहाँ के हर्त्ता-कर्त्ता-विधाता हैं; यहाँ तक कि स्वयं राजशक्ति भी इस हिस्से की चहारदीवारी के भीतर कोई चीज़ नहीं है। यहाँ के कई महल्लों को मिला कर एक स्वाधीन नगर सङ्गठित कर लिया गया है, जिसकी आनरेरी स्वाधीनता (Honorary Freedom) विशेष संमान के रूप मे किसी देशी या विदेशी प्रसिद्ध पुरुष को दी जाती है। साधारणत: ऐसी स्वाधीन (Freeman) मर्यादा का मिलना 'ख़ानदान' आदि ख़ास ख़ास बातों पर निर्भर है। क्रमश: बढ़ कर इस समय जितना बड़ा नगर हुआ है, उसको मेट्रोपोलिस (Metropolis) कहते हैं। इस नगर के कार्य का भार एक सभा के

---

* केशवचन्द्र पाश्चात्य भाषाओं के बड़े विद्वान् थे। कैनिंग (Canning), पार्कर (Parker), कार्लाइल (Carlyle), एमर्सन (Emerson) ये चार महाविद्वान् उनके मित्र थे। ये चारों विद्वान् वर्त्तमान समय में युग बदल देने-वाले महर्षि समझे जाते हैं।

† इसी तरह हम लोगों को हिन्दी-साहित्य के विषय में समझना चाहिए। यहाँ भी बहुत कुछ सामान मौजूद है। मातृभाषा के प्रेमी सुशिक्षित पुरुषों का भी ध्यान मातृभाषा के उदासीन मुखमण्डल की ओर आकृष्ट हुआ है। वे मातृ-भाषा की सेवा के लिए सन्नद्ध भी हैं, और छोटे से बड़े तक यथाशक्ति मातृभाषा की उन्नति के कामों में भाग ले रहे हैं। (अनुवादक)

हाथ में है। उस सभा का नाम है लन्दन-कौन्टी-कौन्सिल (London County Council)। सिटी-पुलिस में ६०० से अधिक आदमी हैं; जिनका सालाना खर्च प्राय: १ लाख पाउण्ड है। मेट्रोपेलिस में प्राय: १४,००० आदमी हैं; जिनका सालाना खर्च १५ लाख पाउण्ड है। सन् १८८२ की सूची से जाना जाता है कि उस साल इस महानगरी से ३,९६१ आदमी वालिग़ और १२,८७८ बच्चे खो गये थे। उनमें पुलिस ने ११४ वालिग़ों और १२ बच्चों को छोड़ कर सबका पता लगा लिया। सिपाही पिता-माता के साथ से छूटे हुए रो रहे बच्चे को सहूलियत से स्नेहपूर्वक तरह तरह के प्रश्न करते हुए सड़क पर धीरे धीरे लिये जा रहा है और बहुत से लोग उसे घेरे हुए हैं। लन्दन की सड़कों में ऐसा हर्ष-विषादमय दृश्य अक्सर देख पड़ता है।

लन्दन की पुलिस कहती है—"लोग हमको सर्वज्ञ और सर्व-शक्तिमान् समझते हैं। जिसको जो ज़रूरत होती है वह हमारे ही पास आता है"। सचमुच ऐसी अच्छी पुलिस और कहीं भी मैंने नहीं देखी। सिपाही ऐसे भले आदमी और ऐसे मुस्तैद हैं कि बिल्कुल अपरिचित विदेशी से भी बहुत ही अच्छा व्यवहार करते हैं। वे ठीक जैसे इस काम में परीक्षा देकर उत्तीर्ण हुए हैं। एक सप्ताह में डेढ़ पाउण्ड जैसे तनख़्वाह है वैसे ही वे जवान, हृष्ट-पुष्ट, अनेक गुणयुक्त, लम्बे-चौड़े, सुस्थ-शरीर होते हैं। पाँच फ़ुट दस इञ्च से छोटा आदमी भरती नहीं किया जाता। किसी स्थान का पता–ठिकाना पूछिए, तो वे, वह जगह चाहे जितनी दूर हो, ऐसा ठीक पता बताते हैं कि जैसे लन्दन की सारी वस्तो इनकी आँखों के आगे रहती है। जैसे :—Third turning on the left, then fifth turning on the right, then fourth turning on the left (अर्थात् बाएँ तीसरा मोड़ है, उसके बाद दाहने पाँचवाँ मोड़ है, फिर उसके बाद बाएँ

चौथा मोड़ है)। यात्री मात्र इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह पुलिस पृथ्वी भर की पुलिस से श्रेष्ठ है। बहुत लोगों को विश्वास है, और सूची आदि से भी यही सूचित होता है कि सन् १८७० के प्राथमिक शिक्षा सम्बन्धी आईन (Elementary Education Act) के प्रचार और बेकार लोगों के लिए अनेक प्रकार की व्यवस्था (Industrial Schools youngmen) होने के बाद अपराधियों की संख्या क्रमशः कम होती जाती है। सारे इँगलेंड में पुलिस जितने मुक़द्दमों का चालान करती है उनकी सूची से भी यही बात प्रकट होती है। सन् १८६०—६६ में १६,१४६ मुक़द्दमे, सन् १८७०—७६ में १५,८१७ मुक़द्दमे और सन् १८८०—८६ में १४,०५८ मुक़द्दमे हुए। ५०-६० बरस पहले लन्दन के क़स्बों में रुपया-पैसा लेकर बेखटके जाना असम्भव था। लेकिन अब किसी तरह का खटका नहीं है। ५०-६० बरस से कुछ पहले नगर के भीतर भी आफ़िसों की तरफ़ चोरों और ठगों का बहुत उपद्रव था। बैंक के पास रात को बहुत लोगों को अपनी घड़ी-चैन से हाथ धोना पड़ता था।

पुलिस के प्रधान कार्य्यालय के निकट आग बुझानेवाले (Metropolitan Fire-Brigade) कर्मचारियों का हेड आफ़िस है। इस इमारत में एक १०६ फ़ुट ऊँचा अष्टकोण टावर है। नगर में कहीं पर आग लगे, कर्म्मचारी लोग चट उस टावर पर चढ़ कर देख लेंगे। इसी लिए वह टावर बना है। दमकल, एञ्जिन आदि साज-सरञ्जाम लेकर जब ये लोग आग लगने की जगह की ओर बिजली की तरह जाते हैं, वह भी दृश्य, लन्दन की सड़क में, देखने लायक़ होता है। नगर में इन लोगों के अनेक अड्डे हैं। इनकी कार्य्यकुशलता जगत्प्रसिद्ध है। लन्दन में छोटी बड़ी आगें लगाही करती हैं। आईन के अनुसार चिमनियों (chimney) को सदा साफ़ रखना आवश्यक

होने पर भी असावधानी के कारण बहुत जगह चिमनी की झूल में आग लग जाती है। इसी लिए गृहस्थों को ख़ूब जुर्माने देने पड़ते हैं। वहाँ घरों के चारों ओर ईंट-पत्थर की दीवार और भीतर सब काठ का सामान होता है। आग लगने से वहाँ बड़ी मुश्किल आ पड़ती है। दो चार बार मैंने भी आग लगना देखा है। भयानक दृश्य था। वर्त्तमान ढंग के फायर-एञ्जिन (Fire-Engine) सन् १६७६ में पहले-पहल प्रचलित हुए थे।

डाक-घर (Post Office)। पहले जेनरल पोस्ट-आफ़िस में दो भारी घर थे। एक में ख़ास डाक-घर का काम होता था, और दूसरे में प्रधान आफ़िस और तार-विभाग था। अब तीन घर बन गये हैं। औसत हिसाब से, हर साल, यहाँ से डेढ़ सौ करोड़ पत्र, पचास करोड़ पुस्तकों और संवादपत्रों के पुलिन्दे, बीस करोड़ पोस्टकार्ड और ढाई करोड़ बँगियाँ जाती और आती हैं। बड़े दिनवाले सप्ताह में किसी किसी दिन २५ लाख से ३० लाख तक चीज़ें डाकख़ाने में आ जाती हैं। किन्तु ऐसा अच्छा प्रबन्ध है कि सब चीज़ें ठीक समय पर जहाँ की तहाँ पहुँचा दी जाती हैं। नित्य सन्ध्या के समय, दिन का काम समाप्त कर, जब लोग डाक-घर में पत्र आदि छोड़ने आते हैं, उस समय का दृश्य देखने ही लायक़ होता है। ६ से ८ बजे तक डाकख़ाने में बड़ी भीड़ रहती है। ठीक ८ बजे सब काम साफ़ हो जाता है। डाक चारों ओर चली जाती है। बड़े डाक-घर में ११,००० कर्मचारी हैं।

दूसरे घर में टेलीग्राफ़-आफ़िस है। यहाँ पन्द्रह सौ मेशीनों में तीन हज़ार आदमी काम करते हैं। लन्दन के सारे तारों की ख़बर यहीं से जाती है। थोड़ी दूर के लिए न्यूमाटिक-ट्यूब (Pneumatic Tubes) की व्यवस्था है। छोटे छोटे डाकघरों से, एक चोंगे के भीतर से,

एक पुलिन्दे में एक ही साथ तीस तीस चालीस चालीस टेलीग्राम, दो तीन मिनट के भीतर, बड़े डाक-घर में आ गिरते हैं। बड़ी बड़ी भाप की कलों से नल की हवा निकाल कर (Exhausting the air in the tubes) यह काम किया जाता है। अँगरेज़ों के ऊपर लक्ष्मी देवी की कृपा बरस रही है, इसका विशेष लक्षण उनके वाणिज्य का विस्तार है, और विशेष प्रमाण डाक-घर की उन्नति है। इस समय इन घरों में स्थानाभाव के कारण मेरे सामने ही एक तीसरा घर बना था।

चेरिंग क्रास (Charing Cross) से चारों ओर आठ कोस की जो नगर की सीमा निर्दिष्ट है, वह सीमा लन्दन के डाक-घर के अधीन है। इस चौहद्दी के भीतर बहुत विभागों के डाक-घर हैं। उनके सिवा, छोटे छोटे और मोदियों बनिये-बक्कालों आदि की दूकानों के अलग अनेकों छोटे छोटे पोस्ट आफ़िस हैं। उनकी संख्या करना कठिन है। मनीआर्डर, रजिस्ट्री आदि सब काम इन पोस्टआफ़िसों में होते हैं।

डाकियों और तार बाँटनेवाले छोकरों में कोई भी बदसूरत या घिनौना नहीं है। छाँट छाँट कर सुन्दर सुडौल आदमी इस काम में नौकर रक्खे जाते हैं। अँगरेज़ लोग बदसूरत और घिनौने आदमी का किसी भले मानुस के घर में चिट्ठी लेकर जाना दोष की बात समझते हैं।

लन्दन के प्रेस (Press)। लन्दन मे रोज़ सबेरे आठ बड़े और दो एक छोटे दैनिक समाचारपत्र निकलते हैं। इसके बाद दस बजे से तीसरे पहर के अख़बार निकलने शुरू होते हैं। सबेरे के काग़ज़ों मे 'टाइम्स' को छोड़ कर सबका मूल्य एक पेनी है। टाइम्स कलकत्ते के स्टेटसमैन के समान १६ पेज का छोटे छोटे हर्फ़ों में छपा हुआ होता है। इसी से वह तीन पेनी को बिकता है।

तीसरे पहर के सब अख़बार आधी पेनी को बिकते हैं। इनमें से हर एक के रोज़ सात आठ संस्करण निकला करते हैं। इन समाचार-पत्रों में दो-एक डेढ़ सौ बरस से भी अधिक पुराने हैं। सवेरे के अखबारों में एक 'डेली टेलीग्राफ़' ही नित्य तीन लाख के लगभग बिकता है। सामयिक पत्रिकाओं में साप्ताहिक और मासिक अनेक हैं; त्रैमासिक कम हैं। इनमें भी कोई कोई पुराने हैं। बहुत लोग यह प्रश्न कर सकते हैं कि हमारे यहाँ अख़बारों की इतनी बिक्री क्यों नहीं होती? इसके अनेक कारण हैं। उनमें से कुछ कारण यहाँ पर लिखे जाते हैं। लन्दन की सड़क पर चार मित्र जा रहे हैं। चारों ही चार अख़बार ख़रीदेंगे। घर में अगर बाप-बेटे दो ही आदमी हैं तो दोनों ही काग़ज़ ख़रीदेंगे। इधर हमारे देश में एक काग़ज़ को गाँव भर के लोग पढ़ लेंगे। इसी प्रसङ्ग को उठा कर भारत-हितैषी हण्टर साहब ने एक बार कोई व्याख्यान देते समय श्रोता लोगों को खूब हँसाया था। यह तो हुई दैनिक और साप्ताहिक पत्रों की बात। यहाँ मासिक पत्रिकायें कितनी ही बार कितनी ही तरह की निकलती हैं, पर एक भी बहुत दिनों नहीं टिक सकती। किन्तु इसका कारण दूसरा ही है। विलायत में सब तरह के काग़ज़ जिस ढँग से चलते हैं उसी तरह यहाँ भी अगर पत्र चलाये जायँ तो वे शायद इस तरह बन्द न हों। विलायत में हर एक लेखक अपने लेख के योग्य उसका पुरस्कार पाता है। पहले ही लिखा जा चुका है कि वहाँ केवल ब्रिटिश म्यूज़ियम से ही संवादपत्रों और सामयिक पत्रों में लिख कर कितने ही लोग अपनी जीविका चलाते हैं। हमारे यहाँ जैसे सभी कामों में "हर्रा लगे न फिटकरी, रंग चोखा हो" की नीति का अनुसरण किया जाता है वैसा विलायत में नहीं है। वहाँ कोई अपने सगे भाई को भी उसकी मेहनत का मूल्य दिये बिना उससे कोई काम

कराकर हीन बनना नहीं चाहता। इसी से अँगरेज़ी मे एक कहावत है—"Nothing for nothing, little for six pence" (विना मूल्य के कुछ नहीं होता, और थोड़े मूल्य में साधारण ही मिलता है)। विदेशी लोग इसके अनेक प्रकार के अर्थ करके अँगरेज़ों की निन्दा कर सकते हैं; किन्तु मैं पूछता हूँ कि यह नियम पृथ्वी पर कहाँ नहीं है? मेरी समझ मे तो यह बहुत ही अच्छा नियम है। हम तुमको लाभ पहुँचायें तो हम उस लाभ के भागी क्यों न बनें? हमारे देश में जितने साहित्य-सम्बन्धी पत्र बन्द हुए वे इसी कारण से। हाँ, यदि कोई इस तरह का दरिद्र सम्पादक हो, जो किसी तरह कठिनता से उस पत्र से अपना पेट पाल लेता हो, तो अवश्य सहृदय लेखकों को चाहिए कि उसे धन की भीख न दे कर लेखों की ही भीख दें। किन्तु जो सम्पादक या स्वत्वाधिकारी दूसरे के मत्थे प्रतिपत्ति-लाभ कर चुके हैं, या करना चाहते हैं, उन्हें ऐसी भीख माँगना कभी नहीं उचित है। हमारे यहाँ सम्पादक और स्वत्वाधिकारी लोग फोकट में ही लेख लिखा कर काम निकालना चाहते हैं, इसी कारण लेखक लोग जब देखते हैं कि इस वृत्ति से धन-लाभ की कोई आशा नहीं, तब वे लिखना बन्द कर देते हैं। इसी से—अच्छे लेखों के अभाव से—काग़ज़ बन्द हो जाते हैं। यदि लेखक खुद मुँह फोड़ कर माँगे और वारंवार तकाज़ा करे, तो शायद कोई सम्पादक या स्वत्वाधिकारी कुछ दे भी दे। किन्तु कौन ऐसा समझदार होगा कि अपना दिमाग़ खर्च करके लेख लिखे और उलटे यह जंजाल भी ख़रीदे? सुन पड़ता है कि आज-कल पत्रों के सम्पादक या स्वत्वाधिकारी लोग "दया" करके लेखकों को कुछ कुछ देने लगे हैं। यह शुभ लक्षण है, इसमें कोई सन्देह नहीं। किसी तरह सुलेखकों को सन्तुष्ट रख कर ऐसे पत्रों को बनाये रखना

अत्यन्त आवश्यक है । यह एक जातीय शक्ति है । ग्राहकों की बेईमानी भी कभी कभी पत्रों के बन्द होने का कारण हो जाती है । पर मेरी समझ में ऐसे नादिहन्द ग्राहकों की संख्या अब घटती जाती है । सहृदय ग्राहकों की सहायता और पृष्ठपोषकता के बिना अख़बारों या मासिक पत्रों का प्रचार सर्वथा असम्भव है ।

फ़्लीट स्ट्रीट (Fleet Street)—सरस्वती महाल । टेम्पुल के निकट स्थित इस महल्ले में अनेक प्रधान संवादपत्रों के आफ़िस हैं—पुस्तकों की दूकानें हैं । इसे एक प्रकार से साहित्य का बाज़ार कह सकते हैं । पण्डितवर जान्सन ने यहाँ बहुत समय विताया है । एक बार वह बसवेल के साथ ग्रीविच-पार्क (Greenwich Park) में घूमने गये । जान्सन ने उक्त पार्क की प्रशंसा की । तब बसवेल ने कहा—"यह स्थान सुन्दर अवश्य है, किन्तु फ़्लीट-स्ट्रीट के समान नहीं है" । प्रसन्न होकर जान्सन ने कहा—"बेशक, तुम ठीक कहते हो" । पण्डितवर जान्सन को यह स्थान (फ़्लीट-स्ट्रीट) ऐसा प्रिय था कि वह यहाँ दिनरात बच्चों की तरह प्रसन्न-मन से घूमा करते थे । कवि लैम्ब (Charles Lamb) को भी यह स्थान प्रिय था । वह यहाँ सड़क पर होनेवाले पुतली के नाच के सामने खड़े होकर बच्चों की तरह ख़ुशी के मारे नाचने लगते थे । लार्ड चैन्सलर स्टोवेल (Lord Chancellor Stowell) यहाँ सदा टहला करते और कहते थे कि "मैंने इस सड़क के सब छोटे-बड़े तमाशे देखे हैं" । एक बार एक नक़ली मत्स्य-नारी (Mermaid) को देख कर प्रसन्न होकर उन्होंने तमाशेवाले को एक शिलिंग—बारह आने—दिया । किन्तु ऐसे भोले गाहक को ठगना ठीक न समझ कर तमाशेवाले ने कहा—"No, no, my Lord, I really mustn't charge you this time; you know our mermaid well. She's only the ould serpint with a newtail." (अर्थात्—माई लार्ड, अब की

मैं आपसे कुछ नहीं लूँगा । ठीक इसी को देख कर आप अनेक वार पैसे दे चुके हैं ।) पद-मर्यादा-सम्पन्न पण्डित का ऐसा वच्चों का सा भोलापन और सहज अभिमान-शून्य भाव एक जातीय गौरव की वात है, इसमें कोई सन्देह नहीं । यहाँ के निकट ही एक घर में वैठ कर महात्मा गोल्डस्मिथ ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "विकार आफ् वेक फ़ील्ड" (Goldsmith's Vicar of Wakefield) नामक ग्रन्थ की रचना की थी । उसके वाद घर-वालो का ऋण चुकाने के लिए, वहुत तंग किये जाने पर, उन्होंने उक्त पुस्तक की हस्तलिपि, वेचने के लिए, जान्सन को दी थी । वहुत से सरस्वती के उपासकों के दुःख-सुख की वातें इस महल्ले से सम्वन्ध रखती हैं। इन्हीं सव कारणों से, साहित्य की दृष्टि से, फ्लीट-स्ट्रीट एक तीर्थ-स्थान समझा जाता है । इसी महल्ले में जान्सन की मृत्यु भी हुई । इस सड़क पर एक नाई की दूकान पर लिखा है कि वह घर पहले राजा आठवें हेनरी का महल था ।

साधारण पाठ-भवन (Public Reading Room) । सव तरह के—सव दर्जों के—लोगों के लिए लन्दन में वहुत से पाठ-भवन हैं। पाठ-भवनों में यथासम्भव पुस्तकें, अख़वार और मासिक पत्र आदि रक्खे जाते हैं । कहीं कुछ चन्दा देना होता है, और कहीं कुछ भी नहीं देना पड़ता । केवल अख़वार आदि तो सव जगह मुफ़्त पढ़ने को मिलते हैं । सर्वसाधरण को ज्ञान-दान करने के लिए व्रिटिश-म्यूजियम ने लाइव्रेरी-टेक्स लगा रक्खा है; जो सवसे वसूल किया जाता है। अन्यान्य पाठ-भवनों का प्रवन्ध हर एक महल्ले की एक चुनी हुई मण्डली के हाथ में रहता है । व्रिटिश-म्यूजियम में पढ़नेवालों की संख्या तो अधिक है ही; उसके सिवा अन्यान्य पाठ-भवनों में भी वहुत से जवान और वुड्ढे केवल ज्ञानोपार्जन की लालसा से निरन्तर

अध्ययन किया करते हैं। दिन भर मेहनत करने के उपरान्त कितने ही श्रमजीवी लोग शाम से डेढ़ पहर रात गये तक बैठ कर एकाग्र-चित्त से ग्रन्थ पढ़ा करते हैं।

हमारे यहाँ कहावत है कि "जो लिखता-पढ़ता है वह गाड़ी-घोड़े पर चढ़ता है"। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि आज-कल हमारे देश में लिखने-पढ़ने का यथार्थ आदर नहीं है। व्यास, कणाद, कपिल आदि महात्मा लोगों ने निःसन्देह खूब पढ़ा लिखा था; परन्तु गाड़ी-घोड़े पर चढ़ना उनको नसीब नहीं हुआ। परन्तु इस समय देखा जाता है कि उल्लिखित महापुरुषों की अपेक्षा बहुत ही कम पढ़े-लिखे लोग—बैरिस्टर, डाक्टर, वकील, इञ्जीनियर आदि—घोड़े-गाड़ी पर चढ़े घूमते-फिरते देख पड़ते हैं। व्यास आदि के और आज-कल के बैरिस्टर आदि के लिखने-पढ़ने में कितना अन्तर है, यह न जान सकने ही से हमारी यह दुर्गति है—यह धारणा है कि पढ़ने-लिखने का फल केवल गाड़ी-घोड़े पर चढ़ना ही है। असाधारण बुद्धिवाले व्यास आदि महर्षिगण जब तक सूर्य-चन्द्र रहेंगे तब तक संसार में जीते रहेंगे, और इस समय के विद्यादिग्गज शिक्षिताभिमानी हम लोग साधारण जीव-जन्तुओं की तरह जीवन के दिन पूरे करते हुए एक दिन अनन्त समय के लिए मिट्टी में मिल जायँगे।

पुस्तक पढ़ने का यथार्थ उद्देश विद्या-लाभ के सिवा और कुछ नहीं है। किन्तु अविद्या, अर्थात् भोग-विलास आदि, के लिए धनोपार्जन करना ही अगर लिखने-पढ़ने का फल समझा जाय तो वह लिखना-पढ़ना नहीं, एक मामूली दर्जे का रोज़गार है। हम लोगों में कुछ ऐसे भी महापुरुष हैं जो किसी को सदा मन लगा कर पढ़ते-लिखते देखते हैं, तो उसे उस सुमार्ग से हटा कर अपने दल में लाने के लिए कहते हैं कि "अजी लिखने-पढ़ने में क्यों इतने लगे हुए

हो !" । अर्थात्, लिखना-पढ़ना तो कालिज मे ही समाप्त हो गया; अब हमने व्याह करके अपने जीवन को स्वार्थपरता के निकट गिरवी रख दिया है, और औरत के गहने, हलवा-पूरी और रुपयों की थैली के सिवा संसार मे चौथी चीज़ का अस्तित्व स्वीकार ही नहीं करते। इस समय पढ़ने-लिखने जैसे व्यर्थ काम में मन लगाना सर्वथा असङ्गत और अनुचित है। किन्तु, इस प्रकार की आश्चर्योक्ति या कैफ़ियत से यथार्थ ध्वनि क्या निकलती है ? इस युक्ति से हम आप ही फँस गये ! हमने अपने हाथों अपने कपाल में, बड़े बड़े अक्षरों में, मूर्खता की छाप लगा ली ! इन दिनों का नाम आज मिट गया। हमारी सैकड़ों पोथियाँ पढ़ने की भारी बड़ाई आज मिट्टी मे मिल गई। हमने यह नहीं समझा कि हमारे मित्र इस धनोपार्जन की अवस्था मे यथार्थ ज्ञानोपार्जन के लिए पढ़ने-लिखने मे लगे हुए हैं। इससे यही ज़ाहिर हुआ कि हम उसी गधे के समान हैं, जिसकी पीठ पर सैकड़ों पोथियाँ लाद दी गई हों। अभी तक हमको यही अभिमान था कि हम खूब पढ़े-लिखे हैं। पर आज ज़ाहिर हो गया कि हममे और कल्लू चमार में कोई फ़र्क नहीं है। अगर अन्तर है तो यही कि हमारे ऊपर सौभाग्य की हवा चल रही है और उसके भाग्य में दरिद्रता का दुःख लिखा है। हमें यह असम्भव जान पड़ता है कि मनुष्य निःस्वार्थ भाव से, केवल ज्ञान-प्राप्ति की लालसा से, जन्म भर लिखने-पढ़ने मे लगा रह सकता है। तो फिर क्या हम घोर अज्ञान मे पड़े हैं ? यदि यह सर्व-सन्मत वाक्य सच हो कि चोर ही चोर को और साधु ही साधु को अच्छी तरह जान सकता है, तो हमारी विद्या-बुद्धि की दौड़ इसी उक्ति से प्रकाशित होगई। इस समय भी अगर हम अपनी कमी और अभाव को देख सके तो अच्छा है; नहीं तो सर्वनाश ही का सामना है। बहुत दिन हुए तब मैंने गुरुतुल्य रस्किन (Ruskin) के निकट सुना था कि --

"You might read all the books in the British Museum (if you could live long enough), and remain an utterly illiterate, uneducated person; but that if you read the pages of a good Book, letter by letter,—that is to say, with real accuracy,—you are for evermore in some measure an educated person."

(अर्थात् यदि कोई अमानुषिक दीर्घ-जीवन पाकर ब्रिटिश-म्यूजियम के बीस लाख ग्रन्थों का अध्ययन करे, किन्तु उनके यथार्थ भाव को समझ न सके, तो वह निरक्षर मूर्ख ही गिना जायगा। और, जो कोई एक अच्छे ग्रन्थ के दस पृष्ठों को अच्छी तरह पढ़ कर उनके भाव को—सत्य को—समझ सके, वह शिक्षित माना जा सकता है।)

इस अमूल्य उक्ति की प्रतिष्ठा करना हमने नहीं सीखा, इसी से आज संसार के न्याय-विचार के आगे मूर्ख ठहराये जा रहे हैं। इससे बढ़कर दुःख की बात और क्या हो सकती है? हाय! धनोपार्जन पर दृष्टि रखने के कारण हमने कितने ही अमूल्य ज्ञान-रत्नों को लात मार कर ठुकरा दिया है। धनोपार्जन के लिए नहीं लिखा-पढ़ा जाता। लिखने-पढ़ने के लिए ही धनोपार्जन किया जाता है। हमारा यही कर्त्तव्य है कि निर्वाह भर के लिए धनोपार्जन करते हुए ऐसी चेष्टा करें जिसमें जहाँ तक शीघ्र हो सके इस धनरूपी पिशाच की गुलामी से छुटकारा पाकर निश्चिन्त चित्त से जन्म भर ज्ञान बढ़ाने में लगे रह सकें।

लन्दन में भारत-नारी। ब्रिटिश-म्यूजियम में दो भारत की स्त्रियाँ भी पढ़ने आती थीं। उनमें एक तो प्रसिद्ध पारसी-क्रिश्चियन रमणी मिस कार्नेलिया सोहरावजी थीं। और दूसरी बङ्गालिन—कलकत्ते के प्रसिद्ध वकील मिस्टर दास की गुणवती पुत्रवधू—थीं। पहले मैं

समझता था कि हज़ार पढ़ी-लिखी होने पर भी बङ्गाली की लड़की यूरोप में निःसङ्कोच भाव से नहीं रह सकती। किन्तु इस प्रतिष्ठित महिला को देख कर मेरा वह भ्रम दूर होगया। यह नित्य गृहस्थी का काम—रसोई आदि—करके पढ़ने के लिए म्यूजियम मे आती थीं। मिस्टर दास जैसे सज्जन थे, वैसेही उनकी स्त्री भी सीधे मिज़ाज की, रूपवती और गुणवती थी। ये दोनों स्त्री-पुरुष बहुत दिनों तक लन्दन में रह-चुके हैं। मैं जब उक्त पण्डिता स्त्री को लन्दन की सड़क में शीघ्रता के साथ जाते देखता था तब मुझे एक प्रकार का अपूर्व आनन्द प्राप्त होता था। इस विदुषी को देख कर आशा होती थी कि किसी समय हमारे यहाँ की स्त्रियाँ भी यूरोपियन रमणियों की तरह विदेशीय कर्म-क्षेत्र में सुगन्धमय सुयश के साथ काम करने की शक्ति प्राप्त कर सकेंगी। यह विदुषी स्त्री जिस तरह अपने पति के साथ सुदूर समुद्र-पार जा कर केवल पति के ही सहारे विदेश मे सुखपूर्वक रहीं, सो हर एक पतिव्रता स्त्री के लिए निःसन्देह अनुकरण करने योग्य है। यह विदुषी हमारी जाति के लिए गौरव की सामग्री हैं। जगदीश्वर इन्हें इनके स्वामी सहित चिरजीविनी बना कर सुख मे रक्खें।

लन्दन मे रविवार। एक तो नगर भर में सदा हर एक घर के दरवाज़े बन्द रहते हैं। उस पर रविवार को दूकान-पाट सब बन्द रहने के कारण नगर भर मनुष्य-शून्य जान पड़ता है। सवेरे के समय राहों मे एक भी आदमी नहीं देख पड़ता। दोपहर के बाद, धीरे धीरे, घूमने के लिए निकलने लगते हैं। अधिकांश लोग सवेरे का कलेवा करने के उपरान्त नगर के बाहर किसी जगह दिल-बहलाव के लिए चले जाते हैं। बहुत से गृहस्थ उस दिन सब तरह के काम-काज बन्द करके बाइबिल आदि धर्म-ग्रन्थ पढ़ कर या ज्ञान और धर्म की चर्चा करके दिन बिताते हैं। एक रविवार को सवेरे घर से निकल कर

मैंने सोचा कि आज अगर इस सड़क पर हरिकीर्त्तन होता तो बड़ा आनन्द होता। यह सोचते सोचते कुछ ही दूर पर जाकर देखा कि मुक्ति फ़ौज का दल सचमुच बाजा बजा कर भगवद्भजन करता हुआ चला आ रहा है। बहुत दूर तक उन लोगों के साथ, अपने मन और अपने भाव से, भगवान् को भजता हुआ मैं चला गया। इससे मुझे विशेष सुख प्राप्त हुआ।

लार्ड मेयर की प्रदर्शिनी (Lord Mayor's Show)। पहले कहा जा चुका है कि लन्दन-'सिटी' सम्पूर्ण रूप से लार्ड मेयर के अधीन है। हर साल अल्डरमेन (Aldermen) लोगों में से एक आदमी इस पद के लिए चुन लिया जाता है। नवीं नवम्बर उसके अभिषेक का दिन नियत है। यह लन्दन-वासियों का एक ख़ास दिन है। जिस रास्ते से जलूस (Procession) निकलने को होता है उस रास्ते में सवेरे से ही दोनों ओर भीड़ डट जाती है। तीसरे पहर नियत समय पर, सैकड़ों गाड़ियों पर, अनेक ऐतिहासिक और सामाजिक स्वाँग लार्ड मेयर के घर से निकलते हैं, और अनेक मार्गों में घूम घाम कर फिर वहीं लौट जाते हैं। इस अभिनय में प्राचीन काल की अनेक बातें प्रत्यक्ष देखने को मिलती हैं। इस जलूस में सबसे आगे घुड़सवार पुलिस चलती है और सबसे पीछे लार्ड मेयर की गाड़ी रहती है। उसमें ६ घोड़े जुते होते हैं। यह जलूस एक मील की लम्बाई में रहता है।

अभिषेक के उपरान्त एक धूमधामी भोज होता है। उसमें शहर के हज़ारों प्रतिष्ठित लोग उपस्थित होते हैं। एक साल इस हिसाब से भोज के भोजन की सामग्री बनाई गई थी:—

कछुए का शोरबा ७ मन, चिड़िया ५००, पेरू पक्षी १२०, पार्टरिज पक्षी २००, फेजन्ट पक्षी १००, लापुइङ्ग पक्षी ७००, मुर्ग २०,

सुअर की जाँघें २०, जेली लिये बछड़ों के खुर ७००, कुल्फ़ी-बरफ़ १,४०० अंगूर १० मन, १५,००० भोजन करने के वर्तन, १०,००० चाँदी के काँटे, ६,००० छुरी, ६,५०० गिलास काम में लाये गये थे। टेविल सजाने में ३,००० गज़ बेले और असंख्य गुलाब कमल वग़ैरह के फूल लगे थे। इस तमाशे और भोज में न्यूनाधिक साढ़े तीन हज़ार पाउण्ड ख़र्च हुए थे। उसमें आधा ख़र्च लार्ड मेयर ने ख़ुद और आधा ख़र्च दो शेरिफ़ों ने दिया था। लार्ड मेयर की सालाना तनख़्वाह १,००० पाउण्ड है, मगर भोज आदि देने में उनका इससे कहीं अधिक ख़र्च हो जाता है। इसके सिवा लार्ड मेयर का काम भी कुछ सहज नहीं है। एक लार्ड मेयर की कार्य-सूची देखने से मालूम हुआ कि उसे एक साल में ३६५ साधारण सभाओं और कमेटियों में उपस्थित रहना पड़ा। इसके सिवा उसे १३० भोजों और ८५ स्वागतों और नाच के जल्सों (Receptions and balls) में जाना पड़ा, ३६ डेप्युटेशनों (Deputation) से मिलना पड़ा, ११,०० व्याख्यान देने पड़े, २० दफ़े पद-मर्यादा सहित गिर्जे में जाना पड़ा, ३० सभाओं का सभापति होना पड़ा, १८ दिन विचार का कार्य करना पड़ा और ५,००० पत्रों का उत्तर देना पड़ा। अब पाठकगण विचार कर देखें कि यह नौकरी कैसी है। घर का पैसा ख़र्च करके केवल मान के लिए लार्ड मेयर लोग इतना परिश्रम करते हैं। लार्ड मेयर की स्त्री को भी इसी तरह परिश्रम करना पड़ता है। नौकरी के समय सपत्नीक लार्ड मेयर जिस घर में रहते हैं, उसे मेन्शन हाउस (Mansion House) कहते हैं। इसके एक हिस्से मे ख़ास नगर की पुलिस-अदालत है, और वहीं पर देश विदेशों में अनेक तरह की सहायता पहुँचाने को चन्दा जमा करने के लिए सभा-समितियाँ हुआ करती हैं।

होवर्न-पुल (Holborn Viaduct)। कलकत्ते की तरह लन्दन सम-

थल जगह नहीं है। बहुत ही ऊँचे-नीचे स्थानों में नगर बसा हुआ है। जहाँ पर यह पुल बना है, वहाँ पहले पैदलों और घोड़ा-गाड़ियों को आने-जाने का बड़ा कष्ट था। एक तरफ़ जैसे नीचे उतरना पड़ता था, दूसरी तरफ़ वैसे ही ऊपर चढ़ना पड़ता था। इस उपत्यका के ऊपर इस समय ऐसी इञ्जीनियरी की कारीगरी देख पड़ती है कि अनायास लोग आते-जाते हैं। नीचे भी शहर है, ऊपर भी शहर है। हिन्दुस्तानियों के लिए अवश्य ही यह एक नई चीज़ है। सन् १८६७ में इस पुल का काम शुरू हुआ था। इसके बनने में बड़ी लागत आई है। पहले इस पुल के आस-पास की ख़राब तङ्ग गलियों में गँठकटे आदि तरह-तरह के चोरों के अड्डे थे। इस समय भी वहाँ एक ऐसी गली है, जिसके बारे में लोगों की धारणा थी कि वहाँ भूत रहते हैं। पण्डितवर जानसन साहब भूत देख पाने की आशा से वहाँ अक्सर आया जाया करते थे।

टेम्स नदी का किनारा। कलकत्ते में गंगा जैसे क्रमशः दूर हटती चली गई हैं, लन्दन के नीचे टेम्स की भी वही दशा है। कलकत्ते के स्ट्राण्ड बैंक (Strand Bank) की तरह वहाँ जो बाँध बाँधा गया है, उसका नाम है विक्टोरिया एम्बैंकमेंट (Victoria Embankment)। यह ब्लैक फ्रायर्स पुल (Black Friars Bridge) से वेस्टमिनिस्टर पुल तक है। यह बाँध ७,००० फुट लंबा, ४० फुट ऊँचा और ८ फुट चौड़े ग्रेनाइट पत्थर के घेरे से सुरक्षित है। २० लाख पाउण्ड की लागत से इस बाँध पर जो २७० बीघे ज़मीन निकाली गई है, उस पर सुन्दर सड़क बनी है और उसके दोनों ओर मनोहर वृक्षों की क़तारें लगा दी गई हैं। दिन के या गैस के प्रकाश में, जब देखिएगा तब विशेष प्रसन्नता प्राप्त होगी। ऐसा मनोहर स्थान यूरोप भर में और नहीं देख

पड़ा। नदी-तट का प्रधान दृश्य है मिसर देश से लाया गया एक पत्थर का स्तम्भ (obelisk—Cleopatra's Needle)। यह ग्रेनाइट पत्थर के एक ही टुकड़े से बना है, और ७० फ़ुट ऊँचा है। नीचे की चौड़ाई ८ फ़ुट है। वज़न ५,६०० मन है। मिसर के प्राचीन मन्दिरों के सामने इसी तरह के दो दो खम्भे रहते थे। यह स्तम्भ महापुरुष मूसा के समय की चीज़ है। नृपति तृतीय टाथ्मेस (Thothmes III) ने इसकी स्थापना की थी। खेदीव महम्मद अली ने अँगरेज़ सरकार को भेंट में यह दिया था। इस खम्भे को मिसर से लाने में दस हज़ार पाउण्ड ख़र्च हुए हैं और लाने मे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा है। गधाबोट में लाद कर जो स्टीमर इसे खींचे लिये आ रहा था, वह, विस्के के भारी तूफ़ान मे अपनी जान बचाने के लिए लाचार होकर, इसे राह में ही छोड़ आया। पीछे से एक दूसरा जहाज़ इसे लन्दन में लाया। अँगरेज़ गवर्नमेंट का काम सब जगह एक सा होता है। खेदीव का दान—यह स्तम्भ—लेकर अलेकज़ंड्रिया की रेती मे डाल दिया गया। सरकार के पास इतना रुपया नहीं बचा कि वह उसे लन्दन में लाती। बहुत दिनों के बाद विलसन नामक एक उदार भद्रपुरुष ने इसे लाने का ख़र्च दिया और यह स्तम्भ टेम्स नदी के तट की शोभा बढ़ाने लगा। इस बाँध के ऊपर कई एक महात्माओं की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। जैसे प्रसिद्ध पण्डित मिल, रविवार-विद्यालय के स्थापक रेइक्स, कवि बर्न्स, भारतीय सेनापति आउटराम और महात्मा टिण्डेल। टिण्डेल लूथर के समसामयिक हैं। इन्होंने अँगरेज़ी भाषा मे बाइबिल के नवीन भाग का अनुवाद करने की चेष्टा की थी। इसी अपराध पर देशद्रोही कह कर यह देश से निकाल दिये गये और ब्रुशल्स के पास फिर फाँसी पर चढ़ा दिये गये। मृत्यु के समय इन्होंने पुकार कर कहा था—"भगवन्! इँगलेंड के राजा की आँखें खोलो"।

ग्रीनविच । यह लन्दन का एक उपनगर है । यहाँ का अस्पताल, ५७० बीघे में बना हुआ पार्क, जलसेना-विद्यालय (Naval College), उसके अन्तर्गत म्यूज़ियम और १८० फ़ुट ऊँचा मानमन्दिर प्रसिद्ध है । अस्पताल के सामने, आर्कटिक समुद्र से लौटे हुए फ़रासी लेफ़्टिनेन्ट बेलो (French Arctic Navigator, Lieutt. Bellot.) का स्मारक-स्तम्भ है । अस्पताल के पूर्व ओर पेन्शन पाये हुए जलसेना के सैनिक गोरे रहा करते थे । अब वे नक़द पेन्शन लेकर चाहे जहाँ रह सकते हैं । यह अस्पताल एक बड़ी भारी सुसज्जित और बहुत पुरानी इमारत है । यहाँ पर सेनापति नेल्सन का वह कोट और वेस्ट-कोट बड़े यत्न से रक्खा हुआ है, जिसे उन्होंने ट्राफलगर की लड़ाई के दिन पहना था । इन दोनों कपड़ों में गोलियों के छेद बने हैं ।

यहाँ का मान-मन्दिर (Observatory) जगत्प्रसिद्ध है, और सचमुच ही सब तरह से संसार भर के मानमन्दिरों में श्रेष्ठ है । राज्य के प्रधान ज्योतिषी इस जगह असीम आकाशमण्डल की देख-भाल करके संसार में खगोल-सम्बन्धी ज्ञान फैलाते हैं । ग्रीनविच का समय पृथ्वी के चारों ओर भेजा जाता है और उसी की छाप है । यहाँ से रोज़ दस बजे और एक बजे ब्रिटिश द्वीप के सब स्थानों में, और हर घंटे पर लन्दन के बड़े डाक-घर में, तार के द्वारा, यहाँ के समय की सूचना दी जाती है । यहाँ हर एक साफ़ दिन में सूर्योदय-काल का एक फ़ोटो अवश्य लिया जाता है । जंगी जहाज़ों की घड़ियों (Chronometer) की यहाँ चरम ताप और चरम शीत से परीक्षा ली जाया करती है । केवल इन्हीं घड़ियों के द्वारा अपार समुद्र के भीतर पृथ्वी की द्राघिमा (Longitude) जानी जा सकती है ।

भारत की कांग्रेस इँगलेंड की गोद में;—

" Well begun is half won."

आरम्भ अच्छा होने पर आधा काम समाप्त समझना चाहिए।

सन् १८६० की १४वीं अप्रैल को, भारत और इँगलेंड दोनों देशों के विशेष आनन्द और गौरव का दिन था। पृथ्वी के इतिहास-लेखक लोग सोने के अक्षरों से लिख रक्खें कि इस शुभ दिन में, भारत के हृदय-राज्य में, इँगलेंड का उज्ज्वल सिंहासन चिरकाल के लिए स्थापित होने का सूत्रपात हुआ। हमारी जातीय कांग्रेस इतने दिनों तक गर्भावस्था में थी। उक्त १४वीं अप्रैल को पैदा होकर उसने संसार का प्रकाश देखा। गर्भावस्था में गर्भपात हो जाने का बहुत कुछ खटका होने से हम लोग सदा शंकित रहते थे। लेकिन अब कुछ भय नहीं है। स्वाधीनता की जननी इँगलेंड की भूमि ने स्वयं धाय बनकर इस नवप्रसूत बच्चे के पालन-पोषण का भार अपने ऊपर ले लिया है। आओ भाई भारतवासियो, आज इस भारी आनन्द के दिन मे जी भर कर गले मिले, और हृदय के भीतर से आकाश-पाताल हिलाते हुए तीन बार कहे "जय दयामय! जय दयामय! जय दयामय!" घर और बाहर प्रबल शत्रुओं के रहते भी जिसकी कृपा से हमारे हृदय का सर्वस्व कांग्रेस इँगलेंड जैसे चतुर और पालन करने की शक्ति रखनेवाले देश की बाँह की छाँह में स्थापित हुई है, उस करुणासिन्धु की करुणा की सीमा या परिमाण का निर्देश कौन कर सकता है? विधाता की अनन्त कृपा के प्रभाव से यह कांग्रेस हमारी जैसी अभागी जाति के लिए स्थापित हुई है। यह कांग्रेस ही हमारी एक-मात्र आशा है। इसी से कहते हैं कि भाइयो, दुर्बल और सबल, दोनों के लिए जिसकी कृपा का द्वार खुला हुआ है, उसी पर सब काम

छोड़ दो । निराश न होना, जगदीश्वर के सिवा और कोई भारत के दुःख को नहीं दूर कर सकता । 'भगवान् इसका विचार करेंगे' इस गम्भीर मर्मभेदी सजीव निर्भरशीलता के सिवा कङ्गाल असहाय भारत-वासी और कोई उपाय नहीं जानते । यहाँ की रैयत हाकिमों का अत्याचार, ज़मींदार का अत्याचार, महाजनों का अत्याचार, अत्याचार के ऊपर अत्याचार सहती है; पर चूँ तक नहीं करती—अत्याचार के रोकने की कोई चेष्टा नहीं करती । भारत के ग़रीब दुखी किसानों की सहनशीलता के आगे कभी कभी भेंड़ का बच्चा भी हार मान लेता है । चार करोड़ जीव, जो हमारे भरण-पोषण, सुख-स्वच्छन्दता और ऐश-आराम के लिए दिन-रात परिश्रम करके भी शाम को एक बार आधे पेट मोटा और रूखा-सूखा खाने को पाते हैं, वे चुपचाप सब तरह के अत्याचारों को सहते हैं । ये लोग दुर्भिक्ष के समय अन्न न पाकर सपरिवार प्राणत्याग करने के पहले एक बार भी राजा, ज़मींदार या महाजन को कोसना नहीं जानते, केवल विधाता के विधान की ओर ताक कर दुर्लभ मनुष्य-जीवन को त्याग देते हैं । परन्तु हम उनकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं देते, बिल्कुल ही उदासीन हैं । इस बात को सुनकर अँगरेज़ लोग काँप उठते हैं और Shame, Shame की ध्वनि से हमको धिक्कार देते हैं । वास्तव में आश्चर्य तो यही है कि जिस देश में इतने अधिक निरीह शान्त सेवक श्रमजीवी लोगों की ऐसी दुर्दशा होती है, वह देश पाताल को क्यों नहीं चला जाता ! राजा, महाराजा और राय बहादुर बाबू लोगो ! दूध-मलाई-मक्खन-घी के आहार से मेदा बढ़ा कर आलस्य के ग़ुलाम बनकर ख़ुश-बूदार बीड़े चबाते हुए तुम लोग सुख से कोमल बिछौनों पर टाँगें फैला कर सोते हो ! ज़रा भी नहीं विचारते कि तुम्हारे भयानक अत्याचार से जातीय जीवन की नींव नीचे धसती जाती है । किसी दिन ये गगनचुम्बी

मकान हीरा-मोती और प्रामिसरी नोटों से भरे लोहे के सन्दूकों सहित धड़ाम से तुम्हारे सिर पर फट पड़ेंगे। यह आर्य और अनार्य के भेद-भाव का समय नहीं है। कलियुग के आर्य अँगरेज़ लोग हैं; तुम सब समान रूप से अनार्य हो रहे हो। इसलिए ग़रीब किसान, मज़दूर और नीच जाति के सब लोगों को अपना भाई समझ कर अपने कल्याण की तरह उनकी भलाई के लिए भी यत्न करो। नहीं तो तुम्हारी भलमनसाहत बहुत जल्द तशरीफ़ ले जायगी। इन बे-ज़बान के आत्मत्यागी पुरुषों के हृदय की वेदना-भरी पुकार विश्वेश्वर के सिंहासन के पास पहुँच गई है। इन लोगों के दुःख और क्लेश दूर करने के लिए ही कांग्रेस का जन्म हुआ है; इसलिए नहीं कि ऐरे-ग़ैरे बाबुओं को भारी अधिकार सरकार मे मिल जायँ और वे अपने निरक्षर सालों के लड़कों को डिपटी-गीरी दिला दे। भाई सीधे-सादे किसानो, तुम्हारे इस विशाल देश में कोई ऐसा नहीं जो तुम्हारे लिए चार आँसू बहावे। किन्तु वहाँ हैं। सहते जाओ, भगवान् अवश्य तुम्हारे दिन फेरेंगे। कांग्रेस के जन्मदाता मिस्टर ह्यूम ने जब इस देश की चार करोड़ ब्रिटिश प्रजा को अन्न-वस्त्र न मिलने की बात अँगरेज़-मण्डली के आगे कही, तब साधारण मज़दूर तक "छी-छी" कह उठे।

कांग्रेस की सहायता के लिए इँगलेंड में यही पहली सभा हुई थी। लन्दन के अन्तर्गत क्लर्कनवेल स्थान के फ़ारेस्टर्स हाल (Forester's Hall, Clerkenwell) मे ४ अप्रैल की रात को साढ़े आठ बजे के बाद इस सभा का काम शुरू हुआ। सभापति वेडर्बर्न (Sir William Wedderburn) ने प्रार्थना के ढंग से मीठे कोमल स्वर में निम्न-लिखित शब्दों द्वारा पहले भूमिका बाँधी। उन्होंने कहा—"The humblest Roman citizen had the right of appeal to

Caesar, and in India a considerably larger population than that of the Roman Empire now desire to appeal to their Caesar, the sovereign British people." (अर्थात् अत्यन्त साधारण रोमन प्रजा भी अपने सम्राट् सीज़र के निकट आवेदन करने का अधिकार रखती थी। रोमन साम्राज्य से कहीं अधिक भारतवर्ष की प्रजा आज अपने सीज़र और हर्ता-कर्ता-विधाता ब्रिटन-वासियों के निकट अपना दुःख जताकर नालिश करने के लिए उपस्थित है।) इसके बाद उन्होंने संक्षेप में भारत के अभाव-अभियोग और कांग्रेस के भारी उद्देश का वर्णन करके कांग्रेस के भेजे हुए उपस्थित प्रतिनिधियों का परिचय दिया। इस प्रकार भरसक स्पष्ट-भाषा में सब वर्णन करके उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया। "Righteousness exalteth a nation" (केवल पुण्य-प्रताप जातीय उन्नति का कारण है।) और "No taxation without representation" (प्रजा के प्रतिनिधियों के बिना 'कर' निश्चित करना अन्याय है।) इन दो मौलिक सूत्रों पर खड़े होकर श्रोता लोगों से सहायता माँगी गई। "बलं बलं ब्रह्मबलम्" यह वाक्य धर्मराज्य का कठोर सत्य है; जगत् की भिन्न भिन्न जातियों के इतिहास इसके सजीव साक्षी हैं। अँगरेज़ लोग इस महान् सत्य को बहुत अच्छी तरह जानते और समझते हैं। सभा-विसर्जन के बाद मेरे एक विद्वान् नौजवान अँगरेज़ मित्र ने स्पष्ट कह दिया कि "It is not policy of extent of dominion, or supremacy on land and on sea that is the stability of a nation; but righteousness." अर्थात् कला-कौशल, राज्य-विस्तार या जल-स्थल में एकाधिपत्य, कोई भी जातीय समृद्धि को बनाये नहीं रख सकता। केवल पुण्य का बल ही इस कार्य को कर सकता है। और एक सज्जन ने कहा—"*It is only in righteousness that*

the throne of kings is established.” अर्थात् केवल पुण्य के प्रताप से राजा का सिंहासन सुदृढ़रूप से स्थापित हो सकता है।

प्रतिनिधियों के बाद सुप्रसिद्ध देशहितैषी वृद्ध दादाभाई नौरोजी ने शान्त और एकाग्र भाव से कुछ कहा। उसके बाद क्रमशः पाँच छः अँगरेज़ों ने और सबके अन्त में प्रसन्नमुख मिस्टर ह्यूम ने दो चार बातों से हृदय की गहरी सहानुभूति प्रकट करते हुए दुःख-पीड़ित भारत की यथार्थ अवस्था और अभावों को श्रोतागण के आगे प्रकट करने की चेष्टा की। वक्तृताओं में “Black man” शब्द को लेकर प्रधान सचिव मार्क्विस साल्सबरी महाप्रभु की अनेक बार हँसी उड़ाई गई। एक वक्ता ने कहा—“Perhaps the noble Marquis has not used a looking-glass for the last ten years, as otherwise he would have known which of them is the darker.” अर्थात् जान पड़ता है कि महात्मा मार्क्विस ने दस बरस से आइना नहीं देखा। नहीं तो वह देख पाते कि दोनों में कौन अधिक काले रँग का है। वास्तव में दादाभाई को देख कर यूरोपियन का भ्रम होजाता था। अनेक अँगरेज़ों के मुँह से भी मैंने यह बात सुनी है। जो कुछ हो, हमारे लिए तो यही बड़े सुख की बात है कि दादाभाई नौरोजी के ऊपर वहाँ के सब लोगों ने अनुराग प्रकट किया। वास्तव में साधु दादाभाई निस्सन्देह एक ऊँचे दर्जे के उदार महात्मा पुरुष थे। इस प्रकार एकाग्रता के साथ हार्दिक उत्साह से इतने दिनों तक स्वदेश की भारी सेवा करके भी अगर वह देश-विदेश मे सर्वसाधारण से भक्ति और पूजा न पाते तो इससे बढ़कर असम्भव और असङ्गत बात दूसरी नहीं होती। सरल प्रेम, गहरी सहानुभूति, प्रबल उत्साह, सजीव उद्यम और अप्रतिहत प्रयास तथा परिश्रम मे उनकी बराबरी करनेवाला आदमी भारत में कोई नहीं था।

प्रचण्ड उत्साह और विशेष आनन्द के साथ सभा ने निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया। इसे परम शुभ चिह्न और भगवान् की कृपा समझना चाहिए।

अर्थात् सभा में आये हुए लोगों ने भारत का दुःख दूर करने के लिए पार्लियामेंट में भरसक चेष्टा करने की प्रतिज्ञा की। हम अभागियों के लिए यह कम सौभाग्य की बात नहीं, और पहले उद्योग में इस तरह की आशा पाना निःसन्देह प्रवल उत्साह की बात है। इसे भविष्य के लिए सुलक्षण समझना चाहिए। वह प्रस्ताव यह था—

"That this meeting of the inhabitants of the Finsbury Division and its neighbourhood, having heard the grievances of the Indian people stated by representative Indians and by others, and having had laid before it the reforms put forward by the Indian National Congress, declares that, in its opinion, the grievances from which our Indian fellow-subjects are suffering should be removed, and believes that the reforms advcoated by the Congress will be greatly helpful to this end. This meeting therefore expresses its most cordial sympathy with the efforts which, by its constitutional means, the Indian people are making to obtain the redress of their grievances through the good will and help of the British people; and those present pledge themselves, by every means in their power, to move the British Parliament to grant the reforms so temperately and so forcibly advocated.

That this meeting authorises the chairman to sign a petition for presentation to the House of Commons, praying that House to allow of the insertion in the Indian Council's Bill of a section permitting the election of one half of the members of the Supreme and Provincial Lgislative Councils, and of a large increase in the numbers of the respective Councils."

जितने लोगों के साथ इस बारे में मुझसे बातचीत हुई है, उनमें से दो आदमियों के सिवा किसी ने भी कोई आपत्ति नहीं की। एक तो जड़-बुद्धि वृद्ध रक्षणशील कन्सर्वेटिव था, और दूसरा एक भारत से लौटा

हुआ बम्बई प्रदेश का भूतपूर्व कमिश्नर था। पहले की आपत्ति यह थी कि भारत में जब तक अनेक जातियाँ और अनेक धर्म हैं, तब तक भारतवासियों में परस्पर फूट और वैर का होना अनिवार्य है। अतएव ऐसे स्थान में प्रजा के हाथ में किसी तरह की कोई क्षमता या भार देना असङ्गत अन्याय और अहितकारी है। इसके सिवा मुसलमानों का सम्प्रदाय सदा हिन्दुओं का विरोधी रहता है। यह बात भी विशेष रूप से विचारने योग्य है। दूसरे आदमी ने यह कहा कि बहुत थोड़े से शिक्षित आदमियों के सिवा सारी प्रजा को अगर पशुतुल्य कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा। 'चुनाव' 'वोट' आदि शब्दों का अर्थ जानने के लिए इस समय भी उन्हें बहुत दिन चाहिए। उक्त कमिश्नर ने उदाहरण-स्वरूप कहा कि कई बरस हुए, सूरत में पहले पहल जब 'लोकल बोर्ड' की स्थापना हुई, तब सभ्य-निर्वाचन के समय वोट-संग्रह करने के लिए सरकारी मामलतदारों को गउओं की तरह हँका कर प्रजा का जमा करना पड़ा था। उस दृश्य की याद आने पर उक्त साहब खूब हँसते थे। दोनों की आपत्तियाँ प्रबल हैं और पूरी तरह उनका खण्डन करना सहज नहीं। इस अवस्था में पहले अपने घर का सुधार करने को ही हमें अपना पहला और आवश्यक कर्तव्य समझना चाहिए। इस पर कोई महाशय कह सकते हैं कि अगर घर का ही सुधार करना है, तो उसमें विदेशियों का मुँह ताकने की क्या ज़रूरत है? इसका भी उत्तर देना कठिन है। अतएव यहाँ पर एक विज्ञ पण्डित के मत का उल्लेख करके इस विषय को हम समाप्त कर देंगे।

"It is the beginning of a movement which our generation will not see the end of, but which must be fraught with momentous consequences for England and India alike Whether they shall prove alike happy for both lands or shall be disastrous to either or to both, depends upon the wisdom, patience and forbearance, which are mutually practised.

*　　*　　*　　*　　*

"We English people have now such an opportunity as no other people has ever had of setting to the world an example of highminded, disinterested, straight dealing. Upon the way in which we meet the demands of India, upon the plan we adopt for the future government of the Empire, upon our justice, patience and temperance, during the next few short years, not only the future of India but that of England herself, and in no small measure of the civilized world, depends. In this matter, our national honour is deeply pledged. Our lot is in our own hands—God grant that we may be wise and just whilst yet there is time."

यह जिनका मन्तव्य है वह भी भारत से लौटे हुए अँगरेज़ हैं। इन्हीं का कहना ठीक है। दोनों जातियों के लिए भयानक समय उपस्थित हुआ है। दोनों के सामने विषम परीक्षा है। विधाता दोनों को इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने का, इस समस्या के हल करने का, बल और बुद्धि दे।

विलायत में कांग्रेस के सम्बन्ध में मैंने जैसी आशा की थी वह देश में आने पर, यहाँ के रंग ढंग देख कर, बहुत कुछ फीकी पड़ गई। देश का असली बल जो निम्नश्रेणी के करोड़ों दीन दुखी हैं उनके सांघातिक अभाव अभियोगों को दूर करने का यथार्थ उद्योग यहाँ कुछ भी नहीं देख पड़ता। देश में जो कुछ देख पड़ता है उसे ही समझाने की यहाँ पर चेष्टा की जाती है।

संसार में तीन तरह के लोग रहते हैं—स्वार्थपर, परार्थपर, और निरर्थपर। साधारणतः हमें दोही श्रेणी के लोग देख पड़ते हैं, तृतीय श्रेणी के लोगों के होने की उपलब्धि एकाएक नहीं होती। नहीं मालूम, भाषा के कोष में निरर्थपर शब्द है या नहीं। अब देखना चाहिए कि इस अभिनव शब्द की श्रेणी में कैसे लोगों की गिनती हो सकती है। स्वार्थपर और परार्थपर जीवों का परिचय देना तो व्यर्थ ही है। क्योंकि इन दोनों शब्दों के मतलब को तो सर्वसाधारण बहुत अच्छी तरह समझते हैं। जो लोग इन दोनों श्रेणियों में नहीं

आ सकते, वेही निरर्थपर हुए। अब अगर आप विचारपूर्वक देखेंगे तो आपको पृथ्वी पर निरर्थपर लोगों की ही संख्या अधिक देख पड़ेगी। साधारण दृष्टि से शायद वे स्वार्थ पर जँचें, पर ज़रा ग़ौर करके देखने से मालूम हो जायगा कि अगर वे किसी अलौकिक शक्ति के द्वारा अपने आत्मा और शरीर को अलग कर ले सकते, तो शरीर को बोझ को किसी दूसरे के सिर डाल कर निश्चिन्त हो रहते। ऐसे लोग अपने या संसार के किसी प्रकार के हिताहित के सोचने में मन लगाना नहीं चाहते, और लगा भी नहीं सकते। ये अपने मे आप ऐसे मस्त हो रहे हैं कि दुनिया के डूब जाने पर भी इनके लेखे घुटनों-घुटनों पानी है। इस प्रकार के योग के योगी सचमुच ही संसार में दुर्लभ पदार्थ हैं। इनके जीवन का मूल-मन्त्र यही है कि "दिन हटा पाप कटा"। अपने या पराये सारे सांसारिक मामले, जो कि उनके मन में चिन्ता या सोच-विचार पैदा कर सकते हैं, उन्हें वे लोग किसी तरह दबादुबाकर रोज़-बरोज़ सुख से सोना चाहते हैं। उनके बाहरी कामो को देखने से तो वे कभी स्वार्थपर और कभी परार्थपर जान पड़ते हैं। किन्तु परार्थपर तो वे हैं ही नहीं। और स्वार्थपर भी उन्हें कैसे कहें? अगर वे स्वार्थपर हैं तो उन्हें अपनी लाभ-हानि का ज्ञान होना चाहिए। लेकिन उनमें वह कहाँ है? अपना मान, यश, ख्याति, प्रतिष्ठा रहे या न रहे, उनको इसका कुछ भी ख़याल नहीं, है। अवधूत मत का "वर्त्तमानेषु वर्त्तन्ते" वाला भाव उनके हृदय में जमा हुआ है। अर्थात् इस घड़ी लाचार होकर चाहे जो कह दिया, काम निकाल लिया। काम के समय उसका कुछ भी ख़याल नहीं। भूतकाल की सब बातें ये लोग जैसे भूल गये हैं, वैसे ही भविष्य के सम्बन्ध मे भी कुछ सोचते-विचारते नहीं। जैसे भविष्य इनके लेखे कोई चीज़ ही नहीं है। इसी तरह के कुछ निरर्थपर लोग मिल कर

एक हुजूग खड़ा करके, वर्त्तमान के 'खेल' के लिए अगर किसी काम को खड़े होते हैं, तो बहुत से स्वार्थपर लोग अपनी अनेक प्रकार की स्वार्थ-सिद्धि के लिए, और कुछ परार्थपर लोग बाहरी लक्षणों की चमक-दमक में भूलकर, उनका साथ देते हैं। इस प्रकार परस्पर-विरुद्ध प्रयोजन से प्रेरित होकर जहाँ पर कोई दल सङ्गठित होता है, वहाँ वह कुछ दिन धूमधाम के साथ चार दिन की चाँदनी दिखा कर शीघ्र ही तितर-बितर हो जाता है। इस प्रकार के मामलों में बहुत से लोग बटुर तो आते हैं, लेकिन कितने दिन के लिए? काल्पनिक जगत् के प्रधान लीला-क्षेत्र इस भारतवर्ष में बहुत सी ऐसी सभा, समाज, समिति, जथा और सम्प्रदाय हो गये हैं, इस समय भी हो रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। भविष्य का आभास अभी से मिल रहा है। वर्त्तमान समय की यह अवस्था देख कर बहुत लोग कांग्रेस को भी इसी सन्देह की दृष्टि से देखने लगे हैं। पृथ्वी के इतिहास से जाना जाता है कि जहाँ जहाँ देश या जाति के कल्याण के लिए ऐसे काम हुए हैं, वहीं वहीं ऐसे कामों में दस पाँच तत्पर, स्वार्थत्यागी, निःस्वार्थ उत्साही लोग देख पड़े हैं। उनको अपने जीवन में और कोई धन्धा या चिन्ता नहीं; जागते-सोते, चलते-फिरते हर घड़ी केवल वही एक चिन्ता रहती है। एक घड़ी के लिए भी किसी अपने सगे बन्धु-बान्धव के किसी स्वार्थ की चिन्ता उनके हृदय में स्थान नहीं पाती। केवल अपने काम को—अपने स्वीकृत कर्त्तव्य को—पूरा करने की धुन उनके सिर पर सवार रहती है। जब तक ऐसे दो-तीन आदमी मुखिया और दस पाँच उनके सहकारी नहीं हुए, तब तक संसार में कहीं कोई भारी काम नहीं हुआ। ३६१ दिन गहरी नींद में खर्राटे लेकर केवल चार दिन काम करने से अगर साल भर का गुज़ारा हो जाता, अथवा चार दिन खूब भर पेट खाकर ३६१ दिन उपवास

करने से ज़िन्दगी बनी रहती, तो कोई बारहों महीने काम न करता या रोज़ भोजन की खोज न करता। इसी से कहता हूँ गेरीवाल्डी, मेजिनी, लूथर, हास, क्राम्वेल, कोसुथ् आदि को जाने दीजिए, हमारे यहाँ स्वामी दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ या महाशय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने जैसे स्वार्थत्याग के साथ देश और जाति के हित का बीड़ा उठाया था, वैसे ही हमारे देश के कुछ सज्जन मन-वाणी-काया से तत्पर होकर कांग्रेस के लिए काम कर रहे हैं, अथवा देशहित के कामों में अपने जीवन को लगा रहे हैं, यह भी जान पड़े तो हम बहुत कुछ आश्वस्त और निश्चिन्त हो जायँ। क्योंकि अपनी लियाक़त या नालायक़ी की ओर न देख कर केवल इँगलेंड की उदारता पर निर्भर करने से किसी तरह के सुफल की आशा नहीं है। अगर कुछ फल होगा तो उसे कुफल ही समझना चाहिए। उस योग्यता की चेष्टा मे जो लोग मन लगाये हुए हैं, वे क्या देख पाते हैं? यह क्या बिलकुल सच नहीं है कि भारतवर्ष के माने केवल कलकत्ते, बम्बई आदि के पाँच विश्वविद्यालय ही नहीं हैं; या कुछ बैरिस्टर, वकील और डाक्टर ही भारतवर्ष की जान नहीं हैं? कलुआ मेहतर, टीका कहार, भोला चमार, रहमू जुलाहा, और वफ़ाती कबड़िया आदि नीच जाति के हिन्दू-मुसलमानों की उन्नति की चिन्ता जहाँ नही, वहाँ भारतवर्ष की हितकामना के नाम से चिल्लाना और हाथ मटकाना दिल्लगीबाज़ी के सिवा और कुछ नहीं। नीचे से उठाने के सिवा देश के हित की चेष्टा वैसी ही है जैसे कमज़ोर नींव पर सतमंज़िला मकान बनाना। वह बहुत ही शीघ्र टेबिल, कुर्सी, पंखा, तसवीर, घड़ी, छड़ी, समेत गिर कर मिट्टी मे मिल जायगा। इस विशाल संसार मे ग़रीब दुखी का सहायक कोई नहीं है। उसके एकमात्र सहायक साक्षात् दीनबन्धु भगवान् हैं। जो कुछ

अच्छाई मनुष्य के द्वारा होती है वह वास्तव में स्वयं ईश्वर की प्रेरणा से होती है। परमेश्वर स्वयं अगर सहायक न हों तो कोई भी काम मनुष्य के द्वारा नहीं हो सकता। संसार के ग़रीब दुखी लोगों का दुख दूर करने के लिए दयालु महात्मा लोग जो उपाय सोचते या निकालते हैं, उसके मूल में ईश्वर की शक्ति हुआ करती है। मनुष्य क्या चीज़ है, जो उसके द्वारा बड़े बड़े काम होते हैं। मनुष्य तो इस संसार में चार दिन का मेहमान है। अभी हैं, दम भर में मर गये। देखते ही देखते अत्यन्त साधारण कारणों से रोज़ कितने ही मनुष्य काल के गाल में चले जाया करते हैं। हर एक मिनट में कितने ही मनुष्य इस पृथ्वी पर से चिरकाल के लिए विदा हो जाते हैं। अत्यन्त साधारण शक्तिवाले इस मनुष्य के द्वारा कुछ भी नहीं हो सकता, अगर सर्वशक्तिमान् परमेश्वर स्वयं उसकी क्षुद्र क्षमता के मूल में विद्यमान रह कर उसको हज़ार हाथी का बल न देते। परमेश्वर के आगे एक आदमी और एक चींटी बराबर है। वह चाहें तो दोनों को ही दम भर मे नष्ट कर सकते हैं। यह देख कर हमें विचारना चाहिए कि हम कितने क्षुद्र जीव हैं। इस अपनी क्षुद्रता की उपलब्धि होते ही उन्नति का आरम्भ होता है। हमारे इतने क्षुद्र होने पर भी परमेश्वर ने हमको एक ऐसी शक्ति दी है, जिससे हम लोग जगत् में अच्छे कामों के द्वारा अपने आत्मा को ख़ूब उन्नत बना कर देवता के पद को पाने योग्य बना ले सकते हैं। किन्तु उस शक्ति को अगर हम अपनी समझ कर मन ही मन अहङ्कार करते हुए उससे काम लेते हैं, तो हम किसी काम में सफलता नहीं प्राप्त कर सकते और हमारी अधोगति होती है। किन्तु जब अपने को अत्यन्त हीन क्षुद्र से भी क्षुद्र समझ कर उस शक्ति का व्यवहार करने के लिए अत्यन्त नम्रभाव से ईश्वर के निकट सहायता की प्रार्थना करते हैं, तब देख

पाते हैं कि हमारी वह ईश्वर की दी हुई शक्ति लाखगुनी सामर्थ्य से युक्त होकर हमको महाबलसम्पन्न बनाती है, और हमारे सब प्रकार के शुभ सङ्कल्पों को अत्यन्त सहज काम बना डालती है। अतएव हमको स्मरण रखना चाहिए कि हम जो इस शुभ कार्य मे प्रवृत्त हुए हैं, उसमें अलक्षित रूप से विधाता का हाथ न रहने से हम कभी सफलता नहीं प्राप्त कर सकेंगे।

देश के दुर्दशाग्रस्त लोगों के दुःख दूर करने के उपाय सोचना ही कांग्रेस का प्रधान उद्देश्य होना उचित है। अन्न, वस्त्र, ज्ञान, बुद्धि ही हमारे जीवनधारण की प्रधान सामग्री हैं। देश के कुछ लोगों के सिवा हम सब लोगों में इस समय इन चीज़ों का विशेष अभाव देख पड़ता है, और उसी से हमारा देश दिन-दिन अधोगति की ओर खिसकता जाता है। सारे भारतवर्ष की बात छोड़ कर केवल बङ्गाल ही को ले लीजिए। वहाँ आठ करोड़ के लगभग आदमी रहते हैं। उनमे तीन लाख से भी कम ऐसे आदमी हैं जिनको किसी बात की—खाने पीने पहनने की—कमी नहीं है। बाक़ी लोगों को, अर्थात् सात करोड़ से भी ऊपर आदमियों को, अपने और परिवार के लिए मुट्ठी भर अन्न प्राप्त करने में भी भारी मेहनत करनी पड़ती है। इस हिसाब से दो ढाई सौ लोगों में एक आदमी की भी हालत अच्छी नहीं कही जा सकती। कलकत्ते या अन्यान्य बड़े शहरों में गाड़ी घोड़े और मोटरों की भारी धूम-धाम अवश्य देख पड़ती है; लेकिन देहातों के रहनेवाली साधारण प्रजा की अवस्था बहुत ही ख़राब है। और, मध्यवित्त लोगों की ही अवस्था क्या अच्छी है? उनमें भी अधिकांश लोग दिन भर सिर का पसीना पैर मे खपा कर नौकरी से जो धन पाते हैं उससे उनका गुज़र नहीं होता। वे सपरिवार बड़े कष्ट, दुःख, चिन्ता और घबराहट में अपने जीवन के दिन बिताते हैं। जो कुछ हो,

मध्यवित्त श्रेणी के भलेमानसों की बात यहाँ पर नहीं उठाई जाती। क्योंकि उनमें ज्ञान और बुद्धि है। वे अगर चेष्टा करें तो सहज में ही अपनी अवस्था अच्छी बना सकते हैं। इसलिए उनको यहाँ पर कोई सलाह देने की जरूरत नहीं जान पड़ती। जिन किसानों के लिए कांग्रेस को पहले यत्न करना चाहिए, उनकी अवस्था को अगर हम उन्नत बनाना चाहें तो हमें यह चाहिए कि उनको पहले विद्या पढ़ाएँ, जिसमें वे भी समझ सकें और विचार कर सकें। इसके सिवा भलाई का और कोई उपाय नहीं है। और, असल बात तो यह है कि देश की भलाई-बुराई इन सब श्रमजीवी लोगों पर ही अधिकतर निर्भर है। ये संख्या में अधिक हैं और इनका दुःख भी भारी भयानक है। इनकी उन्नति के बिना देश की उन्नति होना सर्वथा असम्भव है, बल्कि भयानक अवनति अनिवार्य है।

दुखी दरिद्र को दो चार दिन के लिए अच्छा खाने को अथवा अच्छा कपड़ा पहनने को देने की अपेक्षा ऐसा ज्ञान और बुद्धि देना कहीं अच्छा है, जिसके द्वारा वह हमेशा अपना रोज़गार चला कर अच्छा भोजन खा सके और अच्छा कपड़ा पहन सके। केवल खाने पहनने को देने से उसका सामयिक उपकार अवश्य होता है, किन्तु ज्ञान-बुद्धि देने से वह आप सुख से रहेगा और अपने बाल-बच्चों को भी सुखी रख सकेगा। इसके सिवा वह भी अपनी स्थिति के अन्य दस आदमियों को ज्ञान और बुद्धि देकर उनको अच्छी हालत में लाने की चेष्टा करेगा। अतएव अन्न-वस्त्र देने की अपेक्षा ज्ञान-बुद्धि का देना हज़ार गुना अच्छा है। ज्ञान-बुद्धि के बिना एक तो मनुष्य अपनी हालत को समझ ही नहीं सकता। और, अपनी अवस्था को समझे बिना उन्नति की इच्छा भी नहीं होती। मैं दुर्दशा-ग्रस्त हूँ—यह समझने में, इसके बाद दुर्दशा के कारण खोजने में,

उसके बाद दुःख दूर करने के उपायों को सोचने और उन्हे काम में लाने की चेष्टा मे ज्ञान और बुद्धि की अत्यन्त आवश्यकता है।

इसी लिए हम सबका पहला और प्रधान कर्त्तव्य यही है कि दुखी ग़रीब भाइयों को अपना बिल्कुल सगा समझ कर उनके दुःख दूर करने के लिए प्रयत्न करें और दुःख दूर करने का प्रधान उपाय या मार्ग जो ज्ञान-बुद्धि का देना है उसे ग्रहण करें। अब सहृदय पाठकगण विचार कर देखें कि अब तक हम लोगों ने इस काम पर कितना ध्यान दिया है। देश के बड़े बड़े आदमी, जो कांग्रेस के पृष्ठपोषक बनने का दावा करते हैं, उनमें से कितने आदमी इस विषय पर मन लगा कर विचार करते हैं। इसी लिए फिर कहता हूँ कि दो-चार स्वार्थत्यागी व्रतधारी महापुरुषों के मैदान मे आये बिना ये सब काम धूमधामी भले ही हों, पर शुभ फल देनेवाले कभी नहीं हो सकते। उत्साह न होने का यही कारण है।

हम लोगो में आज-कल यूरोप के अनुकरण पर संमान देने की एक नये ढंग की व्यवस्था प्रचलित देख पड़ती है। वह व्यवस्था है किसी व्यक्ति को संमान देने के लिए उसकी गाड़ी के घोड़े खोल कर आदमियों का गाड़ी घसीटना। आदमियों की गाड़ी पर चढ़ने से अगर कोई महान् बन सकता है, तो जापान के सभी आदमी महात्मा माने जा सकते हैं। क्योंकि वहाँ घोड़े की गाड़ी है ही नहीं। गलेबाज़ी के द्वारा कल्पित उच्च स्थान पाकर आदमियों के द्वारा घसीटी जाने-वाली गाड़ी पर चढ़ पाने से ही महापुरुषों का गौरव नहीं मिल सकता। निःस्वार्थ मनुष्य-सेवा के द्वारा संसार के दीन दुखी सताये हुए भाइयों के हृदय की गाड़ी मे युगयुगान्तर के लिए आसन पाने के योग्य बने बिना इस लोक और परलोक मे महात्मा का पद नहीं पाया जा सकता। इसी से मैं अपने देश के 'बड़े' आदमियों से सविनय

अनुरोध करता हूँ कि ऊपर लिखे हुए ढंग के महान् कार्यों में निपुणता प्राप्त कर सारे जगत् और जगदीश्वर को प्रिय 'धन्य-पुरुष' की उपाधि पाने की चेष्टा करें। इससे वे मनुष्यलोक के राजा की उपाधि से भी वञ्चित न होंगे। ऐसे कामों में उन्हें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, ये चारों फल मिलेंगे।

वर्त्तमान समय में, भारत में, गलेबाज़ी और क़लमबाज़ी बहुत बढ़ गई है। पर इससे फल कुछ नहीं होता, और न किसी समय कुछ फल होने की संभावना है। अब अगर हम हृदय से काम करना न शुरू करेंगे तो हमारी बाज़ी हारी हुई रक्खी है। दुःख की बात पर कहाँ तक सोचें-विचारें? कभी कभी मन में आता है कि इस अनन्त विषय पर मुझ ऐसे साधारण आदमी को इतना ऊहापोह—सोच-विचार—करने की ज़रूरत क्या है? किन्तु फिर भी न जाने कहाँ से फिर फिर कर ऐसी ही चिन्तायें हृदय में उठती हैं।

भगवान् मालिक हैं। वह जिस तरह नचावेंगे वैसेही नाचना पड़ेगा। मतलब यह कि हम चाहे जो काम करें, भगवान् को स्मरण करके ही वह काम करना अच्छा होगा। अँगरेज़ लोग, जिनकी हम बहुत कुछ नक़ल करते हैं, ईश्वर की आराधना किये बिना पार्लियामेंट के अधिवेशन को आरम्भ नहीं करते। इतने बड़े देशोद्धार के काम में सरल हृदय से ईश्वर के निकट बल की प्रार्थना करके हाथ लगाने से ही अच्छे फल की संभावना है। हज़ार धूमधाम के साथ आरम्भ करने पर भी, सरल भाव के आगे सभी विकट ढोंग (Monumental humbug) खुल कर मिट जाते हैं। विधाता का यह कभी न बदलने-वाला नियम है। हमारी यह आत्म-चैतन्याभाव-रूप (Want of self consciousness) मोहाच्छन्न अवस्था है। इस अवस्था में किसी तरह का ढोंग करना कभी ठीक नहीं।

कांग्रेस की और एक चेष्टा है राजा से कुछ हक़ पाना। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने पहले इस विशाल भारत पर अधिकार किया था। कम्पनी के हाथ से इस विशाल साम्राज्य के शासन-भार को जब ब्रिटेन की अधीश्वरी महारानी विक्टोरिया ने अपने हाथ में लिया, तब उन्होंने यहाँ की प्रजा से जो जो वादे किये थे, उनमें से बहुत से वादे अभी तक पूरे नहीं किये गये। यही हमारी नालिश है। निःसन्देह यह चेष्टा अच्छी और बड़ी है। किन्तु मैं यह पूछता हूँ कि पहले अपने को योग्य बनाने की चेष्टा क्या प्रथम और प्रधान कर्त्तव्य नहीं है? और, उस योग्यता को पाने के लिए मनुष्य-समाज में जो स्थान पाना उचित है, वह क्या निम्नश्रेणी के दुखी लोगों के प्रति उपेक्षा करने या उदासीन रहने से पाना सम्भव है? अतएव जिस पहलू से देखो, प्रधान कर्त्तव्य यही ठहरता है कि हम पहले अपने को योग्य बनावें। सुप्रसिद्ध सिपाही-विद्रोह के अन्त में महारानी विक्टोरिया का एक घोषणा-पत्र हिन्दुस्तान की हर एक भाषा मे निकला था। उसे हर एक ज़िले के कलेक्टर ने मैदान मे जमा हुए लोगों के आगे पढ़ा था। उस घोषणा-पत्र की कापियाँ सर्व-साधारण में बाँटी भी गई थीं। महारानी के घोषणा-पत्र को भारत का 'मैग्नाचार्टा' कहते हैं। पाठकगण का कौतूहल निवृत्त करने के लिए यहाँ पर उसकी नक़ल दी जाती है।

श्रीश्रीमती महारानी का घोषणा-पत्र।

(इलाहाबाद, सन् १८५८। १ नवंबर, सोमवार।)

श्रीयुत गवर्नर जनरल बहादुर श्रीश्रीमती महारानी के निकट आज्ञा पाकर, श्रीश्रीमती महारानी के अनुग्रह-सूचक इस घोषणा-पत्र को भारतवर्ष के सब राजों और सरदारों तथा सब लोगों और सर्व-साधारण प्रजा के निकट प्रकाशित करते हैं।

भारतवर्ष के सब राजा, सरदार और सर्वसाधारण प्रजा के निकट श्रीश्रीमती महारानी की यह घोषणा है ।

परमेश्वर के अनुग्रह से ग्रेटब्रिटन और आयर्लैंड के संयुक्त राज्य की, तथा यूरोप, एशिया, आफ्रिका, अमेरिका और आस्ट्रेलेशिया देश के अन्तर्गत जिन स्थानों में इस संयुक्त राज्य के लोग रहते हैं, अथवा जिन स्थानों पर इस संयुक्त राज्य का अधिकार है, उन स्थानों की महारानी और धर्म की रक्षा करनेवाली श्रीश्रीमती महारानी विक्टोरिया हैं ।

भारतवर्ष में जिन देशों के शासन का भार अब तक हमारे देश की कम्पनी के हाथ में था, उन देशों का शासन-भार, पार्लियामेंट राजसभा में बैठनेवाले पारमार्थिक और सांसारिक लार्ड और कामन्स साहबों की सलाह और मशवरे से, हम लोगों ने ख़ुद अपने हाथ में लेना निश्चित किया है । ऐसा करने के अनेक बड़े बड़े कारण हैं ।

अतएव हम लोग इस घोषणा-पत्र के द्वारा सब लोगों को जताते और प्रकाशित करते हैं कि हम लोगों ने पूर्वोक्त सभा के सभ्य सज्जनों की सलाह और संमति से उक्त देश के शासन का भार अपने हाथ में ले लिया है । और, उक्त देश में जो हमारी प्रजा रहती है, उसको हम यह आज्ञा देते हैं कि वे सब विश्वास करें और हमसे, हमारे उत्तराधिकारियों से, और हमारे बाद जो लोग वहाँ का राज्य पावेंगे उनसे सभ्यता और राजभक्ति का व्यवहार करें, और हमारे उक्त देश के शासनकार्य को, हमारे नाम पर, हमारी ओर से, करने के लिए, समय समय पर जिन लोगों को नियत करना हम उचित समझेंगे उनकी आज्ञा के अधीन रहें ।

और भी हम अपने विश्वासयोग्य स्नेहपात्र मुसाहब और मन्त्री श्रीयुत चार्ल्स जान वाईकाउन्ट कैनिङ्ग साहब के भक्ति-गुण, चमता

और सद्विवेचना पर विशेष मत से विश्वास और निर्भर करके उनको, अर्थात् उक्त श्रीयुत वाईकाउंट कैनिङ्ग साहब को, उक्त देश मे और उसके ऊपर अपना प्रथम प्रतिनिधि और गवर्नर जनरल बना कर, हमारे नाम से उक्त देश का शासन करने को हमारे नाम तथा हमारी ओर से साधारणतः सब काम करने के लिए नियत करते हैं। किन्तु वह हमारे राज्य के एक प्रधान सेक्रेटरी साहब के द्वारा जो जो आज्ञा और नियम समय-समय पर हमसे पावेंगे उन्हें प्रबल मान कर काम करेंगे।

कम्पनी बहादुर की अधीनता में दीवानी और फ़ौज के कामों में जो लोग जिस पद पर इस समय नियुक्त हैं, उनको हमने उनके ओहदे पर बहाल रक्खा। किन्तु इस बारे में हमारी जो कोई इच्छा इसके बाद प्रकाशित होगी और जो आईन और क़ानून इसके बाद बनाये जायँगे उनको प्रबल मानने पर ही वे अपने अपने पद पर बहाल रह सकेंगे।

भारतवर्ष के सब राजों को हम यह बात जताते हैं कि कम्पनी बहादुर के द्वारा, अथवा कम्पनी की दी हुई क्षमता के अनुसार, उन राजों के साथ जो सन्धियाँ और प्रतिज्ञायें की गई हैं, उनको हम स्वीकार करते हैं, और हम उन्हे अविकल रूप से मानेंगे। हम यही चाहते हैं कि वे राजे भी उन्हीं के अनुसार कुल व्यवहार करें।

इस समय भारत के जितने देशों पर अधिकार होगया है, उनसे अधिक किसी देश पर हम अधिकार करना नहीं चाहते। परन्तु हमारा जो देश या स्वत्व है, उसपर आक्रमण का उद्योग होने पर हम अवश्य उसके लायक़ सज़ा देंगे और ऐसी अनुमति भी न देंगे कि इस बीच में अन्य राजों के अधिकार या स्वत्व पर आक्रमण किया जाय। हम अपने स्वत्व, गौरव और प्रतिष्ठा को जैसे मानते हैं

वैसेही भारतवर्ष के राजों के भी स्वत्व आदि को मानेंगे। और, किसी देश में शान्ति और सुशासन न होने पर जो उन्नति और सभ्यता-वृद्धि नहीं हो सकती, उस उन्नति और सभ्यता को हमारी प्रजा प्राप्त करे, यह इच्छा हमारी है, और वैसे ही वही इच्छा उक्त राजा लोगों के लिए भी है।

राजधर्म का प्रतिपालन करने के लिए जैसे अन्य सब प्रजा के निकट हम प्रतिज्ञाबद्ध हैं वैसे ही भारतवर्षीय अपनी सारी प्रजा के निकट भी हम प्रतिज्ञा-बद्ध होते हैं। और, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के प्रसाद से हम इस कार्य को विश्वस्तरूप से और सरल भाव से निबाहेंगे।

ईसाई धर्म सच्चा है, इस बात पर हम दृढ़ मत से विश्वास रखते हैं और धर्म से जो हमें सान्त्वना मिलती है उसे कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार करते हैं। किन्तु हम अपनी किसी प्रजा को वह अपना धर्ममत ग्रहण कराने की कोई क्षमता स्वीकार नहीं करते, और उस धर्म को इस तरह किसी से स्वीकार कराना भी नहीं चाहते। हमारी राजकीय वासना और इच्छा यही है कि धर्मसम्बन्धी विश्वास या काम को लक्ष्य करके किसी के साथ कोई पक्षपात न हो और कोई किसी क्लेश या दुःख को न पावे। हमारी यही इच्छा है कि आईन के अनुसार सभी लोग समान रूप से न्यायानुसार पक्षपात-शून्य भाव से सुरक्षित हों। और, हमारी अधीनता में जिन्होंने हुकूमत की क्षमता पाई है, उनके प्रति हम यह दृढ़ आज्ञा और आदेश करते हैं कि वे हमारी प्रजा में से किसी आदमी के धर्मविश्वास या उपासना में किसी तरह का हस्तक्षेप न करें, अगर वे करेंगे तो उनपर हम बहुत ही नाराज़ होंगे।

और, हमारी यह वासना है कि हमारी प्रजा में से जो लोग उप-युक्त-रूप से सुशिक्षित होकर, क्षमता तथा सरल भाव से युक्त होकर,

हमारे किसी सरिश्ते का काम करने के योग्य हों, वे चाहे जिस वंश या धर्म के आदमी हों, उनको, जहाँ तक सम्भव हो, बिना किसी बाधा या पक्षपात के काम मे लगाया जाय।

हमको यह बात मालूम हुई है कि भारतवर्ष के लोग जिस पैतृक भू-सम्पत्ति पर अधिकार करते हैं, उसपर उनकी अत्यन्त ममता होती है। हम इस भाव को मानते भी हैं और भूमि के सम्बन्ध मे उनके जो स्वत्व हैं, उनकी हम रक्षा करना चाहते हैं। लेकिन उनको गवर्नमेंट का प्राप्य अंश देना होगा। और, हमारी यह इच्छा है कि आईन बनाने और उस आईन को अमल में लाने के काम मे भारतवर्ष में जो रीति और आचार व्यवहार पहले से चला आता है, उसके ऊपर उपयुक्त रूप से ध्यान रक्खा जाय।

क्षमता पाने के लोभ से जिन लोगों ने बेजड़ की गपें उड़ा कर, अपने देश के लोगों को भ्रान्ति में डाल कर, उन्हे राज-विद्रोह की राह में चलाया है, उनके कामों से जो उपद्रव और यन्त्रणायें हुई हैं उनके लिए हमे अत्यन्त शोक है। उस राज-विद्रोह को युद्ध-भूमि मे दबा देने से हमारी शक्ति ज़ाहिर होगई है। जो लोग इस तरह के भ्रम मे पड़े थे, किन्तु अब कर्त्तव्य-कार्य की राह में फिर आना चाहते हैं, उनके अपराध को क्षमा करके उनपर दया दिखाने की हमारी इच्छा है।

एक प्रदेश मे अधिक रक्तपात न हो, और हमारे भारतवर्ष के राज्यों मे और भी शीघ्र शान्ति हो. इस अभिप्राय से, हमारे प्रतिनिधि और गवर्नर जनरल बहादुर ने कोई कोई नियम प्रकाशित करके, जिन लोगों ने हाल की गड़बड़ी मे हमारी हुकूमत के विरुद्ध होने का अपराध किया है उनमे से अधिकांश लोगों को उसी नियम के अनुसार माफ़ी पाने की आज्ञा दी है, और भारी अपराध होने के कारण

जिनको माफ़ी नहीं दी जा सकती उनको जो दण्ड होगा, सो भी प्रकाशित कर दिया है। हमारे प्रतिनिधि और गवर्नर जनरल बहादुर के इस काम को स्वीकार करके हमने प्रबल रक्खा है और उसी बात को फिर जताते और घोषणा करते हैं।

ब्रिटन की प्रजा की हत्या करने के काम में साक्षात् लिप्त होने का अपराध जिनका प्रमाणित हो चुका है, या होगा, उनको न्याय-विचार के अनुसार दया नहीं दिखाई जा सकती। किन्तु उनसे अलग और उनको छोड़कर अन्य सब अपराधों के लिए हम दया दिखावेंगे।

किसी आदमी या आदमियों को हत्याकारी जान कर भी जिन्होंने अपनी इच्छा से आश्रय दिया है, या राज-विद्रोह-व्यापार के सरदार या प्रवर्त्तक रूप से जिन्होंने काम किया है, उनके प्राणों की रक्षा होगी, इतनी ही हम प्रतिज्ञा कर सकते हैं। किन्तु जिस रंग-ढंग को देख कर उनके हृदय में राजभक्ति त्याग करने की प्रवृत्ति हुई है, उसपर उपयुक्त विचार करके उनको दण्ड दिया जायगा। और, कुकल्पना करनेवाले लोगों ने जो बे-जड़ की गप्पें हाँक दी थीं उन-पर बिना जाने जल्दी विश्वास कर लेने के कारण जिनसे अपराध बन पड़ा है, उनपर अधिक अनुग्रह दिखाया जायगा।

और जो सब लोग इस समय गवर्नमेंट के विरुद्ध शस्त्र धारण किये हुए हैं, वे यदि अपने घर में खेती बनिज रोजगार आदि कामों को करने के लिए लौट जायँगे, तो हमारे विरुद्ध और हमारे राजमुकुट और संमान के विरुद्ध उनसे जो अपराध बन पड़े हैं, उन्हें हम नियम की कोई भी पाबन्दी न करके माफ़ कर देंगे, और उनके उन अपराधों को भूल जायँगे, इस बात को हम अङ्गीकार करते हैं। जो लोग आगामी जनवरी महीने की पहली तारीख़ के पहले इस नियम के

अनुसार काम करेंगे, वे सभी हमारे इस अनुग्रह और क्षमा को पावें, हमारी यही इच्छा है।

हमारी बड़ी इच्छा है कि परमेश्वर की कृपा से जब देश में फिर शान्ति स्थापित हो, तब इस देश की खेती, वनिज, रोज़गार आदि के लिए उत्साह दिया जाय, और सर्व-साधारण के उपकार और उन्नति के कामों में सहायता की जाय, और भारतवर्ष में हमारी जो प्रजा वास करती है उसके मङ्गल के लिए देश का शासन किया जाय। प्रजा की उन्नति से ही हम बली होंगे। प्रजा सुख-स्वच्छन्दता से रहेगी तो हम भी बेखटके रहेंगे। वे कृतज्ञ होंगे तो उसे ही हम उत्कृष्ट पुरस्कार समझेंगे। प्रजा की भलाई के लिए हमारी इन सब इच्छाओं को सफल करने की शक्ति हमको और हमारी अधीनता में जो शासन करेंगे उनको परमेश्वर दें।

भारतवर्ष के श्रीयुत राइट आनरेबिल गवर्नर जनरल बहादुर का घोषणा-पत्र।

विदेशीय डिपार्टमेंट। इलाहाबाद।

१८५८। १ नवम्बर।

भारतवर्ष के जिन देशों पर ब्रिटिश जाति का अधिकार हो चुका है उनके शासन का भार श्रीश्रीमती महारानी ने खुद अपने ऊपर लेने की इच्छा की है। अतएव उनके प्रतिनिधि श्रीयुत गवर्नर जनरल बहादुर यह संवाद देते हैं कि आज से भारतवर्ष की गवर्नमेंट के सब काम श्रीश्रीमती महारानी के नाम से किये जायँगे।

जिस वंश या जिस जाति के लोगों ने कम्पनी बहादुर की अधीनता मे रह कर इँगलेंड के मान-सम्भ्रम और क्षमता की जड़ जमाने में सहायता की है, वे आज से केवल महारानी के चाकर होंगे।

श्रीयुत गवर्नर जनरल वहादुर उनको यह आज्ञा देते हैं कि श्रीमती महारानी की अनुग्रह की सूचना देनेवाली जो वासना या इच्छा प्रकाशित हुई है उसे सफल करने के लिए, हर एक आदमी अपने पद और सुयोग के अनुसार मन लगा कर यथाशक्ति सहायता करे।

श्रीमती महारानी ने स्नेह और दया के शब्दों का प्रयोग करके भारतवर्ष की करोड़ों प्रजा को राजभक्ति और विश्वास प्रकट करने के लिए जो पत्र लिखा है, उसी पत्र के अनुसार यह सब प्रजा भक्ति-सहित आज्ञा का पालन करे, इस कार्य को प्रवल वनाने में श्रीयुत गवर्नर जनरल वहादुर इस समय और सर्वदा कोई कसर नहीं करेंगे।

भारतवर्ष के श्रीयुत राइट आनरेविल गवर्नर जनरल वहादुर की आज्ञा से प्रकाशित।

जी० एफ़० एडमन्स्टन
श्रीयुत गवर्नर जनरल वहादुर सहित
भारतवर्ष की गवर्नमेंट के सेक्रेटरी।

Printed at the Alipore Jail Press.

पाठक, देखिए, इस घोपणा-पत्र में भी महारानी ने वारंवार भगवान् का स्मरण किया है। उनके उदाहरण का अनुसरण करना क्या हमारा कर्त्तव्य नहीं है?

और दो-एक वातों का उल्लेख किये विना यहाँ पर नहीं रहा जाता; पाठकगण क्षमा करेंगे। आगे की वातों को अनेक लोग जानते हैं, अतएव उनका उल्लेख यहाँ पर अनावश्यक होने पर भी, एक वार यहाँ पर उनका स्मरण कराये विना किसी तरह जी नहीं मानता। हमारे देश में एक कहावत है कि "जातिभ्रष्ट हुआ सो वैष्णव"। कुलटा आदि स्त्रियाँ, जो अनेक कारणों से समाजभ्रष्ट होती हैं, वे और कोई गति न देख कर चट वैष्णवदल में शामिल हो जाती हैं और किसी तरह

अपना पेट पालती हैं । वैसे ही आज-कल "कोई काम नहीं तो पेट्रियट" का मसला दिखाई पड़ रहा है । किसी कारण से जिनकी रोज़ी छूट गई, अथवा जन्म भर खोजने पर भी जिनको कोई काम न मिला, वे लाचार पेट्रियट अर्थात् देशहितैषी बन गये । वर्तमान समय में दो-चार आदमियों के लिए ऐसी 'देश-हितैषिता' एक अच्छा रोज़गार हो रही है । उनसे कोई कुछ पूछने-गछनेवाला नहीं, और अच्छी आमदनी भी होती है। इस दल मे जो पेशेदार गलेबाज़ या पेशेदार क़लमबाज़ हैं, उन्हीं को अधिक सुभीता है । बाक़ी लोग केवल चिलम-तम्बाकू भर कर या 'वाह वाह' करके केवल पेट पाल लेते हैं; अपना राग अलापने का अवकाश उन्हें नहीं मिलता । इनमें से कुछ लोगों ने पुराना दल छोड़ कर नया दल जोड़ने की कोशिश भी की है, और कर रहे हैं । असल बात तो यह है कि शौक़ से—उत्साह से—जो काम किया जाता है, वही यथार्थ होता है । पेशेदारी तो बस कोरी दूकानदारी हुआ करती है । क़लमबाज़ों में बहुत से ऐसे हैं जिन्हें भले बुरे का कुछ विचार नहीं है, समाज और देश उन्नत हो रहा है या उजड़ा जा रहा है—इस पर कुछ ध्यान नहीं है; केवल सुनने में भली मालूम पड़नेवाली अंटसंट बातें लिखकर चार पैसे पैदा करना ही उनका उद्देश्य है । इसमें सन्देह नहीं कि पुस्तक लिखना एक उच्चश्रेणी का काम है । पर उसमें भी अनेक ऐसे पेशेदार लेखक जुट गये हैं, जो केवल कल्पना और बुद्धि के बल से कपट-सहृदयता दिखा कर नाविल-निर्माण करते हुए दस पाँच हज़ार पैदा कर चुके हैं, या पैदा करने की कोशिश मे हैं । इन लोगों की दृष्टि में इस लोक और परलोक का उपास्य देवता रुपया ही है । इस लोक में रुपया मिले, परलोक में नरक भोगना पड़ेगा, इसकी कुछ पर्वा नहीं । असल में ऐसे लोगों की कृति से सच्चे सुशिक्षित लोगों को कोई भय नहीं । भय है तो

केवल उनके सजातीय अर्धशिक्षित और अशिक्षित लोगों को। ये लोग उक्त प्रकार के ग्रंथकारों की बातों में भूल कर कुपथगामी हुए, तो भारी हानि का खटका है। जहाँ का मूलमन्त्र कपट ही है, वहाँ मुख की बात सुन कर या हाथ का लिखा पढ़ कर आदमी को पहचानना बड़ा ही कठिन है। किन्तु जगत् में रुपया ही एक ऐसी कसौटी है, जिस पर कसने से तुरन्त खोटा-खरा मालूम पड़ जाता है।*

इस प्रसंग को लिखते लिखते एक महाप्रभु का महावाक्य मुझे मिल गया। उसे मैं अपने पाठकों के आगे उपस्थित करता हूँ। इसमें, थोड़े शब्दों में, देश-हितैषिता का बड़ा अच्छा वर्णन किया गया है:—

"मि०—मैं इस सारे जगत् का—इस विश्व ब्रह्माण्ड का—इन चौदह भुवनों का उपकार करने के लिए कमर कसे हुए हूँ। कोई इससे यह न समझ बैठे कि मैं केवल भारत या बङ्गाल के लिए ही व्यस्त हो रहा हूँ—नगरवासी खाने को न पावें, ग्रामवासी खाने को न पावें, परोसी खाने को न पावें, उसपर मेरी नज़र नहीं है। क्योंकि उनको खिलाने के लिए इस भारत में अनेक आदमी हैं। विशेषकर वे लोग जैसे कष्ट सहने के आदी हैं, उसे देखते दो-चार महीने खाने को न पाने से भी उनका कुछ बन-बिगड़ नहीं सकता। भाई, बहन, यहाँ तक कि माता जी भी खाने को न पावें, इस पर मेरी दृष्टि नहीं है; क्योंकि बुड्ढी होने पर भी, विधवा होने पर भी उनके शरीर में ख़ूब बल है—वह मेहनत करके—चर्खा कात कर—

---

* सुना जाता है, बहुत दिन हुए, एक बार कलकत्ते के पागलख़ाने में बहुत से पागल भर्ती हो गये। उनमें बहुत से ऐसे बेकार आलसी थे, जो पागल बन-कर मुफ़्त में पेट पालना चाहते थे। अफ़सरों को शक हुआ, और उन्होंने रुपये के द्वारा असल-नक़ल पागल पहचान लिये। जो असल पागल था, उसने रुपया लेकर फेंक दिया, और जो बना हुआ था, उसने टेंट में खोंस लिया।

खा सकती हैं। मैं चाहता हूँ जगत् की उन्नति स्वर्ग-पृथ्वी-पाताल की उन्नति—गोलकधाम श्रीवैकुण्ठपुरी की उन्नति।"

बलिहारी ! बिल्कुल ठीक वर्णन है ! वास्तव में यही हमारी देश-हितैषिता की पराकाष्ठा है—"भारत-पेट्रियट" का सजीव उच्छ्वास है !!! यह हँसी नहीं, बिल्कुल सच है; इसमें एक अक्षर भी अति-रञ्जित नहीं है।

महर्षि ब्लैकी (Professor John Stuart Blackie) से मुला-क़ात। बड़े पुण्यों से ऐसे महात्माओं के दर्शन मिलते हैं। इनको महर्षि कहने में अगर किसी को आपत्ति हो, तो हम उससे इतना ही कह सकते हैं कि इस समय हमारे देश में जो 'महर्षि' 'महात्मा' आदि नामों से अपने को प्रसिद्ध करना चाहते हैं, उनसे यह लाख-गुना उन्नत पुरुष हैं। मेरी समझ में तो यह यूरोपियन शरीर में एक आर्य महर्षि की आत्मा हैं। ऐसे आदमियों के दर्शन सहज मे नहीं होते। हमारे देश में अनेक लोगों ने इनके आत्मोत्कर्ष (Self-Culture) नामक ग्रन्थ को पढ़ा होगा। इस कारण इनका विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कुछ दिन हुए, इनका परलोकवास हो गया।

लन्दन के किसी स्थान मे व्याख्यान देने के लिए यह बुलाये गये थे। उस व्याख्यान-मन्दिर के अध्यक्ष और उस सभा के सभापति महाशय मुझपर अनुग्रह करते थे, इसी कारण ऐसे महापुरुष को देखने का मौक़ा मुझे मिल गया। उक्त सभापति का नाम डाकृर क्लिफर्ड Dr. Clifford था। यह वैप्टिस्ट सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध पादरी हैं। इनके बारे में अधिक क्या कहूँ; ऐसा तेजस्वी उदार ईसाई बहुत कम देखने को मिलेगा। लन्दन में मैंने अनेक पादरियों के उपदेश सुने हैं, किन्तु ऐसा पाखण्डदलन

विक्रम-पूर्ण किन्तु हृदयग्राही उपदेश और नहीं सुना । इनके भारी पाण्डित्य का तो कहना ही क्या है । उसकी थाह लगाना हमारी शक्ति से बिल्कुल बाहर है । मैकनील के उपदेश यहाँ अनेक लोगों ने सुने होंगे । यह भी लन्दन के एक प्रधान धर्मोपदेशक हैं । किन्तु वैसे तेज के साथ मनोहर भाव का मेल क्लिफ़र्ड की ही वाणी में देखा गया । धर्मोपदेश को जाने दीजिए, उनका धर्म-जीवन भी ऐसा था कि पृथ्वी में बहुत ही कम लोग उस तरह अपना जीवन बिताते होंगे । बहुत कहना व्यर्थ है, मुझ ऐसे नासमझ को उनकी वाणी ने ऐसा मुग्ध कर लिया था कि जब तक मैं लन्दन में रहा तब तक उनका उपदेश सुनने को अगर मिलता था तो रविवार को मैं और किसी गिर्जे में नहीं जाता था।

मि० ब्लैकी का शरीर जैसा लम्बा-चौड़ा वैसाही सुडौल भी था । लम्बे-लम्बे पके बाल पीठ पर पड़े होने से जटाजूटधारी ऋषियों का ही भाव मन में उदित होता था, उस समय उनकी अवस्था ८० से ऊपर थी । पहले मैंने सुना था, यह ऐसे बालकों की तरह सीधे हैं कि सदा अपने को भूले से रहते हैं । यह एक जगह व्याख्यान देते समय सभापति से एकाएक पूछ उठे थे कि "तुमने व्याह क्यों नहीं किया ?" । यहाँ भी ठीक यही भाव मैंने देखा । लेक्चर देते समय बीच बीच में सभापति की पीठ पर हाथ रख कर पूछते जाते थे कि "क्यों, ठीक कहता हूँ न ?" इत्यादि । अगर वक्ता कहीं भी ऐसा व्यवहार करे तो लोग उसको भारी असभ्य समझेंगे, फिर यह तो सभ्य-संसार का केन्द्र लन्दन था। किन्तु उनकी इस बाल-सुलभ सरल प्रकृति को लन्दन के सभी लोग जानते थे । बल्कि अगर वह ऐसा कहीं न करते तो लोग उन्हें पहचान ही न सकते । इसके सिवा वह व्याख्यान के समय ईश्वर-प्रेम में मग्न होकर कभी कभी नाचने भी लगते थे । पण्डितवर रस्किन को

जब इन्होंने पहलेपहल आक्सफ़ोर्ड में देखा, तब सबके सामने उनसे लिपट गये और उनका मुख-चुम्बन करने लगे। इससे कम में इनसे हृदय का उल्लास नहीं जताया जा सका। अब शायद पाठक समझ गये होगे कि महर्षि ब्लैकी कैसी भोली प्रकृति के जीव थे। हैट-कोट-धारी ऐसा जीव, वास्तव में एक विचित्र ही बात थी। जो कुछ हो, उनके मुखारविन्द की कुछ बातें यहाँ मैं लिखता हूँ।—

"पहले मैं कट्टर कालविन-सम्प्रदाय का ईसाई था। उसके बाद किसी पण्डितवर के मुख से एक बार मैंने सुना 'जहाँ जीवन है वहाँ ईश्वर है'—"Wherever life is, God is." तभी से, मेरे हृदय से ईश्वर का कठोर भाव जाता रहा और सर्वत्र विद्यमान ज्ञानमय-भाव का उदय हो आया।"

"एक दफ़ा किसी मद्य-पान-निवारिणी सभा से व्याख्यान देने के लिए मुझे बुलावा आया। मैं वहाँ जाकर कुछ भी निश्चय न कर सका कि मैं क्या कहूँ। क्योंकि मैं शराब के अधिक पीने का विरोधी अवश्य हूँ, पर एक दम न पीना तो मेरी सलाह नहीं है। मैंने वहाँ जाकर यों आरम्भ किया—I cannot understand why I am asked to be here. I am not a teetotaler—far from it. A man asks me to dine with him and does not give me a glass of good wine. I say he is neither a Christian nor a gentleman. Germans drink beer, Englishmen wine, ladies tea, and fools water अर्थात् मुझे नहीं मालूम कि मैं यहाँ क्यों उपस्थित हुआ हूँ। मद्यपायी न होना दूर रहे, यदि निमन्त्रण करके कोई भोजन के साथ एक गिलास उत्तम शराब न दे, तो मैं उसे कृस्तान या भद्रपुरुष नहीं कहूँगा। जर्मन लोग बियर, अँगरेज लोग शराब, भद्रमहिलायें चाय और मूर्ख लोग जलपान किया करते हैं।"

भारतवर्ष की दुर्दशा का उल्लेख करके उन्होंने कहा—"देश की प्राकृतिक अवस्था अर्थात् जल-वायु तुम्हारे विरुद्ध हैं। तुम क्या करोगे? तुम्हारी उन्नति की आशा कम है। दक्षिण-इटली की दशा देखो। एक नेपल्स का आदमी एक वार हाईलेंड में आया। हमारे देश के लोगों ने उसके देश की प्रतिष्ठा करके कहा—'तुम्हारे यहाँ का वायु कैसा उज्ज्वल सूर्यतप्त है; कैसा सुन्दर साफ़ नील आकाश है। तुम्हारा सब कोमल और मनोहर है। और हमारे इस हाईलेंड में दारुण शीत है, सदा वर्फ़ गिरा करती है; आँधी आदि अनेक दुःख और कष्ट के कारण मौजूद हैं'। इसके उत्तर में नियापोलिटन ने सिर पर हाथ पटक कर कहा—'हाय! हाय! यह तुम क्या कहते हो? इस तरह के प्राकृतिक क्लेशों को सह कर ही तुम लोग चिरकाल से, स्वाधीन भाव से, मनुष्यत्व का परिचय देकर गौरव के साथ एक ऐतिहासिक जाति कह कर परिचित हो; और हम लोग प्रकृति की कोमल गोद में लालित होने के कारण ही आलसी और निस्तेज हैं, और इसी कारण चिरकाल से पराधीन और पददलित हो रहे हैं। बड़े ही मेरे भाग्य थे कि तुम दस जनों की सहायता से आज कई दिन से स्वाधीनता का सुख भोगने को समर्थ हुआ हूँ। तुम्हारे देश में तुमको सैकड़ों दुख रहते भी वह हमारे देश की अपेक्षा हज़ारगुना श्रेष्ठ है। प्रकृति की सुख-सेज अच्छी नहीं; वह सब दुखों का कारण है। यदि इसके कारण स्वाधीनता नष्ट हो तो यह आराम किस काम का?' इसी से तुम समझ लो कि शिथिल वना देनेवाला जल-वायु आपात-मनोहर होने पर भी उसका फल विषमय ही है"।

मि० व्लैकी के मत से "Thou shalt love thy neighbour as thyself"—अर्थात् "परोसी पर अपना ही ऐसा प्रेम करो," यह वाइविल का वाक्य ही धर्म का मर्म है। और, उन्होंने इसी वात को अपने

जीवन में कर दिखाने की अन्त समय तक कोशिश की । वह प्रकट दान के सिवा कितने ही ग़रीव अनाथ विद्यार्थियों को गुप्त रीति से भी सहायता पहुँचाते थे । उनका आचार-व्यवहार एटिकेट से ख़ाली था । लोगों की पीठ पर थपकी मार कर वात-चीत करने के सिवा, जहाँ जी चाहता था वहाँ ज़ोर से गाने में भी वह कोई संकोच नहीं करते थे । वह लोगों के वर्ताव और वातों को अच्छाई की दृष्टि से देख कर कभी क्रोध न करते थे । और दूसरों से भी ऐसे ही व्यवहार की आशा रखते थे, व्लैकी की और एक वात मेरे मन में चुभ गई थी । स्त्रियों के सतीत्व के सम्बन्ध मे आलोचना करते समय मैंने स्त्री-पुरुष दोनों को दोषी कहा, तो उन्होंने तेज के साथ कहा—“A man unchaste is an imperfect being, a woman unchaste is a monster.” वास्तव में चरित्र-हीन स्त्रियों के ऐसे राक्षसी व्यवहार अनेक जगह देखे गये हैं जिनका पुरुषों में होना सर्वथा असम्भव है । व्लैकी साहब वैरिस्टर थे, लेकिन उन्होंने कभी वैरिस्टरी का धन्धा नहीं किया ।

अदालत-सराय या आईन सीखने का कालेज (The inns of court) । विद्यालय का नाम सराय, ज़रा सुनने में अटपटा जान पड़ता है । किन्तु क्रमशः आगे जान पड़ेगा कि क्यों इसका ऐसा नाम पड़ा । जव मैं भारत से विलायत-यात्रा को चला, उस समय एक आईन-शिक्षार्थी ने मुझसे कहा था कि “लौटते समय मेरे लिए चारों टेम्प्लों की धूल लेते आना” । वास्तव में अगर देखा जाय तो यह उनकी भक्ति वेजड़ की नहीं है । इतिहास मे इन कालेजों का वर्णन उच्चस्थानीय अति प्राचीन अनुष्ठान के नाम से किया गया है । एक पण्डित ने इनके सम्बन्ध में कहा है—“The noblest nurseries of humanity and liberty in the British Empire.” अर्थात् ये ब्रिटिश साम्राज्य

में मनुष्यत्व और स्वाधीनता के बड़े भारी शिक्षालय हैं। पूर्व समय में यह नियम था कि इस विश्वविद्यालय की पढ़ाई समाप्त होने पर यहाँ कुछ दिन बिताकर आईन के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान प्राप्त किये बिना 'सुशिक्षित' पद पाने का कोई उपाय नहीं था। विद्यार्थीमात्र को एक प्रकार से बाध्य होकर यहाँ का मेम्बर होना पड़ता था। इस समय यह प्रथा उठ गई है।

आईन-शिक्षा के लिए चार कालेज या सराय हैं—१ मिडिल टेम्पल (Middle Temple) या मध्य-मन्दिर, २ इनर टेम्पल (Inner Temple) या आभ्यन्तरिक मन्दिर, ३ लिंकन्स इन (Lincoln's Inn) या लिंकन की सराय, ४ ग्रेज इन ((Gray's Inn) ग्रे की सराय। पहले चारों सब बातों में स्वतन्त्र थे। इस समय असल विषय की शिक्षा और परीक्षा आदि के सम्बन्ध का सब काम एकही में होता है। अन्यान्य बातों में किसी से किसी का सम्बन्ध नहीं है। हर एक की आमदनी-ख़र्च और जायदाद अलग अलग है। ईसा की तेरहवीं सदी से इनका काम शुरू हुआ है।

जेरुस्सलेम के कृस्तान तीर्थयात्रियों की रक्षा करने के लिए यूरोप में एक दल बना था। ये लोग बीच बीच में उस ओर जाकर शत्रुओं के साथ युद्ध आदि भी करते थे। इन लोगों ने पूर्व-राज्य के दस स्थानों से लूट-पाट करके बहुत धन इकट्ठा किया। इन लोगों का नाम था नाइट टेम्पलर (Knights Templars)। इस दल में जो इँगलेंड के आदमी थे, उन्होंने लूटे हुए धन से लन्दन में बहुत सी सम्पत्ति ख़रीद ली थी, और वे उसपर दख़ल करके उसका भोग करते रहे। उनका विध्वंस हो जाने के बाद वह सम्पत्ति राजा ने दो टेम्पलों को आईन-शिक्षा की सहायता के लिए दे दी। इसके पहले ही इन दोनों टेम्पलों ने, विद्यार्थियों की संख्या अधिक होने के कारण,

दो भागों में बँट कर आहार आदि के लिए अपना-अपना अलग-अलग बन्दोवस्त कर लिया। राजा प्रथम जेम्स ने जिस लेख से इन टेम्पलों को उस सम्पत्ति का स्वत्वाधिकारी वनाया, उसमें लिखा गया था कि "आईन-शिक्षा के चार कालिजों मे, सारे यूरोप में, ये ही दोनों सर्वश्रेष्ठ हैं। आईन-शिक्षार्थी और अध्यापकों को चिरकाल के लिए यह सम्पत्ति दी जाती है"। अन्य दो कालिजों के लिए जो नैतिक कर्त्तव्यमात्र है, वह करने के लिए टेम्पलों के अधिकारी लोग, आईन के अनुसार, बाध्य हैं। प्राचीन कवि स्पेन्सर (Spenser) ने दोनों टेम्पलों का उल्लेख करके कहा है—

> " Those bricky towers,
> The which on Themmes brode aged backe doe ryde ;
> Where now the studious lawyers have their bowers,
> There whilom want the Templar Knights to byde,
> Till they decayed through pride "

चासर (Chaucer) से लेकर अब तक अँगरेज़ी साहित्य के साथ इस स्थान का विशेष लगाव है। बहुत से प्रधान पण्डितों के साथ इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है।

टेम्स नदी के किनारे इन टेम्पलों के अन्तर्गत एक रमणीय बाग़ है। वहाँ हर साल फूलों की मनोहर प्रदर्शिनी हुआ करती है।

मिडिल-टेम्पल का वर्त्तमान मन्दिर सन् १५७२ में बना था। ओक लकड़ी की ऐसी छत लन्दन मे और कहीं नहीं देखी जाती। इस घर की दीवारे और खिड़कियाँ पूर्वकाल के टेम्पलर लोगों के और आधुनिक समय के लार्ड-उपाधि को पाये हुए सभ्यों की मर्यादा के चिह्नों (Armorial bearings) से सुशोभित हैं। कहा जाता है कि स्पेन देश की आर्माडा (Spanish Armada) की लकड़ी इस मकान के बनाने में व्यवहृत हुई थी, और उस प्रसिद्ध युद्ध में जय पाने के बाद

रानी एलिजाबेथ ने इसी 'हाल' मे आकर नृत्य किया था। यहाँ पर शेक्सपियर के 'बारहवीं रात, (Twelfth Night) नामक नाटक के अभिनय के समय उक्त रानी यहाँ उपस्थित थीं, इसके अनेक प्रमाण पाये जाते हैं।

सभी प्रिन्स आफ् वेल्स इसके मेंबर होते हैं। इस कारण अन्यान्य कालिजों की अपेक्षा इसका माहात्म्य कुछ अधिक है। यह बात ज़रूर है कि प्रिन्स आफ् वेल्सों को न परीक्षा देनी होती है, और न अन्य किसी नियम आदि के अधीन होना पड़ता है। सुना जाता है, सिंहासन के भावी अधिकारी, अर्थात् युवराज, और उनके बड़े लड़के को यहाँ का सभ्य अवश्य होना पड़ता है। इसके लिए ख़ास नियम है। राजघराने के अन्यान्य पुरुष भी इसके मेंबर हैं। इसकी महिमा के सम्बन्ध में और एक बात कही जाती है। सुविशाल ब्रिटिश-साम्राज्य के भिन्न भिन्न अंशों के बहुत से लोग यहाँ के बैरिस्टर हैं, इसलिए इसको 'इम्पीरियल इन' (Imperial Inn) भी कहते हैं।

इन कालिजों के अध्यक्षों को बेंचर (Masters of the Bench) कहते हैं। पुराने बैरिस्टर, क्वीन्स कौन्सिल (Queen's Counsel) हाईकोर्ट के जज और राज-परिवार के अन्तर्गत मेम्बर लोग इस पद को पाते हैं। यह बात ज़रूर है कि जो जहाँ का बैरिस्टर है, वह वहीं का बेंचर हुआ करता है। बेञ्चर लोग अपने अपने कालिज के हर्त्ता-कर्त्ता हुआ करते हैं। वे चाहें तो बिना परीक्षा के ही किसी आदमी को बैरिस्टर बना सकते हैं। और, हज़ार परीक्षा देने पर भी उनके मत के बिना कोई बैरिस्टर नहीं हो सकता।

इस देश के अनेक लोगों को विश्वास है कि केवल भोज देने से ही बैरिस्टरी मिल जाती है। लेकिन असल में यह बात नहीं है।

अन्यत्र जैसे परीक्षा के विना उपाधि पाने का कोई और उपाय नहीं है, वही वात यहाँ भी है। यह वात अवश्य है कि यहाँ भोज खाने को मिलते हैं; देने नहीं पड़ते । और, परीक्षा का मामला पृथ्वी पर सर्वत्र समान ही है। इधर रट कर उधर उन्हीं वातों को समय पर ठीक-ठीक उगल दो, वस इसी पर पास होना निर्भर है। इस पाप का सर्वत्र यही एक रूप है; कहीं भी कुछ विचित्रता नहीं देख पड़ती। आक्सफ़ोर्ड और केम्ब्रिज आदि विश्वविद्यालयों मे, वर्त्तमान समय मे, जो प्रथा प्रचलित है, वह पुराने ज़माने में यहाँ कुछ और भी कठिन रूप से प्रचलित थी। रोज़ हर एक विद्यार्थी को एक जगह वैठ कर भोजन करना पड़ता था। नित्य नियमित रूप से गिर्जे मे जाना आवश्यक था। सन्ध्या के छः वजे के वाद वाहर रहने की मनाही थी। और, कालिज की टोपी (College-cap) और गाउन (Gown) के व्यवहार की आज्ञा थी। शिक्षा उस समय लेक्चर (Lecture), मूट (Moot) और सामयिक परीक्षा से दी जाती थी। इसके विना कोई वैरिस्टर नहीं हो सकता था। मूट के माने यह है कि नियमित रूप से सभा लगती थी, वहाँ वेञ्चर, वैरिस्टर और विद्यार्थी लोग उपस्थित रह कर किसी पहले से निर्दिष्ट आईन के मामले को लेकर उसपर वादानुवाद करते थे। वर्त्तमान समय में, ग्रेज इनमें, यह वात और ढंग से प्रचलित है। वहाँ किसी नियत दिन को भोजन करने के वाद तीन चार वेञ्चर जज की जगह पर, और नये वैरिस्टर व विद्यार्थी लोग वैरिस्टर की जगह पर, वैठ कर, नक़ली मुक़दमा चलाते हैं। साधारण लेक्चर की तरह इस सभा में चारों कालिजों के विद्यार्थियों को शामिल होने का अधिकार है। उस ज़माने में वैरिस्टर वनाने की क्षमता अध्यापकों के हाथ में थी। परीक्षा के विना वे किसी को उपाधि नहीं देते थे। उपाधि लेने के समय चुने हुए

विद्यार्थी कालिज के पुस्तकालय में एक 'वार' अर्थात् कठघरा लाँघने के लिए अध्यापक के द्वारा बुलाये जाते थे। इसी से इस समय भी "Call to the bar" (अर्थात् कटघरे में बुलावा) यह प्रवाद प्रचलित है। बीच में बहुत दिनों तक नाममात्र को ज़बानी परीक्षा प्रचलित हुई थी। मगरपीछे वह एकदम उठ गई। फिर चेम्बर-योग्यता (Chamber-qualification) प्रचलित हुई। अर्थात् किसी बैरिस्टर के निकट निर्दिष्ट समय तक काम सीखने का सार्टीफ़िकट ले आने से ही उपाधि मिल जाती थी। इसके बाद लगभग तीस-चालीस बरस से वर्त्तमान लिखित और मौखिक परीक्षा का नियम प्रचलित हुआ है। अब 'आईन शिक्षा सभा' (Council of Legal Education) से परीक्षा पास होने की सनद पाने के बाद, अपने कालिज के बेञ्चर द्वारा मनोनीत होने पर, उपाधि मिलती है। लेक्चर, परीक्षा आदि की व्यवस्था उक्त सभा ही करती है। हर एक कालिज से एक निर्दिष्ट संख्या के बेञ्चर नियुक्त होकर इस सभा का सङ्गठन होता है।

इन कालिजों को सराय क्यों कहते हैं, सो शायद पाठक लोग अब समझ गये होंगे। इसका और भी एक कारण है। प्राचीन समय में सब प्रधान अदालतें राजा के साथ ही साथ रहती थीं। राजा जहाँ जाता था, वहाँ वे अदालतें भी जाती थीं। जब राजा के साथ अदालत राजधानी में आती थी, तब आईन का व्यवसाय करने लोग इन्हीं स्थानों में टिकते थे। इसलिए इनका सराय नाम कुछ असङ्गत नहीं है।

साल में चार टर्म (Term) होते हैं। हर एक टर्म में, विद्यार्थियों को, कम से कम छः दिन अपने कालिज के साधारण भोज में उपस्थिति न होने से, टर्म में नहीं रक्खा जाता। पूर्ण संख्या भर उपस्थित न होने से उपाधि नहीं मिलती। हर एक टर्म में एक बड़ा दिन (Grand Day) और एक बुलावे का दिन (Call Day) निर्दिष्ट होता है। बुलावे की रात को

काला गाउन, सादा गुलूबन्द और सादी परचूले की टोपी (Gown, Band and Wig)* पहने हुए परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को उपाधि दी जाती है। एक ख़ास बड़े दिन के राज-भोज का ब्यौरा नीचे लिखा जाता है।

सन् १८६१ की नवीं अप्रैल को एक राज-भोज हुआ। यह हमारे टेम्पल के ईस्टर-टर्म का बड़ा दिन था। हर एक टर्म की ऐसी रात को बाहर के बड़े बड़े लोगों को न्योता दिया जाता है। इसी नियम के अनुसार आज भी अनेक प्रतिष्ठित लोग बुलाये गये। ख़ास कर ब्रिटिश साम्राज्य के भावी अधीश्वर स्वयं प्रिन्स आफ् वेल्स ने टेम्पल के बेञ्चर की हैसियत से हमारे साथ खाया-पिया। अतएव आज का यज्ञ महायज्ञ था। इस यज्ञ में युवराज प्रधान होता था। पहले कहा जा चुका है कि चार कालिजों में से मिडिल-टेम्पल का राज-घराने से विशेष सम्बन्ध रहता है। रानी एलिजाबेथ से लेकर इधर अनेक राजा-रानियों और राजकुमारों ने इस हाल में पान-भोजन नाच-गाने-बजाने और नाटक आदि का आनन्द लूटा है। आजकल यहाँ अभिनय तो नहीं होता, लेकिन खाने-पीने और गाने-बजाने में कोई कमी नहीं हुई।

आज साधारण नियम के विपरीत बैरिस्टरों और विद्यार्थियों—अर्थात् साधारण मेम्बरों—के लिए सब २७५ ख़ास तौर के कार्ड भेजे गये थे। उक्त निमन्त्रण-पत्र में लिखित नियम के अनुसार सबको शाम की पोशाक (Evening Dress) पहन कर आना पड़ा था। रात को पौने आठ बजे के समय फल-भोजन शुरू होने वाला था; लेकिन युवराज की अपेक्षा करने में कुछ विलम्ब हो गया। उनके गाड़ी पर से उतरते ही पल्टन के बाजेवालों ने जातीय सङ्गीत (National

* विलायत के जज और बैरिस्टरों को कचहरी में परचूले की टोपी सिर पर देकर काम करना पडता है।

Authem—"God save the Queen.") बजाना शुरू किया। कुछ मिनटों के बाद प्रिन्स आफ़् वेल्स को आगे करके, निमन्त्रित व्यक्तियों के साथ, वेञ्चर लोग आकर उपस्थित हुए । उनके क़दम रखने के साथ ही फिर बैण्ड बजने लगा—"March Prince of Wales"। इसके उपरान्त सब लोग मिल कर खड़े हुए और पुरोहित बान साहब ने नित्य नियमानुसार निवेदन (Grace) पाठ किया:—

"Gracious God, bless this food of which we are now about to partake, and all other gifts of thy Providence, for Jesus Christ's sake, Amen.—God bless our Queen, bless the Prince of Wales, the Princes of Wales and all the Royal Family, God bless our Church, bless our country, &c, &c."

अब भोजन शुरू हुआ। आज पारुस में इतना विलम्ब हुआ कि अपने देश में न्योता खाने जाने की बात याद आगई। आहार का नियमित समय नित्य का तो छः बजे होता था। मगर आज बहुत देर होगई थी। सभी बहुत भूखे थे। परोसनेवाले (Waiters—ये बैरिस्टरों के क्लर्क होते हैं) जल्दी जल्दी परोसने पर भी सब जगह ठीक समय पर भोजन-सामग्री पहुँचाने में असमर्थ से हो रहे थे। एक एक किश्ती के बाद दस बारह मिनट अपेक्षा करनी पड़ती थी, और उस अवसर में बराबर बैंड बजता था। भोज के बीच में बड़े दिन के साधारण नियम के अनुसार कर्म-कर्त्ता (Master Treasurer Lord Coleridge. Lord Chief Justice of England.) ने महारानी के टोस्ट (Toast) का प्रस्ताव किया। इसके लिए तत्त्वावधायक (Steward) महाशय ने कहा "Gentleman charge your glasses" अर्थात् महाशय गण, पात्र में मदिरा नाइए। इसके बाद सब लोग पान-पात्र हाथ में लेकर खड़े हुए। सबने एक स्वर से तीन बार "The Queen" "The Queen" "The Queen"

कह कर उसमें से ज़रा ज़रा सी शराब पी और फिर खाने बैठ गये। इसके थोड़ी देर बाद प्रिन्स को चुरट पीने की इच्छा हुई। तब पुरोहित महाशय ने नियमानुसार धन्यवाद (Last Grace) पढ़ कर नियम-रक्षा के लिए इस यज्ञ को समाप्त कर दिया। इसका कारण यही था कि इन दो प्रेसों के बीच में चुरट-तम्बाकू पीना नियमविरुद्ध है। वह धन्यवाद यह है—"We thank thee, O Lord for the food of which we have just partaken. May it be for the nourishment of our bodies for Jesus Christ's sake, Amen." प्रिन्स के साथ साथ सबने चुरट जलाई। भोजन प्रायः समाप्त हो चुका था। शराब और फल-भोजन जारी था। इसी समय लार्ड कोलरिज ने खड़े होकर कहा—"Gentlemen, I give you without preface and without expecting a reply, the one toast of 'The Health of Master His Royal Highness the Prince of Wales' तालियों की गड़गड़ाहट के बाद फिर पानपात्र हाथ में लिये खड़े होकर "The Prince of Wales," 'The Prince of Wales," "The Prince of Wales" कह कर सबने थोड़ी थोड़ी शराब पी। बहुतों ने प्रिन्स-सम्बन्धी एक मङ्गल गीत गाया और बैठ गये। अब प्रिन्स ने उठकर कहा—"Gentlemen, It was decided by our Treasurer that there should be only one toast and that no speeches were to be made, but I shall allow myself the privilege of having been for thirty years a member of this Inn, of proposing a toast which I know you will all receive with acclamation—it is that of The Health of our Treasurer, the Lord Chief Justice of England." अर्थात् मैं ३० साल से इस टेम्पल का एक मेम्बर हूँ और इसी स्वत्व से प्रस्ताव करने का अधिकारी हूँ।

इस उक्ति के द्वारा यह भाव प्रकट हुआ कि मैं भी तुम में से एक हूँ। यह उदार प्रेमपूर्ण भाव प्रकाशित करने से इस समय विशेष प्रीति और उत्साह के साथ आनन्द-ध्वनि उठी। फिर खूब आनन्द-ध्वनि के साथ लार्ड कोलरिज के संमान के बाद सब लोग जब बैठ गये तब वह उत्तर देने के लिए खड़े हुए। उन्होंने कहा—

"A great King, in former days, said, 'Put not your trust in Princes' (सबका हँसना और आनन्द-ध्वनि). I invited his Royal Highness here upon the solemn undertaking that no speeches were to be made, yet His Royal Highness has forced upon me the duty of making one (खूब हँसी और करतालि-ध्वनि). All I can say is that when I was upon one occasion forced to make a speech, much against my wish, a lady who sat next to me said, 'Never mind, you will speak very late, everybody will be very tired, nobody will in the least want to hear you or care what you say, and when you have said that, you do not want to make a speech, and then, and then, and then,– you can sit down' (सबका हँसना और करतालि-ध्वनि). That was her advice, and I propose to follow it now."

फिर खूब तालियाँ पिटीं। कोलरिज साहब जब बैठ गये, तब प्रेमपात्र (लविंग-कप) चलने लगा। अर्थात् एक भारी चाँदी के बर्तन में तरह तरह की शराबें मिला दी गईं और प्रिन्स आफ़ वेल्स से लेकर सबने उसमें से एक एक घूँट पिया। हर एक ग्रैन्ड नाइट में इसी तरह प्रेम-प्याला सबके आगे फिरता है। जुबली के साल प्रिन्स आफ वेल्स हमारे कालिज के अध्यक्ष थे।

जब उस पद से वह अलग हुए, तब उन्होंने एक भारी चाँदी का बर्तन टेम्पल को भेंट किया। वही प्याला आज चल रहा था। रात के ११ बजे भोज समाप्त करके, अविराम आनन्दध्वनि में, दोनों ओर के आदमियों में से हर एक को सलाम करते करते, अपने दल सहित युवराज विदा हो गये। साधारण भोजन करनेवाले लोग इसके बाद भी बहुत देर तक बैठ कर शराब और चुरट पीते तथा बातचीत करते रहे।

फल-भोजन समाप्त होने पर मैं बैठ कर सोचने लगा कि धन्य हैं अँगरेज़। आज देश के भावी सम्राट् ने पृथ्वी के हर एक हिस्से के आदमियों के साथ बैठ कर भोजन किया और आनन्द मनाया। आफ्रिका के घोर श्यामवर्ण हबशी, चीन-जापान के अधिवासी, भारत के हिन्दू-मुसलमान आदि ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागों के गोरे और काले, उन्हीं के साथ निमन्त्रित ग्रीस देश के मन्त्री—यूरोप, आफ्रिका, अमेरिका, एशिया और आस्ट्रेलिया, इन पाँचों खण्डों के आदमी—स्वाधीन भाव से इँगलेंड के प्रिन्स आफ़् वेल्स के साथ प्रेमपूर्वक भोजन कर रहे हैं। इसी से कहते हैं कि "England is a free cosmopolitan country," अर्थात् लन्दन केवल इँगलेंड की राजधानी नहीं, सारी पृथ्वी की राजधानी है। यह सोचते सोचते मैंने विधाता को असंख्य धन्यवाद दिये कि उन्होंने मुझ ऐसे नराधम पर ऐसी कृपा की कि मैं हज़ार अयोग्य होने पर भी इस सार्वभौमिक प्रेम के दरबार में स्थान पा सका।

इस देश में गये बिना यहाँ की किसी बात का ठीक तत्त्व समझना बहुत ही कठिन है। बैरिस्टरी-भोज इसका एक ख़ासा उदाहरण है। मैं जब देश मे था और जब यहाँ आकर 'डिनर' खाता था, तब समझता था कि इस व्यवस्था की जब स्थापना हुई थी तब शायद

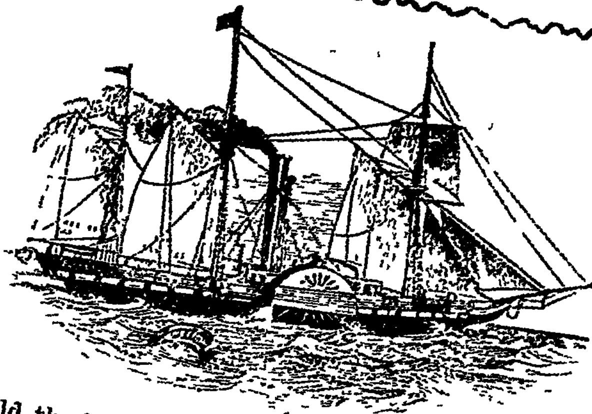
कोई इसका उद्देश्य रहा हो, लेकिन इस समय यह व्यर्थ है, इसमें कोई उपयोगिता नहीं है। किन्तु क्रमशः मुझे देख पड़ा और उक्त राज-भोज में भी अच्छी तरह देखा कि इस तरह का अच्छा और महत् अनुष्ठान उठ जाने से भारी हानि के सिवा लाभ कुछ भी नहीं होगा। जो लोग शिक्षा के माने, कुछ किताबों को रट कर परीक्षा के समय उन विषयों को उगल देना ही समझते हैं, उनको समझाने की शक्ति और अवकाश मुझको नहीं है। दस आदमियों से आलाप-परिचय, आहार-व्यवहार के बिना मनुष्य को सच्ची शिक्षा मिलना असम्भव है। इस प्रकार के मेल-जोल से, परस्पर भाव-विनिमय के द्वारा, इस महान् उपयोगी भोज से जो लाभ होता है, वह और तरह नहीं हो सकता। दो ही एक घंटे में भारी स्नेह हो जाता है और बहुत सी जानकारी हासिल होती है। परन्तु जो लोग वहाँ केवल जीभ का स्वाद लेने, पेट भरने या दिल-बहलाव के लिए जाते हैं, उनकी बात जुदी है। जिसकी जैसी भावना होती है, उसको वैसा ही फल मिलता है।

हर एक कालिज के अन्तर्गत एक पुस्तकालय और गिर्जा है। केवल दो टेम्पलों का एक ही गिर्जा है। क्योंकि जब दोनों कालेज अलग हुए, तो वह गिर्जा बाँटा नहीं जा सका। टेम्पल-गिर्जा अत्यन्त प्राचीन और मिडिल-टेम्पल-हाल की तरह, या उससे भी अधिक, नगर का एक विशेष दृश्य समझा जाता है। इसका बाजा बहुत ही प्रसिद्ध है। इसी गिर्जे में गोल्डस्मिथ गड़े हुए हैं।

एक गिर्जे के बारे में बयान कर देने से सबका हाल मालूम हो जायगा। इसलिए सबका वर्णन यहाँ नहीं किया जाता। सबका

व्यवहार एक-सा है। पहले अर्ल लिंकन यहाँ रहते थे, इसलिए 'लिंकन्स-इन' का यह नाम पड़ा है। 'ग्रेज इन' के सम्बन्ध मे भी यही बात है। वह भी किसी समय लार्ड ग्रे की सम्पत्ति थी। लार्ड बेकन ग्रेज इनके एक बैरिस्टर और किसी समय उसके बेञ्चर भी थे। उनके हाथ का लगाया हुआ एक वृक्ष आज भी वहाँ के बाग़ में विराजमान है। इन कालिजों मे, जैसे परीक्षा-सम्बन्धी एक सार्टीफ़िकेट दिया जाता है वैसे, उपाधि पाने का कुछ चिह्न नहीं दिया जाता। विदेश-यात्रियों को पीछे से दाम देकर एक "निमन्त्रण" का निदर्शन-पत्र ख़रीदना होता है।

लन्दन का जाड़ा। तबीयत ठीक न रहने से कुछ दिन समुद्रतट पर राम्सगेट (Ramsgate) नगर मे रहने के बाद, सन् १८६१ के जनवरी महीने मे, लन्दन में लौट आकर मैंने देखा कि सारे जलाशय बर्फ़ बन कर मिट्टी की तरह कड़े बन गये हैं। लोग उनके ऊपर स्केटिंग (Skating) के द्वारा कसरत का मज़ा लूट रहे हैं। सब कहने लगे, ऐसा जाड़ा बहुत दिनों से नहीं हुआ। अख़बारों मे, सन् ३५९ से लेकर अब तक की, जाड़े की सूची, प्रकाशित होने लगी। उसमें देखा गया कि तब से सन् १८८८ तक, ४२ भयानक जाड़े की फ़सलें इस देश में हुई हैं। उनमें सन् १८१३—१४ का जाड़ा बहुत कुछ इसी साल से मिलता-जुलता था। उस दफ़ा भी पहले भयानक कुहरा पड़ा और बराबर कई रोज़ बना रहा था। उसी कुहरे में प्रिन्स रिजेन्ट राह भूल कर मुशकिल में पड़ गये थे। इस साल के जाड़े मे टेम्स के ऊपर मेला लगा था, छापाख़ाना स्थापित हुआ था और जाड़े के सम्बन्ध की बहुत सी कवितायें आदि छप कर बिकी थीं। एक कविता की हूबहू नक़ल नीचे दी जाती है।



Behold the River Thames is frozen o'er,
Which lately ships of mighty Burthen bore ;
Now different arts and Pastimes here you see,
But **Printing** claims the Superiority.

Printed to commemorate a remarkably

Severe Frost,

Which commenced December 27th, 1813, accompanied by an unusual **Thick Fog** that continued Eight Days, and was succeeded by a tremendous **Fall of Snow**, which prevented all Communication with the Northern and Western Roads for several Days. The Thames presented a complete **Field of Ice** between London and Blackfriars Bridges, on Monday, the 31st January, 1814. A Fair is this day held, and the whole space between the two Bridges covered with spectators.

Printed at the **crown** and **constitution,**
near **Thames Street Stairs**
Binkside, Southwoork.
This 4th Day of February, 1814.

और भी दो बार, सन् १६८३-८४ और १७८८-८६ में, टेम्स
ी जम कर मैदान बन गई थी और उस पर मेला लगा था। दोनों

मर्तबा वहाँ आग जला कर खाना पकाने का काम हुआ और प्रेस भी स्थापित हुआ।

लन्दन का कुहरा। अक्सर नवम्बर महीने में थोड़े-बहुत कुहरे से लन्दन नगर घिरा रहता है। किन्तु सन् १८९१ के बड़े दिन के पहले जो एक सप्ताह से भी अधिक समय तक कुहरा छाया रहा था, वह बड़ा ही भयानक था। राह मे दिन-रात रोशनी रहती थी त भी हाथ-मारे नहीं सूझता था। प्राकृतिक कुहरे के साथ मिल कर चिमनियों के धुएँ के ढेर ने लन्दन की जो दशा कर दी थी, उसे जिसने देखा है, वही उसकी भयानकता को जान सकता है। जाड़े की फ़सल में लन्दनवालों के दिन और रात एक-समान गुज़रते हैं। सूर्यदेव के अस्तित्व का कोई चिह्न ही नहीं देख पड़ता। उसके ऊपर कुहरे का ज़ोर अगर हुआ तो आफ़त ही हो जाती है। हृदय के भीतर जैसे ऊवासाँसी लग जाती है, और दम जैसे घुटने लगता है। बहुत लोगों का कहना है कि हर साल इस फ़सल मे बहुत से लोग पृथ्वी की सब यन्त्रणाओं से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या तक कर डालते हैं। दिन-रात विपत्ति-शोक से भरी ऐसी दुनिया मे ऐसा प्राकृतिक उत्पात होने से उसका असह्य हो जाना असम्भव नहीं है। एक दिन एक मित्र के साथ सलाह करके लन्दन छोड़ देने के विचार से अम्निबस (Omnibus) पर बैठ कर हम स्टेशन की ओर चले। एक मिनट में एक इंच खिसकने के हिसाब से उसे चलते देख कर हमको अपना इरादा छोड़ देना पड़ा। ये कुहरे के कई दिन बड़े कष्ट से कटे। सन १७८३ मे, सारे यूरोप में, ऐसा ही कुहरा छा गया था।

इम्पीरियल लेवी (Imperial Levee)। लन्दन से दूसरी बार महादेश-दर्शन की यात्रा करने के पहले मैंने सोचा कि एक दफ़ा बादशाही दरबार देख लूँ। बात देखने लायक़ थी, और लाभ यह था कि

अगर दरवार में दाखि़ल हो गया, तो कन्टीनेन्ट (Continent) में भ्रमण के समय एक राजकीय-निदर्शन पास रहेगा। यह सोच कर मैं इण्डिया आफ़िस में गया। वहाँ के पोलिटिकल एडीकांग (Political Aid-de-camp) सर सीमर फ़िज़जिरल्ड (Sir Seymour Fitzgerald) ने कहा कि "लन्दन के रहनेवाले किसी इज़्ज़तदार आदमी का लिखा हुआ एक मान-मर्यादा का सार्टीफ़िकेट लाइए"। मैंने भारतीय म्यूनिसिपल-कमिश्नरी आदि की सनदें दिखाईं, और यह भी वतलाया कि मैं वैरिस्टर हूँ। तथापि उन्होंने कहा कि "वैरिस्टरी पास होना कोई सनद नहीं है। उपाधि पाते तो वह मानी जा सकती; फिर किसी वात की दरकार न थी"। इसके वाद उन्होंने कहा—"यद्यपि भारत के काग़ज़-पत्रों से आप एक इज़्ज़तदार आदमी जान पड़ते हैं, तथापि नियम का वन्धन बड़ा कड़ा होता है। यदि भविष्य मे, आपके सम्बन्ध में, कोई विरुद्ध वात प्रकट हो, तो प्रेजेन्टेशन (Presentation) अर्थात् दाखि़ल करने का अधिकार सदा के लिए मेरे हाथ से जाता रहेगा। इसलिए इन वातों में ख़ूब सावधानी से काम करना ही उचित है"।

दरवार के दो दिन पहले यह वातचीत हुई। समय वहुत थोड़ा था। क्या करता, चारों ओर दौड़-धूप करके ऐसा एक सार्टीफ़िकेट हासिल कर फिर उनके पास पहुँचा। तव उन्होंने पूछा कि "अभी तक आपको वैरिस्टर की उपाधि नहीं मिली। इस कारण अभी आपके नाम के साथ 'एसकायर' शव्द नहीं लिखा जा सकता। इसलिए आपके नाम के पहले 'मिस्टर' लिखूँ या 'वावू'? आपके देश के वहुत लोग 'वावू' शव्द पर आपत्ति करते हैं, इसी लिए आपसे पूछता हूँ"।

मैंने उत्तर में कहा—"वावू लिखने में मुझे कोई आपत्ति नहीं"।

इसके वाद पोशाक के वारे में उन्होंने उपदेश दिया कि "आप

इँगलेंड की दरबारी पोशाक,या भारतीय पोशाक, जो चाहें उसे पहन सकते हैं। किन्तु दरबार को सार्वभौमिक बादशाही भाव देने के लिए, मेरी समझ में, भारतीय पोशाक पहनना ही ठीक होगा"। मैंने भी देखा कि कोर्ट-ड्रेस तैयार कराने का समय नहीं है। उसकी लागत भी ज़ियादा होगी। किराये पर लाने में भी कम ख़र्च न पड़ेगा। मुझे भारतीय पोशाक पहनने में ही सुभाता है। मैं चटपट अपने एक पञ्जाबी दोस्त से रेशम का साफ़ा और शाल का चोग़ा ले आया। नियत दिन में ठीक समय पर केवल कोट के बदले चोग़ा पहन कर और साफ़ा बाँध कर दरबार को चला। वहाँ जाकर देखा, बाहर कई बेञ्चे पड़ी थीं। कोई उन पर बैठा हुआ था, और कोई खड़ा हुआ अपेक्षा कर रहा था। मैं भी एक बेञ्च के ऊपर बैठ गया। थोड़ी देर बाद बहुत से तमग़े पहने हुए पञ्जाब के भूतपूर्व लाट एचीसन साहब ने शायद मुझे पञ्जाबी समझ कर, मेरे पास बैठ कर, यों बातचीत शुरू कर दी—

प्रश्न—तशरीफ़ हिन्दोस्तान से आया है?

उत्तर—हाँ।

प्रश्न—मिजाज़ अच्छा है?

उत्तर—बहुत अच्छा है।

प्रश्न—इँगलिस्तान कैसा देखते हैं?

उत्तर—बहुत अच्छा।

प्रश्न—आब-हवा अच्छी मालूम होती है?

उत्तर—बहुत अच्छी।

प्रश्न—लोग कैसे देखते हैं?

उत्तर—बहुत अच्छे।

इसके बाद उन्होंने अपनी बातें कहना शुरू किया। कहा, "मैंने चालीस बरस हिन्दोस्तान की खिदमत की है" ।

इसके उत्तर में मैंने कहा—"मैं आपका नाम बहुत दिनों से सुनता था, लेकिन कमनसीबी से मुलाक़ात का मौक़ा कभी नहीं हुआ" ।

इतने ही में और एक आदमी बहुत से तमगे पहने दूसरी ओर आकर बैठ गये। शायद वह किसी प्रदेश के भूतपूर्व चीफ़ कमिश्नर होंगे। उन्होंने कहा—"मैंने ३५ बरस हिन्दोस्तान की नौकरी की है" ।

इस तरह पुराने लाट आदि का आपसे आप काले आदमी से बातचीत करना, बहुत लोगों को, आश्चर्य की बात मालूम होगी। पर नहीं, यह उस मिट्टी की तासीर है! इसके बाद यथासमय दरबार में उपस्थित हुआ। नाम पुकारा जाने पर दर्बार-भवन के भीतर गया। बहुत से लोग एक इसी काम के लिए नियत कर्मचारी के साथ भवन देखने लगे। किन्तु मुझे यह सौभाग्य नहीं नसीब हुआ। दरबार में देखने की चीज़ थी "डिप्लोमाटिक सर्किल" (Diplomatic Circle), अर्थात् सिंहासन के सामने अनेक देशी दूतों की मण्डली। और सब बातें यहीं की लेवी की ऐसी थीं। अधिक यह हुआ कि निम्नलिखित एक सार्टीफ़िकेट मिला। इसकी पृथ्वी के सब राज-दरबारों में इज़्ज़त होती है। अर्थात् इस सार्टीफ़िकेट के पास रहने से दुनिया के हर एक राजदरबार में आदमी जा सकता है। चुरा-छिपा कर अँगरेज़ों की निन्दा सभी करते हैं, लेकिन प्रकाश्य भाव से अँगरेज़ों को श्रेष्ठ संमान भी देते हैं।

Lord Chamberlain's Office.



I hereby certify that the following Presentation took place at Her Majesty's Levee, on Friday, the 5th of June, 1891, at St James's Palace

Babu — — — —

By

The Political Aide-de-camp to the Secretary of State for India.

S. PONSONBY FANE,
Comptroller.

Lord Chamberlain's Office,
12th June, 1891.

(With The Lord Chamberlain's Compliments)

लन्दन-माहात्म्य । यहाँ पहले धन और स्वास्थ्य की बात लिखना ही उचित है। इस बात को तो शायद बहुत लोग जानते हैं कि धन में लन्दन पृथ्वी भर में अव्वल नंबर है । यहाँ इतना सोना जमा है कि किसी समय कहीं भी इतना सोना नहीं जमा हुआ । चीफ़साइड लन्दन का बड़ा बाज़ार है । वहाँ एक समय दो-तीन वर्ग हाथ ज़मीन के लिए दो ख़रीदारों में लागडॉट पड़ गई । एक ख़रीदार ने कहा—"मैं मोलदर क्या करूँ, जितनी ज़मीन है उस पर गिन्नियाँ बिछा दूँगा"। यह सुन कर दूसरे ने उतनी दूर में गिन्नियों का ऊँचा ढेर लगाकर उस ज़मीन को ख़रीद लिया । प्राचीन तसवीरें और शौक के कुत्ते घोड़े वग़ैरह कभी कभी इतने दामों में बिक जाते हैं कि सुनकर आश्चर्य होता है। अगर कोई आदमी कोई चीज़ लन्दन में ले जाकर दो-एक ऐतिहासिक प्रमाणों के प्रयोग द्वारा यह समझा सके कि युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ में इस चीज़ का व्यवहार किया था, तो अवश्य बहुत बड़े मूल्य पर उस चीज़ को बेचकर वह धनी बन सकता है । और भी एक बात से मैं इस विषय को समझाने की चेष्टा करूँगा । गत बार जिस रात को पार्लियामेन्ट में यह निश्चित हुआ कि यह दल—मन्त्रिमण्डल—बदल जायगा, उसके सवेरे ही चुनाव के ख़र्च के लिए अनेक सभ्य-पद-प्रार्थियों ने मुफ़स्सिल में नोट और नक़द मिला कर दस लाख पाउण्ड भेजे थे । स्वास्थ्य के सम्बन्ध में शायद लन्दन की ऐसी जांच और कहीं नहीं होती । इतना बड़ा शहर और इतनी घनी बस्ती होने पर भी स्वास्थ्य के विषय में लन्दन अनेक बड़े बड़े नगरों की अपेक्षा श्रेष्ठ है । वर्त्तमान समय में यहाँ की मृत्यु-संख्या हज़ार में आठ के हिसाब से है । किन्तु बहुत स्थानों में वह फ़ी हज़ार इक्कीस के हिसाब से कम नहीं है । सारा यूरोप घूम आने पर अच्छी तरह मालूम होजाता है कि यहाँ के लोग कैसे तन्दुरुस्त और सुन्दर हैं । इँगलेंड के नर-

नारियों के मुखमण्डल पर जैसी स्वास्थ्य की एक झलक सी देख पड़ती है, वैसा तेज अन्यत्र नहीं देखा जाता। पैंतीस बरस की अँगरेज़-रमणी और बीस बरस की अन्यदेशीय रमणी स्वास्थ्य में समान होंगी। वहाँ की हवा ऐसी अच्छी है कि वह सबको सदा सतेज बनाये रहती है। अत्यन्त शिथिल अवस्था से घर से बाहर निकलने पर भी, राह की हवा में ऐसी स्फूर्ति देने की शक्ति है कि दस पग चलते ही सारी शिथिलता दूर हो जाती है। सुडौल, सतेज, सीधे अँगरेज़ गोरों के ऐसे सिपाही अन्यत्र कम देखने को मिलेंगे।

रोम की बढती के समय जैसे लोग कहते थे कि सब मार्ग रोम की ही ओर हैं, वैसे ही वर्त्तमान समय में कहा जा सकता है कि सभ्य जगत् की सब श्रेणी के लोगों की दृष्टि लन्दन ही की ओर है। पृथ्वी की सब जातियों और सब धर्मों के लोग लन्दन में देखे जाते हैं। लन्दनवासी इस बात को अभिमान और गौरव की दृष्टि से देखते हैं कि वे लोग जाति और धर्म का ख़याल न करके सबको समान भाव से स्वाधीन समझते और स्वदेशी विदेशी सबसे ज्ञान, धर्म सीखने और गुण ग्रहण करने के लिए सर्वदा तैयार हैं। महातीर्थ काशीधाम की तरह यहाँ भी अन्नपूर्णा विराजमान हैं। इतने ग़रीब शायद पृथ्वी में और कहीं न होंगे। परन्तु भूखा कोई नहीं रहता। रोज़ लाखों आदमी सवेरे उठ कर यह नहीं कह सकते कि उस दिन वे क्या खाकर रहेंगे। लन्दनवासियों के वार्षिक खान-पान का हिसाब सुनकर पाठकों को आश्चर्य हुए बिना नहीं रहेगा। सुनिए— ६३००० बुशेल गेहूँ, ३७ लाख मन मछली, ८ लाख गऊ, ४० लाख सुअर भेंड़ें आदि, १ करोड़ मुर्ग़े वत्तक़ आदि। अण्डों की तो गिनती ही नहीं की जा सकती। एक बार केवल हिसाब लगाया गया था कि फ़ान्स के उपकूल से केवल दस लाख पाउण्ड के अण्डे हर साल आते

हैं। फल और कन्द-मूल आदि की तादाद बतलाना तो असम्भव ही है। साल में १८ करोड़ बोतलें बियर शराब की और ५ करोड़ बोतलें अन्यान्य शराबों की ख़र्च होती हैं। लन्दनवासी लोग हर साल ३१ करोड़ मन कोयला ख़र्च करते हैं। भूमध्यसागर और अटलांटिक महासागर में खाने-पीने की चीज़ें लादे हुए अनेकों जहाज़ अनेक देशों से लन्दन की ओर जाते हुए देख पड़ते हैं।

इन नगरवासियों के लिए साढ़े सात सौ शराब की दूकानें और सत्रह सौ काफ़ी पीने के अड्डे हैं। शराब की दूकानों से यहाँ की ऐसी कलवरिया न समझ लेना चाहिए। लन्दन में उन्हें पब्लिक हाउस (Public-house) कहते हैं। लोग संक्षेप में इन्हें 'पब' कहते हैं। ऐसे ही 'जनवरी' को 'जन', 'फेब्रुअरी' को 'फेब', कैब्रिओलेट (Cabriolet) को 'कैब', 'अम्निबस' (Omnibus) को 'बस', इत्यादि अनेक शब्दों को उच्चारण-सुविधा के लिए संक्षिप्त बना लिया गया है। अँगरेज़ कहते हैं कि जीवन इतना संक्षिप्त है कि लम्बे शब्दों का उच्चारण करने का अवकाश नहीं ("Life is evidently too short for long words.") इन सब शराबख़ानों या 'पबों' को एक एक राजमहल कहना भी अनुचित न होगा। इनका साज-सरञ्जाम असबाब वग़ैरह ऐसा साफ़-सुथरा और क़ीमती है कि एक एक पब लगभग लाख पाउण्ड की सम्पत्ति होगा। मदिरा पीने का विरोधी दल इन शराबख़ानों को बन्द कराने की बहुत कुछ चेष्टा कर रहा है। लेकिन एक ओर दृष्टि डालने से जान पड़ता है कि अगर ये शराबख़ाने उठ जायँ तो लन्दनवासियों को सचमुच बड़ा कष्ट हो। यहाँ केवल शराब ही नहीं बिकती। अन्यान्य पीने की चीज़ें भी बिकती हैं, और जलपान का भी प्रबन्ध है। इसके सिवा शाम के बाद या और फ़ुर्सत के वक़्त साधारण लोग यहीं आकर बैठते हैं। इस

सर्द मुल्क में खुली जगह में खड़े होकर बातचीत करना असम्भव है। इस कारण राह में किसी इष्टमित्र से मुलाक़ात होने पर, उससे दो घड़ी बातचीत करने के स्थान ये ही हैं। इन अड्डों मे भिन्न भिन्न श्रेणी के लोगों के बैठने की जगहें अलग अलग बनी हुई हैं, और उसी हिसाब से खाने-पीने की चीज़ों का मूल्य भी कमोवेश है। बेंचने का काम अनेक स्थानों मे सुशील सुन्दर जवान औरतें ही करती हैं। परन्तु कहीं कुछ गड़बड़ नहीं होती। अँगरेज़ों के लिए यह कम गौरव की बात नहीं है।

हर साल लगभग ५०,००० के लन्दन की जन-संख्या बढ़ती जाती है। इस समय प्रायः ६० लाख आदमी हैं। यहाँ जितने रोमन कैथलिक हैं, उतने उनके प्रधान स्थान रोम (Rome) नगर मे नहीं हैं। जितने यहूदी यहाँ रहते हैं, उतने अपने आदि-प्रदेश पैलस्टाइन मे नहीं हैं। जितने स्काच (Scotch) यहाँ हैं, उतने अपनी जन्म-भूमि स्काटलैंड के आवर्डीन (Aberdeen) नगर मे नहीं हैं। जितने वेल्स (Welsh) यहाँ हैं, उतने वेल्स के प्रसिद्ध नगर कार्डिफ (Cardiff) नहीं हैं। जितने आयरिश यहाँ हैं, उतने आयर्लैंड के अन्तर्गत वेलफ़ास्ट (Belfast) नगर मे खोजे नहीं मिलते।

ख़ास शहर (City of London) १-६०० बीघे ज़मीन मे है। उस में हर रोज़ ८ लाख पैदल आदमी और ७७,००० से भी अधिक गाड़ियाँ आती और जाती हैं।

चेयरिंग-क्रास से ६।७ मील की चौहद्दी के भीतर ढाई सौ मील रेल-पथ चला गया है; जिसमें १२ प्रधान और साठ साधारण स्टेशन हैं। बड़े स्टेशनों में Midland Railway Terminus, St. Pancreas Station की इमारत सबसे श्रेष्ठ है। इसकी ऐसी ७०० फ़ुट लम्बी और २४० फ़ुट चौड़ी इकहरी छत शायद ही और कहीं हो। रेल-कम्पनियों

में London and North-Western Railway Company सबसे श्रेष्ठ है। इसकी पूँजी १२ करोड़ पाउण्ड के लगभग है, और आमदनी हर घंटे १३०० पाउण्ड से भी अधिक है। इसके २३०० एञ्जिन हैं। ६०,००० आदमी इसमें काम करते हैं। १½ लाख से ऊपर यात्री नित्य इसमें यात्रा करते हैं। यह कम्पनी अपनी इमारत, पुल, रेल, कल गाड़ी, यहाँ तक कि अस्पताल का ज़रूरी सामान तक अपने ही कार-ख़ाने में बना लेती है। इस कम्पनी को राह की मरम्मत के लिए रोज़ ढाई सौ पाउण्ड ख़र्च करने पड़ते हैं। प्रायः तीन लाख पाउण्ड अन्यान्य स्थानों की मरम्मत आदि में ख़र्च होता है। साल में नौकर-चाकरों की तनख़्वाह देने में, सवा चार लाख पाउण्ड ख़र्च होते हैं। एक तीसरे दर्जे की गाड़ी बनने में ६०० पाउण्ड और प्रथम श्रेणी की गाड़ी में ८०० पाउण्ड ख़र्च होते हैं। सब बातों को देखते यह रेल्वे कम्पनी पृथ्वी भर में बड़ी है।

रेल के सिवा लोगों के जाने-आने के लिए ६०० के लगभग अम्नि-बस (Omnibus) और ७०० ट्रामगाड़ियाँ शहर के भीतर रोज़ चला करती हैं। साफ़ दिन में, अम्निबस पर बैठकर लन्दन की सड़कों का दृश्य देखने में बड़ा ही मनोहर और शिक्षाप्रद देख पड़ता है। अम्निबस के चलानेवाले सदा बैठे-बैठे काम करने के कारण बड़े मोटे शरीर के होते हैं। वे मसख़री करने में भी बड़े चालाक होते हैं। दो गाड़ीवानों में झगड़ा होने पर उनमें ऐसी मज़े की बातें होती हैं कि दम भर खड़े होकर सुनने को जी चाहता है। १४,००० किराये की गाड़ियाँ भी हैं; जिनको कैब (Cab) कहते हैं। दो पहिये की की कैब को हंसम (Hansom) कहते हैं। डिजरेली इन्हें लन्दन का गण्डोला (Gondola) कहते थे। वर्त्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में हंसम नामक आदमी ने इन्हें प्रचलित किया था। इनके हाँकनेवाले

गाड़ीवान सप्ताह मे एक पाउण्ड के लगभग पैदा करते हैं। गाड़ियाँ इनकी अपनी नहीं होतीं। ये लोग गाड़ियाँ, उनके मालिकों से, किराये पर ले आते हैं। आफ़िस के समय बैंकघर मे जितने आदमी आते हैं, वे किराये के अलावा ६ पेनी बकसीस भी देते हैं। इस कारण इस तरह की सवारियों पर इन गाड़ीवानों की विशेष श्रद्धा देखी जाती है। ज़नानी सवारियों से ये लोग बहुत नाराज़ रहते हैं। क्योंकि वे बकसीस देने की कौन कहे, ठीक भाड़ा देने मे भी बहुत हिचिर-मिचिर करती हैं। जहाँ तक होता है, उसमे भी कमी कराने की चेष्टा करती हैं। ये गाड़ीवान अक्सर अत्यन्त शिष्ट, शान्त, चालाक, सभ्य, सच्चरित्र और परिश्रमी आदमी होते हैं। बहुत लोगों को देखने-भालने का मौक़ा मिलने के कारण इनमे से बहुत से दिल्लगीबाज़ी मे या आदमी पहचानने मे पूरे सिद्धहस्त हैं। विलायती बरसाती कोट को 'मैकिन्टश' कहते हैं। एक दफ़े स्काटलैंड के प्रसिद्ध मैकिन्टश घराने के एक प्रधान पुरुष लन्दन मे आये। उन्होंने कैब के गाड़ीवान को भाड़ा देते समय अनेक उज़्र और आपत्तियाँ करके धमकाते हुए कहा—"मुझे नहीं पहचानते? मैं साधारण आदमी नहीं, अमुक मैकिन्टश हूँ"। गाड़ीवान ने तुरन्त जवाब दिया—"आप मैकिन्टश हों या चाहे जो हों, मुझे इससे क्या? मैं अपना भाड़ा चाहता हूँ"। इन गाड़ीवानो को लन्दन के पते-ठिकाने जानने के सम्बन्ध मे कठिन परीक्षा देकर पास होना पड़ता है। इस कारण केवल रास्ता और नम्बर बतला देने से ही ये आपको ठीक जगह पर पहुँचा देंगे। ये भाड़े की गाड़ियाँ और इनके घोड़े, कलकत्ते की बहुत सी घर की गाड़ियों और घोड़ों से अच्छे, क़ीमती और सुन्दर हैं। लन्दन में कुछ भी कुत्सित, कदर्य, क्षीण नहीं देखा जाता।

लन्दन के ऊपरी हिस्से मे ये कारख़ाने हैं। इनके सिवा ज़र्मान

के नीचे जो कुछ है उसे देख कर बुद्धि चकरा जाती है। लन्दन के एक विशेष अंश में सड़क के नीचे एक रेलवे है। उसके नीचे शहर का भारी नाला है। उसके बाद ६३ .फ़ुट नीचे बिजली की रेल चलती है, और यह रेल जिस "मध्य लन्दन" रेल से जाकर मिली है वह ८० .फ़ुट नीचे है।

नित्य के खेल-तमाशे और दिलबहलाव के स्थान भी यहाँ कम नहीं हैं। ५० तो थियेटर हैं, और म्यूज़िक-हाल (Music Hall) तथा कन्सर्ट-रूम (Concert Rooms, &c.) आदि ४०० हैं। म्यूज़िक हालों में अनेक हँसी-खेल के तमाशे और कभी कभी अनेक प्रकार के अद्भुत दृश्य दिखलाये जाते हैं। इन स्थानों में यूरोप के दोनों भीम—सामसन और सैण्डो (Samson and Sandow)—ने लोहे की ज़ंजीरों को अनायास हाथ से तोड़ कर हम लोगों को चकित कर दिया था।

चीनादैत्य चाङ्ग (Chinese Giant Chang)। जिसे मैं पहले कलकत्ते में एक बार देख चुका था, वह भी यहाँ एक डेढ़ हाथ के बौने के साथ दिखलाया गया। किसी म्यूज़िक-हाल में एक दफ़ा मैंने लिस्का (Elizabeth Lyska) नाम की एक रूस देश की बालिका को देखा था। उसकी अवस्था उस समय केवल बारह बरस की थी। लेकिन वह ६ .फ़ुट ८ इंच लम्बी और चौड़ाई में उससे भी अधिक थी। तब तक वह दो महीने में एक इंच के हिसाब से बढ़ रही थी। वह देह की मुटाई के माफ़िक भोजन भी करती थी। इन सब स्थानों की स्त्रियों की पोशाक-सम्बन्धी रुचि परिमार्जित रखने के लिए बीच-बीच में पूर्वोक्त सुनीति-संरक्षिणी सभा की महिलायें इन्हें समझाया-बुझाया भी करती हैं। इन स्थानों में चुरट, शराब आदि पीने की व्यवस्था प्रचलित होने के कारण तीन लाख के लगभग नर-नारी नित्य शाम के बाद आकर दो घड़ी

समय विता जाते हैं। यहाँ के नाचने-गानेवाले मर्द और औरतें अच्छी रक़म पैदा कर लेती हैं। ऐसा भी होता है कि एक ही रात को दस-दस जगह ये नाचते और गाते हैं। कोई नया गाना अच्छी तरह गा-सकने से गानेवाले का वड़ा नाम होता है। परस्पर की लागडॉट से इन लोगों की तनख़्वाह भी धीरे धीरे वढ़ जाती है। जहाँ ऐसे नामी गाने-नाचनेवाले जिस दिन खड़े होते हैं वहाँ से उस दिन, स्थानाभाव के कारण, कितने ही श्रोताओं को मन मार कर लौट जाना पड़ता है। मेरे सामने कालिन्स (Lottie Collins) नाम की एक महिला के "ता-रा-रा-वूम्-दि-ये" (Ta-ra-ra-boom-de-ay) नामक गाने के यश के सम्बन्ध में ऐसा हुआ था कि अन्त को अमेरिका तक वह इसी एक गाने को सुनाने के लिए गई। कुछ दिन तक उसे मासिक पाँच सात सौ पाउण्ड की आमदनी होती रही। एक वार लन्दन में इसकी मौत का झूठा समाचार फैल जाने से भयानक गड़वड़ मच गई थी। अख़वारों में प्रकाशित हुआ था कि देश के आधे प्रसिद्ध आदमियों के न रहने पर भी ऐसी गड़वड़ नहीं हो सकती। हमारे समय में, गानेवालियों में मैडम पाटी (Madame Patti) सवसे श्रेष्ठ थी। सुना जाता है कि वह एक घंटे का मेहनताना चार सौ गिन्नियाँ लेती थी। मैंने केवल एक दफ़ा अल्वर्ट हाल में उसका गाना सुना। उसका गला महीन तेज़ और मीठा था। कुछ दिन हुए, वह मर गई। उसने वहुत सा रुपया पैदा किया, और उसे दीन दुखियों की सहायता में जी खोल कर ख़र्च भी किया। इस स्त्री का गुण और स्वभाव, दोनों, धन्य थे।

थियेटर आदि मनोरञ्जक स्थानों के सिवा 'शीशमहल' की व्यवस्था के ढंग के अनेक खेल-तमाशे के स्थान हैं। यथा—रायल एक्वेरियम (Royal Aquarium), एग्रीकलचरल हाल (Agricultu-

ral Hall), ओलिम्पिया (Olympia) आदि। पहले के स्थान में घर के भीतर एक जलाशय है, उसमें तैरने का तमाशा दिखाया जाता है। डाल्टन नामक एक आदमी एक दफ़े डोवर की प्रणाली को तैरते तैरते पार हुआ था। उसने यहाँ आकर अपने तैरने के क़ायदे हमको दिखलाये थे। इसके सिवा रोज़ दस बजे से इस भवन के कई हिस्सों में अनेक तरह की वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के तमाशे दिखलाये जाते हैं। एक दफ़ा यहाँ एक छोटी सी मच्छड़ की गाड़ी (Flea) देख कर मैं सन्नाटे में आ गया था। दो मच्छड़ गाड़ी खींच रहे और एक मच्छड़ हाँक रहा, ऐसी एक अनुवीक्षणिक (Microscopic) गाड़ी बनाई गई थी। तीनों मच्छड़ ऐसे सिखाये हुए थे कि ठीक घोड़े और आदमी का ऐसा काम कर रहे थे। यह तमाशा मैग्निफ़ाइंग-शीशे (Magnifying glass) के बिना अच्छी तरह नहीं देखा जा सकता था। एक वैज्ञानिक पुरुष (Phrenologist) इस जगह एक दफ़ा छूकर मस्तक की परीक्षा कर लेते और उस आदमी की प्रकृति के बारे में बतला देते थे। बहुत कहते हैं और मैंने भी देखा कि उनकी बातें—(अर्थात् परीक्षा-फल)—अक्सर ठीक उतरती हैं। दूसरे स्थान में मिलिटरी-टूर्नामेन्ट (Military Tournament) आदि हुआ करते हैं। ओलि-म्पिया को एक मैदान कह सकते हैं। यहाँ जो नुमायशें होती हैं वे भी अद्‌भुत होती हैं। ओलिम्पिया का मैदान बहुत बड़ा है। उसको एक आदमी ने "The Colossal Hall of the world's greatest Metropolis" कहा था। यहीं पर विख्यात प्रदर्शक अद्भुत कर्मा मि० बार्नम (P. T. Barnum) ने अपनी प्रदर्शिनी दिखलाई थी। यह प्रदर्शिनी बहुत भारी थी। लन्दन-निवासियों ने इससे पहले ऐसी भारी नुमाइश नहीं देखी थी। चारों ओर इतने जानवरों के खेल एक साथ दिखलाये जाते थे कि देखनेवाला हैरान हो जाता था। वह किस

किसको और कहाँ तक देखे ? सिंह और बाघ की गाड़ी तो थी ही। इसके सिवा एक सौ से ऊपर छोटे-बड़े जानवरों के विचित्र तमाशे दिखलाये जाते थे। इनके सिवा और कई अति अद्भुत दृश्य इस प्रदर्शिनी के अन्तर्गत थे। जैसे—मेक्सिको के आदिम निवासी लुप्तप्राय अज़टेक (Aztecs of Mexico) जाति के कृष्णवर्ण स्त्री-पुरुष। पुरुष पौने तीन फुट और स्त्री ढाई फुट लम्बी थी। बाल घूँघरवाले थे। चेहरा देखने से जान पड़ता था कि उनका मस्तिष्क विकास-रहित है, मस्तक की गढ़न भी अच्छी नहीं है। इसके सिवा वे हाथ-पैर के, बहुत ही स्थूल, बहुत ही सूक्ष्म या क्षीण, सुन्दर दाढ़ी-मूछोंवाली स्त्री, निपट बौना आदमी आदि ईश्वर की विचित्र लीलायें यहाँ देखने को मिलती हैं। यहाँ जम्बो नाम के एक भारी हाथी की लाश एक जगह पर ज़िन्दे की तरह खड़ी हुई है। यह अमेरिका के रेलवे एंजिन के साथ लड़ कर घायल हुआ और मर गया था। यह पहले लन्दन की पशुशाला में था। बार्नम ने इसे २००० पाउण्ड में ख़रीद लिया और अमेरिका ले गया। यह सब दिखाने के बाद "सम्राट् नीरो (Nero) के द्वारा रोमनगर-विध्वंस" का अभिनय दिखाया गया। अभिनय पाँच अङ्कों में समाप्त हुआ। अन्त को कृस्तानी धर्म के उदय का बड़ा सुन्दर दृश्य देखने को मिला। इस अभिनय में ९०० पुरुष, ५०० स्त्रियाँ और इससे भी अधिक हाथी-घोड़े रङ्गमञ्च पर आते हैं। इसी से शायद पाठकगण समझ गये होंगे कि ओलिम्पिया कितनी बड़ी जगह है। वहाँ १५००० दर्शकों के बैठने की जगह है और इतना ही बड़ा 'स्टेज' है। यह अभिनय किराल्फ़ी (Imre Kiralfy) नामक एक इटलियन कारीगर ने सजा कर बार्नम की प्रदर्शिनी में रक्खा है। बार्नम की इस नुमाइश में ६ लाख पाउण्ड की लागत आई है और उसका रोज़ाना ख़र्च १३०० पाउण्ड है। बार्नम ने ४२ बरस यह काम किया। इस बीच में उन्होंने

१० करोड़ से ऊपर टिकट बेचे । लन्दन का राज-परिवार दो दफ़े प्रकाश्य रूप से आकर देख गया था और गुप्त रीति से सर्व-साधारण के साथ तो राजघराने के लोग अक्सर देख जाते थे । लन्दन में अनुपस्थित रहने के कारण केवल महारानी विक्टोरिया इस प्रदर्शिनी को नहीं देख सकीं । इसके लिए बार्नम से और कुछ दिन लन्दन में रहने का अनुरोध किया गया, पर उन्होंने ठहरने में अपने को असमर्थ बतलाया । उक्त शिल्पी ने पहले साल ओलिम्पिया में प्रसिद्ध जलमय नगर वेनिस की हूबहू नक़ल दिखलाई थी । वैसा ही पानी, गण्डोला, माँझी, नगर, बाज़ार, मकान, होटल, पुल, दूकान आदि सब दिखलाया गया था । मानों वेनिस नगर लन्दन में ले आया गया था । ज़मीन में कई अभिनयों और जल में रंगबिरंगी सुसज्जित नौकाओं के द्वारा वेनिस के उत्सव आदि उसी देश के ढंग से दिखलाये जाने से यह तमाशा सर्वाङ्ग-सम्पन्न हो गया था । इसके पहले मैं वेनिस नगर को प्रत्यक्ष देख आया था । इस कारण साधारण दर्शकों की अपेक्षा मुझे अधिक आनन्द मिला ।

और एक तरह का तमाशा लन्दन में देखा । हाइड पार्क में अक्सर कुछ लोग एक नई गढ़ी हुई मनोहर कहानी सुनाया करते हैं और सुननेवालों का मनोरञ्जन करके उनसे कुछ पैदा कर लेते हैं । शनिवार को शाम के बाद सड़क के किनारे भी इस तरह लोगों को कुछ पैदा कर लेते देखा जाता है । कोई कहानी और कोई प्रसिद्ध कवि की कोई सुन्दर रचना सुना कर लोगों को खुश करता और उनसे पैसे पाता है । इसके सिवा फ़ुटपाथ के ऊपर अनेक रंग की मिट्टियों से तसवीरें बना कर भी ग़रीब कारीगर दो पैसे पैदा कर लेते हैं । यह सब देख-सुन कर हमको जानना चाहिए कि शिक्षा पर साधारण लोगों का अनुराग बढ़ाने के उद्देश्य से ही लोग इस प्रकार का उत्साह-दान किया करते हैं । कभी कभी शाम के बाद निर्मल रात्रि

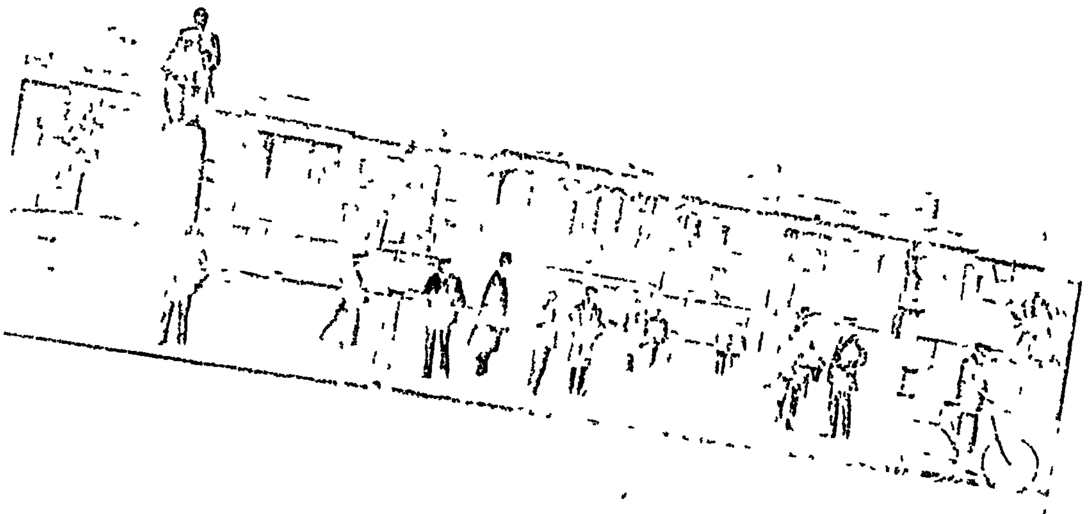
को फ़ुटपाथ के ऊपर देखा जाता है कि एक आदमी एक भारी दूरबीन खड़ी करके खड़ा हुआ है। रास्ते चलनेवाले लोग एक पेनी उसे देकर एक दफ़े आकाशमण्डल का निरीक्षण करते और चले जाते हैं। रास्ते की आटोमेटिक (Automatic) कलें दूकानदारी के लिए बुरी नहीं हैं। कल में एक जगह छेद है, वहाँ एक पेनी डाल देने से, दूसरे छेद से, उस कल के भीतर से, चुरट दियासलाई का बक्स, एसेंस आदि चीज़ें बाहर निकल आती हैं। ऐसी कलों में एक पेनी डाल देने से आँखों की परीक्षा या शरीर का वज़न भी कराया जा सकता है।

इन वर्णन किये हुए हज़ारों खेल-तमाशों के अलावा गर्मियों के लिए नियमित रूप से दो नये ढंग की नुमाइशें खोली जाती हैं। सन् १८९० की ऐसी ही सामरिक प्रदर्शिनी (Royal Military Exhibition) मे युद्धसज्जा, अस्त्र-शस्त्र, नकली अस्पताल आदि असंख्य चीजें दिखलाई गई थीं। उनमे से कुछ का उल्लेख यहाँ पर किया जाता है। टीपू सुल्तान की पीतल की तोप, तम्बू, तलवार और हौदा, भरतपुर का छुरा, ढाल और तलवार; सिपाहीयुद्ध की प्रसिद्ध झाँसी की रानी के हाथ का कवच; सम्राट् जहाँगीर की तलवार; नादिरशाह की तलवार; दिल्ली के अन्तिम सम्राट् की ढाल और तलवार; सन् १८१७ के सीताबर्डी के युद्ध में जीता हुआ भारतवर्ष का महाराष्ट्र-राजदण्ड; अवध की राज-तलवार; सन् १८५७ में लखनऊ घेरने के समय बाहर से कलम (Quill) में भेजा गया, ग्रीक हर्फ़ों में लिखा हुआ, अँगरेज़ी पत्र; उसी समय लखनऊ की भयानक अवस्था का वर्णन करके वहाँ के सेनापति ने इलाहाबाद में हावलाक साहब को जो लिखा था वह पत्र; घिरी हुई पल्टन की आर्डर-बुक, जो स्याही न होने से पानी में बारूद घोल कर लिखी जाती थी; प्रसिद्ध

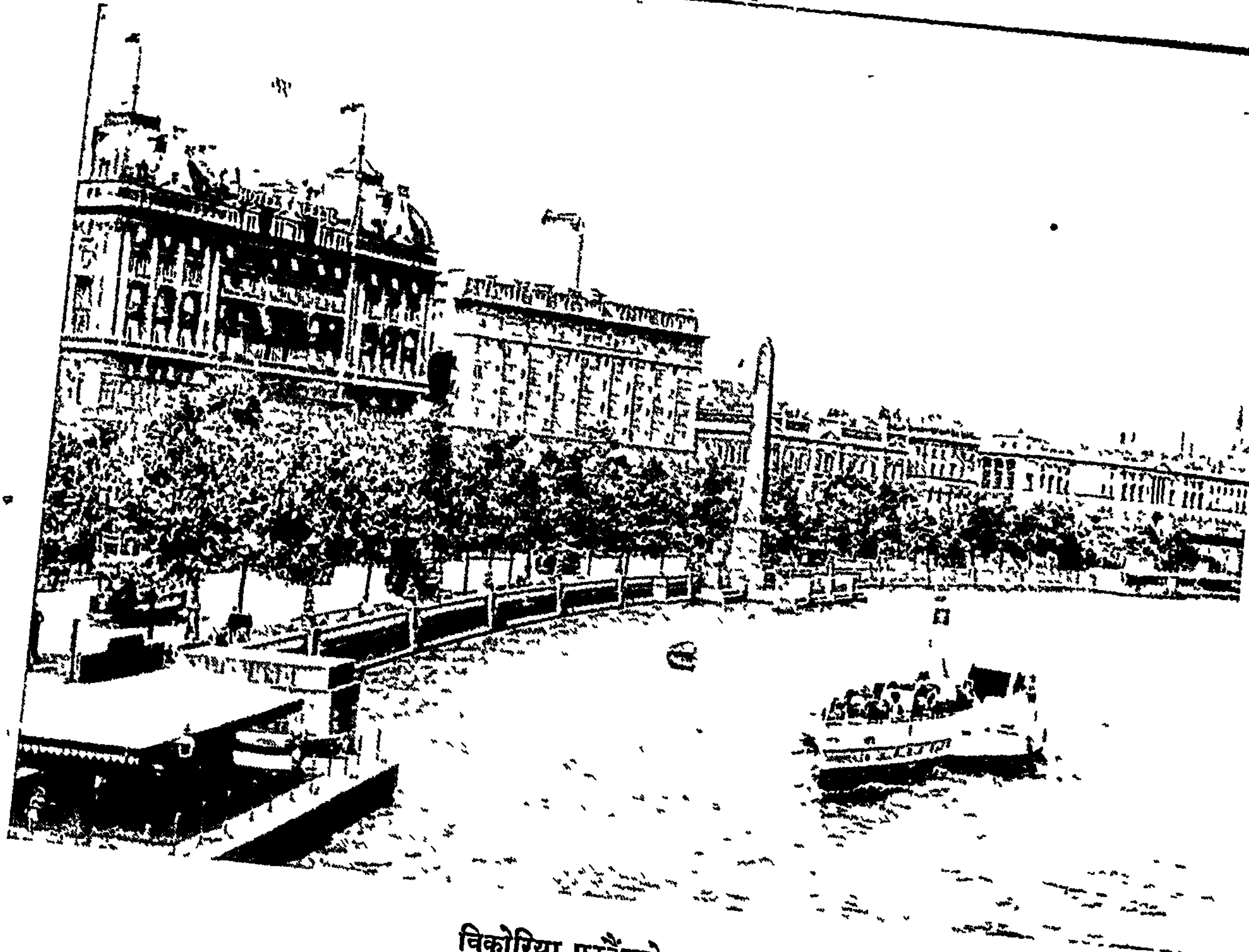
ताँतिया टोपी की पथरकला बन्दूक; ड्यूक आफ़् वेलिंगटन की पोशाक और वाटर्लू के मैदान में बाँधी गई उनकी तलवार, दूरबीन और फ़ील्ड-ग्लास (Field glass)। यह प्रदर्शिनी जहाँ स्थापित हुई थी वहाँ सन् १८४-९ में चिलियानवाला के युद्ध का एक स्मारक-स्तम्भ खड़ा किया गया था। वह भी प्रदर्शिनी के अन्तर्गत कर लिया गया था। इसके प्रवेशद्वार के ऊपर लिखा हुआ था—"It is on the Navy, under the good Providence of God, that our Wealth, Property and Peace depend." अवश्य यहाँ पर बहुत से तमाशे दिखाये गये थे; क्योंकि अँगरेज़ों की बहादुरी समुद्र में ही सबसे बढ़ कर है। युद्ध या व्यापार, किसी ओर से, कोई अँगरेज़ों को नहीं पा सकता। सन् १८९० में सारे साम्राज्य के व्यापार की क़ीमत १२० करोड़ पाउण्ड थी। पृथ्वी के आधे से भी अधिक वाणिज्य के जहाज़ों पर अँगरेज़ों की पताका फहराती है। इस प्रदर्शिनी में आर्कटिक (Arctic) प्रदेश की हूबहू नक़ल देखकर भारतेश्वरी विक्टोरिया तक बहुत ख़ुश हुई थीं। यहीं मेरे मन में उत्तर-अन्तरीप की यात्रा की इच्छा पैदा हुई थी। इस स्थान के अन्तर्गत जलाशय में सन्ध्या के बाद टारपीडो (Torpedo) का कला-कौशल दिखलाया जाता था।

सन् १८९० में आफ़्रिका-सम्बन्धी एक नई प्रदर्शनी स्थापित हुई थी। महात्मा स्टानली के द्वारा आमीन पाशा का उद्धार होने के बाद इस प्रदर्शिनी की सृष्टि हुई; इसी से इसका नाम स्टानली प्रदर्शिनी (Stanley and African Exhibition) रक्खा गया। यहाँ उक्त अन्धकारपूर्ण महादेश की अनेक बातों का ज्ञान, प्रत्यक्ष देख कर, प्राप्त किया जा सकता है। संग्रह बड़ा भारी है। केवल दृष्टि दौड़ा कर देखने में भी दो तीन घंटे से कम समय नहीं लग सकता।

ख़ार्तूम से भेजे हुए महात्मा गार्डन के कई टेलीग्राम यहाँ हैं।



नैशनेल गैलेरी—पृ० २२२



विकोरिया एम्बैं

डाक्टर लिविंगस्टन की भी अनेक चीज़ें यहाँ हैं। इसके आफ्रिका के जङ्गल, गाँव, गुलामों का रोज़गार और उसके कारख़ाने, सिंहों के रहने के स्थान आदि बहुत सी बातों की हूबहू नक़ल यहाँ देखने को मिली। ये सब चीज़ें ऐसे सजीव भाव से सजाई गई थीं कि अचानक देखने से असली का भ्रम होता था। एक मन बारह सेर भारी और नव फुट लम्बा एक हाथीदाँत यहाँ रक्खा है। इससे अच्छा हाथीदाँत शायद दुनिया में और कहीं न होगा। मध्य आफ्रिका की बौनी-जाति के दो बालक प्रदर्शिनी के भीतर खेलते घूम रहे थे। देखने में वे बड़े ही मनोहर थे।

व्यक्तिगत स्वाधीनता के सम्बन्ध में पृथ्वी पर ऐसी और कोई जाति नहीं है, और कभी नहीं हुई, जो ज़बान की बात और हाथ के लिखे के ऊपर कभी बाधा न डालती हो। जब तक तुम्हारी बात से प्रत्यक्ष में किसी को बेचैनी या किसी का नुक़सान नहीं होता तब तक तुमको कोई नहीं रोकेगा—तुम जो चाहे कह सकते हो, जो चाहे लिख कर प्रकाशित कर सकते हो। नित्य, ख़ास कर रविवार को, हाइडपार्क में कितने ही वक्ता खड़े होकर राजा, मन्त्री, राजकर्मचारी आदि के विरुद्ध जो चाहते हैं, कहते हैं। पुलिस के लोग तक खड़े खड़े सुनते हैं, पर कोई कुछ नहीं कहता। ऐसी वक्तृताओं से कोई कोई रुपया भी कमा लेते हैं। कभी कभी ख़ूब कड़े शब्दों में आलोचना करके श्रोता लोगों के पास घूम आते हैं और श्रोता लोगों से उन्हें पाँच सात शिलिङ्ग मिल जाते हैं। इसके सिवा सभा-समितियों में इस तरह की न-जाने कितनी वक्तृतायें हुआ करती हैं। किन्तु राज-पक्ष का कोई भी आदमी उधर ध्यान नहीं देता। उदाहरण-स्वरूप, लन्दन में मुद्रित, सन १८९२ की ७ वीं अप्रैल के ट्रुथ-नामक साप्ताहिक पत्र को देख लीजिए। उसके एक अंश में लिखा था कि "भयानक शीत के कारण

राजा, राज-परिवार और प्रधान मन्त्री का इस तरह विदेश में जाकर रहना उनका कर्त्तव्य नहीं है । इससे ऐसी घटना का होना असम्भव नहीं है कि वे किसी दिन लौट कर देखेंगे कि उनके लिए देश का द्वार बन्द है ”—इत्यादि । अँगरेज़ी की नक़ल नीचे दी जाती है ।

" Far be it from me to suggest any traitorous thoughts, but with the Sovereign, the Heir Apparent, and his Heir, together with almost every member of the Ruling House, besides the Prime Minister, absent upon the Continent, a tempting opportunity offers itself for the Revolutionary element in our midst to attempt to proclaim a Republic in Great Britain. Some day it might conceivably happen that so hazardous an experiment should prove too tempting, and it is within the bounds of possibility in such an event that our hereditary rulers might then find the British ports closed against them on their return. *Truth*—7th April, 1892.

कोई इन बातों को सुन कर विचलित नहीं हुआ, किसी ने कुछ जाँच-परताल नहीं की । यह बात अवश्य है कि बात पागलों की ऐसी है । फिर ब्रिटिश-सिंह इन बातों पर ध्यान क्यों दे ? किन्तु यहाँ पर आलोचना का विषय है राजा का स्वभाव । राजशक्ति की ऐसी राग-द्वेष-शून्य निर्भीक उदारता, प्रजावत्सलता, धैर्य, समता आदि किसी युग में कहीं नहीं देखी गई । इतिहास इस बात का साक्षी है । वर्त्तमान समय में अन्य देशों की बात ही नहीं है, फ़्रान्स और अमेरिका, जो ख़ूब स्वाधीनता-प्रेम की डींग मारते हैं, वे प्रजा-परतन्त्र होकर भी प्रजा को सामयिक प्रधान शक्ति के बहुत कुछ अधीन में रखते हैं । किसी की मजाल नहीं जो पदाभिषिक्त प्रेसीडेन्ट की कार्यप्रणाली की तीव्र आलोचना करके कुछ कहे या लिखे । पूर्व समय की बात जाने दीजिए, भारत के आधुनिक छोटे राजों के राज्य में ऐसी बात कह कर कोई अपनी जान नहीं बचा सकता । ऐसी दया कभी किसी राजा के राज्य में नहीं देखी गई । जो राजशक्ति प्रजा को मुक्तहस्त

होकर ऐसा स्वाधीन मत प्रकट करने का अधिकार दे सकती है, उसके चरणों में संसार कोटि कोटि प्रणाम करेगा। यह देखकर भी यदि हम पागलों की तरह "स्वत्व दो, स्वत्व दो" की पुकार दिन-रात राजा के पास करें तो सचमुच ही हम बड़े नीच हैं। बड़े सौभाग्यों से हमको ऐसी कृपालु राजशक्ति का आश्रय मिला है। हमारा इस समय एक यही कर्त्तव्य है कि हम अपने को लायक़ बनावें। उसके बाद राजा आप ही समझ-बूझ कर क्रमशः हमें सब हक़ देकर सुखी बनावेगा। अनेक रक्षणशील दल के लोगों के मुख से भी मैंने सुना है कि "हमारे अधीनस्थ देशों मे जो जब सम्पूर्ण रूप से योग्य होगा, हम उसी घड़ी आनन्दपूर्वक प्रेमालिङ्गन करके बालिग़ लड़के की तरह उसके हाथ में उसका सब भार दे देंगे। 'असहाय अवस्था से तुमको मनुष्य बनाया है; अब तुम समर्थ हुए हो, हमको फ़ुरसत देकर तुम अपना भार अपने हाथ मे लो,' यही हमारे हृदय का बात है। घबराओ नहीं— अपेक्षा करो"।

वास्तव में हम लोगों ने अनेक उपद्रवों से बच कर, "रिसीवर" के हाथ में सम्पत्ति देकर, बेखटके खा-पीकर निश्चिन्त भाव से ज़िन्दगी बिताने का जैसा अवसर पाया है, वैसा अवसर थोड़े भाग्य से नहीं हाथ आता। अब हमारा कर्त्तव्य यह है कि इन अँगरेज़ों के छत्र की छाया में रह कर अपने दिन फेर लें। जिसमे, इनकी अधीनता में स्वच्छन्दता के साथ शिक्षा लाभ करके किसी समय इनके सारे सद्‌गुणों के अधिकारी होकर जगत् की उन्नत जातियों में गिने जा सकें। हमको इसमें अपना गौरव समझना चाहिए कि ऐसे प्रबल प्रतापी और अभूतपूर्व उदारता के आदर्श-स्थल ब्रिटिश-साम्राज्य का अंश कह कर अपना परिचय देने का अधिकार विधाता ने हमको दिया है। धन्य है वर्त्तमान राजशक्ति की प्रजावत्सलता! धन्य है उसकी उन्मुक्त उदार प्रकृति!

लन्दन की दरिद्रता । यहाँ आकर जिनके निकट मैंने लन्दन की समृद्धि का उल्लेख किया उनमें से किसी किसी ने उसे हीन करने के इरादे से कहा—"लन्दन में भयानक दारिद्र्य भी है" । दोष खोजने का क्या प्रयोजन है ? बुरी बात को लेकर तो हमारा कोई लाभ नहीं है। अच्छी बात को जान कर अच्छे होने की चेष्टा से ही लाभ है । इसमें सन्देह नहीं कि लन्दन में अनेक दरिद्र लोग हैं; पर कहाँ नहीं हैं ? "सर्वत्र त्रिविधा लोका उत्तमाधममध्यमाः" । जैसा बड़ा शहर है, जैसी वहाँ लोक-संख्या है, उतनी ही दरिद्रता का रहना अस्वाभाविक नहीं । इसके अनेक कारण हैं । एक तो, कल-कारख़ानों के प्रचलित होने से देहात के बहुत लोग काम न पाकर कमाने की आशा से राजधानी में उपस्थित होकर विपत्ति में पड़ जाते हैं । दूसरे, शराबख़ोरी में बेशुमार ख़र्च करके बहुत लोग इस दुर्दशा में पड़े हुए हैं । तीसरे, अदूरदर्शी श्रमजीवी लोग व्याह करके बहुत सी सन्तानों के साथ कष्ट पाते हैं । पृथ्वी में और कहीं बाल-बच्चों की इतनी संख्या नहीं देखी जाती । जो कुछ हो, दरिद्रता के इन सब कारणों को दूर करने के लिए वहाँ सहृदय महात्मा लोग पूरी चेष्टा कर रहे हैं । इस सम्बन्ध में जगद्-विख्यात डाक्टर बार्नार्डो, जनरल बोथा और मुलर आदि प्रातःस्मरणीय महापुरुष जो यत्न कर रहे हैं, उसे अनेक लोग जानते हैं; इसलिए उसका उल्लेख यहाँ पर नहीं किया जाता । इस लोक में वे भगवान् के हाथ से अपने कार्य का उचित पुरस्कार पा रहे हैं, और परलोक में भी पावेंगे । हम लोगों में उनके पदाङ्क का अनुसरण करनेवाला अगर एक भी आदमी हो, तो हम कृतार्थ हो जावें । रास्ते में पड़े हुए अनेक दीन-दरिद्र बच्चों को महात्मा बार्नार्डो ने पाला-पोसा और बड़ा किया है । उनके आश्रम में लालित-पालित शिक्षित सैकड़ों बालक जब धनोपार्जन के लिए देश-विदेश में भेजे जाते हैं, तब वे पहले कभी

कभी अलवर्टहाल में आकर साहाय्यदाता महोदय के दर्शन कर जाते हैं। पाठकगण सोच कर देखें कि उनके मन मे, उन बालकों के हृदय में, और दाता लोगों के चित्त मे कैसी अनिर्वचनीय कृतज्ञता और आनन्द की लहरें उठती हैं। उस समय निश्चय देवता लोग इस स्थान पर स्वर्ग से प्रेम-पुष्प-वर्षा करते होंगे। इसी तरह ५००० से भी अधिक बच्चों को उन्होने पाला-पोसा है।

इसी के साथ महात्मा पीवडी (George Peabody) का उल्लेख न करना अनुचित होगा। यह एक अमेरिकन सौदागर थे। अन्तिम अवस्था मे लन्दन में रह कर सन् १८६९ में स्वर्गीय दुन्दुभि-ध्वनि के साथ वेस्ट-मिनिस्टर-एवी में यह गाड़े गये। इन्होंने ५ लाख पाउण्ड खर्च करके दरिद्र श्रमजीवियों के रहने के लिए एक बड़ी भारी इमारत बनवा दी है। जिस समय इन्होंने यह भारी दान किया, उस समय महारानी विक्टोरिया ने इनको धन्यवादसहित पत्र लिखा था। उसके उत्तर मे इस प्रकार इन्होंने अपने हृदय के महत्त्व का परिचय दिया था—"आपका धन्यवाद-पत्र पाकर मैं सुखी हुआ। ईश्वर की प्रसन्नता और विवेक के अनुमोदन के नीचे मैं उसको स्थान दूँगा"।

आजकल बहुत पादरी और प्रतिष्ठित कृस्तान नर-नारी दरिद्रों की बस्ती के पूर्वाञ्चल (East End) मे, दीन-दुखियों के बीच में, रह कर उनकी उन्नति के लिए मन-वाणी-काया से परिश्रम कर रहे हैं। इस प्रकार निःस्वार्थ भाव से मनुष्य-सेवा मे जीवन अर्पण करके निःसन्देह वे ईसा के इस कथन का अनुसरण कर रहे हैं—

" Inasmuch as ye have done it unto one of the least of these, my brethren, ye have done it unto me" अर्थात् मेरे निहायत छोटे भाई के साथ जो तुमने सलूक किया, वह मानों मेरी ही सेवा की।

असहाय पीड़ित व्यक्तियों की सेवा के लिए कितनी ही बे-ब्याही धनकुबेरों की कन्यायें प्रातःकाल के भोजन के उपरान्त अस्पतालों में जाकर दिन भर आनरेरी धाय का काम करती हैं। यह लन्दन के लिए कम गौरव की बात नहीं है।

बोर्ड-स्कूल की स्थापना के द्वारा दरिद्र सन्तानों की शिक्षा की विशेष व्यवस्था की गई है। ऐसे लड़कों को राह में घूमते-फिरते देख कर उन्हें पकड़ कर पुलिस स्कूल में ले जाती है, और उन बालकों के पिता-माता की खोज करके उनकी शिक्षा का प्रबन्ध करती है।

दरिद्र और अन्धे-लँगड़े आदि के लिए अलग अलग आश्रम हैं। वहाँ जाकर परिश्रम करने से अनिच्छा भी दरिद्रों की संख्या-वृद्धि का एक कारण है। प्रकाश्यरूप से भीख माँगना मना होने के कारण देखा जाता है कि बहुत से अन्धे गले में एक 'अन्धा' लिखा हुआ टिकट और भीख जमा करने का एक टीन का 'मग' लटकाये हुए फुटपाथ के ऊपर, या एक कुत्ते के साथ, या दियासलाई का बक्स हाथ में लिये धीरे धीरे जा रहे हैं। दियासलाई का बक्स इससे हाथ में लिये रहते हैं, जिसमें जान पड़े कि दियासलाई बेच रहे हैं; नहीं तो पुलिस पकड़ लेगी।

लन्दन की सड़कों में और एक बड़ा ही मनोहर दृश्य देखा जाता है। जिस जिस जगह रास्ता पार करना होता है वहाँ वहाँ एक दफ़ा कुछ लोगों के जमा होते ही पुलिस घोड़ा-गाड़ियों को बन्द करके उन्हें बिना किसी कष्ट के पार कर देती है। इनमें प्रायः छोटे बच्चों को गोद में लिये सात-आठ-नव बरस की दो-एक दरिद्र बालिकायें रहती हैं। एक दिन इसी तरह की एक लड़की से किसी भद्र पुरुष ने पूछा तो उसके उत्तर में उसने कहा—"छोटे भाई को लेकर मैं अगर बाहर न घूमूँ तो उसके उपद्रव से मेरी मा हम लोगों के लिए रोटी नहीं बनाने

पातीं। वह जब इस तरह हमारी सेवा करती हैं, तो क्या हमारा यह कर्त्तव्य नहीं कि इसी तरह यथाशक्ति उनकी सहायता करें ?"। कैसा सुन्दर दृश्य और कैसे स्नेह की बात है!

लन्दन के दारिद्र्य को उसका कलंक बता कर बहुत लोग उनके गौरव को कम करने की चेष्टा किया करते हैं। किन्तु चन्द्रमा में भी तो कलङ्क है। दरिद्रों का दुःख दूर करने के लिए ब्रिटिश-द्वीप में सालाना एक करोड़ पाउण्ड से भी अधिक ख़र्च होता है। इसका एक-तिहाई ख़ुद लन्दन के लोग देते हैं।

लन्दन का लोक-चरित्र। धर्म, नीति, चरित्र आदि के सम्बन्ध में जो बहुत से सद्गुण इन लोगों में देख पड़ते हैं वे अनेक जातियों के लिए निःसन्देह अनुकरणीय हैं। धर्म शब्द से केवल कुछ शारीरिक और अन्य प्रकार के नियमों के पालन का ही बोध नहीं होता। दया-दाक्षिण्य आदि गुणों को प्राप्त कर, उन्हें नित्य के जीवन में कार्यरूप से कर दिखलाना ही सच्चा धर्म है। यह क्या सहज में ही पाला जा सकता है? पुरुषपरम्परा से शिक्षा और अभ्यास के द्वारा इस प्रकार धर्म को चरित्रगत होना चाहिए कि समय उपस्थित होने पर सत्कार्य में प्रवृत्त होने के पहले किसी प्रकार सोच-विचार या तर्क न उठे, और भूखा अन्न की ओर अथवा प्यासा जल की ओर जिस तरह जाता है, उसी तरह आपही आप मन की प्रवृत्ति उस ओर हो। मेरी छोटी समझ में तो यही आता है कि जो जाति जितनी दुर्बल, पीड़ित, असहाय, वृद्ध, अबला, बच्चे, विदेशी और विपन्न पर दया दिखाती है, वह जाति उतनी ही उन्नत है। अँगरेज़ों को ऐसे दीन-दुखियों पर विशेषरूप से दया दिखाते देखा गया है। राह में तेज़ी से जाते समय भी इस बात पर हर एक अँगरेज़ विशेष दृष्टि रखता है। नगर के आसफ़ाल्टों के रास्ते बहुत ही चिकने हैं। इस कारण ज़रा

भी बरसने से गाड़ियों के घोडे अक्सर फिसल कर गिर पड़ते हैं। ऐसी घटना होने पर उसी घड़ी चारों ओर से लोग आकर फ़ौरन् गाड़ीवान को सहायता पहुँचाते और घोड़ों को खड़ा कर देते हैं। और, वे इस तरह काम करके चले जाते हैं कि विपत्ति से उबरे हुए गाड़ीवान को धन्यवाद देने का भी अवसर नहीं मिलता। यह तो हुई लन्दन की सड़कों की हालत। और, हमारे यहाँ का यह हाल है कि ऐसी घटना होने पर सहज में कोई उसके पास भी नहीं जाना चाहता। बल्कि जो जाना चाहते हैं उन्हें भी बहुत लोग "शतहस्तेन वाजिनः" यह चाणक्य की नीति का वचन सुनाकर लौटाने की चेष्टा करते हैं। और एक उदाहरण लीजिए। एक ग़रीब बालक का बाप मर गया। उसने अपनी दुखिया माता से पूछा कि उनके दुःख को कौन दूर कर सकता है? माता ने उत्तर दिया कि भगवान् के सिवा और कौन दूर कर सकता है? यह सुनकर नासमझ लड़का स्वर्ग के पते पर ईश्वर के नाम एक चिट्ठी लिख कर, उस पर एक पेनी का टिकट लगा कर रविवार को सबेरे (क्योंकि उसने सुना था कि रविवार ईश्वर के अवकाश का दिन है) डाक में छोड़ने के लिए सड़क-किनारे के लेटर-बक्स के पास गया। वहाँ तक हाथ न पहुँचने के कारण उसने एक ईंट ला कर रक्खी और उस पर खड़ा हुआ। फिर भी हाथ न पहुँचने पर वह लड़का दूसरी ईंट लाने के लिए जा रहा था। उसी समय उधर से एक पादरी तेज़ी के साथ गिर्जे की ओर जा रहे थे। दयालु पादरी ने बालक की सहायता करने के लिए ठहर कर उसके हाथ से चिट्ठी लेकर लेटर-बक्स में छोड़ना चाहा। इतने में उनकी नज़र सरनामे पर पड़ी तो उसमें लिखा था—ईश्वर, स्वर्ग। पत्र के बारे में बालक से पूछ कर सब हाल जान लिया। उसके बाद बालक से कहा—"यह पत्र तो इस डाकघर से जा नहीं सकता; इसके

लिए अलग डाकघर है। मेरे साथ आओ"। बालक को वह गिर्जे में ले गये। वहाँ का नियमित उपासना आदि कृत्य समाप्त होने पर दान-संग्रह के समय वेदी के पास बालक को बुला कर उन्होंने वह पत्र आदि से अन्त तक सबके आगे पढ़ा और उसका सब हाल कह सुनाया। साधारणतः लन्दन के हर एक गिर्जे में रविवार को दोनो वक्त में ७०। ३० पाउण्ड जमा हो जाते हैं। किन्तु उस दिन इस बालक की सहायता के लिए उससे कहीं अधिक दान जमा हो गया। उस धन-सहित बालक को लेकर पादरी साहब ने उसकी मा के पास जाकर कहा— 'तुम्हारे पुत्र ने आज सहायता के लिए भगवान् को जो पत्र लिखा था, उसके बदले में यह धन ईश्वर ने तुमको भेजा है। इसे लेकर ईश्वर को धन्यवाद दो"। पाठकगण ज़रा सोच कर देखिए, इस उदाहरण में कैसा जातीय चरित्र-गत धर्मबल झलक रहा है! जहाँ के लोग इस प्रकार पराये दुख को नहीं देख सकते, वहाँ ईश्वर स्वयं अपनी प्यारी लक्ष्मी के साथ निवास करते हैं। और एक उदाहरण लीजिए। एक दफ़े टेम्स नदी में डूबते हुए किसी बालक को एक आदमी ने निकाला। पुलीस ने आकर उसका नाम-धाम पूछा तो वह उसी घड़ी यह उत्तर देकर चला गया कि "मैंने क्या यश की घोषणा अथवा पुरस्कार पाने की प्रत्याशा से यह काम किया है? मैंने तो इसे अपना कर्त्तव्य समझ कर उसका पालन किया है"। हमारे यहाँ अगर कोई किसी का उद्धार करता तो वह वहाँ पर दो घंटे खड़े रहकर इकट्ठे हुए लोगो के आगे इस प्रकार लेक्चर झाड़े बिना न रहता कि "मेरा यह नाम है, मेरे बाप का यह नाम है, मेरे बाप ने भी इसी तरह बहुतों की जानें बचाई हैं। मैंने भी कई दफ़े योंही कई जानें बचाई हैं। मैं अगर न होता तो आज यहाँ यह बालक डूब ही गया था—इत्यादि इत्यादि"। और एक उदाहरण लीजिए। हमारे साथ

एक महाशय और रहते थे। उनके पास अमेरिका से ख़बर आई कि उनकी सारी पूँजी—दस-बारह लाख रुपये—वहाँ की किसी कम्पनी के फ़ेल हो जाने से डूब गये। यह ख़बर उन्होंने ज़ाहिर नहीं की; बल्कि वैसे ही हँसी-ख़ुशी के साथ बातचीत करते रहे। कई दिनों बाद उनके एक ख़ास दोस्त ने आकर हम सबको यह ख़बर दी। लन्दन में यही नियम है कि घर में किसी को विपत्ति या शोक का समाचार मिलने पर भी, वह आनेवाले को उसका आभास देकर भी उसे कष्ट नहीं पहुँचाता। और हमारे यहाँ, घर में किसी का कुछ चिन्ता या कष्ट होने पर हर एक आनेवाले और मिलनेवाले के आगे वही रोना रोवेंगे; और कोई बात ही न करेंगे। केवल हम लोग ही ऐसे नहीं हैं। हमारे साथ पहले कुछ दिन एक जर्मन था। किसी काम में उसे ५०० पाउण्ड का नुक़सान होगया। उसके उपरान्त राह मे जितने दफ़े उससे मुलाक़ात हुई, उसने यह कह कर अपना ही रोना रोया कि "हम ग़रीब जाति हैं। हम अँगरेज़ों के ऐसे धनी तो हैं ही नहीं। वे ५०० पाउण्ड को कुछ नहीं समझ सकते। लेकिन हमारे लिए वही बहुत है। मेरा बड़ा भारी नुक़सान हो गया। क्या करूँ, मुझे तो कुछ सूझ नहीं पड़ता!"

अँगरेज़ और फ़्रेञ्च स्त्री-पुरुषों के पत्र लिखने में इतना अन्तर है कि अँगरेज तो सीधी-सादी ख़बर दे देते हैं और ख़बर पूछ लेते हैं, मगर फ़्रेञ्च लोग ऐसी लच्छेदार बातें लिखते और स्नेह जताते हैं कि पढ़नेवाला पढ़ते पढ़ते खीझ उठता है।

अँगरेज-महिलाओं के चरित्र के सम्बन्ध में निकृष्ट उत्तर की आशा से हम लोगों में से अनेक लोग इस प्रश्न को उठाते हैं। इस बारे में मेरा यह विश्वास है कि उच्च और नीच—इन दोनों श्रेणियों की स्त्रियों में कुचरित्रा स्त्रियों का होना भी सम्भव है। और, यह हाल

किस देश का नहीं है? किन्तु मध्यसमाज, जो जातीय अस्थि-मज्जा समझा जाता है, अत्यन्त पवित्र है। गृहस्थो की पवित्रता अँगरेज़ों की एक बड़े गौरव की चीज़ है। वे प्रकाश्यरूप से कहा करते हैं कि इस पवित्रता के ऊपर ही उनका विशाल साम्राज्य और भारी प्रतिष्ठा स्थापित है।

अपने अपने विश्वास के अनुसार धर्म की शिक्षा प्राप्त करना यहाँ हर एक गृहस्थ का एक ख़ास काम है। रोज़ सवेरे भोजन के पहले घर का मालिक सारे परिवार को साथ लेकर भगवान् के निकट प्रार्थना करेगा और प्रातःकालीन भोजन के उपरान्त बाइबिल के किसी विशेष अंश को सबके साथ पढ़ेगा। इसके सिवा रात को सोने जाने के पहले भी एक बार नित्य नियम के साथ प्रार्थना होती है। स्वयं भारतेश्वरी विक्टोरिया ने अपने बच्चों को बाइबिल पढ़ाई थी। राजकुमारों की बाल्यावस्था में एक पादरी ने उनकी बाइबिल की जानकारी से प्रसन्न होकर कहा था कि "तुमको जिसने सिखलाया है वह विशेष प्रतिष्ठा के योग्य है।" इस पर राजकुमारों ने कहा—'हमारी माता खुद हमें बाइबिल की शिक्षा देती हैं"। इतना ही नहीं, राजराजेश्वरी होकर भी वह अपने बच्चों के चरित्र पर ख़ास नज़र रखती थीं। एक दिन एक मेले में विक्टोरिया की बड़ी लड़की (उस समय बाल्यावस्था थी; फिर वह जर्मन-सम्राट् की माता हुईं) माता के साथ गाड़ी पर जा रही थीं। कुछ सैनिक कर्मचारियों को देखकर प्रसन्नता प्रकट करने के लिए राजकुमारी रूमाल हिला हिला कर क्रीड़ा सी करने लगी। माता के टेढ़ी नज़र से घुड़कने पर भी बालिका ने वह रूमाल फेंक दिया। सैनिक उच्च कर्मचारीगण रूमाल उठाकर देने के लिए दौड़े। विक्टोरिया ने सबको रोक दिया, और बेटी को खुद नीचे उतर कर रूमाल उठा लाने के लिए बाध्य किया। राजकुमारी

के पिता भी इस बारे में कम न थे। एक दिन वह और बड़ा लड़का घोड़े पर चढ़े जा रहे थे। रास्ते में एक आदमी ने इन लोगों को सलाम किया। युवराज बदले में सलाम करना भूल गये। यह देख कर पिता ने युवराज को उसी समय उस आदमी के सलाम का जवाब देने के लिए लौटाया। इसी से पाठकगण जान जायँगे कि इस जाति के राजा से लेकर साधारण प्रजा तक चरित्र-रक्षा के विषय में अन्यान्य जातियों की अपेक्षा अधिक सावधान रहते हैं।

अब पाठकगण स्वयं समझ लेंगे कि इस विषय में अँगरेज़ों का कौन दर्जा है। मैंने तो जहाँ तक देखा है, मुझे अँगरेज़ ही सबसे श्रेष्ठ जँचते हैं। यूरोप जाने के पहले मुझे अँगरेज़ जाति पर ऐसी अश्रद्धा थी कि मैंने अँगरेज़ी जहाज़ छोड़ कर इटली के स्टीमर पर यात्रा की। मुझे यह खटका था कि अँगरेज़ी स्टीमर के यात्रियों से और मुझसे बर्ताव के बारे में कुछ खटपट न हो जाय। किन्तु अँगरेज़ों के देश मे जाकर जो मैंने देखा वह मेरी धारणा के सम्पूर्ण विपरीत निकला। यहाँ पर भी यही प्रश्न उठता है कि फिर लन्दन के अँगरेज़ों की प्रकृति और जगह के अँगरेज़ों से भिन्न क्यों है? इसका कारण यही कहा जा सकता है कि लन्दन के अँगरेज़ जानते हैं कि सारा जगत् इँगलैंडमय है; सारी पृथ्वी के लोग स्वाधीन, स्वतन्त्र, धीर, स्थिर, शान्त, समाहित, सत्यप्रिय, दयालु, निष्कपट, पराये दुख को न देख सकनेवाले, सुशील, भव्य, शिष्ट, वीरोचित नम्रता गुण से युक्त और विनयी हैं। किन्तु डोवर की नहर पार होते ही उनका यह ख़याल धीरे धीरे दूर होता जाता है और भू-मध्यसागर पार होने पर इधर के लोगों को चेहरे मे, स्वभाव मे, बुद्धि में, चरित्र में सम्पूर्ण रूप से विभिन्नता देखकर उनकी बुद्धि पलट जाती है। हज़ार शिक्षित होने पर भी वे मनुष्य के सिवा देवता तो बनही नहीं जाते? यहाँ

पर बहुत कुछ हमारा ही दोष है। हम यह चाहते हैं कि हम जो कुछ हैं वही बने रहें, और पृथ्वी भर के लोग हमें महात्मा भीष्म और अर्जुन का ऐसा संमान दे। किन्तु मनुष्यलोक मे यह असम्भव है, विधाता की यह व्यवस्था नहीं है। पहले पाने के योग्य बनो और फिर पाने की इच्छा करो। यह संसार का एक कठोर नियम है। इसके कारण तो अनेक हैं, पर सबके उल्लेख का यह स्थान नहीं है। केवल दो एक का निर्देश यहाँ विशेषरूप से किया जाता है। हम पृथ्वी भर की सब जातियों को म्लेच्छ कह कर उनसे सोलहों आने घृणा करें और वे हमको सिर चढ़ा कर नाचे, ऐसी आशा करना क्या पागल का काम नहीं है? और भी एक देव-दुर्लभ गुण हममें है खुशामद या खुशामद पसन्द करना! इसी ने हमारी इतनी उन्नति की है! इससे दोनों को—खुशामदी और खुशामदपसन्द को—भारी हानि होती है। जो मनुष्य अपने मातहत लोगों से खुशामद चाहता है उसके सम्बन्ध मे यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि वह भी अपने अफ़सरों की चापलूसी में हर घड़ी लगा रहता है। यह स्वर्गीय गुण अँगरेज़ों के ठंडे मुल्क में, जहा न वसन्त ऋतु है और न कोमलता है, नहीं मिलता। और हम? हम लोगों में तो यह गुण भरपूर भरा पड़ा है! फल यह होता है कि हम जिस आशा से खुशामद करते हैं उसका कुछ फल हमें, व्यक्तिगत रूप में, अवश्य मिलता है; लेकिन उसके कारण विजातीय लोगों को हमारी सारी जाति पर एक प्रकार की विजातीय घृणा सी हो जाती है। हम सी० आई० ई० या रायबहादुर अवश्य हो जाते हैं, लेकिन इसी के साथ हमारे देश की इज़्ज़त लातों से रौंद डाली जाती है! इसी तरह की अनेक बातें हैं। इससे ऐसे मामलों मे पहले विचारपूर्वक अपनी ओर देखकर दूसरे पर दोषारोप करना अच्छा होता है। मेरी छोटी

समझ में तो अगर इन बातों के लिए किसी को दोष दिया जा सकता है तो अपने भाग्य ही को। आज अगर हम सिर झुका कर खड़े होने के बदले सिर उठा कर खड़े होना सीख लें तो कल वैसी नालिश करने का मौक़ा ही हाथ न आवेगा। यह ध्रुव निश्चय है कि ऐसा होने पर हम लोगों को यह कह कर रोना नहीं रोना पड़ेगा कि अँगरेज़ लोग हमसे स्नेह का वर्ताव क्यों नहीं करते!

लन्दन में हुजूग। बहुत लोगों का यह ख़याल हो सकता है कि पूर्व-देशीय लोग ही अज्ञान के अन्धकार में पड़े हुए हैं और इसी से अस्वाभाविक बातों पर सहज ही विश्वास कर लेते हैं; लन्दन ऐसी पृथ्वी के सभ्यतम देश की राजधानी में, इस बीसवीं सदी के आरम्भ में, वैसी बातों को लोग पागलों का प्रलाप समझ कर उड़ा देते होंगे। किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। हुजूग के सम्बन्ध में अन्यान्य स्थानों की अपेक्षा लन्दन कुछ कम नहीं है। बल्कि लोग वहाँ गाँठ का पैसा ख़र्च करके ऐसे हुजूगों में शामिल होते हैं। वहाँ साठ लाख आदमी रहते हैं। अगर कोई अच्छा हुजूग खड़ा करके दो चार हज़ार आदमियों को भी ख़ुश कर सका, उसका मतलब हो गया। उदाहरणस्वरूप सन् १८८९ की एक घटना का यहाँ पर उल्लेख किया जाता है। उस समय मैं पहले ही पहल लन्दन गया था। राह में देखा विज्ञापन बँट रहे हैं। उनमें अद्भुत अद्भुत भविष्यद्वाणियाँ लिखी हुई हैं। विज्ञापन में लिखे हुए स्थान पर जाकर देखा, एक पादरी एक भारी 'हाल' में तरह तरह की विचित्र तसवीरें दिखाकर व्याख्यान देते हुए पैसे वसूल कर रहे हैं। परदार घोड़े के मुँह से आग निकल रही है; सींगों और परोंवाला उड़ रहा शेर मुँह फैलाये धुआँ उगल रहा है। इस तरह की बहुत सी अप्राकृतिक भयानक दृश्यावलियों की भारी भारी तसवीरें हाल की दीवार में टँगी हुई थीं।

लोगों का जमाव भी कम न था; पैसा भी खूब आ रहा था। विज्ञापन के अनुसार व्याख्यान दिया जा रहा था कि "सन् १८६० में, यूरोप में, भयानक युद्ध होगा और उसके कारण २३ राज्यों के १० ही राज्य रह जायँगे। अँगरेज़ों के हाथ से आयर्लैंड और भारत निकल जायगा। सन् १८६२ में नेपोलियन ग्रीक-राज के रूप में प्रकट होगा। सन् १८६६ में १,४८,००० ईसाई सशरीर स्वर्ग को जायँगे। सन् १६०१ मे ईसा का अवतार होगा। इत्यादि इत्यादि"। मुझे विश्वास है कि इस देश का अगर कोई वहाँ जाकर फलित-ज्योतिष या सामुद्रिक का रोज़गार करे तो वह बहुत रुपया पैदा कर सकता है।

लन्दन की सूची। लन्दन में ६ स्तम्भ और ४७ मूर्तियों के सिवा ६४ प्रकाश्य स्मारक चिह्न, न्यूनाधिक ३ ००० प्रोटेस्टेन्ट, ३०० रोमन कैथलिक और २,००० अन्यान्य फ़िर्क़ों के पादरी, २,५०० बैरिस्टर, ४,००० एटर्नी, ७,००० डाक्टर, ४,५०० एपथिकरी और दवाफ़रोश, सर्वसाधारण की सहायता से रक्षित २५ बड़े और कई छोटे अस्पताल, २,५०० ग्रन्थकार, ७,५०० बाजे बजानेवाले, ३,५०० नट और नटी, २२,००० स्कूलमास्टर, ३,५०० विज्ञान का व्यवसाय करनेवाले, १०,००० होटलवाले और पीने की चीज़ें बेचनेवाले, ४,००० बियर शराब बेचनेवाले, ५,००० काफीख़ानों के मालिक, २२,००० छापेख़ाने, ५,००० बुकसेलर, ७,००० घड़ीवाले, ८,००० जौहरी, २५,००० दर्ज़ी, ३०,००० दर्ज़िनें, ७५,००० पोशाक बनानेवाले, ३२,००० जूतेवाले, १४,००० मांस बेचनेवाले, ६,००० मछली बेचनेवाले, १५,००० रोटीवाले, १४,००० चाय बेचनेवाले, और ४,००० बियर शराब बनानेवाले हैं।

बस अब यहीं पर लन्दन का वर्णन समाप्त किया जाता है। और

कहाँ तक कहूँ ? पाठकों को इसी से अनुमान कर लेना चाहिए कि अभी तक लन्दन का कुछ भी वर्णन नहीं किया जा सका। वास्तव में लन्दन शहर एक ऐसी ही जगह है कि उसे देखे बिना उसका पूरा हाल नहीं जाना जा सकता। जिस महानगरी को "Heart of the world" पदवो मिली है उसका वर्णन करना सहज काम नहीं है। अन्त में किसी कवि का बनाया हुआ एक अँगरेज़ी का पद्य नीचे उद्धृत करके लन्दन का वर्णन समाप्त किया जाता है। अपने दोष और पराये गुण को बड़ा करके देखना अँगरेज़ों का स्वभाव है। इसी से इस कविता के कवि ने वहाँ के दोष-भाग का विशेष रूप से वर्णन करके गुण-भाग का संक्षेप से वर्णन किया है। जो कुछ हो, इस पद्य के द्वारा थोड़े शब्दों में लन्दन का एक आभास देने की चेष्टा की गई है।

LONDON DAY BY DAY.

The smoke in vaster volumes rolls,
The fever fiend takes larger tolls,
And sin a fiercer grip of souls,
In London day by day.

Still Buggins builds on swampy site,
And Eiffel houses block the light,
And make a town of dreadful night,
Of London day by day.

In fashion's long and busy street,
The outcast foreign harlots meet,
While Robert smiles upon his beat,
In London day by day.

Still modest maiden's cheeks are stung
With foulest words from wanton's tongue,
And oaths yelled out with leathern lung,
In London day by day.

Wealth riots in a mad excess,
While thousands, poor and penniless
Starve in the mighty wilderness,
In London day by day.

Wrong proudly rears its wicked head,
While rights' sad eyes with tears are red
And sluggard Justice lies abed,
    In London day by day.

The liar triumphs and the knave
Rides buoyant on the rolling wave,
And Liberty makes many a slave,
    In London day by day.

Yet Hope and Trust and Faith and Love,
And God's fair dowers from above,
Still find a branch, like Noah's dove,
    In London day by day

And onward still, though slow the pace,
Press pilgrims of our grand old race,
Who seek the right with firmset face,
And shew Truth's light by God's good grace
    O'er London day by day

फ़्रान्स ।



न् १८८९ की चौथी सितम्बर को हम तीन भारतवासी एक वजे रेल पर चढ़े, और लन्दन छोड़ कर 'डोवर' की ओर चले। बहुत से प्रसिद्ध यात्रियों का कहना है कि लन्दन और डोवर (Dover) के मध्यवर्त्ती प्रदेश का सा सुन्दर दृश्य पृथ्वी भर पर और कहीं नहीं देखा जाता। वास्तव में मैंने भी ऊँची-नीची ज़मीन पर हरे-भरे खेत, बाग़ और हरी घास से ढके हुए मख़मल ऐसे चिकने कोमल साफ़ भूमि-खण्ड, इस प्रकार सुन्दर ढङ्ग में, कहीं नहीं देखे। ठीक समय पर हम डोवर पहुँच गये। वहाँ सात आठ घंटे ठहरने के बाद रात को दस बजे प्रणाली (Strait) पार होने के लिए हम लोग जहाज़ पर चढ़े। डोवर और कैले (Calais) के बीच में समुद्र केवल २५ मील है। सन् १८७५ में २४ अगस्त को सुप्रसिद्ध तैराक वेब साहब (Captain Webb) सवेरे १० बजे के ४ मिनट पर पानी में उतरे और २१ घंटे ४५ मिनट में इस साढ़े बारह कोस समुद्र को तैर कर पार हो गये थे। उनके बाद डाल्टल नाम का एक आदमी, सन् १८९० में, पार हुआ था। इस तैराक की चातुरी हम लागों ने लन्दन में देखी थी। दो घंटे के लगभग जहाज़ में रह कर आधी रात के समय हम लोग कैले-बन्दर में पहुँचे। डोवर से कैले में उपस्थित होने पर स्पष्ट जान पड़ता है कि इङ्गलेण्ड और फ़्रान्स की हवा में कितना अन्तर है। धीर शान्त गम्भीर अँगरेज़-समाज से निकल कर एक-दम फ़्रेञ्च लोगों की सर्वदा परिवर्त्तनशील शिथिल कोलाहलमय राज्य-सीमा में पहुँचने पर सहज ही दोनों जातियों का पार्थक्य विदित हो जाता है।

सब लैटिन-जातियाँ (पोर्च्युगीज़, स्पेनिश, फ़्रेञ्च, इटलियन) बहुत कुछ हमारे ही समान उच्छ्वास के अधीन emotionally effusive) हैं। डोवर में जैसे शान्त-गम्भीर भाव देखा जाता है, वैसे ही कैले में गोल-माल शोरगुल की बहार देख पड़ती है। यहाँ तक कि नवागत अँगरेज़ों का मिज़ाज भी मिट्टी के प्रभाव से वहाँ पर बहुत कुछ बदल जाता है। प्रत्यक्ष देखे बिना इस अटलांटिक महासागर के क्षुद्र द्वीप (टापू) की महिमा समझना कठिन ही नहीं, असम्भव है।

गाडी पर चढ़ कर देखा, दोनों कोनों पर दो फ्रेञ्च भद्रपुरुष चार आदमियों की जगह घेरे हाथ पैर फैलायं मीठी नींद में खर्राटे ले रहे हैं। गाडी चली। गाड़ी में सिर्फ़ दो अँगरेज़ थे। और कोई न समझे, इसलिए एक अँगरेज़ ने दूसरे अँगरेज़ से, सो रहे फ्रेञ्च भद्रपुरुष को लक्ष्य कर, हिन्दी में कहा—"ज़रा उनको तो देखिए जो कोने में बैठे हैं"। इस बात में उन दोनों के साथ मैं भी मुसकिरा दिया। अब उस गोष्ठी मे मैं भी मिल गया। दोनों साहबों से और मुझसे बातचीत होती रही। उस समय हम पाँचों में ऐसा स्नेह हो गया, मानो एक ही देश के हैं। बातचीत में जान पड़ा, एक साहब बर्मा के वन-विभाग में काम करते हैं. और दूसरे साहब भारत के सिविलियन हैं। सिविलियन साहब ज़रा गम्भीर प्रकृति के थे। केवल फ़ान्स की हवा लगने का यह असर था कि इतना मसख़रापन बढ़ कर बैठे थे। उन्होंने पहले मुझे अमेरिकन समझा था, इसी से हिन्दी में बातचीत की थी। किसी तरह रात बिता कर सवेरे पेरिस पहुँचा। एक महीने के लगभग पेरिस मे रह कर विश्वप्रदर्शिनी (Exposition Universelle) और नगर का जो कुछ चमत्कार देखा, उसका पूरा क्या, कुछ भी वर्णन करना मेरी शक्ति के बाहर है। तथापि यथाशक्ति लिखने की चेष्टा करूँगा।

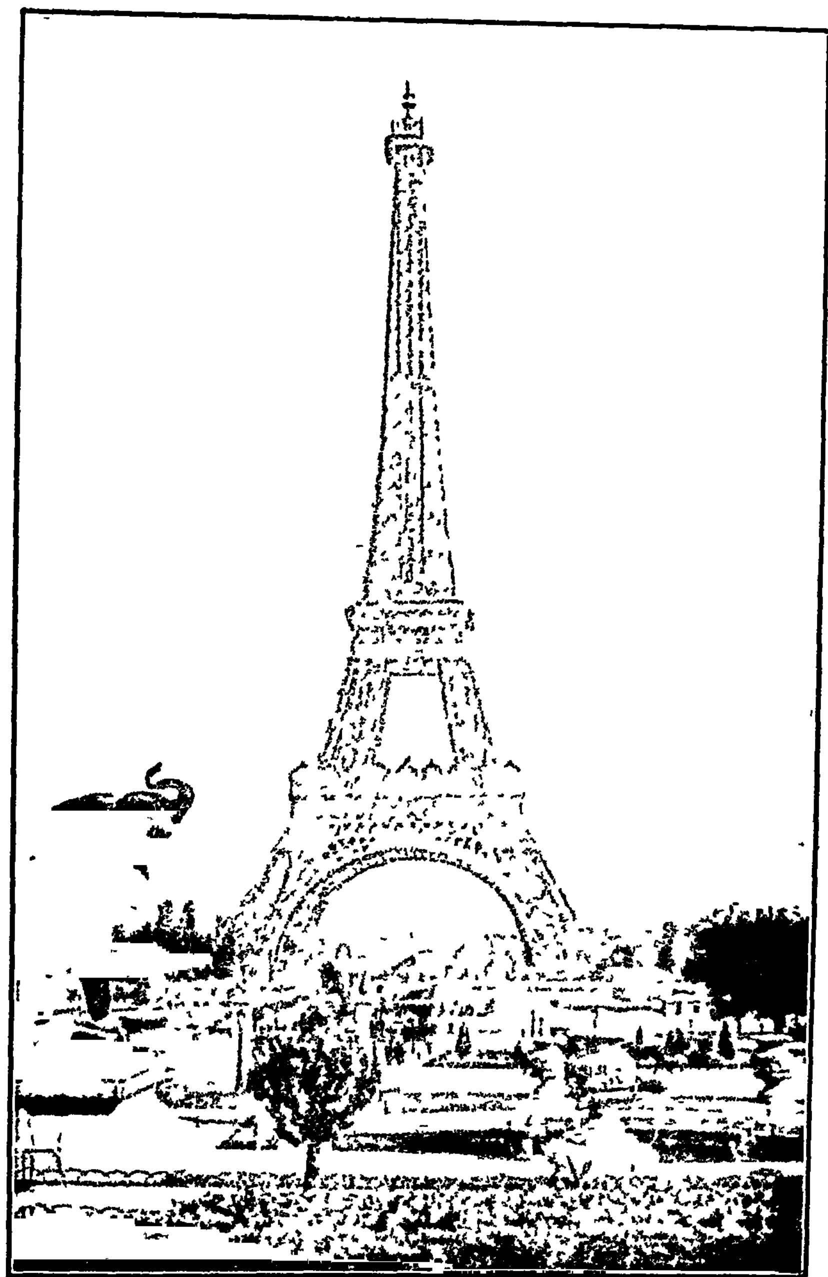
पेरिस-विश्वप्रदर्शिनी ।

पेरिस में, सन् १७६८ में, स्थानीय चीज़ों की पहली प्रदर्शिनी खोली गई थी। उसके बाद क्रमशः १२ प्रदर्शिनियों हो जाने पर, सन् १८४५ में, पेरिस-अन्तर्जातिक प्रदर्शिनी में सारी पृथ्वी की चीज़ें एकत्रित हुई थीं। तेईस बरस बाद, सन् १८७८ में, सुबृहत् ट्रोकाडेरो (Trocadero) गोलघर का निर्माण हुआ और एक उच्च श्रेणी की प्रदर्शिनी खोली गई। उसके बाद सन् १८८९ में यह महाप्रदर्शिनी खोली गई। विगत सौ बरसों मे फ्रान्स और साथ ही साथ सारा सभ्य जगत् उन्नति के सोपान पर कहाँ तक चढ़ सका है, यह जानने के लिए इस महाप्रदर्शिनी को कसौटी समझना चाहिए। सन् १८८९ के मई महीने में चुपचाप धीरे धीरे शुरू हुए नवजीवन डालनेवाले फ्रेञ्च-विप्लव ने १४ जुलाई के दिन अनिवार्य हार्दिक बल के तीव्र तेज के साथ पेरिस के दुर्भेद्य ख़ास-राजकारागार भुवनविख्यात बास्टिल (Bastille) का ध्वंस करते हुए सजीव भाव से प्रकट होकर यूरोप के राजनैतिक और सामाजिक जगत् में मौलिक परिवर्त्तन किया; और उससे मनमानी करनेवाली राजशक्ति की जड़ भी कट गई। उसी चिरस्मरणीय घटना की सौ बरस की जुबिली मे यह महाप्रदर्शिनी खोली गई थी। इस प्रदर्शिनी का शिरोभूषण-स्वरूप विराट् कीर्त्तिस्तम्भ "ला-टूर-एफ़ेल" (La Tour Eiffel) ६ खण्ड का है। सारी प्रदर्शिनी ५२० बीघे मे है और उसमें २२ फाटक हैं। उत्तर-भाग मे एफ़ेल-स्तम्भ है।

एफ़ेल-स्तम्भ। पृथ्वी की जितनी ऊँची इमारतें हैं वे इसकी बराबरी नहीं कर सकतीं। आगे की सूची से इसकी भारी उँचाई का कुछ कुछ अनुमान हो सकेगा। उँचाई हाथों के हिसाब से दी गई है—



पेरिस—पृ० ७६२



ईफेल टावर—पृ० २५२

पेरिस का एफ़ेल स्तम्भ (Eiffel Tower)	६५७ हाथ
अमेरिका का वाशिंगटनस्तम्भ (Washington Column)	३७० हाथ
जर्म्मनी का कोलनगिर्जा (Cologne Cathedral)	३४८ हाथ
फ़्रान्स का रोएँ गिर्जा (Rouen Cathedral)	३३२ हाथ
मिसर का प्रधान पिरामिड (Great Pyramid)	३१६ हाथ
जर्मनी का स्ट्रासबर्ग-गिर्जा (Strasburgh Cathedral)	३१० हाथ
रोम का सेन्टपीटर-गिर्जा (St. Peter's Church)	२९६ हाथ
लन्दन का सेन्टपाल-गिर्जा (St. Paul's Church)	२६९ हाथ
पेरिस का इनवेलिड्स (Invalides)	२३३ हाथ
दिल्ली का कुतुब मीनार (Kutub Minar)	१५९ हाथ
पेरिस का नटरडाम-गिर्जा (Notre Dame)	१५० हाथ
,, पान्थियन (Pantheon)	११६ हाथ
कलकत्ते का मनूमेंट (Ochterlony Monument)	११० हाथ

पेरिस का यह एफ़ेल-स्तम्भ कुतुबमीनार से चारगुना और कलकत्ते के मनूमेंट से छगुना ऊँचा है! इसके बनने में १,८७,००० मन लोहा, २½ लाख पाउण्ड की रक़म और कई सौ आदमियों का २½ वर्ष का मानसिक और शारीरिक परिश्रम लगा है। इसके सिवा विपुलमस्तिष्क धीमान् एफ़ेल की अङ्कविद्या और इञ्जीनियरी का कौशल भी इसमें ख़र्च हुआ है। सन् १८८७ की २८ जनवरी को इसकी नींव पड़ी और सन् १८८९ की १ मई को यह बिल्कुल तैयार होगया। भिन्न भिन्न माप और आकार के बारह हज़ार लोहे के टुकड़े सत्तर लाख छेदों में पचीस लाख पेंचों से कसे हुए हैं। परस्पर से मिले और ठीक माप के छेद और उन छेदों की माप के पेंच, स्क्रुप आदि बनाने में कैसे ऊँचे दर्जे की कारीगरी और हिसाब की ज़रूरत पड़ी होगी, सो वह दर्शक सहज में नहीं समझ सकता, जो

स्वयं कुछ भी इञ्जीनियरी का काम नहीं जानता । इसके सिवा आँधी से सुरक्षित रखने के लिए ऐसे वैज्ञानिक ढंग से यह स्तम्भ खड़ा किया गया है कि दसों दिशाओं से, चाहे जिधर से आँधी आवे, उसका धक्का स्तम्भ में नहीं लगेगा; वह तूफ़ान स्तम्भ के शरीर में केवल हाथ फेरता हुआ निकल जायगा । इसके बनने में जितनी गिन्नियाँ खर्च हुई हैं उनकी बाँड अगर बनाई जाय तो वह ज़मीन से इस स्तम्भ की चोटी तक पहुँच जायगी । इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुद्धिमान् एफ़ेल, सब तरह से, यह एक सुवर्ण-स्तम्भ खड़ा कर गये हैं । शुरू से अख़ीर तक इसमें १७९२ गोल सीढ़ियाँ हैं । बहुत लोग पैदल भी चढ़ते हैं, लेकिन बहुत से लोग कल (Lift) के द्वारा ऊपर चढ़कर दो तरह का आनन्द भोगते हैं । ऊपर चढ़ानेवाली कलें तीन जगह हैं । इसलिए ऊपर जाने में तीन बार तीन जगह जाना और वहाँ से निकलना होता है । इतनी भीड़ होती है कि हर जगह डेढ़ दो घंटे खड़े रहे बिना 'कल' में बैठ पाना असम्भव हुआ करता है । ज़मीन से १२२ हाथ की ऊँचाई पर ११० हाथ चौड़े चार भारी दरों पर पहला खण्ड स्थापित है । इसके चारों ओर बड़े बड़े ऊँचे अक्षरों में, जो नीचे से साफ़ पढ़े जाते हैं, ब्रोका, वल्टेयर (Broca, Voltaire, &c) आदि ७२ महामहोपाध्याय फ्रेञ्च पण्डितों के नाम लिखे हैं । राजा, बादशाह, वज़ीर या अमीर का एक भी नाम नहीं है । पहले खण्ड को एक छोटा सा गाँव कहा जा सकता है । उसमें ४ पान-भोजन-भवन (Restaurant) हैं । हर एक में ४०० आदमी बैठ कर खा-पी सकते हैं । चार बाहरी खण्डों 'Gallery' में १००० आदमी घूम फिर सकते हैं । दो पानभोजनभवन के मध्यवर्ती हर एक खंड में ४०० आदमी आ सकते हैं । इस हिसाब से प्रथम खण्ड में छः हज़ार चार सौ आदमी अनायास रह सकते हैं । इसके सिवा बाहर जाने आदि के स्थान, अनेक दूकानें, डाकघर और तार का आफ़िस आदि भी इसी खण्ड में स्थापित

हैं । यहाँ से चारों ओर का दृश्य बड़ा मनोहर देख पड़ता है । ख़ास कर सन्ध्या के बाद दक्षिण ओर नीचे के भूमि-खण्ड की सुन्दरता देखने ही लायक़ होती है । अनेक रङ्ग के फूल वग़ैरह सुहावने ढङ्ग से खिलते देख पड़ते हैं । स्वच्छ हरे रङ्ग की कोमल घास से ढके हुए मैदान में चारों ओर पास ही पास लगी हुई बिजली की रोशनी बड़ी ही विचित्र छटा दिखलाती है । मेज़ की तरह कटी हुई क्यारियों से उस भूमि-खण्ड की बहार दूनी देख पड़ती है । चारों ओर बहुत से बड़े, मझोले और छोटे पुतले सजानेवाले की सुरुचि का परिचय दे रहे हैं । उनमें एशिया, यूरोप, आफ़्रिका, अमेरिका, और आस्ट्रेलिया की मूर्त्तियाँ साजसरंजाम और सहचर-सहचरियों के साथ रमणी-रूप से विराजमान हैं । दीप्तिमान् (Chemically illuminated) श्वेत, पीले, लाल, हरे, अनेक रङ्ग के जल की नहरें और फुहारों की बहार दिखाई पड़ती है । चारों ओर असंख्य गोरे नर-नारियों की भारी भीड़ और सुसज्जित बिजली की रोशनी से जगमगा रहा प्रदर्शिनी-भवन आदि हैं । और ठीक सामने, इस भूमि-खण्ड के दूसरे छोर पर, बहुत ही थोड़ी दूर पर, इमारतों के बीच में, विशेष रूप से बिजली की रोशनी से नीचे से ऊपर तक जगमगा रहा डोमसेन्ट्रल Dome Centrale) है । यह पेरिस के केन्द्र में बना है । इसका गुम्बद २५० फुट ऊँचा और १०० फुट के घेरे का है । इसके दूसरे ओर ५-६ 'रशी' के फ़ासिले पर टेढ़ी-मेढ़ी सेइन (La Seine नदी बहती है । इसमें असंख्य जगमगा रही नावें, स्टीमर, पानी में तैर रहे विहार-भवन, होटल, स्नानभवन और सेतु-समूह शोभायमान देख पड़ते हैं । इस नदी के दूसरे तट पर ठीक सामने, कुछ फ़ासिले पर, प्रदर्शिनी के अन्तर्गत फुहारा, झरना और बिजली की रोशनी से दीपमालिका को भी मात कर रहा ट्रोकाटेरो गोलघर है । उक्त सब दृश्य मिल कर, इस १२२ हाथ ऊँचे स्थान से,

एक अपूर्व अलौकिक अनिर्वचनीय शोभा से सम्पन्न देख पड़ते थे। उस शोभा का वर्णन शब्दों से नहीं किया जा सकता; वह देखने ही की चीज़ है। फ्रेंच लोगों की सतेज, सुपरिस्फुट, सौन्दर्य्यानुभववृत्ति और शोभा-प्रियता (wonderfully developed aesthetic faculty) को जो लोग जानते हैं वे सहज में ही समझ सकते हैं कि सुन्दर वस्तु को मनोहर भाव से सजा कर दर्शक का मन हर लेने की विद्या में वे कैसे सिद्धहस्त हैं। फ्रेंच ढंग से सजाने के कौशल का कुछ परिचय जुबेयर महाशय, सन् १८८४ में, कलकत्ते की प्रदर्शिनी में, दे गये हैं। यहाँ के लोग सजाने की कारीगरी ऐसी जानते हैं कि सड़ी से सड़ी चीज़ इनका हाथ लगने से सुन्दर जान पड़ने लगती है। फिर यहाँ तो सौन्दर्य को सुन्दर सजावट दी गई है। जिन दो बन्धुओं के साथ मैं इस स्तम्भ को देखने गया था, वे इस मेरे वर्णन को पढ़ कर बहुत अच्छी तरह समझ सकते हैं कि मैं कुछ भी वर्णन नहीं कर सका। क्या करूँ, वह अनुपम सौन्दर्य हृदय में अङ्कित है, उसे बाहर प्रकट करने की शक्ति ही मुझमें नहीं। कवि कान्ग्रेव (Congreve) की कविता नीचे लिख कर मैं पाठकों से अपनी लाचारी के लिए क्षमा-प्रार्थना करता हूँ।

> "Hard is the task, and bold the advent'rous flight,
> "Of him, who dares in praise of beauty write,
> "For when to that high theme our thoughts ascend,
> "'Tis to detract, too poorly to commend."

अफ़सोस यही है कि भारत के सौ आदमी भी इस महाप्रदर्शिनी को न देख सके। जो लोग इँगलेंड में थे उनमें से अधिकांश लोग नहीं गये। हाय हाय! इस जीवन में अब वैसा दृश्य फिर न देखने को मिलेगा, यही दुःख है। सन् १८९२ में अमेरिकन लोगों ने इसी ख़ागडॉट पर एक महामेला किया था। परन्तु अटलांटिक समुद्र के उस पार

फ़ान्स की वहार या वैसी सजावट कहाँ ? फ्रेञ्च लोग कहते हैं "संसार में पेरिस एकही है, दूसरा असम्भव है" "I ln'y a qu'un Paris dans le monde"), "जिसने पेरिस नहीं देखा उसने कुछ नहीं देखा" ('Quin'a vis Paris na rien vis'). यह पक्षपात की नहीं, सच्ची वात है। अँगरेज़ और अमेरिकन भी लाचार होकर स्वीकार करते हैं कि "Paris is the pleasure-garden of the world,' अर्थात् पेरिस पृथ्वी का प्रमोदकानन है। इँगलेंड और अमेरिका आदि वहुत देशों के रईस हर साल या वीच-वीच मे मनोरञ्जन के लिए पेरिस जाते हैं। सम्राट् सप्तम एडवर्ड भी हर साल जाते थे।

स्तम्भ के प्रथम खण्ड से, और दूसरी कल पर वैठ कर, दूसरे खण्ड में जाना होता है। दूसरा खण्ड २५० हाथ के ऊँचे पर है। यहाँ भी अनेक खानपान के अड्डे (Refreshment Bar), फ़िगारो-नामक सचित्र संवादपत्र (illustrated newspaper *Figaro*) का छापाखाना और कई दूकानें हैं। यहाँ पर १५०० आदमी रह सकते हैं। यहाँ से चारों ओर वहुत दूर तक, किन्तु अस्पष्ट, देख पड़ता है। नीचे का दृश्य अद्भुत और वर्णन से परे है।

तीसरा खण्ड ५१६ हाथ की ऊँचाई पर है। यहाँ ५०० आदमियों के जमा होने की जगह है। लगभग १०,००० आदमी इस स्तम्भ मे विचर सकते हैं। इसको अगर एक छोटा सा नगर कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा। तीसरे खण्ड में भी डाकघर तार-घर और कई एक दूकाने हैं। यहाँ से चारों ओर ४० कोस तक नज़र जाती है, पर सव अस्पष्ट देख पड़ता है। इसके ऊपर ८१ हाथ की ऊँचाई पर चोटी (Campanaile) है। वहाँ तक जाना हो तो

एफ़ेल साहब की मंज़ूरी लेनी होती है । चोटी के भीतर चौथा खण्ड है । उसमें एफ़ेल साहब का आफ़िस और तीन वैज्ञानिक प्रक्रिया के कमरे (Laboratory) हैं एक ज्योतिष (Astronomy) का, दूसरा चिकित्सा-शास्त्र और आकाशतत्त्व (Physic and Meteorology) सम्बन्धी और तीसरा जीवतत्त्व और वायु-विज्ञान (Biology and micrographic study of the air) सम्बन्धी है । आकाश और वायु की परीक्षा के लिए ऐसा उपयोगी स्थान दूसरा नहीं है । अब तक जितने ऊँचे पर परीक्षायें हुई हैं वहाँ कहीं भी बिल्कुल विशुद्ध वायु नहीं पाया गया । बड़े ऊँचे पर्वत की चोटी पर भी वृक्ष और मिट्टी से पैदा हुई भाप के मिले रहने का दोष दूर नहीं हुआ ।

चूड़ाखण्ड अर्थात् कैम्पनेल की चोटी पर और भीतर दो भारी बिजली की रोशनियाँ हैं । यह प्रकाश (It represents the transmuted energy of engines of 500 horse-power," Stead). २० कोस की दूरी पर से दिखाई पड़ता है और इस प्रकाश से ७ मील दूर साँ-जारमेया-आँला (Saint Germainen-Laye) नगर की सड़क पर अख़बार पढ़ा जा सकता है । हर रविवार को सन्ध्या के बाद खूब अन्धकार होने पर १५ मिनट के लिए सब स्तम्भों में लाल रोशनी (Bengal Lights) कर दी जाती है । सबके ऊपर स्तम्भ की चोटी पर फ़्रेञ्च साधारण-तन्त्र की स्वाधीनता, साम्य और भ्रातृभाव (Liberte, Egalite, Fraternite) को व्यक्त करने-वाली तीन रङ्ग की पताका गर्व के साथ फहरा रही है । इसको लक्ष्य कर फ्रेञ्च-विज्ञान-सभा (Academie Francaise) के सभ्य कविवर सली प्रूधोम (Sully Prudhomme) ने विज्ञान-समिति के भोज की वक्तृता में कहा था—"हर एक फ़्रेञ्च को अपना गौरव इसमें समझना चाहिए कि पृथ्वी के सब देशों की पताकाओं से ऊँचे पर फ़्रान्स की

पताका फहरा रही है । यह हमारे शौर्य वीर्य का परिचय चाहे न हो, लेकिन इससे हमारे अदम्य उद्यम और उच्च आशा का परिचय अवश्य मिलता है ।"

एफ़ेल-स्तम्भ से, जैसे चर्मचक्षुओं से बहुत दूर तक फ़्रान्स देश दृष्टिगोचर होता है, वैसे ही, काल के सम्बन्ध में, मानसिक दृष्टि से, पीछे की शताब्दी की घटनायें भी धुँधले रूप में देख पड़ती हैं । सन् १७८९ में वास्तिल-ध्वस के साथ "८९ की साम्यनीति" ('Le principes de' 89). का अभ्युत्थान, जातीय-सभा (L'assemble Nationale) की स्थापना, सब मनुष्यों के समान-स्वत्व की विस्तृत घोषणा (Declaration des droits de l'homme); सन् १७९० में "समाज के विभागों की ऊँचाई-निचाई मिटाना (Abolition de la noblesse), सन् १७९१ में राजा की यात्रा और वन्दी-भाव से फिर आना. सन् १७९२ में दाँत मारा और रोवस्पेयर का अभ्युदय और प्रधानता एवं राजपद का प्रत्याख्यान (Abolition de la royalte), विख्यात सेप्टेम्बर-हत्या. १३०० मनुष्यों की वलि, सन् १७९३ में सिंहासन से उतारे गये सोलहवें लुई का विचार और प्राणदण्ड, नर-राक्षस मारा का वध और उसके साथ ही अनुपम रूप-यौवन और सुमहोच्च हृदयवाली मारा को मारनेवाली देवी कुमारी कर्डे (Charlotte Corday) का विचार और प्राणदण्ड, निराश्रया विधवा राजरानी का सेम्वर हेवर्ट (Hebert) के हाथों अपमान, अन्याय विचार और प्राणदण्ड, सच्चे देशहितैषी २२ प्रधान पुरुषों की हत्या. अतुल रूप-लावण्य-सम्पन्ना विद्यावती तीक्ष्ण बुद्धिवाली साध्वी रोलैंड की स्त्री (Madame Roland) पर अन्याय अत्याचार और उसकी हत्या, सन् १७९४ में भाई के ख़ून के प्यासे दुष्ट हेवर्ट, दाँतँ और रोवस्पेयर को क्रमशः प्राणदण्ड और ग़दर का ज़ोर घटना. सन् १७९५-

६७ मे नेपोलियन की क्रमशः उन्नति, १७६८ में अली बोनापार्ट* की मिसर-लीला, सन् १८०४ में नेपोलियन का सम्राट् होना, सन् १८१२ में मास्को-विभ्राट् (Burning of Moscow) के बाद नेपोलियन का सिंहासन से उतारा जाना और एल्बा-प्रयाण, सन् १८१५ में नेपोलियन का फिर आना, १०० दिन की लड़ाई और नेपोलियन के सौभाग्य-सूर्य का चिरकाल के लिए अस्त हो जाना—अठारहवें लुई का फिर आविर्भाव, सन् १८४८ में दूसरा ग़दर और लुई नेपोलियन की अधीनता में दूसरी बार साधारणतन्त्र की स्थापना, सन् १८५२ में बड़े चाचा के पदानुसरण द्वारा क्रमशः तीसरे नेपोलियन के नाम से उसका सिंहासन पर बैठना, सन् १८७० में जर्मनों से युद्ध और आत्मसमर्पण—इसके चार दिन बाद तृतीय साधारणतन्त्र की स्थापना, सन् १८७०-७१ में दो बार पाँच महीने तक जर्मन-सेना के द्वारा पेरिस का घेरा जाना—वहाँ के रहनेवालों को अनेक प्रकार के दारुण अभाव और क्लेश—सन्धि और शान्ति की स्थापना—मोसिओ टियर्स के शासन से शुरू करके मैकमेहन और गम्ब्रोट आदि की प्रधानता और वर्त्तमान समय के महात्मा कार्नो का सभापति या प्रेसीडेंट होना, ये सब बातें सजीवभाव से मानसिक दृष्टि के सामने प्रकट सी होकर हृदय में एक अनिर्वचनीय भाव उत्पन्न कर देती हैं। सचमुच कलियुग में विधाता का विशेष-विधान-स्वरूप फ़ान्स का विराट् विप्लव जैसे सभ्य जगत् के इतिहास में अग्रगण्य है, वैसेही उसका स्मारक अतुल कीर्तिस्तम्भ आकाश-भेदी एफ़ेलटावर भी है।

महाराजा दिलीपसिंह। एफ़ेल-स्तम्भ के निकटवर्ती एक होटल में

---

* मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए नेपोलियन ने यह नाम स्वीकार किया था। मुसलमानों की खुशी के लिए वह कभी कभी कृस्तानी धर्म की निन्दा भी करता था।

अकस्मात् प्रसिद्ध पंजाब-केसरी प्रबल पराक्रमी रणजीतसिंह के पुत्र महाराजा दिलीपसिंह से मेरी मुलाक़ात होगई । इस प्रदर्शिनी के बयान में इनका अद्भुत वर्णन पाठकों को शायद नापसन्द न होगा। जिस प्रदर्शिनी ने विश्व संसार के जड़, चेतन, चराचर, वनस्पति-वृक्ष आदि के अनेक अद्भुत चमत्कारों को एकत्र करके, असंख्य उपायों से, पृथ्वीमण्डल के लोगों को 'ज्ञान' बढ़ाने में सहायता पहुँचाई, उसी प्रदर्शिनी में, सिंहासन-च्युत सिख-सम्राट् को, लौकिक ऐश्वर्य की अस्थिरता के सजीव साक्षी के रूप में जगत् के आगे उपस्थित करना, मेरी समझ मे विशेष शिक्षादायक ही होगा। मैं तो दिलीपसिंह को इस प्रदर्शिनी के दृश्यों में एक ख़ास दृश्य समझता हूँ। वह भी मान-मर्यादा के अनुसार नित्य नियमित रूप से शाम को इसी होटल के बराण्डे में स्त्री और बन्धु-बान्धवों के साथ आराम से बैठ कर भोजन आदि करते थे। यह एक अँगरेज़ का होटल था। यहाँ हिन्दुस्तानी पुलाव वग़ैरह भी मिल सकता था; इसी से वह नित्य यहाँ भोजन करते थे। मुलाक़ात के दूसरे दिन उन्होंने हम लोगों की क़ीमती दावत की और उसके बाद हम लोग उनके साथ थियेटर गये। और भी कई दिन मुलाक़ात हुई। एक दिन मैं उनके घर पर गया था। उस दिन उन्होंने मुझे अपने द्वारा भारतेश्वरी के नाम भेजे गये पत्र* और अपने सिखों के प्रति घोषणा-पत्र† की छपी हुई कापी और अपने मणिमुक्ता-शोभित राज-वेश का फ़ोटो दिया। पहली स्त्री के मरने बाद उन्होंने दुबारा

---

* इनमें, नर्म-गर्म भाषा में कोहेनूर हीरे की क़ीमत विक्टोरिया के ख़ास ख़ज़ाने से माँगी गई थी।

† Manifesto—सिख और भारत के सब हिन्दू-मुसलमानों को अँगरेज़ों के विरुद्ध भड़काना ही इसका उद्देश्य बतलाया जाता है। स्थानाभाव में इन दोनों पत्रों की नक़ल नहीं दी जा सकती।

ब्याह किया था। यह स्त्री भी अँगरेज़-रमणी थी। 'महारानी' की बातचीत से जान पड़ता था कि ब्रिटिश गवर्नमेंट से फिर मिलने की उनकी सलाह न थी।

मेरी छोटी समझ के अनुसार मैंने दिलीपसिंह से इँगलैंड लौट जाने के लिए कहा। इसके उत्तर में उन्होंने कहा—"अल्जियर्स देश में एक पैसे की एक रोटी खाकर इसी तरह अज्ञात-वास की हालत में रहूँगा; मगर अँगरेज़ों से आर्थिक सहायता न लूँगा"। लेकिन ये सब उनके पागलपन के ख़याल थे। चोर से रूठ कर ज़मीन में रखकर रोटी खाना इसी को कहते हैं। उनका फिर पञ्जाब पाने का प्रयास बौने की चाँद को पकड़ने की चेष्टा ही था। पश्चिम का सूर्य पूर्व में अस्त हो तो भी ब्रिटिश-गवर्नमेंट का शासन हट नहीं सकता। उन्होंने खुद भी कहा कि रशिया, फ़ान्स आदि उन्हें रत्ती भर भरोसा नहीं देते; सब ब्रिटिश-गवर्नमेट के प्रबल प्रताप से हिचकते हैं। हमारे परम मङ्गल के लिए विधाता की विशेष कृपा से अँगरेज़ लोग भारत में आये हैं। उनका शासन चिरकाल तक हमें सुखी बनावेगा। चालीस हज़ार पौंड की वार्षिक वृत्ति रणजीतसिंह के लिए 'साधारण' होना आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन प्रायः ४० बरस तक उसी में सन्तुष्ट रह कर अन्त को आपत्ति करने से क्या हो सकता है? महाराज के दो लड़के थे, पर वे पिता के अनुगामी नहीं हुए। दोनों लड़कियाँ बेचारी उनके साथ ही थीं। उनकी माता का पहले ही देहान्त हो चुका था। महाराज के बाल्य-काल की अभिभाविका लेडी लोगिन (Lady Login) कहती थीं कि महाराज के साथ इन्साफ़ नहीं किया गया और महाराज को इस दशा में देखकर उन्हें बड़ा दुःख है। हमको भी इस कोमल-हृदया दयावती रमणी के साथ ही महाराज की अवस्था पर खेद हुआ।

लेकिन उपाय क्या था? महाराज के पञ्जाब पर फिर अधिकार जमाने की चेष्टा से किसी ने सहानुभूति नहीं दिखाई और न हम ही दिखा सके। ज़रा सोच कर देखिए, जिस शासन-प्रणाली में राजरानी को भिक्षा सी माँगनी पड़ती है—स्वयं ब्रिटिश-साम्राज्य की अधीश्वरी को परिवार के भरण-पोषण के लिए "Honorable Guardians of the National purse" (जातीय धन-भाण्डार के मान्यवर अभिभावकों की सेवा मे) लिख कर कामन्स-सभा मे रुपया-पैसे के लिए प्रार्थना करनी पड़ता है और बहुत कुछ आपत्ति तथा तर्क-वितर्क के बाद बडा मुश्किल से, खण्डित भाव (conditionally) से, वह प्रार्थना स्वीकृत होती है, वहाँ हमारे हारे हुए महाराज का अपने बाप-दादे का राज्य पाने की कौन आशा हो सकती है? इसके सिवा दूसरे पेट काट कर अपना तोंद बढ़ाने का ज़माना गया। अब तो "Leborare est orare" (श्रम ही पूजा है) इस महामन्त्र की दीक्षा सबको लेनी चाहिए।

जो कुछ हो, महाराज की एक बात से मैं बहुत ही ख़ुश हुआ। महाराज बारह वर्ष की अवस्था मे पञ्जाब के रत्न-सिंहासन से उतारे जा कर इँगलेंड के एक स्कूल में पढ़ने के लिए भर्ती कर दिये गये थे। जब मुझसे मुलाक़ात हुई, तब उनकी अवस्था ५० बरस से ऊपर की थी। वह इतनी उम्र तक प्रिन्स आफ़ वेलस आदि बड़े बड़े आदमियों की सोहबत मे बराबर अँगरेज़ों मे ही हिले मिले रहे, मतलब यह कि मातृ-भाषा के व्यवहार का साबिक़ा ही न पड़ता था, तथापि वह मुझसे शुद्ध और साफ़ हिन्दी में बातचीत करते थे। यहाँ तक कि "फलाना" "ढेकाना" तक न भूले थे। हमारे यहाँ के जो लोग ज़रा सी अँगरेज़ी पढ़ कर या किसी अँगरेज़ के नीचे काम करके मातृभाषा को भूल जाते हैं, उन्हें महाराज से अवश्य शिक्षा लेनी

चाहिए। अपने देश और अपनी भाषा को भूलना असम्भव है। और जो भूल जाते हैं उन्हें पागल ही समझना चाहिए।

पेरिस में मुलाक़ात होने के दो बरस बाद दिलीपसिंह को अपना भ्रम देख पड़ा। इसी अवसर में उन पर फ़ालिज भी गिर पड़ा। वह इँगलेंड लौट गये और भारतेश्वरी से फिर मिले। इसके थोड़े ही दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई। जब भारत में आने की आशा जाती रही और महाराज यूरोप में ही रहने लगे, तब महारानी विक्टोरिया ने उनको एक स्नेहपूर्ण पत्र लिखकर बहुत कुछ खेद प्रकट किया था। पत्र की नक़ल नीचे दी जाती है।

Windsor Castle, July 6th, 1886.

Dear Maharaja—I hear extraordinary reports of your resigning your allowance and of your intending to transfer your allegiance to Russia I cannot believe this of you who always professed such loyalty and devotion towards me, your truest friend, and who, I may say, took a maternal interest in you from the time when, not thirty-two years ago, you came to England as a beautiful, a charming boy! I watched your life with ture interest, and thought your home with your amiable wife and fine children was a pattern to all India Princes. But after the death of your really true and devoted friend, Colonel Oliphant, bad and false friends have surrounded you, and put things into your head and heart which I am sure never could under other circumstances have enclosed them.

Let me appeal to all that is noble in you, and ask you to abandon wild ideas and plans, which can only plunge you into deeper difficulties and lead to disastrous consequences. Think of me as your best friend and the godmother of your dear son who bears my name

Trusting that you may be able to give me assurance that thes reports are untrue,

Believe me always,
Your true friend,
VICTORIA I. R

इसी समय दिलीपसिंह ने रूस से सहायता पाने की चेष्टा की, पर उनका मनोरथ सफल नहीं हुआ। इसके लिए अनेक फ्रेञ्च भद्र

पुरुषों ने रूस के उस समय के चान्सलर की निन्दा की कि इँगलेड को हैरान करने का ऐसा अच्छा मौक़ा छोड़ कर उन्होंने बड़ी ही मूर्खता का काम किया। फ़्रेञ्च लोग ऐसी ही प्रकृति के आदमी हैं। जब भारत में, मनीपुर में, हंगामा हुआ था, तब पेरिस के अनेक अख़बारों ने यह समझ कर ख़ूब ख़ुशी ज़ाहिर की कि अब अँगरेज़ों के हाथ से भारत निकल जायगा। ऐसी निपट साधारण घटना को लेकर इस प्रकार के आन्दोलन करने से अनुचित डाह और नैतिक असारता ही प्रकट होती है। यूरोप के अनेक देशों में, ख़ास कर फ़ान्स में, अनेक लोग डाह के मारे भारत के सम्बन्ध में अँगरेजों के अमङ्गल की कामना किया करते हैं, और इसी उद्देश्य से बातचीत में हमारे इस मामले में सहानुभूति प्रकट करने में भी नहीं हिचकते। किन्तु चाहे फ़्रेंच हो और चाहे रूसी, हज़ार चेष्टा करने पर भी वर्त्तमान व्यवस्था मे किसी तरह का तिल भर का भी परिवर्तन वे नहीं करा सकते। इँगलेंड का शासन नैतिक पराक्रम पर अटल है; वह आसुरिक बल नहीं है। इस बात को जो साधारण बुद्धि के आदमी नहीं समझते, केवल वे ही ऐसी ऊटपटाँग बातों को अपने मन में स्थान दे सकते हैं। ऐसे लोग बाल बाँका तो कर ही नहीं सकते, उलटे डाह की आग से आपही जला करते हैं।

'रहने के घर' का प्रत्यक्ष इतिहास (Histoire de L'habitation de l'homme) एफ़ेल-स्तम्भ से उत्तर ओर के फाटक को जाने से दोनों ओर, मानव-समाज की आदिम व्यवस्था से लेकर वास-गृह की सिलसिलेवार किस प्रकार उन्नति हुई है, यह दिखाने के लिए, लगभग १४ रशी लम्बे और ७ रशी चौड़े स्थान में प्रमाण गृह आदि बने हुए हैं। ऐतिहासिक-युग के पूर्व समय के निवास-स्थान चार पंक्तियों में स्थापित हैं।

(१) विना छत के, पत्थर की दीवार से घिरे हुए साधारण आश्रय-स्थान ।

(२) गुहा-गृह । पुराशैलिक (Polæolithic) और नवशैलिक (Neolithic) युगों में यूरोप और एशियाखण्ड की वहुत सी गुफायें प्राथमिक (Primitive) मानव के रहने का स्थान थीं । वर्त्तमान समय में भी बुशमान आदि कुछ असभ्य जातियाँ कन्दरा के सिवा दूसरे प्रकार का आश्रय जानतीं ही नहीं ।

(३) ख़ूनी जानवरों की चोट से वचने के लिए किसी जलाशय में गड़ी हुई थूनियों पर रक्खी हुई झोपड़ी । यहाँ यह दिखलाया गया है कि अस्त्र आदि के न होने के कारण उस समय जलते हुए अंगारों से काठ काटा जाता था । इतिहास-बहिर्भूत (Prehistoric) समय में यूरोप के अनेक कुण्डों और झीलों में इसी तरह के गाँव के गाँव बसे थे । वर्त्तमान समय में बोर्नियो (Borneo) सिलिबिस (Celebes) और कैरोलिन द्वीप-पुञ्ज (Caroline Islands) में, न्यूगायना (New Guinea के अन्तर्गत डोरी उपसागर (Bay of Dorei) में, मध्य आफ्रिका के मोर्हिया (Morhrya) कुण्ड में (गुलाम पकड़नेवाले डकैतों के डर से); दक्षिण अमेरिका की माराकाइवो नहर (Gulf Maracaibo) आदि अनेक स्थानों में इस तरह के गाँव देखे जाते हैं । कश्मीर में भी पानी में तैरते हुए घर हैं ।

(४) हरिण (Reindeer) पालिश किये हुए पत्थर (polished stone पीतल (Bronzed) और लौहयुग (Iron Epochs) के कुछ साफ़ घर वग़ैरह ।

ऐतिहासिक समय के घर पाँच श्रेणियों में बाँटे गये हैं ।

(१) प्राथमिक सभ्यता ।

(२) आर्य्य-सभ्यता ।

(३) रोमन पाश्चात्य-सभ्यता।

(४) रोमन प्राच्य-सभ्यता।

(५) पृथ्वी की अन्यान्य जातियों की सभ्यता। यह सभ्यता भारत-यूरोपियन (Indo-European) सभ्यता के बाहर है। और, इसी कारण सारे मानव-समाज की उन्नति के किसी काम नहीं आई।

सन् १५०० के राजा सिसस्ट्रीस के शासनकाल के मिसरदेशीय मकान, सीरियन, फ़िनिशियन, सन् १००० के हिब्रू और हाट्रस्कन, सन् ७०० के आसीरियन, पेलसगियन. ईसा के सन् से ४५० वरस पहले के पेरिक्लिस के समय के ग्रीस के मकान, ईसा से ३०० वरस पहले के हिन्दुओं के मकान, पारसियों रोमनों वाइजन्टाइनों और अरबों के मकान, ४०० वरस पहले के मेक्सिको के आदिम रहनेवाले अज्टेक लोगो के घर, वर्त्तमान काल के स्कण्डिनेवियन और आफ्रिकन असभ्य लोगों की झोपडियाँ, गुलाम हवशियों के झोपड़े, सूडन चीन और जापान के लोगो के घर और ग्रीनलेंड का एक बरफ़ से ढका हुआ छोटा सा गाँव। इतनी चीजें इस जगह के प्रधान दृश्यों मे से हैं।

इतिहास से पहले की असभ्यावस्था के घरों में उस समय के माफ़िक कपड़े पहने हुए उसी अवस्था मे मनुष्य-मूर्त्तियाँ रक्खी हुई हैं। ऐतिहासिक और वर्त्तमान समय के घर, महल और अटारियों मे अपने अपने देश का पहनावा पहने भिन्न भिन्न देशों के स्त्री-पुरुषों की मूर्त्तियाँ बिक्री के लिए रक्खी हुई हैं। बडे भारी कारीगर गार्निए ने इस जगह पर जैसी असाधारण योग्यता से सब सामग्री ठीक ठीक बना कर यथास्थान रक्खी है, उसकी प्रशंसा केवल साधारण दर्शक ही नहीं करते, वलिक पृथ्वी के सब देशों के पुरातत्त्व और वर्त्तमान-तत्त्व जाननेवाले पण्डित भी उस पर रीझ गये हैं। जगह जगह पर

प्रयोजन के अनुसार अत्यन्त प्राचीन काल के चित्र आदि देख कर वैसी ही पोशाक तैयार करके काम में लाई गई है। यह गवेषणा और उसका प्रत्यक्ष प्रचार वास्तव में बड़े महत्त्व का काम है। सैकड़ों पुस्तकें पढ़ने पर भी जिस ज्ञान के पाने की सम्भावना नहीं, वह ज्ञान इस स्थान को पहर भर देखने से ही सहज में पाया जा सकता है। जगत् की सभ्य और असभ्य सब जातियों को शिक्षा देने के लिए यूरोप, ख़ास कर इँगलेंड, फ़्रान्स और जर्मनी ने जैसे अतुलनीय उद्यम-उत्साह के साथ यत्न किया है और कर रहे हैं, उस ऋण को संसार कभी चुका नहीं सकता। पर हम ऐसी भाग्यहीन दरिद्र जाति हैं कि ऐसे सहज और सस्ते ज्ञान का भी प्राप्त नहीं करते! एक भयानक आलस्य शिथिलता और अनिवार्य धन-चिन्ता ने हमारी बुद्धि को इस तरह ढक रक्खा है कि हम जैसे मनुष्य ही नहीं रहे। कल्पना का शैतान सजीव भाव से हमारे ऊपर बेहद यथेच्छाचार के साथ बिना किसी बाधा के हुकूमत चला रहा है। जो लोग 'शिक्षित' होने का भारी अभिमान रखते हैं, उनको भूल कर भी न समझना चाहिए कि वे अशिक्षितों की अपेक्षा बहुत ऊँचे दर्जे के जीव हैं। उन में और अशिक्षितों मे केवल उन्नीस-बीस का फ़र्क है। एम० ए०, डी० एल० उपाधि-धारी "चार पैसे पैदा करनेवाले" म्यूनिसिपल कमिश्नर, जस्टिस आफ़् दि पीस इत्यादि इत्यादि, महामहिमार्णव श्रीयुत लाला मदारीलाल रायबहादुर मे और मक्खन अहीर, बब्बू कलवार और दीन दरिद्र मुल्लू जुलाहे में बहुत अधिक अन्तर नहीं है। अधिक कहने की क्या ज़रूरत है, केवल यह "मानव वास-गृह का प्रत्यक्ष इतिहास" ही यूरोपियनों की योग्यता और शक्ति का जैसा परिचय दे रहा है, वह योग्यता और शक्ति हमारे यहाँ के हज़ार हज़ार विद्यावारिधियों और विद्या-दिग्गजों को स्वप्न में भी नहीं प्राप्त हो सकती। हमारे यहाँ के

शिक्षित लोग "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनवा जोड़ा" की कहावत को प्रत्यक्ष दिखाने मे बड़े सिद्धहस्त हैं। कोई लुप्त प्राचीन ग्रन्थ दैवयोग से उनके हाथ में पड़ जाय तो उसका अनुवाद, नक़ल या वेमालूम चोरी करके महा गवेषक वन कर वाहवाही लूटने के लिए सवके आगे तैयार रहेंगे। लेकिन किसी मौलिक तत्त्व की खोज के समय वे केवल खीसें वा देने के और कुछ न कर सकेंगे। उस समय उस वारे में अस्सी वरस की नानी जितना समझ सकती है, उतना ही वे सुशिक्षित भी समझ सकते हैं। यूरोप के महावीर स्टेनली ने जैसी उदारता, उच्च श्रेणी की सहानुभूति और सहिष्णुता, विपुल क्षमता और असाधारण अध्यवसाय दिखलाया है, उसका शतांश भी हमारे देश का कोई आदमी नहीं दिखा सकता। केवल परोस की और ससुरार की स्त्रियों के सामने कई दर्जे पास होने की वहादुरी हाँकने से और स्त्री के निकट अपने मुँह अपनी वड़ाई करने से न कोई सुशिक्षित कहा जा सकता है और न किसी को मनुष्यत्व ही प्राप्त हो सकता है। (वावूजी ने सुसराल में अगर सास के मुँह से, आड़ से, सुन लिया कि "ऐसा दामाद वड़े नसीव से मिलता है। झटपट झटपट कई दर्जे पास कर डाले और हाकिम की नौकरी करके हमारी मुन्नी को खूव गहने वनवा दिये हैं। कई हज़ार रुपये वैंक में भी जमा कर चुके हैं," फिर क्या पूछना है! भीम, अर्जुन, न्यूटन और डार्विन, सव उनके आगे हेच हैं। वे अपनी समझ से उच्च-आकांक्षा की चोटी पर चढ़ गये।) और एक वात है, जिस देश के पुरुषों को ('अच्छी नौकरी मिले' और स्त्रियों को 'खूव गहनों से लदी रहो' कह कर आशीर्वाद दिया जाता है, उस देश के लोग कहाँ तक विनाश की राह मे आगे वढ़ गये हैं, इसका निर्णय वहुत वड़ी ताक़त की दूरवीन भी नहीं कर सकती)। यहाँ आजकल जड़ता का ही साम्राज्य है! जड़ता का ही

समान हैं! हाय, इतने जड़ कितनी सदियों मे मुक्ति पा सकेंगे। यथार्थ मनुष्यत्व बड़ी कठिन बात है। उसमें किसी का मुँह न ताक कर केवल न्याय और कर्त्तव्य की राह में सीधे खड़े होकर चलना होता है, भाव-राज्य में बहुत ऊँचे उठना होता है, संसार में बहुत से साधारण स्वार्थों को पददलित करके दूरदर्शिनी दृष्टि से सोच-विचार कर आगे बढ़ना होता है, कूप-रूप-हृदय को प्रशान्त महासागर सा बना लेना होता है, देश-काल के अन्तर को मिटा कर सारी पृथ्वी को अपने हृदय में स्थान देना होता है, तब मनुष्य मनुष्यत्व का अधिकारी होता है। नहीं तो गुरेला, बुशमान और मनुष्य में और भेद ही क्या है? पादरी-वीर धर्मात्मा महाप्रेमिक डाक्टर लीविंगस्टन के समान भौगोलिक आविष्कार के द्वारा ज्ञान फैलाने और सताये गये दीन-दुखी धर्महीन हबशियों के उद्धार या सुधार के लिए तन-मन-धन-जीवन अर्पण कर देने का भाव हमारे यहाँ के कितने आदमियों के हृदय में होगा? 'योग' और 'भक्ति' के बाहरी आडम्बर के सम्बन्ध में बहुत लोगों के मुँह से अनेक लम्बी-चौड़ी बातें सदा सुनने मे आती हैं, किन्तु योग और भक्ति पाने के प्रथम और प्रधान उपाय जो ज्ञान और कर्म हैं उनका नाम तक बहुत ही कम लोग जानते हैं। इसके माने और कुछ नहीं हैं। जहाँ बराबर आलस्य है, आँख मूँद कर अमीरी और आराम है, उसी ओर सोलहों आने हमारा झुकाव है। और, जहाँ स्वार्थत्याग, शरीर और मन का परिश्रम है, उस ओर से हम हज़ार हाथ हटे रहते हैं। मरने के बाद योग-भक्ति की चर्चा के लिए खूब अवकाश मिलेगा; मगर कर्म की आशा नहीं है। अतएव मन, मस्तिष्क, हाथ-पैर आदि के सही सलामत रहते यदि हम इनसे ठीक काम न लेंगे तो फिर पीछे पछतावे की आग में जलना पड़ेगा। विधाता ने हमको इस लोक में जड़ और चैतन्य के अद्भुत सम्मिलन-

स्थल इस शरीर और मन को देकर ऐसी दया दिखाई है कि इनके द्वारा किये गये छोटे छोटे कामों से भी हम लोग बहुत सी उन्नति कर सकते हैं। बराबर तीन रात तक आँख मूँद कर ध्यान करने से जितनी आत्मा की उन्नति होती है, उससे कहीं अधिक आत्मा की उन्नति पानी में डूबते हुए एक आदमी की जान बचा सकने से होती है। अतएव इस अवस्था में इस पृथ्वी पर हमारे लिए कर्म ही ईश्वर की उपासना और आराधना—Work is Worship— है।

स्वेज़-पनामा-भवन। एफ़ेल-टावर के दक्षिण ओर प्रथम स्वेज़ और पनामा का भवन है। यह हिन्दू ढङ्ग का एक अजीब तरह का घर है। स्वेज़ नहर की पूरी नक़ल एक भारी टेबुल पर बनी हुई है। बहुत से दर्शकों के जमा होने पर घर में अन्धकार कर दिया जाता है और बहुत सी छोटी छोटी बिजली की रोशनियों से नहर प्रकाशित कर दी जाती है। जुगनू की तरह रोशनियाँ जल रही हैं, जहाज़ जा रहे हैं। दोनों ओर स्वेज़ और पोर्ट-सईद बन्दर मे अनेक जहाज़ लगे हुए हैं। भारत और भू-मध्यसागर में कितने ही जहाज़ तैर रहे हैं। स्वेज़-नहर क्या, एक अद्भुत वैज्ञानिक तमाशा है। चारों ओर नहर के कल-कारख़ाने और साज-सरंजाम की नक़ल सजाई रक्खी हुई है।

पनामा। पैसिफ़िक महासागर और अटलांटिक महासागर को जोड़ने के लिए, योजक के इस पार उस पार, पनामा से कोलन तक ५४ मील की जो नहर निकाली गई है, उसकी कल-कारख़ाने सहित पूरी नक़ल एक जगह पर रक्खी हुई है। स्वेज़ में केवल मरुभूमि को काट कर नहर खोदी गई है, पर इसमे पहाड़ भी काटने पड़े हैं और कई नदियों से भी मेल रखना पड़ा है। इसके सिवा दोनों समुद्रों की सतह की उँचाई-निचाई मे बड़ा अन्तर है। इस मेल को

मिलाना भी सहज काम नहीं । अतएव इन कामों के लिए तरह तरह की कलों से काम लिया जाना दिखाया गया ।

कानफ़िडारेसिश्रो अर्जेन्टिना (Confederacion Argentina)-गृह । अर्जेन्टाइन या रौप्य साधारण तन्त्र—लाप्लाटा और पाटागोनिया का मिलित राज्य । हर घर में उस देश के प्रचलित सिक्के, तीन चार बड़े बड़े साधारण और रिलीफ़ मैप (नक़्शे), प्रधान दृश्यावली, उद्भिद, जीव-जन्तु और बड़े आदमियों के फ़ोटो और अन्यान्य प्रकार के चित्र, तथा स्थानीय आचार-व्यवहार आदि दरसानेवाली मूर्त्तियां बड़े अच्छे ढंग से रक्खी हुई हैं। चित्रों में ग्रान चाको (Gran Chaco) के प्रधान शिकार के जङ्गल का चित्र बहुत ही मनोहर है । पाराना (Parana) नदी के तीर-वर्त्ती जीव-जन्तु-पूर्ण एक घने जङ्गल की नक़ल भी दर्शनीय है । मूषकजातीय गिनी शूकर, क्षुद्रकाय टूको, हिंस्र जागुयर, (Ctenomys Braziliensis) क्षुद्र हरिण और तरह तरह के पक्षियों व कीड़ों का संग्रह भी कम कौतूहल-वर्धक नहीं है। उद्भिदों में एक तरह का नवजातीय तालवृक्ष (Trithrinax), नारियल-खजूर (CDcos Detib) अर्थात् नारियल का ऐसा पेड़ और खजूर का ऐसा फल और रेशम की तरह कोमल भाव से उज्ज्वल रुपहला और धान के ढंग का टोटोरस-पम्पस-तृण (Totoras-Gynerium Argentum) मुझे बहुत अच्छे मालूम पड़े । लोहे, ताँबे और चाँदी की खानों की नक़ल भी यहाँ दिखाई गई थी । मूर्त्तियों में लासो और बोलस (Lasso and Bolas) तथा पेरू देश को स्वाधीनता देनेवाले सेनापति सन मार्टिन (General San Martin) की घुड़सवार मूर्त्ति विशेष दर्शनीय है । लासो और बोलस दोनों मिश्र-गाउको (Gaucho) जातीय अर्द्ध-सभ्य पुरुष हैं । फन्देदार चमड़े की रस्सी का गुच्छा लिये छोटे नाटे घोड़ों पर ये दोनों मूर्त्तियाँ हैं । स्थानीय

वस्तुओं में ऊन, चर्बी, नमकीन मांस, उष्ट्रपत्ती के पंख, चाँदी, लोहा, कोयला, अस्त्र-शस्त्र, स्थानीय लोगों के व्यवहार मे आनेवाली और ऐतिहासिक चीजें दिखलाई गई हैं। पल्टन की पोशाक नये ही ढंग की है। राजधानी वुन्जायरा (Buenos Ayies) का रिलीफ़ नक्शा सुन्दर शहर के लायक़ ही है।

ब्रेजिल गृह। ब्रेजिल या सुन्दर पक्षिराज्य के अन्तर्गत जङ्गल। असल दृश्य की नक़ल यहाँ सजीव सी जान पड़ती है। वड़ी से वडी और छोटी से छोटी विचित्र पूँछवाली, अनेक रङ्ग की चिड़ियाँ वृक्षों पर ऐसी वैठी (stuffed) हैं कि दूर से कोई उन्हे नक़ल नहीं वता सकता। जङ्गल के सव जीव सजीव से रक्खे हुए हैं। साँप (Sorrocuco, Jrrarae, &c.) इस तरह फन उठाये हैं, मानों चोट करने ही चाहते हैं। नाग के भय से भाग रहे छोटे छोटे जीव ऐसे वनाये गये हैं कि मानों सचमुच भाग ही रहे हैं। वीस वाईस हाथ का लम्बा एक वोआ (Boa Constrictor) एक सुअर को पकड़े मार रहा है। उस देश की असभ्य स्त्रियाँ एक तरह के प्रवाल-सर्प को गले में हार की तरह पहनती हैं। यह साँप छोटा और उज्ज्वल रङ्ग का होता है। यह साँप भी यहाँ शान्त निरीह भाव से पड़ा हुआ है। वनविलाव, तेंदुए, जागुयर, स्लाथ, स्याही आदि जीव चारों ओर फैले हुए हैं। एक अद्भुत दृश्य है। सजाने की तारीफ़ तो की ही नहीं जा सकती।

उद्भिद्। इस इमारत मे एक भारी उद्भिद्वन (Green House) स्थापित है। इसमें ब्रेजिल-प्रदेश के ख़ास ख़ास लता-गुल्म-वृक्ष आदि जीते जागते रक्खे हुए हैं। एक एक वृक्ष में सेवार से शुरू करके इतनी शाखाये हैं कि योरप के वहुविस्तृत भूमि-खण्ड मे भी इतने उद्भिद् एकत्र नहीं देखने को मिलते। वृक्षों पर चढ़नेवाली लतायें (Canisteria, प्रधानतः Malpighianae) पेड़ पेड़ पर फिर कर माला

की तरह शोभायमान हो रही हैं। वृक्षों और पौधों में अनेक रङ्ग के फूल खिले हुए हैं। यहाँ हमारे यहाँ का सेमर का पेड़ भी है।

चित्र। आमाथन (Amazon) नदी के किनारे का पारुआकुआरा (Paruacuara) का जङ्गल और पहाड़ी सिलसिला; पारा (Para) नगर का बाज़ार और राजधानी रिओ जेनीरो (Rio Janeiro) की दृश्यावली ख़ास कर देखने की चीज़ें हैं।

मूर्त्तियाँ। मलाटो (Mullattoes) मामालूको (Mamalucoes), मेस्टिज़ो (Mestizoes) और ख़ास आदिम निवासियों के आचार-व्यवहार दरसानेवाली बहुत सी मूर्त्तियाँ रक्खी हैं।

चीज़ें। काफ़ी, चीनी, तम्बाकू, चाय, सोना, हीरा और अनेक प्रकार के क़ीमती पत्थर, अस्त्र-शस्त्र, स्थानीय भिन्न भिन्न जातियो की पोशाकें तथा व्यवहार में आनेवाली चीज़ें और बहुत सी ऐतिहासिक सामग्री रक्खी हुई है।

मेक्सिको-गृह। प्रायः चौदह काठा ज़मीन में यह भारी महल है। इसके भीतर तीन खण्डों में सब सामान भरा पड़ा है। उनमें से किस किस का वर्णन किया जाय? और और स्थानों की तरह इसका भी सम्पूर्ण वर्णन असम्भव है। हर एक देश की पुरानी से पुरानी चीज़ इकट्ठी करने में फ्रेञ्च लोगों ने भरसक कसर नहीं रक्खी है, और साथ ही हर एक देश के कारीगरों और रोज़गारियों ने भी विज्ञापन का प्रचार होने की आशा से चीज़ें भेजने में कोताही नहीं की। यहाँ तक कि हर एक देश की खाने-पीने की चीज़ें, दवाएँ, पलँग, चौकी, कुर्सी, टेबिल आदि भी बहुत सी जगह घेरे हुए हैं। अब पाठक आपही समझ सकते हैं कि विशेष वर्णन करना सर्वथा असम्भव है।

टोलटेक (Toltecs), अज़टेक (Aztecs), माया (Mayas) आदि सभ्यासभ्य आदिम निवासियों के समय से लेकर वर्त्तमान यूरोपियन अधिवासियों के समय तक जितनी तरह की चीजें इस देश में विद्यमान रही हैं उन सबका भरसक संग्रह किया गया है।

इसी तरह बोलिविया (Bolivia), इक्वेडर (Equador), वेनेज़ि-उला (Venezuela), कोलम्बिया (Colombia), पेरू (Peru), उरुगुये (Uruguay), पारागुये (Paraguay), चिली (Chili) आदि देश इसी तरह एक एक घर में दिखलाये गये हैं। इस विभाग में बालकों की प्रसन्नता के लिए तरह तरह की चीज़ें एक घर में रक्खी हैं।

टावर के बाईं ओर गैस-कम्पनी का घर है। नगर में गैस-कम्पनी की जो बड़ी इमारत है, यह उसी की नक़ल है। सन्ध्या के बाद इसकी छत, चोटियाँ, बराण्डे, दरवाज़े, झरोखे आदि बेलवर की दीपमाला से प्रकाशित होते हैं। सारा घर जैसे सुसज्जित भाव से ठीक अग्निमय हो जाता है।

तार-घर। तार-घर एक लकड़ी का बना हुआ दोमञ्ज़िला मकान है। यहाँ पर, महात्मा एडिसन (Edison) के निकाले हुए टेलीफ़ोन की प्रथम अवस्था से लेकर अब तक जो कुछ उन्नति हुई है सो सब मेशीनों के द्वारा दिखलाई गई है। दर्शक लोग उन मेशीनों का इस्तेमाल करके परीक्षा ले सकते हैं।

स्वीडन-देश का भवन। यहाँ स्वीडन देश की तरह तरह की चीज़ रक्खी हैं। कला-कौशल में दियासलाई, काच, और चीनी मिट्टी तैयार करने के कारख़ाने दिखलाये गये हैं। राजधानी स्टाकहलम के निकटवर्ती किसी स्थान की सुन्दर प्राकृतिक दृश्यावली और गटनबर्ग नगर का चित्र मनोहर है।

नार्वे-गृह। समुद्र में मछली पकड़ने की अनेक तरह की कलें और कौशल, बल्गा और एल्क हरिण अन्यान्य जन्तु (stuffed), लापलेंड-निवासियों की झोपड़ी और गार्हस्थ्य जीवन को जतानेवाली मूर्तियाँ और बल्गा हरिण के रथ आदि यहाँ सजीव भाव से दिखाये गये हैं। चित्रों में "सात बहनों का झरना" (Seven Sisters' Fall) और वहाँ के फ़ियर्ड (Fjord) की अनेक तरह की सुन्दर तसवीरें हैं।

इसके पास ही रूस के छोटे छोटे फूस से छाये हुए लकड़ा के घर, फ़िनलेंड देश के घर, मोनाको-प्रदेश की इमारतें, लोहे का पलस्तर किये घर और उनमें तैयार होनेवाली चीज़ों की प्रदर्शिनी और तुर्की तम्बाकू का घर है। इस घर मे सबसे अच्छी तम्बाकू तीन रुपये की पाव भर के हिसाब से मिलती है। प्रदर्शिनी में दिखलाये गये भिन्न भिन्न राज्यों की चीज़ें ठीक उन्हीं देशों की प्रथा के अनुसार बने हुए घरों में रक्खी हुई हैं, यह कम प्रशंसा की बात नहीं है।

मध्यस्थल। एफ़ेल-खण्ड से बाहर निकल कर मैं तो जैसे चक्कर में पड़ गया। तीन तीन चार चार बीघे के चबूतरों पर भारी भारी घर बने हुए थे। किसी में नक़ाशी के काम, किसी में बड़े बड़े तैलचित्र (Oil painting), किसी में केवल जलचित्र (Water-colour painting) और किसी मे अगणित कल-कारख़ाने भाप और बिजली के ज़ोर से चल रहे हैं। कहीं हाथ से चलानेवाली मेशीनें रक्खी हुई हैं। चारों ओर अनेक देशों की रेलगाड़ियाँ और एंजिन क़ायदे से रक्खे हुए हैं। किसी भारी इमारत के भीतर सभ्य संसार के अनेक राज्यों की तरह तरह की चीज़ें रक्खी हुई हैं। कहीं दस बारह काठा ज़मीन में केवल सोने, चाँदी, हीरे, मानिक, मोती, मूँगे आदि के तरह तरह के अलङ्कार ही ढेर हैं। किसी घर में केवल

घड़ियाँ, किसी मे ख़ाली चीनी मिट्टी के वर्त्तन और एक जगह केवल फ़ान्स देश के रेशमी कपड़े जमा हैं। एक जगह पोशाक के ऊपर लगाने के नक़ली फूल-पत्ते और लताये रक्खी हुई हैं। तरह तरह की लेडियों की पोशाकें एक जगह इतनी रक्खी हुई हैं कि देखते देखते जी ऊब उठता है। कहीं पर इस्तेमाल मे आनेवाली केवल धातुओं की बनी चीज़ें रक्खी हैं। कहीं केवल बिजली का कारख़ाना है। कहीं केवल हवाई-विमानों का आद्योपान्त वृत्तान्त और साज-सरंजाम रक्खा हुआ है। कहीं पर तरह तरह की नौकाओं और जहाज़ों की छोटी छोटी नक़लें और उनका विवरण दिखाया गया है। कहीं पर प्रसिद्ध इञ्जीनियरी का कारख़ाना दिखलाया गया है। एक बड़ी भारी इमारत मे युद्ध-सम्बन्धी सब सामान है। एफ़ेल-स्तम्भ की तरह यहाँ भी सदा भारी भीड़ बनी रहती है। बड़ी कठिनता से हम लोगों को भीतर जाने को मिला। भीतर युद्ध का साज-सरंजाम, तम्बू, कनात, सवारी, पोशाक, रसद, अस्त्र-शस्त्र आदि सब कुछ दिखलाया गया है। एक एक अजगर सी तोप देख कर मेरा तो हृदय दहल उठता था। युद्ध-सम्बन्धी वैज्ञानिक और इंजीनियरी की इतनी कलें और कौशल यहाँ देखने को मिले कि उनकी गिनती करना, दर्शक के लिए, असम्भव ही है। तथापि बहुत सा युद्ध का सामान ऐसा है जो वहाँ दिखलाया नहीं गया। अस्पताल, पुल, खाईं, क़िलेबन्दी आदि सब प्रत्यक्ष दिखाया गया था। यहाँ तक कि युद्ध-कबूतरों को शिक्षा देने के लिए जिस प्रणाली की आवश्यकता है, वह भी दर्शकों को दिखलाने की चेष्टा की गई थी। प्राचीन-युद्ध आदि और वाटर्लू आदि महासंग्रामो की सामग्रियाँ ऐतिहासिक विभाग मे रक्खी हुई हैं। घुड़सवार और पैदल फ़ौज की गति-विधि ऐसे स्वाभाविक ढंग से दिखाई गई है कि कहीं कहीं पर दर्शक उन्हें सजीव समझ कर चौंक पड़ता है। प्राचीन समय के

अस्त्र-शस्त्र और यन्त्र आदि भी दिखलाये गये थे। युद्ध-विक्रम के गौरव से उन्मत्त फ़ान्स के वीरों ने इस इमारत में जातीय युद्ध-विद्या-सम्बन्धी बुद्धि और होशियारी प्रकट करने में यथाशक्ति कुछ कसर नहीं रहने दी। जर्मनी से हार जाने से क्या होता है? वैज्ञानिक स्थल-युद्ध मे प्रखर बुद्धिवाली उत्साहपूर्ण फ्रेञ्च-मण्डली किसी जाति से दबनेवाली नहीं है। इस इमारत के एक हिस्से में जल-युद्ध के साज-सरञ्जाम और जहाज़ों की नक़ल भी रक्खी है। जितना शीघ्र हो, संसार से युद्ध-विग्रह उठ जाना ही चाहिए। इसलिए बहुत देश के ज्ञानी पुरुष पूरी पूरी कोशिश कर रहे हैं*। इसी लिए मैं इस विभाग की जी खोल कर प्रशंसा नही कर सका। फ्रेञ्च लोग ख़ुद भी अब पृथ्वी पर भाई का ख़ून गिराना या भाइयों का ख़ून गिरते देखना नहीं चाहते। उनकी इस महाप्रदर्शिनी के उद्देश्यों में यह प्रधान उद्देश्य था कि सब देशों के लोग आवें, आपस में हेलमेल बढ़े और संसार में शान्ति स्थापित हो। यद्यपि राज-कर्मचारियों मे से अनेक ऐसे हैं जो जर्मन लोगों से दारुण वैरभाव रखते हैं, तथापि साधारण प्रजा में यह भाव नहीं है और वे शान्ति ही पसन्द करते हैं। फ़ान्स की भूमि पर अनेक बार ख़ून ख़राबा हो चुका है, अब रक्तपात होना उचित भी नहीं है। इसी तरह कहीं चिकित्सा-शास्त्र के अनेक विभागों की दवाएँ और औज़ार आदि रक्खे हैं। कहीं पर रसायन, भू-तत्त्व आदि अनेक श्रेणियों की वैज्ञानिक चीज़ें, सामान, कल-कारख़ाने आदि हैं। सब विभागों का पूरा पूरा हाल लिखना तो सर्वथा असम्भव ही है। केवल कल-घर के बारे मे यहाँ कुछ लिखा जाता है।

---

* पर वह कोशिश दिखाऊ थी। गत महायुद्ध ने यह प्रमाणित कर दिया है। अनुवादक।

कल-घर। एफ़ेल-स्तम्भ की तरह यह भी इञ्जीनियरी की बड़ी भारी करतूत है। पृथ्वी भर में एक छत की इतनी बड़ी इमारत और कहीं नहीं है। अँगरेज़ और अमेरिकन लोगों ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि "It is the largest building under one roof in the World." ३७७ फ़ुट के घेरे पर एक खम्भा है। बीच में सारे सभ्य जगत् के भिन्न भिन्न देशों के राजनैतिक चिह्न (coat-of-arms) अङ्कित हैं। यहाँ की अधिकांश कलें (मेशीनें) फ़ान्स की हैं। किन्तु इँगलेंड, बेलजियम, अमेरिका आदि अन्यान्य देशों की भी बहुत सी कलें २००० घोड़ों की ताक़त (2000 horse-power) से घंटे में पाँच लाख किलोग्राम (500000 Kilogrammes) भाप के द्वारा चलती हैं। मेशीन से काग़ज़ बनने का दृश्य वास्तव में विचित्र ही था। इस घर के एक हिस्से मे एडीसन के उन्नत फ़ोनोग्राफ़ के द्वारा दर्शक लोगों को असली मनुष्य के गले के गाने का मज़ा मिलता है। धन-कुबेरों के घरों के लायक़ बिजली की रोशनी भी यहाँ दिखलाई गई है। कुछ कलें बिजली के ज़ोर से चलती हैं। पाश्चात्य राज्यों के भिन्न भिन्न घरों का वर्णन करना असम्भव ही है। अतएव पाश्चात्य खण्ड को छोड़ कर प्राच्य खण्ड का वर्णन किया जाता है।

जापान-भवन। एशियाखण्ड का यह छोटा सा टापू वर्त्तमान समय मे ख़ूब उन्नत है, और दिनों दिन अधिक उन्नति के लिए राजा तथा समाज, दोनों, का प्रयत्न जारी है। जापान बहुत ही थोड़े समय में इतने नीचे से इतने ऊपर चढ़ आया! यह देख कर हमें भी इस समय जापान का अनुसरण करना चाहिए। इतने छोटे से देश में २५,००० स्कूल हैं। और क्या चाहिए? यहाँ पर जापान का बना रेशम, चीनी मिट्टी, सोने, चाँदी और एनामेल (enamel) का काम बहुत ही विचित्र और सुन्दर देखने को मिला। नेकरे (Nacre) -लिखित

ग्रन्थावली, बक्स, छाता, बाँस की चीज़ें और नक़ली फूल बड़े ही सुन्दर थे । 'ह्वेमेजिगाबा' अर्थात् चमड़े के पोर्टमेन्टो, पुतले और पैन्टिल (Pantile) के काम में शायद और कोई जाति जापान की बराबरी नहीं कर सकती । इसके बाद ही पर्शिया-भवन था । उससे निकलते ही मिसर देश का भवन मिला ।

कैरो की सड़क । यहाँ पर खड़े रह कर किसी की भी मजाल नहीं कि वह अपने को यूरोपखण्ड में समझे । मालूम पड़ता है, सशरीर एशिया-खण्ड में, किसी जादू के प्रभाव से, आगये । एक फ्रेञ्च कर्म-चारी को किसी काम से बहुत दिनों तक मिसर मे रहना पड़ा । नील-नदी के तीरवर्त्ती स्थान में बहुत दूर तक इस कर्मचारी की गति थी । इस कर्मचारी की मातहती में वहाँ के बहुत से टूटे-फूटे पुराने मकान खोदे गये । तभी से यह कर्मचारी माल-मसाला इकट्ठा करने लगा । उसी ने नक़ाशीदार लकड़ी के बराण्डे, दरवाज़े, झरोखे आदि के द्वारा इस स्थान पर बहुत प्राचीन से लेकर वर्त्तमान समय तक के ढंग से बने हुए बड़े बड़े पचीस मकान, मसजिद और मिनारेट (Minaret) तथा कई एक दूकानें बनवाई हैं । गन्धी अतर फुलेल बेच रहे हैं, नानबाई चपातियाँ सजाये बैठा है, हलवाई मिठाई रक्खे पैर फैलाये बैठा है । कहीं पर अरब लोग विकट चीत्कार करके गाना गा रहे हैं । किसी घर में मिसर की सुन्दरियाँ विशेष हाव-भाव के साथ नाच गाकर दर्शकों का मनोरञ्जन कर रही हैं । कहीं पर बन्दरों का नाच और साँपों का खेल हो रहा है । राह में बहुत सी स्त्रियाँ और लड़के गधों की पीठ पर चढ़े विचर रहे हैं । मिसर के, अरब के और यूरोपखण्ड के लोगों की इतनी भीड़ थी कि राह चलना कठिन था । हूबहू मिसर का गुलज़ार बाज़ार हो रहा था । एक सौ गधे और उनका साजसरञ्जाम, सईस, दूकानदार, नाचनेवाली,

साज़िन्दे आदि सब सामान ख़ास कैरो से मँगाया गया था । यह स्थान बहुत ही मनोहर जान पड़ा ।

इसके बाद मरक्को बाज़ार, उस देश का नाचना गाना आदि देखा । फिर चीन और भारत के भवन मिले । भारत-भवन में साफ़ी पगड़ी, चपकन और पाजामा पहने देसी ख़ानसामा लोग चाय बिसकुट आदि देकर दर्शकों की सेवा कर रहे थे । इस विभाग में स्थित हाइटी द्वीप, ग्वाटिमाला आदि छोटे छोटे घरों का नामोल्लेख करके अन्य ओर चलना चाहिए । ये सब सुन्दर विचित्र गठनवाले मकान यहाँ पर अन्य भारी और अच्छे मकानों के आगे तुच्छ से जँचते हैं । नहीं तो ऐसा एक घर अगर सन् १८८४ की कलकत्ते की प्रदर्शिनी में होता तो अनेक लोग उसे देख कर अपने नेत्रों को सफल समझते ।

यहाँ से प्रदर्शिनी की प्रदक्षिणा करनेवाली डिकविल रेलवे (Decauville Railway) पर चढ कर मैं दूसरे विभाग की ओर चला । इस रेल की छोटी छोटी खुली गाड़ियाँ ठीक कलकत्ते की ट्रामगाड़ी की ऐसी हैं । रेल की राह के दोनों ओर पृथ्वी की मुर्दा और जिन्दा सब तरह की भाषाओं में, बड़े बड़े अक्षरों में, छपे हुए विज्ञापनों (placards) के द्वारा लोग 'वस्तुओं' का प्रचार कर रहे थे । उनमें से कुछ संस्कृत के और हिन्दी प्लैकार्ड देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई ।

आदर्शग्रामावली । इस रेल के जिस अंश में मैं उतरा, वहाँ कुछ गाँवों की नकल स्थापित थी । उनमें यवद्वीप (Java), सेनिगाल (Senegal), मलगेचिया (Malgachia) टाहिटी (Tahiti), कंगो (Congo), न्यू कालिडोनिया (New Caledonia) और गाबन मुख्य (Gabon) थे । पृथ्वी के अनेक स्थानों के, दूर दूर के देशों के, तीस चालीस निवासियों सहित घास-फूस और बाँस व ताड़ के पत्तों से पास ही पास बने हुए ग्राम बहुत सुन्दर जान पड़ते थे । इन

गाँवों को देखने से उस उस स्थान के गार्हस्थ्य जीवन का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त हो जाता है। हर एक स्थान के स्थानीय दूकानदार और स्थानीय लोग, स्थानीय भाव से, प्रदर्शिनी जब तक रहेगी तब तक, यहीं रहेंगे। इससे अधिक और क्या चाहिए? एक अँगरेज़ विद्वान् का कथन है कि "इस तरह निश्चिन्त होकर बेखटके बेख़र्चे और बिना क्लेश के थोड़े ही समय में पृथ्वीपर्यटन और किसी तरह असम्भव है" यथा—"We can linger in a Tahitian village, a Cingalese, Cochin Chinese, or Chanack, and examine the inhabitants, then going round the World, not in eighty days, or even eighty hours, but in an hour or an hour and a half, and without danger of being killed or eaten, which is certainly an advantage." मेरी समझ में तो ऐसी व्यवस्था फ्रेञ्च लोगों के सिवा अन्य जाति से नहीं हो सकती। अमेरिकन लोगों ने भी इसी टक्कर का एक मेला किया था। मालूम नहीं कि वे कहाँ तक इस महाप्रदर्शिनी की बराबरी कर सके। परन्तु यह बात अवश्य है कि अमेरिकन लोगों में उत्साह और तेज तथा काम करने की चेष्टा ख़ूब है। ख़ास कर ऐसे लागडाँट के मामले मे उन्होंने जो कुछ न कर डाला हो उसे थोड़ा समझिए। पृथ्वी की और कोई जाति जिस काम को एक पखवारे में करेगी, उसे अमेरिकन लोग एक दिन में कर डालेंगे। अँगरेज़ों मे श्रेष्ठ और असाधारण धी-शक्ति-सम्पन्न मनीषी हर्बर्ट स्पेन्सर अमेरिकन लोगों के अति अद्भुत उत्साह और अमानुषिक उद्यम को देखकर दंग रह गये थे। इस बात को स्वीकार करने के लिए सारा जगत बाध्य है कि उद्यम, उत्साह और उन्नति में अमेरिकन लोग आदर्श हैं। संसार की उन्नति के लिए इस तरह और कोई शरीर और मन को लगा नहीं सकता। क्यों न हो? वे अँगरेज़ों के ही बच्चे ठहरे। नये ढंग से नये देश (अमेरिका और आस्ट्रेलिया) में बस कर अगर

वे अद्भुत चमत्कार दिखलावे तो आश्चर्य ही क्या है ? सच तो यह है कि मानव देह पाकर इस नश्वर शरीर और मन को अगर नर-रूपी नारायण की सेवा मे न लगाया तो जन्म वृथा ही गया। ऐसी हालत में जड़ में और हम मे अन्तर ही क्या रहा ? जड़ भी हमसे अच्छे रहे। उन्हें मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार अपने काम में तो लगा सकता है। हममें तो वह बात भी नहीं। हम तो केवल बातचीत की बहादुरी दिखा सकते हैं और काम के समय कुछ नहीं कर सकते। जब तक हम अन्य जातियों से "काम करने का सबक़" न लेंगे तब तक हमारी उन्नति कभी होही नही सकती।

यवद्वीप। यहाॅ के आदमी छोटे और पीले रंग के देखे। स्त्रियाॅ देखने मे आसाम की नागा-जाति के ढंग की थीं। पर बहुत दुबली थीं। गाॅव के पास एक नाट्यशाला थी। वहाॅ विचित्र पोशाक पहने एक नये ढंग के विचित्र बाजे के साथ जवान नर्तकियाॅ नाच रही थीं। यह एक नये ढंग के मनोरञ्जन और शिक्षा की वस्तु थी। इस नाट्य-मन्दिर मे कुछ देर विश्राम किया, कुछ जलपान किया। फिर यव-द्वीप के लोगों का नाचना, गाना, बजाना देख-सुन कर चित्त को प्रसन्न किया। इस द्वीप के निवासी पहले बौद्ध थे। अब उनमे से अधिकांश मुसलमान हो गये हैं।

टाहिटी। पश्चिम-आफ़्रिका के सेनिगाल नामक हबशियों के गाॅव के पास टाहिटी गाॅव दिखलाया गया था। यहाँ के निवासी ताँबे के रंग के, सुडौल और मॅझोले डील के देख पड़े। इनकी भाषा, ख़ास कर औरतों की आवाज़ बहुत मीठी थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चिर-वसन्त-शोभित, मनोहर सुगन्ध और फूलों से परिपूर्ण द्वीप के लायक़ ही इनका स्वर भी है। ये सब क्रिस्तान हैं।

न्यूकालिडोनिया। यहाॅ की स्त्रियाँ इतनी बदशकल हैं कि असल

कल्पना के द्वारा भी वैसी बदसूरती आँखों के आगे नहीं लाई जा सकती। बहुत दिनों तक फ़ान्स के शासन में रहने पर भी इस प्रशान्त महासागर के छोटे से टापू में अनेक मांसलोलुप राक्षसजातीय मनुष्य इस समय भी देख पड़ते हैं।

गावन। आफ़्रिका के गिनीउपकूल मे स्थित गोरिलाओं की निवास-भूमि गावन ग्राम में अनेक जानने की बातें देखीं। इस स्थान का कीड़े-पतिंगों का संग्रह प्राणितत्त्व-शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखने-वाले के लिए बहुत ही उपादेय है। निवासियों मे अधिकांश लोग साधारण हबशियों की अपेक्षा सुन्दर और सुडौल हैं। यहाँ की लाल चींटी बड़ी भयानक होती है।

अलजीरिया, ट्यूनिस आदि का देशों के घर, मसजिद, मिनारेट, वृक्ष-लता, चीज़ें, निवासी और बाज़ार आदि का केवल नामोल्लेख ही करके मैं अपने पाठकों को अन्यत्र लिये चलता हूँ।

क्रमोन्नति का ऐतिहासिक भवन। यह भारी महल बाहर से जैसा सुन्दर है उससे कहीं अधिक हृदयग्राही और गंभीर-उपदेश-पूर्ण भीतर का दृश्य है। दुःख है कि आँखों से बिना देखे इसके महत्त्व का ठीक अनुमान भी करना असम्भव है। इसके दृश्यों का पूरा वर्णन करना मनुष्य की शक्ति से परे है। कहीं पर मनुष्य जाति के पूर्व-पुरुष पर्वत की कन्दरा से झाँक रहे हैं, कन्दरा के पास शेर खड़ा है। कहीं पर नंगे आदमी लकड़ी पर लकड़ी रख कर रगड़ से आग पैदा कर रहे हैं। किसी वृक्ष के नीचे वल्कलधारी दीर्घकाय पुरुष चकमक पथरी ठोंक रहे हैं। कहीं पर मिसर की स्त्रियाँ बच्चे को गोद में लिये ताँत बुन रही हैं। कहीं पर बग़ीचे के भीतर चटसार में ग्रीक पण्डित लोग छात्रों को शिक्षा दे रहे हैं। कहीं रोमन राज-सभा और अदालत दिखाई गई है। किसी ओर प्राचीन असभ्य यूरोप के

लुहार की दूकान है। कहीं पर कालिडया के भेंड़ चरानेवाले लोग नक्षत्र-मण्डल की सैर कर रहे हैं। किसी स्थान पर वल्गा-हरिण और सील-मछली सहित शिविर-वासी एस्किमो का संसाराश्रम है। कहाँ तक गिनाऊँ? इसी तरह अनेक देशों का, अनेक युगों का, अनेक अवस्थाओं का सामाजिक जीवन, उस समय का पहनावा, आचार-व्यवहार और अस्त्र-शस्त्र यन्त्र आदि सजीव भाव से दिखलाये गये हैं। अचानक देखने से जान पड़ता है कि सब मूर्त्तियाँ सजीव हैं और अपना अपना काम कर रही हैं। इसी महल के एक पास अनेक देशों से इकट्ठी की गई ऐतिहासिक घटनाओं की चीजें और चित्र रक्खे हैं।

पास के एक घर मे अनेक देशों के अनेक प्राकृतिक दृश्य दिखलाये गये हैं। यहाँ से निकल कर निकारागुआ-भवन मे उस देश के निकटवर्त्ती प्रशान्त महासागर की बहुत ही सुन्दर नक़ल देखने को मिली। छोटे छोटे जहाज़ तैर रहे हैं। नदी का सोता, कुंड की लहरें और सागर की तरङ्गें सचमुच ही अद्भुत बनी थीं। काच के ऊपर असली जल से ये सब दृश्य दिखाये गये थे।

निकट ही और एक घर में पृथ्वी के घेरे के नियुतांश परिमाण का एक भारी ग्लोब रक्खा था। सारा गोलक देखने के लिए तीन खण्ड ऊपर चढ़ना पड़ता है और प्रदक्षिणा करने में थकन चढ़ आती है। यहाँ पर छोटे बड़े तरह तरह के गोलक दिखलाये गये हैं।

और एक जगह पर मेशीन से एक ही तान का बाजा बज रहा है और पास ही पर्सीपोलिस (Persipolis) नगर के भूगर्भ से नया निकाला हुआ प्राचीन पारसी लोगों के अहुरमज्द का उपासना-मन्दिर भी ठीक उसी तरह उपासकों सहित विद्यमान है।

इसके सिवा भिन्न भिन्न स्थानों में ऊँचे स्तम्भ और उनकी चोटी पर चढ़ने के लिए विजली की कलें, पृथ्वी के भिन्न भिन्न देशों के नाच-

गाने थियेटर-तमाशे, अनेक जातियों के अनेक श्रेणियों के अगणित होटल, काफ़े (café), रेस्टराँ (restaurent), काबारे (cabaret) आदि पान-भोजन-भवन, महल, इमारतें और छोटी दूकानें थीं।

सेइन नदी के पार। ठीक सामने ट्रोकाडेयारो-गोलघर दो विशाल पंख फैलाये खड़ा है। आँगन में नक़ली झरना है और एक बड़ा भारी फुहारा पत्थर के चार पशुओं—साँड़, घोड़ा, गैंड़ा, हाथी—पर रक्खा हुआ है। महल के भीतर एक भारी हाल है। उसमें टेबिल, कुर्सी आदि सामान सहित ५००० के लगभग आदमी बैठ कर भोजन कर सकते हैं। अन्यान्य कमरों में प्राचीन और आधुनिक नक़ाशी और खुदाई के काम, फोटोग्राफ़, पृथ्वी की सभ्य असभ्य अनेक प्रकार की पोशाकें गहने और व्यवहार में आनेवाली सामग्री, अस्त्र-शस्त्र, यन्त्र-तन्त्र, बाजे और स्त्री-पुरुषों की मूर्त्तियाँ रक्खी हुई हैं। यह स्थान कुछ समय के लिए प्रदर्शिनी में शामिल कर लिया गया था। असल में यह टुकड़ा एक स्थायी म्यूज़ियम है। इस ओर वन, उपवन, नदी, पुल, पेड़, लता, फूल, फल और जीते हुए जलचर जन्तु दिखलाये गये थे।

विश्व-प्रदर्शिनी का वर्णन समाप्त हो गया। पर मैं प्रदर्शिनी का हाल कुछ भी नहीं लिख सका। इसके लिए मैं पाठकों के निकट क्षमाप्रार्थी हूँ। यह प्रदर्शिनी भी एक अपूर्व चीज़ थी। अब वैसा दृश्य आँखों से देखने को नहीं मिल सकता। मगर यूरोप के जीव सचमुच विश्वकर्मा हैं। कई महीने तक लन्दन के (Oxford Cyclorama Hall) में पृथ्वी के अन्यान्य विविध दृश्यों के साथ पेरिस-प्रदर्शिनी के भिन्न भिन्न खण्ड इस तरह दिखाये गये थे कि वे ठीक असल जान पड़ते थे। माडर्न ट्रुथ (*Modern Truth*) पत्रिका का मत नीचे उद्धृत किया जाता है। इससे पाठक लोग इस विराट् अनुकरण की ख़ूबी का कुछ कुछ अनुमान कर सकेंगे।

"No words could give the faintest idea of the wonderful realism of the representations You look along the landscape for miles, and are entranced. So perfect is the method employed that the haze of the atmosphere and that chiaroscuro which many of our best painters fail to catch, is faithfully reproduced. The green herbage on the mountain side is so vivid, and apparently so near, that you feel as though it were possible to stretch out your hands and pluck a cowslip from its vernal bed. We are charmed and have forgotten when the circle is completed that we are in England's metropolis. It is simply astounding in its versimilitude"

29th March, 1890

जो कुछ हो, यहाँ भी वही रमणीय नन्दन कानन, वही वृक्ष समूह के पत्तों मे बिजली की रोशनी की विचित्र शोभा, वही अगणित नर-नारियों की भीड़, वही कृत्रिम और स्वाभाविक सौन्दर्य के मेले में रूप का बाज़ार और वही चारो ओर आनन्द का प्रवाह था। तात्पर्य यह कि वैसी मनोहर और विराट् प्रदर्शिनी अब फिर जगत् को देखने को नहीं मिल सकती।

विगत सौ बरसों मे जगत में जो भयानक परिवर्त्तन हो गया था, उसे दिखलाने के लिए यह प्रदर्शिनी आईने के समान थी। सन् १७८९ मे असह्य राजशक्ति के मिटाने का उद्योग फ़ान्स में शुरू हुआ। लगातार कई साल तक भयानक रक्तपात होता रहा। सन् १८८९ के शेष में, पेरिस-प्रदर्शिनी के अन्त मे, ११ नवम्बर को, विशाल ब्रेजिल-साम्राज्य के अधीश्वर प्रजाहितैषी साठ से भी अधिक अवस्था के वूढ़े सम्राट् डाम पेड्रो ने आधी शताब्दी के सुशासन के बाद, राज्य के भावी हित के लिए, प्रजा को प्रसन्न रखने की इच्छा से, चुपचाप, सिंहासन का स्वत्व सदा के लिए छोड़ दिया और अपने प्रिय ब्रेजिल के निकट जन्मभर के लिए विदा होकर यूरोप को चले गये। शान्त भाव से प्रजातन्त्रशासनप्रणाली साम्राज्य मे जारी हो गई।

प्रदर्शिनी का वर्णन समाप्त कर चुकने पर भी उसे समाप्त करने की इच्छा नहीं होती । मेले के ही अवसर में फ्रेञ्च साधारण तन्त्र के सभ्यों का चुनाव हुआ था । इसी उपलक्ष में एक फ्रेञ्च लेखक ने जो कुछ लिखा है, वह नीचे उद्धृत किया जाता है ।

"The universal Exhibition has also had, and rightly had, a great influence on people's minds. This vast enterprise was looked upon in the first instance with no little distrust. The refusal of the great European Powers to take part in it raised fears as to the success of the undertaking; the great trades and manufactures doubted how far it would be any profit to them; the small trades felt certain of suffering by it. There seemed to be something incongruous in associating a great international concourse with the views of the old neighbouring monarchies. It needed the almost apostolic energy of its chief organizer, M. Berger, to carry the object through. He went from town to town preaching in every chamber of commerce, to every syndicate, to every manufacturer, the necessity of contributing to the success of the Exhibition. That success distanced every expectation. The new and daring beauty of the buildings themselves, where the unprecedented combination of iron, terra cotta, and enamelled pottery produced an association of architectural effects hitherto unknown; the bold elegance of the Eiffel Tower; the display of wealth and splendour of our industries, which not only proved that France is not yet ruined, but showed what immense efforts and what striking progress she has made during the last few years; and, finally, the extraordinary concourse of foreigners who came from all parts of the globe to witness these marvels of our industrial activity—all this combined to make the Exhibition a subject of boundless satisfactien to our national pride It was impossible not to attribute to the Republic something of the credit of this triumph of pacific France. Was it not the Republic that conceived, and willed, and executed this gigantic work? Was it not the Republic which so managed the undertaking as to work it at a profit from the very first day? How could any one have the face to say that the Republic had impoverished France, after such a proof of the vitality of our industries, and after hundreds of thousands of strangers had come to Paris and left more than a milliard of money behind them?

Festivities of various sorts were skilfully distributed throughout the whole time of the Exhibition—a happy mixture of festivities—industrial, patriotic, and intellectual, and all these celebrations tended

of course, to lend something of their own *eclat* to the Republican idea, while at the same time they relieved the commemoration of the centenary of 1789 of any sectarian or too exclusively national character First on the 5th and 6th of May, there was the commemoration of the opening of the states general at Versailles, and at Paris the inauguration of the Exhibition Then in July, came the national festival of the 14th—the centenary of the fall of the Bastille In august came the inauguration of the new Sorbonne, to which seven hundred provincial and foreign students came by invitation and which gave the youth of France an opportunity of displaying all their finest and most amiable qualities in entertaining the youth of the neighbouring countries After the inauguration, seventy-five meetings were held at the Sorbonne; and these meetings attracted a number of the learned *elite* of all countries, who received a warm welcome from the representatives of the Government as well as from the representatives of learning Then a little before the elections, came the banquet of the thirteen thousand mayors in the Palais de l'Industrie, and in the same hall, magnificently decorated for the occasion, the performance of Mademoiselle Holmes' "Triumphal Ode to the Republic" sung by a thousand choristers before an audience of twenty-two thousand persons In the interval between the two ballots, M Carnot inaugurated M Dalon's great monument, the Triumph of the Republic, and presided at the distribution of prizes at the Exhibition The quietness with which the elections went off in the midst of all these festivities struck every body, especially those strangers who had been startled by the virulence of the political passions expressed in speech, but the festivities, themselves, and the Exhibition of which they were incidents, helped to produce this calm When every thing seemed so gay, so smiling, with such a prophecy of peace and prosperity in the air, why should the voter play into the adversaries of the Republic, and throw France into confusion once more"

G Monod

Contemporary Review, November, 1889

पत्र मे यद्यपि कुछ फ्रेञ्च-चरित्र की बू पाई जाती है तथापि इसे 'अत्युक्ति' नहीं कह सकते। एक महानीच निन्दक को भी लाचार होकर यह स्वीकार करना पड़ेगा कि पेरिस की विश्व-

प्रदर्शनी गौरव के साथ बहुत सी बाधाओं और विघ्नों को हटा कर आशा से अधिक सफलता और यश प्राप्त करती हुई संसार के यात्रियों और दर्शकों को प्रसन्न कर सकी।

महामेला के बाहर । यहाँ नक़ली (Rue Saint Antoine) नामक सड़क और उस पर बना हुआ प्रसिद्ध बास्टिल-कारागार दिखलाया गया है। रोज़ सन्ध्या के समय तीन घंटे तक इस स्थान में बास्टिल-ध्वंस का सजीव अभिनय होता था। सन् १७८९ की १४ जूलाई को बास्टिल का क़िला मिट्टी में मिला दिया गया। उसी समय की अवस्था के अनुरूप वैसेही रास्ते-सड़कें, घर-द्वार, अनेक प्रकार की चीज़ों की ५० दूकानें, और उस समय के आचार-व्यवहार, पोशाक आदि की नक़लें असल रूप में दिखाई जाती थीं। पहले जेल की खिड़की से रस्सा लटका कर एक क़ैदी के भागने की चेष्टा करने पर उस पर पहरेदारों ने गोलियाँ चलाई। उसके बाद फ्रेञ्चविप्लव के सूत्रपात्र-स्वरूप बास्टिल-ध्वंस के समय जो जो कुछ हुआ था सो सब संक्षेप में ठीक ठीक करके दिखलाया गया। जेल के चारों ओर भारी भीड़ दिखाई दी, कोलाहल सुनाई पड़ा। उसमें सैकड़ों कण्ठों से Vive la nation (जाति की जय) की पुकार सुन पड़ती थी। क़िले के मोर्चे और दूसरी ओर की दूकानों से तोपों का छूटना दिखाया गया। तदनन्तर जेलख़ाने पर अधिकार हो गया। लोग "Victoire! La Bastille est prise' (जय! बास्टिल पर अधिकार) कह कह आनन्दध्वनि करने लगे। अन्त को सुन्दर पोशाक पहने कुछ नर-नारियों का नाच हुआ और फ्रेञ्च लोगों का प्रिय जातीय सङ्गीत गाया गया। तीन घंटे तक मुझे मालूम पड़ता रहा कि सचमुच फ्रेञ्च-विप्लव में हम लोग मौजूद हैं। मेरे साथ दो फ्रेञ्च भद्र महिलायें थीं। अभिनय समाप्त

होने पर वे विशेष प्रसन्नता के साथ वारम्बार कहने लगीं कि यह विप्लव अगर न होता तो हम लोगों की इतनी उन्नति कभी न होती।

वास्टिल-ध्वंस का वर्णन करना सहज काम नहीं है। महात्मा कार्लाइल लिखते हैं—

"To describe the Siege of the Bastille (thought to be one of the most important in History) perhaps transcends the talent of mortals Could one but after infinite reading, get to understand so much as the plan of the building!"—History of the French Revolution"

जो कुछ हो. ४०० वर्ष के घोर अत्याचार के साक्षी-स्वरूप वास्टिल-कारागार के नष्ट हो जाने की खबर सभ्य जगत् मे विशेष आदर के साथ सुनी गई। कवि कोपर की नीचे उद्धृत कविता पढ़कर पाठक लोग इस बात की यथार्थता को समझ लेंगे।

"Ye horrid towers, the abode of broken hearts,
Ye dungeons and ye cages of despair
That monarchs have supplied from age to age
With music, such as suits their sovereign ears,
The sighs and groans of miserable man
There's not an English heart that would not leap"
To hear that ye are fallen at last

Cowper

शताब्दी भर का पानोरामा (Panorama) चित्र। (Tuileries) बाग में यह भारी चित्र-पट है। इसमे उन्नीसवीं सदी के शिल्पी, ग्रन्थकार, नट, राजनैतिक और कामकाजी आदमी, नया आविष्कार करनेवाले और पण्डित लोग एक ही जगह एक ही चित्र मे देखने को मिलते हैं।

विप्लव का म्यूजियम। लूव्रे महल के एक हिस्से में यह ऐतिहासिक म्यूजियम स्थापित है। विप्लव के सम्बन्ध की हस्तलिपियाँ, पदक, इस्तेमाल में आनेवाली चीज़ें और अन्यान्य चिह्न यहाँ रक्खे

हुए हैं। बास्टिल के प्रसिद्ध क़ैदी लाट्यूड (Latude)) ने जिस रस्सी के द्वारा जेल से भागने की चेष्टा की थी वह रस्सी श्रौर दाँत, मारा, रोबस्पेयर श्रादि मुखियों की भिन्न भिन्न अवस्थाओं की तसवीरें, तरह तरह के दृश्य श्रौर स्मारक वस्तुएँ यहाँ दिखलाई गई हैं।

शताब्दी का इतिहास। इस जगह भारी भारी बीस चित्रपटों में सन् १७८९ से लेकर सन् १८८९ तक की ऐतिहासिक घटनायें चित्रित हैं। यह रू सेक्रेटन (Rue Secretan) सड़क पर है। पहले चित्रपट में विप्लव के ठीक पहले की फ़्रांस की हालत दिखाई गई है। देहात का एक अभागा परिवार ज़मींदार का वक़ाया नहीं दे सका है; अतएव उस पर घोर अत्याचार हो रहा है। उनकी झोपड़ी के किवाड़ तक उतारे लिये जा रहे हैं। उसी समय उधर से ज़मींदार महाशय कारचोबी के काम की क़ीमती पोशाक पहने चोबदार घुड़सवार आदि बहुत से अनुचरों श्रौर सहचरों से घिरे हुए जोड़ी-गाड़ी हँकाते हुए चले जा रहे हैं। दूसरे चित्रपट में बास्टिल-ध्वंस से लेकर बिगड़ी हुई रियाया के काम दिखलाये गये हैं। एक में डरपोक मूर्ख राजा सोलहवें लुई (Louis XVI) का विचार दिखाया गया है। इसी तरह पहले नेपोलियन के काम, वाटर्लू का युद्ध, तीसरे नेपोलियन की लीला, आक्रमण के समय जर्मनों का गाम्बेटर-विमान पर चढ़ना आदि दिखला कर अन्त को सन् १८८९ के महामेला का दृश्य दिखलाया गया है। यहाँ पर दो बहुत ही भयानक चीज़ें रक्खी हैं। एक तो गिलाटीन के हाथों मारी गई अभागिन रानी मेरी एन्टोइनेट ((Marie Antoinette) का खून से तर रूमाल श्रौर दूसरी बलिदान की पहली रात को लिखा गया राजा सोलहवें लुई का आँसुओं से तर वसीयतनामा। विप्लव के ये दोनों लोमहर्षण निदर्शन पत्थर के हृदय को भी विगलित कर देते हैं। मोची साइमन

Simon the Cobbler) के आश्रय में बे-मा-बाप के राजकुमार (Dauphin) की दुर्दशा का चित्र भी बहुत ही करुणाजनक है ।

पेरिस महानगरी ।

सब सभ्य जातियाँ एकस्वर से स्वीकार करती हैं कि बड़े किन्तु सुन्दर महलों, गौरवपूर्ण अनेक प्रकार के स्मारक-चिह्न मनूमेन्टों, सुरुचिसम्पन्न सुसज्जित बड़ी बड़ी दूकानों, निवासियों का असाधारण प्रफुल्ल-भाव और हँसमुख स्वभाव और सभ्य समाज को पसन्द खेल-तमाशे आदि बातों में पेरिस संसार में सर्वश्रेष्ठ राजधानी है। यद्यपि घेरे मे, लोक-संख्या में, व्यवसाय-वाणिज्य में और धन मे पेरिस लन्दन की अपेक्षा बहुत छोटा है तथापि एक बात मे पृथ्वी के सब नगर पेरिस के आगे सिर झुकाते हैं । सब श्रेणी के यात्रियों का मनोरञ्जन करके उनके हृदय में एक प्रकार की स्फूर्ति ला देने में पेरिस की बराबरी कोई नगर नहीं कर सकता । अगण्य विपुल-संग्रह-पूर्ण म्यूज़ियम, अनेक श्रेणी के विद्यालय, असंख्य सुशोभित विहार-वाटिकायें, सड़कों के हर एक मोड़ पर सुव्यवस्था-युक्त आमोद-भवन, हमेशा भीड़-भाड़ से भरे पान-भोजन के स्थानों से घिरे रास्ते नगर में हर घड़ी रौनक़ पैदा करते रहते हैं । 'काफे' के भीतर और बाहर, फुटपाथ के ऊपर, पेड़ों के नीचे हर घड़ी आप देखेंगे कि लोग बैठे हुए खा-पी रहे हैं, सिगरेट पी रहे हैं । जैसे किसी को कोई काम नहीं। एक अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है। रास्ते के बीच नियत फ़ासिले पर बडी बड़ी घड़ियाँ लगी हैं; रात को बिजली की रोशनी होती है । दिन-रात एक ही ढंग से नगर की शोभा बनी रहती है । पेरिस में अँगरेज़ों का फुर्ती के साथ चलना नहीं देख पड़ता; सभी जनवासी चाल से मौज के साथ चलते हैं । जैसे उनके निकट संसार और संसार का काम-काज एक तुच्छ चीज़

है। लन्दन की राह में किसी से भी कहीं का पता-ठिकाना पूछने पर वह उत्तर देकर फुर्ती से अपनी राह लेता है। और, पेरिस में किसी से वैसा प्रश्न करने पर वह तुम्हारे साथ वातचीत शुरू कर देगा, फिर तुमको राह वतलावेगा। अगर आप भूल कर उलटी तरफ़ चले आये हैं तो वह आपको, कुछ दूर साथ जाकर, राह दिखला आवेगा। फ्रेञ्च लोगों की भव्यता (Politeness) भी इसका एक कारण है। पूर्व और पश्चिम के सम्मिलन-भाव ने पेरिस को एक अपूर्व भाव दे रक्खा है। पेरिस के मार्ग में, सेइन नदी के किनारे या बाग़ आदि मे खड़े होने से मन में एक ऐसे अनिर्वचनीय भाव का उदय होता है कि मानों हमारा शरीर स्वर्ग की ओर उड़ा जा रहा है।

पेरिस की क़िलेवन्दी और शहरपनाह। इसमें सड़कों के लिए ५६, रेल के लिए ९, सेइन नदी के लिए २ और दो नहरों के लिए २ द्वार हैं। सेइन नदी शहर के भीतर पूर्व-पश्चिम को वहती है। दीवार के भीतर, शहर को घेरे हुए २१ मील रेल-लाइन है। पेरिस की वड़ी वड़ी सड़कों को वुलवर्ड (Boulward) कहते हैं। इनमें दोनों किनारे और वीच में वृक्ष-समूह-शोभित तीन तीन फुटपाथ हैं। एक वुलवर्ड और रेल-लाइन शहर-पनाह के किनारे किनारे शहर को घेरे हुए है।

पेरिस और उसके उपनगरों के दृश्य अच्छी तरह देखने के लिए वहुत समय की आवश्यकता है। ख़ास कर मैं प्रदर्शनी के समय गया था, इस कारण सव देखना और प्रदर्शनी की भी सैर करना मेरे लिए सर्वथा असम्भव था। इसलिए मैं सव स्थानों को नहीं देख सका। जितने स्थान देखे उनका वर्णन नीचे लिखा जाता है।

नाट्रडाम गिर्जा (Notre Dame de Paris)। यह एक वड़ा भारी उपासना-मन्दिर है। इसके आस-पास २२३ फुट ऊँचे दो टावर हैं।

चारों ओर ११३ बड़ी बड़ी खिड़कियाँ और २९७ स्तम्भ हैं। इसमें बहुत से घंटे हैं। उनमें से दक्षिण-टावर का एक घंटा ४४८ मन भारी है। खाली इसके भीतर का गोला १४ मन का है। फ्रान्स भर में इससे बड़ा घंटा और नहीं है। सन् १६८६ में यह ढाला गया था। सन् ११६३ में इस गिर्जे की नींव पड़ी थी। विप्लव के समय इस गिर्जे का नाम उपासना-मन्दिर की जगह प्रज्ञामन्दिर (Temple de la Raison) नाम रक्खा गया और इसी रूप में इसका इस्तेमाल भी हुआ। ईसा की माता मेरी की मूर्त्ति की जगह स्वाधीनता की मूर्त्ति स्थापित हुई। प्रज्ञा-देवी के सिंहासन पर एक नर्तकी (Maillard the ballet dancer) को देवी बना कर खूब धूमधाम के साथ उसकी पूजा हुई। चारों ओर वाल्टेयर, रूसो आदि साम्य-वादी पण्डितों की मूर्त्तियों के अद्धे स्थापित हुए। इस प्रकार सन् १२९४ की १२ वीं मई तक यह मन्दिर खूब गुलज़ार रहा। उसके बाद ८ बरस तक बन्द रहा। अन्त को सन् १८०२ में महावीर नेपोलियन ने फिर इसे भगवान् की उपासना के लिए खोला। पेरिस का यह प्रधान गिर्जा और ऐतिहासिक मन्दिर सेइन नदी के किनारे—उसके भीतर के एक टापू (He de Paris) में स्थापित है। यहाँ पर सेइन नदी दो धारा होकर फिर आगे दोनों धाराओं की एक धारा हो गई है। इसी से टापू सा बन गया है।

जातीय पुस्तकालय और पाठ-भवन (Bibliotheque Nationale) इसमें पचीस लाख से अधिक छपे हुए ग्रन्थ और बहुत सी हस्त-लिपियों आदि का संग्रह है। यहाँ पाठकों के लिए दो विभाग हैं। एक में चाहे जो जा सकता है और दूसरे में अनुमति-पत्र के बिना जाने को नहीं मिलता। इस विभाग में ३३४ पाठकों के बैठने के लिए सीटें हैं। विदेशी लोगों को अपने अपने देश के राजदूत (Ambassador) से

यहाँ जाने का अनुमतिपत्र मिलता है। यद्यपि यहाँ पुस्तकों का इतना बड़ा संग्रह है तथापि व्यवस्था कुछ बहुत अच्छी नहीं है। सूचीपत्र (Catalogue) आदि का वन्दोवस्त इतना ख़राव है कि कभी कभी सहज में पुस्तक खोजे नहीं मिलती। इस स्थान के सिवा और भी अनेक साधारण पुस्तकालय और पाठ-भवन हैं। किन्तु सबके ख़ास ख़ास नियम हैं।

साधारण-तन्त्र की मूर्त्ति। पेरिस की बहुत सी बड़ी बड़ी मूर्त्तियों में यह मूर्त्ति एक विशेष दृश्य है। तीन मूर्त्तियाँ—स्वाधीनता, साम्य और मैत्री—बैठी हैं। तीन बार साधारण तन्त्र की स्थापना मे जिन घटनाओं ने सहायता की उनके वारह रिलीफ़ दृश्य हैं। ठीक इसी स्थान पर, द्वितीय साम्राज्य के समय में, एक मनूमेन्ट स्थापित हुआ था। उसी मनूमेन्ट को तोड़ कर इसकी स्थापना हुई है। और शायद शासन-प्रणाली के वदलने पर इसका भी ध्वंस हो जायगा।

प्रायश्चित्त-मन्दिर (La Chapelle Expiatoire)। यह एक छोटा सा गिर्जा, सेन्ट ओनो की सड़क पर, है। राजा सोलहवें लुई और उनकी रानी की, विप्लव के समय मे, गिलाटीन में हत्या कर डाली गई। उन्हीं के स्मारक में यह उपासना-मन्दिर स्थापित हुआ है। सिर-कटी दोनों लाशें यहाँ गड़ी हुई हैं। इसके सिवा पेरिस में अनेक रोमन-कैथलिक, प्रोटेस्टेन्ट, रूसी और यहूदियों के उपासना-मन्दिर हैं। उनमें से कुशल-क्षेत्र के पास ही वना हुआ माडिलीन गिर्जा (La Madeleine) बहुत बड़ा और विशेष दर्शनीय है। इसकी वनावट गिर्जों की ऐसी नहीं है। यह मन्दिर ग्रीक ढंग से—बहुत कुछ कलकत्ते के यूनिवर्सिटी-हाल से मिलता हुआ—बना है। ३३ हाथ ऊँचे और ११ हाथ घेरे के ५२ खम्भे इसे घेरे हुए हैं।

कुशलक्षेत्र (Place de la Concorde)। यह हवा खाने

का स्थान (square) अत्यन्त रम्य और प्रशस्त है। यह पृथ्वी के अव्वल नम्बर के सुन्दर और मनोहर स्कायरों में गिना जाता है। वहुत लोग तो इसी को सबसे श्रेष्ठ समझते हैं। यह ३६० गज़ लम्बा और २३५ गज़ चौड़ा है। दक्षिण ओर सेइन नदी वहती है, पश्चिम ओर (Champs Elysees Park and Promenade) है, उत्तर ओर विचित्र शोभावाली सड़क (Rue de Rivoli) है और पूर्व ओर तुलरी का वाग़ (gardin des Tuileries) है। सन्ध्या के वाद यहाँ से शुरू करके डेढ़ मील तक लम्बी दोनों ओर गैस के लैम्पों की रोशनी देख पड़ती है। इसी जगह पर मिसर के पाशा का दिया हुआ उपहार एक स्तम्भ स्थापित है। यह मिसर के लक्सर नामक गाँव से लाया गया है, इसी से इसको लक्सर-स्तम्भ (obelisque de la Louqsor) कहते हैं। उत्तर और दक्षिण में दो बड़े फुहारे हैं। उनके बीच के नल से २० हाथ के लगभग ऊँचा पानी उठता है। इतिहास से इस स्थान का विशेष सम्बन्ध है। सन् १७६३ में इस स्कायर का नाम "पञ्चदश-लुई-क्षेत्र" था। सन् १७७० में राजकुमार (वाद को सोलहवें लुई) के व्याह के उपलक्ष मे यहाँ आतशवाज़ी की ऐसी धूम हुई कि उस जगह की भीड़ में दवकर १२०० आदमी मर गये और २००० के भारी चोट आई। सन् १७९२ में ११ अगस्त को, अर्थात विप्लव के वाल्यकाल मे व्यवस्थापक सभा के हुक्म से यहाँ की धातु की राजमूर्ति गला कर वेच डाली गई और उसकी जगह स्वाधीनता देवी की मूर्ति स्थापित हुई। इसी समय से पहला नाम वदल कर नया नाम "विप्लव की रङ्गभूमि" (Place de la Revolution) रख दिया गया। सन् १७९३ की २१ वीं जनवरी को सोलहवें लुई का वध हुआ। तव से सन् १७९५ की तीसरी मई तक भीषण

गिलाटिन राक्षस की कराल तरवार इस रमणीय आरामभूमि में क्रीड़ा करती रही । इसी समय में राजा, रानी, मन्त्री और अन्यान्य नर-नारियों को मिलाकर ३००० के लगभग जीवों के रक्त-पात से यह सुन्दर स्थान अपवित्र होता रहा । शान्ति स्थापित होने के बाद, राजा की जहाँ हत्या हुई थी वहाँ पर एक फुहारा स्थापित करने का प्रस्ताव उपस्थित होने पर मन्त्रिवर शाटोब्रियाँ Chateau-briand) ने आपत्ति की और यह सच्ची ही बात कही कि इस स्थान पर जितना खून बहा है उसका दाग़ पृथ्वी का सारा जल लाकर डालने से भी नहीं छुट सकता । सन् १७९९ मे विप्लव का नाम हटाकर फिर "प्लस दि ला कांकर्ड" नाम रक्खा गया । फिर राजसिंहासन स्थापित होने पर, सन् १८१४ की १९ वीं एप्रिल को, धर्मानुष्ठान से पवित्र करके "पञ्चदशलुईक्षेत्र" नाम रक्खा गया । सन् १८३० के बाद फिर "प्लस दि ला कांकर्ड के नाम से पुकारा जाता है । शान्तिदाता भगवान् के निकट मैं प्रार्थना करता हूँ कि वर्तमान साधारण तन्त्र फ्रान्स मे चिरकाल तक बना रहे, और फिर इस मनोहर नाम को बदलने का प्रयोजन न हो । इस एक स्कायर के इतिहास से ही पाठक लोग फ्रेञ्च लोगों के चरित्र का परिचय पा सकते हैं । इतने छोटे स्थान में ऐसा विचित्र ऐतिहासिक अभिनय शायद ही और कोई जाति दिखला सकी हो ।

दो सैनिकाश्रम Hotel des Invalides) । सन् १६७० में राजा चौदहवें लुई ने इसकी स्थापना की थी । भित्ति-स्थापन के लेख में इसका उद्देश्य यों प्रकाशित किया गया है—"pour assurer une existence heureuse aux militairés qui, viellards mutiles ou infirmés, Se trouveraient sans ressources aprés' avoir blanchi sous les drapeaux ou versé leur sang pour la patrie."

अर्थात् जो सैनिक पुरुष देश के लिए लड़े हैं और उसमे अङ्गहीन हो गये हैं, अथवा वृद्ध होने के कारण जीविकाहीन होगये हैं उनका शेष जीवन सुख से व्यतीत होने के लिए इस आश्रम की स्थापना हुई है। ९० वीघे ज़मीन मे यह स्थान वना हुआ है। इसमे ५००० आदमियों के रहने की व्यवस्था है; किन्तु इस समय (जव मैं वहाँ था) ४०० से अधिक आदमी इसमे नहीं हैं। इसका कारण यही है कि अधिकांश सैनिक लोग पेन्शन लेकर स्वतन्त्र भाव से रहना पसन्द करते हैं। सामने के मैदान में कई एक तोपें रक्खी हुई हैं। इनमे अलजीरिया, चीन और कोचीन चीन मे जीती हुई कई तोपें भी हैं। दाहने और वाएँ नेपोलियन-द्वारा यूरोप के कई देशों से जीतकर लाई गई अनेक तोपें रक्खी हैं। इस इमारत का ३६० फुट ऊँचा गुम्वद वहुत दूर से दिखाई पड़ता है।

इसके पश्चिम-खण्ड मे हथियारो का म्यूज़ियम Musee de Artillerie है। यहाँ, वड़ी वड़ी तोपो से लेकर तीर कमान तक, ४००० तरह के अस्त्र-शस्त्र रक्खे हुए हैं। वहुत से झंडे रक्खे हैं। उनमे सुप्रसिद्ध वीरवाला जोन आफ़् आर्क (Joan of Arc) का झंडा देखने योग्य है। एक छोटे से कमरे मे अनेक ऐतिहासिक ढाल तरवार और कवच आदि रक्खे हैं। आदिम युग से मनुष्य के व्यवहार मे आनेवाली जितनी और जितने प्रकार की युद्ध की सामग्री यहाँ जमा है उतनी और कहीं नहीं। इस वात को अँगरेज़ लोग भी स्वीकार करते हैं—"It is one of the most complete collections of arms extant from the earliest period of human ingenuity in this department of art and science"

इस स्थान के एक खण्ड में, गुम्वद के नीचे ही, महावीर

नेपोलियन की समाधि है । २० फुट गहरे और ३६ फुट घेरे के एक गोलाकार (Crypt) में एक परम प्रतापी सम्राट् का शरीर लेटा हुआ है । यहाँ खड़े होते ही शरीर में रोमाञ्च हो आया । मैंने सोचा, आज सारे यूरोप के महाभय का कारण शूरशिरोमणि का बल-विक्रम न-जाने कहाँ लीन होगया है, तथापि उसका आतङ्क बहुत दिनों तक संसार मे बना रहे । यूरोप के, ख़ासकर इँगलैंड के, बच्चे बहुत दिनों तक नेपोलियन के नाम से डराये जाते थे । नेपोलियन जैसा जीव था उसकी समाधि भी वैसी ही है । ऊपर १६० फुट ऊँचा गुम्बद है और नीचे समाधि के चारों ओर युद्ध और शासनकार्य आदि के चित्र अंकित हैं । १२ विराट् 'विजय' की मूर्त्तियाँ हैं और चारों ओर अनेक देशों से जीतकर लाये गये ६० झंडे हैं । एक भयानक गम्भीर दृश्य है ! समाधि-सीमा के भीतर प्रवेश करने का द्वार बन्द है । द्वार के ऊपर सम्राट् के वसीयतनामे से उद्धृत यह महावाक्य लिखा हुआ है—"ge desire que mes cendres reposent sur les bords de la Seine au milieu de ce peuple francais que g'ai tant aime.") अर्थात् मेरी इच्छा है कि मेरा भस्म (देह) सेइन नदी के किनारे, उन्हीं लोगों के बीच, जिन्हें मैं बहुत ही प्यार करता हूँ, रक्खा जाय ।

सन् १८२१ की ५ मई को सेन्टहेलिना टापू में नेपोलियन की मृत्यु हुई । उन्नीस बरस बाद, सन् १८४० में, नेपोलियन का शव विशेष धूमधाम के साथ उक्त टापू से पेरिस लाया गया और उपयुक्त स्थान पर समाधि-स्थ किया गया । नेपोलियन का जीवन अपने दोष और गुण दोनों के कारण जगत् के लिए शिक्षा प्राप्त करने की सामग्री है । उसकी समाधि अगर अप्रसिद्ध और दूरवर्त्ती दक्षिण

अटलांटिक के एक छोटे से टापू में पड़ी रहती तो कभी ठीक न होता। इसी से विधाता ने नेपोलियन की समाधि पेरिस मे बनने का आयोजन कर दिया।

हज़ार ताक़त और गुणों के रहने पर भी स्वार्थपरता का हीन-भाव मनुष्य को ज़बर्दस्ती अवनति और दुःख की ओर घसीट लाता है, और, अधार्मिक नीतिहीन जीवन अन्त को सर्वनाश करा देता है। इसका पूरा प्रमाण आपको नेपोलियन के जीवन में मिल जायगा। सभी बातों की एक हद होती है। ऊँची अभिलाषायें पूरी करने की भी एक हद होनी चाहिए। यद्यपि मनुष्य पूरी तौर से सन्तोष नहीं कर सकता, तथापि सांसारिक उन्नति के सम्बन्ध मे ऐसा स्थान या सीमा सबके लिए है जहाँ खड़े होकर कहना उचित है कि यहीं पर मुझे स्थिर हो रहना चाहिए। उसके आगे पैर बढ़ाने से फिर गिरने का खटका है। किन्तु नेपोलियन ने यह बात सीखी ही नहीं। सारा यूरोप उसे क्षुद्र जान पड़ा। जीव की स्वाधीनता को वह तुच्छ वस्तु समझने लगा। इसी से इतने ऊँचे से इतना भारी पतन हुआ। एक विद्वान् ने इस सम्बन्ध मे लिखा है—

"The story of Napoleon Buonaparte presents probably the most memorable example in the world of the action of great intellect and resolute will unrestrained by conscience, and shows both the possible success which may reward for a time the most unscrupulous selfishness, and also, happily, its certain ultimate failure and overthrow"

William S R Cates

लुव्रे (Luvre)। सेइन नदी के किनारे, पेरिस के भीतर, सब तरह सबसे श्रेष्ठ यह लुव्रे-मन्दिर है। पहले इस स्थान पर, लुपारा या लुवेरी (Lupara or Luverie) नामक खूनी जानवरों से

भरे जंगल मे, एक मृगया-भवन (Chateau) था । क्रमशः बस्ती होने पर, सन् १५४१ में, पुराना घर तोड़ कर वर्त्तमान भवन की नींव डाली गई । लुव्रे के सब कमरों में एक सिरे से केवल घूम आने में दो घंटे लगते हैं ।

प्रथम खण्ड—मिसर का म्यूज़ियम (Musee Egyptien) । यह यूरोप भर में सर्वोत्तम संग्रह है । अत्यन्त प्राचीन राजा, राजपुरुष और प्रतिष्ठित पुरुषों की मूर्त्तियाँ, उनके समय की और उनके इस्तेमाल में आनेवाली चीज़ें, तथा तरह तरह के नक़ाशी के काम इन कमरों मे रक्खे हैं । इस संग्रह से प्राचीन मिसर-वासियों की सभ्यता, धर्म, आचार-व्यवहार और कारीगरी का पूरा परिचय प्राप्त किया जा सकता है । एशियाटिक म्यूज़ियम (Musee des Antiquites Asiaticques) विख्यात पुरातत्त्वज्ञ पण्डित बोटा (M. Botta) और लेयार्ड (H. Layard) ने प्राचीन असीरिया-राज्य की बहुत सी नक़ाशी और खुदाई की कारीगरियों को निनेवी और असुर-प्रदेश के खँडहरों को खोदकर निकाला था । यह सब ऐतिहासिक संग्रह अँगरेज़ और .फ्रेञ्च लोगों में आधा आधा बँट गया । आधा सामान ब्रिटिश-म्यूज़ियम में और आधा सामान यहाँ रक्खा है । इसके सिवा प्राचीन फ़िनीशिया और ग्रीस की अनेक नक़ाशी और खुदाई की कारीगरियाँ और तरह तरह की इस्तेमाल में आनेवाली चीज़ें एक दूसरे कमरे में रक्खी हैं । यूरोप के प्राचीन भास्कर-कार्य का संग्रह (Musee des Marbres Antiques) इन कमरों में प्राचीन ग्रीक और रोमन-साम्राज्य के समय की तरह तरह की संगमरमर की मूर्त्तियाँ रक्खी हैं । उनमें ग्रीस के मेलस द्वीप में निकली हुई और वहाँ से लाई गई वीनस-देवी की संगमरमर की मूर्त्ति यूरोप के गौरव और प्रतिष्ठा की चीज़ समझी जाती है । बहुत लोगों ने उस मूर्त्ति

को देखने के लिए मुझसे विशेष अनुरोध किया था। लेकिन मुझे उस मूर्त्ति में ऐसी कोई विशेषता नहीं देख पड़ी। इसे मेरी विचार-शक्ति की कमज़ोरी या अयोग्यता ही समझना चाहिए। जिस कमरे मे यह मूर्त्ति रक्खी है उसका नाम है वीनस का घर (Salle de la Venus de Mils) इस मूर्त्ति की ऐसी ही इज़्ज़त है। जर्मन-पण्डित लुब्के (Lubke, Professor of Art-history) ने उक्त मूर्त्ति के सम्बन्ध मे जो अपनी राय दी है वह नीचे उद्धृत की जाती है। वह कहते हैं—

"This is the only statue of Venus that has come down to us which represents the *goddess* and not a beautiful woman. The power and grandeur of form, over which the infinite charm of youth and beauty is diffused, is in harmony with the pure and majestic expression of the head which free from human infirmity, proclaims the calm self-sufficiency of divinity."

दु:ख की बात है कि मूर्त्ति के दोनों हाथ टूट गये हैं। एक हाथ का कुछ अंश है, लेकिन दूसरा बिल्कुल नदारत है। सन् १८२० मे यह मूर्ति निकली थी। तब से अब तक देश-विदेश के अनेक पण्डितों ने इस मूर्ति के इतिहास आदि के सम्बन्ध में क़लम चलाई है। जो कुछ हो, केवल डाक्टर लुब्के के पूर्वोक्त मत से ही मेरी अयोग्यता प्रमाणित हो गई। प्रथम खण्ड के अन्यान्य कमरो मे मध्यकाल और वर्त्तमान समय के भास्कर-कार्य रक्खे हुए हैं।

दूसरा खण्ड—चित्रशाला (Musee de Tableaux)। इन कमरों मे पहुँच कर आदमी सन्नाटे मे आ जाता है। एक जगह पर इतने चित्र मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। लन्दन की सब चित्रशालाओं के चित्र जमा करने से शायद वे गिनती मे यहाँ के चित्रों से अधिक भी हों; किन्तु चित्रकार कुलभूषण रेफेल आदि अनेक श्रेष्ठ

चित्रकारों के चित्र यहाँ अधिक हैं। लुव्रे का यह खण्ड सारे सभ्यजगत् की ऊँचे दर्जे की तसवीरों का एक अपूर्व संग्रह है। दर्शक यहाँ विशेष शिक्षा और ज्ञान प्राप्त कर सकता है। चित्रकारों के नाम के पहले अक्षर के अनुसार चित्र सजाये गये हैं। इस खण्ड का आपोलों (Galerie d'Apollon) कमरा सबसे सुन्दर है। यह १४० हाथ लम्बा है। अनेक अँगरेज़ों के मुँह से सुनने को मिला—"One of the finest halls in the world." इसके बीच मे पाँच काँच के डेस्कों में रत्न-निर्मित और रत्नजटित बहुत सी छोटी मूर्त्तियाँ, पात्र, राजदण्ड, प्राचीन राजों की ढाल-तरवार आदि बहुत सी बेशक़ीमती चीज़े रक्खी हैं। इसी कमरे में शार्लमेन (Charlemagne) की तरवार रक्खी है। दूसरे खण्ड में इसके सिवा और भी अनेक म्यूज़ियम हैं।

तीसरा खण्ड—सामुद्रिक म्यूज़ियम (Musee de la Marine)। यहाँ छोटे छोटे तरह तरह के नक़ली जहाज़, जहाज़ी मेशीनें, बन्दरगाहों के रिलीफ़ नक़शे आदि बहुत सी चीज़े हैं। और कई कमरों में भारत, चीन और जापान से लाई गई तरह तरह की चीज़ें हैं। सोना, चाँदी, हाथीदाँत, बाँस आदि पूर्वी माल मसाले से तैयार चीज़ें भी यहाँ देख पड़ीं। यहाँ विष्णु की मूर्ति-सहित छोटा जगन्नाथ-मन्दिर और मुलम्मेदार सिंहासन पर बैठी हुई बुद्धदेव की मूर्ति भी एक जगह देख पड़ी। दूसरे कमरे के बीच में स्वेज़ नहर का नक़ली दृश्य (Relief-plan, 6: 100000.), नहर के कल-कारख़ाने की नक़ल और उसके भिन्न भिन्न अंशों के दृश्य देख पड़े। पेरिस में इसके सिवा प्राकाडेयारो आदि और भी ६ म्यूज़ियम हैं।

पाँटिओँ (Pantheon)। यह मन्दिर कुछ कुछ लन्दन के सेन्ट-

पान्त गिर्जे की तरह है। यह वर्त्तमान मन्दिर २६ वरस में वन कर तैयार हुआ है। सन् १७९० मे यह वनकर तैयार हुआ था। यह पहले उपासना-मन्दिर के रूप मे स्थापित होकर एक वरस वाद स्मृति-मन्दिर वनाया गया और इसका वर्त्तमान नाम पड़ा। नाम के ऊपर लिखा है—"Aux grands hommes la patrie reconnáissante" अर्थात् महान् जीवों के निकट देश कृतज्ञ है। इस भारी इमारत का इस्तेमाल वार वार जुदे जुदे ढंग से होने के वाद सन् १८८५ में कविवर ह्यूगो (Victor Hugo) की अन्त्येष्टि-क्रिया के उपलक्ष मे फिर यह सर्व-साधारण के लिए खोल दिया गया। यह इमारत ३७० फुट लम्बी और २७६ फुट चौड़ी है। इसका गुम्वद २७२ फुट ऊँचा है। इसके वीच में, एक खण्ड (Tympanum) १६ फुट ऊँची 'फ़ान्स' देश की एक संगमरमर की मूर्त्ति अपने पुत्रों को माला दे रही वनी हुई है। वाईं ओर एक चौतरे पर, स्वाधीनता देवी के पास, राजनीतिज्ञ पण्डित मालहेयार्व (Malesheıbes) और मिरावा (Mirabeau), वैज्ञानिक पण्डित मंज (Monge), टेलीमेकस के रचयिता फ्नेलन (Fnelon) और प्रसिद्ध ज्योतिषी लापलास (Laplace) आदि अनेक महात्माओं की मूर्तियाँ हैं। इसी ओर दूसरी लाइन में प्राणि-तत्त्व के भारी पण्डित कुवीर (Cuvier). वीरवर लाफ़ेइट (Lafayette), वाल्टेयर, रूसो और चिकित्सक विशा (Bıchat) की मूर्त्तियाँ हैं। दाहनी ओर 'इतिहास' की मूर्त्ति के पास नेपोलियन वोनापार्ट आदि अनेक शूर-वीरो की मूर्त्तियाँ हैं। और भी अनेक मूर्त्तियाँ और चित्र-पट यहाँ रक्खे हैं।

तहख़ाना (Caveaux)। कुछ यात्रियों के जमा होने पर वहाँ का एक पहरेदार हम लोगों को इस पातालपुरी के भीतर ले चला।

अँधी तंग गली में बहुत कुछ घूमने-फिरने के बाद हम लोग ठीक जगह पर पहुँचे। मिराबो का शव पहले यहीं गाड़ा गया था। उसके दो वर्ष बाद नर-पिशाच (उस समय के प्रजा-बन्धु) मारा का भी शव यहीं गाड़ा गया। किन्तु बाद को सरकारी हुक्म से दोनों शव वहाँ से हटाकर अन्यत्र रक्खे गये। प्रवेश-द्वार के निकट दाहनी ओर पुष्प-माला-शोभित विक्टर ह्यूगो की समाधि, स्मारक-चिह्न और मूर्त्ति शीघ्र ही स्थापित होनेवाली थी। उसके सामने, अर्थात् बाईं ओर, एक किनारे रूसो का स्मारक-चिह्न है। और दूसरे किनारे पर वाल्टेयर का स्मारक-चिह्न और मूर्त्ति है। मूर्त्ति के पैरों के पास लिखा है—"Aux Manes de Voltaire" अर्थात् वाल्टेयर की आत्मा के सम्मान के लिए। वाल्टेयर के सम्बन्ध में फ्रेञ्च भाषा में जो कुछ लिखा है उसका हिन्दी-अनुवाद दिया जाता है—"कवि, इतिहास-लेखक और दार्शनिक। इन्होंने मनुष्य के मन को उन्नत बनाकर स्वाधीनता की शिक्षा दी है। इन्होंने काला (Calas) सरवाँ ("Sirven) बारे (Barre) और मान्टवेली (Montbaily) राजद्वार में दण्डित निरीह व्यक्तियों का पक्ष-समर्थन करने में बड़ा परिश्रम किया। इन्होंने नास्तिकता और धर्मान्धता के विरुद्ध युद्ध किया। इन्होंने साम्यवाद की शिक्षा दी और सब प्रकार की पराधीनता को दूर कर मनुष्य के स्वाभाविक अधिकारों की रक्षा का प्रयत्न किया"। रूसो के स्थान पर लिखा है—"प्रकृति और सत्य का मनुष्य यहाँ गड़ा हुआ है"। अन्यान्य महात्माओं में से गणितज्ञ लाग्रान्ज (Lagrange) यहाँ गड़े हुए हैं। तहख़ाने में बोलने से उसकी प्रतिध्वनि बड़ा मज़ा दिखाती है। ख़ास कर सानुनासिक-पूर्ण फ्रेञ्च भाषा की प्रतिध्वनि प्रेत की सी आवाज़ जान पड़ने लगी। सन् १८५१

मे प्रसिद्ध वैज्ञानिक फुकल्ट ने इसी मन्दिर में अपनी प्रसिद्ध पेण्डुलम-प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी की दैनिक गति के सम्बन्ध मे कई नवीन तथ्य प्रमाणित किये थे ।

वोया-डी-बुलें (Bois de Boulogne the Hyde park of Paris) । यह बहुत ही भारी और बहुत ही विचित्र विहार-स्थान है । गाड़ी पर चढ़कर सब घूमने मे भी पहर भर से कम नहीं लगता । जिस समय रोमन लोगों ने गाल् देश पर अधिकार जमा लिया उस समय इस स्थान पर घना जंगल था । सम्राट् तीसरे नेपोलियन के राज्यकाल में, सन् १८५३ से यह एक रमणीय बगीचा बन गया है । सवेरे, तीसरे पहर और शाम को घोड़ों और गाड़ियों पर चढ़ कर बहुत से नगरनिवासी यहाँ हवा खाने को आया करते हैं । इसके भीतर दे। जलाशय हैं । एक ८४ बीघे की कृत्रिम नदी है । नदी मे दे। टापू भी बने हैं । एक टापू पर खाने-पीने के लिए एक सुन्दर भवन बना है । नाव पर चढ़ कर इसमे जाते हैं । १५ मिनट के बाद नाव मिलती है । दूसरा १८ बीघे का एक नक़ली कुण्ड है । इन दोनों जलाशयो मे जल बनाये रखने के लिए ५० मील लम्बी नहर के द्वारा जल लाया गया है । ५½ मील नहर इस बाग़ की हद मे ही है । इस भारी विलास-वाटिका का घेरा बहुत भारी है । घेरे का अन्दाज़ा नीचे लिखी बातों से लगा लिया जा सकता है । गाड़ियों पर और पैदल टहलने का रास्ता सब मिलाकर साठ मील है । उसमें ३६ मील तक गाड़ी मज़े में जा सकती है । घुड़दौड़ के लिए ७½ मील की बालू की सड़क है । २१० बीघे की ज़मीन बाग़ के लिए है । उसमे १५ बीघे की एक मनोहर विहार-वाटिका बनी है । १५० बीघे में चिड़ियाख़ाना (gardin d' Acclimatation) है । यहाँ जल और स्थल के बहुत

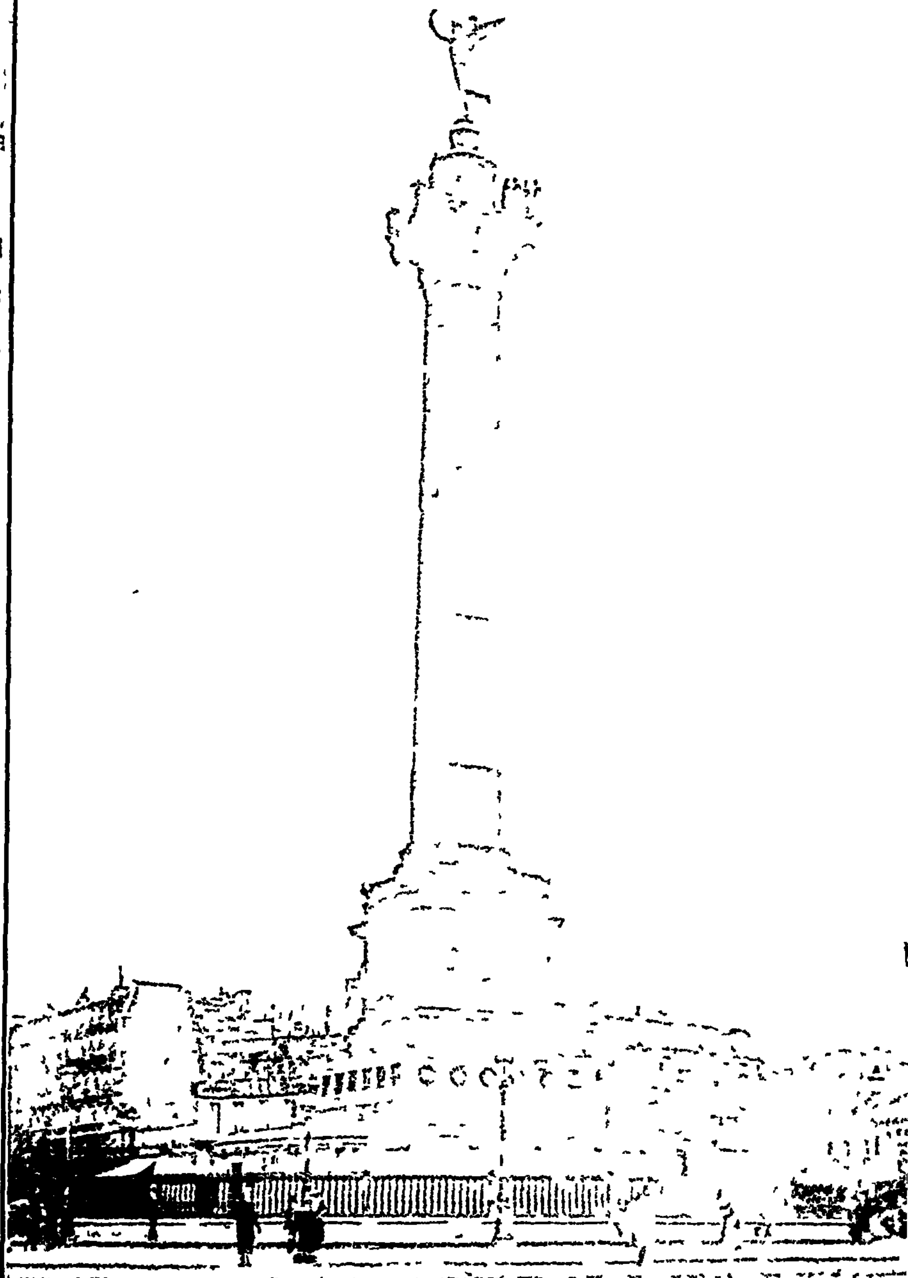
से विदेशी जीव-जन्तु, आवश्यक ताप आदि पहुँचा कर, यत्नपूर्वक सुरक्षित हैं। मछलियोंवाला हिस्सा ख़ासकर देखने की चीज़ है।

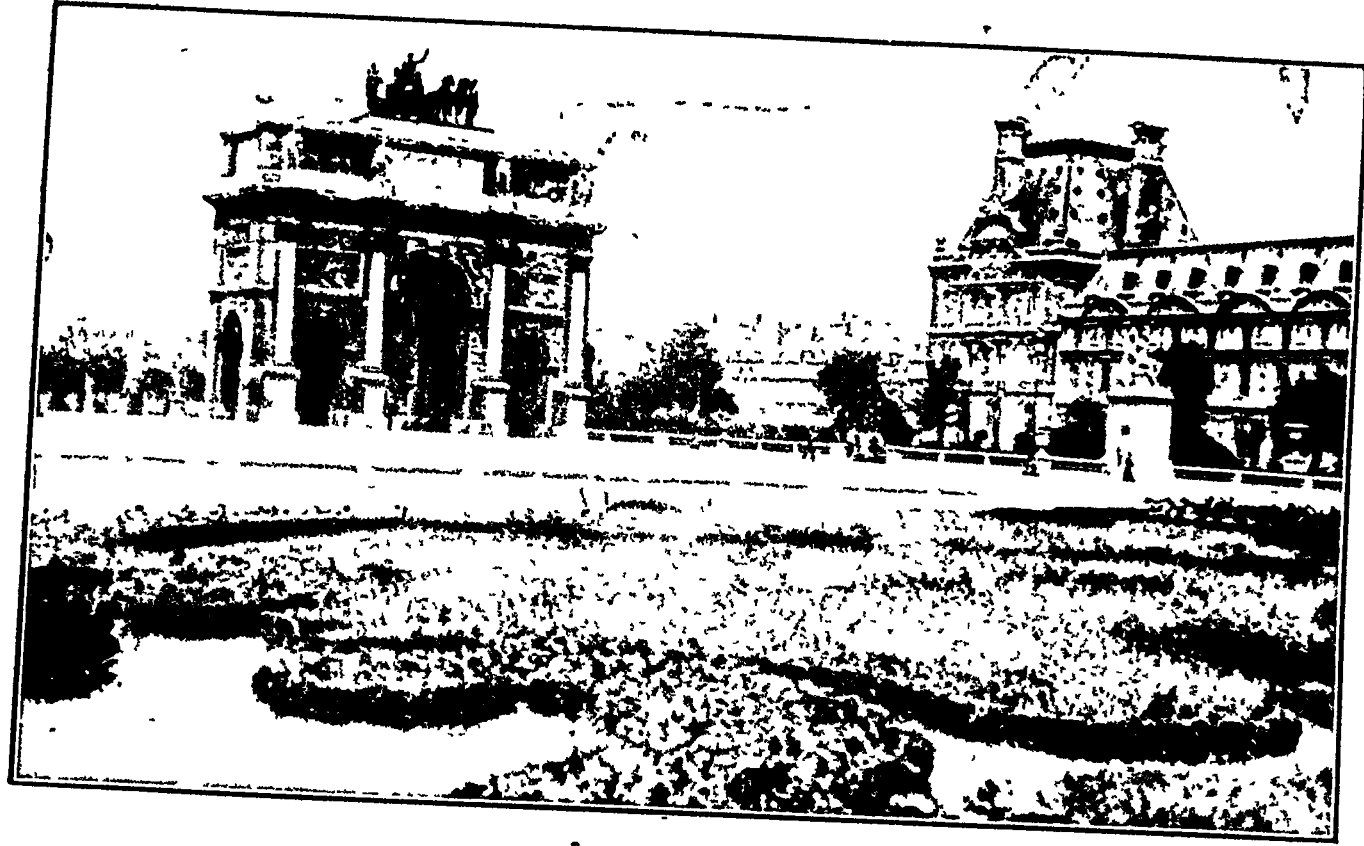
विन्सेन-पार्क (Park de Vincennes)। यह भी उल्लिखित बाग़ के इतना ही बड़ा है। इसमे ६० बीघे का एक जलाशय है। उसमें तीन टापू हैं। उनमें से छोटे टापू पर एक 'काफे' (पान-भवन) स्थापित है। पार्क के एक किनारे एक महल है। सर्व-साधारण को, ख़ास कर विदेशियों को, उसके भीतर जाने की मनाही है।

जूलाई-स्तम्भ (colonne de guillet)। पहले जिस जगह पर प्रसिद्ध बास्टिल कारागार था इस समय वहाँ खुली जगह (Place de la Bastile) है। बीच में यह धातु (Bronze)-निर्मित १६० फुट ऊँचा, अर्थात् कलकत्ते के मनूमेन्ट से केवल ३।४ हाथ छोटा, यह जूलाई-स्तम्भ है। चोटी के ऊपर स्वाधीनता की धातुनिर्मित मूर्त्ति, एक हाथ उठाये, एक पैर से खड़ी है। सन् १८३० के विप्लव के स्मारक मे यह स्तम्भ स्थापित हुआ है। विप्लव में मारे गये आदमियों के नाम स्तम्भ में लिखे हुए हैं और उन लोगों के देहावशेष इस स्तम्भ के नीचे गड़े हैं।

वेण्डम-स्तम्भ (Colonne de Vendome)। नेपोलियन ने युद्ध में आस्ट्रियन लोगों की १२०० तोपें लूट ली थीं। सन् १८०६ मे उन्हीं तोपों को गलाकर यह स्तम्भ बनाया गया है। सन् १८०५ के रूस और आस्ट्रिया के साथ फ्रांस के युद्ध आदि के रिलीफ़ चित्र इस स्तम्भ में अंकित हैं। यह रोम के प्रसिद्ध ट्राजन-स्तम्भ का अनुकरण है। इसकी चोटी पर नेपोलियन की मूर्त्ति है। सन् १८७१ की १६ मई को विद्रोही प्रजा (Communists) ने इसे गिरा दिया था। तीन वर्ष बाद फिर यह स्तम्भ खड़ा किया गया।

विजय-फाटक। पेरिस की बड़ी सड़क में इस तरह के चार





आर्क डी ट्रायम्फ—पृ० ३०१

फाटक हैं। दो चौदहवें लुई के और दो नेपोलियन के समय के हैं। सेन्टडेनिस फाटक (Porté St. Denis) ७५ फुट और सेन्ट मार्टीन फाटक (Porte St. Martin) ५६ फुट ऊँचा है। नरपति लुई ने जिन युद्धों मे विजय-लक्ष्मी प्राप्त की है उन युद्धों के अनेक चित्र और लेख इन फाटकों पर अंकित हैं।

इटोइल विजय-फाटक (Arc de Triomphe de l' Etoile)। यह फाटक सबसे बड़ा है। सन् १८०६ में नेपोलियन ने इसको बनवाना शुरू किया था। सन् १८३० में एक करोड़ फ्रैंक (फ़ांस का सिक्का) की लागत लग चुकने पर यह बनकर तैयार हुआ। यह १५० फुट लम्बा, १५० फुट के लगभग ऊँचा और ७० फुट चौड़ा है। दरवाज़ा ९० फुट का ऊँचा और ४५ फुट का चौड़ा है। इसमे चारों ओर विप्लव और साम्राज्य-काल के युद्ध आदि की रिलीफ तसवीरें और जीते हुए युद्धों तथा विजयी सेनापतियों के नाम अंकित हैं। पृथ्वी में इस श्रेणी का फाटक दूसरा नहीं है। अँगरेज़ लोग कहते हैं—("It is the finest triumphal arch in the world, and in all probability never had an equal") यहीं से नगर की १२ प्रधान सड़कें निकली हैं।

दूसरा फाटक (Arc de Triomphe du carrousel)। रोम नगर मे सम्राट् सिवीरस के सम्मान के लिए जो फाटक बना था उसी के अनुकरण पर यह फाटक बना है। यह ४५ फुट ऊँचा और ६० फुट चौड़ा है। फाटक की चोटी पर पीतल की बनी चार घोड़े की गाड़ी को हाँक रही विजया देवी (Victory) की मूर्त्ति स्थापित है। वीनिस नगर के सेन्ट मार्क गिर्जे से लूट कर लाये गये पीतल के घोड़े पहले यहाँ रक्खे गये थे; किन्तु फिर फेर दिये गये।

उद्भिद्-उद्यान और पशुशाला (Jardin des Plants)। यह

नदी के किनारे है। यद्यपि लन्दन की पशुशाला या क्यू-बाग़ की अपेक्षा यहाँ कम संग्रह है, पर उस संग्रह से शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों के लिए यहाँ वहाँ से अच्छा प्रबन्ध है। एक समय यह प्रसिद्ध प्राणितत्त्वज्ञ बुफों की देखरेख में था और अद्वितीय जीव-विद्या-विशारद कुवीर यहाँ रहते थे। इस जगह अनेक प्रकार की प्राकृतिक विद्याओं (Comparative Anatomy, Anthropology, Zoology, Minerology, Geology, Botany) के कई सुन्दर म्यूज़ियम और विद्यार्थियों को उपदेश देने के लिए लेक्चर-हाल हैं।

उपनगरों के पुलों को छोड़ कर पेरिस में सेइन नदी के ऊपर २९ पुल बने हुए हैं। बोया-डि-बुलों और विन्सेन-पार्क के सिवा चार बड़े और बहुत से छोटे पार्क हैं। देखने योग्य इतनी चीज़ें ऐसे सुन्दर ढङ्ग से सजाई हुई हैं कि लिख कर या कह कर कोई बतला नहीं सकता।

वेयरसेइल (Versailles)। यह पेरिस का एक उपनगर, नगर से ११ मील के फ़ासिले पर, है। यहाँ का राजमहल और उससे मिला हुआ गिर्जा, म्यूज़ियम, चित्रशाला, बग़ीचा, फुहारा आदि सब चीज़ें अद्भुत ही हैं। यहाँ का राजभवन पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ राज-भवन है; यह बात सर्वसम्मत—The most magnificent royal residence in the world."— है। राजा चौदहवें लुई ने सन १६८२ में इसे बनवाना शुरू किया था। इसके सर्वाङ्गसम्पन्न बनने में बेशुमार रुपया ख़र्च किया गया। बहुत ख़र्च हो जाने के कारण, उसे छिपाने के लिए, राजा ने ख़ुद हिसाब के काग़ज़-पत्र नष्ट कर डाले। प्रथम नेपोलियन के बाद राजा लुई फ़िलिप ने केवल इसकी मरम्मत कराई थी। उसमें उन्हें १० लाख पौण्ड

की भारी रक़म लगानी पड़ी । इससे और अन्यान्य अनुमानों से लोग कहते हैं कि इसके बनाने और सजाने मे पहले ५ करोड़ पौण्ड लगे होंगे । इतनी बड़ी इमारत है कि उसके भीतर के महलों में केवल एक बार घूम आने में पहर भर से कम नहीं लगता । केवल चित्रपट इतने हैं कि देख कर मनुष्य की बुद्धि चकरा जाती है । एक जगह पर ऐसे क़ीमती चित्रों का ऐसा भारी संग्रह संसार भर में और कहीं नहीं है । इस बारे में यात्री लोग वेयरसेइल को अव्वल नंबर बतलाते हैं । इसके बाद नम्बरवार अन्य स्थानों की चित्रशालाओं का उल्लेख नीचे किया जाता है । नं० २ ड्रेसडेन, नं० ३ माड्रिड, नं० ४ लुव्रे, नं० ५ लन्दन, नं० ६ सेन्टपीटर्सबर्ग, नं० ७ बर्लिन, नं० ८ वियेना, नं० ९ म्यूनिथ, नं० १० .फ्लूरेन्स. नं० ११ नेपल्स, नं० १२ वीनिस, नं० १३ एन्टिवर्प, नं० १४ ट्यूरिन ।

इस राजमहल मे अनेक ऐतिहासिक घटनायें हो चुकी हैं । सन् १७८९ की २ री अक्तूबर को सोलहवें लुई के ख़ास शरीररक्षकों (Gardes du Corps) को यहीं भोज दिया गया । उस भोज की वक्तृतायें ही विप्लव के पहले के हंगामें का कारण हुई और राजा जन्म भर के लिए महल से भगा दिये गये । और एक अद्भुत घटना इसी महल में हुई । प्रुशिया (जर्मनी) के लोगों ने जब पेरिस को घेर लिया तब राजा विलियम (William King of Prussia) अपने मन्त्रियों सहित इसी महल मे ठहरे थे और सन् १८७१ की १८ वीं जनवरी को यहाँ के बिल्लौरी-महल मे सभा करके उन्होंने जर्मन-सम्राट् की उपाधि ग्रहण की । महल के आँगन मे प्रसिद्ध फ्रेञ्च योद्धा लोगों की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं । बीच में चौदहवें लुई की मूर्त्ति है । नेपोलियन की मूर्त्ति यहाँ नहीं है । विप्लव के पूर्ववर्त्ती वीरों की ही मूर्त्तियाँ यहाँ स्थापित हैं । यहाँ तीन बड़े बड़े और कई छोटे

फ़ुहारे हैं। मई से अक्तूबर तक तीसरे पहर कभी कभी ये चलाये जाते हैं। म्यूज़ियम और चित्रशाला देखने से फ़्रान्स का इतिहास पढ़ लेने का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। राजा चौदहवें लुई का पलँग भी यहाँ रक्खा है। वेयर सेइन-पार्क का घेरा २० मील का है।

सॉ-क्लू (St. Cloud)। यह भी पेरिस का एक उपनगर ही माना जाता है। राजधानी से रेल पर चढ़ कर आध घंटे में यहाँ पहुँचते हैं। यहाँ के राजमहल को पेरिस घेरने के समय शत्रुओं ने जला दिया था। यहाँ का पार्क बहुत ऊँची ज़मीन के ऊपर है। वहाँ से पेरिस नगर और सेइन नदी का दृश्य बहुत मनोहर जान पड़ता है। सितम्बर मे १५ दिनों तक यहाँ एक मेला लगता है। यूरोपियनों का मेला मैंने पहले पहल यहीं देखा।

फन्टानाब्लो (Fontainableau)। यह प्रसिद्ध स्थान पेरिस से ३७ मील के फ़ासले पर है। यहाँ का बाग़ प्रसिद्ध है। उसका घेरा ५५ मील का है। लगभग डेढ़ लाख बीघे ज़मीन को यह बाग़ घेरे हुए है। प्रथम नेपोलियन के राज्य-काल में पोप पियस सेविन्थ (Pope Pius VII) डेढ़ बरस तक यहाँ क़ैदी होकर रहे हैं। यहीं पर सम्राट् ने आपही, मास्कोविभ्राट् के बाद, पुत्र को राज्य देने की दलील पर दस्तख़त किये और आप एल्बा-द्वीप को चले गये। सम्राट् की पहली स्त्री जोसेफीन यहाँ के महल में रहना बहुत पसन्द करती थीं। इसी नगर में राज्य के गोलन्दाज़ों का स्कूल स्थापित है। जंगल में घूमने के लिए कई एक साफ़ रास्ते बनाये गये हैं। सब रास्ते एक ही तरह के होने के कारण राह चलनेवाला बहुत जल्द राह भूल जाता है। इसलिए इधर सैर के लिए जानेवालों को अपने साथ किसी ऐसे आदमी को अवश्य ले लेना चाहिए जो अच्छी तरह इधर के मार्गों से अभिज्ञ हो।

पेरिस-माहात्म्य । पहले ही कहा चुका है कि पेरिस अत्यन्त सुन्दर नगर है । यहाँ की लोकसंख्या ढाई लाख से कुछ ऊपर है । लन्दन मे पत्थर का कोयला जलता है, उसके काले धुएँ से सब घर मैले हो जाते हैं । परन्तु पेरिस के लोग लकड़ी के कोयले को जलाते हैं; इस कारण नगर मे कालिख का साम्राज्य नहीं है । सब इमारते साफ़-सुथरी हैं । शहर मे १००० से अधिक लोग १२५ से लेकर २५० पौण्ड तक, १२०० से अधिक लोग ५०० से १००० पौण्ड तक और ३०० आदमी इससे भी अधिक रक़म, मकान के किराये की मद मे, सालाना ख़र्च कर डालते हैं । १००० से अधिक लोगों की सालाना आमदनी २००० पौण्ड या इससे भी अधिक है । पहले यह भी कहा जा चुका है कि पृथ्वी के अनेक देशों के वेकार धनी लोग सदा इस नगर मे आते और सैर-सपाटे में समय विताते हैं । ब्रेजिल के धनी युवक और दक्षिण अमेरिका के लोग पेरिसवालों के लिए कल्पवृक्ष हैं । ये सब अहमक 'वड़े आदमी' पेरिस को मुसलमानों का स्वर्ग समझ कर सशरीर स्वर्ग-सुख भोगने के लिए झुण्ड के झुण्ड पहुँचते रहते हैं । पेरिस के नर-नारी भी उनके आदर और अभ्यर्थना के लिए हमेशा हर घड़ी हाथ फैलाये रहते हैं । इन रईसों के पास जब तक पैसा रहता है तब तक अनेक श्रेणी के स्त्री-पुरुष भोज, जुआ, क़र्ज़ आदि अनेक उपायों से इन लक्ष्मी के वाहनों का धन लूटते रहते हैं । देहाती वालक अचानक किसी मेले मे पहुँच कर जैसे मोहाच्छन्न हो जाता है वैसे ही पेरिस मे पहुँच कर ये वड़े आदमी अथवा 'आँख के अन्धे गाँठ के पूरे' वन जाते हैं । उनकी जिस चीज़ की तारीफ़ कर दीजिए वह आपकी होगई । घड़ी, अँगूठी आदि अपने मुसाहवों को अक्सर वाँट दिया करते हैं । मूर्ख रईसों का रोग इन लोगों मे भी देख पड़ा ।

ये भी उपाधि के बड़े भूखे देख पड़े। इटली में तो इस समय भी मामूली रक़म ख़र्च करने से सहज मे उपाधि मिल जाती है। यहाँ के मुसाहब लोग ऐसी ही उपाधियों का प्रबन्ध करके कभी कभी अच्छी रक़म हथिया लेते हैं। यहाँ के कुछ नागरिक लोग 'साम्राज्य-काल' को स्मरण करके इस समय भी दुःख प्रकट करते हैं। उस समय नगर और उपनगरों में जो राजभवन और विहारभवन थे उनमें हमेशा तरह तरह के रंग-तमाशे हुआ ही करते थे। देश-विदेश के बहुत से पण्डित भी इन स्थानों में निमन्त्रित होकर आते थे और उनका सत्कार होता था। इन राजभोजों मे बहुत सा रुपया ख़र्च होता था और बहुत लोग पलते थे। अब साधारणतन्त्र स्थापित होने पर सब बातें एकदम बन्द कर दीगई हैं।

ब्रिटिश-द्वीप में भिन्न भिन्न प्रधान नगरों की प्रधानता अलग अगल मानी जाती है; फ़ान्स में यह बात नहीं है। पेरिस ही फ़ान्स है, पेरिस के साथ फ़ान्स के अस्तित्व का ऐसा घनिष्ट सम्बन्ध है। फ़ान्स देश में जो कुछ श्रेष्ट है वह सब पेरिस में जमा है, अन्यत्र कुछ भी नहीं है। अतएव पेरिस का गौरव, पेरिस की बड़ाई सारे फ़ान्स का गौरव और बड़ाई है। फ़्रेञ्च लोगों की शिक्षा सदा से ऊँचे दर्जे की है। फ़ान्स मे भी एक ऐसा समय था जब स्त्री-शिक्षा का चलन कैसा, उसके विरोध में लोग यह छन्द कहते थे—
"Poule qe chant, Pretre que dance, Femme que parle Latin, N'arrivent j'amais a belle fin.") (पुल् कि शॉत् प्रेत्र् कि डॉम, फाम् कि पार्ले ल्याट्यॉ। नारीव जामें, आ बेल् फ्यॉ।) अर्थात् मुर्गी अगर मुर्गे की तरह बोले, धर्म-प्रचारक होकर अगर नाच-तमाशे में शरीक हो, और स्त्री अगर लाटिन बोले तो इसका अन्तिम फल कभी अच्छा नहीं हो सकता। किन्तु वह समय चला

गया । अब प्राय: दो सदियों से फ़ान्स की स्त्रियाँ शिक्षा में किसी से कम नहीं हैं । पेरिस की मजलिसों (Salon) का सञ्चालन प्राय: स्त्रियों के ही द्वारा होता है। आँपीर (Ampere), गिज़ो (Guizot) आदि पण्डित तक प्रसिद्ध स्त्रियों के रक्खे सालों में विशेष आग्रह के साथ जाते और प्रसन्न होते थे। इन मजलिसों और सालों को पेरिस का जीवन कहें तो कुछ झूठ नहीं। इन स्थानों मे साहित्य, राजनीति, गाने-बजाने आदि सब विषयों की मनोहर आलोचना हुआ करती है । एक एक प्रसिद्ध पण्डिता इन मजलिसों की जान है। नगर में अनेक श्रेणी के क्लब (Club) भी हैं । उनमे अनेक क्लब केवल जुआ खेलने के लिए हैं । अनेक श्रेणी के दैनिक अख़बार तो इतने पेरिस से निकलते हैं कि इस बात में कोई भी नगर पेरिस की बरा-बरी नहीं कर सकता । सवेरे और शाम को नित्य बेशुमार अख़बार छप कर प्रकाशित होते हैं । कोई नया बैंक या नई कम्पनी स्थापित हुई तो उसे अपना अलग अख़बार चाहिए । विशेष कर बड़े आदमियों की बढ़ती-घटती के साथ वहाँ के अनेक अख़बारों की उन्नति-अवनति अनिवार्य है । लेकिन पेरिस में उनकी साख और प्रचार कम होने पर भी मुफ़स्सिल के ग्राहकों से उनका काम किसी तरह चलता रहता है। विज्ञापनों से यहाँ के अख़बारों को खूब फ़ायदा है । खूब प्रचार के समय एक अख़बार साल मे तीन लाख फ़्रैंक विज्ञापनों से पैदा करता था । पर अब उसका प्रचार और प्रतिष्ठा बहुत घट गई है । दैनिकों के सिवा सचित्र साप्ताहिक आदि अनेक अख़बार पेरिस से निकलते हैं । खेल-कसरत आदि में मछली पकड़ने का शौक़ आज-कल के लोगों मे अधिक देखा जाता है । आप देखेंगे कि सेइन नदी के किनारे बहुत से बेकार बुड्ढे पानी मे काँटा डाले धैर्य की पराकाष्ठा दिखला रहे हैं । पंडितवर जान्सन मछली पकड़ने की ओर के

सम्बन्ध में कहते थे—(A fish at one end and a fool at the other. किन्तु यहाँ एक ओर ठीक होने पर भी दूसरी ओर प्राय: कुछ भी नहीं रहता । छीपों की अपेक्षा मछलियों की संख्या बहुत ही कम होती है । डुएल-युद्ध (Duel) यहाँ इस समय भी प्रचलित है, किन्तु पहले का ऐसा खून-ख़राबा अब नहीं होता । अब केवल नाम-मात्र को डुएल होता है । शतरंज का खेल । इसके लिए तो पेरिस प्रसिद्ध ही है । इस खेल का प्रधान अड्डा रिजेन्स काफे (Cafe de la Regence) है । नेपोलियन जब पलटन मे नौकरी करता था तब यहाँ शतरंज खेलने आता था । एक छोटा सा संग-मरमर का टेबिल यहाँ रक्खा है, जिसे यहाँ के लोग नेपोलियन के शतरंज खेलने का टेबिल बतलाते हैं ।

साधारण चित्रशालाओं के सिवा अनेक बड़े आदमियों के घरों में बहुत सा चित्रों का संग्रह है । एक व्यक्ति के चित्र-संग्रह का मूल्य एक करोड़ फ्रैंक होगा । दस बीस लाख फ्रैंक की क़ीमत के चित्र-संग्रह तो बहुत से लोगों के घरों में हैं । पेरिस मे नित्य ३० थियेटरों में नाटक खेले जाते हैं । इनके सिवा बहुत से छोटे और बड़े नाचने-गाने-बजाने के घर, नानारङ्गी रङ्गालय और काफ़ी-ख़ानों से मिले हुए सन्ध्याकालीन आमोद के स्थान (Cafe chantant) बहुत से हैं । जिन स्थानों मे देशी भाषा में नाटक खेले जाते हैं उन्हें सर-कारी सहायता मिलती है । यूरोप में कहावत प्रसिद्ध है कि कण्ठ और सुर की मधुरता में इटलियन, बाजे की ताल में जर्मन और नाटक के अभिनय मे फ्रेञ्च लोग श्रेष्ठ हैं । पेरिस का प्रधान स्टेज पृथ्वी भर के स्टेजों से सब बातों में श्रेष्ठ है । अँगरेज़ लोग स्वीकार करते हैं कि "It is the finest theatre in the world." लगभग ८ बीघे ज़मीन के ऊपर, न्यूनाधिक १५ लाख पौण्ड की लागत से,

चौदह बरसो मे यह मनोहर और भारी भवन बना है। इसमें २००० से अधिक दर्शकों के बैठने का स्थान और सामान है। इसके असबाव, चित्र, सुनहले काम आदि का सौन्दर्य अनिर्वचनीय है। अभिनय की छुट्टियों मे दर्शकों के टहलने के लिए जो हाल (Crushroom) बना है वह १८७ फुट लंबा, ४३ फुट चौड़ा और ५८ फुट ऊँचा है। सारी इमारत बहुत लम्बी-चौड़ी और ऊँची है। फ्रेञ्च लोग नाटक के ऐक्टरों को जैसे बहुत दिनों तक ख़ास तौर की शिक्षा देते हैं वैसे ही वहाँ ऐक्टर पैदा भी खूब करते हैं। प्रसिद्ध ऐक्टर ब्रेसाँ (Bressant) ने जब "थियेटर फ्रांस" का काम छोड़ा तब सालाना दस हज़ार फ्रैंक के इनाम के अलावा एक मुश्त अस्सी हज़ार फ्रैंक का पुरस्कार (Gratuity) दिया गया। एक एक थियेटर की ऐक्ट्रेस १०००० फ्रैंक फ़ी रात के हिसाब से अमेरिका मे नाचने-गाने जाया करती है। पेरिस में नटियों की तनख़्वाह सवा लाख फ्रैंक वार्षिक तक है। इटली मे जैसे अत्यन्त साधारण अशिक्षित आदमी तक सुर के साधारण अन्तर को भी पकड़ सकता है वैसे ही फ्रेंच लोग अभिनय मे ग्रन्थकार या ऐक्टर की साधारण त्रुटि को भी सहजही पकड़ लेते हैं। यहाँ तक कि अभिनय के समय ऐसी त्रुटि होने पर सारे दर्शक चौंक उठते और दुःख प्रकाशित करने लगते हैं। पेरिस में जीव-जन्तुओं के खेल के लिए चार स्थायी सर्कस हैं। उनमें हिपोड्रोम-सर्कस खूब बड़ा है। इन सबको जैसे सरकारी सहायता मिलती है वैसे ही इन्हें भी आमदनी का दसवाँ हिस्सा दान करना पड़ता है। रसोई के बारे मे पेरिस सदा से प्रसिद्ध है। किन्तु क्रमशः रेल और बिजली के भव्भड़ में पड़ कर फ्रेञ्च लोग इस काम में शिथिलता दिखाने लगे हैं। पेरिस के भले आदमियों के लिए प्रधान भोजन घर मे

करना निन्दा की बात है। जिनके पास कुछ भी ठिकाना है वे प्रधान भोजन बाहर ही करते हैं। इस बात में अँगरेज़ लोग भी कुछ कम नहीं हैं। ग्लाडस्टोन ने अपने जीवन में कै दिन घर में डिनर खाया सो गिन कर बतलाया जा सकता है। परन्तु फ़्रेञ्च लोग फिर भी इस बात में अँगरेज़ों से बढ़े ही हुए हैं। बाहर खाने का खूब चलन होने के कारण साधारण होटलों मे ग्राहकों को खुश रखने के लिए रसोई की सफ़ाई और स्वाद पर विशेष दृष्टि रक्खी जाती है। क्लबों मे भोजन करने का अधिक चलन होने के कारण इस विषय में होटलों का भी ध्यान कम होता जाता है। तथापि पेरिस के होटलों के भोजन की व्यवस्था और देशों के होटलों की व्यवस्था से ग़नीमत है। बड़े बड़े होटलों में कभी कभी ऐसी भीड़ हो जाती है कि दस बार पुकारने पर भी परोसनेवाले का पता नहीं चलता। पेरिस के अम्निबस और ट्रामगाड़ी के टिकट गाड़ी में नहीं मिलते। टिकट बेचने के लिए राह मे छोटे छोटे लकड़ी के घर हैं। भीतर बैठने के और छत पर बैठने के भाड़े मे अन्तर है। कभी कभी गाड़ी में जगह न होने के कारण बहुत देर तक राह में खड़े खड़े दूसरी ट्राम की राह देखनी पड़ती है। पेरिस के नीचे सेइन नदी नव सौ साढ़े नव सौ फुट से अधिक चौड़ी नहीं है। नगर के भीतर के २८ पुलों मे एक लोहे का बना हुआ है। जेना युद्ध के स्मारक में जो पुल नेपोलियन ने स्थापित किया था उसे वाटर्लू-युद्ध के बाद कुपित प्रुशियन लोगों ने पेरिस पर कब्ज़ा करके तोड़ डालना चाहा था। परन्तु केवल वेलिंगटन की विशेष चेष्टा से अन्त को वह बच गया।

पेरिस में दो तरह के डाकघर हैं। एक तरह के तो सिगरेट की दूकानों में हैं। उनमें केवल टिकट बिकते हैं और चिट्ठियाँ छोड़ी

जाती हैं । दूसरी तरह के डाकखानों मे टेलीग्राफ़ और टेलीफ़ोन के आफ़िस और सेविङ्गबैंक भी हैं । त्रिटिश-द्वीप के हर हिस्से में जैसे आधे शिलिङ्ग (छः आने) मे तार भेजा जा सकता है वैसे ही फ़ान्स के हर एक स्थान मे तार भेजने का महसूल आधा फ्रैंक है। बड़े डाकघर से साल मे न्यूनाधिक पचास करोड़ पत्र आदि और अस्सी करोड़ छोटे पुलिन्दे आते जाते रहते हैं। रेहनी चीज़ों के कारबार के लिए बहुत से सरकारी आफ़िस हैं । उनमें नित्य पाँच हज़ार से अधिक चीज़ें बन्धक होती हैं । ख़र्चा निकाल कर जो लाभ होता है वह ख़ैरात मे ख़र्च किया जाता है। निर्दिष्ट समय के भीतर चीज़ न छुड़ाने से वह नीलाम कर दी जाती है। अगर कुछ बचता है तो वह चीज़ के मालिक को दे दिया जाता है और अगर नुक़सान होता है तो जिस कर्मचारी के द्वारा पहले उस चीज़ की क़ीमत आँकी जाती है उसे देना पड़ता है। पेरिस के स्कूलों की देख-रेख म्यूनिसिपलिटी के हाथ में है। उच्च शिक्षा के लिए फ़ान्स-कालेज (College de France) में भिन्न भिन्न विद्यायें सिखाने के लिए ४५ अध्यापक नियत हैं। उनके लेक्चर को नर-नारी सर्व-साधारण सुन सकते हैं। विश्वविद्यालय (Sorbonne) में दस हज़ार के लगभग विद्यार्थी रहते हैं। दिसम्बर से जुलाई तक यहाँ भी सर्व-साधारण के लिए व्याख्यान दिये जाते हैं। इन लेक्चरों में स्त्रियों के जाने की मनाही है। इसके सिवा जुदी जुदी विद्याओं के लिए जुदे जुदे कालेज हैं। उनमें संगीत और अभिनय तथा कारीगरी के विद्यालय मे विना फ़ीस के शिक्षा दी जाती है। कारीगरी के विद्या-लय मे बहुत तरह की मशीनें, यन्त्र-तन्त्र और पुस्तकें आदि रक्खी हैं। सरकारी अस्पताल आदि के सिवा बुड्ढे अपाहिज आदमियों के लिए पाँच, और बे-मा-बाप के असहाय बच्चों के लिए कई एक, तथा दो

बरस से छोटे बच्चों को दिन मे, जब उनकी माताएँ मेहनत-मज़ूरी करने जाती हैं, रखने के लिए ४४ आश्रम हैं। अपाहिजों, बुड्ढों और आश्रमों को साधारण होटलों में बची हुई खाने-पीने की सामग्री से विशेष सहायता मिलती है। अनाथ बालकों को तरह तरह की कारीगरियाँ सिखलाई जाती हैं। इनके सिवा और भी अनेक प्रकार के आश्रम और सभाएँ असहाय विपन्न लोगों की सहायता के लिए स्थापित हैं। लन्दन की तरह यहाँ के बहुत से डाक्टरों के भी अपने निजी अस्पताल हैं। उनमें दाम लेकर दवा दी जाती है और घर की तरह रोगी की सेवा होती है। पेरिस का फ़ैशन जगत्प्रसिद्ध है। नित नये ढंग की पोशाकें वहाँ तैयार हुआ करती हैं। सब सभ्य देशों की शौकीन स्त्रियाँ यहाँ से पोशाकें ख़रीदतीं या यहाँ के फ़ैशन की पोशाकें बनवाती हैं। नये नये ढंग की पोशाके बनाकर दूकानदार लोग सर्वसाधारण के आगे उपस्थित करते हैं और इस प्रकार दूकान का नाम बढ़ाने की चेष्टा में लगे रहते हैं। इसलिए बड़े बड़े पोशाक बेचनेवाले सौदागर लोग सुन्दरी स्त्रियों को नौकर रखते हैं। वे स्त्रियाँ नये नये फ़ैशन की पोशाकें पहने भड़कदार खुली गाड़ियों मे बैठ कर प्रकाश्य विहार-स्थानों मे जाया करती हैं। देश-विदेश के लोगों में 'प्रचार' करने का यह बहुत अच्छा उपाय है। विज्ञापन-प्रचार के अनेकों तरीक़े हैं। नोटिसबाज़ी मे यूरोप के लोग जी खोल कर रुपया ख़र्च कर देते हैं। राजा, रानी आदि ऊँचे दर्जे के ख़रीदारों से रुपये का तक़ाज़ा करना शिष्टता के विरुद्ध समझा जाता है। इसलिए बड़े बड़े प्रतिष्ठित वस्त्र-विक्रेता लोग ख़ूराक, कपड़ा और ३०।४० पौण्ड तक मासिक वेतन देकर ऐसे सभ्य-भव्य-नम्र-चतुर और सुन्दर लोगों को रखते हैं जो ऐसे उपाय सोचा करते हैं कि बड़े आदमियों से तक़ाज़ा भी न करना पड़े

और रुपया भी सहज में वसूल हो जाय। रानियों के ऊपर रुपया बाक़ी होने पर ये कर्मचारी एक नये फ़ैशन की पोशाक लेकर पहुँचते हैं और उसी सिलसिले में दूकान की तंगदस्ती का ज़िक्र करके पिछला रुपया वसूल कर लाते हैं। पेरिस मे स्त्री और पुरुषो के लिए कई तरह के हम्माम हैं। इन हम्मामो में नहाने के ढंग ऐसे ऐसे हैं कि फ्रेञ्च लोगों की बेहद शौक़ीनी का पता केवल उन्हीं से लग जाता है। टब, जल, अङ्ग साफ़ करना और कपड़े पहन कर फ़िट होना, सब शौक़ीनी से शराबोर है। पेरिस मे भोजन के साथ जल पीना एक तरह से निषिद्ध समझा जाता है। पीने की चीज़ों मे सस्ती क्लारेट नाम की शराब का चलन ख़ूब है। इसके सिवा बियर और काफी पीने का चलन भी कम नहीं है। सवेरे के भोजन के साथ काफी ही बहुत करके पी जाती है। फ्रेञ्च लोग चाय बहुत कम पीते हैं। आज-कल अँगरेज़ों के अनुकरण पर फ्रेञ्च लोग तीसरे पहर चाय पीने लगे हैं और चाय पीने के कुछ अड्डे भी पेरिस मे हो गये हैं। फ़ान्स के देहातों में अब भी दवा की सूरत मे चाय पी जाती है, शौक करके कोई नहीं पीता। फ़ान्स में चाय कुछ महँगी है। लेकिन लक्षणों से जान पड़ता है कि चाय का इस्तेमाल जितना ही बढ़ता जायगा उतनी ही चाय सस्ती हो जायगी। पेरिस की पुलिस लन्दन की पुलिस ऐसी मुस्तैद नहीं है। आप पुलिस के आदमी से कहीं का पता पूछेंगे तो वह पहले पाकेटबुक निकाल कर उसके पन्ने इधर-उधर उलटेगा और उसके बाद कह देगा "मुझे ठीक नहीं मालूम, दूसरे मोड़ के कान्स्टेबिल से पूछ लीजिए"। फ्रेञ्च लोगों का जातीय भाव पुलिस के आदमियों में पूरी तौर से देख पड़ता है। पेरिस में बाहर जैसी सफ़ाई देख पड़ती है, भीतर वैसी सफ़ाई मुझे तो नहीं

देख पड़ी। जान पड़ता है, वहाँ के गृहस्थों की असावधानता ही इसका मुख्य कारण है। लन्दन में हर एक प्रजा को, औसत के हिसाब से, दो पौण्ड सात शिलिंग नव पेनी सालाना खर्च पड़ता है। और पेरिस मे पाँच पौण्ड चार शिलिंग सात पेनी। लन्दन की हर एक प्रजा पर जातीय ऋण का भार नव पौण्ड तीन शिलिंग आठ पेनी के हिसाब से है और पेरिस मे वत्तीस पौण्ड पाँच शिलिंग तीन पेनी के हिसाब से। इससे मालूम पड़ता है कि पेरिस मे खर्च बहुत अधिक है और उनकी भीतरी हालत उतनी अच्छी नहीं जान पड़ती।

फ़ान्स की साधारण अवस्था। फ़ान्स अन्यान्य देशों से पर्वत-श्रेणी के द्वारा विल्कुल अलग और सुरक्षित है। केवल वेलजियम की ओर ऐसी कोई सुरक्षित सीमा नहीं है। किन्तु वेलजियम के आधे निवासी फ़्रेञ्च हैं। यूरोप में, ऐसा सुरक्षित देश होने के कारण ही, फ़ान्स चिरकाल से अपना अस्तित्व बनाये रख कर सारे महा देश (यूरोप) में अपने को प्रधान बनाये हुए है। यूरोप में घूमने से स्पष्ट देखा जाता है कि सव फ़्रेञ्च-ढंग और फ़्रेञ्च-सभ्यता को पसन्द करते हैं। सचमुच यूरोप भर फ़ान्स-मय है। फ़ान्स का इतिहास यूरोप का इतिहास है। फ़ान्स की लोक-संख्या न्यूनाधिक चार करोड़ है। अन्यान्य देशों मे जैसे लोक-संख्या वढ़ती जाती है, यहाँ वैसे लोक-संख्या की वृद्धि नहीं होने पाती। एक तो बार बार युद्धों में यहाँ के बहुत आदमी छीज गये; दूसरे यहाँ के आज-कल के अनेक मध्यम श्रेणी के लोग व्याह करना ही नहीं पसन्द करते। यही कारण है कि जन-संख्या बढ़ाने के लिए फ़ान्स में एक प्रकार की चिन्ता सी छाई हुई है।

सेना की संख्या सब मिला कर कुछ अधिक पाँच लाख (अब

बहुत बढ़ गई है।)है। इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि स्थल-युद्ध में फ़ान्स की फ़ौज बहुत ही होशियार है। यह भी सब लोग जानते हैं कि हार होती है स्वभाव के अनुसार, नैतिक बल के अभाव से अथवा भगवान् के कोप से। सेना बहुत होने के कारण उसकी पोशाक वैसी अच्छी नहीं है। किन्तु युद्ध के अनेक प्रकार के नवीन कौशल निकालने के लिए फ़ान्स के कुछ वैज्ञानिक विद्वान् बराबर चेष्टा करते रहते हैं। इसके सिवा इस बात की भी फ़ौज को शिक्षा दी जाती है कि काम पड़ने पर वह आननफ़ानन में तैयार हो कर लड़ाई के मैदान में खड़ी हो सके। यहाँ से वहाँ कूच-धावे बराबर हुआ करते हैं। राज्य के नियमानुसार प्रजा को जैसे कुछ दिन समरविभाग में काम करना पड़ता है वैसे ही युद्ध के समय सब लोग अपने घोड़े युद्ध के लिए देने को बाध्य हैं। जलयुद्ध में भी फ़्रेञ्च लोग पिछड़े हुए नहीं हैं। लौहयान और अनेक आविष्कार फ़्रेञ्च लोगों के किये हुए हैं। यद्यपि अँगरेज़ लोग कहते हैं कि "The French fleet has had more science, but less stamina." तथापि यह बात वे अस्वीकार नहीं कर सकते कि निर्माण-कौशल में फ़्रेञ्च लोग श्रेष्ठ हैं। फ़ांस के छोटे बड़े सब मिला कर ४०० भाफ़ से चलनेवाले जंगी जहाज़ उस समय थे और इधर कई वर्षों से लगातार जी खोल कर जंगी जहाज़ आदि बनवाने में रुपया ख़र्च किया जा रहा है। इँगलेंड में क्रिस्तानी धर्म के एक सम्प्रदाय (इँगलिश चर्च) के सिवा और किसी तरह के मत-विश्वास को 'राज्य' स्वीकार नहीं करता। किन्तु फ़ांस में यह बात नहीं है। (रोमन-कैथलिक और प्रोटेस्टन्ट, ये दो ईसाई-सम्प्रदाय और यहूदी धर्म)—इन तीन मतों को फ़ान्स-राज्य स्वीकार करता है। इन मतों को राज्य से सहायता भी मिलती है। फ़ान्स

के अलजीरिया-प्रदेश की प्रजा मुसलमान है । राज्य की ओर से वहाँ मुसलमानी-मत की भी प्रतिष्ठा होती है । केवल प्रतिष्ठा ही नहीं, राज्यकोष से सहायता भी दी जाती है । फ़ान्स में यह नियम है कि एक लाख प्रजा जिस मत या धर्म को मानेगी वह राजभाण्डार से धन की सहायता पाने का अधिकारी है । यह अवश्य है कि फ़्रांस में रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय ही संख्या के हिसाब से प्रबल है, किन्तु इस कारण उक्त सम्प्रदाय के प्रति किसी प्रकार का पक्षपात नहीं दिखलाया जाता । वल्कि कभी कभी अन्यान्य सम्प्रदायों पर विशेष अनुग्रह दिखलाया जाता है । फ्रेञ्च लोगों के लिए यह कम बड़ाई की बात नहीं है । दुःख की बात है कि इन्हीं सब कारणों से रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय वर्तमान फ़ान्स की गवर्नमेन्ट पर असन्तुष्ट है । रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय का प्रभाव फ़ान्स में इतना अधिक है कि अन्य किसी देश में न होगा । सब प्रकार के दुःख और विपत्तियों में प्रभु पोप फ़ान्स के आगे उपस्थित होते हैं और उन्हें, उनकी आशा के अनुसार, यथेष्ट सहायता भी मिलती है । फ़ान्स के राज्य में अनेक परिवर्तन होने पर भी पोप और फ़ान्स के सम्बन्ध में कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ । यहाँ तक कि सन् १८०१ में नेपोलियन ने पोप के साथ जो शर्तें कर ली थीं उनमें से बहुत सी अभी तक वैसे ही मानी जाती हैं ।

फ़ान्स मे शिक्षा का विशेष प्रबन्ध है । जिस गाँव में ५०० आदमियों की भी बस्ती है वहाँ म्यूनिसिपलिटी की ओर से बालक और बालिकाओं के लिए दो स्कूल खुले हुए हैं । उनमें असमर्थ मा-बापों के लड़की-लड़के बिना फ़ीस के शिक्षा पाते हैं । निम्न श्रेणी के स्कूलों और कालेजों में क़ानून के अनुसार वाणिज्य-शिल्प आदि की शिक्षा देने की विशेष व्यवस्था है । पेरिस में जैसे ग़ैराती

आश्रम और सभा-सोसाइटियाँ हैं वैसे ही सारे राज्य मे हैं। यद्यपि ग़रीब अपाहिज मोहताज लोगों के कोई क़ानूनी वन्दोवस्त नहीं है तथापि गवर्नमेन्ट तथा सर्वसाधारण की ओर से वरावर दीन-हीन जनों को सहायता मिलती रहती है। फ़्रेंच, जर्मन और अँगरेज़, तीनों के चरित्र की तुलना में, सर्वसाधारण मे, एक प्रवाद प्रचलित है। एक अध्यापक ने अपने तीन विद्यार्थियों से, जिनमें एक अँगरेज़, दूसरा फ़्रेञ्च और तीसरा जर्मन था, ऊँट के सम्वन्ध में एक एक प्रवन्ध लिखने को कहा। जो फ़्रेञ्च था वह उसी समय लाइब्रेरी मे जाकर ऊँट के वयान की पुस्तके ढूँढ़ने लगा। जो जर्मन था वह प्रवन्ध लिखने की सामग्री जुटाने के लिए पशुशाला में जाकर ऊँट को देखने लगा। जो अँगरेज़ था वह उसी दिन अरव की ओर चला। उसने ऊँट की जन्मभूमि में जाकर, उसके सम्वन्ध का सव वृत्तान्त समझ कर, एक वहुत ही अच्छा लेख लिख डाला। इस प्रवाद से यह नतीजा निकलता है कि फ़्रेञ्च लोग सव कामो को संक्षेप मे कर डालना चाहते हैं। धैर्य, स्थैर्य, गंभीरता, शान्त-भाव-पूर्ण एकाग्रता आदि गुणों मे अँगरेज़ लोग फ़्रेंचों से वढ़े-चढ़े हैं। अँगरेज़ लोग कामकाजी होते हैं; वे वृथा का आडम्वर पसन्द नहीं करते। परन्तु प्रथम जीवन के उद्यम, उत्साह और अन्तिम जीवन की ज्ञान-चर्चा मे फ़्रेञ्च लोग अनेक जातियों से आगे हैं। ख़ूव तत्परता के साथ रुपया-पैसा पैदा करके अनेक फ़्रेञ्च लोग ऐसा ठिकाना कर लेते हैं कि ४०।४५ वर्ष की अवस्था मे. किसी कोलाहल-हीन गाँव मे वसकर, शेष जीवन को अपनी रुचि के अनुसार साहित्य, विज्ञान आदि की चर्चा और खोज मे लगाते और इस प्रकार संसार भर का भारी उपकार कर जाते हैं। ख़ूव पैनी वुद्धि के वल से प्रतिभा के विकास

के विषय मे शायद कोई भी जाति फ्रेञ्च लोगों का नहीं पा सकती ।

नगरनिवासी तो नहीं, किन्तु देहाती लोग घोर कुसंस्कार-ग्रस्त हैं । जंगलों में, साधारण सड़कों के किनारे तरह तरह की मूर्तियाँ रक्खी देख पड़ती हैं । उन मूर्तियों मे अधिकांश ईसा और मेरी की हैं । उनमें कुछ साधु-महात्मा लोगों की भी मूर्तियाँ हैं । डाइन, भूत-प्रेत आदि को, हमारे देश की तरह, वहाँ के लोग भी डरते हैं । (रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय के ईसाइयों की जहाँ प्रधानता है वे सब देश घोर पौत्तलिक (मूर्तिपूजक) और कुसंस्कार-ग्रस्त हैं)। ग्रीक-सम्प्रदाय के क्रिस्तान भी इन दोषों से नहीं बचे हैं । फ़ान्स मे धर्म के नाम से जुआ-चोरी और ठगविद्या आदि अपराधों को करने के कारण बहुत से लोग पकड़े जाकर राजद्वार से दण्ड पाते हैं । किन्तु बहुत से ऐसे भी हैं जो क़ानून से बचाकर काम करते और बेखटके माल चीरते हैं । फ़ान्स मे उपाधिधारी रईस नहीं हैं । विप्लव के पहले जो ऐसे रईस थे उनके वंशधर लोग नाम तो उसी ढंग के रखते हैं, पर उनका वह पहले का ऐसा दबदबा अब नहीं है । साधारण-तन्त्र का जो सभापति होता है वही राज्य मे सबसे बड़ा और प्रधान समझा जाता है । सभापति अर्थात् प्रेसीडेण्ट सात बरस के लिए चुना जाता है । वह अपनी इच्छा से पर-राष्ट्रों के साथ सन्धि तो कर सकता है, लेकिन 'सभा' के अनुमोदन बिना किसी से लड़ाई नहीं ठान सकता । राज्य में क़ानून के अनुसार सारी प्रजा को प्राथमिक शिक्षा अवश्य प्राप्त करनी पड़ती है । बिलकुल मुफ़लिसों को छोड़ कर हर एक प्रजा को डेढ़ फ़्रैंक से लेकर साढ़े चार फ़्रैंक तक एक साधारण कर (Personnelle mobiliere—Capitation Tax)

देना पड़ता है। फ़ान्स के सिक्के को फ़्रैंक कहते हैं। २५ फ़्रैंक का एक पौण्ड होता है। पाँच फ़्रैंक से लेकर सौ फ़्रैंक तक के सोने के सिक्के चलते हैं। एक सौ सॉतिमें (Centime) का एक फ़्रैंक होता है। पाँच सॉतिमे के ताँवे के सिक्के को सू (Sow) कहते हैं। फ़ान्स में इसी का चलन बहुतायत से है। जहाँ पर हम 'कौड़ी कौड़ी को मुफ़लिस' शब्द का और अँगरेज़ लोग 'पेनीलेस' (Penniless) शब्द का व्यवहार करते हैं वहाँ पर फ़्रेञ्च लोग 'सॉसू' (Sanssow) शब्द का व्यवहार करते हैं। सन् १९१३ में राजकर उन्नीस करोड़ पौण्ड के लगभग जमा हुआ था। सन् १९११ में राज्य पर साढे तेरह करोड़ पौंड का ऋण था।

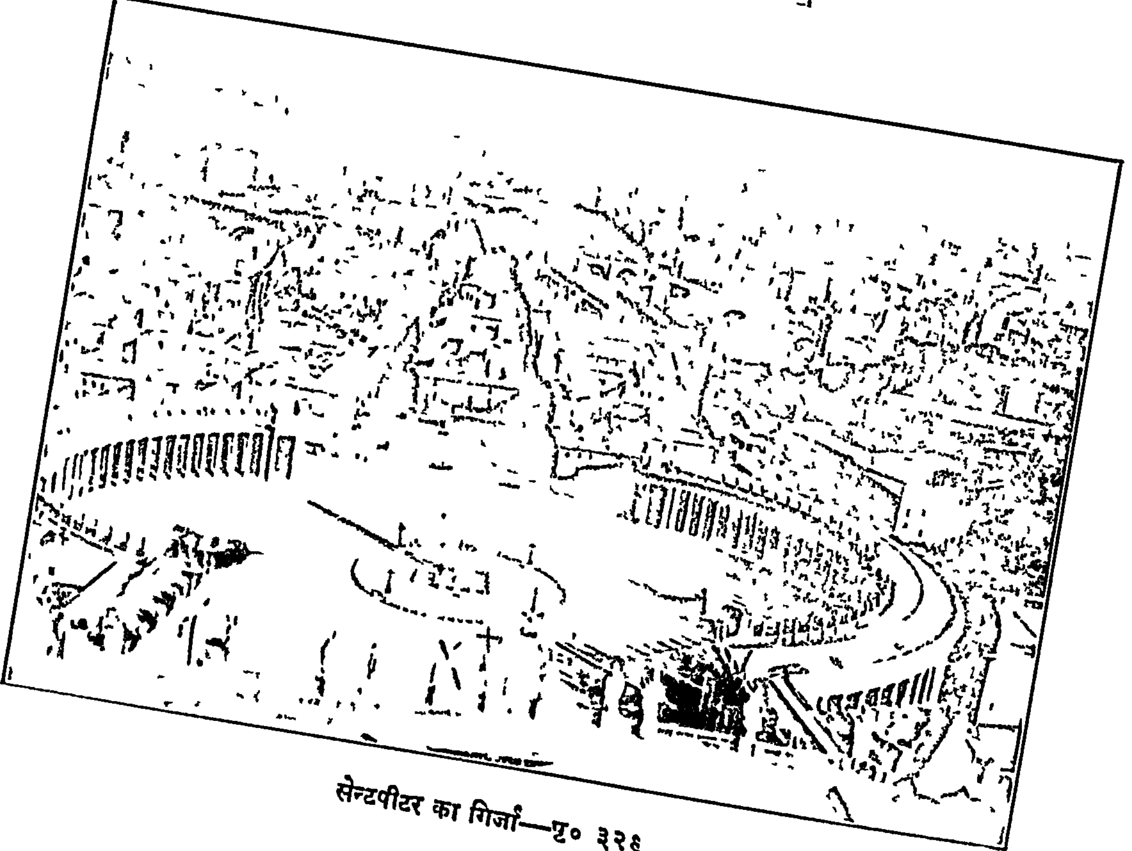
इटली।

"If I could open my heart you'd see.
Written on it I-ta-ly"—Browning.

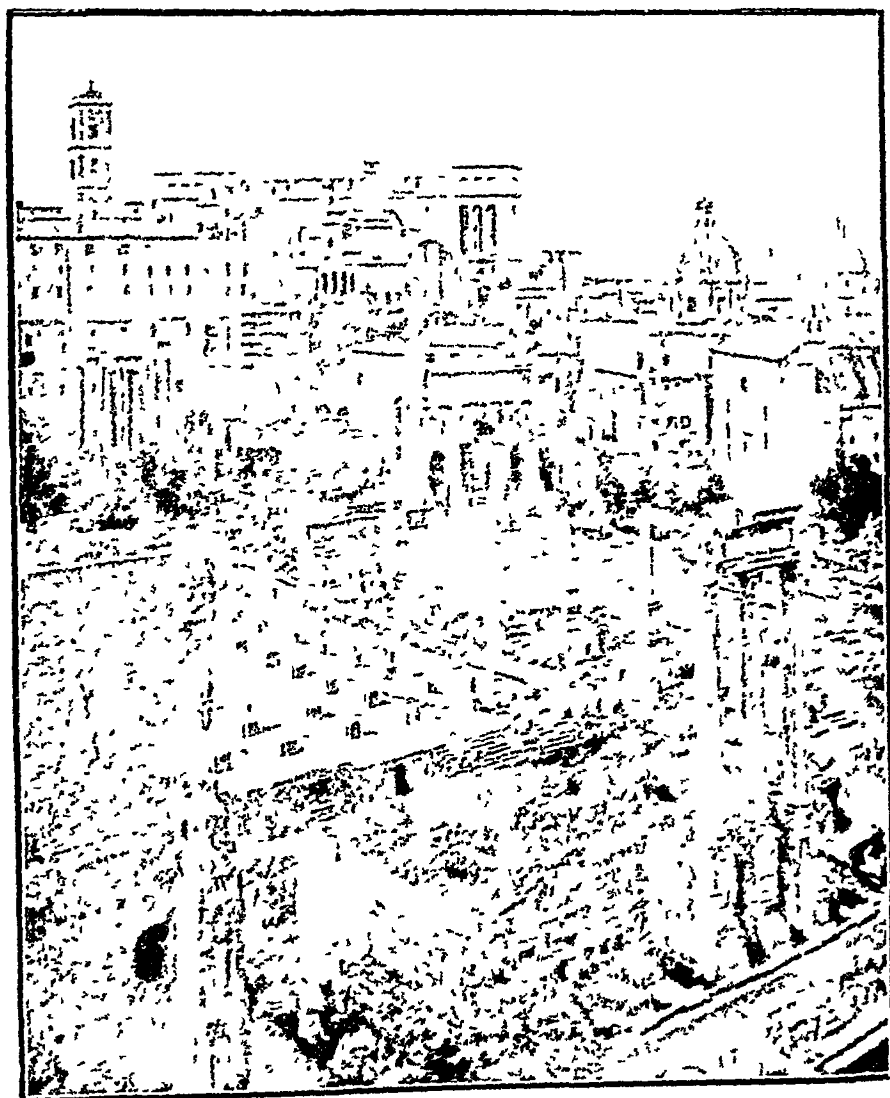
इटली बहुत से पण्डितों को बहुत ही प्यारी है। इसका अपूर्व-गौरव और ऐश्वर्य, मध्य-समय की दुर्दशा और वर्तमान अभ्युत्थान बहुत लोगों के लिए आलोचना की सामग्री है। इसके सिवा इसकी प्राकृतिक और कृत्रिम सुन्दरता और विचित्रता भी एक ऐसी चीज़ है जो सारे यूरोप का ध्यान अपनी ओर खींचती है।

रोम।

पेरिस से एकदम सीधा रोम का टिकट लिया। किन्तु किसी कारण से रोम में रहना नहीं हुआ; उसी दिन नेपल्स जाने की ठहरी। उसके बाद सन् १८९१ में ग्रीस से जब इटली को आना हुआ तब कुछ दिन रोम में रहना हुआ। इस जगत्प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर के सम्बन्ध में उस समय जो कुछ मैं जान सका वही यहाँ पर लिखता हूँ। नपोली से रवाना होकर सवेरे रोम में पहुँचा। ग्रीस से आते समय स्वर्गीय विकूर इमानुएल (राजा) के एक कर्मचारी से जान-पहचान होगई। उन्होंने कह दिया कि होटल की अपेक्षा रोम के 'लोकांडा' में रहने से सुभीता होगा। वहाँ ख़र्च भी कम पड़ेगा। लोकांडा में केवल रहने को घर मिलता है, खाने-पीने का कुछ प्रबन्ध



सेन्टपीटर का गिर्जा—पृ० ३२९



फोरम—पृ० २२९

नहीं होता । जो चाहिए सो बाहर भोजन करिए । उनके उपदेश के अनुसार मैं एक लोकांडा में जाकर ठहरा ।

सेन्टपीटर का गिर्जा (San Pietro Vaticano)। इसके विषय में एक विदुषी (Frederika Bremer) का कथन है— "St Peter's, that glorious temple, the largest and most beautiful in the world." इसमे कोई सन्देह नहीं कि हर एक यात्री को सबसे पहले सेन्टपीटर का गिर्जा देखने की इच्छा होती है । यह गिर्जा केवल रोम या यूरोप में ही नहीं पृथ्वी भर मे प्रधान भवन समझा जाता है । ऐसी इमारत, ऐसी सजावट और सामान, ऐसी क़ीमती मूर्त्तियाँ सचमुच और कहीं नहीं हैं । जब से यह गिर्जा स्थापित हुआ है तब से जितने (पोप के गद्दीधर) पोप हुए सब बे-शुमार रुपया इस गिर्जे मे लगाते चले गये । इस गिर्जे का वर्णन करने का इरादा और चन्द्रमा को मुट्ठी में छिपाने की इच्छा एक ही बात है । तथापि यथासम्भव दो-चार शब्द इस गिर्जे के बारे मे लिखे जाते हैं । इस गिर्जे के सुविस्तृत सामने के मैदान में दोनों किनारों पर दो अर्धचन्द्राकार ५५ फ़ुट चौड़े कालोनेड (Colonnades) हैं । ४८ हाथ ऊँची चार छतें २८४ गोल और ६४ चौकोने खंभों पर हैं । बीच के स्थान से दो गाड़ियाँ बराबर बराबर जा सकती हैं । खंभों की कार्निसों में १७ फ़ुट ऊँची १९२ साधुओं की मूर्तियाँ खड़ी हैं । दोनों कालोनेडों के बीच के सहन का फैलाव ७४७ फ़ुट है । कालोनेड और दालान से घिरे हुए आँगन के बीच में एक मिसर देश का स्तंभ (Egyptian Obelisk) है । उसकी चोटी पर क्रूस स्थापित है । स्तम्भ के आस-पास दो फ़ुहारे हैं । हमारी गाड़ी के साथ और एक गाड़ी आई और गिर्जे की सीढ़ियों के पास आकर थम गई । दो तीन आदमी गाड़ी से उतरे । वे भी दर्शक थे । गिर्जे की इमारत में

प्रवेश करने के फाटक इतने ऊँचे हैं कि ऊपर नज़र उठाकर देखने से सिर की पगड़ी ज़मीन में गिर पड़े। भीतर प्रवेश करके जो कुछ मैंने देखा उसका वर्णन एक दूसरे विद्वान के शब्दों में ही करना ठीक होगा। हर्बर्ट साहब कहते हैं—"The first view of the interior of St. Peter's makes the eye fill with tears and oppresses the heart with a sense of suffocation. It is not simply admiration, or awe, or wonder —it is full satisfaction, of what nature you neither understand nor inquire. If you may only walk aside and be silent you ask nothing more."—A. Herbert. सचमुच भीतर प्रवेश करते ही आदमी चकरा जाता है। चारों ओर इतनी सामग्री है कि जिसका वारापार नहीं। भीतरी छत (ceiling) के चित्र आदि और चारों ओर के सुनहले काम तथा एक एक पोप की समाधि की सजावट में ही न जाने कितने रुपये ख़र्च होगये हैं। जगत्प्रसिद्ध शिल्पी राफेल (Raphael) और माइकेल एन्जेलो Michael Angelo) ने यहाँ बड़ा परिश्रम किया है। बहुत अच्छे संगमरमर की मेज़ पर एक जगह यूरोप के कई एक प्रधान गिर्जों की ऊँचाई लिखी हुई है। यथा—सेन्टपीटर का गिर्जा ६०८ फ़ुट, लन्दन का सेन्टपाल का गिर्जा ५२१ फ़ुट और मिलन-गिर्जा ४३६ फ़ुट, रोम का सेन्टपाल गिर्जा ४१५ फ़ुट और क़ुस्तुनतुनिया की सेन्ट सुफ़िया मसजिद ३५६ फ़ुट ऊँची है। यहाँ पर काले रंग की एक सेन्टपीटर की, पीतल की, मूर्त्ति है। उसके सिर पर पगड़ी की जगह एक चक्र है और हाथ में स्वर्ग की चाभी है। उस मूर्त्ति के दाहने पैर की उँगलियों को चाट चाट कर यात्रियों ने सपाट कर दिया है। बायें पैर की भी प्रायः वही दशा है। बीच में एक वेदी पर चँदोवे के नीचे क्रूस रक्खा है। चँदोवे की पीठ पर पवित्र कबूतर

बैठा है। सामने घुटने टेके पोपों की मूर्त्तियाँ हैं। चारों ओर १३ पाप स्वीकार के स्थान (Confessional) हैं। वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ धीरे धीरे धीमे स्वर से पादरियों के आगे अपने गुप्त पातकों का हाल कहती हैं। एक जगह एक पोप (Alexander VII) की यमराज और गोलक (Globe) सहित मृत्युञ्जय-भाव की मूर्त्ति बनी हुई है। पोप के आफ़िस से पास लेकर बहुत परिश्रम से सीढ़ियाँ चढ़ कर गिर्जे की चोटी पर पहुँचे। वहाँ पर से रोमनगर का दृश्य बहुत अच्छी तरह देख पड़ा। गिर्जे के गुम्बद (Cupala) का घेरा २०० हाथ का है। छत के ऊपर सामने ही ईसा के साथ द्वादश-प्रेरितों (Apostles) की १९ फुट ऊँची मूर्त्तियाँ देखने से डर मालूम पड़ता है। पीटर की चाभी की तरह हर एक के हाथ में एक एक चीज़ है। क्रिस्तानों के सभी गिर्जे क्रूस के आकार के बने हैं; यह भी वैसा ही है। इसकी लंबाई (Nave) ६०७ फुट, चौड़ाई (Transept) ४४४ फुट और ऊँचाई ४५० फुट है। पूर्व ओर का सम्मुख भाग ३९६ फुट लम्बा और १६० फुट ऊँचा है। वहाँ के खंभे ८८ फुट ऊँचे हैं और उनका घेरा २५ फुट का है। इसके भीतर ४६ वेदी (Altar). ४०० मूर्त्तियाँ, जेरुस्सलम से लाये हुए सालामन मन्दिर के १२ खंभे और बहुत से पोप-सम्राट् और राजाओं की मूर्त्तियाँ हैं। २४ बीघे ज़मीन के ऊपर १२० बरस में यह गिर्जा बनकर तैयार हुआ और एक करोड़ पौण्ड की लागत लगा कर ३५० बरस में सर्वाङ्गसम्पन्न बनाया गया। उसके बाद से अब तक न-जानें कितना रुपया इसमें लगता ही चला जा रहा है। सोलहवीं सदी के मध्यभाग में एक बार हिसाब करके देखा गया था। उससे जान पड़ा था कि तब तक १,१६,२५,००० पौण्ड ख़र्च हो चुका था। इसकी सालाना मरम्मत में साढ़े छः हज़ार पौण्ड के लगभग

खर्च हो जाते हैं। कहा जाता है कि महात्मा सेन्टपीटर का शव यहीं गाड़ा गया है। बहुत से प्राथमिक क्रिस्तान राजों की आज्ञा से महात्मा पीटर मारे गये थे। पीटर की अपनी आज्ञा के अनुसार, रोम के उस समय के बिशप आनाक्लिटस (Anacletus) ने सन् ९० में पीटर की समाधि के ऊपर भजनालय बनाया। उसके बाद, सन् ३०६ मे सम्राट् कान्स्टन्टाइन (Constantine) ने द्वादश प्रेरितों के सम्मान मे बारह डलिया मिट्टी अपने हाथ से लाकर एक गिर्जे की नींव डाली। जब तक गिर्जा बनता रहा तब तक बराबर सम्राट् उसकी देखरेख करते रहे। १००० वर्ष तक वही गिर्जा बना रहा। उसके बाद सन् १५०६ की ८ वीं अपरैल को पोप दूसरे जूलियस Julius II) ने संसार मे सबसे श्रेष्ठ भजनालय स्थापित करने के इरादे से वर्त्तमान गिर्जे की नींव डाली। उन्होंने और उनके परवर्त्ती पोप ने स्वर्ग की ठेकेदारी अथवा (Indulgences) बेंच कर इस गिर्जे के बनने का खर्च उगाहा। इस गिर्जे के सम्बन्ध में दो विद्वानों की सम्मतियों का कुछ अंश यहाँ पर उद्धृत किया जाता है।

"The building of St Peter's surpasses all powers of description It appears to me like some great work of nature, a forest, a mass of rocks, or something similar; for I never can realize the idea that it is the work of man. You strive to distinguish the ceiling as little as the canopy of heaven You lose your way in St Peter's; take a walk in it, and ramble till you are quite tired When divine service is performed and chanted there You are not aware of it till you come quite close The angels in the baptistery are enormous giants; the doves, colossal birds of prey. You lose all sense of measurement with the eye, or proportion; and yet who does not feel his heart expand when standing under the dome and gazing up at it"

—Mendelssohn.

सचमुच ही, यह गिर्जा मनुष्य की करतूत है, यह मानने को जी नहीं चाहता। इसके भीतर घूमते घूमते आदमी थक जाता है और कुछ लोग राह भी भूल जाते हैं। जैसा भारी भवन है वैसा ही उसके भीतर का सामान है। और एक विद्वान् लिखता है—

"The interior burst upon our astonished gaze, resplendent in light, magnificence and beauty, beyond all that imagination can conceive. As I walked slowly up its long nave empanelled with the richest marbles, and adorned with every art of sculpture and taste, and caught through the lofty arches opening views of chapels and tombs, and altars of surpassing splendour, I felt that it was, indeed, unparallelled in beauty, in magnitude and magnificence, and one of the noblest and most wonderful of the works of man" C. Eaton

वाटिकान अथवा पोप-भवन। एक ऊँची ज़मीन के ऊपर, पूर्वोक्त गिर्जा और यह पोप-भवन, दोनों पास ही पास बने हुए हैं। आठवीं शताब्दी मे यह बना था। बीच मे टूट फूट जाने के बाद बारहवीं सदी मे फिर से बना है। यह महल ११५० फुट लंबा और ७७० फुट चौड़ा है। इसमे २० ड्यौढ़ियाँ, ४४४२ कमरे और ८ बड़ी तथा २०० छोटी सीढ़ियाँ हैं। दीवार के चित्रों, अन्यान्य चित्रो और पुस्तकों के संग्रह के लिए यह स्थान प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि इतनी और ऐसी क़ीमती हस्तलिपियाँ पृथ्वी पर और कहीं नहीं हैं। एक लाख छपी पुस्तकों के अलावा पाँचवीं सदी तक की यूरोप और एशिया की २७००० हस्तलिपियाँ यहाँ जमा हैं।

पोप का ऐश्वर्य एक ऊँचे दर्जे के सम्राट् का ऐसा है। यद्यपि इस समय पोप के हाथ मे राज्यशासन की शक्ति नहीं है तथापि साज़-सामान, लाव-लश्कर, सिपाही-सन्तरी आदि सब कुछ है। वर्त्तमान

पोप तेरहवें लिश्रो (Leo XIII) *वृद्ध होने पर भी सब काम नियमित रूप से करते हैं। पहले सवेरे चार बजे उठते थे; अब तबीयत ठीक न रहने के कारण छः बजे उठते हैं। सवेरे की उपासना (Mass) के बाद काफी और दूध पीकर धर्म-सम्बन्धी काग़ज़-पत्र पढ़ते हैं, ८ बजे महल के कर्मचारी रिपोर्ट देने आते हैं, ९ बजे प्रधान कार्डिनल धर्मराज्य की व्यवस्था आदि (Business of the Holy See) के बारे में सलाह लेने आते हैं। १० बजे प्रधान पादरियों से पोप मुलाक़ात करते हैं और दोपहर को महल के बाग़ में टहलते हैं। बाग़ अच्छा है। बहुत से अच्छे अच्छे पेड़ और लताएँ हैं। उनमें कई खजूर के भी पेड़ हैं। बनावटी झरने और कुंज आदि भी बने हैं। इसके बाद पोप प्रभु एक बजे के लगभग विदेशी विशपों और अन्यान्य लोगों से मिलते हैं और दो बजे पुरानी क्लारेट शराब के साथ दिव्य भोजन करते हैं। भोजन के बाद चार साढ़े चार बजे तक सोते हैं। उसके बाद आँख खुलते ही विदेशी अख़बार पेश किये जाते हैं। उन अख़बारों को या तो वे ख़ुद पढ़ते हैं और या कोई मुसाहब पढ़ कर सुना देता है। इसके बाद कार्डिनाल लोगों की रिपोर्ट सुन कर तीसरी बार काग़ज़-पत्रों पर पोप प्रभु दस्तख़त करते हैं। अन्त को ९ बजे कुछ मामूली भोजन करते हैं। एक बार पोप बीमार थे। डाक्टर ने कहा—आप किसी से मुलाक़ात न करें। महात्मा लिश्रो पोप ने हँस कर कहा—"तो फिर पोप का सिंहासन शून्य हो जायगा। मेरे ऐसे पद पर स्थित मनुष्य के लिए मौत की घड़ी तक काम करने की व्यवस्था ही ठीक है"। यह बहुत सी भाषायें जानते हैं। सन् १८७८ में पोप के पद पर इनका अभिषेक हुआ था। रोम के महल के अलावा अलबानो-नामक स्थान में

* यह अभी मरे हैं।

पोप का ग्राम्य भवन भी है। आवहवा वदलने के लिए पोप कभी कभी वहाँ जाया करते हैं। पोप लिओ का जन्म सन् १८१० में हुआ था। सन् १८३७ मे पोप के पद पर इनका अभिषेक हुआ। इस हिसाव से सन् १८८७ में धर्मयाजक कार्य करते पचास वर्ष पूरे होने पर, इस साल वड़ी धूमधाम से जुविली मनाई गई थी। पोप को वहाँ की गवर्नमेंट से साढे वत्तीस लाख लिरा (इटली का सिक्का) वार्षिक वृत्ति मिलती है।

फोरम (Forum Romanum)। इसभूमिखण्ड के दोनों किनारे खूव ऊँचे हैं। वीच में तंग उपत्यका है। यह स्थान रमूलस (Romulus) के समय से शेष अगस्टिउली (Augustuli) के समय तक रोमन-साम्राज्य का सिर वना हुआ था। ऐसा वहुत सा समय वीत गया है जव पृथ्वी भर का हिताहित इस छोटे से स्थान की मीमांसा पर निर्भर रहता था। कितने ही राजनीति-विशारद वक्ताओं के कण्ठस्वर यहाँ सुनाई पड़ते थे। जिस रोमन-व्यवस्था (Roman Law) पर आज सभ्य जगत् के क़ानून वने हैं उस व्यवस्था की उत्पत्ति इसी भूमि पर हुई है। जिस जगह पर मानव-मस्तिष्क की इतनी वड़ी वड़ी लीलाएँ हो गई हैं उसका इस समय नाम है "गोरुओं का अड्डा" (Campo Vaccino)! समय तू जो चाहे सो करे! एक समय पृथ्वी के प्रधान साम्राज्य का सर्वोत्तम स्थान होने के कारण जो भूमि पुजती थी वह इस समय सचमुच ही गऊ और वकरियों की विहार-भूमि वन रही है। ग्यारहवीं शताव्दी में वर्वर लोगों ने चढ़ाई करके रोम का विध्वंस कर डाला। यह स्थान ध्वंस-स्तूपों के नीचे दव गया। पीछे वड़े कष्ट से—वड़े परिश्रम से—खोद कर यह स्थान निकाला गया है। वहुतों का कहना है कि अभी उस स्थान का केवल एक हिस्सा वाहर निकला है; वहुत सा हिस्सा मिट्टी

के नीचे दबा पड़ा है । वेसपेसियन (Vespasian), शनि (Saturn) और शान्ति (Concord) का मन्दिर और सिवरस का फाटक (Arch of Septimius Severus) यहाँ के प्रधान दृश्य हैं । प्रसिद्ध कैपिटल (Capitol) मन्दिर के नीचे ही यह फाटक बना हुआ है । पर्शिया आदि देशों को जीतने के बाद उस जय का चिह्न यह फाटक बना था । जिनमें चित्र खुदे हुए हैं उनमें युद्ध-भूमि और ज़ंजीरों से जकड़े क़ैदी राजों के साथ नगर में प्रवेश आदि दृश्य दिखलाये गये हैं ।

कलोसियम (Colsseum) । फोरम मे और उसके चारों ओर जो कुछ आज भी मौजूद है उसमे कलोसियम नामक क्रीड़ा-भवन सर्वोत्तम है ।

इतना बड़ा क्रीड़ा-भवन संसार में और किसी भी राजा ने न बनवाया होगा । सैकड़ों बरसों से इसके ईंट-पत्थर महलों और गिर्जों में लगाने के लिए उठते जारहे हैं । तथापि जितनी इमारत खड़ी है वह रोम के प्राचीन गौरव की भरपूर गवाही दे रही है । कवि ने ठीक ही कहा है—

> " While stand Coliseum, Rome shall stand ;
> When falls the Coliseum, Rome shall fall ;
> And when Rome falls—the World "

प्रथम शताब्दी के मध्य-काल में सम्राट् व्यसपेसियन ने इसकी स्थापना की थी । यहाँ मल्ल-युद्ध आदि कितनी ही क्रीड़ाएँ, ख़ूनी जानवरों के द्वारा कितने ही साधु पुरुषों की हत्याएँ और अन्यान्य अनेक प्रकारों से नरहत्याएँ हुई हैं । इस रंगभवन की शोभा बढ़ाने के लिए रेशमी तम्बुओं के नीचे कितनी ही संगमरमर, सोने, हाथी-दाँत, रत्न आदि की बहुमूल्य सामग्रियाँ रक्खी रहती थीं—इस्तेमाल

मे आती थी। क्रीड़ा के समय चारों ओर सुगन्धित जल के फुहारे छूटते थे। ईसाई-धर्म की पहली अवस्था के इतिहास से इस स्थान का कुछ घनिष्ठ सम्बन्ध है। बहुत से धर्मवीर ईसाई यहाँ, हज़ारों आदमियों के सामने, खूनी जानवरों को खिला दिये गये हैं। आन्टिओथ के विशप इगनेशियस (Ignatius, Bishop of Antioch) उनमे एक प्रधान भक्त पुरुष थे। जब वे पकड़ कर लाये गये तब उन्होंने रोम के क्रिस्तानों को चिट्ठी में लिखा कि "मुझे छुड़ाने के लिए तुम लोग कुछ भी चेष्टा न करना। तुम लोग चुपचाप निश्चेष्ट रहो, मुझे खूनी जानवर ईश्वर के निकट भेज देंगे। मैं यही चाहता हूँ, कि मेरे शरीर की एक बोटी भी न बाक़ी रहे। वास्तव मे उनकी इच्छा के माफ़िक ही सब कुछ हुआ। रोम के अनेक स्थानों में इस आत्म-बलिदान (Martyrdom) के सजीव चित्र आज भी देखने को मिलते हैं। क्रूस हाथ मे लिये, भक्त खड़ा है। सामने शेर मुँह बाये खड़ा है। पर भक्त वैसे ही प्रसन्न भाव से खड़ा है। उसे ज़रा भी दहशत नहीं। इस भाव के दृश्य को देख कर कौन ऐसा पाखण्डी होगा जिसका हृदय न विगलित हो जायगा। ऐसी घटनाओं पर विचार करने से जैसे, एक तरफ़ मनुष्य का पैशाचिक भाव देखकर दुःख और कष्ट होता है, वैसे दूसरी ओर अमर तेजस्वी महापुरुषों के अनन्य ईश्वर-प्रेम, धर्म-विश्वास और दिव्य निर्भीकता की बातों से हृदय उछल पड़ता है। कलोसियम एक अण्डे के आकार की इमारत है। बीच मे लंबा-चौड़ा आँगन है। यह इमारत ६२० फ़ुट लम्बी, ५१३ फ़ुट चौड़ी और १५७ फ़ुट ऊँची है। कुछ तो टूटी-फूटी हालत मे पड़ा हुआ है और कुछ की मरम्मत कराई गई है। विधाता की लीला विधाता ही जाने। एक दिन जहाँ हज़ारों ईसाइयों की हत्या होती थी, आज वहीं ईसाइयों

का तीर्थ हो रहा है। आँगन के बीच में एक क्रूस रक्खा है। उसके चारों ओर १४ मन्दिर हैं। उनमें सदा बहुत से लोग घुटने टेके पूजा में मग्न रहते हैं।

पालाटीन् ("Palatine—a spot unsurpassed even in Rome for its marvellous combination of historic interest and picturesque beauty." अभिनव सौन्दर्य और ऐतिहासिक विशेषता में यह सर्वोत्तम है। इस पर्वत के ऊपर एक गाँव था और वही समय पाकर यह नगर बन गया है। इसी जगह पर खड़े होकर मूलस ने उड़ रहे गिद्ध के शुभ सगुन को देखा था और इसी के नीचे नगर स्थापित करने का संकल्प किया था। पालाटीन में ही उनकी मृत्यु हुई और नीरो (Nero) के राज्यकाल तक उनकी मड़ैया विशेष सम्मान के साथ रक्खी थी। क्रासस (Crassus), सिसिरो (Cicero) आदि प्रतिष्ठित सेनेटरों (Senators) के महल यहीं पर बने थे। सम्राटों ने इसी जगह अपने अपने भारी महल बनवाये। इस कारण यूरोप की सभी भाषाओं में प्रासाद-वाची शब्द "पालाटीन" शब्द से निकले हुए देख पड़ते हैं। पृथ्वी भर की पत्थर की खानों से क़ीमती संगमरमर इस इमारत के लिए मँगाया गया था। यहाँ का सुवर्ण-भवन बन चुकने पर उसमें प्रवेश करने के समय सम्राट् नीरो ने कहा था कि "अब मैंने मनुष्य के योग्य निवासस्थान पाया"। इस समय सबका ध्वंसावशेष-मात्र देख पड़ता है। न वे संगमरमर हैं और न वह क़ीमती साज-सामान है। केवल ईंटों का भारी ढूह इसके विगत गौरव की घोषणा कर रहा है। देखने से एक भारी दानवनगर सा जान पड़ता है। पर्वतमय भारी भारी फाटकों और अन्यान्य ध्वंसावशेषों के बीच एक नये ढंग का सौन्दर्य देखने में आता है। एक प्रसिद्ध पर्यटक का

कथन है—"No sight of Roman ruin equals the Palatine in blending the wildness of nature with the beauty of decay, the picturesqueness of the landscape with the solemnity of the ornamental remains" सचमुच भग्नावशेषों के बीच बीच मे तरह तरह के छोटे बड़े वृक्ष जम आने से उस स्थान का एक अद्भुत रूप हो रहा है।

सीजर नरपतियों के इस महल मे दो नये ढंग की व्यवस्थायें देख पड़ीं। भोजन-भवन के पास ही एक ऐसा कमरा बना हुआ है जहाँ बहुत खा-पी लेने से जिन लोगों की तबीयत ख़राब हो जाय वे आराम कर सकें। दूसरा एक ऐसा स्थान देख पड़ा जहाँ गर्भवती रानियों के रहने के लिए बहुत से कमरे बने हुए हैं। हर एक महीने के लिए अलग अलग कमरे थे। उनमे के भीतर के मनोहर चित्र और व्यवस्थायें भिन्न भिन्न थीं। भीतरी छतों के चित्र अभी तक वैसे ही बने हुए हैं। इतिहास में. ईसाई-धर्म के साथ पालाटीन का विशेष सम्बन्ध देखा जाता है। महात्मा 'पाल' का यह ख़ास लीला-क्षेत्र है। एक जगह की दीवार मे ईसाई-धर्म पर व्यंग्य करके बनाया गया एक चित्र अभी तक अंकित है। एक आदमी, जिसका सिर गधे का है, हाथ फैलाये क्रूस की तरह खड़ा है। उसके सामने दूसरा एक आदमी खड़ा हुआ पूजा कर रहा है। उसके नीचे जो लिखा है उसका अर्थ यह है कि "अलेक्सामेनस अपने देवता की पूजा कर रहा है"। इसमे कोई सन्देह नहीं कि इस चित्र के द्वारा किसी कर्मचारी ने अपने ईसाई साथी के धर्म-विश्वास पर कटाक्ष किया है।

काराकाला का स्नानभवन (Baths of Caracalla)। सम्राट् काराकाला ने इसे बनवाना शुरू किया था किन्तु वह बीच ही में मर गये। फिर सिवेरस (Alexander Severus) ने बनवाकर पूरा किया।

यहाँ भी कलोसियम की तरह भारी कारख़ाने हैं। इसका घेरा एक मील का है। इसमे ऐसी व्यवस्था थी कि एक साथ १६०० आदमी स्नान कर सकें। इसका फ़र्श, दीवारें और भीतरी छतें अत्यन्त सुसज्जित और संगमरमर से सुशोभित थीं। यहाँ अगणित मूर्त्तियाँ थी। उनमें से कुछ मूर्तियाँ मिट्टी के नीचे से खोद कर निकाली और म्यूज़ियम में रख दी गई हैं। नगर के बाहर, सात कोस के फ़ासिले से, ऊँची नाली के द्वारा, यहाँ जल आता था। उस नाली के फाटक आज भी चौदह मील तक खड़े हुए हैं। तरह तरह से नहाने की व्यवस्था के अलावा यहाँ नीचे लिखे बन्दोबस्त थे। सुगन्धित वस्तुओं और तरह तरह के फ़ैशन की चीज़ों की दूकाने, जलपान की दूकाने, पाकशाला, भोजन-भवन, बातचीत करने और टहलने के लिए हाल, पुस्तकालय और पाठ-भवन, रंगालय, कसरत दौड़-धूप और कुश्ती लड़ने की जगह, चित्रशाला और मूर्त्तियों का म्यूज़ियम। इसे वर्त्तमान समय का "पीपुल्स पैलेस" (People's Palace) कहें तो ठीक होगा। कवि शेली (Shelley) ने यहाँ बैठकर एक काव्य ("Prometheus Unbound") बनाया है और उस काव्य की भूमिका में इस प्रसिद्ध स्थान को विशेष सम्मान दिया है।

सान पियाट्रो मोन्टोरिओ (San Pietro in Montorio)। यहाँ जानिक्युलम (Janiculum) पहाड़ के ऊपर महात्मा सेन्ट पीटर उलटे लटकाये जाकर क्रूस पर मारे गये हैं। ठीक उसी जगह पर एक सूखे कुएँ के ऊपर मन्दिर बना है। लोहे के स्कूप (Scoop) वाली लंबी लाठी से उस कुएँ की रज निकाल कर दर्शकों दी जाती है। एक गद्दीधर बिशप ने वह धूल मेरे मस्तक में भी लगा दी और कुछ हाथ पर रख दी।

इस स्थान के अन्तर्गत गिर्जों और मठों में बहुत से संन्यासी (Monks) रहते हैं। रोम के आदमी अपने ही नगर की इतनी कम ख़बर रखते हैं कि इस प्रसिद्ध तीर्थस्थान का पता लगाने में मुझे बड़ी-खोज करनी पड़ी। वास्तव में पतित जातियों के जो लक्षण हुआ करते हैं उनमें से कुछ लक्षण आज भी इटली के लोगों में देख पड़ते हैं। यूरोप या और पाँच लोगों ने सहायता की; इसी से ये लोग अपनी वर्तमान उन्नति कर सके हैं।

सान पाउलो ट्रिफन्टाना (San Paolo alle tre Fontane) अर्थात् सेन्ट पाल का गिर्जा। यह आधुनिक नगर के बाहर जरा दूर पर है। सेन्ट-पीटर गिर्जे के पास होने से इसकी उतनी क़दर नहीं है। किन्तु यदि और कहीं होता तो अवश्य इसकी बड़ी प्रतिष्ठा होती। यह एक सुविशाल और सुसज्जित भजनालय है। इस गिर्जे से तीन मील के लगभग वह स्थान है जहाँ सेन्ट पाल की मृत्यु हुई है। जिस तंग घर में वह क़ैद रहे और जिस छोटे से पत्थर के टुकड़े पर उनका सिर काटा गया वह लोहे के सीकचों से घिरा हुआ है। मस्तक कट कर जिन तीन स्थानों पर गिरा था वहाँ तीन स्वाभाविक फ़ुहारे दिखलाये गये हैं। इसी लिए इसका नाम है "ट्रिफन्टाना"। कहा जाता है कि यहाँ १०२०३ क्रिस्तानों का (Martyrs) बलिदान हुआ है। यहाँ कमरे कम नहीं हैं, तथापि बहुत लोग नहीं रहते। यहाँ का एक संन्यासी घुमा फिराकर सब मुझे दिखा लाया। उसके बाद वह मुझे एक कमरे में ले गया और एक छोटे से पात्र में आशीर्वाद-सूचक कुछ मद्य देकर उसने कहा—यह पापहारी और शरीर और आत्मा के लिए कल्याणकारी अमृत है। इस प्रकार पीने के लिए अनुरोध करके उसने कुछ दक्षिणा माँगी। रोमन-कैथलिक पादरी सभी जगह लोभी देख पड़े।

पान्थियन "The Pantheon is the one edifice of old Rome that remains entire, spared and blessed by time. Simple, erect, severe, austere, sublime, shrine of all saints, and temple of all Gods.', यह पान्थियन पैात्तलिक समय का मन्दिर है; आज-तक उसी प्राचीन अवस्था में खड़ा हुआ है। ईसा के जन्म से सत्ताईस वरस पहले कन्सल आग्रिपा (Consul Agrippa) ने सब देवतां के नाम पर इसका उत्सर्ग किया था। किन्तु यह मन्दिर बना इससे भी पहले का है। यहाँ के जिस फ़र्श पर अगस्टस आदि आते जाते थे ठीक वही फ़र्श अब तक बना हुआ है; उसमें कुछ भी परिवर्त्तन नहीं हुआ। ऊँची और लम्बी चौड़ी इमारतों के भीतर कुछ कुछ अँधेरा अवश्य रहता है। लेकिन यहाँ अन्धकार दूर करने की एक नई व्यवस्था देख पड़ी। छत के बीच मे एक ६० हाथ के घेरे का गाल छेद कर दिया गया है; उससे भीतर खूब रोशनी आती है। इस छेद से पूर्व समय में अनेक देव-देवियों की पूजा और बलि का धुआँ निकलता था और अब, रोमन-कैथलिक-सम्प्रदाय की प्रथा के अनुसार, ईसा और मेरी की पूजा का धूप-धूम निकलता है। पान्थियन के सिवा इस महानगर में दूसरा ऐसा स्थान नहीं है जहाँ प्राचीन समय के "हिडेन" या पैात्तलिक रोम और वर्त्तमान ईसाई रोम का भाव इस तरह सम्मिलित हो। उक्त छिद्र बनाने की कारीगरी की सब लोग बड़ी बड़ाई करते हैं। इस छिद्र तक ऊपर चढ़ने के लिए २०० सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस छिद्र के द्वारा भीतर से जो दृश्य देख पड़ता है उसका वर्णन एक प्रसिद्ध पर्यटक के शब्दों में ही करना ठीक होगा। वह लिखता है—

"In the Pantheon to stay it was pleasant, looking up to the circular opening, to see the clouds flitting across it, sometimes covering it quite over, then permitting a glimpse of sky, then showing all the circle of sunny blue Then would

come the ragged edge of a cloud, brightened throughout with sunshine, passing and changing quickly * * * The great slanting beam of sunshine was visible all the way down to the pavement, falling upon motes of dust, or a thin smoke of incense imperceptible in the shadow Insects were playing to and fro in the beam, high up toward the opening. There is a wonderful charm in the naturalness of all this"—Hawthorne

भारी मन्दिर आदि के भीतरी भाग को प्रकाशित करने की ऐसी व्यवस्था शायद और कहीं भी न होगी। ईश्वर की उपासना का स्थान होने के कारण यह गिर्जा दर्शकों के मन मे अनेक प्रकार के स्वर्गीय मधुर भावों को उत्पन्न करके दृश्य को और भी मनोहर बना देता है। यहाँ के गुम्बद की सुन्दरता और निर्माण-कौशल की प्रशंसा हर एक यात्री ने की है। रोम के सेन्टपीटर-गिर्जे को और इस्तम्बोल की प्रसिद्ध सान्टासोफिया का गुम्बद इसी के अनुकरण पर बना है। संयुक्त स्वाधीन इटली के प्रथम राजा विक्टर इमानुएल और जगत्प्रसिद्ध चित्रकार राफेल इसी गिर्जे मे गड़े हुए हैं। गिर्जे के सामने एक खंभा है, जिसकी चोटी पर क्रूस बना हुआ है।

ब्रूनो-स्तम्भ। रोम-नगर में एक एक स्थान पर ब्रूनो (Giordano Bruns, the most genial and interesting of the Italian philosophers of the Renaissance) का यह स्मारक-स्तम्भ बना हुआ है। धर्म के लिए ससार में जितने आदमियों ने प्राण दिये हैं उनमे इन महात्मा को एक प्रधान पुरुष समझना चाहिए। यह एक प्रसिद्ध इटलियन दार्शनिक हो गये हैं। यह प्रचलित रोमन-कैथलिक-धर्म के विरोधी थे। यही अपराध लगा कर, पोप की आज्ञा से, सन् १६०० की १७ वीं फ़रवरी को इसी जगह पर यह आग मे जला दिये गये। यह बहुत दिनों तक देश से भाग

कर इधर-उधर फिरते रहे। अन्त को पकड़ कर रोम मे लाये गये। सात बरस क़ैद में रखकर उनकी हत्या कर डाली गई। इनके बनाये बहुत से धार्मिक और दार्शनिक ग्रन्थ हैं। इनका यह मत था कि मनुष्य का विचार उसके कर्मों के अनुसार ही होगा; मत-विश्वास के साथ दण्ड या पुरस्कार का कुछ सम्बन्ध नहीं है।

इसके सिवा ट्राजन-स्तम्भ (Trajan Column), कान्सन्टाइन और टाइटस का फाटक (Arches of Constantine and Titus) सेन्ट एन्जेलो का क़िला (Castle of St. Angelo), सिपिओ लोगों की समाधि (Tombs of the Scipios), क्वीरिनल महल (Quirinal), एक पिरामिड और बड़े बड़े प्राचीन गिर्जे और फुहारे आदि सैकड़ों ऐसे स्थान अब भी रोम मे मौजूद हैं जिनका वर्णन करना इस स्थान पर असम्भव है। एक पर्यटक ने ठीक ही कहा है—"The place is so rich in ancient monuments, in artistic treasures, in memories and wonder of all kinds, that one has only to dabble about in it." वास्तव में दो एक महीने रह कर रोम का सब दृश्य देख लेना बहुत ही कठिन है। हाल में एक म्यूज़ियम इस नगर मे स्थापित हुआ है जिसमे बहुत सी पुरानी गढ़ी हुई मूर्तियाँ और अनेक पुरानी कारीगरी की चीज़ें रक्खी गई हैं। किन्तु जो चीज़ें जहाँ की थी वहाँ से उन्हें हटा देना, मेरी समझ में, अच्छा नहीं हुआ। अमेरिकन लोग जो इस समय बहुत ऊँची इमारतें बना कर अपने नगरों की शोभा बढ़ा रहे हैं सो यह रोमन लोगों का अनुकरण या भाव है। रोम में कभी कभी मकान की ऊँचाई के सम्बन्ध में राजकीय आज्ञा निकलती थी कि इतने से अधिक ऊँचा मकान न बनाया जावे। तथापि लोग उस नियम को न मान कर मनमाने ऊँचे मकान बनवा ही डालते थे। रोम के सम्राट् और और बातों में चाहे जैसे रहे हों,

लेकिन प्रजा के सुख-स्वास्थ्य और स्वच्छन्दता पर उनकी सदा दृष्टि रहती थी। रोमन लोग अगर इस जमाने का ऐसा घर बनाने में लोहे का इस्तेमाल जानते होते तो निश्चय ही वे आकाश फाड़ डालने की चेष्टा में कसर न रखते। एक इटलियन पण्डित का कथन है कि "देश के शिल्प आदि से आधा जातीय इतिहास जाना जा सकता है।" रोम मे प्राचीनशिल्प की कारीगरी के जो नमूने अब भी मौजूद हैं उससे अच्छी तरह समझ मे आ जाता है कि इस जाति ने कहाँ तक उन्नति की थी। एक समय मे पौत्तलिक रोम ने जैसे सागर-द्वीप-समेत सारी पृथ्वी के ऊपर अपना प्रबल साम्राज्य स्थापित किया वैसे ही क्रिस्तान रोम ने बहुत दिनो तक धर्म-जगत् के ऊपर अपना सिक्का जमा रक्खा। सारे पश्चिमी भूमिखण्ड का इतिहास रोम में लीन है और रोम से ही सारे यूरोप के इतिहास का आरम्भ होता है। दुःख की बात है कि मूर्त्तिपूजक रोम के समय की और पोप के अनुगामी रोम के समय की जितनी कीर्त्तियाँ नगर मे हैं उतनी मध्य-युग की नहीं हैं। तो भी जो कुछ है उतना भी औरों के यहाँ नहीं है। सम्राट् कान्स्टन्टाइन के परवर्त्ती हज़ार वर्षों मे विनष्ट हुए। पेगन-मन्दिरों के माल-मसाले से जो क्रिस्तानी गिर्जे बने हैं उनके विषय की आलोचना अन्यान्य इमारतों की आलोचना की अपेक्षा अधिक शिक्षाप्रद है।

प्राचीन नगर को अलग रखकर अगर इटली की वर्त्तमान राजधानी की स्थापना होती तो अच्छा होता। पुराने और नये के मेल से आधुनिक रोम में एक तरह का खिचड़ी-भाव देख पड़ता है। राजधानी के भीतर इतने उजाड़ स्थान और कहीं न होंगे। बीच बीच में ऐसे उजाड़ स्थान होने के कारण बड़ी ही उदासी जान पड़ती है। शहर के भीतर भारी ध्वंसावशेषों के रहने से लौकिक ऐश्वर्य की

अस्थिरता का बड़ा अच्छा उपदेश नगरनिवासियों और यात्रियों को मिलता है, इसमें कोई सन्देह नहीं । किन्तु ऐसे ज्ञान के लिए कितने लोग जाते हैं ? साधारण रुचि के अनुसार ये खँडहर अच्छे नहीं मालूम पड़ते । जो कुछ हो, ढाई हज़ार वर्ष का इतिहास रोम के कलेवर में अमिट अक्षरों से लिखा हुआ है । कैपिटल के ऊपर खड़े होकर यात्री स्पष्ट देख पावेगा कि उसके चारों ओर विचित्र-वर्ण-रञ्जित वहार है । सामने रमूलस-निवास पालाटीन है । नीचे सिक्कोपियन दीवार है । समीप ही वह पहाड़ है जिस पर हानिबल ने एक समय छावनी डाली थी । सामने जो सब फाटक देख पड़ते हैं उनसे कितनी ही बार असंख्य सेना ने पृथ्वी-विजय के लिए यात्रा की है । सामने फोरम देख पड़ता है, जहाँ सिसिरो की उद्दीपना-पूर्ण वाणी सुनने के लिए हज़ारों लोग इकट्ठे होते थे, और जहाँ एक दिन ब्रूटस के हाथ से दिग्विजयी महावीर जूलियस सीज़र मारा गया था । वह ब्रिण्डिसी तक विस्तृत आपियन सड़क देख पड़ती है । इसी राह से महात्मा पाल क़ैद होकर जेरुस्सलम से रोम को पैदल आये थे । वह कलोसियम है । ये सब फाटक, स्नानभवन, देवमन्दिर, महल, गिर्जे आदि साम्राज्य के उत्थान और पतन के साक्षी वने हुए खड़े हैं । रोम ने पृथ्वी भर को ग्रस लिया । अपनी सत्ता को पृथ्वी भर पर फैलाने के कारण पराक्रम घट जाने से वह आपही नष्ट हो गया । द्वितीय शताब्दी के शेष भाग से सम्राट् तक ने रोम मे स्थायीभाव से रहना छोड़ दिया और विशाल अधिकार की शृङ्खला स्थापित करने के लिए दूर जाकर रहने लगे । रोम श्री-भ्रष्ट हो चला ।

रोम की लोक-संख्या ६ लाख से कुछ अधिक है । रोमन लोग बड़े ही कुसंस्कारग्रस्त हैं । ख़ास ख़ास आदमियों की नज़र को

वे बहुत डरते हैं। भूतपूर्व पोप पायस इस बारे मे ऐसे बदनाम थे कि उनके दल को दूर से आते देख कर राह चलनेवाले लोग अपने बालबच्चों को लेकर आड़ में हो जाते थे। और अगर बिल्कुल ही सामने आ पड़ते थे तो बालकों के मुखों को कपड़े से ढक देते थे और मन्त्र पढ़ कर अमङ्गल दूर करने की चेष्टा करते थे। ऊँचे दर्जे के लोग तक इस कुसंस्कार से नहीं बच सके। एक दफ़े उक्त पोप ने कुछ दिनों के लिए एक विराट् सभा का अधिवेशन किया। उन कई दिनों तक एक गुप्त समाचार-पत्र निकला। और उसमे यह सब हाल प्रकाशित हुआ कि किस दिन पोप की कुदृष्टि से किसका क्या बुरा हुआ। मनुष्य की बुरी नज़र के बारे मे ऐसा कुसंस्कार होने के कारण रोम-नगर मे और सारी इटली मे मर रहे आदमी को उसके पिता पुत्र भाई आदि सब स्वजन तक अलग छोड़ देते हैं। उसके पास रहने की हिम्मत किसी को नहीं होती। इसका कारण यही है कि रोमन लोग मर रहे मनुष्य की दृष्टि को बहुत डरते हैं। मृत्यु के समय मर रहे मनुष्य को नौकर-चाकर या पादरी के सिवा और किसी को मुख देखने को नहीं मिलता। मरने के बाद मुर्दे के साथ भी नौकर-चाकर या पादरी के सिवा और कोई नहीं जाता। वहाँ और एक नई चाल यह है कि शोकार्त्त कुटुम्बी लोग भी बीमार की तरह दवा पीते हैं। रोमन लोग ज़बानी शोक तो खूब दिखाते हैं मगर उनके काम उसके विपरीत ही होते हैं। चित्रों मे रोमन लोगों की जैसी पोशाक देखने को मिलती है वैसी पोशाक अब वहाँ के लोग नहीं पहनते। शायद ही कभी कोई एक आध आदमी उस वेश मे देखने को मिल जाता है। देहातों में फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं, मगर शहर के लोग तो सब यूरोप की मामूली पोशाक पहनना पसंद करते हैं।

नेपल्स। पहले ही कह चुका हूँ कि यहाँ तीन बार गया हूँ। यात्रा के समय, सन् १८८६ के भ्रमण में और सन् १८९१ में ग्रीस से ब्रिण्डिसी होकर। यद्यपि रोम-नगर इटली की राजधानी है, किन्तु नेपोली सब तरह से देश का प्रधान नगर है। यहाँ की लोक-संख्या पाँच लाख के लगभग है। रोम में तीन लाख से भी कम आदमी रहते हैं। यह नगर पुराने नेपल्स-राज्य की राजधानी था। इस समय भी यह नगर खूब समृद्धिशाली है। सुन पड़ता है कि यहाँ का की (Quay) अर्थात् समुद्रतट बहुत ही मनोहर है। दक्षिण-इटली के लोग कहते हैं कि "मरने के पहले एक बार नेपोली को देखना उचित है" (Vedi-Napolie poi mori)। एक ओर बहुत से मुर्दे आग्नेय-पर्वतों के साथ विसूवियस एक ओर खड़ा बराबर धुआँ उगल रहा है। चारों ओर गली हुई धातुओं के पहाड़ ऐसे ऊँचे ढेर लगे हुए हैं। पास ही छोटे छोटे गाँव और गूलर के बाग़ तथा अंगूर के खेत हैं। दूसरी ओर ५३ मील तक अर्धचन्द्राकार समुद्र-तट (Bay of Naples) की अपूर्व बहार देख पड़ती है। छोटे छोटे द्वीपों की भी अपूर्व शोभा है। इन सब चीज़ों से नगर की एक अपूर्व शोभा होगई है। नेपल्स के उप-सागर के सम्बन्ध में एक यात्री की राय है—

"Such richness of colour, such play of light and shade, such marvellous combinations of sea and coast line, of fertile plains and barren mountains, and vine-clad slopes and white walled cities, can surely not be found elsewhere"—Whymper

प्राचीनता में भी नेपोली कम नहीं है। ईसा से १०५६ वर्ष पहले इसकी स्थापना हुई थी। सिसिरो (Ccero), होरेस (Harace) आदि बहुत से पण्डितों ने अपने लेखों में इसे इन्द्रभवन बतलाया है।

प्राचीन समय मे अनेक प्रतिष्ठित धनी पुरुषों ने यहाँ पर विलासभवन आदि बनवाये थे। महात्मा पाल जब पकड़ जाकर लाये गये तो वह नेपोली के निकट जहाज़ से उतर कर पैदल चले थे।

नगर के और पास के टापुओं के घरों की छतें हमारे ही देश की ऐसी हैं। अर्थात् उत्तर-यूरोप की ऐसी ढालू नहीं हैं। बराबर हैं। यहाँ जगह जगह पर अरबी लुटेरों के मुसलमानी ढंग के क़िलों और मकानों के ध्वंसावशेष भी देख पड़ते हैं। इस प्रदेश के लोग भी बहुत बातों मे एशियाई भाव रखते हैं। यह ज़रा गर्म मुल्क है। इस कारण निम्नश्रेणी के बहुत से आदमी गरमियों में घुटनों तक का पाजामा पहने, गले मे केवल कमीज़ डाले बाहर निकलते हैं और साधारण भोजन करके दिन काटते हैं। दक्षिण-इटली के लोग आलसी हैं। दूसरे के द्वारा अगर काम हो जाय तो अपने हाथों कोई कुछ करना नहीं चाहता। अगर उधार मिले तो कोई नक़द दाम देकर सौदा ख़रीदना नहीं चाहता। यही स्थानीय नियम है। रास्ते मे बहुत से भीख माँगनेवाले मिलते हैं। बहुत से लोग हँसी-तमाशे और गपशप मे ही समय बिताया करते हैं। मेरे साथ यात्रा करनेवाले और एक महाशय कहते थे—("Nowhere else such an indolent set of vagabonds in the streets") इस देश के लोग विश्वासघातक और ठग हैं, यह बात कहने में कोई भी यात्री संकोच न करेगा। अँगरेज़ी भाषा जाननेवाले भद्रवेशधारी दो चार आदमी मेरे भी पीछे लगे थे। उनमें से एक आदमी कुछ ले भी गया। यहाँ धर्माधर्म का कुछ विचार नहीं है, यह कहना भी कुछ अनुचित न होगा। तमोगुणी पौत्तलिकता और हीन श्रेणी के कुसंस्कार मनुष्य को कहाँ तक नीच बना सकते हैं, यह देखना हो तो नेपोली-निवासियों को देख ले। एक प्रातःकाल से दूसरे प्रातःकाल

तक अगणित वेश्याएँ खुलासा तौर पर समुद्र-तट की सड़कों पर विचरती हुई अनजान विदेशी मल्लाहों आदि के हाथ पकड़े खींच-खाँच किया करती हैं। मानों इस काम में कोई दोष ही नहीं। इसके सिवा गली-कूचों में, यहाँ तक कि गिर्जा और मठ आदि पवित्र स्थानों के द्वार पर भी मध्य-श्रेणी की स्त्रियाँ, दिन-रात सब समय, बिना किसी रुकावट के, अनेक भाषाओं के कुत्सित शब्दों में विदेशी दर्शकों को प्रलोभन दिखाया करती हैं। नेपोली के 'लाजरोनी' अर्थात् निम्नश्रेणी के गुण्डे कुछ दिन पहले इतने थे और उनका उपद्रव ऐसा प्रबल था कि शहर के भले आदमी उनके डर से काँपा ही करते थे। ऐसा कोई पैशाचिक काम न था जो ये गुण्डे न कर सकते हों। इस समय भी इन गुण्डों का एक-दम अभाव नहीं हो गया है। यहाँ का भीतरी और बाहरी दृश्य प्रायः एक सा ही है। यहाँ के निवासियों का जैसा स्वभाव है, नगर की अवस्था उससे अधिक बुरी है। राह, घाट, नालियों और नालों का ऐसा कुप्रबन्ध है कि सब तरफ़ गंदगी के साथ ही दुर्गन्ध फैली हुई रहती है। एक यात्रा करनेवाली महिला ने इस बारे में बहुत ही ठीक कहा है—("The paving is about the worst in Europe, and the drainage extremely incomplete. Evil odours are more abundant in Naples than in any other Italian city * * * Naples is an ill-built, ill-proved, ill-lighted, ill-drained, ill-watched, ill-governed, ill-ventilated.")

एक बात यहाँ नई देख पड़ी। बोझे की गाड़ियों में एक घोड़ा और एक बैल जुता रहता है।

नेपोली की प्रधान सड़क का नाम है 'टोलिडो'। उसमे, दिन मे, सब समय न्यूनाधिक ५०००० पैदल और २००० के लगभग अनेक रंग की सवारियाँ चला करती हैं। इस सड़क पर शोरगुल

और गोलमाल बहुत रहता है। खुली सड़क पर नगर का आधे के लगभग काम हुआ करता है। दरज़ी, बढ़ई, मोची आदि सभी सड़क के किनारे बैठकर अपना अपना रोज़गार चलाते हैं। बहुत से लेखक डेस्क रक्खे बैठे हुए हैं। निरक्षर लोग बेखटके अपने मन की सब गुप्त बातें, चिट्ठी में लिखने के लिए, उनसे कह रहे हैं। 'भिक्षुक' खड़े हुए धर्म-प्रचार के साथ ही कुछ न देनेवाले श्रोता लोगों को अमङ्गल का भय दिखा रहे हैं। एक ओर बुढ़िया फ़क़ीरिन ऊँचे स्वर से धर्मगीत गा रही है। दूसरी ओर एक दवा बेचनेवाला बातूनी आदमी गला फाड़ फाड़ कर अपनी दवाओं के यश की डींग मार रहा है। इसी तरह जुआरी, मदारी आदि के कोलाहल में ग़रीब औरतें तरकारी काट रही हैं, बर्तन माँज रही हैं, तकिये में—गद्दे में पाट भर रही हैं, अगणित लोग हाथ-मुँह मटका मटका कर ज़ोर ज़ोर तरह तरह की बातें कर रहे हैं। इसके सिवा असंख्य गाड़ी, घोड़े, गधे, पैदल आदमियों आदि के शोरगुल का तो कुछ ठिकाना ही नहीं। ईसाई-यूरोप में ऐसा गोलमाल और कहीं नहीं देखने को मिलेगा। बोझा ढोनेवाले जीवों के साथ ऐसा निठुर बर्ताव और कहीं न किया जाता होगा। तात्पर्य यह कि एशिया के अनेक हीन दृश्य यहाँ भी देखने को मिलते हैं। मुर्दों की समाधि के बारे में यहाँ इटली की साधारण प्रथा प्रचलित है। अर्थात् आत्मीय स्वजन कोई साथ नहीं जाता; पुरोहित आदि के द्वारा सब काम होता है। ग़रीबों के लिए अच्छी व्यवस्था नहीं है। ग़रीब निवासियों के लिए दो क़ब्रिस्तान बने हुए हैं। उनमें ३६६ क़ब्र के गढ़े हैं। साल भर रोज़ जितने ग़रीब मरते हैं वे एक ही गढ़े में एक साथ नित्य गाड़े जाते हैं। साल भर के बाद फिर उतने ही गढ़े खोदे जाते हैं।

नेपल्स के दृश्यों में राजमहल, एकोयेरियम, म्यूज़ियम, चित्र-शाला, गिर्जा और थियेटर-भवन मुख्य हैं। एकोयेरियम अर्थात् जल-जन्तु-शाला समुद्र के किनारे है। यहाँ जीते मूँगे आदि स्वाभाविक अवस्था में रक्खे हुए हैं। म्यूज़ियम के पम्पी-कमरे मे ज्वालामुखी के उत्पात से विनष्ट प्रसिद्ध पम्पी-नगर के भू-गर्भ से निकाली हुई बहुत सी सामग्री रक्खी है। उसमें किवाड़े, लोहे के सन्दूक़, पीलसोज़, नर-नारी, कुत्ते, बिल्ली, घोड़, मूसे आदि के शव, अण्डे, फल, रोटी, रासायनिक प्रयोग के यन्त्र आदि, संगमरमर के टेबिल, छकड़े, ताला, कुंजी, संगमरमर और पीतल की कई मूर्तियाँ और और भी अनेक इस्तेमाल मे आनेवाली चीज़ें हैं। इसके अन्तर्गत एक ऐसा कमरा है जहाँ स्त्रियों और बालकों के लिए जाना मना है। उसमें बहुत सी गंदी और बुरी चीज़े हैं। इन बुरी चीज़ों की नक़लें बाज़ार मे खुलासा तौर पर बिका करती हैं। सड़क पर भी अश्लील चित्र और पुस्तकें बिका करती हैं। म्यूज़ियम के अन्यान्य अंशों में इतना रोमन, प्राचीन इटलियन, इट्रस्कन और इटली-ग्रीक सामान रक्खा है जितना और कहीं भी न होगा। यहाँ की चित्रशाला का, पृथ्वी की चित्रशालाओं मे ११ वाँ नम्बर है। नेपोली मे ३०० से अधिक भजनालय हैं। उनमें से सेण्ट के गिर्जे में उनका रक्त शीशी मे, जमा हुआ, रक्खा है। यहाँ के लोगों को विश्वास है कि १ ली मई और १९ वीं सितम्बर को यह रक्त पतला और गर्म हुआ करता है। महात्मा सेण्ट जानु-आरियस ईसाई बिशप थे। मूर्तिपूजक रोमन विचारक की आज्ञा से उनका सिर काटा गया। वह सिर अभी तक इस गिर्जे मे रक्खा हुआ है। कहा जाता है कि जब उनके खून की शीशी सिर के सामने लाई जाती है तब खून में गर्मी आ जाती है। नेपल्स मे २० थियेटर हैं। प्रधान थियेटर का नाम है "सान कार्लो"। इस थियेटर का

भवन ५१५७ वर्ग गज़ मे वना है। उसमें ३२०० आदमी वैठ कर नाटक देख सकते हैं। यहाँ की रायल लाइब्रेरी में ढाई लाख छपी हुई पुस्तकें हैं। उनके अलावा विनष्ट हर्कुलेनियम नगर से प्राप्त ३००० पापाइरस-भोजपत्र मे लिखे हुए ग्रन्थों का संग्रह है।

नेपल्स की लोक-संख्या साढ़े सात लाख के लगभग है। नेपल्स के आसपास ५।६ कोस में जो देखने लायक स्थान हैं उनमें कवि वर्जिल की समाधि, कई एक टापू, विसूवियस और प्राचीन नगर के कई एक ध्वंसावशेषों में हर्कुलेनियम और पम्पी प्रधान हैं।

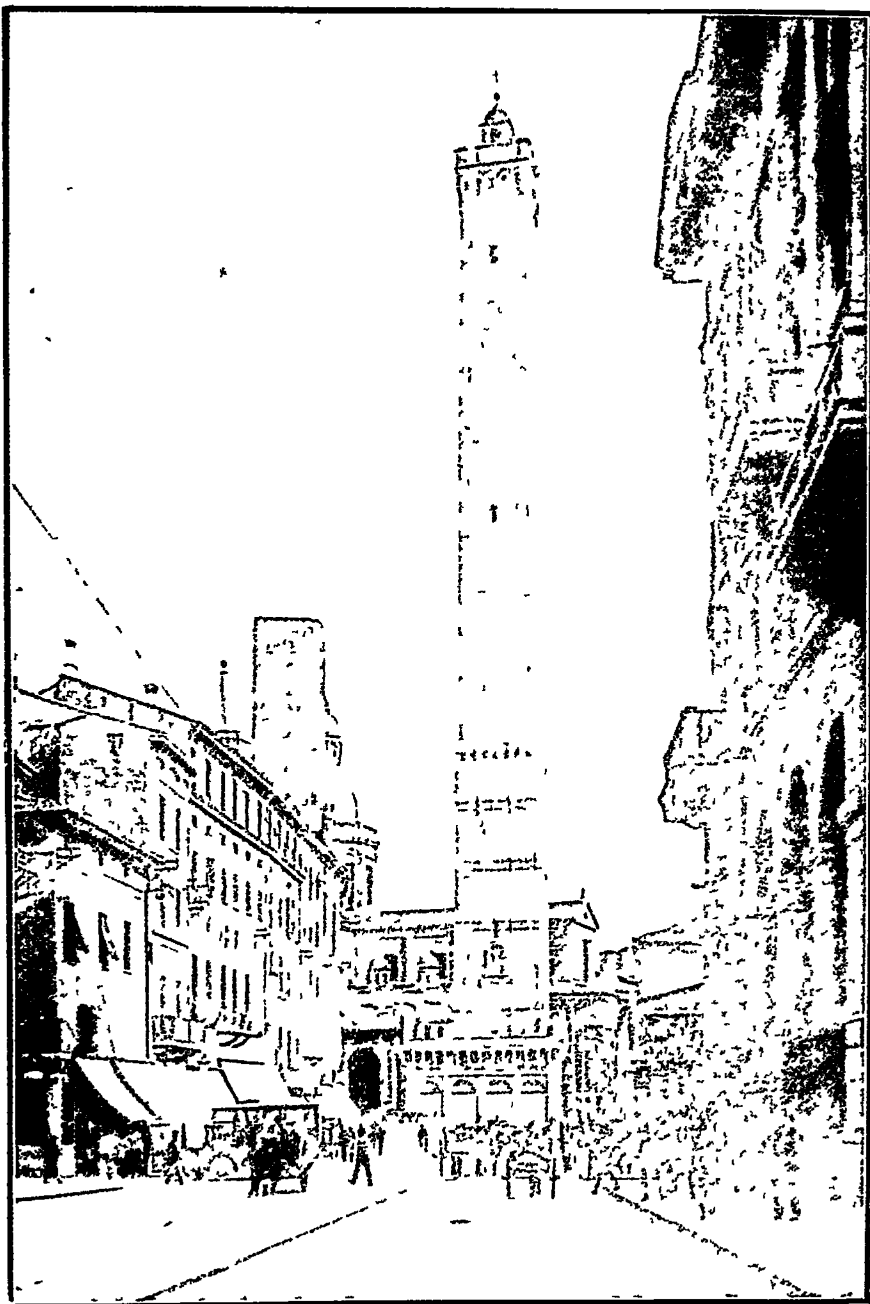
हर्कुलेनियम। नगर-से वाहर निकल कर, पम्पी की राह मे, हर्कुलेनियम है। यह नगर, सन् ७६ में, गली हुई धातु के नीचे गड़ गया था। इसी से इसका उद्धार कष्ट-साध्य है। ८५ फ़ुट मिट्टी के नीचे एक थियेटर-भवन का उद्धार किया गया है; उसे सव लोग जाकर देख सकते हैं।

पम्पी। अँगरेज़ी मे इसी को पम्पियाई कहते हैं। किन्तु स्थानीय लोगों का उच्चारण पम्पी ही है। ज्वालामुखी से गली हुई धातु की धारा हर्कुलेनियम की ओर चली थी। वीच में पम्पियाई के ऊपर इतनी राख और और चीज़ें आकर गिरीं कि सव निवासियों सहित सारा नगर वीस फ़ुट नीचे गड़ गया। १८ वीं शताव्दी से इसके उद्धार का काम जारी हुआ और १९ वीं शताव्दी के मध्यभाग में समाप्त हो चला। नगर के उद्धार का काम ऐसी सावधानी और हिसाव से किया गया है कि विध्वंस के दिन जो कुछ जैसा था वह इस समय भी उसी दशा मे देख पड़ता है। पम्पियाई नगर छोटा सा, दो मील के घेरे का, था। चारों ओर की दीवार और उससे सौ गज़ के फ़ासले पर टावर का अधिक भाग, आठ फाटकों सहित, वैसे ही खड़ा है। रास्ते सव सीधे हैं, किन्तु अधिक चौड़े नहीं हैं।

गाड़ियों और छकड़ों की लीकें अभी तक स्पष्ट बनी हुई हैं। नेपल्स और उसके उपनगरों की तरह पम्पियाई की भी सड़कें विसूवियस के उगले पत्थर के टुकड़ों से बनी हुई हैं। दो थियेटर हैं। उनमें बड़ा आम्फी थियेटर ४३० × ३३५ फ़ुट का है। फोरम, विचार-भवन, कारागार, कई देवमन्दिर, बलिस्थान, 'ग्लाडिटेयर', पहलवानों की बारिकें, साधारण स्नानभवन आदि सब जैसे का तैसा बना हुआ है। प्रायः हर एक गृहस्थ के घर में मैदा पीसने की व्यवस्था और पाव-रोटी पकाने के लिए तंदूर है। नगर में रोटीवालों की दूकानें भी कम नहीं हैं। किसी घर के निचले खण्ड में खिड़की नहीं है। केवल दो खण्ड के मकानों में, ऊपर के खण्ड में, छोटी छोटी खिड़कियाँ हैं। मूर्त्ति बनाने और गढ़ाई के अनेक कारख़ाने हैं। धनी लोगों के घरों के सदर दरवाज़ों पर देशी भाषा मे आनेवालों की अभ्यर्थना के शब्द लिखे हुए हैं। वेश्याओं के भवन बड़े ही अद्भुत हैं। साइनबोर्ड की तरह हर एक के द्वार पर पत्थर की गुप्त इन्द्रिय की मूर्त्ति रक्खी हुई है और लिखा हुआ है—Mie habitat felicitas. अर्थात् संभोग-भवन। घरों की भीतर की दीवारों पर ऐसे अश्लील चित्र बने हैं कि पिता और पुत्र उन्हें एक साथ नहीं देख सकते। चित्रों की तारीफ़ यह है कि आज भी वे उसी तरह चमक रहे हैं।

सन् ७९ की २४ वीं अगस्त को ज्वालामुखी का उत्पात शुरू हुआ और तीन दिन में सब विध्वंस कर डाला। सन् ६३ के भूकम्प से जो नुक़सान हुआ था उसकी लोग मरम्मत कर रहे थे। उसी दिन म्यूनिसिपल चुनाव भी हो रहा था। इतने ही में विसूवियस पहाड़ पागल की तरह जलती हुई राख, रोड़े, पत्थर और गली हुई धातु बरसाने लगा। उससे नगर में घोर अन्धकार

तिसूचियस—पृ० ३५५



बलोनी के टेढ़े टावर—पृ० २५६

छा गया और लोग उसी के नीचे दब कर मर गये। अब तक ६०० मुर्दे निकाले जा चुके हैं। सब वस्तुएँ और सामान ऐसी हालत में पाये गये हैं कि उनके द्वारा सहज ही रोमन लोगों की उस समय की गृहस्थी, समाज, राजनीति और जाति की सब व्यवस्थायें समझ में आ जाती हैं। पम्पियाई में भी एक छोटा सा म्यूज़ियम है। जो कुछ सामग्री निकली है वह दो जगह रख दी गई है। तन्दूर की रोटी, डिस्पेन्सरीवाले की दवा, कारीगरों के औज़ार आदि सब उसी तरह, खोद कर, निकाल लिये गये हैं। यही तो मनुष्य की दशा है! मनुष्य की हज़ारों वर्ष की मेहनत को काल घड़ी भर में धूल में मिला सकता है। तो भी मनुष्य इतना घमण्ड करता है।

विसूवियस। स्थानीय नाम है विज़ुवियो (Vesovio) यह आग्नेय पर्वत पृथ्वी पर प्रधान गिना जाता है। चार हज़ार फुट से भी अधिक ऊँचा एक मुर्दा पहाड़ है जो ऐतिहासिक समय के बहुत पहले शान्त हो चुका है। तब वह अब से दूना ऊँचा था। एक बार के महाभयानक अग्नि के उत्पात मे आधे के लगभग नष्ट हो गया है। जिस अग्नि के उत्पात में पम्पियाई आदि का ध्वंस हुआ है उसका वर्णन तो असम्भव ही है। बहुतों के मत से सन्, १८८३ मे, सण्डा-नहर का क्राकोटोआ (Krakatoa-Sunda Straits) आग्नेय गिरि जो बमका था वह सन् ७९ के विसूवियस के उत्पात के ढंग का था। पहले दो बार जब मैं नेपल्स मे आया था तो विसूवियस के ऊपर नहीं चढ़ा था। अन्तिम बार आग्नेय गिरि का क्रेटर (Crater) अर्थात् मुख देखने की इच्छा से सवारी के लिए कुक कम्पनी के आफ़िस मे गया। वहाँ मालूम हुआ कि उस दिन उनके यहाँ की गाड़ियों में जगह नहीं ख़ाली है। तब अपने पण्डे के साथ पास के गाँव में जाकर एक ख़च्चर किराये पर किया और

उस पर चढ़ कर टेढ़े-मेढ़े रास्ते होकर बड़े कष्ट से फुनीक्यूलर (Funicular) रेलवे-स्टेशन तक चढ़ कर गया । यह स्थान १००० फ़ुट के लगभग ऊँचा और ऐसा खड़ा है कि रेल के सिवा और किसी तरह चढ़ना सम्भव नहीं । रेल से उतर कर ४०। ५० क़दम चढ़ कर उस छिद्र के पास पहुँचते हैं जिससे राख, रोड़े वग़ैरह निकलते हैं। इस छिद्र तक जाने की राह में इतने छेद हैं कि मानों सब नीचे से पोला है । उन छेदों से बराबर गन्धक का धुआँ निकला करता है । छिद्र के मुख के पास जाकर जो कुछ देखा और उसे देखकर जो कुछ भाव पैदा हुआ उसका वर्णन सर्वथा असंभव है । क्रेटर के घेरे का अनुमान नहीं किया जा सका । घना काला धुआँ इतना छाया हुआ था कि कुछ देख नहीं पड़ता था । जान पड़ता है, तीन चार बीघे से कम का घेरा न होगा । धुआँ, ज्वाला और गली हुई धातु तो बराबर बाहर निकलती ही रहती है । उसके सिवा एक साथ आठ–दस तोपों का ऐसा भयानक धड़ाका बीच बीच में होता है कि अच्छे बहादुर का भी कलेजा काँप जाता है । सुनने में आया कि सन् १८७२ में ५८ दर्शकों सहित थोड़ी सी ज़मीन धँस गई थी । मुझसे कई दिन पहले एक अमेरिकन यात्री झुक कर छेद के भीतर झाँकने लगा; इतने में उसका पैर विछल गया और वह क्रेटर के भीतर चला गया । वैसी चारों ओर पोली ज़मीन के ऊपर चलना निस्सन्देह विपत्ति का सामना करना है । गली हुई धातु का प्रवाह दूसरी ओर बहा जा रहा था । उसमें से कुछ कुछ इधर-उधर भी छिटक जाता था ।

पहाड़ से थक कर नीचे उतरने पर एक गूलर के बाग़ में गया । वहाँ गूलर और एक प्रकार के मीठे फल (प्रिक्ली पेयर) खाकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई । इन गूलरों को हमारे यहाँ के गूलर न

समझना चाहिए। इन फलों को अँगरेज़ी में 'फ़िग' कहते हैं। होते ये गूलर की ही जाति के हैं; लेकिन गूलर से वड़े होते हैं। इनका छिलका हरा और पतला तथा गूदा सफ़ेद मक्खन ऐसा मुलायम और खूब मीठा होता है। दक्षिण यूरोप और एशियाई टर्की में यह फल वहुत मिलता है। हमारे देश के तरवूज़, ख़रबूज़े और वैंगन भी इटली के इस अंश मे उपजते हैं।

रात को होटल मे आकर सोया। विसूवियस के दृश्य की याद करने से डर मालूम पड़ने लगा। पहले उस स्थान की भयानकता मालूम न थी, इसी से वहाँ तक वेखटके चला गया था। अव क्रेटर पर चढ़ना और मौत के मुँह में जाना वरावर जान पड़ने लगा। यद्यपि वरावर सैकड़ों आदमी वेखटके वहाँ तक जाते आते रहते हैं तथापि इसका कुछ भी ठिकाना नहीं कि कव कहां की ज़मीन नीचे धस जायगी। मेरे जाने के तीन महीने पहले, सन् १८९१ की ९ जून को यह पहाड़ अग्निमूर्त्ति हो गया था। वहुत थोड़े दिन हुए, एक जगह एक नया छोटा सा मुँह फूटा है। इसका कुछ ठीक नहीं कि विसूवियस के किस स्थान मे कव क्या अनर्थ होगा। चोटी पर चढ़ने के रास्ते में एक मानमन्दिर की स्थापना हुई है। शायद एक दिन अचानक वह भी गली हुई धातु के नीचे दवकर नेस्तनावूद हो जायगा।

व्रिण्डिसी। व्रिण्डिसी मे दो वार आना हुआ। पहली वार सन् १८८९ मे नेपल्स से आकर जिस होटल में ठहरना हुआ वहाँ हमारे भूतपूर्व (वंगाल के) छोटे लाट मेकेन्ज़ी साहव (Sir Alexander Mackenzie) से मुलाक़ात हुई। उसी अवसर में वहाँ ग्रोक-हितैषी पुरातत्त्व के पण्डित डाक्टर श्लीमन (Dr. Schliemann) भी रहते थे। महात्मा मेकेंज़ो मुझे उनके पास ले गये।

उन्होंने पहले मुझे ग्रीक समझा था। परिचय पा चुकने पर उन्होंने भारत के सम्वन्ध मे वहुत सी वातें कहीं। यह जाति में तो जर्मन, किन्तु अमेरिकन प्रजा, थे। ग्रीस के प्राचीन तत्त्वों के आविष्कार में इन्होंने वहुत परिश्रम किया। कन्टीनेन्ट की दूकानदारी के सम्वन्ध में मुझे सावधान करके मेकेंज़ी साहव ने कहा—"वेनिस की एक दूकान में तीन दिन वरावर चक्कर लगा कर कुछ चीज़ों को, जिनकी क़ीमत पहले दूकानदार २०० लिरा माँगता था, ५० लिरा मे ख़रीदा था"। रोम आदि नगरों की कुछ दूकानों पर "एक वात" लिखा रहता है। इसी से विदित होता है कि वहाँ सव दूकानों पर "एक वात" का व्यवहार नहीं है। व्रिटिश-द्वीप के सिवा और कहीं भी ख़रीद-फ़रोख़्त मे एक वात नहीं कही जाती। अँगरेज़ों के लिए यह कम गौरव की वात नहीं है। दूसरी वार, सन् १८६१ मे, ग्रीस से यहाँ आया। रोमन-समय में यहाँ का नाम था व्रण्डू-सियस (Brundusium)। रोमन लोगों के अनेक चिह्न इस समय भी हैं। उनमें वन्दरगाह के सामने, समुद्र के भीतर, एक छोटा सा टापू देखने के योग्य है। जूलियस सीज़र ने यहीं पर अपने प्रति-द्वन्द्वी पम्पियस पर आक्रमण किया था। ईसा से १६ वर्ष पहले महाकवि वर्जिल की मृत्यु जिस घर में हुई थी वह इस समय भी मौजूद है। प्रसिद्ध आपियन-सड़क (Appian Way) रोम से आकर यहीं पर समाप्त हुई है। उसका चिह्न-स्वरूप एक स्तम्भ भी वना हुआ है। व्रिण्डिसी छोटा शहर है। सड़कें और रास्ते अच्छे नहीं हैं। आज-कल भारत की डाक इधर से ही आने जाने लगी है। इस कारण कुछ श्री-वृद्धि के साथ रेल्वे-स्टेशन से समुद्र-तट तक एक चौड़ी सड़क वन गई है। वन्दरगाह के सामने के समुद्र को वाँध कर कुण्ड सा वना लिया गया है। उसमें नाव पर घूमने में वड़ा मज़ा

आया। यहाँ की हवा बहुत साफ़ और आकाश सदा उज्ज्वल नीलवर्ण रहता है। सदा वसन्त सा बना रहता है। यूरोप के एक किनारे पर खड़े होकर देश की राह की ओर देखने से हृदय में एक प्रकार के अभाव का अनुभव होने लगा। गढ़ी के ऊपर से चारों ओर का दृश्य बहुत ही मनोहर देख पड़ता है। रेल में आते समय ब्रिण्डिसी के पास गधों से ज़मीन जुतवाते देखा। इस प्रदेश की स्त्रियाँ विचित्र अलङ्कार पहनती हैं। नैतिक अवस्था में अन्यान्य बन्दरगाहों की अपेक्षा ब्रिण्डिसी की हालत अच्छी नहीं है। रास्ते में जुआरी और वेश्याएँ तो खुलासा बुलाती ही हैं; उनके सिवा बहुत से ऐसे कमसिन बालक घूमते रहते हैं जो आत्मीय महिलाओं का परिचय देकर, धनोपार्जन के लिए, विदेशियों को अपने घर ले जाते हैं। भोले भाले बालक इन सब बातों को इस तरह कहते हैं जैसे उनमें कुछ दोष नहीं है। उनकी यह दशा और यह भाव देख कर बड़ा ही दुःख हुआ।

बोलोनिया (Bologna)। ब्रिण्डिसी से, एड्रियाटिक की राह से, एक-दम बोलोनिया पहुँचा। बोलोनिया चहारदीवारी से घिरा हुआ दो वर्गमील का छोटा सा नगर है। इसमें प्रवेश करने के लिए १२ फाटक हैं। यहाँ के घर बड़े और ऊँचे हैं। सड़कें अक्सर तंग और टेढ़ी-मेढ़ी हैं। मगर सब साफ़ और पक्की हैं। स्थानीय प्रधान स्कायर में एक फुहारा और नेपचून देव की भारी मूर्त्ति विराजमान है। इतने से शहर में १३० गिर्जे, २० कनवेन्ट, ६ अस्पताल, ५ थियेटर, २०० स्कूल और विश्वविद्यालय, म्यूज़ियम, बटानिकल गार्डेन और मानमन्दिर हैं। बारहवीं शताब्दी के दो टेढ़े टावर (Leaning Towers) यहाँ का प्रसिद्ध और प्रधान दृश्य हैं। इस नगर में क्रेप, रेशम, काँच, मोमबत्ती, काग़ज़, बाजे और मिट्टी के बर्तनों

के कारखाने खूब चलते हैं। चित्र-विद्या के बारे में, यूरोप में, वोलोनिया प्रसिद्ध है। यहाँ दो लाख के लगभग लोग रहते हैं।

'पाडुवा। स्थानीय नाम है पाडोवा (Padova)। वोलोनिया से पाडुवा और फिर वहाँ से वीनिस गया। पाडुवा चहारदीवारी से घिरा हुआ पुराना एक छोटा सा नगर है। इसी नगर से वीनिस की उत्पत्ति हुई है। लोग आक्रमणकारियों के भय से यहाँ से भागे। उन्होंने विपत्ति से वचने के लिए पानी के भीतर वीनिस नगर वसाया। सन् १२३८ में स्थापित यहाँ का प्राचीन विश्वविद्यालय प्रसिद्ध है। रोमन-इतिहासज्ञ लिवी (Livy) का जन्म यहीं हुआ था।

वीनिस। स्थानीय नाम है विनिजिया। इटली के दक्षिण में जैसे नेपोली के सम्बन्ध में प्रवाद प्रचलित है वैसे ही इटली के उत्तर में लोग कहते हैं—(Vedi Venezia e poi mori.) अर्थात् वीनिस देखकर मरना। सचमुच वीनिस एक अजब शहर है। जैसे सब सपने का तमाशा है। गाड़ी-घोड़े का नाम भी नहीं है। केवल जलही जल है। सब जगह जाने आने के लिए ४००० काले रंग की 'गण्डोला' नाम की नावें चला करती हैं। ये नावें हमारे देश की डोंगी की तरह होती हैं। वीच में सवारियों के वैठने के लिए छाई हुई जगह रहती है। ३८० पुलों से मिले हुए ११७ टापुओं के ऊपर २० मील लम्बे और ६ मील चौड़े "लेगुंन" (Lagune) अर्थात् उथले पानी के भीतर यह नगर स्थापित है। नगर का घेरा ७ मील का है। २०० खंभों का एक पुल है जो इस नगर को महादेश से मिलाता है। इसमे १५० नहरें हैं। उनमें "केनाली ग्राण्डे" प्रधान है। यह ३०० फुट चौड़ी और शहर की लंबाई में वीच से निकल गई है। इसके ऊपर संगमरमर का वना हुआ रियाल्टो पुल (Ponte di Rialto) सर्वोत्तम और प्रधान

है। इसके ऊपर दोनों तरफ़ दूकाने, और इस कारण तीन रास्ते, हैं। पैदल चलने के लिए जो नगर मे रास्ते हैं वे वहुत ही तंग और टेढ़े-मेढे हैं। नाव पर आने-जाने में ही सुभीता है। हर एक के दरवाज़े तक सहज में नाव चली जाती है। नगर वहुत पुराना है और जल मे वहाव नहीं है। वहुत सी घास और पत्ते आदि के सड़ जाने के कारण वहुत जगह वड़ी वदवू आती है। रात को मच्छड़ों के मारे मसहरी के विना कोई सो नहीं सकता। मलेरिया ज्वर का भी अभाव नहीं है। इटली मे सव जगह स्कायरों को 'पियाज़ा' कहते हैं। यहाँ के प्रधान कामकाज और आमोदप्रमोद का स्थान ५६२ × २३२ फ़ुट है। सान मार्को का पियाज़ा (Piazza di San Marco), अर्थात् सेण्ट मार्को का स्कायर। यहाँ खड़े होने पर सामने ३१६ फ़ुट ऊँचा और ४२ फ़ुट घेरे का कैम्पानिल या घण्टाघर देख पड़ता है। उसके सामने ही सानमार्को का गिर्जा है। इस घंटाघर पर चढ़ने के लिए सीढ़ी के वदले क्रमशः उच्च-समान मेज़ों की व्यवस्था है। गिर्जे की वनावट गाथिक (Gothic) और मुसलमानी ढंग की है। इसमें ५०० संगमरमर के खम्भे हैं। उनमें से कई एक सालोमन के प्रसिद्ध मन्दिर से लाये गये हैं। गिर्जे के सदर दरवाज़े के ऊपर चार पीतल के घोड़े हैं। इन घोड़ों को रोम के नीरो और ट्राजनके मन्दिर से सम्राट् कान्स्टन्टाइन निजनिर्मित कान्स्टेन्टिनोपल अर्थात् कुस्तुन्तुनिया मे ले आये थे। पीछे वीनिस का कोई राजा वहाँ से इन घोड़ों को लूट कर यहाँ लाया। उनके वाद नेपोलियन इन घोड़ों को अपने वाहुवल से पेरिस ले गया। अन्त को फिर आस्ट्रिया के सम्राट् ने इन घोड़ों को यहीं लाकर स्थापित कर दिया। इन घोड़ों का इतिहास शिक्षाप्रद है। वीनिस जव स्वाधीन था तव वहाँ के राजा

को डोज (Doge) कहते थे । यह डोज-महल इस नगर का प्रधान दृश्य है। मकान अरवी ढंग का बना हुआ है। सन् ८०० में सबसे पहले बना था। कई वार अग्नि मे जल जाने के उपरान्त सन् १३५४ मे वर्त्तमान महल बना है। उसके बाद भी दो वार कुछ कुछ हिस्सा जल गया था। उसकी मरम्मत होगई है। यह २४० वर्ग-फुट का और अत्यन्त सुन्दर है। कई कमरों की दीवारों और भीतरी छतों में कई प्रसिद्ध चित्रकारों के हाथ के चित्र बने हैं। महल के पीछे प्रसिद्ध "दीर्घनिःश्वास सेतु" (Bridge of sighs) से युक्त प्रसिद्ध भयानक कारागार है। साधारणतन्त्र के समय मे वहाँ बहुत से बड़े आदमी कैद रहे हैं। वीनिस का समरसज्जा का भवन (Arsenal) और उसका कारखाना किसी समय विशेष प्रतिष्ठित गिना जाता था। इसका घेरा ३ मील का है। इस कारखाने मे एक समय १६००० आदमी काम करते थे। दरवाज़े पर दो संगमरमर के शेर बने हुए हैं। ये दोनों शेर, सन् १६८७ मे, ग्रीस की राजधानी एथेन्स से लूट कर लाये गये हैं। एक के शरीर मे, रूमिक (Rumi) भाषा में, जो लिखा है उससे ज़ाहिर होता है कि इस शेर को हाकल ने, पाइरिउस (Piraeus) विजय के चिह्न-स्वरूप, उक्त बन्दरगाह मे स्थापित किया था। इस स्थान के अन्तर्गत अस्त्रागार मे लेपान्टो के युद्ध में लूटे हुए लाल पीले रेशम के तुर्की झण्डे और प्राचीन वीनिस के बहुत से धनुप-बाण और कवच आदि रक्खे हैं। इसके सिवा अनेक प्रकार के जंगी जहाज़ों की बहुत सी नक़लें रक्खी हुई हैं। प्राचीन डोज लोग जिस प्रकार की नावों पर बैठ कर, साल मे एक दिन, समुद्र को व्याहने की यात्रा करते थे वैसी भी एक नाव रक्खी हुई है। यहाँ एक म्यूज़ियम और

दो पार्क अर्थात् सरकारी बाग़ हैं। प्रधान पार्क नगर के छोर पर, समुद्र के किनारे, है। बहुत ही मनोहर स्थान है। उसमें महावीर गेरीवाल्डी की मूर्त्ति स्थापित है। वीनिस मे तीन थियेटर और तीन अपेरा-भवन हैं। स्थानीय चित्रशाला और सबसे प्राचीन चित्रो का विश्वविद्यालय भी यूरोप मे प्रसिद्ध है। यहाँ डेढ़ लाख से अधिक आदमी रहते हैं। यहाँ के जल में बहुत से हियोकम्पस (Hippocampus) नामक जीव देख पड़ते हैं। इनका मुँह घोड़े का ऐसा और सारा शरीर मछली का ऐसा होता है। यह आधे हाथ के लगभग लम्बा होता है। वीनिस के आदमी एशिया के निवासी से जान पड़ते हैं। मैले रंग के भी बहुत से आदमी यहाँ हैं। यहाँ आलस्य का ऐसा साम्राज्य है कि नौकर-चाकर सब विदेशी हैं। देशी लोग ख़ैरात खायँगे तो भी नौकर का काम न करेंगे।

पायेचेन्ज़ा (Piacenza)। वीनिस से वोलोनिया लौट गया और वहाँ से यहाँ आया। कई गिर्जे, पाँच छः सौ बरस के एक महल और कुछ मूर्तियों के सिवा यहाँ विशेष कुछ देखने की सामग्री नहीं है। ईसा से २१६ वर्ष पहले रोमन लोगों ने इस नगर की स्थापना की थी। इसके पास पम्पियाई ऐसा एक गड़ा हुआ नगर निकला है। बहुत छोटा नगर है। केवल ३५००० आदमी रहते हैं।

ट्यूरिन। स्थानीय नाम टोरिनो (Torino) है। पायेचेन्ज़ा से यहाँ आया। सन् १८८९ की इटली-यात्रा का यही अन्तिम स्थान था। ट्यूरिन नगर बहुत दिनों तक पिड्मन्ट राज्य की राजधानी था। इस समय युक्तराज्य की एक पल्टन का अड्डा-मात्र है। यहाँ दो लाख से अधिक लोग रहते हैं। नगर पहाड़ों से घिरा हुआ और चौकोना है। रास्ते सीधे होने से शतरंज की बिसात की

वहार देता है। यह नगर डोरा और पो-नदी के संगम पर स्थापित है। पासही गिरिराज आल्पस का सुन्दर दृश्य है। गणितज्ञ लाग्राञ्ज और महात्मा कावूर की जन्मभूमि यही है। हंगेरी के कोसूथ यहाँ, शेषावस्था में, आकर रहे थे। कई एक पियाज़ा अर्थात् स्कायर हैं; उनमें दो बहुत अच्छे हैं। एक स्कायर में पो-नदी के पुल की राह में बहुत सी अच्छी अच्छी सुसज्जित दूकानें हैं। कावूर, लाग्राञ्ज आदि कई महापुरुषों की मूर्तियाँ, एक सप्त-दैत्यरचित प्रस्तर-स्तूप-युक्त फुहारा और आविलिक्स नगर की शोभा बढ़ा रहे हैं। अन्यान्य दृश्यों में प्राचीन राजमहल, और उसके अन्तर्गत अस्त्रागार, जानेवा के ड्यूक का महल, पशुशाला, मानमन्दिर, एक राजमाता का महल, विज्ञान-शिक्षा-भवन और उसके अन्तर्गत म्यूज़ियम, चित्रशाला, शिल्प-विद्यालय, विश्वविद्यालय, नागरिक म्यूज़ियम, कई एक गिर्जे, टाउनहाल, आर्सनल और उसका म्यूज़ियम, भारी थियेटर, विक्टरइमानुएल का मन्दिर और पो-नदी के दूसरे तट पर, मान्टी पहाड़ के ऊपर बना हुआ कपूचीन-सम्प्रदाय का कनवेन्ट देखने योग्य है। नगर के सामने, पो-नदी के भीतर, एक जल-प्रपात है। सामान्य जल गिरता है; इससे अर्धचन्द्राकार उच्च-नीच दृश्य बहुत ही सुन्दर जान पड़ता है। नदी-तट पर बैठकर चारों ओर के स्वाभाविक और कृत्रिम सौन्दर्य को देखकर हृदय हरा हो उठता है। नगर से ५ मील की दूरी पर, २५०० ऊँची पहाड़ की चोटी पर, एक राजा का समाधिमन्दिर बना हुआ है। यह एक अपूर्व दृश्य है। विसूवियस की तरह यहाँ भी फुनीक्युलर रेल पर ऊपर चढ़ना होता है। इस नगर में साढ़े चार लाख के लगभग लोग रहते हैं।

फ्लोरेन्स। स्थानीय नाम है फिरेन्ज़ी (Firenze)। यह नगर

आर्नो-नदी के किनारे वसा है। फ्लोरेन्स का अर्थ है "फूलों का नगर और नगरों में फूल" राजा इमानुएल ने रोम मे प्रवेश करने के पहले कुछ दिनों तक यह युक्त-इटली की और उससे पहले टास्केनी-राज्य की राजधानी था। मैं, सन् १८६१ में, रोम से यहाँ आया। यहाँ के रास्ते वहुत तंग हैं। हाँ, नदी के दोनों किनारों की दो मील लम्बी पक्की सड़क वहुत अच्छी है। उस पर टहलने से खूब आराम मिलता है। नगर में ६ फाटक हैं, दो वड़े वाज़ार हैं, तेईस पियाज़ा है। उनमें से एक में अनेक मूर्त्तियाँ हैं, एक मे डान्टे (Dante) का स्मारक चिह्न है, और एक मे माइकेल एञ्जेलो के 'डेविड' की नकल रक्खी है। नगर के अनेक वड़े महल और कई गिर्जे प्रसिद्ध हैं। इमारतों में पुराना और नया टाउनहाल और माइकेल एञ्जेलो तथा डान्टे का घर देखकर वड़ी प्रसन्नता हुई। एञ्जेलो के घर में अनेक चीज़ें यत्नपूर्वक सुरक्षित हैं। यहाँ का प्रधान गिर्जा (Duomo) सन् १२९८ से वनने लगा और सन् १४७० में वन कर तैयार हुआ। इसकी दीवारों में संगमरमर जड़े हैं। यह ५०० फुट लम्बा, १७८ और ३१० फुट चौड़ा और ३८० फुट ऊँचा है। इसके भीतर कितने ही साधु-महापुरुषों की मूर्त्तियाँ और असंख्य अङ्कित चित्र हैं। एक गिर्जे में डान्टे, गेलीलियो और मेकियावेली आदि विद्वानों के मनूमेन्ट हैं। यहाँ के दोनों म्यूज़ियमों में मूर्त्तियां और चित्रपटों का अपूर्व संग्रह है। उसमे जवाहरात का भी अच्छा संग्रह है। एक यात्री इनके सम्वन्ध में लिखता है—"The two galleries (Galleria Reale and Galleria di Palazzo Pitti) contain perhaps the richest and most celebrated collection of statues and pictures in the World, including the Venus de Medici, and works of Raphael, whose portrait by himself is in the Hall of Portraits"

राफेले की अपने हाथ की वनाई अपनी तसवीर यहाँ पर है।

मेग्लियावे की (Magliabecchi) की लारेन्सियन लाइब्रेरी में डेढ़ लाख छपी किताबें और बारह हज़ार हाथ की लिखी पुस्तकें हैं। यहाँ के और एक पुस्तकालय में वर्जिल, टासिटस (Tacitus) प्लुटार्क (Plutarch) और डान्टे की हस्तलिपियाँ रक्खी हुई हैं। इसके सिवा और भी कई म्यूज़ियम हैं। शिल्पविद्यालय (Academy of fine Arts) में एञ्जेलो के हाथ का असल 'डेविड' स्थापित है। आर्नो के एक पुल के ऊपर मनुष्यों के रहने के घर आदि बने हैं। नदी के किनारे का बग़ीचा भी बहुत बड़ा है। तरह तरह के लाखों पेड़ और लतायें यहाँ हैं। पुल पर के घरों से मिला हुआ बाग़ और पहाड़ है। पहाड़ के ऊपर से नगर का दृश्य बहुत मनोहर देख पड़ता है। रोम की तरह यहाँ के लोग भी क़ुदरती झरनों का पानी पीते हैं। भारतेश्वरी विक्टोरिया कभी कभी यहाँ जाया करती थीं। नगर के पास ही एक पहाड़ के ऊपर गेलीलियों का विला (घर) है। यहाँ ढाई लाख के लगभग लोग रहते हैं।

मिलन। स्थानीय नाम है मिलानो (Milano)। सन् १८६१ में, फ्लोरेन्स से स्वीज़रलेंड जाते समय इधर ही से जाना हुआ था। स्टेशन से निकल कर नगर के फाटक में प्रवेश करने के पहले एक छोटी सी फूलों की बगिया मिलती है। वहाँ महात्मा कावूर (Cavour) की मूर्त्ति स्थापित है। नगर का घेरा सात मील का है, चारों ओर खाईं और दीवार है। भीतर प्रवेश करने के लिए १३ फाटक हैं। फाटक बड़े बड़े हैं और मूर्त्तियों तथा अन्यान्य कारीगरियों से विभूषित हैं। यहाँ का प्रधान दृश्य है प्रसिद्ध ड्यूमो गिर्जा। यह नीचे से ऊपर तक संगमरमर के पत्थर से बना है। बहुत ही सुन्दर है। इसी से यात्री लोग इसे (Frozen music) अर्थात् "घनीभूत स्वर-तान" कहते हैं। रोम के सेन्टपीटर गिर्जे

के बाद इटली मे यही सर्वोत्तम गिर्जा है। यह ५०० फ़ुट लम्बा और १८६ फ़ुट चौड़ा है। ५२ खम्भों के ऊपर १५८ फ़ुट ऊँची नेव स्थापित है। इसका टावर ३०० फ़ुट ऊँचा है और उसमे ४६४ सीढ़ियाँ हैं। उसकी चोटी १३५ फ़ुट ऊँची है। इस गिर्जे में १५०० रिलीफ़ चित्र हैं। इसके बाहर १६२३ और भीतर ६८० मूर्तियाँ हैं। इसकी और और भी अनेक सजावटें देखने योग्य हैं। यहाँ दो-तीन फर्लांग का लम्बा एक आर्केड-बाज़ार भी देख पड़ा। उस बाज़ार में २४ प्रसिद्ध इटलियन लोगों की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। यहाँ ६ लाख से अधिक लोग बसते हैं।

इटली की साधारण अवस्था। इटली बहुत सी बातों में हमारे देश के समान है। उसे अगर यूरोप का भारतवर्ष कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी। हमारे पञ्जाब, कश्मीर, मदरास और सिंहल के जल-वायु और आदमियों मे जैसा अन्तर है वैसा ही अन्तर इटली के लम्बार्डी, पिडमान्ट प्रदेश, कालाब्रिया और सिसिली के जलवायु और आदमियों में भी है। पहले केवल दक्षिण अंश को ही इटली कहते थे। अनेक बातों में हमारे समान होने के कारण, इटली के सम्बन्ध में विशेषरूप से जानकारी हासिल करने की इच्छा होना हमारे लिए स्वाभाविक ही है। इटली के सिवा यूरोप के किसी देश में शायद धान नहीं बोये जाते। इटलियन जहाज़ में यात्रा करने और कई बार इटली की सैर करने से मुझे जो कुछ मालूम हुआ है वह पाठकों की जानकारी के लिए नीचे लिखता हूँ। परोसी जातियों के साथ मिलान करके देखने से कहना पड़ता है कि इटली की अवस्था अच्छी नहीं है। अँगरेज़ों मे यह गुण है कि वे अन्यान्य जातियों की अपेक्षा अधिक परिश्रम करने की आदत रखते हैं; पैदा करते हैं और जी खोल कर ख़र्च करने में भी किसी से पीछे नहीं

हैं। फ्रेञ्च लोग उतना परिश्रम नहीं करते, पर कृपण स्वभाव के, और इसी से सञ्चयी, होते हैं। वालवच्चों की व्यवस्था के सम्बन्ध में, अन्यान्य जातियों की अपेक्षा, वे अधिक सावधान होते हैं। हर एक सन्तान को कुछ कुछ रक़म दे जाने के ऊपर उनका विशेष लक्ष्य रहता है। इसी कारण फ्रान्स में वहुत सा धन जमा है। किन्तु इटली में यह कोई भी गुण नहीं। तेल और शराव तैयार करने का सुभीता जैसा इटली को है, और इन दोनों रोज़गारों में जैसा लाभ इटली को हो सकता है, वैसा सुभीता और मुनाफ़ा अन्यत्र असम्भव है; यद्यपि इधर किसी का विशेष ध्यान नहीं है। आईन-अदालत की व्यवस्था वहुत ख़राब होने के कारण विदेशी लोग वहाँ कोई जायदाद खड़ी करने का साहस नहीं करते। स्थानीय लोगों में भी उद्यम और उत्साह का अभाव है। इटली के देहातों में जो शराव एक पेनी की एक वोतल विकती है उसी को साधारण प्रक्रियाभेद से फ्रेञ्च लोग ऐसी अच्छी शराव वना लेते हैं कि वह पेरिस मे चार फ्रेंक की एक वोतल तक के हिसाव से विक जाती है। जर्मन जाति के लोग ख़ूव वली होते हैं। जर्मनी मे क्षयरोग, हमेशा की कमज़ोरी आदि शारीरिक कुलक्षण जर्मनों में वहुत कम देखने को मिलते हैं। किन्तु इटली के लोगों की दशा विल्कुल इसके विपरीत है। वहाँ के लोगों को अगर चिररोगी कहें तो अनुचित न होगा। इटली के हर एक प्रधान नगर मे टाइफाएड टाइफस ज्वर या शीतला-रोग स्थायी भाव से वना रहता है। साल मे ऐसा कोई समय नहीं होता जव राज्य के किसी-न-किसी स्थान में किसी संक्रामक रोग की प्रवलता न होगी। मलेरिया और अनेक प्रकार के ज्वरों का तो कुछ कहना ही नहीं है। उनके सिवा तरह तरह के कण्ठ-रोग भी देख पड़ते हैं। इन सव कारणों

से वहुत से लोग शारीरिक स्वास्थ्य की उन्नति के लिए कभी कभी हलकी शैंपेन शराव पीते हैं। इटली मे सहज मे यह शराव वनाई जा सकती है। लेकिन आलस्य के पुतले इटलियनों ने उसके वनाने का काम जर्मनों को सौंप रक्खा है। जर्मन लोग अपने यहाँ शैम्पिन वनाकर इटलियनों के हाथ वेंचते और अच्छा नफ़ा उठाते हैं। यद्यपि यह एक मामूली रोज़गार है, मगर इसी तरह से तिल तिल से ही ताल होता है। इँगलेंड अगर इसी तरह अपने लोहे और कोयले का असद्व्यवहार करके युद्ध-सज्जा आदि में लगा रहता तो आज उसकी कैसी दुर्दशा होती? फ्रेञ्च लोग एक घड़ी के समय को भी व्यर्थ नहीं जाने देते; इसी से वे इतने धनी हैं। रुई, लोहे और कोयले से इँगलेंड जैसे धनी है वैसे ही इटली भी अन्न, शराव और तेल के रोज़गार से अच्छा रुपया कमा सकती है। किन्तु इटली जी नहीं लगाती और इँगलेंड उन्नतिशील देश है। दोनों देशों की आर्थिक अवस्था ही इसका प्रमाण है। इँगलेंड में जाति से अलग गवर्नमेन्ट-नाम की किसी शक्ति का अस्तित्व कोई स्वीकार नहीं करता। किन्तु लैटिन जातियों में इसके विपरीत देखा जाता है। सव प्रजा राजशक्ति को अपने से अलग समझ कर हर घड़ी उसी के मुँह की ओर ताका करती है। वहाँ के लोग जैसे हर काम में गवर्नमेन्ट का मुँह जोहते हैं वैसे ही कोई गोलमाल होने पर उसका दोप गवर्नमेन्ट के मत्थे मढ़ने में भी वे एक ही हैं। यह वात हममे और उनमें ठीक एक सी है। विचार, शासन आदि के सम्वन्ध मे इटली की अवस्था वहुत ही ख़राव है। किसी किसी नगर में जासूस-पुलिस के अलावा तीन श्रेणी की पुलिस है। उनको इतना अख़्तियार है कि वे साधारण सन्देह होने पर किसी भी नगरनिवासी को क़ैद कर सकते हैं, और अन्त को कोई विशेष कारण दिखाये विना, केवल सन्देह के ऊपर

हो, उसे घरबार रोज़गार छोड़कर ५०० मील की दूरी पर भाग जाने के लिए लाचार कर सकते हैं। वहाँ का समाज ऐसा मुर्दा है कि ऐसी विकट क्षमता को कम करने की कुछ भी चेष्टा नहीं करता। म्यूनीसिपलिटी की अवस्था उससे अधिक ख़राब है। किसी नगर के भीतर जानेवाली माल से लदी गाड़ी की चुङ्गी तो नहीं देनी पड़ती, लेकिन उसके साथ साथ एक चुङ्गी का आदमी, अपनी सीमा तक, यह देखने जाता है कि वह गाड़ी सीधी चली जाती है; कहीं ठहर कर कुछ बेचती नहीं। उस आदमी का मेहनताना गाड़ीवाले को देना पड़ता है और इस बन्दोबस्त के लिए चुंगीघर के पास गाड़ी को बहुत देर तक खड़ा रहना पड़ता है। इटली में समय की क़दर बहुत कम है। इसी से वहाँ के लोगों में मुस्तैदी बिलकुल नहीं है। म्यूनीसिपल-कमिश्नरों में से अनेक लोग नियत समय के घंटे डेढ़ घंटे के बाद सभा मे उपस्थित हो हँसते हुए यह उज्र पेश करते नज़र आते हैं कि "मुझे और जगह कुछ काम था"। वहाँ की म्यूनीसिपलिटियाँ काम करने में भी बहुत शिथिल हैं। फ्लोरेन्स मे एक मामूली पुराना घर पाँच बरस से ख़ाली पड़ा था, तीन बरस से उसकी मरम्मत हो रही है। शायद चार पाँच बरस से कम में वह बनकर तैयार न हो सकेगा। विचार-विभ्राट् तो वहाँ ऐसा भयानक है कि साधारणतः दस पाँच साल में भी मुक़द्दमे का फ़ैसला नहीं होता। हमारे यहाँ के सबजजों की श्रेणी के वहाँ के हाकिमों की सालाना तनख़्वाह ५० पौण्ड से अधिक नहीं है। अपने से अधिक क्षमताशाली लोगों के विरुद्ध मुक़द्दमे का फ़ैसला करते समय वे बड़ी कठिनाई में पड़ जाते हैं। ऐसी जगह आपस मे फ़ैसला हो जाने के लिए वे बड़ा यत्न करते हैं। मेरी देखी हुई बात है कि मुक़द्दमा दायर होने पर जज ने फ़र्यादी के घर आकर विनीत-भाव से प्रार्थना की कि

"देखिए, थोड़ी सी तनख़्वाह मिलती है। यही मेरी जीविका है। आप मुक़द्दमा चलावेंगे तो न्याय के अनुसार मुझे आपको डिग्री देनी ही पड़ेगी। पर उससे मेरा सर्वनाश हो जायगा। मुद्दाअलेह रोम में जाकर पार्लियामेंट के मेम्बर अमुक बैरिस्टर के द्वारा राज-मन्त्री के निकट मेरी बुराई करावेगा और उससे मेरी नौकरी जाती रहेगी"।

इँगलेंड को इसलिए लोग बदनाम करते हैं कि वहाँ धनी के लिए और आईन है और ग़रीबों के लिए और आईन है। लेकिन इटली के लिए अगर यह कहा जाय कि वहाँ किसी के लिए कोई आईन नहीं है तो कुछ बेजा न होगा। राज्य के आईन से फाँसी का दण्ड उठ जाने के कारण मनुष्य-हत्याओं की संख्या बढ़ गई है। सन् १५६१ मे युक्त-इटली स्वाधीनता के मार्ग में उठकर खड़ी हुई। उस समय दो करोड़ से कुछ अधिक इटली के निवासियों मे डेढ़ करोड़ से भी ऊपर आदमी बिल्कुल निरक्षर थे। जब का मैं हाल लिख रहा हूँ उस समय फ़ी सैकड़े चवालीस आदमी ऐसे थे। इस समय वहाँ क़ानून के ज़ोर से प्राइमरी शिक्षा प्रचलित होगई है और वह सबको बिना फ़ीस दी जाती है। म्यूनीसिपलटियाँ अपनी अपनी आमदनी के अनुरूप स्कूल रखने के लिए बाध्य हैं। सरकारी मंज़ूरी के बिना कोई स्कूल खुल नहीं सकता। राज्य का तो यही नियम है, लेकिन इसका पालन करने में उतनी कड़ाई नहीं की जाती। राज्य मे एक नया और सोलह पुराने विश्वविद्यालय, पन्द्रह शिल्प-विद्यालय और पाँच सरकारी संगीतशिक्षा-भवन हैं। राज्य के निवासियों की रुचि परिमार्जित नहीं जान पड़ती। केवल नेपल्स मे ही अनेक भयानक अश्लील कार्यकलाप नहीं देख पड़ते; रोम, फ्लोरेन्स आदि स्थानों में भी उस अश्लीलता का थोड़ा बहुत

आभास पाया जाता है । फ्लोरेन्स के प्रधान गिर्जे में दोपहर को, विदेशी दर्शकों को, बहुत ही अश्लील विकाऊ चित्र और पुस्तकें दिखलाई जाती हैं; पर ज़रा छिपे तौर से। रोमन-कैथलिक धर्म ही राज्य का प्रधान धर्म है। किन्तु दक्षिण-इटली मे ग्रीक-चर्च की भी प्रधानता है। राज्य मे धर्म-सम्बन्धी ख़ैरात बहुत होती है। लाखो आदमी नित्य सहायता पाते हैं । अनेक प्राचीन मठों की आमदनी सरकार में ज़ब्त कर ली गई है। मठधारी लोग उस आमदनी से कुकर्म करते थे। अब वही आमदनी शिक्षा-प्रचार के काम में ख़र्च होती है। भारत की तरह इटली भी कृषि-प्रधान देश है और किसानों की दशा भी शोचनीय है। राज्य में दारिद्र्य की भयानक छाया देख पड़ती है। इटली की लोक-संख्या साढ़े तीन करोड़ के लगभग है। किन्तु जिन प्रधान व्याधियों से इँगलेण्ड मे इस समय २०००० से अधिक आदमी नहीं मरते, उन्ही व्याधियों से इटली मे लाखों आदमी मर जाते हैं। इटली की लोक-संख्या, हमारे देश की तरह, बढ़ती जाती है और बहुत से लोग विदेशों में जाकर बसते हैं। राज्य की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है। युक्त और स्वाधीन होकर इटली ने समझा था कि वह भू-मध्य-सागर में अपने को क्षमता के साथ स्थापित कर सकेगी और इस इरादे को पूरा करने के लिए बहुत सा धन ख़र्च करके उसने कई जंगी जहाज़ भी बनवाये थे। लेकिन युद्ध की सामग्रियों में इधर ऐसी वैज्ञानिक उन्नति हुई कि उसके वे जहाज़ पुराने पञ्चाङ्ग की तरह किसी काम के नहीं रहे । इटली ने वर्त्तमान ढंग के जहाज़ भी बहुत से बनवाये हैं। उनकी संख्या २०० के लगभग होगी ।

इटली मे अनेक प्रकार के अपव्ययों की भी कमी नही है। बहुत जगह ऐसा देखा जाता है कि कम तनख़्वाह मे एक आदमी का काम

पाँच आदमी कर रहे हैं और लाखों रुपये ऐसी जगह ख़र्च हो रहे हैं जहाँ उस ख़र्च से रत्ती भर भी लाभ होने की आशा नहीं। लेकिन दूसरे काम में एक पैसे के लिए प्रजा का ख़ून चूसा जा रहा है। टेक्स का भी बोझा प्रजा पर बहुत है। प्रजा और अधिक टेक्स देना नहीं चाहती और सेना तथा जंगी जहाज़ों के बढ़ाने के लिए विशेष आग्रह भी है। इसका फल यह हुआ कि राज्य ऋणी होता चला जा रहा है। इतना ऋण हो गया है कि उसका सूद साल में दो करोड़ पौण्ड से अधिक देना पड़ता है। यह विस्तार मे हमारे यहाँ के निज़ाम-राज्य के समान है। सालाना आमदनी डेढ़ करोड़ पौण्ड है। राज्य का ऋण ५७) करोड़ पौण्ड होगया है। राजा अपने ही पास नमक का ठेका रखता है। यहाँ के सिक्के की क़ीमत फ्रान्स की ऐसी है। यहाँ के चाँदी के सिक्के का नाम है लिरा। सोना तो यहाँ देखने को ही नहीं मिलता, चाँदी भी बहुत कम है। पाँच लिरा का नोट सहज में नहीं भुनता। राज्य मे केवल नोटों का ही चलन है। नोट छः बैंकों के और छः तरह के चलते हैं। बे-आईनी और जाली नोट भी बेहद चलते हैं। जिस बैंक को जितने के नोट निकालने का अधिकार है वह अगर उससे अधिक नोट निकाले तो वे नोट बे-आईनी समझे जायेंगे। नोट ऐसे पुराने और मैले हैं कि उन्हे हाथ मे लेने को जी नहीं चाहता। यहाँ के नीची श्रेणी के लोग निहायत आलसी, कुसंस्कारपूर्ण और मूर्ख हैं। उच्च श्रेणी के धनी लोग अपने ही रंग में रहते हैं। केवल लोभी और संकीर्ण हृदय के मध्यवित्त श्रेणी के लोगों के हाथ मे ही सब कुछ है। वे पार्लियामेन्ट-आफ़िस आदि में अपने और अपनी बस्ती के स्वत्वों के लिए ही जान देते रहते हैं। सारे राज्य और देश के हित की ओर ताकने का भी अवसर उन्हे नहीं मिलता। अनेक बातों में इटली की

हमारी ही ऐसी दुर्दशा है। बहुत से पण्डितों का कहना है कि विगत गौरव की आलोचना में लगे रह कर वर्त्तमान पर ध्यान न देने से ही इटली की यह दशा हुई है। हममें भी ठीक यही दोष है। एक समय इटली की एक मूर्त्ति स्थापित करने का प्रस्ताव हुआ। उस अवसर में एक वृद्ध इटली-निवासी अँगरेज़ ने कहा था— "Italy should be represented with head turned round and looking over her shoulder." अर्थात् इटली की सीधी मूर्त्ति न बना कर ऐसी मूर्त्ति बनानी चाहिए कि वह मुँह फेर कर पीछे देख रही हो। बात भी यही है कि सीज़रों के रोम और कोलम्बस का जनेवा भूले बिना इटली की ख़ैर नहीं है। वर्त्तमान राजा उम्बर्टो (Umberto) और उनकी स्त्री मागरिटा (Margherita) सबको प्यारे और प्रजावत्सल हैं। थोड़े दिन हुए, ऐसे राजा के जीवन पर भी किसी दुष्ट ने चोट की थी। पर वह चोट ख़ाली गई। जो जाति संगीत के बारे में प्रसिद्ध होती है वह जाति शिथिल होने के लिए बाध्य हो जाती है। मुझे तो यह विश्वास है कि आलस्य का शिकार बने बिना टप्पेबाज़ी कभी नहीं आती। रेलस्टेशनों पर भोजन बेचनेवाले बालकगण परा—"ने, वी—नो, सिनिओ—रे—" (Pane, Vino, Signore!) अर्थात् रोटी और शराब, महाशय! इन शब्दों को ऐसे मीठे स्वर में कहते हैं कि बार बार सुनने की इच्छा होती है। इसी प्रकार गली-कूचों में फेरीवाले लोग लय के साथ पुकार पुकार कर सौदा बेचते हैं। लन्दन के अम्निबस और रेल के छोकरे जैसी तेज़ी के साथ संक्षेप में स्थान आदि का नाम पुकारते हैं वैसे यहाँ नहीं है। इटली-राज्य में भी कान्स्क्रिप्शन् की प्रथा प्रचलित है। सब मिलाकर २५ लाख आदमियों के नाम फ़ौज में लिखे हैं। किन्तु असल में

शान्ति के समय तीन लाख और युद्ध के समय न्यूनाधिक आठ लाख फ़ौज रहती है। २७० जंगी जहाज़ हैं। उनमें केवल १८ लौह-यान हैं। इटली के सम्बन्ध में और भी बहुत सी बातें लिखने की थीं। पर पुस्तक बढ़ जाने के भय से वे नहीं लिखी जा सकीं।

नार्वे ।



पा सपोर्ट (Passport) । एशिया आदि यूरोप के कई देशों में घूमनेवाले के पास पासपोर्ट का होना वहुत जरूरी है। जाने को तो चाहे किसी तरह कोई इन देशों के भीतर चला भी जाय, लेकिन इन देशों से पासपोर्ट के विना वाहर जाना सर्वथा असम्भव है। जिसका जिस वैंक से व्यवहार होता है उसे उस वैंक के द्वारा अपने सारे वृत्तान्त के साथ, फ़ारेन-आफ़िस में, अर्ज़ी देनी होती है। वहाँ से पासपोर्ट मिलने पर उसे, वैंक के द्वारा, जिस देश में जाना हो वहाँ के लन्दनस्थित राजदूत (Ambassador) से स्वीकृत (Visa) करा लेना पड़ता है। उसके वाद अन्य पासपोर्टवाले देश में प्रवेश करने के पहले किसी प्रधान नगर मे उस देश के कन्सल (Consul) से फिर इसी तरह स्वीकृत कराने की जरूरत पड़ती है। पासपोर्ट की नक़ल नीचे दी जाती है।

We, Robert Arthur Talbot Gascoyne Cecil, Marquess of Salisbury, Earl of Salisbury, Viscount Cranborne, Baron Cecil, a peer of the United Kingdom of Great Britain and Ireland, a member of Her Britanic Majesty's Most Honourable Privy Council, Knight of the Most Noble Order of the Garter, Her Majesty's Principal Secretary of State for Foreign Affairs, etc., etc., etc

Request and require in the Name of Her Majesty, all those whom it may concern to allow Mr ———(British Subject,

a native of India) travelling on the Continent to pass freely without let or hindrance, and to afford him every assistance and protection of which he may stand in need

Given at the Foreign Office, London, the 24th day of June, 1891

Salisbury

Signature of the Bearer

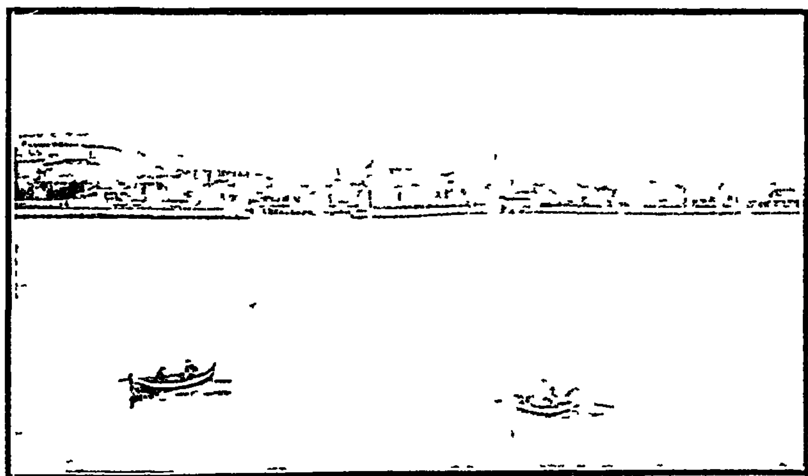
क्रिश्चियन-साण्ड (Christiansand)। सन् १८९१ के जून महीने में लन्दन से रेल पर सवार होकर हार्विच-बन्दर मे पहुँचा और वहाँ से नार्वे जानेवाले विल्सन कम्पनी के जहाज़ पर सवार हुआ। जहाज़ आधी रात को छूटा। गर्मियों की ऋतु में यूरोप के समुद्र स्थिर तालाब की तरह बने रहते हैं; उनमें किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता। तीसरे दिन, दोपहर के समय, नार्वे के दक्षिण उपकूल में स्थित क्रिश्चियन-साण्ड नगर में पहुँचना हुआ। यहाँ पहले पहल फ़ियोर्ड (Fjord) देखा। लेकिन इसमे एक नदी के आकर मिल जाने से अच्छा भाव नहीं पाया गया। मानचित्र (नक़्शे) मे स्पष्ट देख पड़ता है कि नार्वे के उपकूल मे अनेक फ़ियोर्ड हैं। इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक भू-तत्त्व-वेत्ता पण्डितों का मत है कि स्वर्णयुग (Glacial Epoch) के अन्त में जब बर्फ़ की राशि (Glacier) देश के भीतर से समुद्र की ओर चली तब पहाड़ों के कगारे इसी तरह कट कट कर सागर मे गिर पड़े। देख भाल कर ऐसा भी बतलाया गया है कि ऐसे बर्फ़ के ढेरों की चाल चौबीस घंटे मे एक हाथ से भी कम हुआ करती है। इस हिसाब से दो-एक सौ कोस चल कर चार पाँच छः हज़ार फुट ऊँचे पहाड़ काट कर समुद्र का गढ़ा बनाने मे न-जाने कितना समय लगा होगा। बन्दर-गाह मे प्रवेश करने के द्वार पर एक छोटा सा द्वीप बना है और उस

पर नगर की रक्षा के लिए एक क़िला बना हुआ है। लन्दन की भीड़भाड़ और कोलाहल से क्रिश्चियन-साण्ड में आकर शान्ति का आनन्द पाया। मालूम पड़ा जैसे संसार को छोड़कर किसी निर्जन स्थान में आ गया हूँ। इस देश की पुलिस और देहाती नर-नारियों की पोशाकें बहुत ही विचित्र हैं। मर्दों के पायजामे प्राय: गले तक के होते हैं। स्त्रियों के घाँघरे घुटनों से ज़रा नीचे तक के होते हैं। चाँदी के गहने खूब पहने जाते हैं। मर्द भी कुछ कुछ चाँदी के गहने पहनते हैं। यहाँ के लोग साधारणत: लम्बे, सबल और सुडौल शरीर के होते हैं। नगर के रास्ते बहुत सीधे और चौड़े हैं। यहाँ के घर लकड़ी के बने हुए हैं। प्राय: हर एक घर के दरवाज़े के बाहर गमलों में फूलों के पेड़ यत्न और योग्यता के साथ सजाये हुए रक्खे हैं। यहाँ की और यहाँ के अन्यान्य म्यूनिसिपलिटीवाले शहरों की एक प्रथा बहुत अच्छी है। वह यह कि यहाँ शराब की दूकानें कम हैं। और जो हैं वे एक कम्पनी की हैं और आईन के अनुसार उन्हें फ़ी सैकड़ा पाँच रुपये के हिसाब से मुनाफ़ा मिलता है। बाक़ी बचत उन्हें म्यूनिसिपलिटी को दे देनी पड़ती है।

क्रिश्चियानिया (Christiania)। क्रिश्चियन-साण्ड से रात को जहाज़ पर सवार हुआ। जहाज़ सवेरे एक पहर दिन चढ़ने पर यहाँ की राजधानी क्रिश्चियानिया में पहुँचा। उत्तरान्तरीप-यात्रा के पहले और वहाँ से लौट आकर कई दिनों तक यहाँ रहना हुआ। वृक्ष आदि से शोभित और जुदे जुदे घेरे और ऊँचाईवाले टापुओं की क़तारों से सुसज्जित बन्दरगाह के सामने के फ़ियोर्ड-जलखण्ड का दृश्य बहुत ही मनोहर है। नगर बहुत बड़ा नहीं है और उसमें देखने योग्य स्थान और चीज़ें भी अधिक नहीं हैं। किन्तु यह जगह साफ़ है। यहाँ की खाने की चीज़ें भी अनेक प्रकार की और स्वादिष्ट



क्रिश्चियानिया—पृ० २७८



ट्राञ्जेम—पृ० २८२



गटेनवर्ग—पृ० ४०२

हैं। यह बात यहीं पहले पहल देखी कि बारह बजे रात को भी अन्धकार नहीं; गोधूलि-वेला के समान प्रकाश का आभास बना रहता है। रात भर लोग सड़कों पर चलते-फिरते रहते हैं। यहाँ का राजमहल एक ऊँची जगह पर, स्वच्छ और सुसज्जित बाग़ के भीतर, बना हुआ है। ड्योढ़ी के सामने के चौड़े सहन में वर्तमान राजा के पितामह राजा जोहन (Earl Johan) की घोड़े पर चढ़ी हुई भारी पीतल की मूर्ति स्थापित है। इनका असल नाम था बार्नाडोर (Jean-Baptiste-Jules Barnadotte)। यह एक मामूली वकील के लड़के थे और इन्होंने भी पहले वकालत की ही शिक्षा पाई थी। किन्तु इन्होंने वकालत नहीं की और जल-युद्ध-विभाग मे मामूली सिपाही की हैसियत से भर्ती होगये। क्रमशः नेपोलियन की मातहती में सैन्याध्यक्ष होकर विशेष नामवरी के साथ इन्होने काम किया। पीछे सम्राट् नेपोलियन से न पटने के कारण यह स्वीडन को चले आये। यहाँ भावी नरपति युवराज की अचानक मृत्यु होजाने से स्वीडिश पार्लियामेन्ट ने, सन् १८१० में, इन्हें ही राज्य का उत्तराधिकारी चुनकर सारे यूरोप को अवाक् कर दिया। पूर्व-राजा की ज़िन्दगी में ही सारे राजकाज का बोझ इन्हीं पर आपड़ा। इसके बाद, सन् १८१८ में, तेरहवें चार्ल्स के मरने पर, कार्ल जोहन नाम से यह सिंहासन पर बैठे। सन् १८१४ में, इन्हीं की अधीनता मे नार्वे राज्य स्वीडन राज्य से मिला दिया गया। किन्तु दोनों देशों के एक छत्र के अधीन होने पर भी दोनों जगह अलग अलग पार्लियामेंट थी और दोनों देश अपने अपने नियम अलग अलग बनाते और अलग अलग बजट पास करते थे। राजमहल के सामने से उक्त राजा के नाम पर नगर की लम्बी चौड़ी प्रधान सड़क निकली है। इसी के किनारे विश्वविद्यालय और उसी के अन्तर्गत एक घर मे

हज़ार वर्ष के लगभग की पुरानी एक वाइकिंग-नाव (Vikings Galley) रक्खी है । नार्वे-राज्य की पुरातत्त्व-सभा के सुयोग्य सभापति पण्डित निकोलसन (Nicolaysen) महाशय की देखरेख में, सन् १८८० में, गकस्टॉड (Gokstad) नामक स्थान के निकट ज़मीन खोद कर नीचे से यह नाव निकाली गई है। जोड़ तोड़ लगाकर नाव को ठीक पहली हालत मे खड़ा कर दिया है। ऐसी नावों पर बैठकर यँहाँ के लुटेरे और योद्धा लोग इँगलेंड आदि देशों में जाकर अनेक प्रकार के उपद्रव करते थे । राजा केन्यूट (Canute) ने ऐसी ही नावों से लन्दन पर आक्रमण करके अपना अधिकार जमाया था। यह भी वात प्रमाणित हो चुकी है कि कोलम्बस से बहुत दिन पहले इसी तरह की नावों पर नार्वे के उपकूल मे रहनेवाले लुण्ठनलोलुप वाइकिंग लोग प्रतिकूल हवा के कारण अटलान्टिक समुद्र के पार अमेरिका तक जा पहुँचे थे। यह नाव २० हाथ लंबी और १० हाथ चौड़ी है। इसपर १०-१५ आदमी अच्छी तरह बैठ सकते हैं। इस नाव पर, जीर्ण अवस्था में, ढाल-तरवार आदि हथियार, खाने-पीने के वर्तन और एक आदमी का ढॉचा मिला था। सब सामान उसी तरह इस नाव पर सजाया हुआ रक्खा है। और जगह एक स्थान में एक ३० फ़ुट की आधुनिक नाव रक्खी हुई है। इस पर बैठ कर दो नार्वेजियन नाविक (Captain Gorgensen and Mr. Nilsen) सन् १८८६ की १२ वीं सितम्बर को लन्दन नगर से चले थे और अनेक प्रकार की विपत्तियों का सामना करते हुए दो वरस मे आस्ट्रेलिया के आडेलेड (Adelaide) नगर में पहुँचे थे। उन दोनों में से एक नाविक (Mr. Nilsen) खुद खड़ा हुआ दर्शकों को नाव की सब बातें समझा रहा था।

नगर के भीतर एक पहाड़ के ऊपर सुन्दर बाग़ और जल-कल का कारख़ाना है। यहाँ से सारे नगर और उपनगरों का दृश्य मनोहर देख पड़ता है। ख़ास कर पूर्व ओर पहाड़ से मिली हुई ऊँची नीची वस्तियां और बाग़ों का दृश्य बहुत ही सुन्दर मालूम पड़ता है, क़बरिस्तान के सामने के ऊँचे भूमिखण्ड पर स्थानीय यहूदियों की कृतज्ञता का निदर्शन-स्वरूप नार्वे के प्रधान कवि (Henrik Wergeland, died 1845) की लौहमय अर्द्धमूर्त्ति (Bust) स्थापित है। यहूदी इस देश मे रहने के लिए राजा की आज्ञा पावे, इसलिए इन महामनस्वी कविवर ने बड़ा परिश्रम किया और उसमे सफलता भी प्राप्त की। यहाँ का पार्लियामेन्ट-भवन, गिर्जा (Johans Kirke,), म्यूज़ियम, पुराना गढ़ (Akershus) और आस्कर-हाल (Oscars Hall) आदि देखने की चीज़ें हैं। लोक-संख्या ढाई लाख के लगभग है।

ट्राञ्जेम-यात्रा। दोपहर को रेल पर ट्राञ्जेम की यात्रा की। रेल के किनारे हर एक गाँव में देखा कि प्रायः हर एक गृहस्थ के घर मे छत पर तरह तरह के वृक्ष लगे देख पड़े। ३५० मील जाने मे २० घण्टे से अधिक समय लगा। रास्ते के प्राकृतिक दृश्य, जङ्गल, पहाड़, झरने, नदी, सफ़ेद सेवार आदि सब चीज़ें एक नये ढंग की देख पड़ी। मियासेन (Mjosen) झील के किनारे की शोभा बहुत ही अच्छी लगी। झील के किनारे छोटे छोटे गाँव बसे हैं। जल के ऊपर पाइन की लकड़ी लादे अनेक स्टीमर और नावें चल रही हैं। यह झील ३० कोस लम्बी और ६ कोस चौड़ी है। सन् १७५५ की पहली नवम्बर को प्रलय रूप भूमिकम्प के द्वारा जब पुर्त्तगाल की राजधानी लिसबन नगर का विध्वंस हुआ था उसी समय दम भर के लिए इस झील का पानी २० फ़ुट ऊँचा हो गया था।

ट्रान्जेम (Trondhjem)। प्रातःकाल ट्रान्जेम मे पहुँचने पर अनेक दृश्य देखे। उसी दिन रात को ९ बजे के समय उत्तर-महासमुद्र की यात्रा के लिए जहाज़ पर सवार हुआ। ट्रान्जेम के निकटवर्त्ती नीड (Nid) नदी के दोनों झरनों को लौटते समय देखा। एक १०० फ़ुट ऊँचा और ४५० फ़ुट चौड़ा है। दूसरा ८० फ़ुट ऊँचा और १२२ फ़ुट चौड़ा है। नीड नदी जहाँ समुद्र से मिली है वहाँ किनारे पर बसा हुआ ट्रान्जेम नगर नार्वे की पुरानी राजधानी है। आईन के अनुसार, सन् १८१४ से, वर्त्तमान राजों का भी यहीं अभिषेक होता है। यहाँ का प्राचीन गिर्जा देखने लायक़ है। सुप्रसिद्ध धर्मवीर राजा ओलफ़-क्यूरे (Olaf Kyrre) ने सन् ११६२ में इस गिर्जे की नींव डाली थी। डेढ़ सौ बरस के बाद यह गिर्जा बन कर तैयार हुआ। इस गिर्जे के एक हिस्से में 'ओलफ़-कूप' और राज्याभिषेक का स्थान है। जगत्प्रसिद्ध डिनामा के कारीगर थारवाल्डसन (Thorwaldsen) की बनाई एक ईसा की मूर्त्ति की नक़ल यहाँ स्थापित है। असल मूर्त्ति कोपनहेगेन के थारवाल्डसन-म्यूज़ियम में है। ट्रान्जेम के सब घर दोमंज़िले हैं। यहाँ लकड़ी के घर बनाना नियम-विरुद्ध है। सब घर ईंट या पत्थर का होना चाहिए। सन् १८४१ में आग लगने के बाद यह नियम कर दिया गया है। सर्दियों में ज़मीन से बर्फ़ उठाने की एक प्रकार की मेशीन यहीं पहले पहल देखी। हमारे देश के किसी किसी गाँव में जैसे साल के बाद मेला हुआ करता है वैसे ही साल के अन्त मे एक सप्ताह के लिए ट्रान्जेम मे भी एक छोटा सा मेला लगा करता है। साल भर के लिए कपड़ा वग़ैरह ख़रीदने को गाँवों के बहुत से लोग इस मेले में आया करते हैं। इस मेले से बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ।

महातीर्थ-यात्रा ।

उत्तरान्तरीप (North Cape) World-promontory——— Ultima Thule.—"The Northern Sun, creeping at midnight at the distance of five diameters along the horizon, and the immeasurable Ocean in apparent contact with the Skies, form the grand outlines in the sublime picture presented to the astonished spectator. The incessant cares and pursuits of anxious mortals are recollected as a dream; the various forms and energies of animated nature are forgotten, the earth is contemplated only in its elements, and as constituting a part of the solar system." *Travels to the North Cape. Acerbi.*

"While all the nations of the Earth are sleeping; you here stand in the presence of that great power which will wake them all" —*Carlyle*

"All the charms of Norway are outweighed by the strange weird beauty and grandeur of the neighbourhood of the North Cape I know of nothing that comes within the range of tourist experiences that will make a more lasting impression on the memory than a day or two in the region of the midnight sun.

Each traveller has some new poetic thought to register For myself the midnight sun has a solemnity which nothing else in Nature has Midnight is solemn in the darkness; it is a hundredfold more solemn in the glare of sunlight, rather than ever is seen under tropical skies This is the "silence of death;" not the hum of a bird, not the buzz of an insect, not the distant noise of a human being Silence palpable You do not feel drowsy, though it is midnight, you feel a strange fear creep over you as if in a nightmare; and dare

not speak; you think what if it should be time that the world is in its last sleep, and you are the last living ones, yourselves on the verge of the Eternal Ocean

To some standing on the highest part of the plateau a thousand feet above the sea, and looking away to that great unknown Arctic Ocean, it has seemed as if they had come to the end of the earth; that they were gazing upon the confines of the eternal regions; that they saw in the distance the outlines of the land of which it is said "there is no night there." —A Traveller.

पहले दिन, सन् १८६१ की १ ली जूलाई को, रात के समय, ६ बजे के बाद, दिव्य सूर्य के प्रकाश में, नार्वेजियन जहाज़ ओलफ़क्यूरे, पर चढ़ कर ट्रान्जेम से रवाना हुआ। दूसरे दिन, सवेरे, नामसस-फ़ियोर्ड (Namsos Fjord) और छोटा सा नामसस नगर देख पड़ा। यहाँ जहाज़ ठहरा। चार बजे के समय टारघाटन (Torghatten) द्वीप का ८०० फुट ऊँचा पहाड़ और उसके अन्तर्गत ३०० फुट लम्बा और ६२ से २४६ फुट तक ऊँचा स्वाभाविक टनेल देखने गये। इस भारी छिद्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे अनेक प्रकार की अस्वाभाविक बातें कही जाती हैं। किन्तु वैज्ञानिक लोग इस बारे में अभी तक कुछ निश्चय नहीं कर सके। इस छिद्र के भीतर से सामने के समुद्रखण्ड और द्वीप आदि का दृश्य बहुत ही सुन्दर देख पड़ता है। एक विद्वान् यात्री इस विषय में लिखता है—"The view of the sea with its countless islands and rocks seen from this gigantic telescope is indescribably beautiful and impressive."

ऊँचे पर चढ़ने उतरने के कारण थक कर साढ़े छः बजे जहाज़ की ओर लौटा। जाते आते समय पास के गाँवों के लड़के लड़की आकर दूध और लेमोनेड बेच गये थे। उससे बहुत कुछ आराम मिला। एक

घंटे के वाद ३०० फुट ऊँचे सात वहनों के पहाड़ होकर आधी रात को आर्कटिक-केन्द्र (Arctic Circle) मे उतरा। इस समय यहाँ सूर्य अच्छी तरह, अर्द्धस्तिमितभाव से, देख पड़े। किन्तु वह सूर्यविम्ब का प्रतिफलित (Refracted) दृश्यमात्र था। इस जगह समुद्रगर्भ से ३,७५० फुट ऊँचा एक पहाड़ ऊपर को निकला है। दूर से ठीक क्लोकधारी सवार की तरह जान पड़ता है; इसी से उसका नाम है अश्वारोही पहाड़ (Hestmandso or Horseman Mountain like a cloaked horseman.)। इस स्थान के वाद उपकूल का भीम सौन्दर्य (Savage grandeur) विशेप रूप से चित्त को अपनी ओर खींचनेवाला है। तीसरे दिन, सवेरे, लफ़ोडेन् (Loffoden) द्वीप-पुञ्ज की तरफ़ गया और देखभाल कर लौट आया। अत्यन्त विचित्र दृश्य देखने को मिला। उसके वाद हेनिंगसवार (Henningsvoer) मिला। यह कठमछली पकड़ने का एक प्रधान अड्डा है। वसन्त-ऋतु में यहाँ वीस हज़ार से ऊपर धीवर जमा हुआ करते हैं। सवको सरकारी देख-रेख मे काम करना पड़ता है। चार वजे के समय अत्यन्त मनोहर "राफ्ट-सुण्ड" अर्थात् तंग जल-पथ के दोनों ओर खड़ा पहाड़ देख पड़ा। साढे ग्यारह वजे रात को वाहर समुद्र मे छोटी छोटी तिमि-नामक मछलियों की क्रीड़ा देखने को मिली। आज ठीक आधी रात को उज्ज्वल सूर्य का दृश्य वहुत ही मनोहर देख पड़ा। कप्तान ने एक घंटा पहले ही से जहाज़ को वाहर समुद्र में लाकर खड़ा कर दिया था। सव लोग सूर्य की ओर एक-टक ताक रहे थे। सूर्यदेव उत्तर-पश्चिम से क्रमशः उत्तर की ओर चले। ठीक १२ वजे जहाज़ पर तोप दागी गई। उस समय सूर्य ठीक उत्तर मे थे। उसके वाद क्रमशः उत्तर-पूर्व की ओर जाकर वह ऊपर चढ़ने लगे। हमारे देश में,

सर्दियों में, साढ़े नौ या दस बजे सूर्य जहाँ पर रहते हैं, यहाँ ठीक १२ बजे उतनी ही ऊँचाई पर देख पड़ते हैं। तोप दगते ही कप्तान ने सब जातियों के झण्डे उड़ाये। सबके ऊपर अमेरिकन झण्डा था। कारण आज इस समय ४ थी जूलाई शुरू हुई थी। इसी दिन अमेरिका में स्वाधीनता की घोषणा हुई थी। जो यात्री अमेरिकन थे वे टोपी उतार कर हुर्रे-ध्वनि करते हुए कप्तान को, उसकी इस समझदारी के लिए, धन्यवाद देने लगे। रात को किसो को नींद नहीं पड़ी। इस जहाज़ में महातीर्थ के यात्री ६५ आदमी थे। स्त्री-पुरुष और बालक-बालिका मिलाकर सब ग्यारह देशों—इँगलेंड, फ्रांस, बेलजियम, हालेंड, डेनमार्क, नार्वे-स्वीडन, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, अमेरिका और भारतवर्ष—के आदमी थे। मेरे सिवा सब गौरांग थे। अमेरिकन सबसे अधिक थे। अमेरिकन लोगों को पृथ्वी-पर्यटन का बड़ा शौक होता है। दो स्त्रियाँ भारत में घूम आई थीं और मर्द आगामी जाड़े मे जानेवाले थे। यात्रियों में चार-पाँच अमेरिकन पृथ्वी की प्रदक्षिणा कर आये थे, अब अन्त को नार्थ-केप की यात्रा करके अपने देश को जानेवाले थे। अमेरिकन स्त्री-पुरुष सदा मेरे साथ भारत के बारे मे बातचीत करना पसन्द करते थे। एक आस्ट्रेलिया-निवासी आयरिश अमेरिकनों के आगे भारत-निवासी प्रजागण की झूठी निन्दा किया करता था। वे लोग उसकी इस बात से चिढ़ कर मुझे उसके पास ले गये और मुझसे उसकी झूठी शिकायतों का प्रतिवाद करने के लिए अनुरोध करने लगे। मुझसे बातचीत होने के उपरान्त वह आयरिश चुप हो रहा और शायद सदा के लिए अपनी यह बुरी आदत छोड़ दी होगी।

आधी रात का सूर्यदर्शन।

स्थान	प्रथम दर्शन			शेष दर्शन		
	ऊपरी भाग	मध्यभाग	सम्पूर्ण	सम्पूर्ण	मध्यभाग	ऊपरी भाग
उत्तरान्तरीप	११ मई	१२ मई	१३ मई	३० जूलाई	३१ जूलाई	१ अगस्त
हामरफ़ेस्ट	१३ मई	१४ मई	१५ मई	२७ जूलाई	२८ जूलाई	२९ जूलाई
वाद्सो	१५ मई	१६ मई	१७ मई	२६ जूलाई	२७ जूलाई	२८ जूलाई
ट्रामज़ो	१८ मई	१९ मई	२० मई	२२ जूलाई	२४ जूलाई	२५ जूलाई
वोडो	३० मई	१ जून	३ जून	८ जूलाई	१० जूलाई	१२ जूलाई

उत्तरान्तरीप में ११ मई से १ अगस्त तक वरावर दिन ही वना रहता है। हम लोगों को पूरे छः दिन तक दिन-रात सूर्य का ही प्रकाश देखने को मिला।

चौथे दिन सवेरे ट्रामज़ो (Tromso) पहुँच कर, देश के भीतर सदा वर्फ़ से ढके वार्च-वृक्ष-पूर्ण पहाड़ी रास्ते से, घोड़े पर चढ़ कर, ट्राम्सडाल (Tromsdal) गाँव मे लाप लोगों (Lopps) का अड्डा देखने को गया। लाप लोग हमारे देश के अरवी वनजारों की तरह झुण्ड वना कर घूमते रहते हैं। लाप लोगों के झोपड़े, वल्गा-मृगों के झुंड, कुत्ते, माता के गले में लटक रही झोली में पड़ा हुआ

बच्चा इत्यादि बड़ी विचित्र बातें देखने को मिलीं। लाप लोग नार्वे-स्वीडन और रशिया उत्तरांश में रहते हैं, इसी लिए यूरोप के इस प्रदेश को लाप-लैंड कहते हैं। लाप लोग संख्या मे ३०,००० से अधिक न होंगे। ये मंगोलियन जाति के हैं। ये नाटे क़द के हृष्ट-पुष्ट, वलिष्ठ और विकट सूरत के होते हैं। ये अपने झोपड़े (गाम्) पत्थर के टुकड़ों, घासों और वार्च-वृक्ष के वक्लों से बनाते हैं। धुआँ निकलने के लिए चोटी पर एक गोल छेद बना देते हैं। इनके झोपड़ों में हर घड़ी आग सुलगा करती है और काफी पीने के गर्म जल तैयार रहता है। इसी चूल्हे (अरन) के पास सब परिवार लेटा रहता है। एक किनारे आने-जानेवाले के लिए इज़्ज़त का आसन "बोयासो" पड़ा रहता है। लाप लोग रोएँदार चमड़े के तरह तरह के जूते (स्काल्को, मागर, स्कालय आदि), मृग-दुग्ध की खीर और सींग के चमचे आदि बेंचने के लिए समुद्र-तट पर लाते हैं। गर्मियों की ऋतु भर समुद्र-तट पर रहकर ये लोग सर्दियों में अपने मुल्क के भीतर चले जाते हैं। वल्गा-मृग खूब बड़े बड़े होते हैं। उनके सींग मख़मल की तरह कोमल रोम-युक्त होते हैं। चलते समय उनके पैरों के घुटनों में एक प्रकार की चटचटाहट होती है। सप्ताह में केवल दो वार मादा दुही जाती है। दूध खूब घना होता है। ये मृग लाप लोगों को वैसे ही प्यारे होते हैं जैसे भारतनिवासियों को गऊ। इन मृगों से ही उन्हें खाने-पीने और पहनने को मिलता है। येही उनकी जीविका हैं। पहले लाप लोग इन मृगों का शिकार करते थे। लेकिन अब पालने लगे हैं और इस प्रकार उन्होंने इन मृगों को अपनी स्थायी सम्पत्ति बना लिया है। इस तरफ़ होने-वाला सफ़ेद सेवार ही इन मृगों का मुख्य आहार है। ये पैरों से ४। ५ फ़ुट वर्फ़ खोद कर इस सेवार को बाहर निकालते और खाते

हैं । इसके सिवा उन्हें तृप्ति नहीं होती । भारत की उत्तर-पूर्व सीमा पर रहनेवाले असभ्य नागा लोगों की तरह लाप लोग भी चिराग़ नहीं जलाते । आग जला कर ही दीपक का काम निकाल लेते हैं । ट्रामूज़ो नगर से फ़ोटोग्राफ़र लोग मेरे साथ गये थे, उन्होंने लाप लोगों के झोपड़ों के सामने हम लोगों की तसवीर उतारी । पृथ्वी की अन्यान्य असभ्य जातियों की तरह तसवीर उतरवाने में ये लोग भी राज़ी नहीं होते । बड़ी मुश्किल से रुपया देकर एक आदमी को एक मृग लेकर अपने साथ खड़े होने के लिए हम लोग राज़ी कर सके ।

लाप लोगों से सबने कुछ-न-कुछ ख़रीदा । दोपहर तक घूम कर समुद्र-तट को लौटे । उसके बाद बोट पर चढ़कर ट्रामूज़ो नगर देखने गये । यह टापू के ऊपर बसा हुआ है । यहाँ ७,००० के लगभग लोग रहते हैं । यहाँ एक टाउनहाल, रोमकैथलिक गिर्जा और म्यूज़ियम है । बहुत से जहाज़ यहाँ से तैयार होकर उत्तर-समुद्र में तिमि, सील आदि मछलियों को पकड़ने के लिए रवाना होते हैं । जनवरी के महीने यहाँ का ताप-मान २३ डिग्री फ़ार्नेहिट तक उतर आता है । शाम के छः बजे रवाना होकर दस बजे के समय स्कारन (Skarran) पहुँचे । वहाँ डोंगी पर चढ़ कर तिमि-तैल का कारख़ाना और चार मरे हुए तिमि-मत्स्य देखने गये । पाँचवें दिन, सवेरे, हामरफेस्ट (Hammerfest) में पहुँचे । पृथ्वी के उत्तर-सीमान्त-प्रदेश का यही अन्तिम नगर है । इसके बाद और शहर नहीं है । इसके आगे उत्तर में पन्द्रह कोस पर केवल एक क़िला बना हुआ है । उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहाँ केवल ७७ आदमी रहते थे और कुछ दिन पहले यहाँ पर एक साधारण गाँव था । अब न्यूनाधिक ३००० आदमी यहाँ रहते हैं । नगर में काड़-

लीवर-आयल इतना तैयार होता है कि सड़कों और गलियों में सब जगह उसी की तीव्र गन्ध भरी रहती है। सन् १८२३ में, सर एडवर्ड साबिन ने यहाँ अपनी प्रसिद्ध पेण्डुलम-प्रक्रिया करके दिखाई थी। नगर के किनारे मेरिडियन-स्तम्भ (Meridian Column) देखने गया। स्तम्भ के ऊपर एक भूगोलक है। स्तम्भ के एक ओर लैटिन में और दूसरी ओर नार्वेजियन-भाषा मे एक एक लिपि है। लैटिन भाषा की ओर लिखा है— (Terminus Septentornolis Arcus Meridıan 25.20 ′ quem In de ab Oceano Arctico per Norvegiam Succiam et Rosseam gussu et auspicus et auspicus Reges Augustessum Ascar I. et Imperatorum Augustis-sunosum Alexandri I. Annis , MDCCCXVI ad MDCCCLII Continuo labore emensisum trium gentium Latitudo 70. 40′. II″. 3‴ E. Det Nordend-liche Ende punct of en meridienbue paa 25.20 fra det Nordlige Ocean til Donan Floden igjennem Norge, Sverige. Og Rusland efter Foranstaltning of aus I. ved uafbrudt Arbende fra 1816 til 1852 udmaalt af de tre Nationer geometrer. Brede 70. 40. II. 3″m.

अर्थात् नार्वे-स्वीडन और रशिया के ज्यामितिक पण्डितों ने एकत्र होकर नार्वे के राजा प्रथम आस्कार और रशिया के दोनों सम्राटों—प्रथम अलेकज़ण्डर और प्रथम निकोलस के राज्यकाल में, उनकी अनुमति के अनुसार, सन् १८१६ से १८५२ तक लगातार परिश्रम करके, आर्कटिक महासागर से डान्यूब नदी के मुहाने तक माप की और मेरिडियन निर्द्धारित किया है। एक बजे के समय यहाँ से रवाना होकर प्राय: दस लाख पक्षियों से पूर्ण पक्षी-पहाड़ के पास पहुँचे।

यहाँ पर जहाज़ रोक कर तोप की आवाज़ करके पक्षी उड़ाये गये। शाम के सात बजे उत्तरान्तरीप में पहुँचना हुआ। द्वारका जाने के रास्ते मे, द्वारकापुरी में पहुँचने के एक घंटा पहले दूर ही से मन्दिर की चूड़ा देखकर यात्री लोग "द्वारकानाथ की जय", "मीरा बाई की जय", "पीपा भगत की जय" कहकर आनन्द प्रकट करने लगे थे और उनकी इस भक्ति और आनन्द को देख कर मेरे भी आँसू बह चले थे। आज यहाँ भी छः बजे के कुछ पहले ही दूर से 'केप' को देखकर जब यात्रीगण 'केप, केप,' चिल्लाने लगे तब मुझसे भी उनके इस महान् आनन्द में शरीक हुए बिना नहीं रहा गया। मैंने भी सबके साथ जहाज़ के ऊपर जाकर एक बार उत्तर-केन्द्र की अनन्तता की ओर देख कर अन्तरीप मे स्थित समुद्र के भीतर से ऊपर उठे हुए पहाड़ को देखा। हृदय भर आया और मैं एकान्त केबिन मे जाकर खूब रोया और कहने लगा—"हे नाथ! अब यह आनन्द छोटे से इस हृदय में नहीं समाता! इस नराधम पर आपने ऐसी करुणा दिखाई! कहाँ भारत और कहाँ चिरसूर्य-शोभित अनन्त कालसागर के द्वार-रूप इस उत्तर-केन्द्र के सामने पहुँचना! यह सब आपही की कृपा है। दो महीने पहले यहाँ तक आने का ख़याल भी मुझे न था। एकाएक आपने मुझे यहाँ पहुँचा दिया। आपकी दया और आपकी कीर्त्ति धन्य है।" इसके बाद ऊपर आकर देखा, 'केप' क्रमशः निकट आता जाता है। इस समय लाङ्गफेलो की एक कविता मुझे याद आगई :

"And then uprose before me,
Upon the water's edge
The huge and haggard shape
Of that unknown North Cape
Whose form is like wedge"—Longfellow.

सामने जाकर जहाज़ लगा। उस समय वहाँ घोर जाड़ा था। अधिक वोझे के ख़याल से अधिक गर्म कपड़े मैं लाया नहीं था। कप्तान ने अनुग्रह करके एक गर्म कपड़ा मुझे दिया। अव यह चिन्ता हुई कि हज़ार फ़ुट खड़ी वर्फ़ की चढ़ाई में कैसे चढ़ूँगा। रात को १० वजे के समय दयामय भगवान् का नाम लेकर और लोगों के साथ वोट पर चढ़ा। जिनको वहाँ जाने की हिम्मत नहीं हुई, उन्होंने वहुत कुछ मना किया; किन्तु उनकी सुनता कौन? मुझे तो जैसे कोई पीछे से धक्का देकर उसी ओर लिये जा रहा था। दस औरतें और इकतीस मर्द चले। एक डिनामा का और एक फ़ान्स का आदमी कई वार फिसल कर गिर पड़ने के कारण वहुत दूर तक पशुओं की तरह हाथों और पैरों से चले। एक मोटी सी अमेरिकन स्त्री वहुत ही दिक़ हुई, तव भी ख़लासी की सहायता से चली ही गई। नीचे से ऊपर तक एक मोटी रस्सी वँधी हुई है। उसी को पकड़ कर लोग चढ़ते हैं। इसके विना ऊपर चढ़ना वहुत ही कठिन है। रस्सी के सहारे प्रायः डेढ़ घंटे में हम लोग ऊपर पहुँचे। आधे मील से कुछ अधिक सीधी राह पर चल कर राज-मनूमेन्ट के निकट उपस्थित हुए। मनूमेन्ट मे लिखा हुआ है— "Kong Ascar II. Besleg Nordkap a 9 Juli 1873." अर्थात् राजा द्वितीय आस्कार ने सन् १८७३ की ९ जूलाई को नार्थकेप के दर्शन किये। यहाँ एक गोल काठ का घर वन रहा था। यहाँ शाम्पेन और केप के फ़ोटो विकते हैं। यहाँ पहाड़ों पर इसी तरह दूध, लेमोनेड और स्थानीय फ़ोटो विका करते हैं। पर्वत पर चढ़ कर साथ चलनेवाले एक वारह वरस के अमेरिकन वालक ने मुझसे पूछा—"और भी उत्तर में आगे वढ़ने से कहाँ पहुँचेंगे?" मैंने कहा—"क्रमशः केन्द्र-पार होकर तुम्हारे देश मे पहुँच जायँगे।" यह सुन कर वह

बालक चौंक पड़ा। उसने कहा—"तो क्या हम पृथ्वी के छोर पर पहुँच गये? अच्छा, यहाँ से हम अन्य ग्रह में जा सकते है?" मैंने कहा—"नहीं।"

रात के एक बजे हम लोग वहाँ से नीचे उतरे। उतरना चढ़ने की अपेक्षा अधिक भयानक है। उत्तरान्तरीप की स्थिति ७१°१०', डिग्री लैटीट्यूड में स्थित है। किन्तु यहाँ आमोनाइट श्रेणी के शम्बूकों के ढाँचे इतने पाये गये हैं कि उससे वैज्ञानिक लोगों को यह मानना पड़ा है कि किसी समय यह स्थान गर्म मुल्क में था। वर्त्तमान समय मे मेक्सिको से गर्म सोता बहता है; इस कारण उपकूल में उतना प्रबल जाड़ा नहीं होता। छठे दिन बहुत सवेरे वहाँ से लौटे और प्रसिद्ध रमणीय लिङ्गेन फ़ियोर्ड (Lyngen Fjord) की सैर की। समुद्र-जल के दोनों ओर दो से छः हज़ार फ़ुट तक ऊँचा खड़ा पहाड़ है। चोटी पर से चाँदी के साँपों के समान अगणित झरनों के जल की धारायें नीचे बह रही हैं। पहाड़ को स्वर्णयुग के ग्लेसियर ने इस तरह काटा है जैसे आरे से लकड़ी चीरी जाती है। एक अद्भुत दृश्य है। यहाँ पर पहाड़ के कलेवर मे अनेक भूतत्त्व-सम्बन्धी प्रमाण (Geological evidence) देखने को मिलते हैं। रात को ११ बजे अनेक तिमि-मत्स्य जल के ऊपर फूत्कार के साथ दौड़ते-धूपते देख पड़े। स्कारन कारख़ाने के तिमि-जहाज़ (Whaler "Duncan Grey") ने हमारे सामने ही एक मछली को गोली मारकर पकड़ लिया। कप्तान ने हमारे जहाज़ को रोक लिया। उसके बाद घायल मछली को ज़ंजीरों से बाँधकर वह 'डनकनग्रे' जहाज़ हमारे पास ही से होकर निकल गया। स्कारन-कारख़ाने के मालिक की स्त्री हमारे जहाज़ पर ट्राञ्जेम में सवार होकर स्कारन आई थीं। इस 'डनकनग्रे' जहाज़ मे

उनके स्वामी थे और उनके साथ वह भी थीं। इसी से 'डनकनग्रे' जहाज़ को देखने का हमें विशेष सुभीता होगया। आज यहाँ अन्तिम आधी रात को पूर्ण-सूर्य-दर्शन होगा। इसी से सब लोग रात भर जगे और ऊपर डेक पर सब मिलकर गपशप लड़ाते और खेल-तमाशे करते रहे।

सातवें दिन सवेरे फिर ट्राम्ज़ो-नगर में आगये। यहाँ आकर इधर के देखे हुए दृश्यों के फ़ोटो और कुछ वहाँ की स्मारक वस्तुएँ ख़रीदीं। यहाँ से भी रवाना होकर आठवें दिन सवेरे स्वार्टिसेन (Svartisen) में पहुँचे। १० बजे पृथ्वी का एक प्रधान ग्लेसियर देख आये। २२ कोस लम्बे, ६ से १३ कोस तक चौड़े, ४००० फ़ुट ऊँचे पर्वत-प्लाटो (Mountain Plateau) भर में, जगह जगह पर ३०० फ़ुट घना, एक वर्फ़ का टीला है। इसी का नाम है ग्लेसियर। समुद्र-तीर से यह दृश्य कैसा मनोहर और साथ ही भयङ्कर जान पड़ता है, सो शब्दों के द्वारा नहीं वतलाया जा सकता। पृथ्वी के सिवा और कोई इस बात की साक्षी नहीं दे सकता कि कितने दिनों से यह टीला इसी तरह है ; स्वर्णयुग से ही इसका होना बहुत सम्भव है। जगह जगह पर गहरे गढ़े हैं, उनमें सूर्य का प्रकाश सुन्दर नील-आभा-युक्त देख पड़ता है। पहले ही कहा जा चुका है कि ऐसे ग्लेसियरों के समुद्र की ओर जाने से ही पहाड़ कट जाते हैं और उनसे फ़ियोर्ड वन जाते हैं। पूर्वोक्त अमेरिकन वालक ने इस ग्लेसियर के वारे में पूछा कि यह कितने दिनों का होगा ? मैं कुछ उत्तर न दे सका। इसी समय स्वीडन के राजवैद्य (Royal Physician) डाक्टर सालिन ने मेरी ओर से उत्तर दिया कि "It was made when Adam was a boy." अर्थात् वावा आदम के लड़कपन में इसकी सृष्टि हुई थी। आज

रात को वहुत थोड़ी देर तक छिपे रहकर सूर्यदेव फिर निकले । नवें दिन दोपहर को ट्राञ्जेम को लौटे । जिस आनन्द और सुख से यह तीर्थयात्रा गुज़री वैसा आनन्द और सुख और किसी यात्रा में नहीं प्राप्त हुआ । इस सार्वभौमिक भारी परिवार का चित्र सदा के लिए हृदय-पटल पर अंकित होगया । जी चाहता था कि यह यात्रा किसी तरह समाप्त ही न हो । यात्रियों मे सभी हँसमुख खुश-मिजाज और भले आदमी थे। पृथ्वी के भिन्न भिन्न देशों के ६५ आदमी इतने दिनों एक परिवार की तरह एक जगह खाते-पीते, उठते-बैठते और बातचीत करते रहे । संसार मे इससे वढ़ कर प्रसन्नता की बात और क्या हो सकती है ? इन आठ दस दिनो का बीतना तो जैसे जान ही नहीं पड़ा । जितना समय सोने में निकल गया वह व्यर्थ ही बीत गया जान पड़ा । एक घड़ी बैठ कर लिखने का समय नहीं मिला । एक दृश्य समाप्त न होने पाता था कि दूसरा सामने आ जाता था । जहाँ जहाँ किनारे उतर कर देखने जाना होता था वहाँ वहाँ उसकी सूचना तीन घंटे पहले दे दी जाती थी । नार्वे के पश्चिम कूल में बराबर टापू और फ़ियोर्ड देखने को मिले । जाते समय एक खाड़ी से गये थे । आते समय दूसरे मार्ग से फ़ियोर्ड के भीतर होकर जहाज़ गया । बहुत से अनिर्वचनीय अद्भुत दृश्य देखने को मिले । समुद्र स्थिर गंभीर था । तब भी मध्याह्न भोजन के समय जहाज़ ठहरा दिया जाता था । आराम के प्रबन्ध में कुछ भी कसर न थी । सब लोगों से विदा होते समय बड़ा क्लेश हुआ ।

तीर्थयात्रा समाप्त हुई । उत्तरान्तरीप के ऊपर खड़े होकर सूर्य के प्रकाश में केन्द्र की ओर देखने से मन मे जो भाव उत्पन्न होता है उसका वर्णन शायद ही कोई कर सके । पण्डित लोगों के मन में जो भाव उत्पन्न हुए उनका वर्णन आगे, उनकी भाषा मे ही, उद्धृत

किया जाता है। मुझ मूर्ख की समझ में तो यह आया कि मृत्यु तो एक दिन होना ही है, किन्तु बराबर विराजमान सूर्यनारायण के सामने अनन्त के द्वारस्वरूप इस महातीर्थ मे अगर शरीर छूट जाय तो अमर-धाम का द्वार खुला हुआ ही मिले। बहुत ज्ञानी पण्डित इस बारे में बहुत तरह की बातें लिख गये हैं। नीचे केवल दो विद्वानों की राय लिखी जाती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि "एक बार जो यहाँ आ गया है उसके मन मे यहाँ का दृश्य सदा अंकित रहेगा। सारा यूरोप और आफ्रिका (पहरेदारों को छोड़ कर) जब सो रहा है उस समय हम, सूर्यदेव जहाँ का एक छोटा सा दीपक-मात्र हैं, उस अनन्त के मन्दिर के सामने खड़े हैं।

"Behind is Europe with all its diversities of race with its seething masses of humanity, with its great capitals, its business and passions, its toils, its cares In front is the calm slowly heaving ocean, possessing to the eye no limit and known to possess no shore but these masses of ice hitherto impervious to all that human skill and courage and endurance can effect And high in the heavens, the sight of its circuit impeded by no island or mountains the eye can watch unobstructed by the successive revolutions of the sun through the long weeks of the Arctic day. It is one of the spots which when visited photograph themselves for ever on the memory and become one of the happy and insuperable associations of life."—A traveller

"Silence, as of death, for midnight, even in the Arctic latitude, has its character, nothing but the granite cliffs, ruddy-tinged, the peaceable gurgle of that slow heaving Polar Ocean, over which in the utmost North the great Sun hangs low, as if he too were slumbering Yet is his cloud-couch wrought of crimson and cloth of gold. Yet does his light stream over the mirror of waters, like a tremulous fire-pillar, shooting down-

wards to the abyss, and hide himself under my feet. In such moments solitude also is invaluable, for who would speak or be looked on, when behind him lies all Europe and Africa fast asleep, except the watchman, and before him the silent immensity, and palace of the eternal whereof our sun is but a porch-lamp ?"—Carlyle

आर्कटिक दिन तो देखा, मगर रात नहीं देखी। किन्तु वहाँ की रात्रि के सम्बन्ध मे यूरोप, अमेरिका और अपने देश में लोगों ने अनेक प्रश्न किये। पाठकों के जानने के लिए जहाज़ के कप्तान और अन्यान्य कर्मचारियों के मुँह से सुना हुआ हाल लिखता हूँ। उसके साथ ही रूस के वैज्ञानिक यात्री नासिलाफ और वर्त्तमान सुप्रसिद्ध पण्डित नान्सेन का किया हुआ वर्णन भी नीचे उद्धृत किया जाता है। अक्तूबर तक दिन घटता रहता है। नवम्बर के पहले सप्ताह मे एक-दम सूर्यास्त हो जाता है और कई दिन तक गोधूलि-वेला का ऐसा झुटपुटा बना रहता है। उसके बाद हर घड़ी अँधेरी रात का राज्य बना रहता है। यह हालत जनवरी के दो सप्ताह तक बनी रहती है। उसके बाद फिर कई दिन तक झुटपुटा बना रहता और उसके उपरान्त सूर्योदय हो जाता है। इस रात्रिकाल में अरोरा-बोरियालिस (Aurora Borealis) के प्रकाश से बड़ा लाभ होता है। यह अद्भुत वैद्युतिक प्रभा विधाता की एक विशेष सृष्टि है। कभी कभी यह बराबर पाँच छः दिन तक बनी रहती है। इसकी प्रभा वर्णन से परे है। कप्तान कहता था कि लाखों तरह तरह की आतशबाज़ियाँ एक साथ छुड़ाने से जिस प्रकार का प्रकाश हो सकता है उससे ही मिलती-जुलती यह आभा होती है। नान्सेन (Nansen) ने अपनी

पुस्तक (Farthest North) में जो लिखा है वह यहाँ उद्धृत किया जाता है।

"Nothing more wonderfully beautiful than an Arctic night It is dreamland, painted in the imagination's most delicate tints, it is color etherealised One shade melts into the other, so that you cannot tell where one ends and the other begins, and yet they are all there. No forms—it is all faint, dreamy color-music, a far-away, long drawn-out melody, on muted strings. The sky is like an enormous cupola, blue at the zenith, shading down into green, and then into lilac and violet at the edges Presently the Aurora shakes over the vault of heaven its veil of glittering silver—changing now to yellow, now to green, now to red It spreads, it contracts again in restless change, next it breaks into waving mani-folded hands of shining silver, over which shoot billows of glittering rays, and then the glory vanishes. Presently it shimmers in tongues of flame over the very zenith; and then again it shoots a bright ray right up from the horizon until the whole melts away in the moonlight. Here and there are left a few waving streamers of light, vague as foreboding, they are the dust from the Aurora's glittering cloak but now it is growing again; new lightnings shoot up; and the endless game begins afresh."

किसी किसी रात को लन्दन के आकाश में अरोरा की रक्त वर्ण आभा बहुत अच्छी तरह देख पड़ती है।

नार्वे की साधारण अवस्था। नार्वे का स्थानीय नाम है नार्जे (Norge)। देशीय भाषा का नाम है नार्स्क (Norsk)। अँगरेज़ी के साथ बहुत सी बातें मिलती हैं। जैसे—we—vi, they—de, daughter—datter, bread—brod इत्यादि। अँगरेज़-जाति के साथ इनके पूर्व पुरुषों का घनिष्ठ सम्बन्ध था। यूरोपखण्ड के

सब स्थानों की भाषाओं में यह बात सीखनी पड़ी कि "दाहिने ओर जायँ कि बायें ?"। यह न सीखता तो राह भूलकर बड़ी मुश्किल में पड़ता। फ्रेञ्च-भाषा में दाहिने और बायें को 'आड्रोया' और 'आगोश' कहते हैं। इटलियन भाषा में 'डेस्ट्रा' और 'सिनिस्ट्रा' कहते हैं। जर्मन-भाषा में 'रेथ्ट' और 'लिंकस' कहते हैं। "मैं यहाँ की भाषा नहीं जानता" यह भी हर एक देश की भाषा के शब्दों में सीखना पड़ा था। इस देश का विस्तार १,२३,३०० वर्ग-मील है। अर्थात् दोनों ब्रिटिश-द्वीप इससे कुछ बड़े हैं। किन्तु यहाँ के निवासियों की संख्या बहुत कम है। सन् १९१० की मर्दुमशुमारी के अनुसार न्यूनाधिक पचीस लाख आदमियों की बस्ती है। सारा देश जंगलों और पहाड़ों से परिपूर्ण है। नार्वे में छोटे और बड़े सब मिलाकर ३,००० के लगभग कुण्ड या झीलें हैं। पश्चिम उपकूल में बहुत से छोटे छोटे टापू हैं। साधारण-शिक्षा के लिए यहाँ विशेष व्यवस्था है। सन् १८१४ तक यह देश डेनमार्क के अधीन था। इस समय भी, यद्यपि यह स्वीडन से मिला दिया गया है, परन्तु इसका शासन स्वतन्त्ररूप से इसी देश की पार्लियामेंट के द्वारा होता है। रास्तों की रक्षा और मरम्मत का आईन यहाँ नये ढंग का है। रास्ते के किनारे जिन लोगों की ज़मीन है वे अपनी हद के भीतर की सड़क को दुरुस्त करवाने के लिए बाध्य हैं। नार्वे की साधारण प्रजा यूरोप के अन्यान्य स्थानों की अपेक्षा अच्छी हालत में और सुखी है। ब्रिटिश-साम्राज्य की तरह अमीरी और ग़रीबी की चरमसीमा यहाँ देखने को नहीं मिलती। इससे एक और विशेष उपकार यह है कि वंशमर्यादा की अलौकिक नीतिवाली शक्ति यहाँ न होने से ऊँचाई-निचाई का पचड़ा यहाँ नहीं है। यहाँ भिक्षुक को अगर एक पैसा दीजिए तो वह भी देनेवाले के बराबर खड़े होकर उससे हाथ मिलाकर कृतज्ञता

जताने आता है और उस भिक्षुक से हाथ न मिलाना इन्सानियत के खिलाफ़ समझा जाता है। चारों ओर घने जंगलों, पहाड़ों, झरनों आदि के गंभीर प्राकृतिक दृश्य हैं। उनके बीच मे रहने के कारण यहाँ के मनुष्य चिन्ताशील, धर्मभीरु, शान्त और धीरप्रकृति के होते हैं। अतिथिसत्कार करने में ये अव्वल नम्बर होते हैं। यूरोप के और किसी देश में अभ्यागत की ऐसी सेवा नहीं की जाती। इस देश के व्याह आदि संस्कारों में इस समय भी कुछ प्राचीन समय की रीतियाँ प्रचलित हैं। मतलब यह कि बाहरी सभ्यता का कृत्रिम जीवन अभी तक नार्वे को सोलहो आने ग्रस नहीं सका। यूरोप के अधिकांश स्थानों में पवन-यन्त्र (Wind-mill) का व्यवहार बहुत अधिक है। इस देश में जल-यन्त्र (Water-mill) का प्रचार अधिक है। झरनों का तो कहना ही क्या है, प्रबल जलस्रोत मात्र पर एक कल खड़ी करके प्रवाह की शक्ति से काम लिया जाता है।

सन् १९०५ से नार्वे एक स्वतन्त्र राज्य होगया है। यहाँ की सैन्य-संख्या १,२०,००० है। सन् १९१३ में सोलह करोड़ क्रोनर के लगभग राज्य का कर वसूल हुआ था। राज्य पर छत्तीस करोड़ क्रोनर से भी अधिक कर्ज़ है। अठारह क्रोनर का एक पौण्ड होता है।

स्वीडेन ।

उत्तर-अन्तरीप से लौट आने के तीन दिन बाद नार्वे की राजधानी क्रिश्चियानिया से शाम को रेल पर चढ़कर गटेनवर्ग को रवाना हुआ। समुद्रतट पर जब तक रेल चलती रही तब तक वहाँ के छोटे छोटे टापुओं की मनोहर शोभा देखने को मिली। यहाँ की रेलगाड़ियों में मुसाफ़िरों को सब तरह का आराम मिलता है। यहाँ के सेकिंड क्लास की गाड़ियों मे जैसा आराम मिलता है वैसा अन्य किसी देश की सेकिंड क्लास की गाड़ियों में नहीं मिलता। नार्वे और स्वीडेन की रेल्वे में जहाँ जहाँ भोजन का प्रबन्ध है वहाँ गाड़ी बहुत देर तक ठहरती है। स्टेशनों और होटलों की व्यवस्था भी नये ढंग की है। घर मे एक किनारे खाने-पीने का सामान टेबिल पर सजाया हुआ रक्खा रहता है, जो जितनी चीज़ चाहता है वह उतनी ले आता है, परोसने के लिए कोई नौकर-चाकर नहीं है। केवल एक औरत काउन्टर (कटहरे) में खड़ी हुई है; भोजन के उपरान्त पेट-पूर्ति का जो मूल्य वहाँ निर्दिष्ट है वह उसे देकर चले आइए। यह भी सुना कि नार्वे के देहातों मे जो छोटे छोटे इन (होटल) हैं उनमें खाने-पीने की चीज़ों की क़ीमत ग्राहकों की मर्ज़ी के माफ़िक हुआ करती है। अर्थात् वे लोग जिस चीज़ का जो उचित मूल्य समझते हैं वह देते हैं। ग्राहक लोग भी कम क़ीमत नहीं देते। यात्रियों को अगर कोई चीज़ ख़राब या यथेष्ट नहीं

मिलती तो वे वहाँ की मन्तव्य-पुस्तक में, होटल के अधिकारी को जताने के लिए, अपनी राय लिख जाते हैं। नार्वे के निवासी अभ्यागतों का बहुत ही आदर करते हैं। हमारे देश में शायद ऐसी उदारता देखने को भी न मिलती होगी।

गटेनवर्ग। दूसरे दिन सवेरे गटेनवर्ग पहुँचा। इसका स्थानीय नाम है जोतेवोर्ज (Gotebarg)। अँगरेज़ी में इसे Gottenburg कहते हैं। होटलों में अधिकतर औरतें ही काम करती हैं और वहाँ के भद्रपुरुष सबके सामने उनसे कुव्यवहार करने मे कुछ भी नहीं हिचकते। इस सम्बन्ध मे मैंने जो कुछ देखा उसे स्वयं वर्णन न करके एक सुप्रसिद्ध यात्री की राय यहाँ पर उद्धृत कर देना ही यथेष्ट होगा—

At the restaurants, young blades order their dinners of the female waiters with an arm round their waistes, while the old men place their hands unblushingly upon their bosoms."—Northern Travels—Bayard Taylor.—) दोनों में हाथापाई की नौबत देखकर खड़े हुए स्त्री-पुरुष दर्शक हँस रहे हैं। यह देखकर मैं सन्नाटे में आगया।

इँगलेंड आदि देशों मे प्यास लगे तो पब्लिक-हाउसों (यहाँ मद के सिवा सोडावाटर, लेमनेड, जिञ्जरेड आदि पानी भी मिलते हैं) में जाना पड़ता है। किन्तु नार्वे-स्वीडन आदि यूरोप के कई देशों में ऐसी व्यवस्था नहीं है। राह के किनारे लकड़ी के छोटे छोटे घरों में एक एक स्त्री रहती है और वे ही सोडावाटर शरबत आदि बेचा करती हैं। यह नगर कुछ फ्रेञ्च, कुछ अँगरेज़ी और कुछ ओलन्दाज़ी ढंग का है। नगर के भीतर पत्थर की पक्की बनी हुई तीन नहरें हैं। उनके भीतर समुद्री जहाज़ तक आ सकते हैं। नहरों के दोनों

किनारो पर सड़के हैं और उनके किनारे किनारे पेड़ों की क़तारें हैं। यही ओलन्दाज़ी ढंग है। यहाँ के घर फ्रेंच ढंग के बने हैं और साधारण दृश्य सब अँगरेज़ी ढंग के हैं। नगर में और उपनगरों मे अनेक मनोहर निकुञ्ज-कानन हैं। सडकों मे वृक्षों की श्रेणी से शोभित "नया आली" (Nya Alee) सड़क अर्थात् "नया रास्ता" अत्यन्त रमणीय रौनक़ की जगह है। इस सड़क पर टहलकर या किनारे कहीं बैठ कर यहाँ के लोग असाधारण आनन्द-भोग करते हैं। सड़कों पर बहुत से लकड़ी के बने तार-घर हैं। प्रबल प्रतापी नरपति गस्तावस (Gustavus Adolphus the Lion of the North) ने सन् १६१६ में इस नगर की स्थापना की थी। नगर का प्रधान गिर्जा उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध (Gustavie domkyrka) है। "तोर्ग्" अर्थात् बाज़ार मे उक्त राजा की एक भारी मूर्ति स्थापित है। इस देश में ज़िला या प्रदेश को लान (Lan) कहते हैं। यह नगर जोतेबोर्ज लान की राजधानी है। प्रादेशिक शासनकर्ता यहीं रहता है। इस कारण यह नगर स्वीडन के बनिज का प्रधान बन्दरगाह और गुलज़ार है। प्रथम नेपोलियन ने अपने प्रबल प्रताप के समय में जब इँगलेंड को नीचा दिखाने के इरादे से उक्त द्वीप के साथ महादेश का बैपार-बनिज बंद कर दिया था (Continental blockade) तब इँगलेंड के साथ उत्तर-यूरोप के बैपार के लिए केवल यही जगह खुली रह गई थी। तभी से यह नगर ऐसा समृद्धिशाली बन गया है। यहाँ की शराब की दूकानों का प्रबन्ध नार्वे का ही ऐसा है। विशेषता यह है कि दूकान के कार्याध्यक्षों का वेतन निर्दिष्ट होने का कारण वे ऊपरी प्राप्ति की आशा से अधिक ख़रीदार जुटाने की कोई चेष्टा नहीं करते। शनिवार को शाम के ६ बजे से लेकर सोमवार को सवेरे ८ बजे तक सब शराब की दूकानें बिल्कुल बंद रहने के कारण शराब पीनेवालों और शराब की दूकानें

की संख्या क्रमशः घटती जाती है। पाश्चात्य महादेशों मे रविवार का दिन ख़ास तौर पर धर्मचर्चा का दिन समझा जाता है। उस दिन शराबियों को शराब न मिलने से उनकी भलाई की ही आशा की जा सकती है। जब का मैं हाल लिख रहा हूँ उस समय यहाँ एक छोटी सी प्रदर्शिनी भी खुली थी। एकज़िबीशन के नौकर-चाकर अधिकतर औरतें ही थीं। वे काले रंग की एक एक दरवेशी टोपी दिये हुए चारों ओर घूम रही थीं। यह मेरे लिए एक नया ही दृश्य था। कहीं मेशीन में छपाई हो रही थी, कहीं एक बिजली की ताक़त से बहुत सी सिलाई की मशीनें एक साथ चल रही थीं। कहीं पालिश किये हुए ग्रेनाइट पत्थर के छोटे छोटे घर दिखलाये गये थे। कहीं संगमरमर के अनेक प्रकार के काम दिखलाये गये थे। एक जगह दियासलाई के बक्सों का पहाड़ एक विचित्र ढंग से सजाया गया था। यहाँ के दियासलाई के कारख़ाने प्रसिद्ध हैं। इसी से यहाँ दियासलाई के बक्सों का अधिकार अधिक था, और दर्शकगण विशेषरूप से उनका निरीक्षण करते थे। यहाँ के म्यूज़ियम में भी सब औरतें ही औरतें हैं। यहाँ अत्यन्त प्राचीन डोंगी (The North) से लेकर स्वीडेन देश की अनेक प्रकार की नौकाओं और जहाज़ों की शकलें दिखलाई गई हैं। इसके सिवा राज-परिवारों के हज़ारों चित्र, राजों और रानियों की हस्तलिपियाँ, उनकी कारचोबी के काम की मख़मली पोशाकें और ६००० पुराने सिक्के और तग़मे वग़ैरह रक्खे हैं। यहाँ के थियेटर और काफे वग़ैरह पेरिस के ढंग के हैं। डाकघर की इमारत भी फ़्रांस के "शाटो" (Château) के ढँग की है। नगर में एक लाख के लगभग आदमी बसते हैं। यहाँ पहुँचने के दूसरे दिन दोपहर को गोथा-नहर के स्टीमर "पलास" (S. S. "Pallas") पर चढ़ कर यहाँ की राजधानी स्टाकहल्म (Stockholm) को रवाना

हुआ। रेल की राह से जाने मे कम समय लगता; मगर गोथा-नहर के सौन्दर्य की बड़ाई बहुत लोगों ने की थी, इस कारण इसी राह से मैं रवाना हुआ।

गोथा-नहर (Gotha Canal)। जोतेबोर्ज से स्टाक्हल्म तक एक नहर बनाने की चेष्टा बहुत दिनों से होती आ रही थी। पहले दो एक बार इसका उद्योग भी हुआ था, किन्तु काम शुरू हो कर ही रह गया। अन्त को अँगरेज़ इञ्जीनियर टेलफ़ोर्ड ((Thomas) Telford) साहब की सहायता से स्थानीय इञ्जीनियर प्लाटेन साहब (Batzar Bogeslans Von Platen) ने २२ बरस लगातार लगे रहकर इस काम को पूरा किया। इस नहर का काम सन् १८१० में शुरू हुआ और सन् १८३२ में यह नहर बनकर तैयार होगई। इस नहर के बनने में बहुत रुपया ख़र्च हुआ है। बीच मे सात आठ छोटे बड़े कुण्ड या झीलें मिल जाने से नहर काटने में बहुत कुछ सुभीता हुआ है।

पलास जहाज़ में हम सब, जुदे जुदे देशों के, ३०।३५ यात्री थे। जहाज़ का कप्तान स्वीड जाति का था। वह बड़ा ही दिल्लगी-बाज़ था। उसे अँगरेज़ी बोलने की अच्छी योग्यता थी। सिंगापुर, पिनांग तक अनेक बार वह आ जा चुका था। इस कारण एशियाई लोगों के स्वभाव और रंग ढंग को वह थोड़ा बहुत जानता था। जहाज़ में एशिया के केवल दो आदमी थे। एक मैं और दूसरे पंजाब के बुलाकीराम शास्त्री। जहाज़ पर सवार होने के दो घंटे बाद डिनर-भोजन की तैयारी हुई। यहीं पहले-पहल मैंने स्मोर्गस-प्रथा (Smorgas) देखी। भोजन के टेबिल सजाये जा चुकने पर, वहाँ बैठने के पहले, भोजन करनेवाले लोग पास ही के एक टेबिल पर खड़े खड़े कुछ जलपान करके गला भिगो लेते हैं। इसी समय

एक तरह की बड़ी कड़ी शराब थोड़ी थोड़ी सबको पीनी पड़ती है। जान पड़ता है, भूख बढ़ाने के लिए ही यह जल-पान और सुरा-पान किया जाता है। इस कृत्य को समाप्त करके सब लोग एक साथ साधारण भाव से भोजन करने बैठते हैं। स्वीडेन देश में भोजन करने का यही नियम सर्वत्र प्रचलित है। गटेनवर्ग के "टावल-डोट" (Table d'hote) में भोजन करने का सौभाग्य मुझे नहीं प्राप्त हुआ। एक निर्दिष्ट समय पर सबके एकत्र भोजन करने को टावल-डोट कहते हैं।

भोजन के उपरान्त प्राचीन बोहस-दुर्ग (Bohus ruins) का भग्नावशेष देखते देखते साढ़े तीन बजे के समय हम लोग प्रथम लाक (Lock) या फाटक पर उपस्थित हुए। जो लोग कभी हिन्दुस्तान की नहरों में घूमे हैं वे फाटक की व्यवस्था को सहज ही समझ लेंगे। नहर के सामने ऊँचे या नीचे समतल स्थान की कोई नदी या कुण्ड आ पड़ने पर फाटक के बिना नहर के जल का परिमाण ठीक नहीं रक्खा जा सकता। फाटक पार होकर २०० हाथ चौड़े एक झरने के पास होकर हम लोग पाँच बजे के समय प्रसिद्ध ट्रालहाटन (Trolhattan Falls) प्रपात के पास पहुँचे। फाटक में प्रवेश करने के पहले हम सब यात्री जहाज़ पर से उतर पड़े। पैदल टहल कर देखे बिना इस प्रसिद्ध मनोहर स्थान के सौन्दर्य का उपभोग नहीं किया जा सकता। अनेक यात्रियों के मुँह से मैंने इस जल-प्रपात का वर्णन सुन रक्खा था। नायगेरा (Niagara Falls) जल-प्रपात के बाद इसी का नम्बर है। इस समय साक्षात् देख कर समझ में आया कि दृश्य साधारण नहीं है। इसे प्रपात न कह कर ४०० हाथ के घेरे की रापिड-श्रेणी (A series of tremendous rapids) कहना ही ठीक होगा। पहला प्रपात

२३ फुट का है। ईश्वरी शक्ति के सिवा इस भयङ्कर अप्रतिहत वेग को और कोई नहीं सँभाल सकता। प्रपात के पूर्व ओर अनेक कल-कारख़ाने उसी के ज़ोर से चलते हैं। एक कारख़ाने ने प्रपात के दौड़ रहे प्रवाह के बहुत पास तक एक मचान बाँध रक्खा है। प्रपात के बीच में एक टापू है। कुछ नीचे हट कर एक और टापू है। पुल पर होकर उन टापुओं में लोग जाते हैं। इस पुल के बीच में खड़े होकर नीचे और चारों ओर कोलाहलमय जल की कलोल देखने मे बड़ी अच्छी मालूम होती है। किन्तु यह अत्यन्त रमणीय दृश्य देखने के लिए हृदय में हिम्मत और नसों में ताक़त चाहिए। ठीक नीचे ४२ फुट खड़ा जल-प्रपात है। उसका और चारों ओर के जल के भयानक शब्द के सिवा और कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता। पुल इतना मज़बूत नहीं जान पड़ता। अगर टूट जाय तो फिर किसी तरह बचना संभव नहीं।

सुन्दर तीसरे पहर के समय चारों ओर के कल-कारख़ाने, भयानक होने पर भी मनोहर जल-केलि, फाटकों का इञ्जिनियरी-कौशल आदि देख कर कई घंटे तक विशेष आनन्द-भोग करने के उपरान्त हम लोग फिर जहाज़ पर चढे। रात के ९ बजे हम लोग वेनरन-झील (Lake Venern) के किनारे पर बसे हुए वेनर्सबोर्ज (Venersborg) नगर में पहुँचे। ठीक ठीक इसी जगह से गोथा नदी निकली है। नगर में केवल ६००० आदमी बसते हैं। जगह छोटी है, किन्तु चारों ओर चलनेवाले जहाज़ों और नावों का मध्य-स्थान होने के कारण रौनक़ देख पड़ती है। यहाँ रात को ९½ बजे उत्तरोत्तर-पश्चिम दिशा (N.N.W.) में सूर्यास्त हुआ और ठीक पश्चिम दिशा में चन्द्रमा के दर्शन हुए। झील में अनेक काठ के बेड़े और दो एक जहाज़ देख पड़े। झील ५० कोस लंबी है

और जगह जगह पर २४।२५ कोस चौड़ी है। समुद्र का भ्रम होता है। कभी कभी आँधी-तूफ़ान भी आ जाता है। मनुष्य जिनमें बसते हैं, ऐसे दो-चार टापू भी हैं। इस झील को नाँघ कर फिर नहर में पहुँचे। दूसरे दिन दोपहर को छोटी सी वाइकेन-झील (Lake Viken) के भीतर होकर कार्ल्सबोर्ज (Karlsborg) नगर के नीचे वेट्टर्न-झील (Lake Vettern) में पहुँचे। वाइकेन-झील में प्रवेश करने के पहले एक जगह पर नहर की गति चक्राकार होगई है। यहाँ पर कप्तान ने कहा—इस समय हम लोग नहर के सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँच गये हैं। इसकी सूचना देनेवाला एक टुकड़ा पत्थर का किनारे पर लगा हुआ था। उसमें लिखा था "समुद्रतल से ३०८ फुट ऊँचा"। वाइकेन-झील बहुत छोटी है। किन्तु दोनों किनारों के खेतों और वृक्ष-लताओं के झुंडों की ऐसी सुन्दर सजावट है कि वहाँ के चारों ओर का दृश्य एक मनोहर चित्र सा जान पड़ता है। वेट्टर्न-झील ४० कोस लंबी और ६ कोस चौड़ी है। वाइकेन-झील की अपेक्षा इस झील का जल १२ फुट नीचे है। फाटक पर से यह बात अच्छी तरह देख पड़ती है। किनारे का दृश्य मनोहर और जल बहुत ही निर्मल है। परन्तु प्रायः आँधी की हलचल मची रहती है। कार्ल्सबोर्ज में एक पुराना क़िला और सामरिक विद्यालय है। झील के पश्चिम किनारे पर एक सुन्दर पहाड़ और बीच में अनेक टापू होने से इस स्थान की शोभा और भी बढ़ गई है। कार्ल्सबोर्ज के सामने के दूसरे तट पर वाड्स्टेना (Vadstena) नामक प्राचीन नगर और ६०० वर्ष का पुराना एक प्राचीन मठ (Motala) है। पहले यह एक कास्ल (Castle) था। यहाँ अनेक राजा क़ैद रह चुके हैं। इस स्थान से थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर फिर नहर मिली। पाँच किवाड़े का फाटक पार होने

में बहुत समय लगेगा, यह सोच कर हम सब लोग उतर कर मुताला (monastery) तक पैदल ही गये। रास्ते में उस देश के निम्न श्रेणी के बालक साधारण भाव से सलाम करके और बालिकायें घुटने टेक कर हम लोगों को प्रणाम करने लगीं। इससे जान पड़ा कि उस देश के छोटे आदमी भी विनयी और सभ्य हैं। यह नहर की राह १३० कोस लंबी है। इस मार्ग के मध्यस्थल मे मुताला है। नगर सुसज्जित है। इसके पास ही नहर के किनारे इञ्जीनियर-प्लाटेन की समाधि बनी हुई है। स्वीडेन देश के कल-कारख़ानों का प्रधान स्थान मुताला है। यहाँ की लेस (lace) अत्यन्त प्रसिद्ध है। शाम के सात बजे (तीसरा पहर कहना चाहिए, क्योंकि इस समय भी वहाँ ढाई घंटे दिन था) फिर पाँच किवाड़ के फाटक होकर हम लोग एक दूसरी झील (Lake Boren) मे पहुँचे। पाँच कोस लंबे इस जलाशय को नाँघ कर हम लोग जिस नहर में पहुँचे वह बहुत दूर तक चारों ओर की धरती की अपेक्षा बहुत ऊँची ज़मीन पर चली गई थी। हम लोग जहाज़ पर से नीचे खेतों की बहार देखते चले। सचमुच यह एक बिल्कुल नया ही दृश्य था। इसके बाद सोलह किवाड़े के फाटक को नाँघ कर, १२० फ़ुट नीचे उतर कर, हमारा जहाज़ रक्सेन-झील (Lake Roxen) में पहुँचा। यह झील ६ कोस के लगभग लंबी थी। इस झील के बाद एक छोटा सा जलाशय और मिला। उसे नाँघ कर फिर नहर मे पहुँचे। कुछ दूर के बाद मेम् (Mem) नामक स्थान में आख़िरी फाटक से बाहर निकल आये। यहीं पर एक संगमरमर के पत्थर मे खुदा हुआ है कि "ईश्वर स्वयं घर न बनावे तो मनुष्य की सभी चेष्टायें वृथा हैं"। सचमुच विधाता की सहायता के बिना ऐसे बड़े कामों का छोटे मनुष्यों के द्वारा होना सर्वथा असम्भव है। यहाँ से हम नहर के मार्ग से विदा

हुए। एक वात कहना भूल गया। नहर में, वीच वीच में, इस पार से उस पार जाने के लिए, कई एक काठ के पुल हैं। हर एक पुल पर एक स्त्री रहती है और पुल की सारी ज़िम्मेदारी उसी के सिर रहती है। जहाज़ आने पर वे स्त्रियाँ कल घुमा कर पुल खोल देती हैं और फिर उसे बंद कर लेती हैं।

दूसरे दिन सवेरे हम लोग समुद्र की खाड़ी में घुसे। क्रमशः दोपहर को जहाज़ जब वाल्टिक-समुद्र में पहुँचा उस समुद्र के जल में भारी हलचल मच गई। वहुत से यात्री विस्तरों पर जाकर पड़ रहे। वाल्टिक सागर के इस हिस्से में वहुत से छोटे छोटे पहाड़ हैं। तीसरे पहर एक छोटी सी नहर के मार्ग से हमारा जहाज़ मालारन झील (Lake Malaren—" one of the most entrancing and delightful regions in Europe."—Richard Lovett M.A.) मे पहुँचा। इसका दूसरा नाम है "हज़ार टापू की झील"। इस ३३ कोस लंबी झील में १४०० टापू हैं और उन टापुओं मे वहुत से मकान और वाग़ हैं। हमारा जहाज़ जब इन टापुओं के पास से निकला तब वहाँ के लड़की-लड़के रूमाल उछाल उछाल कर हमारा स्वागत और अभिवादन करने लगे। इस प्रेम के दृश्य ने हृदय को एक नये ढंग के आनन्द का अनुभव कराया। देखते ही देखते शाम होगई और साथही स्वीडेन की राजधानी महलों और गिर्जों की चोटियाँ दिखाई पड़ने लगीं। हम लोग थोड़ी ही देर में स्टाकहल्म में दाखि़ल होगये।

नहर की सैर समाप्त हुई। अव यात्रियों के सम्वन्ध मे दो चार वातें लिखकर इस वृत्तान्त को समाप्त करूँगा। पंजाव के पं० वुलाकीराम शास्त्री का नामोल्लेख-मात्र किया गया है। आगे चलकर उनके विषय में विशेषरूप से लिखने की इच्छा है। यहाँ और कई

लोगों का हाल लिखूँगा । यात्रियों में एक अमेरिकन स्त्रियों का दल था। सात आठ काँरी औरतें और दो प्रवीण मास्टराइनें यूरोपभ्रमण के लिए अमेरिका से आई थीं। उन्हीं का यह दल था । इनमे से कई एक स्त्रियाँ अँगरेज़ों से बहुत चिढ़ी हुई थीं और हरघड़ी अँगरेज़ों की निन्दा किया करती थीं । यहाँ तक कि अँगरेज़ों के नाम से भी उन्हें घृणा थी । उनमें एक स्त्री को हँसी-मज़ाक़ बहुत पसन्द था । वह खाने के टेबिल पर, आराम की जगह और डेक के ऊपर सदा हँसी-दिल्लगी की बातों से सब यात्रियों को प्रसन्न बनाये रखती थी। जिसके साथ इस स्त्री का ब्याह पक्का हुआ था वह भी इसी दल मे था । इनके सिवा और कई अमेरिकन मर्द भी हम लोगों के साथ मे थे। उनमें और कुछ भी विशेषता नहीं देख पड़ी । केवल भोजन के समय अच्छी अच्छी भोजन-सामग्रियों को मरभुखों की तरह दोनों हाथों से हड़प जाने मे वे बड़े ही प्रवीण थे । उनके मारे अच्छे फल किसी को नहीं मिलते थे । अँगरेज़ यात्री आश्चर्य के साथ अवाक् होकर उनका तमाशा देखते थे । कहना न होगा कि ये अमेरिकन यात्री बालिग़ और भले आदमी थे। इज़्ज़तदारी के सब लक्षण उनमें मौजूद थे। और एक व्यक्ति की बात लिखकर मैं पलास-जहाज़ का वर्णन समाप्त करूँगा। मैं इस महीयसी महिला को ही सब यात्रियों मे श्रेष्ठ समझता था। मैं अपने अवकाश का समय इनके साथ बातचीत करने ही में व्यतीत करता था । मैं इनसे बातचीत करके रूस का हाल-चाल जानना चाहता था । यह अत्यन्त प्रतिष्ठित घराने के स्वर्गीय एड्मिरल कोज़ाकरविश (Admiral Kozakervitch) की विधवा पत्नी थीं। एड्मिरल महाशय बहुत दिनों तक मध्य-एशिया के शासक रहे थे । आमूर नदी के

एक टापू का नाम उन्हीं के नाम पर रक्खा गया है। सन् १८८८ में, ७० वर्ष की अवस्था में, उनकी मृत्यु हुई। इस रूसी रमणी की अवस्था अपने पति से दो ही तीन वर्ष कम होगी, किन्तु अभी तक किसी प्रकार की शिथिलता नहीं पाई जाती थी। यह अत्यन्त सहृदय और हमारे देश की "पुरखिनों" के ढंग की स्त्री थी। अँगरेज़ी और फ्रेञ्च-भाषा में पूरी जानकारी थी और इतिहास तथा साधारण साहित्य पर भी पूरा अधिकार था। इनके एक सोलह बरस का लड़का था। वह भी साथ था। अँगरेज़ गवर्नेस (governess) रख कर उसे भी अँगरेज़ी की अच्छी शिक्षा दी जा रही थी। बालक का नाम व्लाडिमीर (Vladimir) था। वह खूब लम्बे-चौड़े डील-डौल का था। दाढ़ी मूँछ न होने से ही उसकी अवस्था का कुछ पता चलता था, नहीं तो अन्यान्य बातों से वह पचीस बरस का जवान ही जान पड़ता था। बालक भी अपनी माता के समान शान्त और उदार था। इस माननीया महिला के साथ बातचीत करके रूस के सम्बन्ध में मैंने जो जाना है उसे उसी प्रश्नोत्तर के रूप मे पाठकों की सेवा में उपस्थित करता हूँ। आशा है, इससे पाठकों को सन्तोष होगा। प्रश्न मेरे हैं और उत्तर उस भद्र-महिला के हैं।

प्रश्न—भारतवर्ष के सम्बन्ध में रूस की कैसी लालसा है?

उत्तर—तुम्हारे देश की ओर हम लोगों की किसी तरह की कुदृष्टि नहीं है।

प्रश्न—तो फिर यह क्यों सर्वदा सुन पड़ता है कि रूस भारत पर आक्रमण करने के उद्देश्य से ही मध्य-एशिया में अपना राज्य बढ़ा रहा है? सम्राट् पीटर (Peter the Great) अपने विल में इस सम्बन्ध में जैसा मन्तव्य प्रकाशित कर गये हैं और इस समय

सेनापति स्कूवेल्फ़ (General Skobeloff) ने प्रकाश्यरूप से जैसा इरादा ज़ाहिर किया है उसे देखकर तो भारत पर रूस के आक्रमण का खटका दूर नहीं होता। उन्होंने तो स्पष्ट ही कह दिया है कि भारी एशियाटिक सवारों का दल तैयार करके उसके द्वारा तैमूरलंग की तरह खूनख़राबा और लूटपाट करते करते भारतवर्ष पर आक्रमण करना ही हमारा अन्तिम उद्देश्य है"। (अँगरेज़ी में यह उक्ति इस तरह लिखी हुई है—("It will be in the end our duty to organise masses of Asiatic cavalry, and to hurl them into India under the banner of blood and pillage as a vanguard as it were, thus reviving the time of Tamerlane.")

उत्तर—(मुसकाकर) मेरी समझ मे पीटर का विल जाली है। और सेनापति जो लिख गये हैं उसके सम्बन्ध में मैं इतना ही कह सकती हूँ कि उस तरह अपने अपने मन की बात कह डालना बहुत ही सहज है। वह मध्यएशिया के प्रधान सेनापति थे। उनका निज का वैसा विचार हो सकता है; किन्तु साम्राज्य की अवस्था पर विचार करने से वैसा ख़याल करना पागलपन के सिवा और कुछ नहीं जान पड़ेगा। हमारे घर की हालत ऐसी ख़राब है कि सबसे पहले उसी को सुधारना अत्यन्त आवश्यक है। जो बड़ा भारी राज्य हाथ मे है उसी को सँभालने की सामर्थ्य हममें नहीं है। फिर और अधिक राज्य बढ़ाने की इच्छा पागलपन नहीं तो और क्या है? असल चीज़ है रुपया। हमारे देश की आर्थिक अवस्था वैसी अच्छी नहीं है। इस समय धन बढ़ाने की चेष्टा करना ही पहला कर्त्तव्य है। सबसे पहले राजधानी (सेन्टपीटर्सबर्ग) से लेकर साइबेरिया के भीतर से कामट्स्काट्का (Kamatschatka) की सीमा तक रेल-लाइन बननी चाहिए। शीघ्र ही इस काम में

हाथ लगाया जायगा (यह रेल अब बन गई है)। साइबेरिया-प्रदेश में जो धन-रत्न हैं उन्हें हथियाने के लिए इस भारी राज्य के भीतर से प्रशान्त महासागर तक रेल-लाइन का होना अत्यन्त आवश्यक है। यह रेल्वे-लाइन खुल जाने पर साइबेरिया के धन से हमारा साम्राज्य ख़ूब धनी हो सकता है। इससे एक और भी विशेष लाभ होगा। वह यह कि प्रशान्त महासागर के किनारे बन्दरगाह बनाकर वहाँ पर जहाज़ी सेना रखने की व्यवस्था की जा सकेगी। इस समय जहाज़ी सेना के सम्बन्ध में बहुत कुछ असुविधा भोगनी पड़ती है। रूस के उत्तर और पश्चिम ओर का जल बारहों महीने काम मे आने लायक़ नहीं रहता। जाड़े के महीनों मे सब पानी जम कर बर्फ़ बन जाता है। इस कारण प्रशान्त महासागर के सिवा और कोई ऐसा जल हमारे आस पास नहीं है जहाँ बारहों महीने जहाज़ रखने की सुन्दर व्यवस्था की जा सके। ऐसी अवस्था में विचार करके देखो, तुम्हारे देश के ऊपर हमारी नियत डोलना कहाँ तक ठीक होगा। हमारे साम्राज्य में प्रधान दोष यही है कि प्रधान प्रधान कर्मचारी लोग सर्वसाधारण के मत को ग्रहण न करके मनमाने ख़ामख़याली के प्रस्ताव करने में कुछ भी नहीं हिचकते। रूस के सम्राटों के नाम जितने कलंक पृथ्वी पर प्रचारित होते रहते हैं, बहुत संभव है कि उनमें से अधिकांश की ख़बर भी सम्राटों को न हुई हो। बाहरी आदमी समझते हैं कि हमारे सम्राट् स्वेच्छाचारी हैं, जो मन में आता है वही करते हैं, किसी की बात नहीं सुनते। किन्तु असल में बात ठीक उलटो है। सम्राट् अगर किसी अच्छे अभिप्राय से कुछ करने का इरादा करते हैं तो उनके मुसाहब लोग, यदि कुछ अपनी स्वार्थ-हानि देखते हैं, चट अनेक उपायों से सम्राट् को उस काम से निवृत्त

करने की चेष्टा करते हैं। मैं इसका एक उदाहरण वतलाती हूँ। आशा है, तुम फ़िनलेंड जाओगे, वहाँ जाकर सुन लेना। फ़िनलेंड में स्वायत्तशासन की प्रथा प्रचलित है और वहाँ से मिले हुए राज-कर को सम्राट् देश-हित के लिए उन लोगों को लौटा देते हैं। इसके लिए रूस-राज्य के मन्त्री लोग कोलाहल मचाते रहते हैं। वे चाहते हैं कि फ़िनलेंड ही क्यों रूसी नियम से बचा रहे। इस प्रकार के सभी कामों में मन्त्रियों का हाथ रहता है। सम्राट् वेचारे को तो लोग वृथा ही वदनाम किया करते हैं।

प्रश्न—गत वर्ष (सन् १८६० में) इँगलेंड में एक पत्र प्रकाशित हुआ था। एक विदुषी रूसी महिला ने अपने सम्राट् के नाम वह खुली चिट्ठी लिखी थी। उसमें साम्राज्य के अनेक कलंकों का उल्लेख है। उस पत्र की सब वातें क्या ठीक हैं ? वह पत्र मैं आपको पढ़कर सुनाता हूँ—

Addressed by Madame Tehebrikova, a popular Russian authoress of good family, to the Czar of Russia

"Your Majesty;—The laws of my country punish free speech All that is honourable in Russia is condemned to see thought persecuted by an arbitrary Administration We witness moral and physical massacre of youth, the spoliation and flagellation of a people condemmed to remain speechless But liberty, Sire, is the primordial necessity of a people, and sooner or later the hour will come when the citizens, having, under the tutelage, exhausted their patience will raise their voices, and then your authority will have to yield

There are also in the lives of individuals moments when they are ashamed of their silence, and then they dare to risk all that is dear to them, so as to say to the person who holds in his hands all the power and all the strength, the person

who could put an end to so much evil and so much shame, "Look at what you allow to take place; look at what you are doing either consciously or not."

The Russian Emperors are obliged to see and hear only what their functionaries, the Tchinovniki, allow them to see The latter form a thick wall between the Czar and the Zemstres—that is the milions of inhabitants who are not in the employ of Government. The terrible death of Alexander II. has thrown a lugubrious shadow on your accession to the throne. You were told that his death was the result of the ideas in favour of freedom which had been developed in consequence of the reforms introduced during the previous reign, and you were inspired to take measures by which it was desired to make Russia go back to the sombre epoch of Nicholas I They frighten you by agitating the spectre of revolution, of a revolution which would suppress monarchy; and this at the present time, and in such a country as yours is a pure illusion. After the catastrophe of the 1st. March the regicides themselves did not hope to see the convocation of a Constituent Assembly. The enemies of the Czar have been executed, every one obeys blindly the will of the monarch. Then by what fatal misunderstanding does the Government suppress all traces of those reforms projected during the best years of Alexander II's reign. It was not the reforms enacted during the previous reign that brought our terrorists into existence, it was their insufficiency.

* * * * *

Do you imagine that because you are an anointed sovereign, you are a divinity possessing knowledge of all things? If you could, Sire, like the sovereign in the fable, pass over the towns and villages so as to know what life the Russian people live, you would see its misery, you would see how the Governors bring up your soldiers to shoot down the peasants and the workmen. You would see that this order,

maintained by thousands of soldiers, by legions of functionaries, by an army of spies—this order in the name of which every word of protestation is suppressed—that this order is not order at all, but a state of administrative anarchy."

उत्तर—इस ग्रन्थकर्त्री का नाम मैंने सुना है। बात कहने या लिखने की स्वतन्त्रता हमारे देश में नहीं है। जहाँ जो चाहा वह कहने से जासूस लोग पुलिस में ख़बर करके गिरफ़ार करा देते हैं। लिखने की जाँच करने के लिए एक ख़ास राजकर्मचारी है; उसके अनुमोदन बिना कोई भी छपी चीज़ पब्लिक में प्रकाशित नहीं की जा सकती। राजकर्मचारियों के अत्याचार के सम्बन्ध में मैं पहले ही कह चुकी हूँ। सम्राट् को लाचार होकर दूसरों की दिखाई राह पर चलना पड़ता है। अनेक कारणों से हमारे यहाँ की शासन-प्रणाली दूषित हो रही है। रूस के सिविल-विभाग के कर्मचारी लोग एक विशेष श्रेणी के लोगों में से हमेशा से चुन लिये जाते हैं। वे लोग न उच्च श्रेणी मे गिने जाते हैं और न नीच श्रेणी में समझे जाते हैं। वे एक मध्यम श्रेणी के लोग हैं। वे गिनती मे भी बहुत थोड़े हैं। हमारे देश में एक उच्च श्रेणी है और दूसरी नीच श्रेणी। मध्य-वित्त नामक कोई श्रेणी नहीं है। उक्त श्रेणी के लोग उच्च और नीच श्रेणी के मेल से बने हैं और इसी से बहुत थोड़े हैं। उनका नौकर होना, नौकरी से छूटना और तरक़्क़ी सभी बातें प्रादेशिक शासक या मन्त्रिगण अथवा अन्यान्य विभागों के अफ़सरों की मर्ज़ी के ऊपर निर्भर है। नौकरी का कुछ ठिकाना नहीं, अभी है और दम-भर मे नहीं; उसके ऊपर तनख़्वाह बहुत ही कम है। ऊपर के अफ़सरों को बुरे या भले किसी भी उपाय से ख़ुश रखना बहुत ही ज़रूरी है। इन सब कारणों से वे निहायत लोभी और अत्यन्त अत्याचारी हैं। यही कारण है कि देश या प्रजा के हिताहित की ओर कुछ भी

लक्ष्य न रखकर वे "येन केन प्रकारेण" केवल अपना ही पेट भरने में चौबीस घण्टे सोलहो आने लगे रहते हैं। राज-काज चाहे जिस तरह चले, वे उधर रत्ती भर ध्यान नहीं देते। तृतीय अलेकज़ण्डर ने, कई साल हुए, इस ऐब को मिटाने के लिए विशेष यत्न करके नौकर रखने और नौकरी से छुड़ाने का बहुत कुछ भार अपने सिर पर लिया था और जाँच के लिए एक ख़ास इन्सपेक्शन-विभाग खोला था। सन् १८६१ में दूसरे अलेकज़ण्डर ने अनेक विश्वविद्यालयों की स्थापना की थी। अनेक कारणों से वे शीघ्र ही बन्द होगये। इस साल (१८९१ में) भी हज़ारों स्कूल बन्द कर दिये गये हैं। शिक्षा-प्रचार कम करने का विशेष कारण यही देख पड़ता है कि हमारे छात्रगण लिखना-पढ़ना सीख कर केवल सरकारी नौकरी पाने की ही कोशिश करें। विद्या-लाभ से वे यही समझें कि हम अन्यान्य कार्य नहीं कर सकते, हमारी योग्यता यही है कि हम सरकारी नौकरी करें। हमारे ऐसे दरिद्र साम्राज्य में अधिक विद्या-प्रचार से कोई अमंगल की आशंका करके ही राजकर्मचारियों ने ऐसा किया होगा। इसमे भी कोई सन्देह नहीं कि अक्सर प्रजा पर अत्याचार हो जाते हैं। जासूस लोग बेक़सूर लोगों को भी कभी कभी फँसा देते हैं। ऐसी गिरफ़्तारियाँ आधी रात के समय ही हुआ करती हैं। उस समय सब लोग अपने अपने घर पर मिलते हैं। ऐसा भी होता है कि अनेक निर्दोष लोग केवल सन्देह या दुष्ट कर्मचारियों की अदावत से, बिना विचार हुए ही, जन्म भर के लिए साइबेरिया भेज दिये जाते हैं। साइबेरिया मे जो राजनैतिक क़ैदी (Political prisoners) रक्खे जाते हैं उन्हें वहाँ भयानक कष्ट मिलते हैं, उन पर भारी अत्याचार होते हैं। समय समय पर लन्दन में इसके लिए आन्दोलन हुआ करता है। क़ैदियों पर अत्याचार

होने के विशेष प्रमाण भी पाये गये हैं। राज्य-शासन के गूढ रहस्यों का पता लगाना सहज काम नहीं है। ऐसा भी समय होता है कि जब कठोर शासन बहुत ज़रूरी हो जाता है। उस मौक़े पर शासन-चक्र को न्याय के आधार पर ठीक बनाये रखना बहुत ही कठिन काम है। जाति, धर्म, शिक्षा, अवस्था (हालत) इत्यादि बातों में परस्पर विभिन्न ढङ्ग रखनेवाली और अनेक वर्ण की प्रजा भारी रूस-साम्राज्य में निवास करती है। उन सबको साथ लेकर चलने मे एक-न-एक के ख़िलाफ़ जरूर होगा। रूस की निन्दा तुमने बहुत सुनी होगी, मगर मेरी कुछ बातें सुनने से आपको मानना पड़ेगा कि हम संसार का हित करना चाहते हैं। देखो. मध्यएशिया जब से हमारे हाथ में आई है तब से उसकी कितनी उन्नति हुई है। कहाँ दिन-रात तुर्क लोग लूट-पार करते थे, अनेक प्रकार के उपद्रव और अत्याचार होते थे, ग़ुलाम बिकते थे। कहाँ अब वहाँ के निवासी धन और जीवन को निरापद जान कर बेखटके आहार-विहार करते हैं, सुख की नींद सोते हैं, खेती और बनिज की उन्नति में तत्पर रहते हैं। केवल एक रूसी कर्नल आठ देसी सहकारियों की सहा-यता से, निर्विघ्नरूप से, ३०,००० प्रजा का शासन कर सकता है। यह क्या हमारे लिए गौरव की बात नहीं है? कर्नल अलीख़ानफ (अलीख़ाँ) एक तातारी मुसलमान हैं। उन्होंने रूस की अधीनता स्वीकार करके युद्धविभाग में नौकरी पाई और सैकड़ों ग़ुलामों को ग़ुलामी के बन्धन से मुक्त कर दिया। अब वह ग़ुलामी की प्रथा को जड़ से उखाड़ डालने की चेष्टा में लगे हुए हैं। साधारणतः यह कहा जा सकता है कि फ़्रेञ्च लोगों ने ६० बरसों मे अलजीरिया (Algeria) में जितना सुधार कर पाया है, हम लोग २० ही बरसों में तातार देश का उससे अधिक उपकार

कर सके हैं । इतने दिनों अलजीरिया में फ़ान्स का शासन है, मगर अब भी अलजीरिया के लोग फ्रेञ्च-शासन के विरुद्ध सिर उठाने को तैयार हैं। लेकिन मध्य-एशिया (तातार) ने हमको बिल्कुल अपना समझ लिया है। वहाँ की प्रजा बड़े सुख से निवास करती है। इसके सिवा, मुझे आशा है कि आपको यूरोप के इतिहास की अच्छी जानकारी होगी। मेरे इस कहने की सचाई का आप स्वयं अनुमान कर सकते हैं कि सभ्य जगत् का हित करने में रूस ने बहुत कुछ भाग लिया है। आपने "रूस की दुराकांक्षा और राज्य-लोलुपता" की बहुत बातें सुनी होंगी। परन्तु निरपेक्ष भाव से विचार करिएगा तो देखिएगा कि प्रायः हमारे कार्यों में इस धारणा के विपरीत उदारता का परिचय प्राप्त होता है। नेपोलियन जब पहली बार एल्बा (Elba) से भगाये गये तब रूस के सिवा और सभी ने लंबे लंबे हाथ बढ़ा कर निर्बल परोसी के राज्य के टुकड़े अपने पेट में डालने की चेष्टा की थी। उस समय सबकी सलाह थी कि फ़ान्स में उनका पुराना राज-घराना फिर राज्य करे। केवल हमारे सम्राट् ने ही इस मत के विरुद्ध खड़े होकर फ्रेञ्च लोगों से पूछा था कि वे लोग साधारण-तन्त्र स्थापित करना चाहते हैं या नहीं। उद्दण्ड नेपोलियन-राहु के विनाश में प्रधान सहायक रूस ही था। मास्कोदाह (Burning of Moscow) और लाइपजिक युद्ध (Battle of Leipsic) इसके सजीव साक्षी हैं। इसके बाद नेपोलियन-नाश के उपरान्त से यूरोप की अराजकता और विप्लव का प्रधान शत्रु रूस ही रहा है। ग्रीस, रोमानिया, सर्विया, मान्टीनिग्रो और इटली की स्वाधीनता और जर्मन-एकीकरण के प्रधान सहायक रूस-सम्राट् हैं। ग्रीस और रोमानिया के बन्दोबस्त के समय इँगलैंड तक ने कुछ कुछ उसका विरोध किया था। परन्तु

रूस सोलहो आना उनका सहायक था। अँगरेज़ लोग अगर रुका-
वट न डालते तो ग्रीस को और भी कुछ अधिक मिलता। रोमा-
निया के मामले में उनकी वात चली नहीं। वहुत लोगों को स्मरण
होगा, अभी उस दिन की वात है, केवल २०–२२ वर्ष वीते होंगे,—
युद्ध के अन्त मे सन्धि हो जाने के वाद जर्मन-सम्राट् प्रथम विलि-
यम ने हमारे ज़ार द्वितीय अलेक्ज़ेंडर को पत्र लिखा था कि
"प्रुशिया इस वात को कभी नहीं भूल सकती कि केवल आप ही
के कारण यह युद्ध भयानक रूप नहीं धारण कर सका। जगदीश्वर
आपका कल्याण करें। आपका चिरकृतज्ञ वन्धु"।

प्रश्न—द्वितीय अलेक्ज़ण्डर तो वड़ी ही अच्छी प्रकृति के सदा-
शय पुरुष थे। उनको मार डालना तो वास्तव में रूसी प्रजा के लिए
कलङ्क की वात है! या इसमें कुछ और रहस्य था?

उत्तर—वह जैसे वाहरी मामलों में उच्च उदारता और महनीय
महत्त्व का परिचय देते थे वैसे ही भीतरी ढंग से सव तरह प्रजा की
भलाई सोचते थे। सन् १८८१ की १३ वीं मार्च को वह एक घोड़ा-
गाड़ी पर जा रहे थे। एकाएक उनकी गाड़ी के नीचे एक डिनामा-
इट वम फूटा। वह चटपट गाड़ी से फाँद पड़े और जो लोग घायल
हुए थे उनकी सेवा-शुश्रूषा के प्रवन्ध के लिए आज्ञा देने लगे। इतने
ही में उनके पैरों के नीचे और एक वम फूटा और उससे उनके
दोनों पैर उड़ गये। उसी दिन तीसरे पहर उनकी मृत्यु हो गई।
इसके पहले प्रथम अलेक्ज़ण्डर के पिता सम्राट् पाल (Paul) की भी
मौत इसी तरह किसी दुष्ट प्रजा के हाथों हुई थी। किन्तु ये सव
वे-मतलव के वाहियात काम पागलों के ही हाथों होते हैं, सर्वसाधा-
रण से इन घृणित कामों का कोई सम्वन्ध नहीं होता। पीटर दि
ग्रेट से लेकर जितने हमारे देश के सम्राट् हुए हैं उन्होंने देश की

उन्नति और भलाई के लिए विशेष यत्न किया है; तथापि उनके साथ ऐसी वदसलूकियाँ हुई हैं। शायद तुमको मालूम होगा कि केवल असभ्य रूस को सभ्य बनाने के लिए ही महात्मा पीटर ने हालेंड और इँगलेंड मे घूम कर अनेक वातों का ज्ञान प्राप्त किया था। उन्होंने विदेश में अत्यन्त साधारण आदमी की तरह वढ़ई-लुहार का काम, जहाज़ और घड़ी बनाने की कारीगरी आदि वहुत से व्यावहारिक शिल्पों की शिक्षा प्राप्त की और कलकारख़ाने, अस्पताल आदि की देखभाल से ज्ञानोपार्जन किया। फिर अपने राज्य में आकर उन्होंने प्रजा को इन सव वातों की शिक्षा देना शुरू किया। रूस मे जाने पर उनकी कीर्त्ति के अनेक चिह्न देखोगे।

× × × ×

विदा होते समय जहाज़ के कप्तान और यात्रियों से—ख़ास कर उक्त रूसी महिला से मिल कर मैं होटल की ओर चला। कप्तान ने उतरते समय फिर मुझसे कह दिया कि यहाँ का हम्माम (स्नानागार) देखना न भूलना।

जानकी वाई और पंडित वुलाकीराम शास्त्री। गोथा-नहर की यात्रा में मैं शास्त्रीजी का नाम लिख चुका हूँ। यह वैरिस्टर हैं। लन्दन से मेरा और इनका साथ हुआ था। इन्हें केवल रूस-देश देखने की प्रवल इच्छा थी। नार्वे की राजधानी क्रिश्चियानिया से मैंने जव नार्थकेप अर्थात् उत्तर-अन्तरीप की यात्रा की उस समय मेरे आने की प्रत्याशा में वह क्रिश्चियानिया मे ही ठहर गये। उसके वाद आर्कटिक-प्रदेश से मेरे लौट आने पर फिर एक साथ हम दोनों की यात्रा शुरू हुई। क्रिश्चियानिया से रूस जाने का सीधा रास्ता यह है कि स्वीडेन की राजधानी स्टाक्हल्म में जाकर जहाज़ पर चढ़ ले। क्रिश्चियानिया से स्टाक्हल्म

तक सीधी रेल चली गई है। पर बन्धु बुलाकीराम के परामर्श से गोथा-नहर होकर ही जाने का निश्चय हुआ। गोथा-नहर की यात्रा के जहाज़ में जो यात्री थे उनमें एक डिनामार-परिवार था। डिनामार भद्रपुरुष के एक स्त्री और दो सुन्दरी कन्यायें थीं। मैं तो प्रायः उस रूसी रमणी से बातें किया करता था। बुलाकीराम भैया उस परिवार के साथ हिलेमिले रहते थे। यात्रा समाप्त हुई। हम लोग स्टाकहल्म पहुँच गये। सब लोग अपनी अपनी राह चले गये। हम लोग रूस चल दिये। रूस से लौट कर जब हम लोग स्टाकहल्म में पहुँचे तो अचानक बुलाकीराम से उस परिवार से भेंट हो गई। जिस होटल मे वह परिवार ठहरा था वहाँ बुलाकीराम का निमन्त्रण भी हुआ।

स्वीडेन से हम लोग जर्मनी गये। बर्लिन में कई दिन रहने के बाद बुलाकीराम लन्दन को लौट गये। उसके उपरान्त कई महीने तक अनेक देशों में भ्रमण करके जब मैं लन्दन को लौटा तब दो एक दिन फिर बुलाकीराम से भेंट हुई। सन् १८९१ के दिसम्बर महीने मे वह भारत को लौट आये। मैं भी दो महीने बाद दूसरी यात्रा में चला गया। भारत मे आने पर कुछ दिनों के बाद मित्र बुलाकीराम का एक पत्र मुझे मिला। उससे मालूम हुआ कि गत १८९५ सन् की ६ वीं फ़रवरी को, लन्दन में, पूर्वोक्त डिनामार-परिवार की छोटी कन्या के साथ सिख-धर्म की रीति के अनुसार उनका ब्याह हो गया है।

बुलाकीराम ने लिखा था कि उनके देश के जातीय और आत्मीय बन्धु-बान्धवों ने उन लोगों को सादर हिन्दू-समाज में ले लिया है—"The most wonderful thing, perhaps, you will observe is that my wife has been taken into the

Hindu Society by the people of my province. My own family has received her with open arms and the leading Hindus with whom we have been guests have had no objection to dine with her. My servants are all Hindus—Brahmans and Khetryas."—प्रतिष्ठित हिन्दू लोग विना किसी आपत्ति के उनके साथ आहार और व्यवहार करते हैं। उनके यहाँ ब्राह्मण-क्षत्रिय नौकर हैं। अर्थात् मुसलमान या ईसाई ख़ानसामा नहीं हैं। अब ज़रा उस श्वेताङ्ग-रमणी का हाल सुनिए। वह हिन्दुस्तानी पोशाक पहनती है और उसका नाम जानकी वाई रख दिया गया है। मेरे मित्र ने लिखा था—("My wife is now a thorough Hindu, and rejoices in the name of Janaki Bai. She dresses like a Hindu lady and wears Hindu shoes."—) डेढ़ साल हुआ जानकी बाई के एक लड़की हुई है और इसका नाम रक्खा गया है "शकुन्तला"। नामकरण के उत्सव में बुलाकीराम की सास तक डेनमार्क से पञ्जाब आई थीं।

पर्यटन। उत्तर-अन्तरीप और गोंथा-नहर में पर्यटन करने से यूरोप की सैर का मज़ा मिल गया। रेल में घूमना और पार्सल होकर वहँगी की डाक में जाना प्रायः बराबर ही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रेल्वे होने से वैपार-बनिज और कामकाज के लिए जाने-आने का विशेष सुभीता हो गया है; किन्तु देशभ्रमण का असल मज़ा चला गया है। राह में सहयात्रियों के साथ एकत्र आहार-विहार और बैठने-उठने का सुभीता हुए विना आपस में भावों का लेन-देन नहीं हो सकता। किन्तु देश-भ्रमण का मुख्य लाभ यही है। अमेरिका की पैलेस-गाड़ियों (Palace Car) ने इस कमी को कुछ कुछ पूरा किया है। अमेरिका के वर्णन में इन गाड़ियों पर विशेष

रूप से लिखा जायगा। देशभ्रमण उद्देश्य बहुत से और वे महत् हैं। जैसे बराबर जल-वायु के बदलते रहने से एक प्रकार की फुर्ती आकर शरीर के स्वास्थ्य को बढ़ाती है वैसे ही नित्य नवीन दृश्य देखने से हृदय भी प्रफुल्लित और तृप्त होता है। केवल यही नहीं, दृश्यों और घटनाओं की गम्भीरता और अभिनव सौन्दर्य हृदय को उन्नत बना देता है और बिल्कुल अपरिचित विदेशी लोगों के साथ घनिष्ठ संसर्ग होने के कारण बहुत से अनभ्यस्त व्यापारों और नवीन तथा विशेष शिक्षाप्रद बातों का कार्यतः ज्ञान (Practical knowledge) प्राप्त होता है; जिससे बहुत ही सहज में आत्मा की भारी उन्नति हो जाती है। जलमार्ग मे घूमना मानों चलते-फिरते घर में रहना है। किन्तु जिन जहाज़ों मे कामकाजी यात्री जाते हैं उनमे उतना देखने या सीखने को नहीं मिलता। सहयात्री लोग अपने अपने धंधे मे लगे रहते हैं, इससे यात्रा में भी वे मानों अपने अपने आफ़िस में काम करते रहते हैं। तात्पर्य यह कि सब लोगों को हिलने-मिलने का अवसर नही प्राप्त होता। मगर जिस मार्ग में वे ही यात्री जाते हैं जो छुट्टी के समय केवल जल-वायु बदलने अथवा देशाटन का आनन्द-भोग करने निकले हैं उस मार्ग की यात्रा में विदेशियों के आचार-विचार और रङ्ग-ढङ्ग देखने का या परस्पर मानसिक भावों के विनिमय का पूरा सुभीता रहता है। ऐसी यात्रा मे किसी संसारी कामकाज के लिए चिन्ता नहीं होती; केवल यही देख पड़ता है कि कहीं हँसी-मज़ाक हो रहा है, कहीं बातचीत हो रही है, कहीं कोई खेल खेला जा रहा है। बाद में देखे गये दृश्यो और स्थानीय घटनाओं पर लोग, अपनी अपनी रुचि और शिक्षा के अनुसार, तरह तरह की टीका-टिप्पणी और बातचीत करते हैं। एक दूसरे से जी खोल कर मिलता है और हर एक को

दूसरे से अच्छी बातें सीखने का और जानकारी हासिल करने का अच्छा अवसर मिलता है। इस प्रकार स्वच्छन्द भाव से आमोद और आनन्द के साथ ज्ञान प्राप्त करने से हृदय में जो एक प्रकार की स्फूर्ति पैदा होती है वह अन्य प्रकार से सर्वथा अप्राप्य है। इस प्रकार के आमोदजनक ज्ञानप्रद गोथा-नहर के भ्रमण को समाप्त करके मैंने स्वीडेन देश की राजधानी मे पैर रक्खा।

स्टाक्हल्म। उत्तर-यूरोप मे ऐसा सुन्दर नगर और दूसरा नहीं है। जल के ऊपर से परिस्तान सा मालूम पड़ता है। यह नगर सात द्वीपों (टापुओं) और दो उपद्वीपों (छोटे टापुओं) पर स्थापित है। इसी से इसको लोग "उत्तर का वेनिस" (Venice of the North) कहते हैं। सचमुच यहाँ भी अधिकांश स्थानों में जाने-आने के लिए, वेनिस की ही तरह, नावें चलती हैं। अन्तर यही है कि वेनिस में कृष्ण-वर्ण गण्डोला (Gondolla) चलते हैं और उन्हें आदमी चलाते हैं, और स्टाकहल्म मे छोटे छोटे स्टीमरों से यह काम लिया जाता है। यहाँ के द्वीप पत्थर के और सुसज्जित हैं; उनमें सुन्दर बाग़ और बड़े छोटे रमणीय महल सुशोभित हैं। इस कारण यह नगर वेनिस की अपेक्षा अधिक मनोहर है। इसके सिवा वेनिस का पानी गँदला और यहाँ का पानी निर्मल है। वेनिस मे घोड़ागाड़ी आदि बिल्कुल नहीं हैं किन्तु यहाँ की चौड़ी सुन्दर सड़कों पर सदा गाड़ी-घोड़े चला करते हैं। रूस जाने के पहले कई दिन यहाँ मैं रहा था। रूस से लौट कर जर्मनी जाने के पहले भी कई दिन यहाँ रहना हुआ। यात्रियों के ठहरने के लिए यहाँ अनेक रहने के घर [Rum an hyara (Room on hire)] किराये पर मिलते हैं। उनमें खाने-पीने का कोई प्रबन्ध नहीं है। उसके लिए अनेक भोजनालय हैं। हम लोग इन स्थानों में न जाकर होटल मे ही ठहरे थे। जाने-आने

के लिए गाड़ियां (Droskey) की कमी नहीं। स्टीमरों पर जाने-आने मे भी कुछ दिक्कत नहीं होती। घाट पर पाँच सात मिनिट अपेक्षा करते ही स्टीमर मिल जाता है।

राजभवन। यहाँ का हार्बर (Harbour) बन्दर बहुत ही सुन्दर है! इसके भीतर बड़े बड़े जहाज़ सहज में जा सकते हैं। इसके ठीक ऊपर ही अनेक सड़कें, अर्द्धगोलाकार थियेटर (Amphi-theatre) की तरह, एक के ऊपर दूसरी, निकल गई हैं सबसे ऊँचे पर ३९२ + ४१९ फ़ुट के एक चतुष्कोण स्थान पर राजभवन बना हुआ है। महल से मिला हुआ शाहीगिर्जा बहुत सुन्दर है। उसमें संगमरमर के खंभे लगे हुए हैं। अनेक सुन्दर बहुमूल्य चित्र उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। राजभवन में, बड़े बड़े कमरे, गेलरियां (Gallery), अनेक प्रकार के बड़े बड़े चित्रपट और अनेक श्रेणी के भारी भारी आईने उसको शोभायमान कर रहे हैं। वहाँ विशेष रूप से देखने की चीज़ें ये हैं—किसी प्राचीन राजा की सोने-जड़ी क़ीमती एक तरवार. मूर्त्तिपूजक वंबाटिया लोगों से ख़रीदे गये सफ़ेद और बैंगनी रंग के पार्चमेण्ट (Parchment) पर सुनहले अक्षरों से लिखे हुए बाइबिल के अंश। वहाँ कुछ हस्तलिपियों का भी संग्रह है। उसमें सन् १५२९ की, लूथर (Martin Luther) के हाथ की टीका-टिप्पणियों से युक्त एक लैटिन बाइबिल दर्शनीय है। महल देखने की आज्ञा पाने के लिए दर्वाज़े पर के कर्मचारी के आफ़िस में जाना पड़ता है। वहा से एक आदमी मिलता है। वही आदमी सब महल दिखा लेता है। सब देखने में तीन घंटे के लगभग समय लगता है।

नेशनल म्यूज़ियम। दूसरे दिन जातीय अजायब-घर (National Museum) गया। यहाँ अनेक ऐसी चीज़ें हैं जिन्हे देखने से यह अच्छी तरह समझ मे आ जाता है कि पृथ्वी भर के मनुष्य प्रथम

अवस्था मे सर्वत्र प्राय: एक से ही थे। वहाँ जो पुरानी चीज़ें रक्खी हैं उनमे निम्नलिखित वस्तुएँ हमारे इस कथन को पुष्ट करनेवाली हैं। कुछ एक औरतों के गहने, चर्खा, सूत की कुकड़ी, पीलसोज़, दीपक, इमामदिस्ता, खरिल, बधना, पीतल के बेंट की छुरी, कुदाल, वर का मुकुट और जरी की किश्तीदार टोपी व ताज। इसके सिवा अनेक प्रकार की प्राचीन काल की पोशाकें, भिन्न भिन्न अवस्थाओं की प्रादेशिक नर-नारियों की मूर्त्तियाँ और शृङ्ग-पानपात्र (Drinking horns) देखने को मिले। लाप लोगों का जीवन प्रत्यक्ष दिखाने के लिए अबरख़ की नक़ली बर्फ़ बनाकर उसके ऊपर यह दिखलाया गया है कि बर्फ़ के ऊपर बे-पहिये की गाड़ी (Sledge) किस तरह चलती है। इसके सिवा बर्फ़ पर चलने के जूते, लाप लोगों के कुत्ते, झोपड़े, करघे और हाड़ों के बर्त्तन वग़ैरह सजाये रक्खे हैं। इनके साथ ही ग्रीनलेंड (Greenland) की कुत्तों की गाड़ियाँ (Dog Sledge), डोंगी नाव आदि, भी रक्खी हुई हैं। भिन्न भिन्न कमरों में प्राचीन राजों की पोशाकें, अनेक अत्यन्त प्राचीन हस्त-लिपियाँ, ५,००० ऐंग्लो-सैक्सर (Anglo-Saxon) और २०,००० से ऊपर अरबी और बाइजन्टियन सिक्के रक्खे हैं। पूर्व समय में इस देश के अन्तर्गत गाथलेंड (Gothland) टापू बहुत देशों के बनिज का केन्द्र-स्थल था। बाइजन्टियन सिक्के वहीं मिले हैं।

अद्भुत डुएल-मूर्त्ति। उक्त म्यूजियम के बाहर एक चतुष्कोण पत्थर का स्तम्भ है। उसके चारों ओर चार घटनाओं के रिलीफ़ चित्र हैं। स्तम्भ के ऊपर द्वन्द्वयुद्ध कर रही दो मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। इसमें यह दिखाया गया है कि प्राचीनकाल में स्त्री और शराब के साथ आमोद-प्रमोद करते करते कलह का सूत्रपात होने पर अन्त को दोनों आदमी छुरे लेकर किस तरह युद्ध करने लगते थे। युद्ध

के समय दोनों के हाथों मे एक एक छुरा देकर सख़्त चमड़े की पेटी से दोनों की कमरें इस तरह बाँध दी जाती थीं कि एक के मरे बिना वह बन्धन छूट नहीं सकता था। इस दृश्य से हमारे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि उस समय उस देश की अवस्था कैसी भयानक थी।

नार्डिस्का-म्यूज़ियम (Nordiska Museet)। यहाँ बहुत सी देखने की चीज़ें हैं। उस समय व्यभिचार करने पर औरतों का किस तरह गधे पर उलटे बैठा कर शहर घुमाया जाता था और क़ैदियों को किस तरह अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता था—ये बातें मूर्त्तियों के द्वारा यहाँ दिखलाई गई हैं। इसके सिवा उस देश के बहुत से ग्रन्थकारों और पण्डितों के चित्र और हस्तलिपियाँ, एक उसी देश के सुप्रसिद्ध शरीरतत्त्ववेत्ता और एक रासायनिक पण्डित के इस्तेमाल में आनेवाले यन्त्र और चार पाँच राजा-रानियों की हस्तलिपियाँ और इस्तेमाल में आनेवाली सामग्री रक्खी है। वहाँ अनेक मूर्त्तियाँ हैं। उनमे निम्नलिखित दृश्य बहुत ही सजीव और भावपूर्ण हैं। बर्फ़ के भीतर एक बालक और एक हरिण (Reindeer) मरा पड़ा है। पुत्रशोक से पीड़ित रो रही माता पुत्र के पास बैठी है। इस देश में, सर्दी की ऋतु में, बर्फ़ में पड़ कर अनेक ग़रीबों के बच्चे और जीवजन्तु इसी तरह मर जाते हैं।

मोम के पुतलों का घर (Panoptikon)। यहाँ मोम की बनी हुई अनेक देशों के अनेक प्रसिद्ध पुरुषों की भिन्न भिन्न अवस्थाओं की मूर्त्तियाँ हैं। १८ पुरुषों की मृत्युकाल की मूर्त्तियाँ हैं। उनमें नेपोलियन, फ़्रेंच-पण्डित वाल्टेयर और भूतपूर्व जर्मन-सम्राट् प्रथम विलियम (William I) तथा उनके पुत्र फ़्रेडरिक (Frederick) की मूर्त्तियाँ भी हैं।

राज-शवागार। यहाँ देश के सब राजों के शव (लाशें) बक्स में बन्द किये वाल्ट मे रक्खे हैं। चारों ओर युद्धों मे जीत कर छीनी हुई बहुत देशों की पताकायें टँगी हुई हैं। यह घर ज़मीन के नीचे और इसी लिए विशेष रूप से ठंडा है।

फ़्रेञ्च जंगी जहाज़। हम लोग जब नगर में उपस्थित हुए तब कई एक फ़्रेञ्च जहाज़, रूस जाने की राह में, यहाँ ठहरे हुए थे। इसी लिए राजधानी के हर एक घाट मे फ़्रेञ्च-जहाज़ों के सम्मानार्थ फ़्रांस की तिनरङ्गी पताकायें फहरा रही थीं। एक दिन मैं एक जहाज़ देखने गया। उसका नाम था फिडरिओ (Furieaux) अर्थात् भयानक। एक फ़्रेंच सैनिक ने हम लोगों को सब दिखलाया। कुछ तो मैंने अन्दाज़ से समझ लिया और कुछ किसी तरह समझ में ही न आया। असल बात यह है कि मनुष्य-हत्या के लिए उसमें अनेक कल-कारख़ाने बने हुए थे। दो अजगर तोपें भी उस पर थीं। घाट के किनारे एक सुन्दर फूलबाग़ है। उसमें नित्य तीसरे पहर अनेक बालक गाते और बाजे बजानेवाले लोग बाजे बजाते हैं। वहाँ साधारणरूप से खाने-पीने का भी प्रबन्ध है। वहाँ भी तिनरंगी फ़्रान्स की पताका फहरा रही थी।

साधारण स्नानागार। नगर में अनेक स्नानागार या हम्माम हैं। उनकी व्यवस्था से मुझे सुरुचि का परिचय नहीं मिला। पहले पर्यटकों के ग्रन्थों में यहाँ का हाल पढ़ा था, पर मुझे विश्वास नहीं होता था। कम से कम यह ख़याल ज़रूर था कि प्राचीन काल में लोगों की वैसी कुरुचि रही होगी; अब के ज़माने में वैसा होना असम्भव है। पर अपनी आँखों से देखने पर मालूम हुआ कि अभी तक वही हाल है। हम्माम मे जाने का टिकिट एक स्त्री बैठी बेचती है। इस देश में सब जगह स्त्रियाँ ही सब काम करती हैं।

स्नान करने के कमरे मे घुस कर वस्त्र उतार कर टब के पानी में बैठ गया। थोड़ी ही देर में एकाएक दर्वाज़ा खोल कर एक हृष्ट-पुष्ट जवान स्त्री आई। वह स्पञ्ज से मेरा वदन मलने लगी। मैं तो जैसे सन्नाटे में आ गया। उसी बाबा आदम की अवस्था में टब से उठा कर कई गर्म ठंडे झरनों के नीचे अच्छी तरह नहला कर सूखे तौलियं से सब शरीर पोंछ कर एक आरामकुर्सी पर उसने मुझे लिटा दिया और ऊपर से कम्बल डाल दिया। फिर अपनी भाषा में उसने पूछा—"सब काम ठीक हो गया न ?"। वह चली गई। मैं पड़े पड़े इस बारे मे सोचता रहा। फिर बाहर आकर मैंने एक स्थानीय भद्रपुरुष से इस बारे में बातचीत की। उनसे मालूम हुआ कि इन हम्मामो में स्नान के उपरान्त अनेक घृणित व्यापार होते हैं। उन्होंने मुझसे स्पष्ट ही कह दिया—"आप क्या समझते हैं कि कोई अच्छे चरित्र की स्त्री ऐसे काम की नौकरी कर सकती है ? आप सरीखे अनजान विदेशी की बात जाने दीजिए, जो इस देश के नौ जवान वहाँ जाते हैं वे क्या ऐसी अवस्था में इस तरह अपने को सँभाले रह सकते हैं ?" इस भद्रपुरुष के साथ इस देश की और और बातों पर वार्तालाप हुआ। उससे जान पड़ा कि सुप्रसिद्ध यात्री बेयार्ड टेलर का लिखना बहुत ही ठीक है। उक्त महात्मा का मन्तव्य नीचे उद्धृत किया जाता है।

"Stockholm has been called the most licentious city in Europe, and I have no doubt, with the most perfect justice. Vienna may surpass it in the amount of conjugal infidelity, but certainly not in general incontinence. Very nearly half the registered births are illegitimate, to say nothing of the illegitimate children born in wedlock Of the servant girls, and seamstresses in the city, it is very safe to say that scarcely ten out of a hundred are chaste; while as rakish

young Swedes have coolly informed me, many girls of respectable parentage, belonging to the middle class, are not much better. The men, of course, are much worse than the women, and even in Paris one sees fewer physical signs of excessive debauchery. Here the number of broken down young men, and blear-eyed hoary sinners, is astonishing. I have never been in any place where licentiousness was so open and avowed— and yet, where the slang of a sham morality was so prevalent. There are no houses of prostitution in Stockholm, and the city would be scandalized at the idea of allowing such a thing A few years ago two were established, and the fact was no sooner known than a virtuous mob arose, and violently pulled them down. All the baths in Stockholm are attended by women (generally middle-aged and hideous, I must confess) who perform the usual scrubbing and shampooing with the greatest nonchalance One does not wonder when he has seen Berlin and Paris, and have come at last to Stockholm to be ruined"—Bayard Taylor.

टेलर साहब के कथन में केवल यही अन्तर देख पड़ा कि इस समय हम्मामों में "अधेड़ और कुत्सित" स्त्रियों के बदले जवान और साफ़ सुथरी औरतें काम करती हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह समयोचित उन्नति है।

अन्यान्य दृश्य। नगर के होटलों में ग्रैंडहोटल प्रधान है। इसके ऊपर से सामने की खिड़की से सन्ध्याकाल का दृश्य बहुत ही सुन्दर देख पड़ता है। नगर की प्रकाशमाला का प्रतिबिम्ब जल में दिखाई पड़ रहा है, छोटे छोटे स्टीमर इधर-उधर दौड़ रहे हैं, दूसरी ओर भारी राजमहल कुछ कुछ दिखाई दे रहा है। स्वच्छ ग्रीष्मऋतु का सन्ध्याकाल हृदय में जैसे एक प्रकार के अद्भुत रस का सञ्चार करता है। बाग़ों में तीसरे पहर से ही भीड़ हो जाती है। ड्यूरगार्डेन (Diurgarden) टापू का हासेल-बाकेन (Hassel-

backen) अड्डा प्रधान है। यहाँ नित्य तीसरे पहर और शाम को बहुत लोग इकट्ठे होते हैं। खुली जगहों में बैठकर कोई केवल बाजा सुन रहा है, कोई काफी या शराब पी रहा है, कोई मामूली जलपान ही कर रहा है। और कोई अच्छी तरह से बैठा भोजन कर रहा है। नगर के निचले हिस्से से अपेक्षाकृत ऊँचे हिस्से पर चढ़ने के लिए मोज़बाक (Mozebacke) में एक कल (Lift) है। उस कल के द्वारा अनेक लोग चढ़ते-उतरते रहते हैं। यूरोप के प्रधान प्रधान नगरों की तरह स्टाकहल्म में भी जाकर हर एक यात्री सन्तुष्ट हो जाता है। प्रत्नतत्त्व के पण्डितों म्यूज़ियमों मे विशेष करके जानने योग्य विषय मिलेंगे। साहित्य, धर्म और मनोविज्ञान के प्रेमी लोग भुवनविख्यात महात्मा सुईडेनबर्ग (Swedenborg) के घर और पाठभवन को देख कर अपने को कृतार्थ समझेंगे। रँगीले और हँसमुख लोग देहाती लोगों की मज़ेदार रंगीन पोशाकें देख कर प्रसन्न होंगे और शरीर और मन का स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए केवल जलवायु बदलना जिनका उद्देश्य है वे यात्री यहाँ ऐसे सुन्दर दृश्य देखेंगे जो शायद और कहीं देखने को नहीं मिल सकते। वास्तव में यह नगर सर्वथा "बाल्टिक की रानी" (Queen of the Baltic) नाम के योग्य है। यहाँ ढाई लाख से अधिक लोग रहते हैं।

राज्य की साधारण अवस्था। स्वीडेन और नार्वे दोनों देश एक ही राजा के अधीन हैं। पहले कहा जा चुका है कि वर्त्तमान राजा द्वितीय अस्कार नेपोलियन के प्रसिद्ध सेनापति मार्शल बर्नाडोट के पोते हैं। बर्नाडोट को राज्य मिलने का हाल भी लिखा जा चुका है। राजा द्वितीय अस्कार एक पण्डित आदमी हैं। उन्होंने अनेक कवितायें लिखी हैं और कवि गेटे (Goethe) के फ़ाउस्ट (Faust)

का अनुवाद किया है। यह मल्लाही का काम बहुत अच्छा जानते हैं और सदा अपने याट (yacht) में राज्य के बन्दरों के पर्यवेक्षण के समय ग़रीब मछुओं से बातचीत करना पसन्द करते हैं। इनको स्वीडेन से ७४,३३३ पौण्ड और नार्वे से २४,१०६ पौंड सालाना वृत्ति मिलती है। इसके सिवा और एक मद में राजकोष से इनको १६,६६६ पौंड मिलते हैं। सन् १८६२ से राज्य के हर एक गाँव और नगर में स्वायत्त-शासन की प्रथा प्रचलित हो गई है। पञ्चायत और पादरियां के द्वारा सब स्थानीय मामलों की व्यवस्था हुआ करती है। सन् १९१० की मनुष्य-गणना के अनुसार ५५,२१,९४३ आदमी स्वीडेन मे रहते हैं। इनमे ७,००० लापलेंड के (Lapp) और १९,००० फिनलेंड के (Finn) असभ्य लोग हैं। इस पर भी विद्या-प्रचार की व्यवस्था बहुत अच्छी और अधिक है। यहाँ २ यूनिवर्सिटी, ७८ कालेज, २५ हाई स्कूल, १२ नार्मल स्कूल, २ बड़े और ५ छोटे शिल्पविद्यालय, ९ नौ-विद्यालय, ९ गूँगे और बहरों के स्कूल और कई एक चिकित्साशास्त्र के विद्यालय हैं। साधारण प्राथमिक शिक्षा मुफ़्त दी जाती है। आईन के अनुसार सबको अपने बच्चे सरकारी स्कूलों में भेजने पड़ते हैं अथवा यह प्रमाण देना पड़ता है कि घर में ही उनको शिक्षा दी जा रही है। सन् १८८९ में ६,५०,४५४ पौण्ड ख़र्च करके १०,१६३ प्राथमिक स्कूलों में १३,११० शिक्षकों के द्वारा ५,८५,२१२ छात्रों को ख़ैरात में शिक्षा दी गई थी। इस देश के रुपये का नाम है क्रोना। वह १ शिलिंग १½ पेनी का होता है। उसमें लिखा रहता है "(Brodar folken's val") (भ्रातृजातिगण का मंगल) अर्थात् परोसी जातियों का मङ्गल हो। पैसे का नाम है ओर (Ore)। १०० ओर का एक क्रोना (Krona) होता है।

५, १०, २० कोना तक का सोने का सिक्का प्रचलित है। २० क्रोना के ऊपर के लेन-देन में सोने के सिक्के का व्यवहार होता है। ऐसा ही वहाँ आईन है। स्वीडेन, नार्वे और डेनमार्क इन तीन देशों में तीनों जगह के सिक्के बराबर चलते हैं। सन् १९१३ में डेढ़ करोड़ पौण्ड से कुछ अधिक राज-कर वसूल हुआ था। इसी साल प्रायः ३½ करोड़ पौण्ड का ऋण था। इस राज्य की एक व्यवस्था बहुत अच्छी है। हर एक महल्ले (Commune) में पन्द्रह वर्ष से कम अवस्था के असहाय बालक-बालिका रोगी बूढ़े और अपाहिज लोग जितने होते हैं उनका पालन-पोषण उस महल्ले के लोगों को करना पड़ता है। अन्यान्य प्रकार के दीन-हीन जनों की व्यवस्था का भार एक ख़ास सभा (Communal Poor Board) के ऊपर है। ग़रीब आदमी जिनमें मज़दूरी करके पेट पालें, इसके लिए १८१८ कारख़ाने (Work-house) हैं। साधारणतः यह कहा जा सकता है कि स्वीडेन के लोग भले आदमी, आमोदप्रिय और बुद्धिमान् जान पड़ते हैं। यहाँ के अधिकांश लोग शिक्षित हैं; किन्तु उनमें तत्परता या कार्यकुशलता के लक्षण उतने नहीं देख पड़ते। सेना दो लाख के लगभग है। जङ्गी जहाज़ ६० हैं, उनमें १७ लौहयान हैं।



रूस ।

फ़िनलेंड (Finland) । स्वीडेन से मैं रूस को रवाना हुआ। जहाज़ पर केवल दस यात्री थे। ३ बजे के समय स्टाकूहल्म छोड़ कर यात्रा की और दूसरे दिन शाम के ६ बजे फ़िनलेंड की राजधानी हेल्सिंगफ़ोर्स (Helsingfors) में जहाज़ पहुँचा। हम लोग नगर देखने के लिए चले। उस समय भी २।३ घंटे दिन होगा।

हेल्सिंगफ़ोर्स। सन् १८३३ में रूस-सम्राट् के शुभागमन का स्मारक एक भारी स्तम्भ समुद्र-तट पर स्थापित किया गया था। इस की चोटी पर एक राजमुकुटधारी दो सिर के ईगल पक्षी (Double headed Eagle) की मूर्ति शोभायमान है। यही रूस का राजचिह्न है। यहाँ की किराये की गाड़ियों के गाड़ीवानों को अचानक देख लीजिए तो रोमन-कैथलिक पादरियों का धोखा हो जायगा। घाँघरा, कमरबन्द और टोपी उसी ढङ्ग की होती है। बन्दरगाह के ऊपर खुले मैदान के ढंग का स्थान है। वहाँ बहुत से ग़रीब आदमी दिन भर मेहनत करने के बाद मिट्टी के प्यालों में चने की दाल ऐसी कोई चीज़ खा रहे थे। निकट ही एक भारी गिर्जा है। गिर्जे का गुम्बद नीले रंग का है। इसमें बहुत कुछ एशियाई ढङ्ग नज़र आता है। रास्ते में देखा, लोग ५, ७, १० पावरोटियाँ छेदकर रस्सी में लटकाये लिये चले जा रहे हैं। गिर्जे के पास ही यूनिवर्सिटी और पार्लियामेंट

के भवन हैं । यह जगह छोटी है, उसी के अनुसार यहाँ म्यूज़ियम, बाग़, चित्रशाला आदि सब कुछ है । एक भली और प्रतिष्ठित स्त्री मुझे साथ लेकर दो एक स्थान दिखा लाईं । यह खूब अँगरेज़ी जानती थीं और कुछ दिन लन्दन मे रह चुकी थीं । इन्होंने मेरा परिचय पाने पर विनीत भाव से कहा—"आप लोग आर्य्य—ककेशियन (Caucasian) जाति के हैं; हम मंगोलियन (Mongolian) जाति के हैं । आप लोग बहुत दिनों से उन्नत और सभ्य हैं, हम लोग अभी अभी सभ्य हुए हैं" । उक्त रमणी के विनीत वचनों के सिवा और कोई विशेष मंगोलियन जाति का चिह्न उसमें मुझे नहीं देख पड़ा । मैंने उससे कहा— "अन्यान्य यूरोपियनों मे और आपमे तो किसी तरह का मामूली फ़र्क भी नहीं देख पड़ता । किसी समय आप लोग मंगोलियन जाति के होंगे, मगर अब युगयुगान्तर से यूरोप में रहने और यूरोपियन लोगों के साथ व्याह-शादी और घनिष्ठता हो जाने के कारण आप लोगों के पूर्व-पुरुषों से शारीरिक लक्षण और अन्यान्य भाव आप लोगों में बिल्कुल ही नहीं रहे । रास्ते गली मे नीची श्रेणी के बहुत से लोगों में कुछ कुछ मंगोलियन जाति का आभास अवश्य देख पड़ा, लेकिन भले आदमियों में वह बात नहीं पाई जाती थी । पार्क में एक छोटा सा थियेटर है, वहाँ तीसरे पहर नाटक का अभिनय होता है । उसके सामने समुद्र में सुन्दरी नौजवान स्त्रियाँ छोटी छोटी नावों पर बैठी आप ही डाँड़ खेकर गा रही थीं । इस प्रकार उन्हें जलविहार के साथ व्यायाम (कसरत) करते देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई । किनारे की एक बेंच पर बैठ कर बहुत देर तक मैं इस दृश्य को देखता रहा । रात के दस बजे जहाज़ पर लौट आया । इस नगर में डेढ़ लाख से कुछ अधिक आदमी रहते हैं ।

डाक्टर रायटर और डाक्टर मित्र । यहाँ से मैं रूस गया ।

वहाँ से लौटने पर फिर एक दिन हेल्सिंगफ़ोर्स में ठहरना हुआ। जहाज़ पर डाक्टर रायटर (Dr. Reuter) मेरे सहयात्री थे। यह हेल्सिंगफ़ोर्स की यूनिवर्सिटी में भाषातत्त्व के अध्यापक (Professor of Philology) थे। परिचय के बाद बातों ही बातों में इन्होंने पूछा कि "आपके देश के पण्डित राजेन्द्रलाल मित्र, जान पड़ता है, अच्छी तरह संस्कृत नहीं जानते। खोज का काम शायद पण्डित लोग करते हैं और वे उनकी सहायता से उसे अँगरेज़ी भाषा में प्रकाशित करते हैं। उनके लेख देख कर मुझे सन्देह होता है कि प्रत्नतत्त्व के सम्बन्ध मे उनका ज्ञान दूसरे के द्वारा प्राप्त है। आप इस बारे में क्या जानते हैं?" मैं तो अवाक् हो गया! फ़िनलेंड में बैठे बैठे इस आदमी ने दूसरे के लेखों को पढ़कर ठीक बात जान ली! यह तो सहज काम नहीं है! उत्तर और क्या देता? कहा—"हाँ, उनकी मातहती में अनेक पण्डित काम करते हैं। एक पण्डित को ख़ास तौर पर तनख़्वाह देकर उन्होंने अपने पास रक्खा है। खोज इत्यादि के काम में वह उनसे अवश्य सहायता लेते हैं।" यूरोपियन लोग धन्य हैं! ऐसी ज्ञान-लालसा हुए बिना क्या कभी उन्नति होती है? इसी ज्ञान की प्यास को बुझाने के लिए वे लोग समुद्र में घुसते, पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ते, आकाश के ग्रहों को देखते-भालते और तमाम कठिन कामों से नहीं हटते। कहाँ मित्र महाशय, और कहाँ फ़िनलेंड! धन्य उद्यम और धन्य उत्साह! मैंने अन्त में उनको समझा दिया कि संस्कृत-भाषा पर पूरा अधिकार न रहने पर भी प्रस्तरफलकों के लेखों और बाहरी अनेक बातों से अनुसन्धान और गवेषणा के द्वारा बहुत से प्राचीन तत्त्वों के आविष्कार के लिए मित्र महाशय ने खूब दिमाग़ लड़ाया है।

आबो (Abo)। हेल्सिंगफ़ोर्स से आधी रात को यात्रा करके

दूसरे दिन तीसरे पहर फ़िनलैंड की प्राचीन राजधानी आवो के नीचे की छोटी नदी में जहाज़ घुसा। नदी के मुहाने पर ८०० बरस का पुराना एक क़िला है। वहीं पर विलासभवन (Villas) और वृक्ष-पंक्तिशोभित बहुत से छोटे छोटे टापू हैं। जहाज़ के पास पहुँचने पर वहाँ के लड़के-लड़की रूमाल उड़ा उड़ा कर हम लोगों की अभ्यर्थना करने लगे। समुद्रतट से थोड़ी ही दूर पर नगर है। नदी के इस पार से उस पार जाने के लिए ख़ैराती खेवा आता जाता है। पैसा नहीं देना पड़ता। सारे यूरोप भर में यहीं यह बात देख पड़ी। यहाँ के अधिकांश नर-नारी मंगोलियन-भाव-युक्त हैं। यहाँ के मान-मन्दिर (Observatory) में एक भारी गोलक (Globe) है। पेरिस की विश्वप्रदर्शिनी में दिखलाये गये गोलक से यह गोलक छोटा है। नागरिक गिर्जे में देशीय इतिहास के अनेक सुन्दर चित्र (Fresco) हैं।

देश की साधारण अवस्था। फिनलैंड की शासनप्रणाली साधारण रूसी साम्राज्य से भिन्न है। यहाँ की पार्लियामेंट, ख़ज़ाना, जातीय बैंक और सिक्का आदि सब अलग है। सारे रूस-राज्य में केवल इसी देश को सम्पूर्ण रूप से साधारण-तन्त्र के द्वारा स्वायत्त-शासन प्राप्त है। कई लाख रुपये वार्षिक 'कर' की तरह रूस-सम्राट् को दिये जाते हैं सही, किन्तु उन रुपयों को रूस-सम्राट् उस देश के ख़ैराती कामों की सहायता के फ़ण्ड में दे दिया करते हैं। रूस-सम्राट् के सलाहकारों और मुसाहबों की आँखों में यह प्रथा अवश्य ही खटकती है, पर करें क्या, लाचार हैं। स्वीडेन-राज्य से अलग होकर यह देश जब से रूस के हाथ में आया तब से यह प्रथा चली आती है। अब इसके बदलने का कोई उपाय नहीं है। यहां की प्रजा मुक्त-कण्ठ से स्वीकार करती है कि स्वीडेन की अधीनता की अपेक्षा

रूस की छत्रछाया में उनको अधिक सुख प्राप्त है। ज़ार (Czar) "फ़िनलैंड के ग्रैण्ड ड्यूक (Grand Duke) कहलाते हैं। सरकारी दफ़्तरों के काग़ज़ों को युगयुगान्तर तक सुरक्षित रखने के लिए यहाँ, सारे यूरोप की अपेक्षा, अधिक यत्न देखा गया। ऐसा उत्तम काग़ज़ और ऐसी पक्की स्याही और कहीं नहीं काम मे लाई जाती। इस देश के रुपये का नाम है मार्का (Markka) एक मार्का ९१ पेनी का होता है। पैसे को पेनी (Penni) कहते हैं। सरकारी बैंक के ५ से ५० मार्का तक के नोट चलते हैं। फ़िनलैंड में ३२,००,००० आदमी बसते हैं। तीस लाख पौण्ड से कुछ अधिक कर वसूल होता है। राज्य का ऋण आधे करोड़ के ऊपर है।

क्रानस्टेड Cronstadt। इसके चारों ओर के छोटे छोटे टापुओं में भी ७।८ क़िले हैं। पानी उथला होने के कारण यहाँ से राजधानी तक ९ कोस लंबी, ७०० फ़ुट चौड़ी और २२ फ़ुट गहरी एक नहर निकाली गई है। इसके दोनों किनारे पत्थर से पुख़्ता बने हुए हैं। इसमें होकर बड़े बड़े जहाज़ मज़े में नगर के नीचे तक चले जाते हैं। यह नहर सन् १८८५ मे खोली गई थी। मैं हेल्सिंगफ़ोर्स से चल कर दूसरे दिन दो बजे के समय क्रानस्टेड द्वीप के निकट पहुँच गया। जहाज़ पहुँचते ही एक छोटे स्टीमर पर पुलिस का कर्मचारी आया और हम सबसे "पासपोर्ट" लेकर चला गया। क्रानस्टेड सेन्टपीटर्सबर्ग (St. Petersburg) रूसी भाषा में Petersbourg का बन्दरगाह है। यहाँ पर पीटर-दि-ग्रेट का बनवाया एक क़िला है। उसमें राजधानी की रक्षा के लिए २५,००० सेना रहती है। इसके सिवा यहाँ ५०,००० आदमियों की बस्ती भी है। इसके निकट ही १० रूसी जंगी जहाज़ आनेवाले फ़्रेञ्च-जहाज़ों

की अभ्यर्थना के लिए अपेक्षा कर रहे थे। उन जहाज़ों के आने पर बड़ी धूमधाम से उनकी अभ्यर्थना की गई।

सेन्टपीटर्सबर्ग। तीसरे पहर राजधानी के बन्दरगाह में उतर कर अपने अपने ठहरने के होटल का नाम लिखा कर बन्दरगाह के आफ़िस से अपना अपना पासपोर्ट वापस लिया। इसके बाद सब लोग अपनी अपनी जगह चले गये। यहाँ पासपोर्ट पर बड़ी कड़ी नज़र रक्खी जाती है। होटल में रोज़ तीन बार पासपोर्ट दाखिल करना पड़ता है। रात को, घूमना हो तो उसे साथ रक्खो, नहीं तो मुफ़स्सिल मे स्थानीय पुलिस के पास और राजधानी में होटल के मैनेजर के पास जमा कर देना पड़ता है।

डाक्टर प्राट्। तीन अमेरिकन भद्रपुरुषों के साथ होटल में ठहरा। इनमें प्राट् नामक एक पुराने डाक्टर भी थे। अब ये अपना काम छोड़ कर देशभ्रमण में ही शेष जीवन बिताना चाहते हैं। सर्दी के महीनों में दक्षिण-यूरोप में वे रहे थे। अब घूमने निकले हैं। वे दो दफ़े भारत-मे भी हो गये हैं। एशिया और दक्षिण-अमेरिका के बहुत देशों की सैर मे इन्होंने अनेक कष्ट सहे हैं। ये पृथ्वी के अनेक दुर्गम मार्गों का वर्णन किया करते हैं। डाक्टर प्राट् हमसे हमेशा कहा करते थे कि "यहाँ दीवारों के भी कान हैं, सावधानी से बातचीत करना"। वहाँ सदा जासूस छिपे तौर से पता लगाया करते हैं। ज़रा भी अपने राज्य के विरुद्ध कोई बात कही कि आप गिरफ़्तार हुए। प्राट् हमारे इस दल के मुरब्बी से थे। वह ज्ञानी और बहुदर्शी थे, हम लोग सानन्द उनके उपदेशों को अंगीकार करते थे।

भाषा। होटल में जाकर देखा, यहाँ धन्यवाद का वाक्य खूब लंबा चौड़ा है। अँगरेज़ी के ("Thank you sir") का तर्जुमा

यहाँ की भाषा में "ब्लाघोदारयुभ्यास्" होगा । वाक्य कुछ अटपटा सा भी जान पड़ा । रूसी भाषा में यह शब्द यों लिखा जायगा ("Blaghodaryvas) यहाँ Y का उच्चारण "यु" होता है। जैसे "रयुब्ल"—Ryble । नार्वे की भाषा का भी यही नियम है। जैसे "ओलफ क्युरे"—(Olaf kyrre) । धन्यवाद के लिए फ्रेञ्च लोग अँगरेज़ी Thank you sir की जगह "मेयार्सि मोसिओ", जर्मन लोग "डाङ्के से हा", इटलियन स्पेनिश और पोर्च्युगीज़ लोग "ग्रासिया सिनिओरे", फ़िनलेंड के लोग "किटोक्सिया" और ग्रीक लोग "एफ़ुकाविस्तो किरियें" इत्यादि कहते हैं। नार्वे, स्वीडेन और डेन्मार्क की भाषा के साथ जर्मन-भाषा का विशेष मेल है। "हाँ" के अर्थ में रूस मे दा— Dah, जर्मनी में या– ya, नार्वे आदि देशों मे यो– yo, फ़िनलेंड में ओनी— Oni, इटली आदि मे सी— Si, और ग्रीस में नि— Ne शब्द का व्यवहार होता है। 'न' अक्षर के द्वारा सम्मति प्रकाशित करने की प्रथा केवल ग्रीस में ही देखी। वहाँ 'ओथी' के माने हैं 'नहीं'।

नगर और राज्य का भाव । नगर में घूमने के लिए निकलने पर देखा कज़्ज़ाक (Cossack) सेना के पहरे में कुछ हथकड़ी-बेड़ी पहने क़ैदी साइबेरिया (Siberia) प्रदेश को भेजे जा रहे हैं। क़ैदियों की पहचान के लिए उनका आधा सिर मूड़ दिया जाता है। कज़्ज़ाक सवारों का जैसा नाम सुना था वैसा कुछ देखने मे न आया। हाँ, यह हो सकता है कि वे हमारे यहाँ के गोर्खों की तरह कष्ट सह सकते हों। यहाँ के लोगों को कबूतर उड़ाने का बड़ा शौक है। कहा जाता है कि कबूतर का रूप रख कर पवित्रात्मा ईसा के निकट आई थी। इसी से यहाँ के लोग कबूतर को पवित्र और पूज्य समझते

हैं । ट्रामगाड़ी पर या पैदल जाते समय देखा कि कोई गिर्जा सामने पड़ते ही लोग टोपी उतार कर नमस्कार करते और उँगली से मुख और हृदय पर तीन वार क्रूस का आकार अंकित करते हैं । यहाँ के साधारण लोग मूर्त्तिपूजक ही जान पड़ते हैं । वड़े वड़े गिर्जों में जाकर देखा, मेरी और ईसा की मूर्त्ति के सामने वड़ी वड़ी वत्तियाँ जल रही हैं, धूप सुलग रही है । वालक बूढे और जवान, सव आकर साष्टाङ्ग प्रणाम करते और वहाँ की धूल मस्तक में लगाते हैं। गिर्जों के वाहर वड़े पत्थर के पात्रों मे मन्त्रपूत जल रक्खा हुआ है । देश-विदेश के रोगी लोग आकर उस जल को चरणामृत की तरह पीते हैं । एक वड़े गिर्जे (Kazan Cathedral) में वहुत प्यास लगने के कारण मैंने इस जल को पी लिया । डाक्टर प्राट् ने वहुत ही खीझ कर कहा—"मैं तुमको अपने साथ होटल नहीं ले जाऊँगा । यह ज़हरीला जल ज़रूर तुमको वीमार कर देगा" । इसके उत्तर में मैंने उनको समझाया कि जिस जल को पूरे विश्वास के साथ इतने लोग छूते हैं उसमें अवश्य ही ऐसी शक्ति आ गई है कि उसके पीने से हानि नहीं, लाभ ही की सम्पूर्ण सम्भावना है । सारे गिर्जों की चोटी पर मुसलमानी धर्म-चिह्न अर्धचन्द्र के ऊपर क्रूस स्थापित है । इसका मतलव यह है कि मुसलमानी धर्म को दवा कर विजयी ईसाई क्रूस अवस्थित है । तुर्कों से शत्रुता ही इसका कारण है । नगर की सड़कें खूव चौड़ी और सुन्दर हैं । एक सड़क तीन मील लम्वी और १२० फुट चौड़ी है । इसके किनारे एक वड़ा भारी वाज़ार है । नेवा (Neva) के किनारे की राह पर खड़े होकर देखने से इस पार और उस पार का दृश्य वहुत ही मनोहर देख पड़ता है । सचमुच सेन्टपीटर्सवर्ग एक सुन्दर नगर है । नगर का सौन्दर्य और समृद्धि देखने से इस राज्य की आर्थिक अवस्था वुरी

नहीं जान पड़ती । सब सोना चारों ओर से घसीट कर गिर्जे और राजमहल में ढेर कर दिया गया है । प्रजा की अवस्था पर कुछ ध्यान नहीं दिया गया । रास्तों में जो साधारण श्रेणी के लोग देख पड़ते हैं उनकी पेशाक बहुत कुछ एशियाई ढंग से मिलती-जुलती होती है । सिर पर टोपी (Cap), अँगरेज़ी हैट (Hat) नहीं; शरीर पर पैरों तक लम्बा ढीला काले रंग का कोट; घुटनों तक का बूट जूता; यही उनकी पोशाक है । बहुत लोग कोट के बदले पंजाबियों के ऐसे लम्बे कुर्त्तों के ऊपर केवल फतुही पहने घूमते हैं । बाल सबके मुसलमानों के ऐसे लम्बे होते हैं । पुस्तक आदि की दूकानों में फ़्रेञ्च पुस्तकें ही अधिक देख पड़ीं । बड़े लोग सदा फ़्रेञ्च-भाषा का ही इस्तेमाल करते हैं । दूकानदार बड़े ही ठग हैं; हर एक चीज़ का दसगुना मोल कहते हैं और कम से कम दूनी क़ीमत लेते हैं । इस बारे में उनको यह गर्व है कि पृथ्वी के किसी देश का आदमी चालाकी में उनकी बराबरी नहीं कर सकता । हज़ार सियाना विदेशी हो तो भी वे उसे ज़रूर ठग लेंगे, इत्यादि । राह में लोग अपरिचित लोगों को भी "भाई" कहकर सम्बोधन करते हैं । हमारे यहाँ भी प्रायः ऐसा ही देखा जाता है । 'भाई' 'भैया' आदि शब्दों का प्रयोग यहाँ भी किया जाता है । राजधानी खूब साफ़-सुथरी है । किन्तु उपनगर बड़े ही गंदे हैं । साधारण लोगों में सफ़ाई और सजावट कम पाई जाती है । एक दिन तीसरे पहर मैं एक उपनगर (Alexandrowski) देखने गया । वहाँ जाकर देखा, घर का सारा कूड़ा सबके दर्वाज़ों के पास ढेर है, इसलिए कि सर्दी की बर्फ़ के साथ बह जायगा । शाम के ८½ बज गये थे, उस समय भी हर एक घर के सामने सड़क के किनारे बेंचें डाले स्त्रियाँ और लड़के सब हवा खा रहे थे । सेन्टपीटर्सबर्ग में अनेक नहरें हैं । नगर में बिजली

की रोशनी है। साधारण बागों में अनेक श्रेणी के लोग बहुत रात गये तक बेंचों के ऊपर बैठे हँसी दिल्लगी और बातचीत किया करते हैं। इन सब स्थानों में एकत्र अनेक तरह की पोशाकें देखकर जान पड़ता है जैसे यूरोप-खण्ड के बाहर की किसी जगह पर खड़े हैं। रास्ते में बहुत से छोटे लोग कंधे पर लाठी रक्खे और उस लाठी के सिरे पर झोली में छोटे बच्चे को लटकाये जाते देख पड़ते हैं। होटलों में तो खाने-पीने की व्यवस्था यूरोप भर में सब जगह एक सी हो गई है। किन्तु साधारण लोग मशरूम (Mushroom) खूब खाते हैं। रोटी फ़िनलेन्ड की ऐसी गोल होती हैं। वर्फ़ का खब ख़र्च है। जल, चाय, बियर-शराब आदि सब पीने की चीज़ों में वर्फ़ डाली जाती है। स्त्री और पुरुष दोनों ही तम्बाकू पीते हैं। शराब पीने को बुरा समझना कैसा, छोटे लोग तो प्रायः हर एक काम में उसे बहुत ज़रूरी चीज़ समझते हैं। लोगों में उत्साह और उद्यम की मात्रा बहुत नहीं देख पड़ती। हमीं लोगों का ऐसा अलसभाव उनमें भी देख पड़ता है। हर शनिवार को बहुत लोग साधारण हम्मामों में स्नान करने जाते हैं। वहाँ जले पत्थर में पानी डाल कर भाफ़ तैयार करके उससे एक प्रकार का स्नान कराया जाता है। यूरोप के हर एक देश में एक-न-एक प्रकार का साधारण-तंत्र प्रचलित है। अर्थात् प्रजा की राय लेकर सब राज-काज किये जाते हैं। किन्तु यहाँ उस तरह की कोई व्यवस्था नहीं है। सम्राट् और पार्षद लोग जो अच्छा समझते हैं वही करते हैं। जन-साधारण की इच्छा या सलाह पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता। एक विचित्र बात वहाँ यह है कि सम्राट् तो लोगों को जो धन देंगे उतने के नोट मिलेंगे और लोग जो सर्कार को रुपया देंगे उन्हें उतने के सोने के सिक्के देने पड़ेंगे। प्रजा को जो

राजा के यहाँ से नोट मिलते हैं उनको अगर कोई सरकारी ख़ज़ाने में भुना कर रुपया या सोने का सिक्का लेना चाहे तो नहीं पा सकता। इसी कारण वहाँ चाँदी के एक रुब्ल (Rouble) का मूल्य ३½ शिलिङ्ग है। और एक रुब्ल के नोट का मूल्य केवल २½ शिलिंग है। यह कैसा भयानक ज़ुल्म है! इसी को "ज़बर्दस्ती सिक्का चलाना (Forced currency) कहते हैं। यह राजनियम का घोर अत्याचार है। इसके सिवा शासन-सम्बन्धी भिन्न भिन्न विभागों की व्यवस्था और कर्मचारी इतने ख़राब हैं कि होटल मे टिके हुए किसी विदेशी आदमी की कोई चीज़ अगर चोरी जाय तो उसे छिपा डालना ही सब तरह अच्छा; क्योंकि पुलिस में ख़बर देने से पहले तो घूस देते देते चीज़ से चौगुने दाम ख़र्च हो जायँगे। इसके बाद चोर पकड़ा जाने पर अगर आप साबित न कर सके तो दस बीस रुपये ख़र्च किये बिना आपका छुटकारा पाना कठिन है। हम लोगों में से जो लोग रूस के शासन को अच्छा समझते हों उन्हें इन सब बातों पर विचार करके देखने से मालूम हो जायगा कि ब्रिटिश-गवर्नमेंट की अधीनता रूस के शासन की अपेक्षा कितनी अच्छी और फ़ायदा पहुँचानेवाली है। मेरी समझ में रूसी साम्राज्य की व्यवस्था अगर बदल जाय और वहाँ प्रजा-परतन्त्र शासन-प्रणाली स्थापित हो जाय तथा राज्य में एक मध्यवित्त लोगों की ज़बर्दस्त मण्डली बन कर बड़े लोगों के अत्याचारों की जड़ उखाड़ डाले तो रूस निस्सन्देह एक उन्नतिशील प्रभावशाली राष्ट्र बन सकता है। अनेक सुसभ्य अँगरेज़ पण्डितों को भी यह स्वीकार करना पड़ा है कि संसार के नियम के अनुसार इस बार रूस के उठने की बारी है। सभी जातियाँ जगत् में एक बार अपने भुजबल और प्रताप के द्वारा अपनी प्रधानता का डंका पीट चुकी हैं; स्लैव

(Slovs) ज़ाति कभी ऐसा नहीं कर सकी। अतएव अब की दफ़ा रूस की बारी है। किन्तु ऐसा होने की राह में जो रुकावटें हैं उन्हें पहले हटा देना चाहिए। केवल राक्षसी शक्ति से कहीं भी कुछ नहीं हुआ। उदारनीति और धर्म-प्रभाव के विना संसार में प्रधानता प्राप्त करना सर्वथा असंभव है। आशा होती है कि जापान से लड़ाई में हार कर रूस समझ गया है कि पाशव शक्ति सब जगह काम नहीं आती। आन्तरिक वल के विना सिद्धि पाना असम्भव है। यद्यपि नाउट (Knout) दण्ड आदि अनेक पैशाचिक प्रथायें उठ गई हैं तथापि अब तक कुछ एक असभ्यों के ऐसे नियम प्रचलित हैं जैसे सैनिकों में डुएल-युद्ध (Duel) की व्यवस्था। अगर किसी सैनिक का कोई अपमान करे तो उसके साथ सैनिक को डुएल-युद्ध करना ही पड़ेगा, नहीं तो फ़ौज से उसका नाम काट दिया जायगा। यहाँ तक भी ग़नीमत थी, किन्तु नियम तो यह है कि अगर वह सैनिक पुरुष अपने साथ दूसरे के उस वर्ताव को, जिसे और लोग 'अपमान' समझते हों, अपमान न समझे तो भी उसे डुएल-युद्ध करना होगा। उदाहरणस्वरूप एक घटना का उल्लेख यहाँ पर किया जाता है। एक कप्तान एक भद्र महिला के साथ किसी थियेटर में जाकर बैठे। थोड़ी देर के वाद दोनों उठ कर वाहर आये। लौट कर, वहाँ जाकर, उन्होंने देखा कि उनकी दोनों कुर्सियों पर एक और भले आदमी तथा उन्हीं के एक मित्र बैठे हुए हैं। अनेक अनुरोध करने पर भी उन लोगों ने जब स्थान न छोड़ा तो कप्तान भले आदमी की तरह थियेटर से चले गये। यह बात जब ऊँचे अफ़सरों के कान तक पहुँची तो उन्हीं के ऊपर हुक्म जारी किया कि वह या तो अपमान करने के साथ युद्ध करें और या नौकरी से इस्तीफ़ा दे दें। कप्तान बेचारे ने वहुत कुछ समझाया कि उस भले आदमी ने

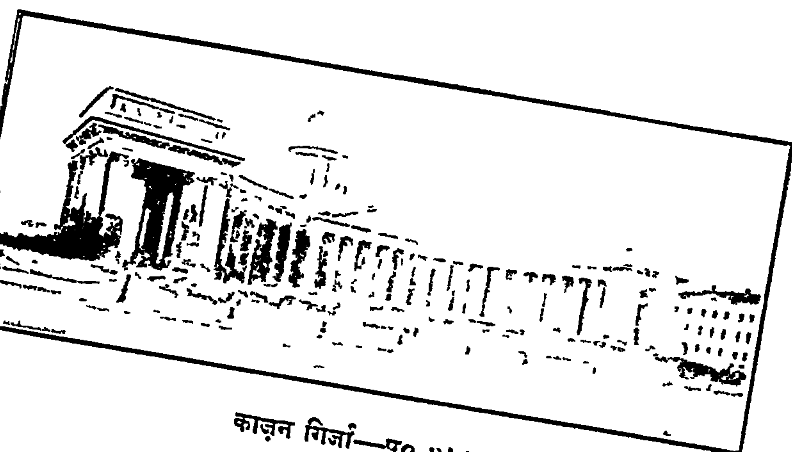
किसी तरह के बुरे वर्ताव से उन्हें ऐसा दुःख नहीं पहुँचाया जिसके लिए मैं उसे मार डालूँ या उसका कोई अङ्ग नष्ट कर दूँ । उसके इस साधारण अपराध को माफ़ कर देना ही मेरी समझ मे उचित है । परन्तु कमान के कहने का कुछ असर नहीं हुआ । अन्त को कमान ने ख़ुशी के साथ नौकरी छोड़ दी । अब पाठक लोग विचार करके देखें कि ऐसे असभ्यों के ऐसे निष्ठुर नियम कहाँ तक समयोचित कहे जा सकते हैं ? क्या यह दारुण धारणा नहीं है ? इँगलेंड में भी एक समय यह पैशाचिक प्रथा प्रवलरूप से प्रचलित थी । सत्रहवीं शताब्दी भर, अर्थात् घोर पण्डित-मूर्ख प्रथम जेम्स (James I "the greatest learned fool in Christendom") के सिंहासनारोहण से लेकर द्वितीय चार्ल्स (Charles II) के शासन-काल के अन्त तक, इज़्ज़तदार लोगों में भी डुएल-युद्ध का बहुल प्रचार था । प्रधानों (Principals) में तो परस्पर यह युद्ध होता ही था, किन्तु उनके नौकर पेशेदार पहलवानों (Seconds) को भी परस्पर यह युद्ध करना पड़ता था । इन युद्धों की समाप्ति प्रायः एक की जान जाने पर ही होती थी । द्वितीय चार्ल्स ख़ुद तो घोर व्यभिचारी और लम्पट थे ही, किन्तु अपने मुसाहवों और सभासदों को भी ऐसे असत् कामों में बराबर उत्साहित किया करते थे । इन्हीं के राज्यकाल मे वकिंघम के ड्यूक (Duke of Buckingham) ने एक दूसरे ड्यूक (Duke of Shrewsbury) को डुएल-युद्ध मे मारा था । दूसरे से अनुचित सम्बन्ध रखनेवाली राक्षसी (Shrewsbury) के ड्यूक की स्त्री प्रसन्नतापूर्वक तमाशा देखने के लिए सईस के वेष से उपपति के साथ युद्धभूमि में गई और युद्ध के समय उपपति का घोड़ा पकड़े रही थी । युद्ध मे वेचारे Shrewsbury के ड्यूक को मार कर वकिंघमराजमहल में सुसंवाद देने को जब

बकिंघम का ड्यूक गया तब रानी के हज़ार मना करने पर भी राजा ने उस खूनी को सादर गले लगा लिया; मानों वह राज्य-रक्षा के लिए कोई बड़े वीरो का ऐसा कर आया था। कोई नियम चलाने के समय सर्वसाधारण की राय न लेने से ही इस तरह के वाहियात नियम प्रचलित हो गये थे। आज भी जिन राज्यों मे ऐसे नियम प्रचलित हैं वहाँ ऐसे क्षमताशाली लोगों का अभाव है जो निरपेक्ष-भाव से सब अवस्थाओं पर विचार करके दोष-गुण बतलावें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि किसी तरह का अपमान न सहना वीर का धर्म है। केवल इसी मूल पर यह नियम चला है। किन्तु इन बातों की भी तो कुछ विवेचना करनी थी कि कौन अपमान अत्यन्त साधारण है, कौन अपराध उपेक्षा के योग्य है, किस अवस्था मे बदला लेना वीरों के लायक काम है और किस अवस्था में ऐसा करना कायर का काम है। केवल इस मोटी बात पर लक्ष्य रखकर बदला लेने की प्रवृत्ति को उत्तेजित करना कि "अपमान सहना वीर पुरुष के योग्य नहीं" पशुओं या पागलों का ही काम है। बहुत लोग यह जानते हैं कि पहले इँगलेंड में ऐसा नियम प्रचलित था कि उसके द्वारा पलटन के बड़े बड़े ओहदे रुपया ख़र्चकर ख़रीदे जा सकते थे। जिस समय यह नियम प्रचलित हुआ था उस समय साधारण प्रजा की राय की अपेक्षा कुछ धनाढ्य लोगों के मतलब पर अधिक ध्यान रखकर नियम बनाये जाते थे। क्रमशः ऐसे बुरे नियम के अनेक विषैले फल फलने पर सर्व-साधारण प्रजा की प्रबल प्रार्थना से यह नियम एक-दम रद कर दिया गया। यदि उस समय धनी लोगों की क्षमता वैसी ही प्रबल बनी रहती तो उनके ऐसे सुभीते का नियम कभी रद न हो सकता। किन्तु उस समय प्रजा का प्रभाव अन्यान्य श्रेणियों की क्षमता की अपेक्षा इतना प्रबल हो उठा था कि हज़ार विघ्न-बाधा

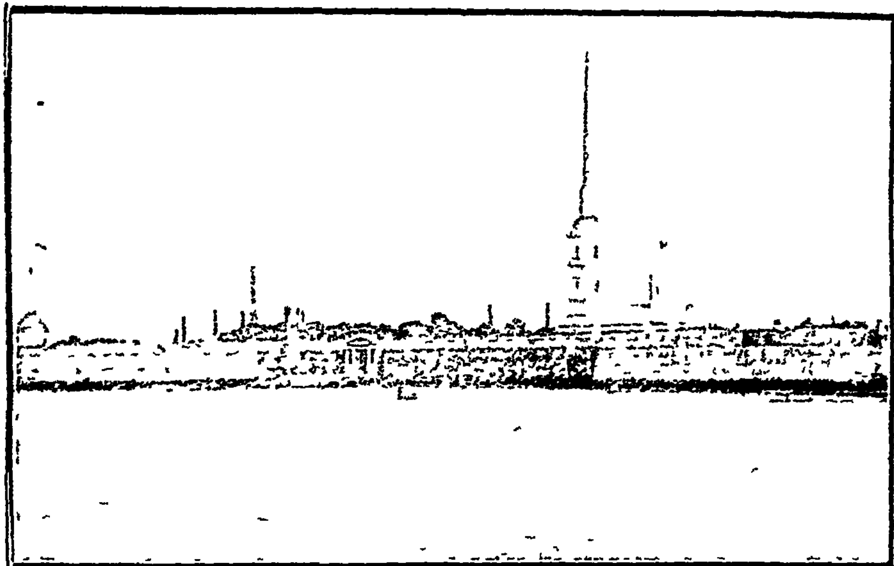
रहने पर भी निरपेक्ष विचार के शस्त्र से इस नियम का वन्धन अनायास ही कट गया । इन्हीं सब कारणों से सब लोगों को स्वीकार करना पड़ता है कि इँगलेंड की वर्त्तमान शासन-प्रणाली अत्यन्त उत्कृष्ट है । जिससे इष्टसाधन सहज और अनिष्ट-सम्पादन कष्टसाध्य हो वही शासन-प्रणाली अच्छी समझी जाती है । शासकों का कर्तव्य है कि केवल विधाता के वताये मार्ग पर, उसी की कृपादृष्टि के सहारे, चलें । इसमें उन्हें हज़ारों विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, निन्दा भी सुननी पड़ेगी । पर उन्हें चाहिए कि वे किसी ख़ास सम्प्रदाय या श्रेणी के स्वार्थ पर कुछ भी दृष्टि न रखकर सर्वसाधारण के मङ्गल और भलाई पर ही ध्यान दें । प्रजागण की इच्छा या सम्मति ही उनके उच्चपद की नींव है और प्रजा की प्रीति भक्ति और श्रद्धा के ऊपर उनका सिंहासन स्थापित है । इस तरह न्याय, प्रेम और दया के साथ सुशासन प्रचलित होने पर राष्ट्र में एक महान् बल उत्पन्न हो जाता है, जिसके सामने, किसी एक श्रेणी या सम्प्रदाय की तो कोई वात ही नहीं, सारी पृथ्वी सिर झुकाती है ।

सेन्ट आइज़क-गिर्जा (St. Isaac's Church) । राजधानी में अनेक छोटे और वड़े गिर्जे हैं । उनमें दो प्रधान हैं—एक तो आइज़क-गिर्जा और दूसरा काज़न-गिर्जा (Kazan Cathedral) । आइज़क-गिर्जे के ठीक सामने हमारा होटल होने के कारण उसमें मैं दो-तीन वार गया । चारों ओर फ़िनलेंड से लाये गये उत्तम पालिश किये हुए एक एक टुकड़े पत्थर (Highly polished granite monoliths.) के ११२ स्तम्भ हैं । स्तम्भ कितने वड़े और भारी हैं, विना देखे इसका अनुभव होना वहुत ही कठिन है । सामने के १६ स्तम्भ ६० हाथ के लगभग ऊँचे हैं । हर एक का घेरा १४ हाथ का है । एक एक पत्थर के टुकड़े के इतने वड़े वड़े खंभे ! इस गिर्जे के वनने मे तीन

सेन्ट आइज़क गिर्जा—पृ० ४५०



काज़न गिर्जा—पृ० ४५१



पुराना क़िला—पृ० ४२१



हर्मिटज—पृ० ४२४

बरस लगे थे। केवल नींव मे दो लाख पौण्ड से अधिक रक़म खर्च हुई है। इस गिर्जे की चोटी ज़मीन से २८६ फ़ुट ऊँची है। चोटी पर एक सुवर्ण का क्रूस स्थापित है। गुम्बद पर सोने के गहरे पानी से सुशोभित ताँवे के 'पत्तर' चढ़े हुए हैं। १४ बुशेल (Bushels) की मोहरें गलाकर ताँवे की चादरों पर चढ़ाई गई हैं। गिर्जे की छत के ऊपर कई एक बड़े बड़े घंटे हैं। एक घंटा इतना बड़ा है कि उसके भीतर एक मोटा-ताज़ा लम्बा आदमी बैठ सकता है और उसके चारों ओर जगह भी छूटी रहेगी। उसका गोला इतना भारी है कि मैं उसे ज़रा भी हिला न सका। गिर्जे के भीतर मूल्यवान् पत्थरों के कई एक खंभे हैं। वेदी के सामने का आवरण (Altar Screen) कितना क़ीमती है सो कोई कूत कर बतला नहीं सकता। इसके सिवा गिर्जे मे अनेक बड़ी बड़ी मूर्तियाँ और बहुत साज-सामान हैं।

काज़न-गिर्जा। बड़ी बड़ी (Colossal) मूर्त्तियों से सुशोभित गोलाकार स्तम्भश्रेणी (Collonades) के भीतर होकर प्रवेश के द्वार पर जाना होता है। गिर्जे के भीतर पीतल की दीवार के ऊपर स्थापित ५२ फ़ुट ऊँचे संगमरमर के ५६ खंभे देखने योग्य हैं। हर एक खंभा एक ही टुकड़े का बना हुआ है। भीतर अनेक चित्रपट टँगे हैं। किन्तु विशेष दर्शनीय वस्तु वेदी (Sanctuary) के सामने की आवृत्ति (Balustrade) के २० फ़ुट ऊँचे खंभे और उनके ऊपर बीम आदि है। ये सब खालिस चाँदी के बने हैं। कज़्ज़ाक़ सिपाहियों ने किसी युद्ध में यह चाँदी लूटी और यहाँ भेंट की थी। मेरी की मूर्त्ति में भी अनेक बहुमूल्य रत्न जड़े हुए हैं।

पुराना क़िला। पीटर-दि-ग्रेट ने इसकी नींव डाली थी। उनके भीतर के गिर्जे में द्वितीय पीटर के सिवा और सब सम्राटों की

समाधियाँ और उनके द्वारा युद्धों मे जीत कर लाई गई बहुत सी सामग्री यहाँ रक्खी है। समाधियों पर ढेर के ढेर सोने की सजावट देखने ही योग्य है।

पीटर-कुटीर। उक्त क़िले के पास ही महात्मा पीटर की प्राचीन झोपड़ी है। सुरक्षित रखने के लिए उसके ऊपर से एक और मकान बना दिया गया है। इसके एक हिस्से में 'भजन' होता है और दूसरे हिस्से में पीटर की अपने हाथ की बनाई एक छोटी नाव और कई एक लकड़ी की चीज़ें रक्खी हैं।

नेवा। नेवा नदी के दोनों किनारों पर सेन्ट पीटर्सबर्ग नगर बसा हुआ है। इस पर दो पक्के और कई एक उतराते रहनेवाले पुल हैं। लकड़ी के पुल सर्दियों में हटा दिये जाते हैं। आग न लग जाय, इसलिए इन पर चुरट वग़ैरह पीने की मनाही है। अक्टूबर से अप्रेल तक नदी का पानी बर्फ़ बन जाता है। जिस दिन बर्फ़ गलना शुरू होता है उसी दिन तोप की आवाज़ से यह समाचार नगर में सूचित कर दिया जाता है और क़िले का प्रधान कर्मचारी राजा के सामने एक पात्र में पानी उपस्थित करता है। पहले नियम था कि राजा इस शुभ समाचार के लानेवाले को पुरस्कार मे वही बर्तन अशर्फ़ियों से भर कर दे देते थे। लोभ के मारे धीरे धीरे बर्तन का आकार बढ़ने लगा। अब ऐसा नियम होगया है कि हज़ार स्वर्णमुद्रायें दे दी जाती हैं।

नेवा द्वीप। क़िले के दक्षिण ओर पास ही एक छोटे टापू पर विश्वविद्यालय का भवन और अन्यान्य विद्याओं की शालायें हैं। खनि-विद्यालय (School of Mines) के अन्तर्गत म्यूज़ियम दर्शनीय है। पृथ्वी मे शायद ऐसा खनि-विद्यालय दूसरा न होगा। उसमे एक टुकड़ा एक क़ीमती पत्थर (Malachite) का रक्खा

है। वह ५० मन के लगभग वज़न मे होगा। उसका मूल्य २०,००० पौण्ड के लगभग है। विज्ञान-विद्यालय के म्यूज़ियम में प्रसिद्ध प्राचीन साइबेरिया के भारी मामथ हाथी (The great Siberian Elephant Mammoth) का कंकाल रक्खा हुआ है। इस हाथी के चमड़े का एक टुकड़ा लन्दन के सर्जन-कालेज (Royal College of Surgeons', London) के म्यूज़ियम में रक्खा हुआ है। यह हाथी का शरीर बरफ़ खोदते में मिला था। न-जाने कितने युगयुगान्तरों से यह इसी तरह बरफ़ के नीचे दबा हुआ था। इस जाति के हाथी के रोएँ होते थे।

पशुशाला आदि। यहाँ की पशुशाला भी बुरी नहीं है। यहां दो सफ़ेद मोर बड़े ही सुन्दर हैं। वनस्पति-भवन में गर्म देशों के वृक्षों के घर (Palm-houses) देखने योग्य हैं। राजपुस्तकागार मे १० लाख छपी हुई और २५,००० हाथ की लिखी पुस्तकें हैं। रास्ते मे पीटर-दि-ग्रेट की पत्थर की घुड़सवार मूर्त्ति, अलेक्ज़ण्डर-स्तम्भ, निकोलस की मूर्त्ति, विजय-फाटक (Triumphal Arch), द्वितीय अलेक्ज़ण्डर की मूर्त्ति आदि अनेक स्मारक चिह्न दर्शनीय हैं।

टौरिडा-महल (Taurida Palace) द्वितीय कैथराइन ने यह महल बनवाया था। किन्तु इस समय यह नाचघर के काम में आता है। बालरूम (Ball-room) ३३० X ७० वर्गफ़ुट है। अर्थात् बारह बार उसमें घूम आने से एक कोस का चक्कर हो जाता है। इस महल से मिले हुए बाग़ की रोशनिया मिलाकर यहा सब २०,००० बत्तियाँ जलती हैं। एक एक झाड़ पहाड़ हो रहा है। इसके सिवा और भी अनेक राजमहल और बड़ी बड़ी इमारतें हैं।

जाड़े का महल। सब महलों से श्रेष्ठ यही सम्राट् का शीत-निवास है। सम्राट् के मणि-मुक्ता आदि रत्नों के ढेर यहाँ रक्खे हुए

हैं। हर एक कमरे में अनेक प्रकार के अगणित विराट् चित्रपट शोभायमान हैं। यह प्रायः सम-चतुष्कोण आकृति का तिमञ्ज़िला वना है। इसका अग्रभाग ७०० फ़ुट लम्वा है। सम्राट् की उपस्थिति में नौकर-चाकर मिलाकर ७,००० आदमी इस घर में रहते हैं। सुवर्ण-गृह (Golden Saloon) की सारी दीवारें सोने से मढ़ी हुई हैं। सिंहासन-गृह (Throne room) १४० × ६० वर्गफ़ुट है। यहीं सोने के पेड़ पर वहुमूल्य रत्न-जटित एक घुग्घू, एक मोर और एक मुर्ग़ा वैठा है।

हर्मिटज् (Hermitage)। उल्लिखित महल के अन्तर्गत म्यूज़ियम का नाम हर्मिटज् है। हर्मिटज् अर्थात् रानी कैथराइन का अन्तिम जीवन में रहने का आश्रम। अव यह रूस का प्रधान अजायव-घर वन गया है। सामने, जहाँ से भीतर जाते हैं वहाँ की छत खम्भों के वदले दस मूर्त्तियों के सिर पर रक्खी हुई है। ये मूर्त्तियाँ काले पत्थर की और १२ हाथ ऊँची हैं। पत्थर पर पालिश की हुई है। इस नगर की सभी चीज़ें भारी और वड़ी देख पड़ती हैं। यह घर ५१५ × ३७५ वर्गफ़ुट है। इसके भीतर जितनी सामग्री है उसके केवल नाम गिनाना भी सर्वथा असम्भव है। ३८ कमरे केवल चित्रपटों से भरे पड़े हैं। ऐतिहासिक, स्वाभाविक और कारीगरी की क़ीमती नई पुरानी असंख्य चीज़ें यहाँ रक्खी हुई हैं। पृथ्वी के अनेक सभ्य और असभ्य राज्यों के वहुत से आधुनिक और प्राचीन पदार्थ यहाँ इकट्ठे किये गये हैं। ख़ालिस सोने का १५ $\frac{1}{2}$ सेर के वज़न का कवच यहीं देखने को मिला। पीटर-दि-ग्रेट की मूर्त्ति और उनके हाथ की वनाई और काम में लाई वहुत सी चीज़ें यहाँ पर रक्खी हैं। उन चीज़ों में पीटर की तरवार, चश्मा, पुस्तकें और हाथ की छड़ी अधिक महत्त्व की चीज़ें हैं।

अच्छी तरह हर्मिटज् की सैर करने के लिए वहुत समय की आवश्यकता है। यह विशाल साम्राज्य का विराट् म्यूज़ियम है।

पीटर-हफ् (Peterhof)। पीटर-हफ् सम्राट् का ग्रीष्मनिवास है। भारत में, शिमले में, जो लाट-भवन है उसका भी यही नाम रक्खा गया है। यह राजधानी से कुछ दूर पर समुद्र के किनारे बना हुआ है। पीटर-दि-ग्रेट ने इसे वनवाया था। यहाँ अनेक श्रेणी के मनोहर दृश्य हैं। उनमे देशी पोशाक पहने रूसी सुन्दरियों के ३६८ चित्रपट देखने के योग्य हैं। महल के भीतर शाही बाग़ है। उसमे अनेक वृक्ष और लतायें, वहुत सी मूर्तियाँ और फ़ुहारे दर्शनीय हैं।

सिक्का। इँगलेंड के सिवा यूरोप में सब जगह दाशमिक प्रथा प्रचलित है। रूस के पैसे का नाम है कोपेक (Kopeck)। १०० कोपेक का एक रूयुब्ल होता है। चाँदी का रूयुब्ल शायद ही कहीं देख पड़ता हो। मैले नोट-रूयुब्ल भरे पड़े हैं।

सम्राट्। यूरोप के अन्यान्य राजा वृत्ति पाते हैं, लेकिन रूस के ज़ार वृत्ति-भोगी नहीं हैं। साम्राज्य का सर्वस्व उन्हीं के हाथ मे है। इस हिसाव से अगर देखा जाय ज़ार के वरावर धनी पृथ्वी मे और कौन होगा? इस राज-कर की आमदनी के सिवा बंगाल-विहार-उड़ीसा के इतनी इनकी अपनी ज़मींदारी भी है। यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि स्वेच्छाचारी सम्राट् की तो सभी ज़मींदारी है, फिर उसकी अलग अपनी भू-सम्पत्ति कैसी? उसके उत्तर मे केवल इतना ही वक्तव्य है कि ज़ार के स्वेच्छाचारी होने के माने यह नहीं हैं कि वह भी मुसल्मान वादशाहों की तरह दिनरात भोगविलास में लिप्त और काण्डाकाण्डज्ञानरहित रहते हैं। रूस के ज़ार हज़ार यथेच्छाचारी हों लेकिन फिर भी वह सभ्य जगत् के राजा हैं।

प्रजा के कल्याण और देश के हित पर सब रूसी राजों का ध्यान रहा है। केवल आमोद-प्रमोद में किसी ने अपना जीवन नहीं बिताया। पीटर-दि-ग्रेट बड़े ही प्रजावत्सल, न्यायपरायण और काम-काजी राजा थे। वह जिस तरह विदेश गये और वहाँ बहुत कष्ट उठाकर अनेक विद्यायें और शिल्प सीख आये तथा प्रजा को पढ़ाया-सिखाया उस तरह प्रजा-हितैषणा शायद ही कभी कहीं के राजा ने दिखलाई हो। बहुत दिनों तक मास्को नगरी रूस की राजधानी रही। समुद्र के किनारे आने से, सुसभ्य यूरोप के संसर्ग से, राज्य की उन्नति होगी—यही सोचकर राजा पीटर ने वर्त्तमान स्थान पर राजधानी स्थापित की। उस समय यहाँ मिट्टी या पत्थर कुछ नहीं मिलता था। चारों ओर गीली ज़मीन और जलाशय थे। ऐसी जगह पर सेन्टपीटर्स-बर्ग ऐसा भारी नगर बसाना कैसा कठिन काम था, सो सहज ही समझा जा सकता है। उस समय वह जिस कुटी में रहते थे वह इस समय तीर्थ की तरह समझी जाती और क़िले के पास एक इमारत से सुरक्षित कर दी गई है। महात्मा पीटर मज़दूरों से ही काम नहीं कराते थे, वह भी उनके साथ काम करते थे। कितने ही दूर दूर के देशों से घर बनाने का माल-मसाला यहाँ लाया गया है। इस नगर के बनाने में घोर परिश्रम किया गया है और बेशुमार धन ख़र्च हुआ है। इस काम में एक लाख आदमियों की तो जानें ही चली गईं। महात्मा पीटर प्रजा-हित के लिए इस तरह का परिश्रम ही नहीं, बल्कि सुविचार और सुशासन के लिए अलक्षित-भाव से राज्य में सब तरफ़ घूम फिर कर विचारालय आदि की देख-रेख भी किया करते थे। शायद यह बात हमारे बहुत से पाठक भी जानते होंगे कि रूस के सम्राट् द्वितीय अलेक्ज़ंडर ने एक ही बात पर राज्य के सम्पूर्ण क्रीतदास

किसानों को दुर्दशा से छुड़ा कर स्वाधीन कर दिया। वर्त्तमान सम्राट् ज़ार के पिता तृतीय अलेक्ज़ेंडर अत्यन्त धीर, गंभीर और शान्ति पसन्द करनेवाले आदमी थे। तृतीय अलेक्ज़ेंडर के पिता प्रजा के हाथों मारे गये थे, इसलिए उनको भी अपनी जान बचाने की—सुरक्षित रहने की—चिन्ता लगी रहती थी। तथापि वह बराबर राजकाज में दत्तचित्त रहते थे। वे प्रायः रात के दो तीन बजे तक बैठ कर राजकाज के कागज़ देखते और विचार करते थे। बहुत लोगो की धारणा है कि इतना अधिक मानसिक परिश्रम करने से ही उनकी अकालमृत्यु हुई। १८७७-७८ सन् के रूस-टर्की-युद्ध मे वे स्वयं उपस्थित थे। वे अक्सर बालकों के आगे उस युद्ध का वर्णन करके—युद्ध की भयानकता का हाल समझा कर—उन्हे कभी युद्ध न करने का उपदेश दिया करते थे। युद्ध की सलाह देनेवाले कुछ कु-मन्त्रियों की सोहबत और सलाह से बचाने के लिए उन्होंने पुत्र को पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने के लिए भेज दिया था। वे लड़ाई-झगड़े के ऐसे विरोधी थे; तथापि उन्हीं के राज्यकाल मे भारत पर रूस की चढ़ाई की झूठी अफ़वाह हमारे देश में अनेक बार उड़ चुकी है। सुना जाता है कि वर्त्तमान ज़ार भी शान्तिप्रिय, प्रजावत्सल और उदार नीति के पक्षपाती हैं। सब राज्यों से मित्रता रखकर शान्ति से राज्यशासन करना ही इन्हे पसद है। अव्वल तो रूस भारत पर चढ़ाई करेगा ही नहीं, और अगर करे भी तो अँगरेज़ लोग सहज मे हिन्दुस्तान उनको सौंपकर चले जानेवाले ही नहीं। एक अँगरेज़ का यह कथन बिल्कुल ठीक है।

"Whilst I question it one shot will ever again be fired from a British cannon or one bullet from a British musket to prevent the voluntary secession

of any British colony that is fully minded so to secede, yet I believe that we would gladly expend the last projectile in Woolwich Arsenal, and that each English home would cheerfully give its last son, to prevent an enemy from ever setting foot on Indian soil. *Salus India suprema lex.*" Geo. N. Curzon.

वास्तव में भी बात यही है। भारत के लिए इँगलेंड शेष-बिन्दु-रक्त तक देने में पश्चात्पद न होगा। भारत ने श्रद्धा और प्रेम के साथ ब्रिटिश-गवर्नमेंट को अपना अभिभावक बनाया है। अगर हमारे शासकगण हमारे हृदय के सिंहासन पर अधिकार करना चाहते हैं और वे उसके लिए भेदभाव दूर कर हमारी भलाई पर ध्यान देंगे तो यह कृतज्ञ देश कभी उन्हें भूल नहीं सकता।

राजधानी में ऋतुओं का प्रभाव। सेन्टपीटर्सबर्ग में जाड़ा बहुत पड़ता है। सितम्बर से मई तक दारुण शीत पड़ता है। उसके बाद एकाएक गर्मी की फ़सल आ जाती है। यहाँ की गर्मी हमारे देश की ऐसी गर्मी नहीं होती। गर्मियों में भी लोग मोटे कपड़े पहनते हैं।

लोकसंख्या। राजधानी में बीस लाख से ऊपर आदमी रहते हैं। यूरोप मे जितना रूस का अंश है उसमे बारह करोड़ से ऊपर लोग बसते हैं। यहाँ सन् १८६३ तक $\frac{3}{4}$ हिस्से क्रीतदास (Serfs) थे। साठ लाख के लगभग यहाँ के आदमी क्षत्रियों की तरह युद्ध का व्यवसाय करते हैं। दस लाख आदमी वंशपरम्परा से उमराव (Nobles) या उसी श्रेणी के अन्तर्गत हैं। पहले यहाँ भी हमारे देश की तरह सारा परिवार एक में ही रहता और खाता-पीता था।

सेना। शान्ति के समय आठ लाख और युद्ध के समय चौंतीस

लाख से ऊपर सेना रहती है। जलयुद्ध के लिए २६० छोटे-बड़े जहाज़ और बोट हैं। सन् १९१३ में राज-कर ३५.१ करोड़ पौण्ड वसूल हुआ था। उसकी एक-तिहाई रक़म केवल शराब की चुंगी से वसूल हुई थी। केवल इसी से अनुमान किया जा सकता है कि रूस में शराब कितनी पी जाती है। सन् १९१३ मे कुछ अधिक ९३ करोड़ पौण्ड राज्य पर ऋण था।

वर्णमाला और पञ्चाङ्ग। हमारी वर्णमाला की तरह रूसी भाषा की वर्णमाला मे भी छत्तीस अक्षर हैं। वहाँ तारीख़ की गिनती आज भी पुरानी प्रथा के अनुसार १२ दिन कम होती है। यूरोप के अन्यान्य भागों मे जिस दिन महीने की २२ वीं तारीख़ होती है उस दिन रूस में १० वीं तारीख़ मानी जाती है। जितने राज्य ग्रीक-चर्च के अधीन हैं उनमें यही प्रथा प्रचलित है। ग्रीस और डान्युबियन क्षुद्र राज्यों (Danubian Principalities) में सब जगह इसी प्राचीन नियम के अनुसार तारीख़े गिनी जाती हैं।

छापाख़ाना। रूसी साम्राज्य मे प्रेस की स्वाधीनता बिल्कुल है ही नहीं। जो कुछ छपता है उसे सर्कारी कर्मचारी (सेन्सर) पहले देख लेता है। उसके देखे बिना कुछ भी प्रकाशित नहीं किया जा सकता। केवल जगद्विख्यात महात्मा टाल्स्टाय (Count Leo Tolstoi, Socialist writer) एक तरह इस साधारण नियम से बरी थे। उनके किसी ग्रन्थ के बारे मे कुछ गड़बड़ उठने पर उनकी सुयोग्य पत्नी ख़ुद ज़ार के पास जाकर सब आक्षेपों का खण्डन कर आती थी। तृतीय अलेक्ज़ंडर ने एक दफ़े यह इच्छा प्रकट की कि "वह ख़ुद टाल्स्टाय के ग्रन्थों की जाँच करेंगे। साधारण राजकर्मचारी (Censor) का इससे कुछ भी सम्बन्ध न रहेगा"। राजकर्मचारी लोग टाल्स्टाय से इसलिए डरते थे कि उन पर अगर कुछ अत्या-

चार होगा तो सारा संसार रूसी शासन को बदनाम करेगा। महावीर टाल्स्टाय के आत्मीय स्वजनों को सदा इस बात की शंका लगी रहती थी कि टाल्स्टाय पर न-जाने कब क्या अत्याचार हो। लेकिन टाल्स्टाय को पुलिस या सरकारी आज्ञा की कुछ परवाह न थी। रूस में विदेश से कोई पुस्तक या अख़बार बिना जाँचे हुए नहीं आने पाता। अख़बारों और पुस्तकों को आप पुस्तक बेचने-वालों से ख़रीद सकते हैं या पोस्टआफ़िस में रुपया जमा कर दीजिए तो पोस्टआफ़िस मँगा देगा। विदेश से आये हुए आदमी के पास कोई अख़बार होता है तो उसे राज्य की सीमा पर पास-पोर्ट के साथ वह अख़बार भी दे देना पड़ता है। रूस के सम्बन्ध में एक अँगरेज़ पण्डित ने जो अपनी राय लिखी है उसे यहाँ उद्धृत कर देने से रूसी साम्राज्य का सम्पूर्ण संक्षिप्त वर्णन हो जायगा। उन्होंने लिखा है—"If any intelligent will study the present state of Russia, financial, political, and domestic, the difficult nature of the country to be annexed and subjugated, the enormous number of troops that would be required, and other incidental impediments to the carrying out of such a programme, he must rise with the conviction that he has been perusing the narration of nightmare."

सेन्टपीटर्सबर्ग से मास्को जाने की बड़ी इच्छा थी, किन्तु जिन भारतीय बन्धु के साथ स्टाकहलम से जाने-आने का एक में टिकिट लिया था उनकी इच्छा न होने से और टिकिट बदला न जा सकने से मैं मास्को न जा सका। रूस से बाहर होने के दिन सबेरे अपनी इच्छा प्रकट करके होटल के कर्मचारी को मैंने पास-पोर्ट दिया। उसने नियमानुसार राजकर्मचारी से मंज़ूर कराकर

पासपोर्ट फेर दिया। शाम के समय बन्दरगाह के आफ़िस में पासपोर्ट दिखा कर जहाज़ पर सवार हुआ।

जर्मनी-यात्रा। पहले कहा जा चुका है कि रूस से हेलसिंग-फ़ोर्स होकर मैं आवो आया। आवो से लगातार कुछ दूर तक चारों ओर पूर्वोक्त प्रकार के टापू मिले। हमारा जहाज़ उनके भीतर हो कर चला। यह स्थान बड़ाही मनोहर था। जल तालाब का ऐसा स्थिर था। स्टाक्हलम में फिर कई दिन रहकर एक दिन तीसरे पहर जर्मनी को रवाना हुआ। रात भर ऐसा तूफ़ान रहा कि जहाज़ पर के सब लोगों की तबीयत बेचैन होगई। किसी को भी नींद नहीं पड़ी; सब कृय करते रहे। सौभाग्यवश मेरी तबीयत कहीं ख़राब नहीं हुई, लेकिन इस रात को बहुत कष्ट हुआ।

विस्बी (Wisby-Gothland)। अन्त को किसी तरह, जब कि सब लोग मुर्दे से हो रहे थे, नव बजे हमारा जहाज़ गाथलेंड द्वीप के प्रधान नगर विस्बी में पहुँचा। यह द्वीप स्वीडेन-राज्य के अधीन है। इस समय तूफ़ान थम गया था, मगर हवा ज़ोर ही से चल रही थी। इस तरफ़ के जहाज़ों में सेवक का काम औरतें ही करती हैं। वे रात भर सम्पूर्ण यात्रियों की सेवा लगातार करती रही थीं। द्वीप की मिट्टी पर पैर रखते ही जैसे जान में जान आई। एक होटल में जाकर भोजन किया। एक भारी फल-फूल के बाग़ के भीतर यह होटल था। बड़ी आराम की जगह थी। भोजन के उपरान्त नगर की कुछ सैर करके जहाज़ पर लौट आया। विस्बी बहुत पुराना नगर है। पूर्व समृद्धि के अनेक चिह्न इस समय भी देखने को मिलते हैं। गिर्जे बहुत से हैं, उनमें कई एक बहुत बुरी टूटी-फूटी हालत में हैं। नगर की चहारदीवारी और उसके टावर (Towers) आदि का कुछ अंश अभी तक बना हुआ है।

जर्मनी ।



स्वीनिमण्डे (Swinemunde) और स्टाटिन (Stetin)। तुमुल तूफ़ान के उपरान्त एक आइने की तरह समुद्र विलकुल शान्त हो गया। वाहर डेक के ऊपर टेविलों पर यात्री लोगों ने बड़े आराम के साथ भोजन किया। सन्ध्या के समय जर्मन-वन्दरगाह स्वीनिमण्डे में जहाज़ जाकर लगा। कोई कोई लोग यहीं से रेल पर चढ़ कर अपने अपने गन्तव्य स्थान को चले गये। हम लोग कुछ देर तक समुद्र के किनारे की सड़क पर टहलते रहे। उसके वाद जहाज़ पर फिर चढ़ कर ओडर (Oder) नदी के ऊपर वने हुए स्टाटिन-वन्दर मे पहुँचे। रास्ते में एक जगह ओडर नदी के मुहाने पर देखा कि एक जहाज़ वनाने का कारख़ाना है और उसमें कई साधारण और दो जंगी जहाज़ वन रहे हैं। स्टाटिन इस प्रदेश का प्रधान नगर है। यह नगर राजधानी से ८४ मील है। इसमें एक लाख से अधिक लोग रहते हैं। समुद्रतट के स्वीनिमण्डे वन्दर में खूव वड़े वड़े जहाज़ रहते हैं। उनके सिवा साल में हज़ारों जहाज़ यहाँ आते जाते रहते हैं। रात को ज़रा देर शहर में घूमकर होटल में विश्राम किया। सवेरे कलेवा करके रेल पर चढ़कर वरलिन (Berlin. जर्मन लोगों का उच्चारण "वेयर्लिन" है) को रवाना हुआ। स्टाटिन में पहले-पहल कुत्तों की गाड़ी देखी। जर्मनी और आस्ट्रिया में माल से भरी हुई

छोटी छोटी गाड़ियों को बड़े बड़े कुत्ते घसीटते हैं। अँगरेज़ लोग कुत्तों से ऐसा काम लेना अच्छा नहीं समझते। वे इसे अत्यन्त निठुराई का काम समझते हैं। जर्मन लोग ऐसे बनिये हैं कि वे शौक़ की चीज़ कुत्ते को भी बिठलाकर खिलाना नहीं चाहते। हमारे देश की तरह जर्मनी में भी रेलगाड़ियों के चार दर्जे हैं। हर एक ट्रेन में स्त्रियों और सिगरट-चुरट न पीनेवालों के लिए अलग अलग गाड़िया रहती हैं। यूरोप मे और कहीं चार दर्जे की गाड़ियाँ नहीं हैं।

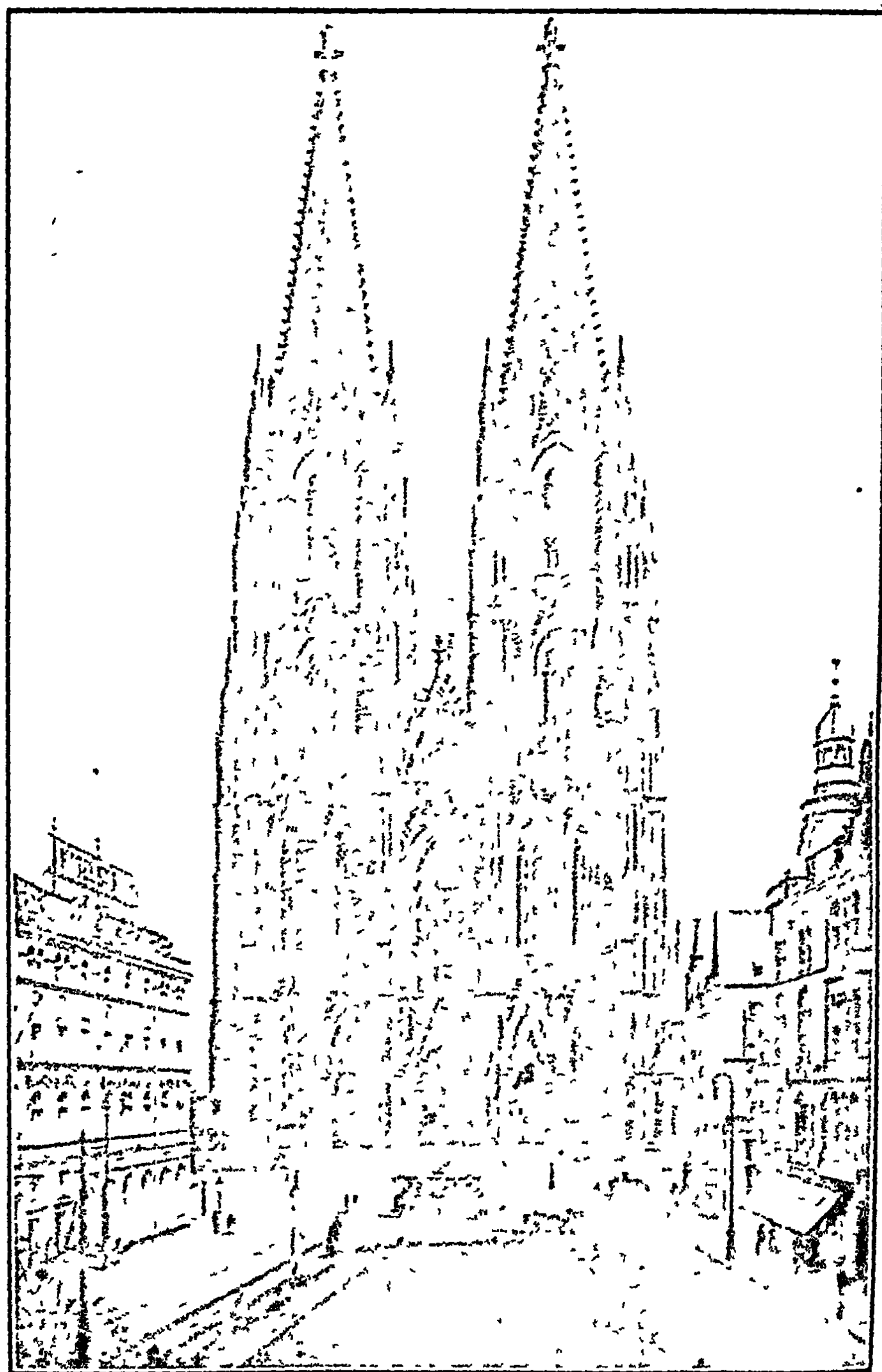
बर्लिन। बर्लिन प्रुशिया-राज्य और जर्मन-साम्राज्य ((Dewtschland) = डूशलेंड, यह जर्मनी का देशी नाम है) की राजधानी है। इसे छोटा लन्दन कहना चाहिए। बर्लिन में २१ लाख के लगभग आदमी रहते हैं। थोड़े समय मे बर्लिन की सब चीज़ें या दृश्य देखे नहीं जा सकते और जो देखे जा सकते हैं उनका वर्णन लिखना भी सहज काम नहीं है। आठ नव दिन यहाँ रहकर जो मैंने देखा उससे मुझे मालूम हुआ कि जर्मन लोगों ने खूब उन्नति की है और वे बड़े उद्योगी हैं। जर्मन लोग दिनों दिन उन्नति करते चले ही जाते हैं। जर्मन कारीगरो के हाथ की बनी चीज़ों ने पृथ्वी भर को छा लिया है। यहाँ तक कि जर्मनी की चीज़ों की आमदनी और खपत ने इँगलेंड के कारीगरों तक को चिन्ता में डाल दिया है। मामूली ख़र्च से खाना-पीना चलाकर अधिक काम कर सकने के कारण जर्मन लोग अपनी चीज़ों को औरों से सस्ते भाव पर बाज़ार में बेच सकते हैं। इसी कारण कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता। सन् १८७०-७१ मे फ्रांस के साथ जर्मनी की लड़ाई हुई थी। उसमें जय पाने के उपरान्त से ही इस राज्य की विशेष उन्नति और राजधानी की श्रीवृद्धि होने लगी है। नगर की प्रधान सड़क का नाम है "अन्टर डेन लिंडेन" (Unter den Linden) "अर्थात् लाइम-पेड़ के नीचे"।

ऐसी नये ढंग की चौड़ी सड़क और कहीं नहीं है। यूरोप के सभी नगरों में पत्थर के टाइल अथवा किसी तरह के जमे हुए मसाले के पक्के फुटपाथ बने हुए हैं। इस प्रकार के फुटपाथों के बाद दोनों ओर दो गाड़ी के मार्ग हैं। उसके बाद दोनों बगलों में पेड़ों की क़तार के भीतर दो मार्ग हैं। दोनों फुटपाथों के बीच में चौड़ा साधारण मार्ग है। बर्लिन की इस सड़क के बीच में एक ऊँची वेदी के ऊपर महात्मा राजा फ्रेडरिक (Frederick the Great) की भारी घुड़सवार मूर्ति है। प्रथम नेपोलियन ने जब बर्लिन में प्रवेश किया तो उन्होंने इस धातु की बनी मूर्ति के सामने खड़े होकर कहा था कि "तुम अगर जीवित होते तो इस तरह यहाँ मेरा आना कभी न हो सकता।" नेपोलियन के अनेक कामों से फ्रेडरिक के ऊपर उनकी विशेष श्रद्धा प्रकट होती है। पहले के महान् वीरों के प्रति नेपोलियन सदा समुचित सम्मान दिखाते थे। इसी सड़क के किनारे विश्वविद्यालय-भवन के द्वार पर इधर-उधर दो हुम्बोल्ड भाइयों (Wilhelm and Alexander Von Humboldt) की सफ़ेद पत्थर की मूर्त्तियाँ हैं। एक समय ये दोनों भाई जर्मनी के दो प्रधान रत्न समझे जाते थे। ब्राण्डेनबर्ग-थुकोर (Brandenburger Thor) बड़ा भारी शाही फाटक है। २०० फुट चौड़े रास्ते पर पाँच खंभों के भीतर होकर गाड़ियाँ आती-जाती हैं। खंभों की छत के ऊपर चार घोड़ों के रथ को हाँक रही विजया देवी की मूर्ति है। इसके ऊपर और आस-पास का थवईगीरी का काम प्रशंसा के योग्य है। इस फाटक के भीतर से नगर के प्रधान विहार-कानन सुविस्तृत थियेरगार्टेन (Thiergarten) को सड़क गई है। इस उद्यान में अनेक जातियों के बड़े बड़े पेड़ सुरुचि के साथ क़ायदे से लगाये गये हैं। यहाँ पर कई एक बड़ी बड़ी मूर्तियाँ हैं। उनमें उन्नीसवीं शताब्दी

ब्राण्डेनबर्ग फाटक—पृ० ४६४



शालोंटेनबर्ग—पृ० ४७२



कोलोन गिर्जा—पृ० ४८४

के प्रधान लोकशिक्षक महात्मा कार्लाइल और महामहोपाध्याय गेटे (Goethe) की मूर्तियाँ सुन्दर हैं। इसी के भीतर पशुशाला है। उसमें पशुओं के लिए इतनी जगह है कि वे ज़रा हाथ-पैर फैला कर विचर सकते हैं। इसी के पास एक ओर ४५ बीघे ज़मीन के ऊपर एक स्थायी प्रदर्शिनी स्थापित है। दूसरी ओर फ्रेंच-युद्ध का स्मारक-चिह्न एक १६० फुट ऊँचा जयस्तम्भ है। नीचे की वेदी और उसके ऊपर का गोलाकार चौड़े बरामदेवाला घर कलकत्ते के मनूमेंट के निचले हिस्से की अपेक्षा बहुत बड़ा है। स्तम्भ की चोटी पर विजया देवी की भारी धातु की मूर्त्ति है। इस पर सोने का पानी फिरा हुआ है। इस उद्यान के अन्तर्गत खाने-पीने और गाने-बजाने का अड्डा (Sieges saule) अत्यन्त रमणीय और लंबा चौड़ा है। इसका नाम है क्रोल गार्टेन (Kroll Garten)। सन्ध्या के समय बिजली की रोशनी से सुशोभित और वृक्ष-लता-मण्डित निकुञ्ज के भीतर कुर्सियों-टेबिलों पर बैठ कर अनेक लोग आमोद-प्रमोद किया करते हैं। नित्य यहाँ पर बहुत से लोग जमा होते हैं। टेक्निकल स्कूल (Polytechnikum) में जाने के लिए वहाँ के अध्यक्ष से अनुमति लेनी पड़ी। उसके बाद एक कर्मचारी की सहायता से इस स्कूल की सब इमारत देखी। तदनन्तर वहाँ कई एक प्रक्रियायें (जैसे काग़ज़ की शक्ति की परीक्षा, तेल को पानी ऐसा पतला बनाना, बड़ी बड़ी लोहे की छड़ों को मूली की तरह काटना इत्यादि) देखीं। प्रक्रिया-विज्ञान (Experimental Science) आदि सिखलाने के लिए अनेक विभाग हैं। इमारत भी वैसी ही भारी है। अनेक तरह के यन्त्र और कल-कारख़ाने यहाँ देख पड़े। राज-धानी में अनेक राजभवन हैं। उनमें से प्रधान महल को "खास राजमहल (Koniglicbe Schloss [Royal Castle]) कहते हैं।

सर्वसाधारण लोग आधा 'मार्क' देने से १० वजे से १ वजे तक इस राजमहल को देख सकते हैं। यह आमदनी सर्वसाधारण के हित के किसी काम मे खर्च होती है। टिकिट लेने के उपरान्त दरवाज़े पर कुछ अपेक्षा करनी पड़ती है। वीस-पचीस दर्शक जमा होने पर एक कर्मचारी साथ ले जाकर दिखला लाता है। महल के फ़र्श वार्निश की हुई अच्छी लकड़ी के वने हुए हैं। इसलिए दर्शकों को आप ही अपने वूट जूते उतार कर वहाँ रक्खी हुई स्लीपरें पहननी पड़ती हैं। पहले कमरे मे अनेक क़ीमती पत्थर के स्तम्भ और प्रथम नेपोलियन का एक सुन्दर चित्रपट है। और एक भारी चित्र में सन् १८७१ की १८ वीं जनवरी को वेयार्सेइल अभिनीत दृश्य दर्शनीय है। प्रथम जर्मन-सम्राट् वृद्ध विलियम मन्त्रियों और मुसाहवों के साथ उपस्थित हैं। प्रधान मन्त्री प्रिंस विस्मार्क (Prince Bismarck) घोषणा-पत्र पढ़ रहे हैं। यह घोषणा जर्मनसाम्राज्य की स्थापना की थी। देश के सव स्वाधीन राजों ने एक सम्राट् की अधीनता स्वीकार कर ली। फ्रान्स की राजधानी मे जर्मन-साम्राज्य की घोषणा निस्सन्देह एक 'अद्भुत वात थी। इस महल के अन्तिम कमरे में चाँदी के चवूतरे पर संगमरमर के खंभे वहुत ही अच्छे लगते हैं। यहीं ३७ राजमुकुट रक्खे हैं। सम्राट् का मुकुट सवमें श्रेष्ठ है। इस महल में ६०० कमरे हैं। महल के आँगन में दो वड़े वड़े फुहारे हैं। राज-परिवार का गिर्जा इसी के भीतर है।

आर्सेनल अर्थात् युद्ध की सामग्री का भवन। इसमें वहुत से कमरे हैं और उनमें अच्छे ढंग से अनेक अस्त्र-शस्त्र, साज-सरंजाम और अन्यान्य देखने की चीज़ें रक्खी हैं। उनमें से सोलहवीं सदी की कई तोपें, युद्धों में जीत कर लाई गई पताकायें, युद्ध में काम

आनेवाले आङ्किक यन्त्र आदि (Mathematical Instruments), विजली के कल-कारख़ाने, पीतल के कवच, तंबू-कनात, सेनापतियों की मूर्त्तियाँ, कई एक युद्धक्षेत्रों की हूबहू नक़लें, बारह राजों की पीतल की मूर्त्तियाँ, विजया और इतिहास की संगमरमर की मूर्त्तियाँ, कनिगग्राज़ (Konniggratz 1866), सीडन (Sedan 1870), लिपज़िक (Leipsic 1813) और वाटर्लू (Waterloo 1815)* के युद्धों के चित्र और फ्रेंच-युद्ध की ३८ तोपें और पताकाओं की माला, ये विशेषरूप से देखने की चीज़ हैं।

जलजन्तुशाला (Aquarium)। यहाँ असंख्य प्रकार के ज़ूफाइट (Zoophytes), मगर, मछली आदि पानी के जीव बड़ी ही सुव्यवस्था के साथ सुरक्षित हैं।

होहेन ज़ोलारेन म्यूज़ियम (Hohenzollern)। प्रुशिया के राजों का पहला राजमहल इसी नाम के एक छोटे से पहाड़ पर पहले बना था। उसी के नाम पर इस भवन का नाम रक्खा गया है। इस म्यूज़ियम में बहुत से धीशक्तिसम्पन्न महात्मा लोगों के चित्रपट हैं। फ्रेडरिक-दि-ग्रेट की कैंची, छुरी, लड़कपन की गद्दी, पलँग, विछौना, उनके हाथ की जलाई एक मोमबत्ती, दो बक्स भर कर तरह तरह की बंसियाँ (राजा को बंसी बजाने का बड़ा शौक था), इनके खाने-पीने के बर्तन, हस्तलिपियाँ, बन्दूक़, तरवार, राजा के प्यारे घोड़े का ढाँचा (Stuffed) आदि अनेक सामग्रियाँ चार कमरों में भरी पड़ी हैं। यहाँ राजों के बचपन की मोम की मूर्त्तियाँ और राजा-रानियों की पोशाकें भी देखने लायक़ हैं। प्रथम

---

* इस युद्ध को जर्मन लोग Belle Alliance और फ्रेंच लोग Mont St. Jean युद्ध कहते हैं। वाटर्लू और ये छोटे गांव बिल्कुल पास ही पास हैं।

सम्राट् विलियम और उनके पुत्र की लिटाई हुई, पतली चादर से ढकी हुई, मोम की मूर्तियाँ और उनकी वेषभूषा बहुत ही मनोहर हैं। बूढ़े विलियम की लड़कपन की एक छोटी गाड़ी तक यहाँ रक्खी हुई है। प्रथम विलियम की २६ तरवारें और १८ टोपियाँ यहाँ रक्खी हैं। उनके पुत्र की भी एक तरवार यहाँ है।

बर्लिन में अनेक छोटे-बड़े म्यूज़ियम हैं। उनमें से नवीन म्यूज़ियम के मानव सामाजिक (Ethnological) विभाग में इस तरह की अनेक देखने योग्य वस्तुएँ हैं जो साधारणतः बहुत कम देखने को मिलती हैं। भारत के बहुत से बाजे और प्राचीन गौड़-नगर में प्राप्त एक टुकड़ा नक्काशीदार पत्थर और बड़ी भारी बुद्ध-देव की मूर्त्ति, जगन्नाथ-बलभद्र-सुभद्रा-सहित एक रथ, बैलगाड़ी, कोल्हू और पटरे चीरने के आरे आदि के दृश्य रक्खे हुए हैं। संसार की प्राथमिक अवस्था में लोह और पत्थर के बनाये गये बहुत से अस्त्र-शस्त्र भी यहाँ जमा हैं। भूगर्भ से निकले हुए अत्यन्त प्राचीन काल के सात मनुष्य-शरीर के ढाँचे और उस समय इस्तेमाल में आनेवाले पत्थर के अस्त्र-शस्त्र, जिस तरह जिस पृथ्वी की तह में मिले हैं उसी तरह उस तह की मिट्टीसहित, काच के बक्सों में रक्खे हुए हैं। अमेरिकाखंड की प्राचीन समय की अनेक चीज़ें और जावा-द्वीप में मिली हुई पद्मपाणि, गणेश, दुर्गा, महिषमर्दिनी और विष्णु की मूर्त्तियाँ तथा उसी द्वीप के बाँस के चोंगे पर लिखी हुई बटक (Batak) लिपि देखने की चीज़ हैं।

नगर का उद्भिद्-उद्यान भी जर्मन-राजधानी के योग्य ही है। इसमें २०,००० तरह के पेड़ हैं। पूर्वोक्त राजमहल के पास ही प्रधान गिर्जा है। यह ३३७ फुट लंबा है। इस नगर की मोम-मूर्त्ति-शाला सान्ध्य-विहार का एक अड्डा है। बर्लिन में तीन चित्र-

शालायें हैं। उनमें से प्रधान चित्रशाला में ३७ कमरे हैं। उनमें स्वदेशी, विदेशी, प्राचीन और आधुनिक चित्रकारों के १,४०० क़ीमती तैलचित्र रक्खे हैं। एक एक चित्र के दाम इतने हैं कि हमारे यहाँ के बहुत लोग सुन कर चौकन्ने होंगे। राफेल (Raphael), मुरिल्लो (Murillo) आदि चित्रकारों के हाथ के बनें एक एक चित्र समय समय पर चार चार पाँच पाँच लाख रुपये तक के बिक गये हैं। इसका कारण एक यह भी है कि इन चित्रकारों के हाथ के बने चित्र इस समय बहुत दुर्लभ हैं। पृथ्वी के चौदह स्थानों की चित्र-शालाओं में बर्लिन को सातवाँ नम्बर मिला है। इन चौदह मे चार चित्रशालायें (Florence, Naples, Venice, Turin) इटली में और दो (Versailles, Lauvre in Paris) पेरिस में हैं। सातवां नम्बर बर्लिन की चित्रशाला का है। शेष सात का नम्बर इसके नीचे है। अव्वल नम्बर पेरिस की (Versailles) चित्रशाला का है। फ़्रेञ्च लोग बड़े शौकीन होते हैं और इटलियन लोग चित्रण-कला में अपना सानी नहीं रखते। इस बात में इन दोनों देशों की प्रधानता का यही कारण है। जितनों का वर्णन किया जा चुका है उनके सिवा अन्यान्य अनेक रमणीय बड़ी बड़ी इमारतें, मूर्त्तिया, स्तम्भ और स्कायर (Square) आदि बर्लिन की शोभा बढ़ा रहे हैं। हमारे यहां की इमारतों और यूरोप की इमारतों मे आकाश-पाताल का अन्तर है। यूरोप के साधारण मकान (Public buildings), स्क़ायर, स्मारक स्तम्भ और मूर्त्तियाँ लाखों—करोड़ों की लागत के हैं। रावण की मूँछें जैसे ताड़ के पेड़ की इतनी थीं वैसे ही यूरोप की साधारण चीज़ें भी बड़ी और भारी हैं। यूरोप के एक साधारण दूकानदार की जैसी इमारत है वैसी इमारत यहाँ के हर एक राजा-महाराजा के यहाँ न निकलेगी। यूरोप के बम्पुलिस भी सौन्दर्य सजावट और

सफ़ाई में हमारे यहाँ के महलों से अच्छे हैं। यूरोप और भारत की अनेक बातों में ऐसा ही आकाश-पाताल का अन्तर है। (आप अपने यहाँ के एक मैले कुचैले कृष्णकाय रोगी दुर्बल भिखारी पुरुष के पास एक सुन्दर पोशाक पहने सुस्थ सबल सुडौल डीलडौल-वाले अँगरेज़ को खड़ा करके दोनों में जैसा अन्तर पावेंगे वैसा ही अन्तर भारत और यूरोप की दशा में है) यूरोप में ऐसे, महान् सुन्दर दृश्य चारों ओर हैं कि उनसे शरीर और मन में फुर्ती लानेवाली तथा चित्त को उन्नत बनानेवाली शिक्षा प्राप्त होती है। वहाँ छोटे से लेकर बड़े तक का ध्यान इस ओर रहता है कि किसी प्रकार का कुत्सित भाव दर्शक की आँखों के आगे उपस्थित होकर उसके मन में घृणा उत्पन्न करके उसे कष्ट न दे—उसे उससे कुरुचि का परिचय न प्राप्त हो। सब लोग अपने शरीर, सामान और घर को सदा साफ़ रखते हैं। हमारे यहाँ के बाज़ारों और सड़कों पर आपको देख पड़ेगा कि कहीं कूड़े का ढेर लगा है, कहीं धूल उड़ रही है, कहीं दंगा-हंगामा हो रहा है, कहीं गाली-गलौज लड़ाई-झगड़ा हो रहा है, फटे चीथड़े पहने भिक्षुक राह चलनेवालों को तङ्ग कर रहे हैं। हमारे यहाँ अगर कोई उत्साह से कोई काम करने के लिए घर से निकलता भी है तो बाहर के इन दृश्यों का उसके हृदय पर ऐसा असर पड़ता है कि उत्साह की मात्रा बहुत कुछ घट जाती है। इस पुण्यभूमि भारत की आज-कल ऐसी ही हालत है। उधर यूरोप की सड़कों पर देखिए, जवान-बच्चे-बूढ़े औरत-मर्द सब स्वस्थ और सबल हैं। वे सुन्दर साज-सज्जा से विभूषित होकर हृदय के उल्लास से हँसते हुए अपना अपना काम करने के लिए तेज़ी से चले जा रहे हैं। उनकी पुष्प-शोभित सुगन्ध-सिक्त पोशाकों का दृश्य और सुवास चारों ओर फैलकर राह

चलनेवालों के मन में दूना उत्साह उपजा रहे हैं। यदि बिल्कुल मुर्दे की हालत में भी आप घर से निकलिए तो भी सड़क पर पैर रखते ही आपकी सारी शिथिलता दूर हो जायगी और एक नई शक्ति सी हृदय में आजायगी।

वर्लिन के भीतर होकर एक रेल्वे-लाइन निकली है। राह में खंभे बना कर उनके ऊपर यह लाइन गई है। खंभों के निचले भाग में अनेक चीज़ों की दूकानें हैं। अमेरिका की उच्च रेल्वे लाइन (Elevated Railway) की अपेक्षा यह बन्दोबस्त बहुत अच्छा है। इस प्रबन्ध से सड़कों की कोई क्षति नहीं हुई।

नगर के दृश्यों में निम्नलिखित दृश्य प्रधान हैं—प्राचीन प्रुशियन राजमहल; सम्राट् का महल; म्यूज़ियम; युवराज का महल; ब्राण्डेनवर्ग थुयोर; जातीय चित्रशाला; रायल थियेटर; रायल अपेरा-भवन; वैंक; एक्सचेञ्ज; ग्लोरी-हाल; (Glory Hall); प्रधान गिर्जा; वड़ा रेल्वे स्टेशन; टाउनहाल; पार्लियामेंट-भवन; युद्धसामग्री-भवन; पैसेज (Passage); वड़ा डाकघर; कैसर-होटल; सेन्ट्रल-होटल; फ़्रेडरिक-दि-ग्रेट, गेटे, ब्लूशर, शिलर आदि पाँच सेनापतियों, सात राजों और एक रानी की मूर्त्तियाँ; सेन्ट जार्ज (St. George) और ड्रागन (Dragon) की मूर्त्तियाँ; जयस्तम्भ; शान्ति-स्तम्भ (१६७ फ़ुट का); लौह-स्तम्भ (१२० फ़ुट का), म्यूज़ियम में रक्खी हुई सिंहहन्ता और आमाज़न (The Lion-killer and Amazon) की घुड़सवार मूर्त्तियाँ; विहारकानन, प्रमोद-कानन; शिलर-प्लाज और वेल-अलायन्स-प्लाज।

वर्लिन के घरवार सब खूब साफ़ सुथरे हैं। ज़रा अच्छी स्थिति के गृहस्थ के यहाँ भी आप देखेंगे कि भीतर और बाहर दो तापमान-यन्त्र (Thermometer) रक्खे हुए हैं। होटल आदि सर्वसाधारण

के रहने के स्थानों में भी परिच्छन्नता (Sanitation) की व्यवस्था बहुत अच्छी है । जर्मन-साम्राज्य की राजधानी में यह व्यवस्था देखी कि हर जगह हवा साफ़ करनेवाली (Deodorizing and disinfectant) एक ऐसी वैज्ञानिक वस्तु का इस्तेमाल किया जाता है कि हवा आप ही आप साफ़ होती रहती है ।

शार्लोटेनबर्ग (Charlottenburg) । यह स्थान बर्लिन से तीन मील पर है । रेल की राह है । इस स्थान को बर्लिन का उपनगर भी कह सकते हैं । इस देश के लोग इसे तीर्थस्थान के समान मानते हैं । जिन प्रुशियन राजा और रानी (King Frederick William III. and his Excellent Queen Louisa) का यहाँ मसोलियम अर्थात् समाधि-मन्दिर है उन्हें प्रुशियन लोग विशेष श्रद्धा और भक्ति के साथ स्मरण करते हैं । समाधि-मन्दिर के भीतरी भाग को शोक के भाव से युक्त करने के लिए नीले रंग के काच की छत बनाई गई है । घर के भीतरी भाग में नीली आभा छाई रहती है । बीच मे दो संगमरमर के ऊँचे चबूतरों पर राजा और रानी की संगमरमर की मूर्त्तियाँ लेटी हुई हैं । एक लम्बी-चौड़ी बगिया के भीतर यह मन्दिर बना हुआ है । इस उद्यान के सामने ही राजमहल है । यह २०० वर्ष से भी पहले का बना हुआ है । यहाँ पर एक बड़े भारी शीशे के घर में बहुत से गर्म देशों के वृक्ष और लतायें लगी हुई हैं । इस महल के अन्तर्गत एक थियेटर-भवन भी है ।

पाट्सडम (Potsdam) । बर्लिन से सोलह मील की दूरी पर हेवेल (Hevel) नदी के किनारे यह छोटी सी नगरी है । यही जगह फ्रेडरिक-दि-ग्रेट की लीला-भूमि और समाधि-स्थान है । यह नगर शार्लोटेनबर्ग की तरह छोटा है । मगर यहाँ अनेक बड़े बड़े

मकान और गिर्जे आदि देखने लायक हैं। प्रमोद-कानन से घिरे हुए राजमहल के भीतर फ्रेडरिक-दि-ग्रेट की लाइब्रेरी, मार्बल-हाल (Marble Hall) आदि कमरों मे फ्रेडरिक-दि-ग्रेट का बहुत सा सामान रक्खा है। जिस डेस्क पर बैठ कर फ्रेडरिक लिखते थे उसके ऊपर की बनात का एक टुकड़ा, उनके स्मारकचिह्न की तरह अपने पास रखने के लिए, प्रथम नेपोलियन फाड़ ले गया था। यहाँ पर फ्रेडरिक के भोजन के टेबिल पर उनके चाय पीने की प्यालियाँ तक रक्खी हुई हैं। जिस कमरे मे बैठ कर वह प्रजा की प्रार्थना सुनते थे वहाँ उन्हीं का मँगाया हुआ बम्बई के पालिश किये हुए ग्रेनाइट पत्थर का एक टेबिल रक्खा है। एक कमरा वह भी देखा, जिसमे सम्राट् नेपोलियन ने एक रात बिताई थी। यहां भी एक नगर का फाटक है। उसका नाम है ब्राण्डेन बर्ग-फाटक। सन १७७० मे यह स्थापित हुआ था। इसके भीतर से फ्रेडरिक के प्यारे रमण-बाग़ और विलास-भवन साँसुसी (Sans Souci) को सड़क गई है। फ्रेडरिक के बतलाये नक़शे के माफ़िक यह उद्यान और भवन बना है। पार्क मे टहलने के अनेक रमणीय स्थान (Promanade), मूर्त्तियाँ और फुहारे हैं। एक फुहारे का जल १२० फुट ऊँचा जाता है। महल के सामने की १०० के लगभग सीढ़ियों के दोनों ओर, उसी तरह नीचे-ऊँचे ढँग से, वृक्षों की सुन्दर सजावट है। महल में २०० से अधिक कमरे, ४०० से ऊपर दरवाज़े और छत के ऊपर ४५० के लगभग मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। यहां भी फ्रेडरिक-दि-ग्रेट का लिखने का डेस्क, दावात और हस्तलिपि रक्खी है। जिस दरवाज़े के पास जिस कुर्सी पर फ्रेडरिक मरे वह भी वहाँ रक्खी हुई है। दो बजे के बीस मिनट पर वह मरे थे, इसको सूचना देने के लिए एक घड़ी वहाँ रक्खी है जिसमे वही समय दिखलाया

गया है। फ्रेडरिक का प्रसिद्ध वालक नौकर जिस आराम-कुर्सी पर एकाएक सो गया था, वह भी वहाँ रक्खी थी। सुप्रसिद्ध फ्रेंच दार्शनिक वाल्टेयर कुछ दिन राजा के पास रहे थे। वह जिस घर में रहते थे वह इस समय भी 'वाल्टेयर-भवन' के नाम से यात्रियों को दिखलाया जाता है। इस घर में वाल्टेयर का एक तैल-चित्र और एक अर्द्ध-मूर्त्ति (bust) स्थापित है। (इस शाही बाग़ के पास ही एक हवाईकल (Windmill) है। यह कल बाग़ और महल के बहुत पहले से यहीं पर स्थापित है। फ्रेडरिक ने इस कल को उठा देने की बहुत चेष्टा की। परन्तु उसके मालिक ने किसी क़ीमत पर वह मिल नहीं उठानी चाही, और इसी से वह अब तक वहीं पर स्थापित है) अब देश विदेश के लोग उसे "ऐतिहासिक मिल" (The Historic mill) कहते हैं। राजा भी धन्य है! प्रजा भी धन्य है! और यूरोप महादेश भी धन्य है! यदि दिल्ली के बादशाह के विलास-भवन के पास इस तरह की कल रहकर दिन रात अपनी घरघराहट से बादशाह को बेचैन करती और उसका मालिक इच्छापूर्वक उसे बंद न करना चाहता तो आपही बतलाइए, उस कारखाने की क्या दशा होती? प्रजा का भी साहस और स्वाधीनता का तेज तो देखिए। केवल इसी घटना पर विचार करने से यूरोप और एशिया का अन्तर मालूम पड़ जाता है। यह घटना सौ बरस से भी पहले की है। उस समय हमारे यहाँ दिल्ली के बादशाह की कौन कहे, साधारण ज़मींदार के साथ भी प्रजा की ऐसी अनबन होने से तो उस प्रजा की न-जाने क्या दुर्दशा होती। सौ बरस पहले की बात जाने दो; इस बीसवीं शताब्दी के सुसभ्य समय में अगर कोई काला आदमी ऐसे स्थल पर किसी गोरे का कहना न माने और उसके आराम में बाधा डाले तो न-जाने क्या आफ़त खड़ी हो जाय।

पाट्सडम मे मर्मरमहल (Marmor Palais), नीवू-वाग़ (Orangerie), टाउनहाल आदि अन्यान्य चीज़ें देखकर मैं यह खोज करने लगा कि महात्मा फ्रेडरिक की समाधि किस गिर्जे में है। वहुत घूमने-घामने पर वह गिर्जा मिला भी तो उसका दर्वाज़ा वन्द था। एक फ्रेंच भद्रपुरुष और उनकी स्त्री भी, दोनों, मेरी तरह खोजते खोजते वहीं पहुँचे। वह भद्रपुरुष तो विल्कुल अँगरेज़ी न जानते थे; मगर उनकी स्त्री अच्छी तरह अँगरेज़ी वोलती और समझ लेती थीं। स्त्री से मालूम हुआ कि वह भद्रपुरुष फ्रांस के आवकारी महकमे के अफ़सर हैं और छुट्टी लेकर देश-पर्यटन करने निकले हैं। अँगरेज़ी न जानने के लिए दुःखित होकर उन भद्रपुरुष ने वड़े विनीत भाव से अपनी स्त्री के द्वारा मुझसे अनेक वातें पूछीं। राह मे खूव थक जाने पर भी मैं उस गिर्जे के तीन दरवानों को उनके घर से वुला लाया। उनके आने पर गिर्जे मे प्रवेश किया। इस गिर्जे में पिता और पुत्र दोनों के शव टीन से जड़े हुए काठ के वक्स मे फ़र्श पर रक्खे हैं। सन् १८६६ के आस्ट्रियन-युद्ध और सन् १८७० के फ्रेंच-युद्ध की पताकायें चारों ओर टँगी हुई हैं। फ्रेडरिक की माता के हाथ का रेशमी कपड़े के ऊपर वना हुआ सुई का काम और रानी अगस्टा (Queen Augusta) का वुना हुआ कार्पेट यहाँ यत्नपूर्वक सुरक्षित है। सन् १८०६ मे नेपोलियन यहाँ पर आये थे।

प्रुशिया-राज्य की साधारण अवस्था। खास प्रुशिया-राज्य में १२ विश्वविद्यालय और १०० से अधिक सरकारी स्कूल हैं। सन् १८९२ में वीस करोड़ पौण्ड से ऊपर राजकर वसूल हुआ था और उसी साल राज्य का ऋण अड़तालीस करोड़ पौण्ड था। राज्य की शासन-प्रणाली इँग्लेंड की ऐसी (Constitutional Monarchy) है। राजा और दो पार्लियामेंट सभाओं के द्वारा सव राजकाज होते हैं।

पहले एक जगह कहा जा चुका है कि सन् १८७०-७१ के फ्रेंचयुद्ध के अन्त में पेरिस के उपनगर वेयारसेइल के राजभवन में सन् १८७१ की १८ वीं जनवरी को प्रुशिया के तत्कालीन राजा विलियम सारे जर्मन-साम्राज्य के सम्राट् बने। तब से प्रुशिया-राज्य ही साम्राज्य का सञ्चालक समझा जाता है। इसी साल के दिसम्बर महीने मे जर्मनी के भिन्न भिन्न राज्यों के जुदे जुदे सिक्कों की जगह एक ही तरह का सिक्का सब जगह चलाया गया। इस समय भी यद्यपि जुदे जुदे राजों के जुदे जुदे पुराने सिक्के देश में चलते हैं, लेकिन नये सिक्के का ही चलन बहुतायत से है। यहाँ के चाँदी के सिक्के का नाम है मार्क (Mark) और वह अँगरेज़ी शिलिंग की क़ीमत का होता है। यहाँ का पैसा फेनिंग (Pfennige) कहलाता है। ५,१०, २० मार्क के सोने के सिक्के भी हैं। नोट भी यहाँ बराबर पर चलते हैं। यहाँ ताँबे के पैसे नहीं होते। थोड़े दाम के पैसे आदि सिक्के निकेल (Nickel) और एक प्रकार की पीतल (Bronza) के बनते हैं।

विटेनबर्ग (Wiltenberg)। बर्लिन से लिपजिक जाते समय यह छोटा सा नगर मिला। केवल यहाँ के गिर्जे मे लूथर और उनके बन्धु मेलान्थियन (Melanchthon) की समाधि देखने के लिए यहाँ जाना हुआ। दोनों समाधियाँ पास ही पास बनी हैं। सन् १५१७ को ३१ वीं अक्तूबर को लूथर ने इसी नगर में पोप की स्वर्ग की ठेकेदारी (Indulgences) के विरुद्ध बड़े बड़े विज्ञापन चिपकाये थे। उसी दिन से प्रोटेस्टेन्ट-धर्म में जान पड़ने लगी। बाज़ार में महात्मा लूथर की एक बड़ी भारी पीतल की मूर्ति खड़ी है। उसके पैरों के पास जर्मन-भाषा में लिखा है—"ईश्वर का काम होने से वह युगयुगान्तर तक बना रहेगा और अगर आदमी का

कोरा खयाल होगा तो वह शीघ्र ही मिट जायगा"। इसी मूर्ति के पास मेलान्थियन की भी मूर्त्ति है। यहाँ एक 'ओक' का पेड़ है, जिसके नीचे लूथर ने सन् १५२० की १० वीं दिसम्बर को पोप की 'वुल' नामक घोषणाओं को जलाकर राख कर दिया था। यह नगर एल्ब नदी के किनारे पर है। यहाँ की लोक-संख्या १३,००० के लगभग है।

लिपज़िग (Leipzig)। इसका स्थानीय नाम है "लाइपज़िग"। तीन छोटी छोटी नदियों के संगम पर यह नगर वसा है। सन् १८७९ से संयुक्त जर्मन-साम्राज्य की सुप्रीम-कोर्ट यहीं पर है। नगर के भीतर का सुन्दर वृक्षपंक्तिशोभित अगस्टस्-प्लाज़ (Augustus-platz) अंश वहुत ही मनोरम है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह नगर सुन्दर, और रौनक़दार है। गेटे ने अपने 'फ़ाउस्ट' मे छोटा पेरिस (Klein-Paris) कह कर इस नगर का वर्णन किया है। यहाँ साल में तीन वार भारी मेला लगता है। यहाँ ३०० पुस्तकों की दूकानें हैं। तीनों मेलों में मिला कर साल मे यहाँ एक करोड़ पौण्ड के ऊपर माल की विक्री होती है। एक मेले में तो सारे यूरोप के रोज़-गारी यहाँ पुस्तकें ख़रीदने आते हैं। यहाँ का विश्वविद्यालय प्राचीन और प्रसिद्ध है। गेटे (Goethe), फिथ्टे (Fichte), शेलिंग (Schelling) आदि विद्वान् इसी विश्वविद्यालय के छात्र थे। प्रसिद्ध दार्शनिक और गणितज्ञ लिवूनिज़ (Leibnitz) और प्रसिद्ध संगीत-रचयिता वागनर (Wagner) इसी नगर में पैदा हुए थे। यहाँ के दृश्यों में म्यूज़ियम, आर्सेनल टाउनहाल, शीशमहल, १४ वीघे ज़मीन पर वना हुआ स्थविराश्रम, मानमन्दिर, 'फ़ाउस्ट' में जिसका वर्णन किया गया है वह भूगर्भ-स्थ गोदाम (Auerbach's Cellar), एक छोटे से खंभे पर रक्खा हुआ किसी प्रसिद्ध युद्ध का एक गोला,

मेण्डरब्रुनेन (Menderbrunnen) फुहारा और स्तम्भ, क्रीड़ा कर रहे हंस पक्षियों से सुशोभित सोयन-झील, उसके सामने का थिये-टर भवन, लूथर और मेलान्थियन की मूर्त्तियाँ; लिवूनिज़ और होमि-ओपेथिक 'हानिमान' की मूर्त्तियाँ, पोल-राजवंशावतंस महावीर पोनियाटौस्की (Poniatowsky) * का मनूमेन्ट, प्लेज़ेनवर्गमहल (Schloss Peissenburg), गिर्जा और यहूदियों का भजनमन्दिर Synagogue), ये दृश्य प्रधान हैं। इनके सिवा और भी कई एक स्तम्भ, मनूमेन्ट और मनोहर इमारतें हैं। महात्मा लूथर के नाम का भी एक गिर्जा है। उपनगर का रोज़ेन्थाल (Rosenthal), नाम का बाग़ अत्यन्त मनोरम है। उपनगरों को भी लेकर यहाँ की जन-संख्या तीन लाख के लगभग है। ऐसे भी प्रमाण पाये गये हैं कि इस स्थान में प्रस्तर-युग से मनुष्यों का निवास है। नगर के छोर का प्रसिद्ध दृश्य है। सन् १८१३ के अक्तूबर महीने में होनेवाले महान् युद्ध का मैदान और उनका चिह्न-स्वरूप नेपोलियन-स्तम्भ (Napolean-Stein), स्तम्भ की चोटी पर एक लोहे की गद्दी के ऊपर नेपोलियन की टोपी और तरवार की लोहे की प्रतिमूर्त्ति स्थापित है। स्तम्भ में, जर्मनभाषा में, अन्यान्य युद्ध की बातों के साथ हार की तारीख़ "८ अक्तूबर १८१३" लिखी हुई है। इस महान् युद्ध को ऐतिहासिक लोग "Battle of Nations" अथवा "Battle of giants" कहते

---

*यह नेपोलियन की ओर के एक भारी वीर पुरुष थे। प्रसिद्ध लिपज़िग युद्ध के अन्त में नदीपार होने के समय घोड़े-सहित मृत्यु को प्राप्त हुए। इन महात्मा का हृदय ऐसा उच्च था कि समाधि देते समय शत्रु और मित्र दोनों ने समान सम्मान दिखलाया था। इनके मरने से पोल-जाति की तो आशा पर ही पानी फिर गया।

हैं। यह युद्ध अद्वितीय था। सृष्टि जब से हुई तब से उस समय तक और कोई ऐसा युद्ध नहीं हुआ था जिसमें इतनी शिक्षित सेना दोनों ओर से लड़ी हो। यहीं पर नेपोलियन की कुछ सेना युद्ध के मैदान में नेपोलियन को छोड़ कर स्वाधीनता का उद्धार करनेवालों के साथ मिल गई और इसी युद्ध में हारने की चोट से नेपोलियन का हृदय भग्न हो गया। इसके पहले ही मास्को-विभ्राट् हो चुका था। उसकी ज्वाला इस हार से दूनी होगई और उससे फ़ान्स का धीरज जाता रहा। इसका फल यह हुआ कि सम्राट् नेपोलियन पदच्युत होकर एल्बा को गये। दैव की कृपा नेपोलियन पर थी, इसी से वह इस जगह से जान लेकर भाग सके; नहीं तो यहाँ वे क़ैद कर लिये जाते। यहाँ के चारों ओर का दृश्य देखकर हृदय में अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न हुए। अन्त को पोनियाटौस्की के मृत्युस्थान को देखने गया।

ड्रेस्डेन (Dresden) लिपज़िग से ड्रेस्डेन पहुँच कर नदीतट का आठ दिन तक रहनेवाला मेला देखने गया। मेले में भले आदमी बहुत कम देख पड़े। चारों ओर के देहाती निम्न श्रेणी के लोगों की ही भरमार अधिक थी। तीसरे पहर बैंक में नोट भुनाने गया। वहाँ से लौटकर होटल में प्रवेश करते समय गोथा-नहर की यात्रा में जिनका साथ हुआ था वही पूर्वपरिचित हँसमुख प्रसन्नचित्त अमेरिकन रमणी अपने भावी स्वामी के साथ खड़ी हुई होटल के एक कर्मचारी से बातें करती देख पड़ी। मैं हैट उतार कर खड़ा होगया। बातचीत समाप्त करके जैसे ही अमेरिकन रमणी ने फिर कर मुझे देखा वैसे ही दौड़कर मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिये और बड़ी प्रसन्नता के साथ कुशल-प्रश्न करके मुझे अपने साथ होटल में ले गई। वहाँ उनके साथ के अन्यान्य पूर्वपरि-

चित अमेरिकन स्त्री-पुरुषों से भी मुलाक़ात हुई । सबने अत्यन्त आदर के साथ अमेरिका-यात्रा के समय अपने अपने घर मुझे बुलाया। ड्रेस्डेन शहर सैक्सनी (Saxony) राज्य की राजधानी है। यह एल्ब (Elbe) नदी के किनारे बसा हुआ है। इसकी जन-संख्या दो लाख के ऊपर है। यह ऐसा रमणीय शहर है कि इसे लोग जर्मनी का 'फ्लोरेन्स' (Florence) कहते हैं। नदी के दोनों किनारों पर शहर बसा है। इधर से उधर जाने के लिए नदी मे दो पुल हैं। बाएँ किनारे की अपेक्षा दक्षिण-तट की सड़कें और गली-कूचे सीधे और चौड़े हैं; किन्तु बाएँ किनारे पर ही लोग अधिक बसते हैं। नदी-तट के उच्च स्थान के ऊपर क़तार की क़तार बाग़ और मकानात बहुत ही भले जान पड़ते हैं। यहाँ के राजमहल पर जो विजयादेवी की मूर्ति है उसके रथ में चार बाघ जुते हुए हैं। यहाँ सर्वत्र ऐसे स्थलों पर चार घोड़ों की चार बाघ स्थापित हैं। महल का टावर ३८७ फ़ुट ऊँचा है। बाहर से तो यह महल उतना सुन्दर नहीं जान पड़ता, लेकिन इसके भीतर का साज-सामान बहुत सुन्दर और उच्च-श्रेणी का है। महल के आठ कमरों मे ३००० बहुमूल्य मणि-मुक्ता आदि रत्न और अम्बर (Amber), सुवर्ण, चाँदी और हाथीदाँत के बने सामान सुरुचि का परिचय देनेवाले सुन्दर ढङ्ग से सजाये हुए रक्खे हैं। इनमें एक ४½ वर्ग-फ़ुट की चाँदी की प्लेट के ऊपर मीने (Enamel) और सोने की बनी १३२ मूर्तियों के द्वारा बादशाह औरङ्गज़ेब का दरबार दिखलाया गया है। महल के इस खण्ड को अँगरेज़ी में "ग्रीनवाल्ट" और जर्मन-भाषा में ("Grune Gewalbe") कहते हैं। इस संग्रह में ६⅞ × २⅛ वर्ग-इञ्च का एक ओनिक्स (Onyx) पत्थर है। उससे बड़ा यह पत्थर और कहीं नहीं है। बौने की शकल का एक मोती ४० करात भारी एक पन्ना भी यहाँ है।

महल के और एक अंश मे २,००० से अधिक अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र रक्खे हुए हैं।

ड्रेस्डेन के म्यूज़ियम की चित्रशाला का नम्बर संसार में दूसरा है। जब वेयारसेइल की प्रधान चित्रशाला और लूव्रे का संग्रह देखा था तब चित्रकला का उतना ज्ञान मुझे नहीं था; इसी से वहाँ का देखना अन्धे के आईना देखने के समान था। अनेक देशों के चित्र-संग्रह देख कर यहाँ आया था इसी से चित्रकला की खूबियां को कुछ कुछ जानने-पहचानने लगा था। यहाँ २,५०० चित्रों का संग्रह और राफेल (Raphael) और चिटियन (Titian) आदि प्रधान प्रधान इटलियन, पोर्च्युगीज़ प्लेमिश और फ्रेंच-चित्रकारों के हाथ के चित्र देखकर मैं ते मुग्ध सा हो गया। एक एक चित्र के सामने से शीघ्र हटने की इच्छा नहीं होती थी। राफेल के बनायें माडोना के चित्र और छोटे हालबिन (Younger Holbein) के बनायें मेरी के चित्र के लिए दो अलग अलग कमरे हैं। इनके सिवा उत्तर-अन्तरीप के मार्ग के मनोहर दृश्य इस प्रकार सजीव भाव से चित्रित हैं कि उन्हें पहले देखकर मैं ते चौंक पड़ा। ड्रेस्डेन की चित्रशाला का वर्णन करना मनुष्य के लिए ते असम्भव ही है। इस तैलचित्रों के सग्रह के अलावा म्यूज़ियम के दूसरे हिस्से मे साढ़े तीन लाख से अधिक अत्यन्त उत्कृष्ट एनग्रेविंग चित्रों का संग्रह है। म्यूज़ियम में पुरानी चीज़ों और नक्काशी की कारीगरियों का भी प्रशंसनीय संग्रह है। गटेनवर्ग में बना हुआ पहला प्रेस भी यहा रक्खा है।

ड्रेस्डेन की अन्यान्य प्रधान और दर्शनीय वस्तुएँ ये हैं— जापानी भवन, थियेटर, राजकुमारों का महल, ब्रुल-महल, विजया की मूर्त्ति, जोहानियम म्यूज़ियम (इसमें चीन, जापान, भारत और निकटवर्त्ती मिसेन नगर के मिट्टी के बर्त्तन आदि बहुत से

रक्खे हैं), जुइङ्गर-हर्म्यमाला और बाग़ (इसमें एक म्यूज़ियम है और उसमें राफेल, गेटे, डान्टे आदि की मूर्त्तियाँ और बहुत सी प्राचीन बन्दूकें तथा तोपें रक्खी हैं) और कई एक गिर्जे। इनके सिवा छोटे छोटे विहार-बाग़ और एक मय टापू के छोटी सी झील भी देखने योग्य है। नदी तट का स्थान बड़ी आराम की जगह है। ड्रेस्डेन के निकट एक भारी युद्ध में नेपोलियन ने विजय पाई थी। इस नगर की आवादी साढ़े पाँच लाख के ऊपर है। यहाँ से मैं बोहेमिया को रवाना हुआ।

मेयांज़ (Mainz)। अँगरेज़ी में इसे मेयान्स (Mayence) कहते हैं। यूरोप में भ्रमण करते समय मैं तीन बार जर्मन-साम्राज्य में आया। एक बार स्वीडेन से, दूसरी बार स्वीज़र्लेण्ड से और तीसरी बार हालेण्ड से। मैं बेज़ूल या बाल (Basle or Bale) नगर होकर इस बार यहाँ आया। रोमन-साम्राज्य के समय इस नगर का नाम था मागान्टियाकम्। यह नगर राइन (Rhine) नदी के किनारे अर्ध-चन्द्राकार होकर बसा है। नगर के दोनों किनारे सीधे और पिछला हिस्सा गोल है। यहाँ का प्रधान गिर्जा या "डोम" हज़ार वर्ष से अधिक पुराना है। स्थानीय म्यूज़ियम के ९ कमरों में चित्रों का संग्रह है। अन्यान्य कमरों में बहुत सी प्राचीन रोमन-चीज़ें, सिक्के और मेडल, नेपोलियन के डबल पुल की नक़ल, ज्योतिषी-घड़ी, एक लाख से अधिक छपे हुए ग्रन्थ और बहुत सी हस्तलिपियाँ रक्खी हुई हैं। लाइब्रेरी में विशेष रूप से देखने की चीज़ है महात्मा गटेन बर्ग (Gutenberg) की कीर्ति। इन्होंने ही पहले-पहल टाइप से छापने की रीति का आविष्कार किया था। उनकी अपने हाथ की छापी हुई बाइबिल की सामगाथा (Psalms) और पहले की छपी दो पूरी बाइबिलें यहाँ रक्खी हुई हैं। एक चित्र में यह दृश्य

दिखाया है कि गटेनवर्ग छाप रहे हैं और उनके दोनों सहकारी—फास्ट और शफर—उनकी सहायता कर रहे हैं। अन्य एक चित्र में यह दृश्य है कि प्रेस के आविष्कार से ज्ञान-विस्तार की विशेष सहायता होने के कारण यूरोप, एशिया, आफ्रीका और अमेरिका महादेश उनको प्रणाम कर रहे हैं। यह कहा जा चुका है कि उन्होंने पहले-पहल जिस प्रेस में छपाई का काम किया था वह ड्रेस्डेन में रक्खा हुआ है।

मैं म्यूज़ियम आदि देखकर गटेनवर्ग का मकान और मूर्त्ति देखने गया। उनका मकान बड़े यत्न के साथ सुरक्षित है। वहाँ इस समय एक बियर-क्लब या 'काज़िनो' (lasino) स्थापित है। इसी घर में गटेन-वर्ग का जन्म हुआ था और यहीं उन्होंने छपाई का काम किया। मेरी समझ मे ऐसे तीर्थस्थान में खाने-पीने गाने-बजाने आदि की जगह क़ायम करना अच्छा नहीं। थियेटर के सामने जगत्प्रसिद्ध थरवाल्सडेन के हाथ की बनी गटेनवर्ग की मूर्त्ति स्थापित है। चबूतरे पर एक ओर वृद्ध गटेनवर्ग टाइप कंपोज़ करने का तरीक़ा बतला रहे हैं और दूसरी ओर छपाई का काम हो रहा है। एक ओर जर्मन-भाषा में और दूसरी ओर लैटिन-भाषा मे लिखा है कि "सर्वसाधारण मे ज्ञान फैलाने के मार्ग का इन्होंने ही आविष्कार किया।" इसी नगर मे शिलर की भी एक मूर्ति है। नगर की जन-संख्या ७०,००० के लगभग हैं। यहाँ से राइन-स्टीमर पर चढ़कर कोलोन को रवाना हुआ।

राइन नदी। यूरोप मे यह एक प्रसिद्ध नदी है। ऐतिहासिकता और रमणीयता के ख़याल से यह सर्वश्रेष्ठ नदी है। मेयांज़ से बान (Bonn) तक इस नदी का दृश्य विशेषरूप से मनोरम हैं। हर साल गर्मियों में पृथ्वी के अनेक देशों से बहुत से यात्री इस नदी की शोभा

देखने आते हैं। इसे विना देखे यूरोप की यात्रा अधूरी समझी जाती है। इसी नदी के द्वारा जर्मनी में रोमन-सभ्यता फैली। मध्ययुग के इतिहास में यह नदी प्रसिद्ध है। इसी नदी-तट पर दो प्रधान जातियों में भारी युद्ध हुआ है। फ्रेंच और जर्मन लोगों की लड़ाई की जगह आल्सेस-लॉरेन (Alsace-Lorraine) की सीमा पर यही नदी वहती है। मेयाँज़ के वाद इस नदी का आकार एक झील का ऐसा हो गया है। वीच मे कई एक टापू हैं। इस तरह के टापू इस नदी मे आगे भी मिले। दोनों किनारों पर कहीं पहाड़, कहीं अंगूर के खेत, कहीं कुछ वने हुए और कुछ टूटे-फूटे प्राचीन क़िले, महल, मनूमेन्ट आदि और कितने ही सुन्दर गाँव और मोज़ेल (Moselle) नदी के संगम-स्थल पर कान्लेञ्ज और वान नामक दो शहर देखते देखते नौ घंटे में हम लोग कोलोन पहुँचे।

कोलोन। यहाँ आकर नदी-तट पर के एक होटल मे एक सप्ताह तक मैंने विश्राम किया, क्योंकि निरन्तर यात्रा की थकावट से शरीर अस्वस्थ हो चला था। होटल के कमरे में वैठे वैठे सात दिन तक स्टीमर के यात्रियों का आना-जाना और राइन नदी की शोभा देखता रहा। यहाँ पहुँचने के समय मुझे कब्ज़ की शिकायत होगई थी। मैं तो समझा था कि अस्पताल की शरण लेनी पड़ेगी, लेकिन स्थानीय जल-वायु की उत्तमता और एक सप्ताह के विश्राम से शरीर और मन स्वस्थ हो गया—तवीयत साफ़ होगई। रास्ते में अनेक अमेरिकन और यूरोपियन यात्रियों ने कहा था कि लगातार इतना परिश्रम न करो, नहीं वीमार पड़ जाओगे। लेकिन मैं भारतवासी था, मेरे लिए फिर यूरोप आकर इन स्थानों को—इन दृश्यों को फिर देखना असंभव ही था। इसी से मैं उनके इस हितोपदेश को नहीं मान सका। इस समय जिस जगह यह नगर है वहाँ पहले एक छोटी सी वस्ती

थी। उसी बस्ती में रोमन-सम्राट् क्लाडियस की पत्नी का जन्म हुआ था। अपनी पत्नी के ही अनुरोध से उक्त सम्राट् ने इस जगह रोमन-उपनिवेश स्थापित किया और रानी के नाम पर उसका नाम रक्खा "कलोनिया आग्रियिना"। नगर के बाहर बहुत से अंगूर के खेत और बाग़ हैं। उनके बाद सात मील की अर्धचन्द्राकार चहारदिवारी नगर को घेरे हुए है। यहाँ के रास्ते—कूचे और घर बहुत अच्छे नहीं हैं, किन्तु वनिज-व्यैपार के कारण इसमे समृद्धिशाली लोग रहते हैं। इसमे पौने तीन लाख आदमियों की बस्ती है। यहाँ मुख्य देखने की चीज़ है गाथिक चाल का बना हुआ जगत्प्रसिद्ध लाल पत्थर का सेन्ट-पीटर गिर्जा। इसका बनना सन् १२०८ में शुरू हुआ था। सन् १८४८ मे बीस लाख पौण्ड की लागत का यह गिर्जा बन कर सम्पूर्ण हुआ और इसके बाद सन् १८८८ मे सर्वाङ्गसम्पूर्ण हो गया। इसकी लम्बाई ४६० फुट और चौड़ाई २४८ फुट है। इसकी छत २५० फुट, मध्यचूड़ा ३५० फुट और आस पास की दो चोटियाँ ५२२ फुट ऊँची हैं। इसमें ६ घण्टे हैं। उनमें एक घंटे का वज़न ३१२ मन है। सप्तपर्वत पर से शैतान का फेंका हुआ पत्थर का टुकड़ा यहाँ रक्खा है। प्रसिद्ध चित्रकार रूबेन्स (Rubens) का जन्म यहीं हुआ था। इस गिर्जे मे इस चित्रकार के हाथ का बना पीटर की क्रूस-मृत्यु का अत्यन्त सुन्दर चित्र रक्खा हुआ है। गिर्जे का अन्यान्य क़ीमती सामान देखने योग्य है। यहाँ ज़मीन के नीचे भजन का कमरा बना हुआ है। अन्यान्य प्रधान नगरों की तरह कोलोन में भी म्यूज़ियम, पशुशाला, आर्सेनल, विस्मार्क और वान माल्क की मूर्तियाँ, फ़्लोरा अर्थात् गर्म मुल्कों के वनस्पतियों का भवन, थियेटर, टाउनहाल, गुर्ज़ेनिथ-हाल (Gurzenich-Hall), यहूदियों का भजन-मन्दिर और कई एक गिर्जे आदि अच्छे दृश्य हैं।

नदी के ऊपर एक पन्टून (Pontoon और एक रेल्वे का पुल है। दूसरे किनारे की वस्ती छोटी है। नगर के जिस भवन मे सुगन्धित अर्क ओ-डी-कोलोन (Eau dee cologne) निकलता है उसे भी देखा। उसमें इस समय भी सुगन्धित अर्क का कारख़ाना है। कोलोन में पाँच लाख से ऊपर आदमियों की वस्ती है। यहाँ से मैंने वेल्जियम की यात्रा शुरू की।

ब्रेमेन (Bremen)। यहाँ जर्मनी की अन्तिम सीमा शुरू हुई। हालैंड के ग्रानिङ्गेन (Groningen) नगर से यहाँ आया। राज्य की तीन फ्री-सिटियां या स्वाधीन नगरों में ब्रेमेन भी एक है। यह प्राचीन शहर और बन्दरगाह है। वेसर (Wesser) नदी इसके भीतर वहती है। एक लाख से ऊपर लोग यहाँ रहते हैं। यहाँ के वड़े मकान प्रधान गिर्जे के चारों ओर वने हैं। गिर्जा पुराना है। इसी जगह पर पहले शार्लमेन का, लकड़ी का, एक गिर्जा था। गिर्जे के एक अंश का नाम है व्लेकेरल (Bleikeller) अर्थात् सीसे का वाल्ट। यहाँ कई एक रोग़न-फिरे हुए शव रक्खे हैं। नगर का वूर्ज़र-पार्क (Burzer Park) ख़ूव वड़ा है। रेल्वे-स्टेशन के पास सिटी-पार्क है। शहर की शोभा के लिए कई एक महात्माओं की मूर्तियाँ और सन् १८७० के फ्रेंच-युद्ध का मनूमेन्ट स्थापित है। यहाँ के साधारण घरों की ऐसी व्यवस्था है कि एक स्त्री-पुरुष के सिवा सारा परिवार एक घर में नहीं रह सकता। यहाँ से हम्वर्ग गया।

हम्वर्ग (Hamburg)। स्थानीय उच्चारण है हम्वुर्ग। सम्राट् शार्लमेन ने सन् ८०५ में इस नगर को वसाया था। हम्वर्ग कन्टीनेन्ट का सवसे प्रधान व्यापारी वन्दरगाह है। सोलह उपनगरों को मिला कर यहाँ की जनसंख्या छः लाख के लगभग है। यह नगर

समुद्र से ६३ मील की दूरी पर एल्ब नदी के ऊपर बसा हुआ है। नगर के भीतर अल्स्टर झील (Alster) है। इसमें नदी से पानी आता है। इस झील के दो भाग हैं। बड़े भाग के किनारे ग़रीब लोग बसते हैं। 'ज्वार' आने पर उनके घरों के भीतर पानी भर जाता है। 'भाटा' आने तक वे लोग भागे भागे रहते हैं। उक्त झील का छोटा भाग खूब मनोहर है। उसके आसपास मनोहर महल बने हुए हैं। झील के भीतर स्टीमर और नावें इधर से उधर तेज़ी के साथ नगर के अनेक स्थानों को आ जा रही हैं; यह एक नया ही दृश्य देखा। एल्ब नदी में तो जहाज़ तक आते हैं। झील में स्टीमर चलते हैं। नगर मे बहुत से कारख़ाने भी हैं। हम्बर्ग शहर हर घड़ी गुलज़ार रहता है। यहाँ के सेन्ट निकोलस गिर्जे की चोटी ४७३ फुट ऊँची है। ऊँचाई में मिसर के प्रधान पिरामिड के बाद इसी का नम्बर है। किन्तु बहुत लोग इसका नाम भी नहीं जानते। एफेल-टावर मे जो ऊँचे स्थानों की ऊँचाई की तुलना-तालिका है उसमे भी भ्रम से इसका नाम नहीं दिया गया। सेन्ट निकोलस गिर्जे के बनने में दो लाख पौण्ड से अधिक रक़म ख़र्च हुई थी। यह सब रुपया सप्ताह में एक मार्क के हिसाब से लोगों से चन्दा लेकर जमा किया गया था। यहाँ और भी कई एक बड़े गिर्जे हैं। यहाँ के 'बुर्ज' अर्थात् एक्सचेंज मे नित्य न्यूनाधिक पाँच हज़ार बैपारी जमा होते हैं। यहाँ की पशुशाला, बटानिकल-गार्डेन और म्यूज़ियम वग़ैरह देखने योग्य स्थान हैं। म्यूज़ियम में अनेक सामग्रियाँ हैं। एक जगद्धात्री की प्रतिमा, एक काली-पूजा का चित्र, रामलीला का दृश्य, बंगाल के चड़क-उत्सव की ध्वजा, रथ, दुर्गोत्सव का दृश्य, भिश्ती की मशक, हिन्दुस्तानी किवाड़, खटिया, तबला, ढोलक, भारत की बनी तरह तरह

की मिट्टी की मूर्त्तियाँ, बुद्धदेव, पारस्य उपसागर में चलनेवाली खजूर की डालियों की बनी एक तरह की नाव और पेरू तथा बोलिविया देश की ममी (एक प्रकार के रोग़न से सुरक्षित लोथ) भी यहाँ रक्खी हैं। फ्रेंच-युद्ध का विजय-स्तम्भ, शिलर आदि महात्मा लोगों की मूर्त्तियाँ और अन्यान्य इमारतें इस नगर में दर्शनीय हैं।

हम्बर्ग में हर साल आठ करोड़ पौण्ड के लगभग माल की आमदनी और रफ़्तनी होती है। यहाँ से हर साल पाँच लाख बैल और भेड़ें इँगलेंड भेजी जाती हैं। बहुत से बड़े बड़े जहाज़ नगर के सामने आकर लंगर डालते हैं। नगर के एक अंश की सड़क पर वेश्यायें बड़ा उपद्रव करती हैं। कन्टोनेन्ट में सब जगह इन अभागिनियों के लिए कड़े क़ानून बने हैं तथापि कहीं वे क़ाबू में नहीं रहतीं। एक बार सन् १८७६ की १७ वीं सितम्बर को इनको इनके भयानक अत्याचार का यह दण्ड दिया गया था कि रात के समय सब वेश्यायें ख़ाली-हाथ करके घरों से निकाल दी गई थीं। हम्बर्ग के प्रधान अस्पताल में ४,००० रोगियों के रहने की व्यवस्था है। एक दिन आल्टोना-उपनगर और ब्लाङ्कानिज (Blankanitz) नामक विहार-बाग़ देखने गया। यहाँ जाने से चित्त बहुत ही प्रसन्न हुआ। दोनों जगह जल के किनारे का दृश्य मनोहर है। एल्ब-नदी के किनारे के पहाड़ पर बने हुए आल्टोना के होटलों में भोजन करने से एक नये तरह का मज़ा मिलता है। भोजन के टेबिल पर से सामने और नीचे का सुन्दर दृश्य देख पड़ता है। यहाँ के नदी-तट पर बने हुए बाग़ बहुत ही सुन्दर हैं। आल्टोना में एक तोपों का मनूमेन्ट है। चार बड़े युद्धों में जीती हुई तोपें सजा कर यह स्मारक-स्तम्भ खड़ा किया गया है। मनोहरता में हम्बर्ग एक आदर्श-नगर है। आस-पास के देहातों में रहनेवाले लोगों के कपड़े यूरोपियन ढङ्ग के नहीं

हैं। उनमें एक प्रकार की विचित्रता देख पड़ती है। इस नगर में नौ लाख से ऊपर लोग वसते हैं।

लुवेक (Lubeck)। यह जर्मनी का एक स्वाधीन नगर ट्रावे (Trave) और वाकेनिज़ (Wakenitz) नदियों के संगम पर वसा हुआ है। इसकी जन-संख्या ६०,००० के लगभग है। ट्रावे नदी छोटी है, पर उसका जल गहरा होने के कारण सब जहाज़ विल्कुल नगर के नीचे तक आ सकते हैं। लुवेक एक प्राचीन नगर है और किसी समय विशेष समृद्धिशाली था। इस वात के अनेक चिह्न इस समय भी वहाँ मौजूद हैं। इस समय जिसे "रथहाउस" (Rathhaus), अर्थात् टाउनहाल, कहते हैं उसका नाम पहले "हन्साहाल" था। हन्सा-समिति (Hanseatic League) वाणिज्य-व्यवसाय की रक्षा के लिए स्थापित हुई थी। उत्तर-जर्मनी के कई एक रोज़गारी नगरों की प्रजा ने मिलकर व्यापारी जहाज़ों की रक्षा और देखरेख के लिए एक यह समिति वनाई थी। नगर के चार फाटक थे। उनमें दो अव तक वैसे ही वने हैं। नगर का प्रवन्ध अधिकांश प्राचीन ढंग का है। यहाँ के आदमी भी वड़े सीधे जान पड़ते हैं। (ट्राम-गाड़ी में टिकट वेचने और पैसा लेनेवाला कोई कर्मचारी नहीं रहता। गाड़ी के भीतर एक छोटा सा वक्स रहता है उसी में लोग किराये के पैसे डाल देते हैं। लन्दन के किसी किसी छोटे महल्ले की आधी पेनी किराये की अम्निवसों में भी ऐसा प्रवन्ध है। पर वह प्रवन्ध अव धीरे धीरे उठता जाता है। हम्वर्ग, ब्रेमेन और लुवेक, इन तीनों स्वाधीन नगरों की हाईकोर्ट लुवेक में है। सन् १८०६ मे जेना (Jena) युद्ध में हारे हुए सेनापति ब्लुशर (Blucher) ने भाग कर यहीं जान बचाई थी। उसके वाद भयानक युद्ध के उपरान्त इसी नगर में नेपोलियन ने उन्हें कैद कर

लिया। हम्बर्ग से डेन्मार्क (Denmark) जाते समय यहाँ आया था। यहाँ से जर्मनी की सीमा समाप्त होगई।

जर्मनी की साधारण अवस्था। उस देश के लोग जर्मन-साम्राज्य को डूशलैंड (Deutschland) और जर्मन-सम्राट् को डूशर-कैसर (Deutscher Kaiser) कहते हैं। २६ प्रदेशों के मिलने से यह साम्राज्य संगठित हुआ है। इनमें ४ राज्य, ८ क्षुद्र राज्य (Principality), ग्रैन्ड-डची (Grand-Duchy), ५ डची और ३ स्वाधीन नगर थे। सम्राट् का अधिकार सर्वोपरि है। वह केवल आत्म-रक्षा के लिए अपनी आज्ञा से युद्ध ठान सकते हैं। दूसरे देश पर चढ़ाई करने के लिए उन्हें प्रादेशिक राजों की सलाह लेनी पड़ती है। इटली एक तरह से बिखरी हुई थी और जर्मनी दूसरी तरह से अनेक भागों में बँटी हुई थी। सन् १८७१ से एक सम्राट् की अधीनता में 'एक' होकर जर्मन लोग बहुत ही प्रभावशाली और समृद्धि-सम्पन्न बन गये हैं। राजकाज में सम्राट् की सहायता के लिए रेशरथ (Reichsrath) और रेशटग(Reichtag) नाम की दो सभायें हैं। इन्हीं सभाओं की सहायता से सम्राट् साम्राज्य का सब काम करते हैं। प्रादेशिक शासन आदि स्थानीय व्यवस्था के अनुसार होता है। किन्तु आईन-क़ानून, सिक्का, व्यापार, रेल्वे, डाक व तार, उपनिवेश और जहाज़ी लड़ाई के बारे में उक्त सभाओं की सहायता से सम्राट् जो निर्णय कर देंगे उसे प्रादेशिक राजा मानने के लिए बाध्य हैं। जर्मनी जब चाहे तब ५४ लाख सेना समर-भूमि में भेज सकती है। साम्राज्य में कान्स्क्रिप्शन्-प्रथा प्रचलित है। सब तरह के मिला कर, जर्मनी के ३५७ युद्ध-जहाज़ हैं। साम्राज्य में साढ़े छः करोड़ आदमियों की बस्ती है। सन् १९१३ में साढ़े अठारह करोड़ पौण्ड 'कर' वसूल हुआ था। ऋण तेरह करोड़ पौण्ड था। जर्मनी के जिस

नगर में गया, वहाँ देखा, सैनिकों को यत्नपूर्वक युद्ध की शिक्षा दी जा रही है। अन्यान्य धनी देशों की तरह जर्मनी में भी सोने के सिक्के का खूब चलन है। इसी से जान पड़ता है कि दिन दिन देश का धन बढ़ता जाता है। यह बात तो पहले ही कही जा चुकी है कि जर्मन कारीगरों के हाथ की बनी चीज़ें तमाम दुनिया के बाज़ारों मे फुर्ती के साथ फैलती जा रही हैं। ज्ञान-विज्ञान मे हमेशा से जर्मनी का पहला नम्बर है। आईन के अनुसार वहाँ हर एक बालक-बालिका को साधारण शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। हज़ार आदमियों मे डेढ़ सौ पढ़नेवाले विद्यार्थी मिलते हैं। साम्राज्य भर में २१ विश्वविद्यालय हैं। उनमें न्यूनाधिक ३२,००० विद्यार्थी पढ़ते हैं। शिक्षा-विभाग में यह एक बड़ा सुन्दर नियम प्रचलित है कि हर एक विद्यार्थी को कम से कम एक विदेशी भाषा पढ़नी पड़ती है। अनेक जर्मन-विद्यार्थी आज-कल अँगरेज़ी पढ़ते हैं। कालेज वग़ैरह के अलावा बहुत सी पब्लिक-लाइब्रेरियाँ और विज्ञान तथा उपयोगी ज्ञान का प्रचार करनेवाली सभा-समितियाँ भी साम्राज्य मे बहुत हैं। उनसे भी वहाँ के सर्वसाधारण का विशेष उपकार होता है। जर्मनी में २२ मान-मन्दिर बहुत अच्छी तरह अपना काम करते हैं। जर्मनी के सभी नगर साफ़-सुथरे हैं। प्रधान नगरों मे, चौराहे पर, ऊँचे चबूतरे के ऊपर, शीशे के भीतर स्थानीय नक़शा रक्खा रहता है: जिसमे कोई नया आया हुआ विदेशी अगर राह भूल जाय तो उस नक़शे से अपने जाने की जगह का पता लगा लेगा। जर्मनी में प्रोटेस्टेन्ट मत की प्रधानता है। परन्तु बहुत से रोमन-कैथलिक और यहूदी भी बसते हैं। यहूदी लोग बड़े ही धनाढ्य हैं। बहुत से अख़बारों के वे स्वामी हैं। किन्तु साम्राज्य का कोई प्रतिष्ठित—ख़ास कर सैन्य-विभाग का कोई पद—वे नहीं पा सकते। यूरोप जाने के

पहले मैं सुनता था कि जर्मनी में बहुत से लोग वेद पढ़ते हैं। दुःख है कि बहुत खोज करने पर भी इस बात की सचाई का कोई प्रमाण मुझे नहीं मिला । बल्कि वहाँ के बहुत स्थानों के शिक्षित लोग भी भारत के बारे मे कुछ नहीं जानते । हम्बर्ग में एक भद्र पुरुष से बहुत देर तक बातचीत होने के बाद उन्होंने मुझसे मेरा निवास-स्थान पूछा । 'इण्डिया' 'इस्ट इण्डिया' 'हिन्दोस्तान' कहने पर भी जब वह नहीं समझ सके तब मैंने उनको 'ब्राह्मणों का देश' कह कर समझाया ।

एल्ब नदी । ड्रेसडेन से मैं बोहेमिया को गया । सीमान्त-नगर बोडेन-बाथ (Bodenbach) तक एल्ब-स्टीमर की यात्रा मे बड़ा आनन्द मिला । जर्मनी के इस अंश को "सैक्सन-स्वोज़रलैंड" कहते हैं। नदी के दोनों किनारों पर पर्वतमाला है। पर्वतमाला के निचले हिस्से में दो रेल्वे लाइनें हैं। दोनों ही ओर का दृश्य समान सुन्दर है। बीच बीच में पहाड़ों के ऊपर मकानात भी बने हैं। नदी में हमारे देश के ऐसे 'बेड़े' देख पड़े ।

आस्ट्रिया-हंगेरी ।



डेनवाथ् । यहीं से आस्ट्रिया-साम्राज्य शुरू होता है । कर्मचारी के द्वारा असबाब की जाँच हुए बिना आगे बढ़ने का उपाय न था । रेल छूटने में भी देर थी । इस कारण कुछ देर नगर में घूम आने का अवकाश मिल गया । एक अँगरेज़ी जाननेवाले बोहेमिया के यात्री को साथ लेकर नगर देखने गया । वहाँ से लौटकर रेल पर सवार हुआ । नगर बहुत छोटा है । किन्तु दो साम्राज्यों की सीमा पर होने के कारण ज़रा गुलज़ार है ।

प्राग् (Prague) । वोडेनवाथ् से रेल पर सवार होकर प्राग् आया । रास्ते में हमारे देश के ऐसे खेवा-घाट और खेवा ले जाने-वाली नावें देख पड़ीं । साधारण श्रेणी के देहाती लोगों की पोशाक भी बदली हुई है । यहाँ साफ़ जान पड़ा कि क्रमशः पाश्चात्य-सभ्यता की मात्रा कम होती आती है । नदी के किनारे जंगल ऐसे भारी सेव (Apple) और अमरूद (Pear) के बाग़ हैं । कई एक पुराने कैसल (दुर्ग-प्रासाद) और गिर्जे, रेल की सड़क के किनारे कहीं क्रूस के ऊपर ईसा और कहीं ईसा को गोद में मेरी तथा कई एक सेन्टों की मूर्त्तियाँ देखकर जान पड़ा, जैसे मध्य-युग के यूरोप में आगया हूँ । सब मिलाकर यह कहा जा सकता है कि बोहेमिया-प्रदेश के

दृश्य कुछ बुरे नहीं हैं। शाम होने से कुछ पहले प्राग् में पहुँचा। नगर मोल्डाओ नदी के ऊपर बसा हुआ है। नदी के दोनों किनारों मे बस्ती है। इस शहर को अँगरेज़ लोग 'प्रेग्' और जर्मन तथा फ़्रेञ्च लोग 'प्राग्' कहते हैं। किन्तु स्थानीय लोगों का उच्चारण है 'प्राहा'। यहाँ तीन लाख से अधिक लोग बसते हैं। अधिकांश निवासी रोमन-कैथलिक-धर्मावलम्बी हैं। पहले यह शहर बोहेमिया राज्य की राजधानी था। इस समय केवल प्रादेशिक प्रधान-नगर समझा जाता है। शाम को होटल के निकट ही टहलता रहा। दूसरे दिन सवेरे प्राग् की सामयिक प्रदर्शिनी देखने गया। इस देश के लोगों का कहना है कि सन् १७९१ में सबसे पहले उन्होंने ही प्रथम प्रदर्शिनी खोली थी। उसी के सौ बरस पूरे होने के उत्सव में यह प्रदर्शिनी खोली गई थी। प्रदर्शिनी बुरी नहीं थी। थोड़े में बहुत सी देखने लायक़ चीज़ें और जानने लायक़ बातें दिखलाई गई थीं। ऐतिहासिक समय के पहले के कई एक मनुष्य-शरीर के ढाँचे, अस्त्रशस्त्र और यन्त्र आदि तथा उस देश की प्राचीन युद्ध-सज्जा आदि देखने की चीज़ें थीं। मेले मे एक दर्शक की अद्‌भुत दाढ़ी देखी, घुटनों तक लंबी थी। प्रदर्शिनी-मेले के सामने के बाग़ में दर्शकों के बैठने के लिए कलदार कुर्सियाँ बड़े मज़े की चीज़ थीं। उनमें एक छेद रहता है, उसमें पैसा डालने से कुर्सी खुल जाती है। दर्शक बैठ जाते हैं और उनके उठते ही वह फिर बन्द हो जाती है। मेले में बोहेमिया का मधुर बाजा सुनते सुनते रात होगई। बाहर निकल कर होटल की राह भूल गया। बड़ी मुशकिल हुई। कोई मेरी बात नहीं समझता था और न मेरी ही समझ में किसी की बात आती थी। धीरे धीरे मेरे आसपास दस बारह औरत-मर्द जमा हो गये। उनमें से एक आदमी टूटी-फूटी अँगरेज़ी जानता था। वे लोग ऐसे

दयालु और भद्र पुरुष थे कि मुझे साथ लेकर होटल तक पहुँचाने के लिए चले। मैंने उन लोगों से कई बार किराये की गाडी पर बैठने के लिए कहा, पर उन्होंने "मेरा व्यर्थ पैसा ख़र्च होगा" कह कर अस्वीकार कर दिया। एक कोस के लगभग चलना पड़ा तब होटल तक पहुँचे। इन लोगों ने अपने व्यवहार से मुझे मोल ले लिया। इस देश के लोग अत्यन्त सरल और भले आदमी जान पड़ते हैं। दूसरे दिन कई भाषायें जाननेवाले दुभाषिये के साथ नगर की सैर करने गया। प्राकृतिक हिसाब से नगर बहुत अच्छी जगह पर बसा हुआ है। देश के मध्यस्थल मे मोल्डाओ नदी के किनारे नगर के योग्य ऐसा लम्बा चौड़ा स्थान और नहीं है। नगर और उसके आसपास के पर्वतों पर भी अनेक मनोहर इमारतें, टावर, घरों की चोटियों आदि का दृश्य बहुत ही विचित्र जान पड़ता है। शहर के भीतर बाग़ और पार्क भी अनेक हैं। नदी के भीतर-वाले टापुओं मे भी बाग़ो की कमी नहीं है। नदी के ऊपर सात पुल हैं। एक पुल के दोनों सिरों पर मध्य-युग के दो टावर हैं। सन् १३९३ की १६ वीं मई को राजा की आज्ञा से राजपुरोहित नेपोम्युसेनो (अँगरेज़ी उच्चारण 'नेपोमक' है) इसी पुल पर से नदी मे डाल दिये गये थे। उक्त पादरी का अपराध यही था कि रानी ने उनके आगे जिन जिन अपराधों को स्वीकार किया था उन्हें उन्होंने राजा के आगे नहीं प्रकट किया। उक्त महात्मा ने प्राण दे दिये पर विश्वासघात नहीं किया। इसी गुण पर रीझ कर परवर्त्ती राजवश ने उन्हें सेन्ट-पदवी से विभूषित किया। जिस दिन वह मरे थे उस दिन आज तक उनके मन्दिर में बहुत से यात्री पूजा करने के लिए आते हैं। पुल के नुक्कड़ पर ही उनका मन्दिर बना हुआ है। प्राचीन राजमहल में पचास

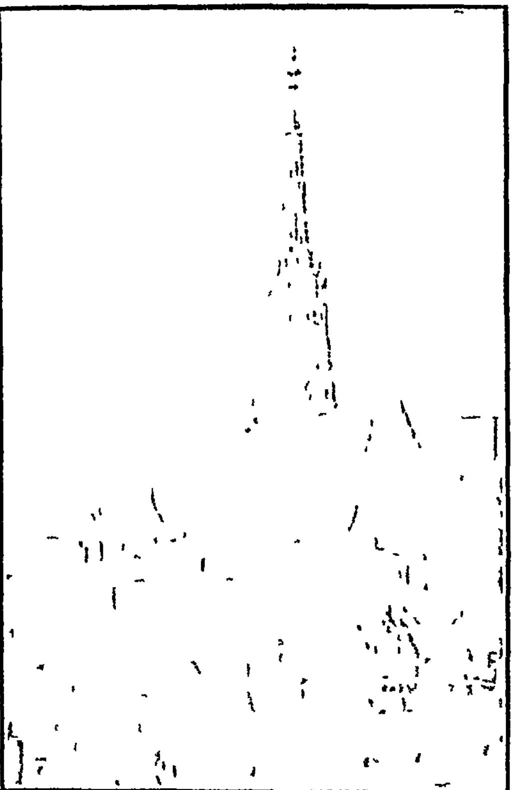
मन के लगभग चाँदी का वना हुआ उनका समाधि-मन्दिर है। पुल के वीच मे एक खंभा है। उसमे अनेक युद्धों के गोलों के निशान वने हुए हैं। उस स्तम्भ के ऊपर क्रूस पर ईसा की मूर्त्ति है। नगर के सामने की नदी मे एक वनावटी झरना वना कर उसकी शोभा वढ़ाई गई है। यहाँ का विश्वविद्यालय वहुत पुराना है। पुराने जर्मन-साम्राज्य मे सवसे पहले यही यूनिवर्सिटी स्थापित हुई थी। इसमे वोहेमियन और जर्मन, दोनों भाषायें सिखलाई जाती हैं। वोहेमियन छात्रों के द्वारा सन् १३४८ में स्थापित यूनिवर्सिटी स्थापित करनेवाले राजा चतुर्थ चार्ल्स का स्मारक-स्तम्भ भी दर्शनीय है। एक गिर्जे मे जगत्प्रसिद्ध ज्योतिपी लाप्लास (Laplace) के गुरु टाइको-व्राही (Tycho-Brahe) की समाधि है। वोहेमिया के प्रसिद्ध सुधारक हस (John Huss) और उनके शिष्य जिरम (Jerome) का जन्म इसी नगर में हुआ था। यहाँ पण्डितवर हस का घर इस समय भी दर्शकों को दिखलाया जाता है। तेरहवीं शताव्दी में मुसलमानों ने इस नगर पर आक्रमण किया था। उनके अत्याचार और उपद्रव के चिह्न इस समय भी यहाँ जगह जगह देख पड़ते हैं। इस नगर में वहुत से यहूदी रहते हैं। इनके लिए एक महल्ला अलग है। यह महल्ला और महल्लों की अपेक्षा गंदा और निराले में है। यहाँ की ज्योतिपी-घड़ी विचित्र है। यह सन् १८९० में वनी थी। इसके नीचे और एक घड़ी है, जो साल के दिन और राशि वतलाती है। एक जगह दिखला कर वतलाया गया कि यहाँ वहुत से प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों की वलि दी गई थी। इसके पास ही एक स्तम्भ है। सत्रहवीं शताव्दी में स्वीड लोगों ने जव नगर पर आक्रमण किया था तव चौदह सप्ताह तक स्कूल-कालेजों के विद्यार्थियों ने उनसे लड़ कर

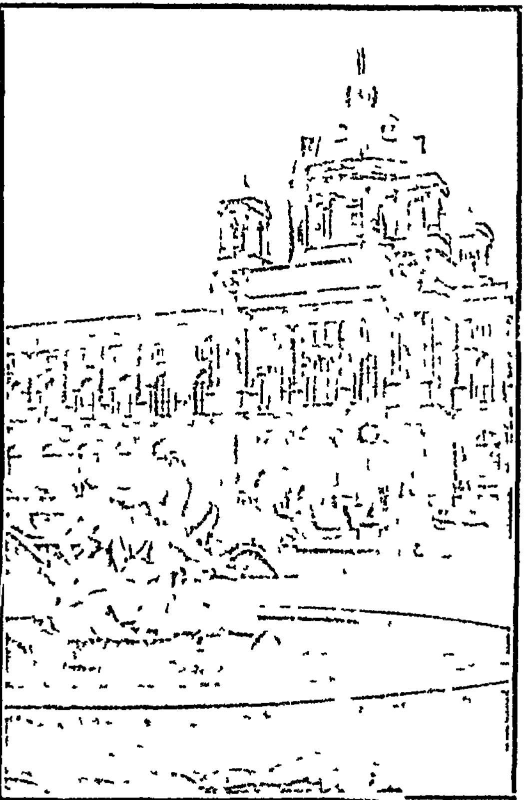
नगर की रक्षा की थी। यह स्तम्भ उसी का स्मारक-चिह्न है। नगर के पास के पहाड़ के ऊपर एफेल-टावर के अनुकरण पर एक छोटा सा लोहे का टावर इन लोगों ने खड़ा किया है। एक पहाड़ के ऊपर प्राचीन राजमहल और उसके अन्तर्गत गिर्जा आदि है। इस महल के बड़े हाल में संसार की सबसे पहली प्रदर्शिनी खोली गई थी। यह भी मालूम हुआ कि एक समय राजा की आज्ञा से यहाँ के एक दरवाज़े से नीचे गिराकर दो मन्त्रियों की जानें ली गई थीं। राजकुमारियों के हाथ के रेशम के फूल और कई एक चित्र यहाँ बड़ी हिफ़ाज़त से रक्खे हुए हैं। यहाँ का राजनैतिक क़ैदियों का जेलखाना बड़ी ही भयानक जगह है। उसमें २० फुट गहरा एक कुआँ है। कुछ दिन जेल में रहने के बाद राजनैतिक क़ैदी उसी कुएँ में डाल दिये जाते थे। खूब धुआँ भर देने के कारण घुट घुट कर उनका दम निकलता था। सन् १६०६ मे, क़ैदियों के हाथ का बना हुआ एक ताश का जोड़ा यहाँ रक्खा है। यहाँ का म्यूज़ियम और चित्रशाला इस शहर के लायक़ हैं। नगर में जगह जगह पर बहुत सी मूर्त्तियाँ भी स्थापित हैं। प्राग् नगर आठवीं सदी में बसाया गया था।

वियेना। प्राग् से रेल पर चढ़ कर आस्ट्रिया-राज्य की राजधानी वियेना को रवाना हुआ। इस मार्ग में दोनों किनारों पर अनेक सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देखने को मिले। एक स्टेशन के चारों ओर पहाड़ों की शोभा अत्यन्त गम्भीर और विचित्र देख पड़ी। उसके बाद एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर सुन्दर 'विला' अर्थात् विलास-भवन देख पड़ा। एक जगह देखा, दो पहाड़ों पर पुल बाँधकर रेल चलाई गई है। पुल के नीचे नदी बहती है। इसी तरह अनेक प्राकृतिक और कृत्रिम दृश्यों को देखते देखते सन्ध्या के समय वियेना में पहुँच

गया। सामान सब होटल में रखकर 'डान्यूब' देखने के लिए चला। नगर के भीतर एक वियेन (Wien) नाम की छोटी नदी और डान्यूब-नहर है। उक्त नदी के नामानुसार नगर का भी स्थानीय नाम है वियेन। असल डान्यूब को "ग्रोसेडोनाओ" (Grosse Donau) अर्थात् बड़ा डान्यूब कहते हैं। लड़कपन में भू-गोल मे पढ़ा था कि वियेना नगर डान्यूब-नदी के किनारे है। किन्तु यहाँ आकर देखा, डान्यूब नगर से बहुत दूर पर है। इस कारण उस दिन डान्यूब की सैर करने वहाँ तक नहीं जा सका। दूसरे दिन कलेवा करने के बाद कुक-कम्पनी के आफ़िस मे गया। वहाँ मुझे मेरे नाम की बहुत सी चिट्ठियाँ और अख़बार वग़ैरह मिले। वियेना नदी के किनारे पर से रेल पर चढ़ कर डान्यूब के किनारे पहुँचा। डान्यूब के किनारे की भारी रेती नाँघने पर एक पक्का घाट मिला। पुस्तक में पढ़ा था नील-डान्यूब, किन्तु यहाँ आने पर डान्यूब का जल बहुत ही उज्ज्वल देखा। यह बहुत ही एकान्त स्थान है। सामने नदी हाहाकार करती हुई बहती चली जा रही है। बहुत ही आनन्ददायक दृश्य है। डान्यूब के किनारे बैठ कर लन्दन के और भारत के पत्र, अख़बार, मासिकपत्र आदि पढ़े। फिर कुछ देर तक रेती पर टहलता रहा।

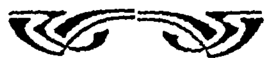
रोमन नगर विण्डेबोना (Vindebona) के पहले भी यहाँ आदमियों की बस्ती थी। उस समय की एक वृक्ष की शाखा (Stump) अभी तक मौजूद है। सन् १२७८ से १८०६ तक यह नगर पुराने जर्मन-साम्राज्य की राजधानी रहा और अब आस्ट्रिया-हंगेरी के सम्मिलित साम्राज्य की राजधानी है। इसके आसपास ३४ उपनगर हैं। उपनगरों सहित इस नगर की जन-संख्या चौदह लाख के लगभग है। नगर का भीतरी भाग ठीक बीच







नाट्य-शाला, वियेना—पृ० ५०५



में है। उसी में राजमहल, प्रतिष्ठित नगरनिवासियों के मकानात और सरकारी दफ़्र हैं। इस नगर के चारों ओर जो क़िलेबन्दी थी वह अब दो मील लम्बे और एक सौ पचास फुट चौड़े "बुलवार्ड" के रूप में होकर नगरनिवासियों का विहार-स्थान बन गई है। नगर के भीतरी भाग के रास्ते टेढ़े और तंग हैं; लेकिन गन्दे नहीं हैं। यहाँ बारहवीं शताब्दी का सेन्ट स्टिफ़ेन का गिर्जा है। इसकी चोटी ४५४ फुट ऊँची है। इसके भीतर संगमरमर के ३८ चबूतरे हैं। पहले सम्राट् लोग इसी गिर्जे मे गाड़े जाते थे। यहाँ का बड़ा घण्टा ५०० मन का होगा। युद्ध में जीती हुई तुर्कों की तोपें गलाकर यह घण्टा ढाला गया था। नये बाज़ार के एक गिर्जे में राज-परिवार के अनेक व्यक्तियों की लोथें सीसे के बने सन्दूक़ों में रक्खी हैं। इनमे सन् १६१९ तक की पुरानी लोथें हैं। इन लोथों मे रानी मेरिया थेरेसा (Maria Theresa), राजकुमारी मेरी लुइस (Marie Louise) और उनके पुत्र द्वितीय नेपोलियन के भी मृत-देह देख पड़े। नगर में सब मिला कर १० बड़े गिर्जे और एक यहूदियों का भजनमन्दिर है। सेन्ट-स्टिफ़ेन-गिर्जे के पास ही ३० बीघे ज़मीन पर बना हुआ एक नागरिक राजमहल (Hofburg) है। यहाँ की लाइब्रेरी में साढ़े चार लाख छपे हुए ग्रन्थ, बीस हज़ार हस्तलिपियाँ और तीन लाख एनग्रेविंग-चित्र हैं। महल के तोशेखाने में अनेक ऐतिहासिक बहुमूल्य चीज़ों और सिक्कों का संग्रह देखने की चीज़ है। इसके सिवा इस राजमहल में और भी अनेक देखने योग्य वस्तुयें हैं। यहाँ दो प्रधान म्यूज़ियम हैं। एक मे तरह तरह के शिल्प आदि और दूसरे मे अन्यान्य विविध सामग्रियाँ हैं। दोनों ही स्थानों में भारी संग्रह है। अनेक प्रकार की देशी और विदेशी कारीगरी की चीज़ों के संग्रह में वियेना अन्यान्य प्रधान

नगरों से कम नहीं है । पहले म्यूज़ियम में भारत की चूड़ी, खड़ाऊँ, हुक्का, गुड़गुड़ी तक रक्खी हुई है । पालिश की हुई लकड़ी पर चित्र और काच के ऊपर सुनहला काम यहाँ बहुत सुन्दर बनता है । भूतपूर्व सम्राट् जोजेफ़ का एक बहुमूल्य पात्र भी यहाँ रक्खा है । यह बहुमूल्य पत्थर का बना हुआ है और बत्तक़ के अण्डे के आकार के कई एक उज्ज्वल पत्थर के टुकड़े इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं । यह पात्र ४ हाथ के लगभग ऊँचा है । इसका घेरा ४$\frac{1}{2}$ हाथ का है । यहाँ का टर्की-भवन बड़ा मनोहर है । दूसरे म्यूज़ियम में और अनेक दर्शनीय चीज़ें हैं । भवन बहुत ही अच्छे ढंग से सजाया हुआ है । दीवारों में बड़ी बड़ी सुन्दर मूर्त्तियाँ शोभायमान हैं । बीच के हाल में चढ़ने की जगह पर केप्लर, न्यूटन, कुवेर आदि विद्वानों की, संगमरमर की, आठ मूर्त्तियाँ हैं । गुम्बद के भीतर की छत जिस सुन्दर चित्र से सुसज्जित है उसके इतना बड़ा चित्र पृथ्वी पर और कहीं नहीं है । अँगरेज़ लोगों ने स्वीकार किया है कि ("Hans Makarts' painted dome in the Natural history Museum of Vienna is the largest pictorial canvas in the world.") यहाँ सीपी के भीतर प्रस्तर-गठन (Silicated formation) के पचास साठ तरह के नमूने मौजूद हैं । जुदे जुदे समयों की चीज़ों के लिए जुदे जुदे कमरे बने हुए हैं । बुद्धदेव की मूर्त्ति तो यूरोप में सभी जगह है । इन महापुरुष का यूरोप में ऐसा ही आदर है कि वहाँ के साधारण से साधारण म्यूज़ियम में भी इनकी मूर्त्ति रक्खी हुई है । इसके सिवा भारत के दूल्हे का मौर, बाजे, गोल गञ्जीफ़ा, अर्घा-सम्पटी, गिलौरीदान आदि बहुत सी सामग्री इस म्यूज़ियम में रक्खी है । पेरू आदि कई देशों की प्राचीन ममी (Mummy), सबसे

पहले पृथ्वी-परिक्रमा करनेवाले कप्तान कुक के इकट्ठे किये हुए २६० नमूने, अनेक प्रकार की धातुओं की चीज़ें, देशी और विदेशी बहुत से पुराने सिक्के और पञ्चम चार्ल्स का दण्ड व मुकुट आदि बहुत से मूल्यवान् आभूषण (Regali) आदि इस म्यूज़ियम में देखने की चीज़ें हैं। दोनों म्यूज़ियमों के मकान सब बातों में ठीक एक से हैं। दोनों के बीच के आँगन में सुप्रसिद्ध वीराङ्गना रानी मेरिया थेरेसा की विशाल मूर्त्ति सहित भारी मनूमेन्ट है। वियेना की प्रसिद्ध चित्र-शाला का, संसार में, आठवाँ नम्बर है। यहाँ १५०० बहुमूल्य चित्र रक्खे हैं। उनमें रूबेन्स (Rubens), डुरर (Durer) और कई एक वेनिस के चित्रविद्याविशारद कारीगरों के हाथ के चित्र यहाँ जितने हैं उतने और कहीं नहीं हैं। इस चित्रशाला के अन्त-र्गत एक स्थायी प्रदर्शिनी खोली गई है। उसमें आधुनिक चित्र-कारों के हाथ के बने चित्रों का संग्रह है। इसके सिवा स्थानीय तीन बड़े आदमियों की अलग तीन चित्रशालायें भी हैं। वे भी बुरी नहीं हैं। एक बड़े आदमी की चित्रशाला में, ६ कमरों में, १५०० चित्रों का संग्रह है। वियेना का विश्वविद्यालय, ख़ास कर उसका चिकित्सा-शास्त्र-सम्बन्धी विभाग, बहुत प्रसिद्ध है। चिकित्सा-शास्त्रवाले विभागों में विद्याध्ययन करने के लिए बहुत दूर दूर से विद्यार्थी आते हैं। प्रधान अस्पताल में २,५०० रोगियों के रहने का प्रबन्ध है। उसमें ५० डाकृर और ४०० सेवा करनेवाली धायें हैं। अस्पताल में रहनेवाले रोगियों के टहलने के लिए हर एक खण्ड में एक सुन्दर बाग़ लगा हुआ है। वियेना का लड़के जनाने का अस्पताल (Obstetric Hospital) भी बुरा नहीं है। आस्ट्रिया में ब्याह के बारे में राज-कीय और धार्मिक व्यवस्था इतनी कड़ी है कि निम्नश्रेणी के स्त्री-पुरुषों के लिए ब्याह एक बहुत ही कठिन काम है। इसी कारण

अन्यान्य यूरोप के देशों की तरह यहाँ भी भले लोगों में व्यभिचार से सन्तान पैदा करना कोई भारी अपराध नहीं गिना जाता। इस कारण राजधानी में इस श्रेणी के एक बड़े अस्पताल की बड़ी ज़रूरत है। ग़रीब स्त्रियाँ व्यभिचार से गर्भिणी होती हैं तो सातवें महीने में विना किसी आपत्ति के वे अस्पताल में ले ली जाती हैं। अपने पति से गर्भ धारण करनेवाली स्त्रियों के सम्बन्ध में कुछ तहक़ीक़ात की जाती है। प्रसव के वाद दो महीने तक बच्चा माता के पास रहता है। उसके बाद सरकारी खर्च से देश के किसी स्थान में भेज दिया जाता है। अगर लड़का होता है तो किसान लोग बड़े आदर से उसे ले लेते हैं। क्योंकि अठारह वर्ष का हो जाने पर कान्स्क्रिप्शन-आईन के अनुसार वे अपने बड़े लड़के के बदले उसे फ़ौज के काम में दे सकते हैं। अस्पताल में रहने के समय व्यभिचारिणी गर्भिणी के नाम-धाम के बारे में कोई कुछ पूछताछ नहीं करता। ऐसा सुभीता होने से ही वियेना नगर में व्यभिचार से उत्पन्न सन्तानों की संख्या आधे के लगभग है। इस बात में आस्ट्रिया पृथ्वी के सभ्य देशों में निकृष्ट है और दरिद्र व मूर्ख आयर्लेंड उत्कृष्ट है। आस्ट्रिया के फ़ी हज़ार बच्चों में व्यभिचार से उत्पन्न बच्चों की औसत १४६ है। स्वीडेन और जर्मनी में ऐसे बच्चों की औसत, हर एक हज़ार में, १०० से १४० तक है। फ़्रान्स और स्काट्लेंड में ८२, इटली में ७४, इँगलेंड में ४८, हालेंड में ३२, रूस में २८ और आयर्लेंड में २६ की औसत है। यूरोप के अन्यान्य देशों की ख़बर मालूम नहीं। वाइल्ड साहब ने अपनी पुस्तक में आस्ट्रिया के बारे में लिखा है—"The Austrian State, whose political web extends not only into the paths of literature and science, but sends its stretching

fibres into every domestic circle in the land, has an object in countenancing illegitimacy—it is that of checking over-population, as those who are informed upon the subject of population well know it has the power to do, by decreasing the number of births and increasing the infantile mortality"—Wilde.

संक्रामक रोगों को रोकने के लिए यहाँ की छावनी और शहर में ख़ास तौर पर कड़ा क़ानून जारी है। लन्दन आदि शहरों की सड़कों पर वेश्याओं का जैसा उपद्रव है वैसा वियेना में नहीं देखा जाता। इस बात के लिए अँगरेज़ भी वियेना की प्रशंसा करते हैं। रात को एक निर्दिष्ट समय के बाद जिन पर सन्देह होता है उन स्त्रियों को सड़क पर टहलते देख कर पुलिस गिरफ़ार कर लेती है। जाँच करने से अगर उसके कोई रोग मालूम होता है तो वह अस्पताल भेज दी जाती है। इस सम्बन्ध में वाइल्ड साहब लिखते हैं कि पाप को प्रकाश्यरूप से दिखलाना गार्हस्थ्य पवित्रता का चिह्न है। इसका प्रमाण एक ओर रोम और वियेना और दूसरी ओर डबलिन है।—"Notwithstanding the apparent moral condition of the city after nightfall, which must at once strike a foreigner, I am much inclined to think that the public exhibition of vice is often a test of private morality; as instances pro and con I might adduce the cities of Rome and Vienna on the one hand, and Dublin on the other.") विख्यात यात्री टेलर साहब भी यही बात कहते हैं। उनकी राय में वियेना की विवाहिता स्त्रियाँ सतीत्व के बारे में बहुत ही बदनाम हैं।

वियेना में सब मिला कर ६ पार्क हैं। उनमें से प्रेटर (Prater)

नामक विहार-बाग़ ६,००० बीघे में है। उसके भीतर से डान्यूब की एक नहर निकली है। अँगरेज़ लोग इसे वियेना का हाइड-पार्क कहते हैं। समाज की सर्वोच्च श्रेणी से लेकर नीच श्रेणी तक के आदमी इस पार्क में जमा होते हैं। सन् १८७३ में, इस नगर में जो महाप्रदर्शिनी हुई थी उसके अन्तर्गत एक भवन यहाँ स्थायी रूप से स्थापित कर दिया गया है। इसका नाम है रोटण्डे (Rotunde) अर्थात् गोलघर। इसमें 'दक्षिण-आफ्रिका मे असभ्य जातियों का जीवन' प्रत्यक्ष दिखलाया गया है। लोगों की मिट्टी की मूर्त्तियों सहित एक छोटा सा गाँव बना हुआ है। उसमें राजवैद्य का झोपड़ा, नाव, मछली पकड़ने का जाल, अलावु-देव की पूजा, भारी भारी हाथी के दाँत, मनुष्य की खोपड़ी समेत वृक्ष, पहाड़ के ऊपर हाटेन्टाट (Hottentot) लोगों की चित्र बनाने की व्यवस्था, फंदा आदि बहुत सी चीज़ें देखने योग्य हैं। इस घर का घेरा ६६० हाथ के लगभग है। इस घर के ऊँचे टावर पर चढ़ने के लिए लिफ़्ट (Lift) नामक कल का प्रबन्ध है। ऊपर एक दूरबीन हिफ़ाज़त के साथ रक्खी हुई है। उससे सारे नगर का दृश्य बहुत अच्छी तरह दिखलाई पड़ता है। स्टाडपार्क (Stadtpark) के भीतर एक घर में बड़े बड़े थर्मामेटर, बैरोमेटर आदि अनेक यन्त्र रक्खे हुए हैं। यहाँ ऐसा प्रबन्ध है कि जिसमें साधारण लोग पृथ्वी के प्रधान प्रधान स्थानों का समय और दूरी तथा आकाश-तत्त्व (Meteorology) सम्बन्धी बहुत से समाचारों को सहज में जान सकें। और और पार्क भी खूब सजे हुए हैं। एक पार्क में २० हाथ के लगभग ऊँची और ४–५ हाथ चौड़ी दरख़्तों की सुन्दर दीवार एक नई चीज़ है। नगर के बाहर सम्राट् का शोनब्रन (Schonbrunn) नामक ग्रीष्म-निवास, उससे मिला हुआ बाग़, झरना, चिड़ियाख़ाना

आदि देखने के लिए हर रविवार को बहुत से लोग जमा होते हैं।

वियेना के अन्यान्य दृश्य आदि साम्राज्य की राजधानी के योग्य ही हैं। वियेना की आब-हवा और स्वास्थ्य अच्छा है। साल मे एक हज़ार मनुष्यों में २३।२४ मौतें होती हैं। नगर की म्यूनिसिपलिटी की सालाना आमदनी पन्द्रह लाख पौण्ड है। वियेना के निवासी खुश, आमोदप्रिय, सरल और हेलमेल पैदा कर लेनेवाले जान पड़ते हैं। नगर में गन्दगी और सड़कों पर शराबी बिल्कुल नहीं देख पड़ते। इसके लिए अँगरेज-यात्री भी इस नगर की खूब प्रशंसा करते हैं। यहाँ निम्नश्रेणी के लोग मज़े मे हैं। यद्यपि छोटे दर्जे के आदमियों की आमदनी उतनी अधिक नहीं है, तो भी लन्दन, पेरिस और न्यूयार्क के समान दारिद्र्य की भयानक मूर्त्ति यहाँ नहीं देख पड़ती। ग़रीबों के घर भी खूब साफ़-सुथरे हैं। एक फ्रेंच लेखक लिखता है "Vienna is bounded on the North and South by love, on the East by music, and on the West by the dance." सचमुच गाने-बजाने नाचने आदि के लिए वियेना प्रसिद्ध है। स्थानीय सुप्रतिष्ठित नृत्य-वाद्य-रचयिता स्ट्राम (Strauss की रचनायें (Dancing composition) सभ्य-समाज में विशेष रूप से परिचित और आदर को प्राप्त हैं। नगरनिवासी लोग सम्राट् पर विशेष श्रद्धा-भक्ति रखते हैं। वर्त्तमान सम्राट् फ़ान्सिस जोजेफ़ (Francis Joseph) और उनकी रानी को वियेना-वासी बहुत ही प्यार करते हैं। राजमुकुट धारण करनेवाली महिलाओं में यह रानी अत्यन्त भाग्यहीन हैं। इन्हें अब तक बहुत से आत्मीय-स्वजनों की अकालमृत्यु का शोक सहना पड़ा है। पुत्र-शोक भी यह उठा चुकी हैं। वियेना की जन-संख्या बीस लाख से अधिक है।

हंगेरी-यात्रा । आठ दिन से अधिक वियेना में रह कर एक दिन सवेरे डान्यूब-स्टीमर पर हंगेरी (Hungary) की राजधानी बुडा-पेस्ट (Budapesth) नगर को रवाना हुआ । डान्यूब एक बहुत भारी नदी है । यूरोप की अधिकांश नदियाँ दुबली-पतली हैं । पर डोनाओ (डान्यूब) वैसी नहीं है । इसमे ४०० छोटी बड़ी नदियाँ आकर मिली हैं । इसके दोनों किनारों का दृश्य कई जगह पर बंगाले की पद्मा नदी के समान है । किसी किसी जगह किसान लोग नहाते भी देख पड़े । हंगेरी की सीमा में प्रवेश करने पर किसानों की पोशाक बिल्कुल बदली हुई देखने को मिलती है । सादा ढीला पाय-जामा, कुर्ता, उसके ऊपर किसी प्रकार का कमरबन्द और साधा-रण टोपी, यही यहाँ के किसानों की पोशाक है । यूरोप मे कोई काम की चीज़ बेकार नहीं पड़ी रहती । डान्यूब के दोनों तटों पर प्रवाह-शक्ति से बहुत सो मिलें चलती हैं । रास्ते में अनेक सुन्दर बस्तियाँ देख पड़ीं । उनमे प्रेसबर्ग (Presburg) शहर प्रधान है । सन् १७४१ में, प्रसिद्ध रानी मेरिया-थेरेसा घोर विपत्ति में पड़ कर छोटी सी बच्ची को गोद में लिये हंगेरी प्रजा से सहायता माँगने को जिस कैसल में उपस्थित हुई थीं वह प्राचीन इमारत, और हंगेरी की राजधानी होने के समय जिस गिर्जे में राजों का अभिषेक होता था वह गिर्जा, तथा लाट-पादरी का महल नदी-तट से अच्छी तरह देख पड़ा । कहीं पर हरे-भरे खेतों से सुशोभित पहाड़ों की चोटियों पर प्राचीन क़िले और कैसल, कहीं गाँव, नगर, पुराने महल आदि के भग्नावशेष और कहीं हज़ार वर्ष से भी अधिक पुराने भारी गिर्जे आदि देखते देखते एक पहर रात गये मैं बुडा नगर में पहुँचा । जहाज़ पर अनेक जाति के यात्री लोग इतना कोलाहल मचाते थे कि दिन-रात डेक के ही ऊपर रहना पड़ता था । बर्मा के एक

कमिश्नर अव तक मेरे पास ही
सन्ध्या के समय उनसे वातचीत
की यही धारणा थी कि जहा
आदमी नहीं है और इसी से अ
के वाद कुस्तुन्तुनिया देख कर
से इधर जा रहे थे । इन्होंने लन
वुडा मे किस तरह पासपोर्ट नि
जहाज़ से उतर गये ।

वुडा-पेस्ट । नदी के पश्चिम
है । दोनों के मिलने से वुडा-
संख्या ९ लाख के लगभग है ।
(Ofen) । पहले इस जगह एक
था । डान्यूव नदी के दोनों तटो
यूरोप का एक परम सुन्दर दृश्य
झूलना-पुल (Suspension bri
पौण्ड लगे हैं । एक अँगरेज़ इ
वना है । इसका काम सन् १
में पूरा हुआ । वुडा नगर छो
पीछे अंगूर के खेतों से शोभित
भूमि पर वसा है । उसकी सुन्द

उसमें मनोहर झील और अनेक प्रकार के वृक्ष हैं। दूसरा पार्क नदी के भीतर एक टापू में है। यह अँगरेज़ी पार्क के ढंग का है। इसमें कई एक विलास-भवन (विला) और हम्माम भी हैं। नगर में अनेक गिर्जे और यहूदियों का एक भारी भजन-मन्दिर (सिनेगाग) है। पहले कभी मैं यहूदियों के भजन-मन्दिर में भीतर नहीं गया था। इसी से यहाँ एक दिन 'सिनेगाग' में गया। उपासना करनेवाले बहुत थोड़े थे। सब सिर पर टोपी दिये बैठे थे। वे आपस में संसार के कामकाज की बातें कर रहे थे। पुरोहित बेचारा किसी तरह अपना काम पूरा कर रहा था। नदीपार होकर पेस्ट में प्रवेश करनेवाले को एक 'टानेल' के भीतर होकर जाना पड़ता है। पेस्ट के अधिकांश मकान एक ही खण्ड के हैं। यहाँ का क़िला एक पहाड़ के ऊपर है। क़िले पर से इस पार और उस पार का दृश्य बहुत ही सुन्दर मालूम पड़ता है। दुर्गरक्षक सिपाहियों की जैसी पोशाक है वैसा ही चेहरा है। देखकर मुझे तो उन पर कुछ श्रद्धा नहीं हुई। पेरिस जैसे फ्रान्स का सर्वस्व है वैसे ही बुडा-पेस्ट हंगेरी का सर्वस्व है। देश का सारा बैपार यहीं होता है। यहाँ विश्वविद्यालय, उच्च श्रेणी का कालेज, वाणिज्य-विद्यालय, ५ नार्मल स्कूल, नक़शा सीखने का स्कूल (School of design), संगीत-विद्यालय, मानमन्दिर, धातवीय स्नानागार (Mineral Baths), विज्ञान-शिक्षालय, व्यावहारिक शिल्पविद्यालय, (Polytechnic School), म्यूज़ियम और चित्रशाला भी है। विश्वविद्यालय का कार्यविवरण मागियर (Magyar) भाषा में प्रकाशित होता है। स्नानागारों में से दो तुर्कों के हैं। म्यूज़ियम के भारी संग्रह में हज़ारों प्राचीन 'दलीलें' रक्खी हैं। उनमें मार्टिन लूथर का वसीयतनामा (Will) भी है। अनेक अनुसन्धान के बाद म्यूज़ियम के डाइरेक्टर

महाशय के पास जाने पर उन्होंने विशेष आग्रह के साथ वह दान-पत्र मुझे दिखाया और रजिस्टर में मेरे हस्ताक्षर करा लिये। नगर की शोभा के लिए अनेक मूर्तियाँ स्थापित हैं। उनमें पिटोफ़ी (Petofi) की मूर्ति बहुत साफ़ है। स्वर्ग की ओर दृष्टि किये हाथ उठाकर गंभीर भाव से वे मानो ईश्वर के नाम का प्रचार कर रहे हैं। देखने से हृदय में शक्ति पैदा होती है। सन् १२४१ में तातार लोगों ने इस नगर को बड़ी हानि पहुँचाई थी। उसके बाद सुल्तान सुलेमान ने सन् १५४१ में इस नगर पर अधिकार कर लिया। तब से सन् १६८६ तक एक तुर्क पाशा इसका शासन करता रहा। मुसलमानों को भगाकर जब फिर क्रिश्चियनों ने इस पर कब्ज़ा कर लिया तो उन्होंने मसजिदें तोड़कर गिर्जे बना लिये। इनके चिह्न इस समय भी देखने को मिलते हैं। नगर के कुछ निवासी स्लोवक (Slovak) जाति के हैं। यहाँ भाषा भी तीन तरह की बोली जाती है। यहाँ के अधिवासी साधारणतः कोमल स्वभाववाले, शौक़ीन, आडम्बरप्रिय और विदेशियों पर श्रद्धा रखनेवाले जान पड़ते हैं। बहुतों के हाथों में तावीज़ बँधे देख पड़े। यहाँ से एक प्रकार से एशियाई भाव की खिचड़ी शुरू हो गई है। एक यात्री ने लिखा है—

"As regards scenery, architecture, and ethnographical features Budapesth is a city in which extreme types do not only occur, but are so obvious and striking as to attract the notice of the most superficial observer"

यहाँ के बाज़ारों में जहाँ देखिए शोर-गुल मच रहा है। तरबूज़ और बैंगन भी यहाँ बिकते हैं। बैंगन तो वियेना में भी देख पड़े थे। सड़कों पर म्यूनीसिपलिटी की ओर से छिड़काव नहीं होता।

दूकानदार लोग खुद अपनी अपनी दूकान के सामने छिड़काव कर लेते हैं।

आकुइनकुम (Aquincum)। एक दिन रेल पर चढ़कर भू-गर्भ से निकाले गये प्राचीन रोमन नगर आकुइनकुम देखने गया। स्टेशन पर उतर कर पता लगाते लगाते कुछ दूर पर जाकर देखा, खेत में बैठा हुआ एक किसान विश्राम कर रहा है। बड़ी मुश्किल से, इशारों से, वह मेरा अभिप्राय समझा। उससे पता पाकर मैं अभीष्ट स्थान पर पहुँच गया। वहाँ जाकर देखा, ज़मीन के नीचे अभी नगर का बहुत सा अंश दबा पड़ा है। उस समय भी 'सफ़ाई' का काम जारी था। पम्पियाई के ऐसे मकानात निकल रहे थे। स्टेशन में लौट कर आया तो वहाँ एक भी आदमी न था। गाड़ी आने-जाने के समय भर स्टेशन के कर्मचारी वहाँ रहते हैं; उसके बाद कार्टर में चले जाते हैं। पेस्ट में, लौटकर, आते समय बहुत प्यास लगी। राह में एक बुढ़िया से तरबूज़ मोल लिया और वहीं बैठ कर खाया। तरबूज़ बहुत ही मीठा था।

आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य की साधारण अवस्था। साम्राज्य की जनसंख्या चार करोड़ के ऊपर है। उनमें एक करोड़ जर्मन-भाषा-भाषी और दो करोड़ स्लैव (Slavs) जाति के हैं। इस साम्राज्य में स्लैव-जाति ही धीरे धीरे प्रबल होती चली जाती है। इनका प्रधान गुण यही है कि ये लोग जाति-हित के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़ देना खूब जानते हैं और उसके लिए सदा प्रस्तुत रहते हैं। आस्ट्रिया के प्रतिष्ठित (Nobles) लोग इस समय भी मध्य-युग की अवस्था मे पड़े हुए हैं; उन्हें बीसवीं शताब्दी की जानकारी से उतना सरोकार नहीं है। इनमें अनेक वीर पुरुष पाये जाते हैं; किन्तु आत्माभिमान ने उनको मिट्टी कर रक्खा है। इस समय आस्ट्रिया-प्रदेश में ३००

के लगभग प्रतिष्ठित परिवार बसते हैं। प्रिन्स लिथ्टेनस्टिन, जिनकी वियेना की चित्रशाला प्रसिद्ध है, उनके केवल बोहेमिया प्रदेश के इलाक़े मे ऐसे १,१०० नौकर हैं जो सिर्फ़ शिकार के पशु-पक्षियों और जङ्गलों की हिफ़ाज़त करते हैं। अभिमानी होने पर भी इन लोगों में एक बड़ा गुण यह है कि लोभ में न पड़कर, देश के मङ्गल के लिए, बहुत सी पूँजी लगाकर, इन लोगों ने बहुत से कल-कारख़ाने खोल रक्खे हैं। इनमे कुछ हमारे देश के ऐसे 'बड़े आदमी' भी हैं जो कोई उद्यम नहीं करते और अपव्यय करने में ज़रा भी नहीं हिचकते। ये लोग शीघ्र ही ग़रीब होकर अपना धन सबको बाँट देते, और उससे निस्सन्देह परोपकार करते हैं। जैसा कवि पोप ने कहा है—

> "Wealth in the gross is death, but life diffused,
> As poison heals in just proportion used;
> In heaps like ambergris, a stink it lies,
> But well dispersed is incense to the skies"—Pope

प्रसिद्ध यात्री ह्वाइटमैन साहब ने इन लोगों को "An endless ocean of stupidity" बतलाया है। आस्ट्रिया का मध्यवित्त समाधि प्रशंसा के योग्य है। ये लोग विदेशियों से बहुत ही अच्छा व्यवहार करते हैं। ये न जुआ खेलते हैं और न शराब पीते हैं। पोली बाबूगीरी इनमे बिल्कुल नहीं देख पड़ती। गृहस्थों के लड़के-लड़की गाने-बजाने में ऐसे होशियार हैं कि गानेबजानेवालों को हरा दें। यहाँ मामूली दूकानदार से भी हेलमेल करने में भले आदमी कुछ संकोच नहीं करते। क्योंकि यहाँ किसी श्रेणी के आदमी में गँवारपन नहीं है। आस्ट्रिया की औरतें समाज का केन्द्र हैं। जर्मनी में औरतें केवल गृहस्थी के कामकाज में ही लगी रहती

हैं; पर यहाँ वह बात नहीं है। यहाँ की स्त्रियाँ सब कामों में स्वामी की सहायता करती हैं। गृहस्थी के कामकाज में भी उनको कोई हरा नहीं सकता। इन्हीं सब कारणों से बहुत लोगों का कहना है कि इस देश का गार्हस्थ्य जीवन सुखपरिपूर्ण है। अँगरेज़ यात्री लोग यहाँ की निम्नश्रेणी की महिलाओं को भी बहुत प्रतिष्ठा करते हैं। हंगेरी की आमदनी और ख़र्च और शासन-व्यवस्था आदि बिल्कुल अलग है। इस देश का राजनैतिक इतिहास बहुत कुछ इँगलेंड के इतिहास से मिलता-जुलता है। इस देश में ३१० लाख से अधिक प्रोटेस्टेन्ट क्रिस्तान हैं। ये ही लोग राज्य का बल और भरोसा हैं। देश की नैतिक और आर्थिक उन्नति इन्हीं पर निर्भर है। मागियर जाति, नवीं शताब्दी के शेषभाग में, एशियाखण्ड से यूरोप में जाकर बसी थी। ये लोग लाप (Lapps) और फ़िन् (Finns) लोगों की तरह मंगोलियन जाति के हैं। भाषा इनकी फ़िन् लोगों की भाषा से मिलती हुई है। प्रकृति में ये लोग आयरिश लोगों से मेल खाते हैं—"Impetuous, impulsive and imaginative, patriotic and courageous, vain of their country, and passing from one extreme of joyous elation to the other of sadness and depression." बहुत लोग कहते हैं कि हंगेरियन लोग आमोदप्रिय और भविष्य पर ध्यान न देनेवाले हैं। किन्तु पचीस बरसों में उन्हों ने रेल्वे निकाली हैं, मिलें खडी कर ली हैं और वाणिज्य, साहित्य, विज्ञान, सङ्गीत, चित्रकला आदि विषयों में एक अद्भुत उन्नति करके सारे यूरोप की दृष्टि अपनी ओर आकृष्ट करली है। इससे तो वे बड़े ही होशियार जान पड़ते हैं। हंगेरियन प्रतिष्ठित-समाज (Nobility) अत्यन्त उदार और महामनस्वी है। सन् १८४८ में इन लोगों ने आप ही अपनी कुल-परम्परा की वंशमर्यादा और स्वत्व छोड़ दिये और साधारण

प्रजा के साथ मिल कर देश की राजनैतिक स्वाधीनता के लिए उद्योग करने लगे। इस महान् स्वार्थत्याग से उन लोगों की कोई हानि नहीं हुई। उनकी मान-मर्यादा पहले से दस-गुनी बढ़ गई और वे जिस ऊँचे पद पर थे उसी पर बने हुए हैं। इस देश के मैग्ना-चार्टा (Magnacharta) का नाम है "गोल्डेन-बुल" (Golden Bull)। आश्चर्य की बात तो यह है कि "मैग्नाचार्टा" और गोल्डेन-बुल" दोनों, एक ही समय में एक ही ढंग से बलपूर्वक प्रजा ने राजा से लिखवा लिये। इस साम्राज्य में रोमनकैथलिक धर्म का बड़ा ज़ोर है। केवल हंगेरी में ही इस सम्प्रदाय की ५० लाख बीघे ज़मीन की ज़मींदारी है। सारे साम्राज्य में १०,००० 'मांक' (Monk) और १२००० 'नन्' (Nun) हैं। हंगेरी के लाट पादरी की सालाना आमदनी एक लाख पौण्ड है। वर्त्तमान लाट-पादरी के पिता तीस लाख पौण्ड के लगभग सम्पत्ति छोड़ कर मरे थे। साम्राज्य के जर्मन अधिवासी उक्त सम्प्रदाय के विरोधी हैं। इसी से पादरी लोग भरसक उस देश से जर्मन-भाषा को दूर करने की कोशिश करते रहते हैं।

शान्ति के समय साम्राज्य मे साढे तीन लाख सेना रहती है, किन्तु युद्ध के समय १८ लाख तक जमा हो सकती है। २,००० से ऊपर तोपें हैं। जंगी जहाज़ १४० हैं। उनमे १४ लौहयान, १२ टारपीडो-जहाज़ और ६२ टारपीडो-डोंगियाँ हैं। मेरी यात्रा के साल साम्राज्य की आमदनी १३ करोड़ पौण्ड से ऊपर हुई थी। ख़र्च की भी तादाद इतने ही के लगभग थी। ऋण साढ़े इक्कीस करोड़ पौण्ड था। हंगेरी का हिसाब इससे अलग है। हंगेरी की ९ करोड़ पौण्ड के लगभग आमदनी और २२½ करोड़ पौण्ड के ऊपर ऋण है। यहाँ के चाँदी के सिक्के का नाम है फ्लोरिन या गुल्डेन (Florin or

gulden) । उनकी क़ीमत है एक शिलिंग और आठ पेनी । पैसे का नाम है क्राज़िया (Krenzer) । यहाँ भी दाशमिक-प्रथा प्रचलित है। चाँदी-सोना कम देख पड़ता है, केवल नोट ही अधिकतर चलते हैं । नोटों की संख्या कम करके चाँदी का सिक्का अधिक चलाने की चेष्टा हो रही है ।

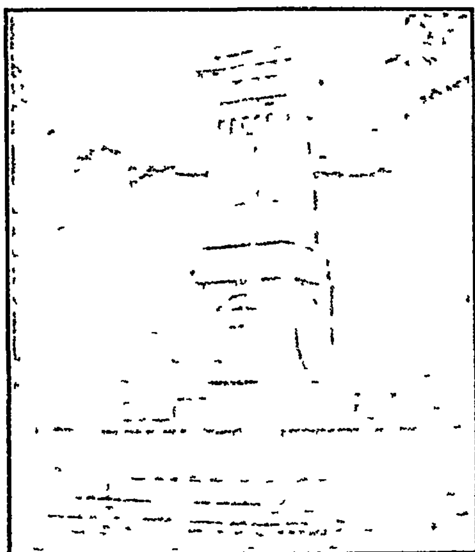
सर्विया ।

बुडा से रेल पर चढ़कर सर्विया (Servia) की यात्रा की। जितना ही आगे बढ़ता जाता था उतना ही यूरोपियन सभ्यता की कमी और एशियाई भाव की बढ़ती देख पड़ती थी। पाश्चात्य पोशाक, रहनसहन, चालचलन की जगह एशियाई वेशभूषा और रीति-रस्म देख पड़ने लगे। बैल, भेंड़ा, बकरी, यहाँ तक कि मिट्टी तक बदल गई! रेल की लाइन के दोनों तरफ़ बहुत सी तमाखू की खेती देख पड़ी।

बेलग्रेड् (Bielgorod)। इसका स्थानीय उच्चारण है "बियेलगो-रोड" अर्थात् श्वेत-नगर। रात को रेल से उतर कर होटल जाने के रास्ते मे मुझे स्पष्ट मालूम पड़ने लगा कि यूरोप से विदा हो रहा हूँ। सबेरे उठकर "शानकर-कम्पनी" के आफ़िस में गया। लन्दन से चलते समय संकल्प था कि बुडा-पेस्ट से लौट आऊँगा। किन्तु वियेना में जब था तब एक दिन पार्क में सन्ध्या के समय बैठे बैठे मैंने सोचा कि इतनी दूर आकर ग्रीस और टर्की को देखे बिना चले जाना ठीक नहीं, यात्रा करने की लालसा अत्यन्त प्रबल होने पर भी तन्दुरुस्ती ठीक न थी। परन्तु विधाता के सहारे उसी रात को लन्दन के बैंक को कुछ रुपया बेलग्रेड में 'शानकर कम्पनी' के पते पर भेजने के लिए लिखकर मैंने ग्रीस और टर्की देखने का इरादा पक्का कर लिया। इस कम्पनी का नाम

भी पहले मुझे नहीं मालूम था । बेलग्रेड में कुक-कम्पनी का कोई प्रबन्ध न होने के कारण पता लगाने से मुझे इस कम्पनी का परिचय प्राप्त हुआ था । बेलग्रेड में जब मैं आया तो 'शानकर कम्पनी' के दफ़्तर में रुपये आने-न-आने का समाचार पूछने गया। मालूम हुआ कि इस सम्बन्ध का कोई पत्र या रुपया अभी तक इस कम्पनी में नहीं आया । यहाँ से नगर की सैर करने के लिए चला । नगर छोटा है; ५५,००० के लगभग लोग बसते हैं । यह देश ४०० बरस से भी अधिक समय तक टर्की के अधीन रह चुका है । इसी से यहाँ कुछ कुछ मुसलमानी भाव अब तक देख पड़ता है । सन्धि-पत्र में मसजिदों को तोड़ने का निषेध है; इस कारण दो मसजिदें अभी तक बनी हुई हैं । एक में स्थानीय मुसलमान लोग उपासना करते हैं और दूसरी में गैस का कारख़ाना खुला है । सड़कों पर गैस की रोशनी का प्रबन्ध नहीं हुआ है । दूर दूर पर किरोसिनतेल की एक एक लालटेन टिमटिमाया करती है । राजमहल के लिए यह गैस का कारख़ाना खुला है । बाज़ार में जाकर देखा, हम लोगों के देहातों की तरह हाट लगी हुई है । ज़मीन में चटाइयों के ऊपर ढेर के ढेर आलू, प्याज़, परवल आदि रक्खे हैं; दूकानदार लोग बेंच रहे हैं। आस-पास के देहाती निम्नश्रेणी के बहुत से औरत-मर्द मामूली कपड़े पहने नंगे पैरों सौदा ख़रीदने आये हैं । कुछ लोग काबुलियों के ऐसे कपड़े पहने थे; उनके पैरों में बस्किन (Buskin) जूते थे । रास्ते में भद्रमहिलायें नंगे पैरों में मख़मली पतले स्लीपर पहने सैर करने निकली हैं । उनके सिर पर तुर्की टोपी और उसके ऊपर जूड़ा एक नया ही दृश्य था । जूड़ों में रुपयों की मालायें गुथी हुई थीं । यहाँ मिसरी और घी की बड़ी खपत है । हमारे देश की ऐसी बैलगाड़ियाँ और टट्टू यहाँ बहुत हैं । कनेर के

सर्विया—एक सड़क—पृ० ५१६



प्रिंसमाइकेल का स्मारक-स्तम्भ—पृ० ५१७



बलगेरिया का एक दृश्य—पृ० ५२०

सोफिया का गिर्जा—पृ० ५२१

फूल का पेड़, यूरोप में, सबसे पहले यहीं देख पड़ा। फूल खूब बड़े बड़े थे। वेलग्रेड् नगर डेनाओ और सावा (Sava) नदी के सङ्गम पर बसा है। यहाँ का क़िला प्राचीन और एक छोटे से पहाड़ पर बना हुआ है। वहाँ के 'प्रमानड' पर से दोनों नदियाँ, उनका संगम, और दूसरे किनारे पर बसे हुए आस्ट्रिया के अन्तर्गत सेमलिन (Semlin) नगर का दृश्य अत्यन्त सुन्दर रूप से देख पड़ता है। सेमलिन का स्थानीय नाम है जिमोनी (Zimony)। अब से पचास-साठ वर्ष पहले यूरोपियन यात्रियों को, यहाँ पहुँचने पर, विशेष सावधानता के साथ, ख़ास प्रबन्ध करके नदी उतरने के बाद तुर्क-साम्राज्य में प्रवेश करने का सौभाग्य प्राप्त होता था। इस नगर में प्लेग (Plague) के भय से कड़ी जाँच का कड़ा प्रबन्ध था। सेमलिन में पहुँच कर यात्री लोग जब यूरोप से विदा होते हुए नदी-तट पर उपस्थित होते थे तब, उस समय, वह जानबाज़ी की यात्रा समझी जाती थी। इतने निकटवर्ती सेमलिन और वेलग्रेड इन दोनों नगरों में भी जाना-आना अत्यन्त कठिन काम था। क्योंकि ऐसा करना तत्का-लीन नियम के विरुद्ध था। जो कर्मचारी और मल्लाह खेवा पार करने का काम करते थे उनसे सेमलिन के लोग कोसों दूर रहना चाहते थे। उनके लिए नगर में आने की मनाही थी। एक अँगरेज़ यात्री ने एशिया के प्रवेश-द्वार वेलग्रेड् की तत्कालीन अवस्था और पाशा वग़ैरह का जो वर्णन किया उसे पढ़ने से मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान प्राप्त होता है। स्थानीय टोपजिडिरा (Topjidere) पार्क में प्रिन्स माइकेल (Prince Michael) का स्मारक-स्तम्भ है। सन् १८६८ की १० वीं जून को यहीं पर उनकी हत्या की गई थी। 'गर्म' और 'मोहल्ला' शब्द यहाँ भी उसी अर्थ में प्रचलित हैं। होटल में कई दिन परवल भी खूब खाये। जैसा छोटा नगर है वैसे ही

म्यूज़ियम आदि भी हैं। वल्कि कालेज वग़ैरह की संख्या नगर के देखते अधिक ही है। यहाँ कुछ अधिक एक लाख आदमी रहते हैं।

सर्विया-राज्य की साधारण अवस्था। राज्य बहुत ही छोटा—केवल १८७६० वर्गमील का—हमारे देश के ८।१० ज़िलों के वरावर—है। तीस लाख के लगभग आवादी होगी। यूरोप के अनेक देशों की अपेक्षा यहाँ की जन-संख्या शीघ्रता के साथ बढ़ती जाती है। इस देश का जल-वायु सर्दियों में जैसा विषम रहता है वैसा ही या उससे भी अधिक बुरा गर्मियों में हो जाता है। सन् १८८२ से यहाँ पार्लियामेन्ट स्थापित हुई है। उसको स्थानीय भाषा में "स्कुपूश्चिना" (Skupstchina) कहते हैं। प्रजा के चुने हुए १६० सभासद सब काम करते हैं। सन् १९१२ में कुछ अधिक ४८ लाख पौण्ड राज-कर वसूल हुआ था और २½ करोड़ पौण्ड के ऊपर राज्य पर ऋण था। शान्ति के समय १८,००० और युद्ध के समय एक लाख तक सेना का प्रवन्ध है। विशेष प्रयोजन पड़ने पर दो लाख तक जमा की जा सकती है। सन् १३८९ से बरावर टर्की की अधीनता में रहने के उपरान्त, रूस-टर्की-युद्ध होने पर, सन् १८७८ में, रूस की कृपा से इस राज्य ने स्वाधीनता पाई है। वर्त्तमान राजा पीटर को, सन् १९०३ की १५ वीं अप्रैल को, प्रजा ने अपना राजा स्वीकार किया था। इनके पूर्ववर्त्ती राजा की माता नेटालिया (Queen Natalie) अद्वितीय सुन्दरी थीं। एक अँगरेज़ यात्री ने उनको देखा और देख कर वह मुग्ध हो गया था। वह यात्री लिखता है—"The King's appearance surprised me, that of his mother overwhelmed me. I had expected great beauty, but not such transcendent beauty as this. It is a beauty which no pencil has

been able to produce, and which no pen could ever hope to describe. She appeared most statuesquely, divine; who would not risk everything to gratify, her lightest whim?" "अर्थात् राजा को देख कर मैं चकित हो गया; किन्तु उनकी माता का चेहरा देख कर तो मैं सन्नाटे में ही आगया। यह अवश्य है कि मैं एक विशेष प्रकार का सौन्दर्य देखने की आशा से गया था; लेकिन जैसा स्वर्गीय सौन्दर्य देख पड़ा उसकी तो पहले मैं कल्पना भी नहीं कर पाया था। उस सौन्दर्य को कोई चित्रकार अङ्कित करके दिखा नहीं सकता, किसी की लेखनी उसका वर्णन नहीं कर सकती। जान पड़ता था, जैसे कोई स्वर्गीय चित्र सामने उपस्थित है। उन्हें यथाशक्ति प्रसन्न करने के लिए कोई क्या नहीं कर सकता?"

नेटालिया के पुत्र अलेक्ज़ंडर और उनकी रानी सन् १९०३ में विद्रोहियों के हाथ से मरे।

इस देश के चाँदी के सिक्के का नाम है दीनार और क़ीमत में वह फ़ान्स के फ़्रेंक के बराबर है। परन्तु यह देश 'लैटिन यूनियन' के अधीन नहीं है। पैसे को पारा कहते हैं। १०० पारा का एक दीनार भुनता है। यहाँ भी दाशमिक-प्रथा प्रचलित है।

बलगेरिया।



लग्रेड् से रेल पर 'सोफिया' (Sophia) को रवाना हुआ। रास्ते में, पिराट (Pirot) स्टेशन पर, बलगेरिया (Bulgaria) का अधिकार आरम्भ होने के कारण यात्रियों को गाड़ी पर से उतर कर अपना अपना पासपोर्ट दिखाना पड़ा। मोहर करके पासपोर्ट फेर दिये गये। बलगेरिया एक मामूली राज्य है, किन्तु इस बारे में वहाँ खूब कड़ाई की जाती है। सर्विया में यह कुछ उपद्रव नहीं है।

सोफिया। यह बलगेरिया-राज्य की राजधानी है। यहाँ पहुँचने के पहले ही मुझे वही छप्पर के घर, सागपात की बेलें, ढेंकी, सराय, पायजामा, मिर्जई, साफ़ा और छोटे छोटे गाँव-पुरवे आदि अपने देश के ऐसे दृश्य देख पड़ने लगे। प्राचीन सार्डिका (Sardica) नगर की जगह पर सोफिया नगरी बसी है। कुस्तुन्तुनिया बनने और बसने के पहले सम्राट् कान्स्टन्टाइन कहा करते थे कि "सार्डिका ही मेरा रोम है।" इस समय एक लाख के ऊपर आदमी यहाँ बसते हैं। उनमें दस बारह हज़ार तुर्क, उनसे भी अधिक यहूदी, और एक हज़ार से अधिक 'जिप्सी' लोग रहते हैं। किसी समय यहाँ डेढ़ लाख आदमियों की बस्ती थी। रूस-टर्की-युद्ध के बाद, सन् १८७८ में, बलगेरिया तुर्कों के हाथ से निकल

कर स्वतन्त्र हो गई । तभी से यह नगर बलगेरिया की राजधानी है । इस प्रदेश के शासक तुर्की पाशा लोगों ने भी इसी नगर को प्रधानता दी थी । कई एक बाग़ और 'मिनारेट' से नगर की कुछ शोभा हो गई है । रास्तों मे उतनी सफ़ाई नहीं है । गलियाँ टेढ़ो-मेढ़ी हैं । अधिकांश घर लकड़ी के, बहुत ही मामूली ढंग के, बने हुए हैं । नगर के बाहर चारों ओर उदास मरुभूमि का दृश्य देख पड़ता है । पूर्व बाज़ू के उपनगर में राजमहल है । उसके बनने मे चालीस लाख फ़्रैंक लगे हैं । इसके पास ही नया यूरोपियन-मोहल्ला है । नगर में बहुत सी मसजिदें हैं । बुयुक-जमी मसजिद में ९ धातुओं का बना हुआ गुम्बद शोभायमान है । सोफिया-मसजिद, जो पहले ईसाइयों का गिर्जा थी, भूकम्प में गिर गई और वैसी ही पड़ी हुई है । एक भारी मकान में सर्वसाधारण के लिए हम्माम बना है । उसमें भिन्न भिन्न धर्मावलम्बियों के लिए अलग अलग खण्ड बने हुए हैं । सन् १८२९ मे तुर्क सूबेदार मुस्तफा पाशा ने अलबानिया (Albania) से आकर यहाँ ऐसी भयंकर लूटपाट और अत्याचार (Bulgarian atrocities) किया कि आज भी यहा के बच्चे 'अलबेनियन' का नाम सुनकर भय से सिटपिटा कर चुप हो जाते हैं । लन्दन में एक जगह इस अत्याचार के अनेकों दृश्य मोम की मूर्त्तियों के द्वारा ऐसे सजीव भाव से दिखलाये गये हैं कि देखते देखते आँखों से आँसू बहने लगते हैं । बच्चों और उनकी माताओं से जैसी पशुओं की ऐसी निठुराई की गई है उसे सभ्य या असभ्य कोई भी जाति नहीं कर सकती । यहां गुलाब का बहुत अच्छा इत्र बनता है ।

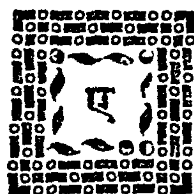
फ़िलिप-पोली (Philippopoli) । महान् वीर अलेकज़ंडर के पिता फ़िलिप ने यह नगर बसाया था । इसका बलगेरियन नाम है

प्लोविडो (Plovido)। टर्कीवाले इसे 'फिलिबी' कहते हैं। यह पूर्व-रूमेलिया (East Roumelia) प्रदेश का प्रधान नगर है। तुर्कों की अमलदारी में यहाँ एड्रियानेपुल (Adrianople) का सूबेदार रहता था। रोमन-समय में ट्रिमान्शियम (Tremontium) नाम से यही नगर थ्रेस (Thrace) की राजधानी था। इन्हीं सब कारणों से इतिहास के साथ इसका विशेष सम्बन्ध है। नगर में ४०,००० के लगभग आदमी बसते हैं, उनमें अधिकांश मुसलमान हैं। स्टेशन से बाहर निकलते ही एक स्तम्भ देख पड़ता है। बहुत लोग उसे राजा फ़िलिप के हाथ का बतलाते हैं। पास ही हर्क्यूलिस (Hercules) के मन्दिर का भग्नावशेष है। ख़ास नगर और बड़े बड़े मकान नदी से १०० फुट ऊँचे पूर्व ओर के मैदान में हैं। उस मैदान के निचले हिस्से में कई सुन्दर बाग़ हैं।

बलगेरिया की साधारण अवस्था। सन् १८७८ में लिखे गये बर्लिन के सन्धि-पत्र-द्वारा तुर्कों की देखरेख (Suzerainty) में इस छोटे से राज्य की स्थापना हुई है। सन् १८८५ के फिलिप-पोलीवाले ग़दर के बाद पूर्व-रूमेलिया भी इसमें मिला ली गई है। इस प्रदेश के लिए बलगेरिया के राजा सुल्तान को १,३८,२०० पौण्ड वार्षिक कर देते थे। सन् १९०८ में 'कार' उपाधि ग्रहण करके सम्पूर्ण स्वाधीन हो गये हैं। उनका नाम लिखा जाता है—(His Majesty Kar Ferdinend) यहाँ पार्लियामेन्ट को 'सोब्राञ्जी' कहते हैं। युक्तराज्य (बलगेरिया और पूर्व-रूमेलिया) का घेरा ३८,५६२ वर्ग-मील का है। हमारे यहाँ के ८।९ ज़िलों के बराबर होगा। यहाँ ४३½ लाख के लगभग प्रजा बसती है। सन् १९११ में ६७½ लाख पौण्ड राज-कर में आये थे। राज्य का ख़र्च भी ठीक उतना ही हुआ। इस साल कुछ अधिक २½ करोड़ पौण्ड का ऋण

राज्य के ऊपर था। यहाँ का सिक्का सर्विया का ऐसा है। देश की ज़मीन खूब उपजाऊ है। किन्तु खोज और जाँच न होने के कारण धरती की वैसी उन्नति नहीं हुई।

टर्की ।



ड्रियानोपुल के पूर्ववर्ती स्टेशन 'मुस्तफ़ा-पाशा' से टर्की का ख़ास इलाक़ा शुरू हो जाता है। 'पिरोट' की तरह वहाँ भी यात्री उतारे गये और उनके पासपोर्ट की जाँच हुई। यहाँ के कर्मचारी बड़े ही उद्धत हैं, सभ्यता का लेश भी उनमें नहीं पाया जाता।

एड्रियानोपुल। रोमन-सम्राट् हेड्रियन ने इस नगर को स्थापित किया था, इसी से इसका यह नाम पड़ा है। तुर्क लोग इसे 'एड्रने' कहते हैं। यह रूमेली वा रूमेलिया प्रदेश का प्रधान नगर है। तुर्क-साम्राज्य के नगरों में इसका दूसरा नम्बर है। सुलतान मुराद ने सन् १३६० में इस पर अपना अधिकार कर लिया था। तब से सन् १४५३ में कान्स्टेन्टिनेपुल (क़ुस्तुन्तुनिया) जीतने तक यही नगर तुर्कों की राजधानी बना रहा। उसके बाद भी कई सुल्तान अधिकांश समय इसी नगर में बिताते थे। पहले यहाँ दो लाख आदमी रहते थे; पर अब ७०,००० के लगभग लोगों की बस्ती है। तुर्क-साम्राज्य ने सभी बातों में इसी तरह की उन्नति की है। नगर का कुछ हिस्सा एक पहाड़ के ऊपर और कुछ हिस्सा एक छोटी नदी पर बसा हुआ है। इसी जगह पर और एक नदी ने मिलकर सुन्दर संगम का दृश्य दिखला दिया है। नगर के रास्ते टेढ़े, तंग और गन्दे हैं। रात को मच्छड़ों का भी बड़ा उपद्रव रहता है।

यहाँ का गुलाब-जल और गुलाब का इत्र प्रसिद्ध है। नगर के दृश्यों में सुल्तान का महल (भग्नावस्था में है), पुल, चहारदीवारी, फाटक, हेड्रियन-स्तम्भ का टुकड़ा, आकिडाकृ आदि रोमन-समय की कीर्त्तियाँ प्रधान हैं। इस शहर में ४० मस्जिदें, २५ मदर्से, अनेक फुहारे और हम्माम हैं। मस्जिदों में सुल्तान सलीम की मस्जिद श्रेष्ठ है। साइप्रस-द्वीप के 'फामागोस्टा' के प्राचीन भग्नावशेष से माल-मसाला लाकर यह मस्जिद बनाई गई है। इसका गुम्बद प्रसिद्ध सेण्टसोफिया-मसजिद से दो फुट ऊँचा है। ३७८ सीढ़ियाँ चढ़कर लोग प्रधान बालकनी-बरामदे में पहुँचते हैं। इसमें १४० फुट ऊँचे चार 'मिनारेट', संगमरमर के फ़र्शवाले कई आँगन और 'कालोनेड' तथा ९९९ दर्वाज़े हैं। मुसल्मानों का यह सुप्रसिद्ध उपासना-मन्दिर है। इसके सिवा सुल्तान मुराद की मसजिद (यह पहले ईमाइयों का गिर्जा था), वाजिद-मसजिद, महम्मद-मसजिद और ग्रीक, आर्मेनियन तथा यहूदियों के भजन-मन्दिर भी बुरे नहीं हैं। प्रधान बाज़ार का नाम है अलीपाशा-बाज़ार। इसमें सफ़ेद और लाल रंग की ईंटें लगी हैं। यह बाज़ार थियेटर हाल की तरह ६०० फुट का लम्बा बना है। अनेक प्रकार के महीन कपड़े, क़ीमती गहने और इत्र आदि एशिया की सामग्रियाँ यहाँ बिकती हैं। भारी आकिडाक्ट के द्वारा नगरवासियों के पीने के लिए दूर से पानी मँगाया जाता है। सन् १८२९ की २० वीं अगस्त को इस नगर पर दख़ल हुआ और परवर्त्ती १४ वीं सितम्बर को यहाँ पर जिस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर हुए उससे टर्की के कई प्रदेश उसके हाथ से जाते रहे। सुल्तान को इस सन्धि में ग्रीस, मोल्डाविया, वालाचिया और सर्विया की स्वाधीनता स्वीकार करनी पड़ी और रूस को भी कुछ अधिकार देने पड़े। किन्तु उस समय भी बेल्ग्रेड् का क़िला एक तुर्क पाशा और पल्टन के

अधिकार में ही था। यहाँ एक थियेटर और एक इम्पीरियल-बैंक है।

कान्स्टेन्टिनोपुल (कुस्तुन्तुनिया)। एड्रियानोपुल से रेल पर तुर्क-साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया में पहुँचा। यहाँ १२ लाख के लगभग लोगों की वस्ती है। मुसलमान लोग इसे कुस्तुन्तुनियाँ और 'इस्तम्बोल' भी कहते हैं। ममरा(Marmora) सागर के किनारे पर से रेल की लाइन बस्ती के भीतर घुसती गई है। कहीं कहीं गृहस्थों के घर का भीतरी दृश्य तक रेल पर से देख पड़ता था। स्टेशन मे उतरते ही राजकर्मचारी ने यात्रियों के पासपोर्ट देखे। मेगारियन (Megarian) वीर बाइज़स (Byzas) ने ईसा से ६६८ वर्ष पहले इस जगह पर एक नगर बसाया था। उसका नाम बाइज़न्टियम (Byzantium) था। सन् ७३ में रोमन लोगों ने जब इस स्थान पर दख़ल कर लेने के बाद, सन् ३२८ में, सम्राट् कान्स्टन्टाइन ने सुविशाल रोमन-साम्राज्य के एशियाई हिस्से की राजधानी बनाने के इरादे से रोम-नगर के अनुकरण पर सात पहाड़ों के ऊपर इस सुन्दर शहर की नींव डाली थी। सन् १२०४ में वेनिसियन लोगों ने और उसके बाद सन् १४५३ में सुल्तान दूसरे मुहम्मद ने चढ़ाई करके इस नगर पर अपना दख़ल कर लिया। मुसलमानों ने एस-टेन-पोली [अर्थात् "नगर"] ("Es-ten-poli"— The city) इन ग्रीक शब्दों से इसका "इस्तम्बोल" नाम निकाला है। रोमनों के अधिकार में जब यह नगर था तब इसे बहुत लोग 'नया रोम' कहते थे। इसी से इस प्रदेश को आज भी रूमेलिया और यहाँ के सुलतान को 'रूम का बादशाह' कहते हैं। इस्तम्बोल पृथ्वी के नागरिक दृश्यों में सर्वोत्कृष्ट न होने पर भी एक 'ख़ास जगह' अवश्य है। समुद्र और राजधानी का ऐसा

निकट-सम्बन्ध और कहीं भी नहीं देखने को मिलता। वास्कोरस (Bosphorus) प्रणाली की एक शाखा राजधानी के भीतर चली गई है। उसका नाम है 'गोल्डेन हार्न' (Golden Horn) अर्थात् सुवर्ण-शृंग। यह मृगशृंग के आकार की समुद्र-शाखा चार मील के लगभग लंबी और ऐसी चौड़ी तथा गहरी है कि इसमें हज़ारों भारी भारी जहाज़ खड़े हो सकते हैं। समुद्र और नगर के मध्यभाग के बीच में वालू, नदी, नहर, डक कुछ भी नहीं हैं। समुद्र और नगर, दोनों, परस्पर एक दूसरे को गले से लगा रहे हैं। वेनिस में बराबर सब जगह 'गण्डोला' देख पड़ते हैं; यहाँ उस जगह पर १२० तोपोंवाला जहाज़ रास्ते के किनारे खड़ा रहता है। प्राचीनकाल में वेनिस के राजा (Doge) साल के अन्त में एक दिन आदर-अभ्यर्थना-सहित समुद्र को व्याहने के लिए बड़ी धूमधाम से जाते थे। किन्तु यहाँ प्रचण्ड सागर नित्य सुल्तान के पैरों पर लोटा करता है, पृथ्वी के धन-रत्न उनके चरणों पर लाकर चढ़ाता है, उनको एक महल से दूसरे महल में पहुँचाता है, चौवीसों घण्टे मृदु-मन्द पवन के हिलकोरों से उनके पङ्खा झलता है, उनके प्रमोद-बाग़ के द्वार तक जंगी जहाज़ों को पहुँचाता है और सबसे बड़ी सम्पत्ति अन्तःपुर (अन्दर-महल) में पहरा देता है। गोल्डेन-हार्न के दक्षिण-तट पर प्राचीन शहर है। इसी को इस समय 'ख़ास इस्तम्बोल' कहते हैं। उत्तर-तट पर 'गलाटा' और 'पेरा' नाम की दो यूरोपियन ढंग की बस्तियाँ हैं। वहाँ के निवासी प्रायः यूरोपियन ही हैं। सुल्तान का नया महल भी उत्तर-तट पर है। सुन्दर ढंग से ऊँचे से ऊँचे कई एक पहाड़ों पर नगर बसने के कारण गोल्डेनहार्न से दोनों किनारों का दृश्य, एम्फी-थियेटर की तरह चक्कर पर चक्कर बहुत ही मनोहर जान पड़ता है।

सुल्तान। * वर्त्तमान सुल्तान का नाम है दूसरे अबुलहमीद। तीस बरस के लगभग हुए, अपने छोटे चचा सुल्तान अब्दुलअजीज़ के साथ यह इँगलेंड की सैर कर आये हैं। सन् १८७६ में एक गहरा कुचक्र रचा गया। उसका फल यह हुआ कि सुल्तान अब्दुल-अजीज़ सिंहासन से उतार दिये गये और अब्दुलहमीद के भाई मुराद को गद्दी मिली। किन्तु वह राज-काज के अयोग्य समझे गये, इससे तीन महीने बाद अब्दुलहमीद सिंहासन पर बिठलाये गये। सुल्तान अब्दुलअजीज़ प्राण के भय से पकाये अण्डों के सिवा और कोई चीज़ नहीं खाते थे। राज्यभ्रष्ट होने के कुछ ही दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई। बहुत लोगों की धारणा है कि वह मार डाले गये। किसी किसी का यह भी कहना है कि उन्होने आत्म-हत्या कर ली। अन्त को ख़ून का मामला खड़ा करके 'क़ाज़ो का विचार' भी हुआ था। उसमें मुराद और उसकी माता पर ही विशेप झोंक थी। किन्तु मुराद पहले ही से पागल हो गया था और बेगम का उतना अपराध न था। इस कारण दोनों छूट गये। यह सब देख कर अब्दुलहमीद ने पहले सिंहासन पर बैठना नामंज़ूर किया। उस समय चारों ओर की अवस्था भी अच्छी न थी। ख़ज़ाने में कौड़ी न थी, साम्राज्य भर में विद्रोह मचा हुआ था, और रूस-राज्य पर चढ़ाई करने का उद्योग कर रहा था। सिंहासन पर बैठने के पहले सुल्तान को जिनका खटका था वही सब बातें हुईं। रूस से हार कर सुल्तान को अपमान सहना पड़ा और राज्य भी कट-छँट गया, यूरोप के निकट सदा के लिए कुण्ठित-भाव हो गया,

* यह लेख सन् १८९१ का है। कई साल हुए, सुल्तान अब्दुलहमीद सिंहासन पर से उतार दिये गये हैं। वर्तमान सुल्तान पाँचवें महम्मद का राज्या-भिषेक सन् १९०९ में हुआ है। इस समय इनकी ७० वर्ष की अवस्था है।

आर्मेनियन और ग्रीक प्रजा ने षड्यन्त्र रचा और विदेशी महाजन देश का खून (धन) सोखने लगे। इन्हीं सब कारणों से सुल्तान दुखी बने रहते हैं। उनकी अपनी आर्थिक अवस्था अच्छी है। नौकर-चाकरों, मुसाहिबों को मिलाकर सुल्तान के महल में ७,००० आदमी रहते हैं। वहां का सब सालाना खर्च १४,६०,००० पौण्ड है। यह रुपया सुल्तान को शाहीखज़ाने से मिलता है। इसके सिवा आधा बुग़दाद-प्रदेश और जार्डन-उपत्यका की सारी भूमि सुल्तान की निज की ज़मींदारी है। लेकिन धन बहुत पास होने से क्या होता है ? उनको हर घड़ी जान का खटका बना रहता है। अब्दुल-हमीद की माँ पहले उनका खाना पकाया करती थीं। उनके मर जाने पर सुल्तान की कन्या यह काम अपने हाथ से करती है। यह कन्या उसमान पाशा को ब्याही है। सुल्तान का एक खास मित्र उनकी दवा करता है। सुल्तान उसी की बताई व्यवस्था के अनुसार रहते और उसी के हाथ की दवा खाते हैं। शुक्रवार के दिन महल के ही भीतर बनी हुई मसजिद मे प्रार्थना करने जाते हैं, सो भी बड़ी सावधानता से। एक दिन किसी मुसाहब ने सलाह दी कि "हुज़ूर बीच बीच में अगर दूसरी जगह जाकर आब-हवा बदल आया करें तो तन्दुरुस्ती अच्छी रहे"। उस मुसाहब के चले जाने पर सुल्तान ने और सब मुसाहबों से कहा कि "जान पड़ता है, यह आदमी चाहता है कि जल्दी ही मैं मर जाऊँ नहीं तो ऐसा खटके का काम करने की सलाह क्यों देता"। सुल्तान के बहुत से सोने के घर हैं, वे सब सुरक्षित हैं। निकट-नगीची आदमी के सिवा और कोई नहीं जान सकता कि वह कब किस घर में सोते हैं। वर्त्तमान सुल्तान अब्दुलहमीद को कुछ कुछ यूरोपियन भाव पसन्द है और उनके पहले के कई सुल्तानों को भी यूरोपियन भाव पसन्द

के भीतर की मसजिद के 'मिनारेट' पर खड़े होकर मुल्ला अज़ान दे रहा था। कुछ देर तक खड़े होकर मैं सुनता रहा। वैसे मीठे स्वर से वैसा सुन्दर आह्वान मैंने कभी नहीं सुना था। कुछ न समझने पर भी मेरे हृदय में उसकी मधुरता और सुन्दरता की जैसे छाप पड़ गई। इस प्रकार से दिन में पाँच बार जो लोग चारों ओर के अपने भाइयों को भगवान की उपासना के लिए बुलाते हैं उनका धर्म चिरकाल तक सजीव बना रहे तो आश्चर्य ही क्या है। इस धर्म के विषय में महात्मा कार्लाइल लिखते हैं—"*Allah Akbar.* God is great—and then also '*Islam*,' that we must submit to God. That our whole strength lies in resigned submission to Him whatsoever He do to us. For this world, and for the other! The things He sends to us, were it death or worse than death, shall be good, shall be best; we resign ourselves to God.—'If this be Islam' says Goethe 'do we not all live in *Islam*? Yes all of us that have any moral life; we all live so. It has ever been held the highest wisdom for a man not merely to submit to Necessity,—Necessity will make him submit,—but to know and believe well that the stern thing which Necessity had ordered was the wisest, the best, the thing wanted there. To cease his frantic pretension of scanning the great God's world in his small fraction of a brain, to know that it *had* verily, though deep beyond his soundings, a Just Law, that the soul of it was Good,—that his part in it was to conform to the Law of the whole, and in devout silence

follow that, not questioning it, obeying it as unquestionable " यदि महम्मद ने इसी धर्म का प्रचार किया है तो इसे सार्वभौमिक सनातन धर्म मानने मे किसे आपत्ति होगी ?

सुल्तान के हरम (अन्दर-महल) मे सब मिला कर १,५०० स्त्रियाँ हैं । उनमे ब्याही, रखैल और बाँदी, ये तीन दर्जे हैं । बाँदियों पर कृपादृष्टि हो जाने से वे रखैलों की श्रेणी मे हो जाती हैं । किन्तु महल मे सभी दासो के रूप में प्रवेश करती हैं । कुछ ख़रीदी हुई और कुछ लूट कर लाई गई होती हैं । सौभाग्यवश सुल्तान के नुत्फ़े से जिनके गर्भ रह जाता है उन्हें बेगम की उपाधि मिलती है और वे बाँदीपने से छुटकारा पा जाती हैं । जिस बेगम का लडका सुल्तान की गद्दी पर बैठता है उसे "वाल्दये-सुलतान" कहते हैं । उसका सम्मान सुल्तान के बराबर होता है । हरम मे ईसाई औरते भी हैं । उन्हे अपना धर्म नहीं छोड़ना पड़ा । किन्तु यहूदी औरते हरम मे नहीं दाख़िल हो सकतीं; क्योंकि यहूदी लोग घोर महम्मद-विद्वेषी होते हैं । हरम की सब औरतें मेमों की पोशाक पहनती हैं । केवल वाल्दये-सुल्तान के पास जाने के समय ख़ास तुर्की पोशाक पहननी पडती है । हरम की औरतें बुर्क़ा डाल कर बाज़ार वग़ैरह मे जा सकती हैं । 'बास्फोरस' के दोनों तटों पर गाड़ियों पर बहुत सी हरम-निवासिनी हवा खाते देख पडती हैं । इन लोगों के आमोद-प्रमोद के लिए महल के भीतर एक बाग़ और एक थियेटर भी है । थियेटर मे ये औरतें ही अभिनय करती हैं सुल्तान को कुत्तो का बडा शौक है । कई कुत्ते अन्दर-महल मे-पहरा दिया करते हैं । सुल्तान इस बात को ख़ूब जानते हैं कि मनुष्य पहरेदार की अपेक्षा कुत्ता अधिक विश्वासपात्र और चौकसी करने-वाला होता है ।

इस नगर में ४०० मसजिदें, ४० यहूदियों के उपासना-मन्दिर और अनेक ईसाइयों के गिर्जे हैं। अर्मानी क्रिस्तान-सम्प्रदाय के सर्वश्रेष्ठ गुरु यहीं रहते हैं। सन् १२०२ में. कान्स्टेन्टिनोपुल में, ईसाइयों के ५०० गिर्जे थे। उनमे ५० के लगभग इस समय भी बने हुए हैं। इन पचास मे ६ गिर्जे ईसाइयों के अधिकार मे हैं; उनमे वे उपासना आदि करते हैं। ६ गिर्जे प्रधान मसजिद बना डाले गये हैं। बाक़ी गिर्जों में कई एक टूटे-फूटे पड़े हैं, कई एक और और कामों में लगा दिये गये हैं और कई एक ने छोटी छोटी मसजिदों का रूप धारण कर लिया है। मसजिदों मे "सेण्ट-सोफिया" मसजिद प्रधान है। यह भी पहले गिर्जा था। सम्राट् जस्टिनियन ने, सन् ५३२ में, बाइजन्टाइन ढंग का यह उपासना-मन्दिर बनवाया था। एक सौ इञ्जीनियरों ने दस हज़ार मज़दूरों के द्वारा इस मन्दिर को तैयार किया था। इसके बनने मे दस लाख पौण्ड ख़र्च हुए थे। इसके लिए एथेन्स, इफिसस् आदि ६ प्रधान नगरों के देवमन्दिरों से माल-मसाला लिया गया था। इमारत ईंट की है; भीतर की दीवारों में क़ीमती संगमरमर जड़ा हुआ है। इसके स्तंभों का घेर देखने से डर लगता है। ४६ फ़ुट गहरे गुम्बद का घेर और भी बड़ा है। गुम्बद का घेर २६७ फ़ुट का है, ऊँचाई १८० फ़ुट है। इसमे चारों ओर ४० दर्वाज़े हैं। भीतर अनेक रङ्ग के खंभों की क़तार देखने की चीज़ है। मसजिद में प्रवेश करते समय अपने जूते उतार कर नंगे-पैरों या किराये की स्लीपरें पहन कर जाना पड़ता है। उच्च श्रेणी के तुर्क लोग प्रायः जूते के ऊपर दूसरा जूता पहनते हैं। किसी घर में प्रवेश करते समय ऊपर के जूते बाहर उतार देते हैं।

सिरालिओ (*Seralio*)। यह पुराना महल सन् १८६५ में



सेन्ट-सोफिया मसजिद—पृ० ५३८



एकाडेमी विद्यालय—पृ० ५४८



आग लगने से जल गया था। कुस्तुन्तुनिया के सात पहाड़ों में से एक पहाड़ के ऊपर यह है। प्राचीन समय में ठीक इसी जगह पर बाइजन्टाइन-राज्य-काल का राजमहल था। इसके प्रधान फाटक का नाम है "बाबे-हुमायूँ"। यूरोपियन लोग इसे सब्लाइम-पोर्ट (Sublime Porte) अर्थात् प्रधान-फाटक कहते हैं। इस महल के भीतर बाग़, मसजिद, दरबार-भवन, हम्माम आदि की अनेक इमारतें हैं। इस महल के एक कमरे में महम्मद का झण्डा, पोशाक, दाढ़ी, दाँत और चरण-चिह्न बड़ी हिफ़ाजत से रक्खे हुए हैं।

गलाटा और पेरा। पहले कहा जा चुका है कि गोल्डेन-हार्न के उत्तर-तट पर ये दोनों यूरोपियन ढंग की बस्तियाँ हैं। नगर का इतना अंश यूरोप की भूमि जान पड़ता है। पार्क में गैस की रोशनी और होटल है। यूरोपियन लोग, सब देशों के राज-दूत और बड़े बड़े सौदागर यहाँ रहते हैं। समुद्रतट से खड़े पहाड़ पर चढ़ने के लिए बहुत अच्छा रास्ता बना हुआ है। यहाँ टानेल के भीतर भीतर एक छोटी सी रेल्वे-लाइन चलती है। गलाटा से पेरा तक इस लाइन की सीमा है। यहाँ के रास्ते बहुत तंग हैं। गाड़ी-घोड़े बड़ी सावधानता से चलाये जाते हैं।

बास्फोरस। यह प्रसिद्ध खाड़ी २० मील लम्बी है। स्टीमर पर इस पार से उस पार जाने में १५ मिनट लगते हैं। इस पार से उस पार या इस छोर से उस छोर जाने के लिए हमेशा स्टीमर मिलते हैं। यूरोपियन-तट में कृष्णसागर तक ये दृश्य देखने योग्य हैं—सुलतानी तोपख़ाना, डोलमा-बग़ीचा-महल, चेरागान-महल, अत्यन्त मनोहर ओर्टाकेनी-मसजिद, एक यूरोपियन बस्ती, पहाड़ के ऊपर अमेरिकन कालेज (इसी जगह पर डेराइस उर्फ़ दारा बादशाह नाव के पुल से पार हुए थे), मिस्र के ख़दीव

का महल और यूरोपियन राजदूतों के ग्रीष्म-निवास । सुल्तान के हवाख़ाना और बाग़ के सिवा बहुत स्थानों में वेनिस-नगर की तरह समुद्र के ऊपर बाग़ और बैठकें बनाई गई हैं। खाड़ी के दोनों किनारों पर जगह जगह तोपें चढ़ी हुई हैं। कृष्णसागर के मुहाने पर इस पार मोर्चा है और उस पार प्राचीन बाइजन्टाइन-क़िला है। वहाँ से कृष्णसागर का दृश्य बहुत ही मनोहर जान पड़ता है। क़िले के बाद क्रमशः सुल्तान का ग्रीष्म-निवास, अँगरेज़ों का एक गाँव, क्रीमिया के युद्ध में काम मे लाया गया अस्पताल, बाग़ और एक यहूदियों का गाँव मिलता है। उसके बाद स्कुटारी-नगर है। खाड़ी के दोनों तटों पर काठ के विलास-भवन आदि अनेकों बने हुए हैं।

स्कुटारी और हैदरपाशा। एशिया-तट के इन दोनों स्थानों को देखने के लिए मैं दो दिन गया। स्कुटारी की आबादी ५०,००० से कुछ अधिक है। वहाँ एक कोस भर के घेरे का तुर्की क़बरिस्तान है; उसमें साइप्रेस-वृक्ष का बाग़ देखने में बड़ा ही सुन्दर है। एशियाखण्ड मे पैर रखते ही देख पड़ा कि जूते और कपड़ों की दूकानें क़तार की क़तार लगी हुई हैं, भड़भूजा सत्तू बेच रहा है और बनिये-बक्काल दूकाने लगाये बैठे हैं। यहाँ के 'बर्गुर्लू' पहाड़ के ऊपर से बास्फोरस, मारमोरा-सागर और कान्स्टेन्टिनोपुल का दृश्य बहुत अच्छा मालूम पड़ता है। स्कुटारी से कोस भर पर हैदरपाशा-नगर है। यहीं से मारमोरा-सागर का आरम्भ होता है। यहाँ की सलीम-बारिक में क्रीमियन युद्ध (Crimean War) के समय अस्पताल स्थापित हुआ था और उसमें प्रातःस्मरणीया मिस फ्लोरेन्स नाइटिंगेल (Miss Florence Nightingale) सुध बुध बिसारे घायलों की सेवा कर रही थीं। यहीं उनकी

अलौकिक कीर्त्ति और स्वर्गीय प्रेम का प्रधान स्थान है। यहां के अँगरेज़ों के गोरस्थान मे ८,००० शव गड़े हुए है।

अन्यान्य दृश्य। यहाँ नाम लेने भर को एक म्यूजियम है। इसमे ग्रीक अक्षरों की लिपि जिन पर खुदी हुई है ऐसे कई एक पत्थर के टुकड़े, नहाने के लिए ६ हाथ लम्बा ३ हाथ गहरा और बीच मे ६ हाथ चौड़ा संगमरमर के एक ही टुकड़े का बना हुआ एक पुराना टब, एक बुद्धदेव की मूर्त्ति, प्राचीन टर्की की मर्मी आदि का मामूली संग्रह है। तुर्क लोगों ने ग्रीस से "अर्धचन्द्र-तारा-चिह्न" पाया है। अनेक प्राचीन बाइज़न्टाइन सिक्कों में ऐसा ही चिह्न देखा जाता है। जिस जगह बाइजन्टाइन-सम्राटों का अभिषेक होता था उस जगह पर अभी तक सुल्तान का अन्तिम अभिषेक होता है। ६ महलों और ५ स्तम्भों के भग्नावशेष मौजूद हैं। खूब लम्बा आकिडाक् और चहारदीवारी भी टूटी-फूटी पड़ी है। चारों ओर १३ मील की दीवार थी। अब समुद्र की ओर बिल्कुल नहीं है। इसके सिवा २६ बड़े और ७ छोटे फाटक हैं। बड़े फाटक टूटे-फूटे हैं। १,२४८ फुट लम्बे आकिडाक् को तुर्क लोग "बसदोघान् केमिरी" कहते हैं। पानी इस समय भी है, लेकिन बहुत ही बेमरम्मत हालत में पड़ा हुआ है। हेड्रियन और कान्स्ट-न्टाइन नाम के दो सम्राटों ने इसे बनवाया था। सुल्तान सुलेमान ने एक बार जीर्णोद्धार भी किया था। रोमन और बाइज़न्टाइन अमल के कई एक कीर्त्तिस्तम्भ हैं। उनमें दो बहुत ही ऊँचे टावर विशेष रूप से देखने योग्य हैं। यहाँ ५०० मदर्से, १३० हम्माम और ३०० इमारतें हैं। हर एक मसजिद में अस्पताल और गरीबों के रहने के लिए स्थान है। शहर में शराब की दूकानें और काफ़ी-खाने अनेक हैं। मुसलमानी मज़हब मे मदिरा पीने की मनाही है,

मगर ख़ास ख़लीफ़ा की राजधानी में खुल्लमखुल्ला शराब की बिक्री हो रही है। यह मुझे ज़रा असंगत जान पड़ा। क़ाफ़ीख़ानों में गुड़गुड़ियां पर लोग चिलमें पीते हैं। उस तमाखू को 'नारगिली' कहते हैं। वहाँ की तमाखू यहाँ की ऐसी कड़वी नहीं होती। उसमें कुछ मिठास मिली होती है। एक पैसे की काफ़ी और एक पैसे की तमाखू पीते अनेक लोग देखे जाते हैं। तुर्की भाषा में 'महाशय' की जगह 'शामोली' कहते हैं। रास्ते-गली में शामोली—शब्द की भारी भरमार देख पड़ती है। मैंने देखा कि बाल-बच्चों को चाकरानी के साथ हवा खाने के लिए भेजते समय मातायें द्वार पर थुकथुका कर उनकी शरीर-रक्षा करती हैं। बाज़ारों की सजावट बहुत अच्छी है। भिन्न भिन्न जाति के दूकानदार जुदे जुदे स्थानों में दूकानें रखते हैं। प्रधान बाज़ार का नाम है। "बेजेस्टीन"। इसमें बहुत सी छोटी छोटी दूकानें हैं। इस बाज़ार में जाने-आने के लिए ३२ फाटक हैं। बाज़ार में हमारे ही देश का ऐसा कोलाहल मचा रहता है। मोल तोल खूब बढ़-चढ़ कर किया जाता है। नगर में २०० के लगभग सरायें हैं। उनमें चारों ओर मकान, बीच में दो एक पेड़ और एक कोने में एक फ़ुहारा और काफ़ीख़ाना बना हुआ है। ये सब सरायें सौदागरों को किराये पर दी जाती हैं। 'तोपकाबू' फाटक और कासिमपाशा-बस्ती में, सप्ताह में दो बार, प्रसिद्ध दरवेशों का नाच हुआ करता है। दो बजे के समय बीस आदमियों के लगभग एक साथ नाचते हैं। टर्की सुन्नियों का ही मुल्क है; परन्तु राजधानी में बहुत से 'शिया' भी रहते हैं। मोहर्रम में ये लोग बेदर्दी के साथ अंग कूटना, मातम में अपने शरीर से खून बहाना 'सवाब' समझते हैं। प्राचीन शहर इस्तम्बोल में बहुत से कुत्ते इधर-उधर मारे मारे फिरा करते हैं। यहां सरेशाम से ही दूकानें बन्द हो जाती हैं।

इस देश में चार तरह की तारीखें और दो तरह का समय प्रचलित है। साधारण यूरोपियन नियम से, ग्रीक-चर्च के नियमानुसार, महम्मदी और ख़ास तुर्की हिसाब से महीने और दिन गिने जाते हैं। तुर्की-समय में प्रातःकाल के एक बजे से दिन का आरम्भ माना जाता है और यूरोपियन नियम के अनुसार सवेरे ६ बजे से नया दिन शुरू होता है। क़ुस्तुन्तुनिया के हर एक अच्छे मकान में एक बाग़ है। भारत की तरह यहाँ भी गर्म दूध और मलाई बिकती है। यहाँ मुसलमानों के घरों में इधर उधर कोई खिड़की नहीं होती; अगर होगी भी तो उसमें चिक पड़ी होगी या पट भिड़े होंगे। क्रिस्तानों के घरों में कोई पर्दा नहीं है, खिड़कियाँ और दरवाज़े सब खुले रहते हैं।

टर्की की साधारण अवस्था। सन् १८५१ में, राजधानी में दस लाख के ऊपर आबादी थी; अब सात लाख रह गई है। साम्राज्य के सभी विभागों की ऐसी ही दशा है। पहले डाकघर के प्रबन्ध में बड़ी गड़बड़ी थी। उससे असन्तुष्ट होकर प्रधान प्रधान यूरोपियन जातियों ने कान्स्टेन्टिनोपुल में अपने अपने अलग अलग डाकघर बना लिये हैं। पहले पत्र पहुँचाने का इन्तिज़ाम बिल्कुल ठीक न था। सिक्के का भी यही हाल है। सोने का सिक्का तो देखने को नहीं मिलता। बहुत छोटा—दुअन्नी से भी छोटा चाँदी का सिक्का है। उसे 'पियास्टर' कहते हैं। पैसे का नाम है 'पारा'। ४० पारा का एक पियास्टर होता है। यहाँ का पैसा न-जानें किस धातु का है। उसका आकार भी वैसा ही हीन है। विदेशी लोग स्थानीय सिक्का बहुत कम अपने पास रखते हैं। देसी दूकानदार भी अँगरेज़ी, फ्रेंच और अमेरिकन सोने-चाँदी के सिक्कों को बड़े आग्रह और आदर के साथ लेते हैं।

यहाँ के कर्मचारी ऐसे घूसखोर हैं कि शायद भारत के सिवा और कहीं न मिलेंगे। नगर से निकल कर यात्रा करते समय चुंगी के क्लर्क ने पास-पोर्ट जल्द मंज़ूर करने के लिए एक फ्रैंक (सात आठ आने के लगभग) की घूस बड़ी ख़ुशी से माँग ली। साम्राज्य की आर्थिक अवस्था बहुत ही ख़राब है। सन् १८७६ में यह राज्य दिवालिया होगया था। किन्तु महाजनों ने कुछ बन्दोबस्त करके किसी तरह वह आफ़त टाल दी। साम्राज्य ने रूस की लड़ाई में प्रजा से और रूम से जो ऋण लिया था वह अभी तक अदा नहीं हुआ। तीन करोड़ पौण्ड से ऊपर की रक़म अभी देना बाक़ी है। सन् १८६० में पौने दो करोड़ पौण्ड के लगभग 'कर' वसूल हुआ था। किन्तु ख़रच हुआ था दो करोड़ पौण्ड। सब मिलाकर अब १६ करोड़ पौण्ड के लगभग ऋण है। दो लाख स्थलसेना और डेढ़ लाख जलसेना है। १०२ स्टीमर हैं; उनमें १७ लौहयान हैं। इनके सिवा २५ टारपीडो बोट भी हैं। साम्राज्य की जन-संख्या १,६३,३३,००० है। इसमें १,२०,००,००० मुसलमान हैं। यूरोप में टर्की का राज्य बहुत थोड़ा रह गया है; उसमें २८ लाख के लगभग प्रजा रहती है। पहले शासनप्रणाली अनियन्त्रित थी, अब शासन के काम में प्रजा भी पूरा भाग लेने लगी है। सुलतान के नीचे सदर आज़म अर्थात् प्रधान वज़ीर हैं। 'उलमा' नाम की धर्मसभा के अध्यक्ष "शेख़-उल्-इस्लाम" के भी अधिकार प्रधान मन्त्री से कम नहीं हैं। सुलतान का इरादा अच्छा होने पर भी वह मुसाहबों की राय पर चलने के लिए लाचार हैं। सुलतान के मुसलमान मुसाहब कैसे स्वार्थपर हैं, इसका प्रमाण साम्राज्य की दुर्दशा है। सुलतान के सिंहासन पर कैसा खटका है, इसका अनुमान केवल उनके शयन-गृह की रखवाली के प्रबन्ध से ही किया

जा सकता है। महल के अन्यान्य अंश लोहे के सीकचों-द्वारा शयन-गृह से अलग कर दिये गये हैं। शयन-गृह के कमरों के दर्वाज़ों में रात को जो ताले बन्द किये जाते हैं वे फरमाइश देकर खास तरह के बनवाये जाते हैं। सोने के ५० कमरों के भीतर अँगरेज़-इञ्जीनियरों के द्वारा ऐसी कलें लगा दी गई हैं कि एका-एक उनके भीतर छिप जाने से कोई भी खोजकर पा नहीं सकता। इन कलों का रहस्य सुल्तान के सिवा और कोई नहीं जानता। इतने पर सुलतान निश्चिन्त नहीं हैं। बड़े बड़े 'सेन्ट-बर्नार्ड' कुत्ते रात को छोड़ दिये जाते हैं; वे चारों ओर घूम कर पहरा देते हैं। उनके आगे चौखट के भीतर क़दम बढ़ाने की भी हिम्मत नहीं पड़ सकती।

यूरोप में मुसलमानी राज्य। सुसभ्य यूरोपखण्ड में असभ्य मुसलमान एक समय अपनी विजय-भेरी बजाते फिरे हैं और इस समय हज़ारों विघ्न-बाधायें रहते हुए भी यूरोप के एक हिस्से में प्रभुत्व कर रहे हैं। यह ज़रा असङ्गत सा जान पड़ता है। लेकिन ज़रा विचार कर देखने से इसमें कोई अस्वाभाविकता नहीं नजर आती। बाइज़न्टाइन साम्राज्य कभी प्रजा को प्यारा नहीं रहा। पृथ्वी पर के अन्यान्य समसामयिक राज्यों की अपेक्षा इस साम्राज्य की शासन-प्रणाली अनेक बातों में उत्कृष्ट थी, और इसी कारण कई शताब्दियों तक इस साम्राज्य का प्रताप अखण्ड बना रहा, तथापि प्रजा के हृदय की श्रद्धा और भक्ति इसने नहीं पाई। पीछे मुसलमानों की चढ़ाई के समय उक्त साम्राज्य की नैतिक अवस्था बहुत ही हीन हो चली थी। इतिहासज्ञ अँगरेज़ पण्डित फ्रीमैन और फिन्ले साहब ने मुसलमानी शक्ति की नैतिक प्रधानता को स्वीकार किया है। पण्डितवर

फ़्रीमैन साहब लिखते हैं—"Whatever we say of the 'superior morality' of the Turk there is a sense in which the 'moral superiority' of the Ottomans under their great princes must be fully acknowledged. It was not by sheer brute force that the Ottomans subdued all the nations, Christian and Mussalman, which they did subdue. It was by virtue of qualities which may in themselves be fairly called moral, though whether they deserve moral approbation or not depends wholly on the use to which they are put Order, discipline, steadiness of purpose, a rule which in its early days was better than that of any other Mussalman power and of not a few Christian powers were the means whereby the small following of Ertogrul grew into the Ottoman Empire. When the only choice is between one despotism and another the strong despotism is better than the weak one. And the peculiarity of the Ottoman power is that, under the wonderful succession of its great Emirs and Sultans, it remained a strong power longer than any other Eastern despotism."

केवल बाइजन्टाइन-साम्राज्य ही क्यों, उस समय पूर्व-यूरोप और दक्षिण-यूरोप के सारे क्रिस्तान-राज्यों का धर्मबल कम हो गया था। इतिहास बारम्बार इस बात की साक्षी दे रहा है कि पहले उन लोगों का धर्म गया और फिर राज्य गया। फिर इधर जैसे तुर्क लोग एशियाखण्ड के मुसलमानों की तरह भोग-विलास में रत होकर धर्म से भ्रष्ट और तेज से रहित हुए वैसे ही उधर

क्रिस्तानी राज्यों की मोह-निद्रा खुली। वस यूरोप से अपना वोरिया-वँधना वाँधकर मुसलमानों को खिसकना पड़ा। इस समय यूरोप में जो कुछ सुल्तान का राज्य वना हुआ है वह यूरोपियन राज्यों के अनुग्रह से।' इसमें कोई सन्देह नहीं कि निष्ठावान् आदमी के दुर्वल होने पर भी उसमें धर्म का ऐसा तेज हुआ करता है कि उसके आगे विजयी सम्राट् भी सिर झुकाता है। इसी लिए हमारे आर्य ऋषिगण पुकार पुकार कर कह गये हैं—"वलं वलं ब्रह्मवलम्", ब्रह्मवल अर्थात् धर्म-तेज के आगे कोई शक्ति खड़ी नहीं हो सकती; वही सच्चा वल है।

ग्रीस।



या। इस्तम्बोल से इटलियन-स्टीमर पर ग्रीस को रवाना हुआ। स्टीमर में पहले दर्जे के हम सब यात्री एक जगह बैठ कर बहुत देर तक कान्स्टेन्टिनोपुल और तुर्क-साम्राज्य के सम्बन्ध में बातचीत करते रहे। उन लोगों का कहना यह था कि शीघ्र ही किसी तरह किसी यूरोपियन जाति का यहाँ अधिकार हो जाना चाहिए। सचमुच इस्तम्बोल ऐसे सुन्दर स्थान में प्रबन्ध की ऐसी गड़बड़ी देखकर बड़ा ही दुःख होता है। अभी बन्दोबस्त ठीक न होने से जो कुछ गड़बड़ी और दुर्दशा है वह सब किसी यूरोपियन शक्ति का अधिकार होने से फ़ौरन जाती रहती और नगर का सौन्दर्य दसगुना बढ़ जाता। किन्तु बात यह है कि टर्की की राजधानी को कोई एक यूरोपियन जाति हड़प नहीं कर सकती; क्योंकि ऐसा समय उपस्थित होने पर यूरोप की अन्यान्य जातियाँ, अपने स्वार्थ से, ऐसा न होने देंगी। जिनसे इस बारे में बातचीत हो रही थी उन्होंने कहा कि "एक बार जर्मनी के प्रधान मन्त्री बिस्मार्क ने कहा था कि पोप को रोम से लाकर बास्फोरस-तट पर रखना चाहिए, लेकिन वह 'वाटिकन' और 'सेन्ट-पीटर' छोड़ कर कभी न आना चाहेंगे। अतएव इस्तम्बोल तुर्कों के पास ही रहेगा; और कोई उपाय नहीं है"। एक अँगरेज़ पण्डित का कथन है—

"Diplomatists have taught us that the maintenance of the Ottoman Empire is a political necessity.' उस जहाज़ पर के अन्यान्य सब यात्री और कर्मचारी लोग एक-स्वर से यही कह रहे थे कि "सुल्तान को यहाँ से बग़दाद या बसरा में भेज देना चाहिए। स्कुटारी, हैदरपाशा आदि किसी निकट के स्थान में भी उन्हे नहीं रहने देना चाहिए"। मेरी समझ मे तो यही आया कि सब यूरोपियन जातियाँ मिलकर कान्स्टेन्टिनोपुल की सुव्यवस्था का प्रबन्ध करें, इसमें सुल्तान को कोई आपत्ति न होगी। नौजवान तुर्कों का दल शीघ्र ही उन्नति करेगा। बस, फिर सब ठीक हो जायगा। पार्लियामेण्ट के द्वारा शासन होने लगेगा तो फिर 'शिकायत' का कोई कारण नहीं रह जायगा। वर्तमान सुल्तान का स्वभाव तो बड़ा अच्छा है। किन्तु करें क्या, मन्त्रियों के मारे वे कुछ कर नहीं पाते। पुराने ख़याल के बुड्ढों के न रहने पर "यंग-टर्की" के अभ्युदय में अवश्य इस देश के दिन फिरेंगे।

ग्रीक लोगों के घोर कुसंस्कार-ग्रस्त होने की बात सुनी थी, उसका प्रमाण जहाज़ पर ही मिल गया। डेक के ऊपर एक तीसरे दर्जे के ग्रीक मुसाफ़िर का लड़का घूम रहा था। मैंने प्यार के मारे उसके शरीर पर हाथ फेर दिया। इस पर उस बच्चे का बाप दौड़ कर मेरे पास आया और ख़फ़ा होने लगा। मैं तो सन्नाटे में आ गया। पीछे से कप्तान ने आकर मुझे समझा दिया कि कोई अपरिचित आदमी अगर इन लोगों के बच्चो को छू लेता है तो ये लोग उसे अच्छा नहीं समझते। इनको शंका होती है कि उससे बालक का कुछ अमंगल न हो जाय। डार्डनेल्स (Dardanelles) खाड़ी के भीतर होकर जब जहाज़ चला तब कप्तान ने मुझे वह

स्थान दिखाया जहाँ से अलेक्ज़ंडर की सेना पार हुई थी। यह खाड़ी बहुत तंग है। ख़ास कर अलेक्ज़ंडर के पार उतरने के स्थान में खाड़ी एक मामूली नहर ऐसी जान पड़ती है।

पाइरिउस (Piroeus)। यह एथेन्स (Athens) का समुद्री बन्दरगाह है। इस्तम्बोल छोड़ने के बाद तीसरे दिन सवेरे यहाँ पहुँचा। एक बुड्ढे दुभापिये के साथ यहाँ की प्राचीन इमारतें आदि देखने गया। ग्रीस (Greece) में पैर रखते ही एक नये प्रकार के आनन्द का अनुभव मुझे हुआ। न जाने क्या क्या देखने की आशा ने मन को प्रफुल्लित कर दिया। बन्दरगाह के घाट पर ही महावीर आलिसबाइडिस (Alcebides) की मूर्त्ति है। उसके पास ही थोड़ी दूर पर एक पहाड़ (Rockybrow) देख पड़ा। यहाँ बैठ कर प्रसिद्ध पर्शिया के राजा जरक्सिस (Xerexes) ने ईसा से ४८० वर्ष पहले के प्रसिद्ध सालामिस (Salamis) युद्ध देखा था। यहाँ थेमिस्टोक्लिस (Themistocles) का एक स्मारक-स्तम्भ है। यहीं उनकी मृत्यु हुई थी। इनकी समाधि समुद्र-तट पर बनी हुई है। ज्वार के समय उस पर घुटनों घुटनों भर पानी चढ़ आता है। यह समाधि ग्रीम-राज के सामुद्रिक विलास-भवन (Seaside Villa) के अन्तर्गत और चहारदीवारी से घिरा हुआ है। इसके उपरान्त राजधानी से मिली हुई प्राचीन समय की दीवार का भग्नावशेष देखकर गाड़ी पर प्राचीन मुनीकिया (Munychia) के निकटवर्त्ती एक प्राचीन मन्दिर और थियेटर का भग्नावशेष देखने गया। जिस समय एथेन्स को गौरव प्राप्त था उस समय यह बन्दरगाह भी खूब गुलज़ार था। बीच में इसकी बिल्कुल हीन अवस्था होगई थी; पर अब फिर कुछ उन्नति हुई है। नगर में २०,००० के लगभग लोग रहते हैं। रास्ते और गली-कूचे वैसे बुरे नहीं हैं।

यहां एक छोटा म्यूज़ियम, मिलिटरी कालेज और कई एक सरकारी बाग़ हैं। बन्दर मे दो जङ्गी जहाज़ खड़े थे। मालूम हुआ कि इँग्लेंण्ड से दो जङ्गी जहाज़ और भी शीघ्र बन कर आनेवाले हैं। यहाँ के निवासियों मे बहुत से घाँघरा पहने देख पड़े! यह बात ग्रीस के सिवा पृथ्वी पर शायद और कहीं न देख पड़ेगी।

एथेन्स। उक्त बन्दरगाह से रेल पर चढ़कर इस प्राचीन नगर मे आया। उक्त बन्दरगाह के एक कर्मचारी के साथ आने पर भी रहने के लिए स्थान ठीक करने मे अधिक प्रयत्न करना पड़ा। "धूलिमय ग्रीस" की धूल-भरी राजधानी में धूप खूब कड़ी होती है। होटलों मे खाने की सामग्री बहुत बहुत अच्छी मिलती है और दाम भी थोड़े ख़र्च होते हैं। यूरोप मे इतने कम दामों में ऐसा अच्छा खाना कहीं नहीं मिलता। एथेन्स को स्थानीय लोग 'आथूनेई' कहते हैं। आधुनिक राजधानी और प्राचीन नगर का भग्नावशेष अलग अलग हैं। आधुनिक राजधानी बिल्कुल नई बनी है और प्राचीन नगर यूरोप मे सबसे पुराना नगर है। जिस समय लोगों की धारणा थी कि "समुद्र विपत्ति-पूर्ण स्थान है, उसके किनारे रहना विपत्ति मोल लेना है; परोसियों से कोई सम्बन्ध रखने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि एकान्त स्थान में उनसे जितना ही अलग रह सकें उतना ही अच्छा; अतएव नदी के किनारे भी बसना ठीक नहीं।" उस समय का बसाया हुआ यह नगर है। चारों ओर इसके पहाड़ हैं और बीच मे एक पहाड़ के ऊपर और उसके नीचे की ज़मीन पर यह नगर बसा हुआ है। एथेन्स नगर यूरोप-खण्ड के पाण्डित्य की जन्मभूमि है। एथेन्स में एक लाख से अधिक आदमी बसते हैं। आधुनिक नगर मे निम्नलिखित दृश्य प्रधान हैं। १—सन् १८३८ में पाँच लाख पौण्ड ख़र्च करके बनवाया गया राजमहल।

यह बड़ी भारी चतुष्कोण इमारत सुन्दर बाग़ के भीतर बनी है। इमारत में चूने की अस्तरकारी है। २—स्थायी-प्रदर्शिनी-भवन। यह भी ख़ूब लम्बी चौड़ी और साफ़ सुथरी इमारत है। इसके सामने एक फ़ुहारा और एक छोटा सा बाग़ है। ३—एकाडेमी-विद्यालय और कई एक स्कूल। एकाडेमी-विद्यालय के द्वार पर दो चिन्ताशील पण्डितों की बैठी हुई मूर्त्तियाँ हैं। उनके दोनों ओर दो ऊँचे स्तम्भों की चोटियों पर दो खड़े मनुष्यों की मूर्त्तियाँ हैं। ४—विश्वविद्यालय। ५—मानमन्दिर। ६—पुराने खुदाई और नक़्क़ाशी के काम का म्यूज़ियम। ७—डाक्टर श्लीमैन (इनसे त्रिण्डिसी में मुलाक़ात और जान-पहचान हुई थी) का संगमरमर का घर और म्यूज़ियम। एथेन्स मे ज्ञानोपार्जन का यह एक ख़ासा स्थान है। यहाँ बहुत सी सुवर्ण की बनी प्राचीन सामग्री रक्खी हुई है। उसमें कुछ सिक्के और मेडल, एक चेहरा, कुछ गहने, सोने के काम की एक तरवार और साइप्रेस-द्वीप की समाधियों मे पाई गई बहुत सी सोने की चीज़ें और गहने देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। महात्मा श्लीमैन ने इस पुरातत्त्व-सम्बन्धी सामग्री के संग्रह में बड़ा परिश्रम किया है। इसके लिए ग्रीस देश और ग्रीस देश के पुरातत्त्व का अनुसन्धान करनेवाले विद्यार्थी उनके निकट चिर-कृतज्ञ रहेंगे। एथेन्स में ढाई लाख के लगभग लोग रहते हैं।

प्राचीन एथेन्स। राजमहल से आक्रोपोलिस Acropolis-Acropolie) तक सड़क के दोनों ओर गोल मिर्च के पेड़ हैं। प्राचीन काल की जो कुछ बची बचाई कीर्त्ति है वह सब आक्रोपोलिस के ऊपर और उसके आस पास है। यह पथरीला भूमिखण्ड ३७० फ़ुट ऊँचा, १,२८० फ़ुट लम्बा और ५५० फ़ुट चौड़ा है। इसके चारों ओर नक़्क़ाशीदार और सादे संगमरमर के टुकड़े

आक्रोपोलिस—पृ० ५४८



पार्थेनन्—पृ० ५५०

बिथरे पड़े हैं। यहाँ जो कुछ है वह संगमरमर का है। आक्रोपोलिस के ऊपर पेलासगिक (Pelasgic) दीवार (जो पहले आक्रोपोलिस को घेरे हुए थी) और मकान वग़ैरह तथा कई एक अन्य समय की पुरानी दीवारों के ध्वंसावशेष मौजूद हैं। इन सबके साधारण चिह्नमात्र देख पड़ते हैं। प्रोपीलिया (Propyloea-Propylaia) अर्थात् फाटक की ८० फुट चौड़ी सीढ़ियाँ, उसकी दीवार पोर्टिको (Portico) अथवा वेस्टीबिउल (Vestibule—यह ग्रीक नाम है), कई एक समूचे और टूटे-फूटे स्तम्भ खड़े हैं। ये सब चीज़ें २,००० वर्ष से भी अधिक पुरानी हैं, पर उनका प्रभाव और सौन्दर्य अभी तक वैसा ही बना हुआ है। यह फाटक इस स्थान के प्राचीन गौरव का एक प्रधान निदर्शन है। इस बात को सभी यात्री एक-स्वर से स्वीकार करते हैं कि यह फाटक आक्रोपोलिस के सुन्दर मन्दिरों में प्रवेश करने के उपयुक्त द्वार था। एक यात्री लिखता है—"The magnificent Propylœa form in themselves one of the noblest architectural monuments in Athens, and a fit approach to the stately shrines with which the Acropolis was covered Even the ruins which now remain after the lapse of more than two thousand years attest the beauty and splendour of the structure" इसका भीतर का अंश बाहर की अपेक्षा अधिक नष्ट हो गया है। भारी भारी नक़ाशीदार संगमरमर के टुकड़े चारो ओर बिथरे पड़े हैं। 'पान' का ग्राटो (Grotto of Pan) और सीढ़ियाँ देखीं। 'पिनाकोथिका' (Pinacotheca) अर्थात् चित्रशाला का भग्नावशेष देखा। यहाँ का इरेक्थियम-मन्दिर भी दर्शनीय है। यह मन्दिर ईसा से ४०७ वर्ष पहले 'आल्सिबाइडिस' के समय में बना था। इसमें ६६ फुट लम्बी

और ३६ फुट चौड़ी छत के नीचे तीन देवालय थे । कई एक स्तम्भ और कुछ दीवार सहित इसका फाटक अभी वैसे ही खड़ा है । फाटक की छत पत्थर की पुतलियों के सिर पर रक्खी हुई है । इसके बाद नाइकी-मन्दिर (Temple of Nyke) देखा । चार खंभों पर एक बरामदा रक्खा है, उसके ऊपर बहुत सी मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। इस मन्दिर का इतना ही अंश और कुछ दीवार बची है । इस मन्दिर का ग्रीक नाम है "नाओस आप्टराय निखूस" (Naos Apteroy Nikhs), अर्थात् "पक्ष-हीन विजया देवी" (Wingless Victory) का मन्दिर । माराथन (Marathon) युद्ध में जीतने के बाद यह मन्दिर स्थापित करते समय एथेन्स के अधिवासियों ने विशेष उत्साह और गर्व के साथ यह सोचा था कि परकटी विजया-देवी या विजय-लक्ष्मी और कहीं उड़कर न जा सकेंगी; चिरकाल तक उन्हीं के यहाँ स्थापित रहेंगी । किन्तु विधाता ने ठीक इसके विपरीत किया । वेनिसियन लोगों के आक्रमण के समय इस मन्दिर के पत्थरों को गिराकर तुर्कों ने मोर्चा बनाया था । उसमें कोई पत्थर टूटा नहीं, सब समूचे ही रक्खे रहे । पीछे से ग्रीस जब स्वाधीन हुआ तब सब मिलाकर पहले की तरह फिर मन्दिर खड़ा कर दिया गया. यहाँ सबसे अधिक देखने की चीज़ है 'पार्थेनन्' (Parthenon) अर्थात् नगर की अधिष्ठात्री मिनर्वा-देवी का मन्दिर । यह २३० फुट लम्बा, १०० फुट चौड़ा और ८० फुट ऊँचा है । आठ वर्ष परिश्रम करके, ईसा से ४३९ वर्ष पहले, पेरिक्लिस (Pericles) ने इसे बनाया था । सन् १६८७ तक यह मन्दिर वैसा ही खड़ा था । उसी साल, वेनिसियन लोगों के आक्रमण के समय तुर्कों ने इस मन्दिर के सेला (Cella) अर्थात मध्य-भाग में बारूद की मेगज़ीन (Magazine) बनाया था । शत्रुओं को जब

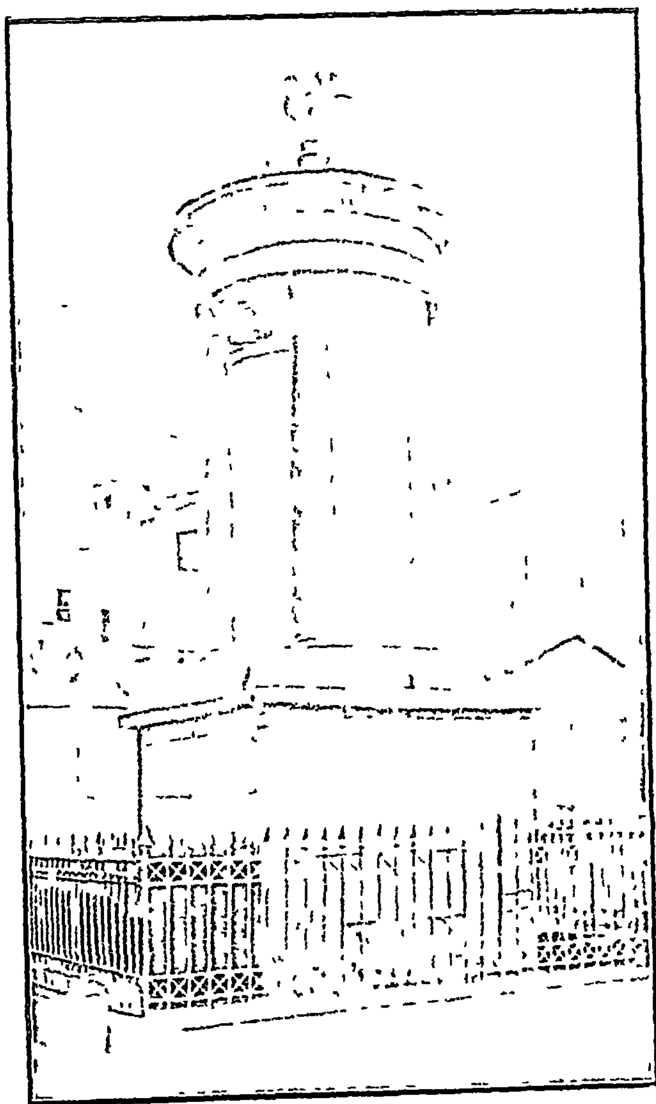
यह खबर लगी तो उन्होंने गोले मार कर इसमें आग लगा दी, उससे मन्दिर का एक अंश उड़ ही गया। इस समय पूर्व ओर का अंश तो बिलकुल ही नहीं है। इसका पश्चिम ओर का हिस्सा, पिछले हिस्से (Posticum) के ६ समूचे खंभे और मध्य-भाग के ५८ खंभो में से सामने के ८ और बगल के १७ खंभे खड़े हुए हैं। छत और दीवार का कुछ हिस्सा भी मौजूद है। एक यात्री ने इस मन्दिर के संबन्ध में लिखा है—' There are few more maddening thoughts than those inspired by the knowledge that two centuries ago the Parthenon was almost perfect, and has been shattered, not during the darkness of the middle ages, but in the full light of modern times " इस मन्दिर के प्राचीन साज सामान का वर्णन असम्भव है। और और चीज़ों को छोड़कर प्रसिद्ध पत्थर पर खुदाई का काम करनेवाले फीडियस (Phidias) के हाथ की कारीगरी यहाँ बेशुमार थी। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस्तम्बोल मे रहनेवाले तत्कालीन इँग्लैंड के राजदूत लार्ड एलिगन ने सुलतान की अनुमति लेकर अनेक पत्थर की कारीगरियाँ ब्रिटिश-म्यूज़ियम में लाकर रख दी। वे इस समय उक्त म्यूज़ियम में "एलगिन-मार्बेल्स" (Elgin Marbles) नाम से प्रसिद्ध हैं। इस मन्दिर के सम्बन्ध मे अधिक न लिखकर केवल दो विद्वानों की राय यहाँ पर उद्धृत की जाती है। एक लिखते हैं—' Parthenon—the finest edifice on the finest site in the world, hallowed by the noblest recollections that can stimulate the human heart '—अर्थात् जिन सब स्मृतियों के द्वारा मनुष्य का हृदय उत्तेजित हो उठता है वैसी महत्तम स्मृतियों से पवित्र पृथ्वी के अत्यन्त उत्कृष्ट स्थान में बहुत ही उत्तम मन्दिर यह है।

दूसरे लिखते हैं—" The Parthenon is universally admitted to have been the most beautiful building ever reared by Hellenic genius." इस मन्दिर के सम्बन्ध में सैकड़ों ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं । इस पार्थेनन-मन्दिर के बाद आक्रोपोलिस के पूर्व छोर पर अनेक छोटे देवालय, बलिस्थान (Altar) आदि थे । इस समय उनके ध्वंसावशेषों के ढेर जगह जगह पड़े हुए देख पड़ते हैं । इस उच्च भूमिखण्ड (आक्रोपोलिस) पर से चारों ओर का दृश्य बहुत ही सुन्दर जान पड़ता है । इसके उत्तर ओर दो पर्वतमालायें (Parnes and Cithocron), पश्चिम ओर ऊँचा पर्नासस (Parnassus), और पूर्व-दक्षिण ओर दो पहाड़ (Pentelicus and Hymettus) हैं । पश्चिम ओर आधुनिक राजधानी के बाद घना जङ्गल और उसके बाद समुद्र का नील जल है ।

आक्रोपोलिस के दक्षिण-पूर्व ओर पहाड़ के नीचे ही बेकस्-थियेटर (Theatre of Bacchus—Theatron Bakhoy) का भग्नावशेष है । यहाँ खुली छत के नीचे साफोक्लिस (Sophocles), यूरिपाइडिस (Euripides) आदि जगत्प्रसिद्ध ग्रन्थकारों के नाटकों का अभिनय एथेन्स-वासियों को दिखलाया जाता था । कई एक संगमरमर के आसनों की लाइनें (Rows of marble seats), आर्केस्ट्रा (Orchestra) और स्टेज का सामने का हिस्सा (Proscenium) बुरी हालत में नहीं है । पहले का थियेटर-भवन नष्ट हो जाने के बाद सम्राट् हेड्रियन ने दुबारा यह भवन बनवाया था । इसकी सब कारीगरी रोमन-राज्य के समय की है । इसके कुछ उत्तर ओर हट कर हिरोडस-थियेटर (Theatre of Herodes Atticus the Rhetorician) (Ilissus) का भग्नाव-

शेष है। इन दोनों थियेटरों में परस्पर गाने-बजाने की लाग डॉट रहा करती थी। विख्यात ग्रीक अलङ्कार-शास्त्रज्ञ हीरोडस आटिकस् ने अपने भारी ऐश्वर्य से एथेन्स के बहुत स्थानों को सुसज्जित किया था। यह थियेटर-भवन उन्हीं का बनवाया हुआ था। इसकी पत्थर की दीवार का कुछ हिस्सा और उसके अन्तर्गत कई एक फाटक अभी तक मौजूद हैं। पूर्व ओर सूखे हुए इलाइसस नदी-गर्भ और आक्रोपोलिस के बीच में संगमरमर का बना हुआ हेड्रियन का फाटक (Hadrian's Arch) [फाटक के ऊपर कई खम्भो पर एक छत पटी हुई है।] और ओलिम्पियन जूपिटर (Olympian Jupiter) के मन्दिर का ध्वंसावशेष है। यह विराट् देवमन्दिर बनना शुरू होने के बाद बीच में ७०० वर्ष तक अधबना ही पड़ा रहा। पीछे सम्राट् हेड्रियन ने बनवा कर पूरा किया। इसके प्लेटफ़ार्म का घेरा आधे मील का था। १२८ में से इस समय केवल १८ खम्भे खडे हैं; बाक़ी नष्ट हो गये। प्राचीन काल में इस देवालय के दक्षिण-पूर्व ओर इलाइसस-नदी बड़े वेग से बहती थी। अब बरसात के महीनों भर उसमें पानी रहता है। इस नदी के दूसरे किनारे पर वृक्ष-लता-मण्डित अनेक बाग़ थे। वहीं पिसि-स्ट्रेटस (Pisistratus) ने लाइसियम (Lyceum) स्थापित किया था; उसी मे अरिस्टोटल (Aristotle) और भ्राम्यमाण दार्शनिकगण (Peripatetic Philosophers) विद्यार्थियों को शिक्षा देते थे। इसके उत्तर ओर लाइनोसार्जेस् (Lynosarges) था। यहाँ डायोजिनिस (Diogenes) छात्रों को अपने सीनिक (Cynic) का उपदेश देते थे। अब वहाँ इन सब स्थानों का कोई चिह्न नहीं है। इसी अंश मे धनकुबेर हीरोडस् ने दो छोटे पहाड़ों के मध्य की सारी क़ुदरती नीची भूमि (Natural hollow) पर संगमरमर जड़वा

दिया था। उसी जगह नौजवान लोग तरह तरह की कसरतें करके शरीर और मन को फुर्तीला बनाते थे। उक्त स्थान का नाम है पाना-थेनेइक स्टेडियम (Panathenaic Stadium)। यह ६७५ फुट लम्बा है। इतने दिनों बाद सन् १८७५ से इस जगह पर फिर ओलिम्पिक (Olympic Games) आदि खेल होना शुरू हुआ है। आक्रोपा-लिस के दक्षिण-पश्चिम ओर म्यूज़ियम पहाड़ (Museum Hill) है। इसके ऊपर सोक्रेटिस (Socrates) का क़ैदखाना और फिलो-पेपस (Philopapos) का समाधि-मन्दिर खड़ा हुआ है। आक्रोपा-लिस और म्यूज़ियम महल के बीच की नीची ज़मीन मे आगोरा (Agora) अर्थात् बाज़ार था। इस बज़ार की बस्ती में प्रिटेनियम् (Prytaneum) अर्थात् शासन-सभा-भवन और तीन स्टोआ (Stoa) अर्थात् नाट-मन्दिर के ऐसे खुले मकान थे। उनमें अधिवासी लोग गर्मियों के दिनों में दोपहर को आराम करते थे और साधारण बातों पर तर्क—वितर्क तथा आलोचना होती थी। इसी अंश में साक्षात् भोगविलास की मूर्त्ति 'इपीक्यूरस' के विहार-बाग़ थे। इन बाग़ों का कोई चिह्न इस समय देख नहीं पड़ता। आगोरा के पश्चिम छोर पर निक्स (Pnyx) नामक अर्द्धगोलाकार ऊँचा भूमिखण्ड है। यहीं पर इक्लीज़िया (Ecclesia) अर्थात् साधारण-समिति की बैठक होती थी और पेरीक्लिस, डिमास्थिनीज़ (Demosthenes) आदि वाग्मियों की वक्तृतायें सुनकर श्रोतागण मुग्ध होते थे। नगर और राज्य के सम्बन्ध के बड़े बड़े मामलों पर विचार भी यहीं होता था। निक्स के सामने आरीओपेगस या मार्सहिल (Areopagus or Mars Hill) है। यहाँ डायोनिसियस (Dionnysius) आदि विचारक बैठकर 'विचार' का काम करते थे और यहीं महात्मा सेन्टपाल ने एथियन लोगों में ईसाई-धर्म का



लीसिक्रेटिस का स्मारक-स्तम्भ—पृ० ५५५



आल्प्स पर्वत—पृ० ९७३

प्रचार किया था। इसी जगह पर पेरीक्लिस ने अपने राजनैतिक व्याख्यान दिये हैं, डायोडोटस (Diodotos) ने ओजस्वी व्याख्यानों से दया के पक्ष का समर्थन किया है और महात्मा सेक्रेटिस व्यवस्था का नियम तोड़ना अस्वीकार करके सारे एथेन्स के बुरे बनकर भी अपनी 'निष्ठा' की रक्षा करने पर तुले रहे हैं। इसके उत्तर-पश्चिम में थीसियस-मन्दिर (Temple of Theseus) है। यह ईसा से ४६६ वर्ष पहले का बना हुआ है। कलकत्ता-यूनिवर्सिटी की इमारत के ढङ्ग का यह भारी मकान अभी समूचा खड़ा है। ३६ खंभे हैं, उनमें से एक आध किसी किसी जगह साधारण तौर पर टूट-फूट गया है। फाटकों के ऊपर रक्खी हुई छत अवश्य जगह जगह पर नष्ट होगई थी, सो उसकी सब जगह मरम्मत होगई है। अब इस जगह प्राचीन वस्तुओं का एक म्यूज़ियम है।

आधुनिक नगर के भीतर लीसिक्रेटिस (Lysicrates) का स्मारक-स्तम्भ है। नाट्याचार्य के कार्य में निपुण होने के कारण प्रचलित प्रथा के अनुसार इनको पीतल का त्रिपद (Bronze Tripod) मिला था। वही इस संगमरमर के स्मारकस्तम्भ पर स्थापित है। इससे थोड़ी ही दूर पर ७ खम्भों सहित हेड्रियन के फाटक का भारी भग्नावशेष खड़ा हुआ है। पास ही हवार्ड टावर (Tower of winds) है। वहाँ पर पत्थर के फ़र्श पर कई नालियां बनी हुई थी। मध्यस्थान से 'कल' के द्वारा जल चलता था और वह निर्दिष्ट नाली से वह कर घड़ी की तरह समय बतलाता था। यहाँ पर एक पुराने ज़माने की सूर्य-घड़ी इस समय भी मौजूद है। नगर के इस अंश में सभी ज़मानों की कीर्त्तियां एकत्र देखने को मिलती हैं। नगर के उत्तर-पूर्व में धनियों के भवन और बड़े बड़े

वीर योद्धाओं के स्मारक-चिह्न थे। इनके बाद ही लतामण्डपों और अनेक मूर्त्तियों से सुशोभित बाग़ के भीतर प्लेटो की एकाडेमी (Plato's Academy) थी; जिससे बहुत से विद्यार्थियों ने ज्ञान और उपाधियाँ पाई हैं। एथेन्स के अन्य दो प्राचीन मन्दिरों का कुछ हाल मालूम नहीं हो सका। इयोल-मनूमेन्ट और सेन्ट-इल्यूथिरियस-गिर्जा। पहला तो संगमरमर का बना हुआ एक अष्टकोण मन्दिर है। यह मन्दिर रोमन-समय का जान पड़ता है। क्योंकि यह यदि ग्रीक इयोलस (पवन-देव) के सम्बन्ध का कोई स्थान होता तो मनूमेन्ट न कहला कर देवालय या मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध होता। इसके सिवा पवन-देव का मन्दिर (Temple of Æolus or Tower of Winds) अलग बना हुआ है। सेन्ट-इल्यूथिरियस-गिर्जा यूरोप का सबसे पुराना गिर्जा है। दोनों ही स्थान बहुत अच्छी हालत में हैं। गिर्जे में इस समय भी नियमित रूप से नित्य उपासना होती है।

एथेन्स और रोम। रोम-यात्रा के बाद एथेन्स आया, इसी से जितनी आशा थी उससे कुछ कम ही यहाँ जान पड़ा। असल बात तो यह है कि रोम में बहुत से स्थानों मे अनेकानेक बड़े बड़े दर्शनीय दृश्य भरे पड़े हैं। बहुत दिनों तक सैर करने पर भी जी नहीं भरता। किन्तु एथेन्स के सब दृश्य एक ही दिन मे देख डाले जा सकते हैं। रोम की समृद्धि की सरवर एथेन्स नहीं ही कर सकता। रोम ने दो समयों में दो रूपों से सागर-द्वीप—समेत पृथ्वी के ऊपर एकाधिपत्य किया है; एथेन्स को यह बात कभी नहीं नसीब हुई। किन्तु पृथ्वी के किसी हिस्से पर प्रत्यक्ष रूप से अपना आधिपत्य स्थापित न कर सकने पर भी एथेन्स ने रोम और सारे सभ्य-जगत् के ऊपर अप्रत्यक्षरूप से जो प्रधानता पाई है उसे कौन मिटा सकता है?

इस एथेन्स ने एक समय यूरोप भर को अनेक प्रकार के ज्ञान दिये हैं। यूरोप के सभ्य जगत् ने साम्य और स्वाधीनता की शिक्षा एथेन्स से ही पाई है। सर्व-साधारण मे वक्तृता देना, प्रजा-परतन्त्र-शासन-प्रणाली, सर्वसाधारण के वोटों से शासन-सभा के मेम्बरों का चुनाव इत्यादि श्रेष्ठ सभ्यता के कामों की राह एथेन्स ने ही सबसे पहले यूरोप को दिखलाई है। इस धरती ने--इस एथेन्स ने बहुत से बहुत ही उच्च श्रेणी के विद्वानों को पैदा किया है और सुसभ्य यूरोप खण्ड भर इसका ऋणी है।

कोरिन्थ (Corinth) यात्रा। एथेन्स से कोरिन्थ को रवाना हुआ। राह मे मेगारा (Megara) मिला। यह स्थान यूक्लिड (Euclid) का जन्मस्थान कहलाता है। स्टेशन के पास ही गॉव है। पूर्वसमृद्धि का साधारण चिह्न भी मुझे यहाँ नहीं देख पड़ा। रहनेवाले बहुत ही ग़रीब जान पड़े। कोरिन्थ पहुँचने के कुछ पहले नई नहर मिली, उस समय कुछ अंश बनना बाक़ी था। ग्यारह बरस मेहनत करके यह चार मील की नहर बनाई गई है। इसके बनने में २० लाख पौंड ख़र्च हुए हैं। रेल्वे लाइन के किनारे के अनेक पहाड़ों मे मनुष्यों के रहने लायक अनेक सुन्दर कन्दरायें देख पड़ीं। किसी किसी के मुँह से सुनने मे आया कि पहले इन कन्दराओं में अनेक ज्ञानी संन्यासी रहते थे।

कोरिन्थ। नया कोरिन्थ जहाँ बसा हुआ है उस जगह पहले कई मछुओं के झोपड़े पड़े थे। सन् १८५८ के भयानक भूकम्प में पुरानी बस्ती नष्ट हो जाने से वहाँ के रहनेवाले इस जगह उठ आये। एथेन्स से पाट्रास (Patras) तक रेल खुल जाने के बाद से इस स्थान की कुछ उन्नति हुई है। यह इस प्रदेश के शासक का हेडक्वार्टर

या प्रधान स्थान है । इस जगह २,००० के लगभग आदमियों की बस्ती है । यहाँ एक छोटा सा होटल भी है ।

प्राचीन कोरिन्थ । इधर जाने की राह में, एक गाँव में, मसजिद का भग्नावशेष और पास के पहाड़ पर पुरानी क़िले की दीवार देख पड़ी । प्राचीन कोरिन्थ एक समय बड़ा समृद्धिशाली नगर था, किन्तु इस समय उजाड़ पड़ा हुआ है । यहाँ सुसज्जित मिनर्वादेवी के मन्दिर के ७ डोरिक (Doric) स्तम्भ खड़े हुए हैं । यह मन्दिर २,६०० वर्ष का पुराना है । इसके खम्भे एक ही एक टुकड़े पत्थर के बने हुए हैं । खभों का घेर २० फुट और ऊँचाई २१ फुट है । यहाँ पहले की कीर्त्तियों में और है एक 'आक्विडाक्ट' का भग्नावशेष । इस स्थान से और नई बस्ती से ३ मील का फ़ासिला है । रेल्वे-स्टेशन से दिन भर के लिए एक गाड़ी किराये की कर ली थी । उसी पर यहाँ तक आया और यहाँ से आक्रोकोरिन्थ के पहाड़ पर गया । जिसके बारे में "बायरन" ने लिखा है—

" Stranger, with thou follow now,
And sit with me on Acro-Corinth's brow."
—Byron.

यह वही आक्रो-कोरिन्थ नामक अर्द्धगोलाकर क़ुदरती पहाड़ी क़िला है । यह १,६०० फुट ऊँचा है । क़िले की चहारदीवारी और सब टावर अभी बहुत अच्छी हालत में हैं । चहारदीवारी के घेरे में तो मज़े से एक बड़ा नगर बस सकता है । प्राचीन ग्रीक-गढ़ की नींव के ऊपर रोमन-समय और मध्ययुग में यह सब बना है । चोटी पर प्रसिद्ध पाइरिन-झरना (Pirene Spring) है । यहीं बेलरफॉन (Bellerphon) ने अपने परदार घोड़े पेगासस (Pegasus) को गिरफ़ार किया था । यहाँ से राज्य के चारों ओर का दृश्य बहुत

सुन्दर जान पड़ता है। क़िले की दीवार के अलावा वीनस-देवी के मन्दिर और कई एक वेनिसियन और तुर्की मकानों के ध्वंसावशेष भी यहाँ देख पड़े। पहाड़ से दोपहर की धूप मे उतरने के कारण बड़ी प्यास लगी। पानी के लिए पास के एक गाँव में गया। जाकर देखा, गाँव के एक हिस्से में एक बड़े पेड़ के चारों ओर कई मकान हैं। पेड़ के नीचे बढ़ई अपना काम कर रहे थे। एक घर के सामने गाँव का पादरी चार पाँच आदमियों के साथ ठण्डे मे बैठा हुआ बातचीत कर रहा था। सब लोग छोटी छोटी मचियों पर बैठे हुए थे। सब लोग रुई के सादे और ढीले कपड़े पहने हुए थे। और सबके सिर खुले थे, केवल पादरी के सिर पर एक काले रङ्ग की ऊँची टोपी थी। अनेक यूरोपियन भाषाओं के शब्दों-द्वारा उनसे जल माँगा, पर उनमें से कोई भी कुछ न समझा। अन्त को इशारे से बतलाने पर पादरी ने कहा——"आपा ? नीरो ?" मैंने कहा—"हाँ"। एक आदमी उठकर प्याले में जल ले आया। पूर्वोक्त दोनों जलवाचक शब्द संस्कृत 'आप' और 'नीर' शब्द से बिलकुल मिलते हुए देखकर मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। गाँव में कुछ औरतें अंगूर सुखा रही थीं, कुछ ऊन के डोरे कात रही थीं। एक छोटा सा स्कूल था, उसमे लड़के पल्थी मारे बैठे पढ़ रहे थे। टर्की से ही यह 'बैठक' शुरू हो जाती है। हुक्के पर तमाखू पीना ग्रीसवालों ने तुर्कों से सीखा है। ग्रामवासियों के लिए एक छोटा सा गिर्जा भी है। उसी के पास ही एक मसजिद का भग्नावशेष है। गाँव के भले आदमी पैरों मे बस्किन जूते और बदन पर लेगिंग (Legging) घाँघरे के ऊपर फतुही पहनते हैं। फतुही की दोनों बाँहे अलग हिलगा करती हैं। उनमें सुई का काम बना होता है और अग्रभाग में दो फुंदने (Tassel) लगे रहते हैं। सिर पर टर्की-टोपी और कमर मे चमड़े का

छोटा सा तोबड़ा बँधा रहता है। उस तोबड़े में छुरी, तमाखू आदि कई एक ज़रूरी चीज़ें रक्खी रहती हैं। इस गाँव में और इस प्रदेश में और जगह भी बलदार सींगोंवाले बहुत से बकरे देखने को मिले।

पाट्रास (Patras)। कोरिन्थ से पाट्रास आया और वहाँ से इटलियन जहाज़ पर ब्रिण्डिसी को रवाना हुआ। पाट्रास ग्रीस के बनिज का प्रधान बन्दरगाह है। यहीं से सारे देश की करैण्ट (Currant) रफ़्तनी होती है। पहाड़ के ढालू पर यह नगर बसा है। चोटी पर क़िला बना हुआ है। यहाँ की जन-संख्या ४०,००० के लगभग है। सेन्ट-एण्ड्रू (Andrew) यहीं क्रूस पर मारे गये थे। उनके नाम का गिर्जा और कई एक प्राचीन कीर्त्तियों के भग्नावशेष यहाँ देखने योग्य हैं।

कर्फ़्यू (Corfu)। पाट्रास से रवाना होकर दूसरे दिन आयोनियन (Ionian) द्वीपपुञ्ज के अन्तर्गत प्रधान द्वीप कर्फ़्यू में पहुँचा। इसका प्राचीन नाम है कार्कीरा (Corcyra)। यह द्वीप बहुत दिनों तक अँगरेज़ों की देख रेख में रह कर अब फिर ग्रीस-राज्य के अधीन हो गया है। इन टापुओं की आबादी ७५,००० के लगभग है। केवल कर्फ़्यू में २५,००० के लगभग आबादी है। बहुत लोगों का कहना है कि असल ग्रीकवंश इन्हीं टापुओं में देखने को मिलता है। कर्फ़्यू में पुराना और नया क़िला, पन्द्रहवीं शताब्दी में वेनिसीयन लोगों के लगाये हुए कुछ वृक्ष, अँगरेज़ो अमलदारी के महल, कालेज, म्यूज़ियम और लाइब्रेरी आदि प्रधान दृश्य हैं। जहाँ नासिका (Nausicaa) के साथ यूलीसिस (Ulysses) की भेंट हुई थी वह स्थान देखा। हारबर-स्थित समुद्र से ऊपर निकला हुआ एक पहाड़ भी देख पड़ा। दुभाषिये ने उसे यूलिसिस का जहाज़ बतलाया,

जो कि पत्थर का हो गया था। बस्ती मे बड़ी सड़कें नहीं हैं; सब काशी के ऐसे तङ्ग और टेढ़े मेढ़े रास्ते हैं। राह चलने में कभी कुछ नीचे उतरना और कभी कुछ ऊपर चढ़ना पड़ता है। गलियों के दोनों किनारों पर वैसे ही छमंज़िले सतमंज़िले मकानात हैं। क़िले के मैदान मे पहुँचने पर जैसे जान में जान आई। यह स्थान बहुत सुन्दर है। यहाँ ३७ गिर्जे हैं। उनमे दो का आकार हमारे यहाँ के शिवालयों से बहुत कुछ मिलता है। इस टापू में अनेक तरह के फल मिलते हैं। यहाँ बहुत दिनों के बाद केले खाने को मिले। स्थानीय औरतें कण्ठ और कानों मे बहुत गहने पहनती हैं। पुरुषों में बहुतों के एक कान में 'बाला' देख पड़ा। कर्फ्यू के आयोनियन बैंक को द्वीप-राज्य के लिए नोट जारी करने का अधिकार प्राप्त है।

ग्रीस की साधारण अवस्था। यह राज्य २५,००० वर्ग-मील का है। हमारे यहाँ के १०। १२ बड़े ज़िलों के बराबर होगा। सब मिलाकर २२ लाख के लगभग आबादी है। सन् १९१३ में एक करोड़ सोलह लाख पौण्ड के लगभग राज्य की आमदनी थी। ख़र्च भी इतना ही हुआ होगा। राज्य पर ऋण था तीन करोड़ अट्ठावन लाख पौण्ड के ऊपर। स्थल-सेना एक लाख बीस हज़ार और जल-सेना ४,००० के लगभग होगी। जङ्गी जहाज़ों में तीन प्रथम श्रेणी के लौहयान, दो सीखने के जहाज़, एक टारपीडो जहाज़, २० टारपीडो-बोट और तीन साधारण जहाज़ हैं। सिक्के के सम्बन्ध में इस देश की भी दशा शोचनीय है। चाँदी का सिक्का 'ड्राक्मा' (Drachma) ९½ पेनी का होता है। पैसे को लेप्टा (Lepta) कहते हैं। १०० लेप्टा का एक ड्राक्मा होता है। यहाँ भी दाशमिक प्रथा प्रचलित है। सिक्के के सम्बन्ध मे ग्रीस देश लैटिन-यूनियन (Latin Union) के अधीन है। अर्थात् फ़ान्स, बेलजियम,

इटली, स्वीज़लैंण्ड और ग्रीस ने आपस में शर्त करके एक ही क़ीमत के चाँदी के सिक्के ढाले हैं और इन पाँचों देशों में बराबर बिना किसी रुकावट के हर एक सिक्का चलता है। किन्तु इस समय इटली और ग्रीस की आर्थिक अवस्था अच्छी न होने के कारण इन दोनों देशों के सम्बन्ध में गड़बड़ी आ पड़ी है। ग्रीस में सोना तो देख ही नहीं पड़ता। चाँदी के सिक्के का भी उतना चलन नहीं है। मैंने पहले अँगरेज़ी पौण्ड भुना कर 'ड्राकमा' लिये थे। पीछे दुभाषिये की सलाह से पौण्ड के नोट लिये। उससे मुझे लाभ हुआ। जिससे मैंने पहले पौण्ड भुनाया था उसे चाहिए था कि वह मुझे सोने की दर के अनुसार चाँदी के सिक्के देता; क्योंकि यहाँ का सिक्का सोने के निर्ख़ (Gold basis) से नहीं बना। किन्तु मुझे विदेशी देख कर उसने एक पौण्ड के केवल २५ ड्राकमा दिये थे। पीछे जब पौण्ड के नोट लिये तो ३६ ड्राक्मा के नोट मिले। मुझे प्रसन्नता भी हुई और आश्चर्य भी हुआ। कभी कभी एक पौण्ड के ३८ नोट (एक एक ड्राकमा के) भी मिल जाते हैं। बाज़ार में चाँदी का सिक्का और उतने ही का नोट दोनों एक ही क़ीमत पर चलते हैं। नोट छोटे आकार के और इतने मैले और कटे-फटे होते हैं कि हाथ में लेते भी घृणा मालूम होती है। हर्फ़ एक भी पढ़ा नहीं जाता। यहाँ की चीज़ों के संग्रह में इस तरह का एक नोट भी मैं भारत में ले आया हूँ। यहाँ के साधारण निवासी सफ़ाई वग़ैरह की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते। इसका प्रमाण है यहाँ के रेल्वे-स्टेशनों के पाख़ाने। उनकी ऐसी बुरी हालत है कि उनके भीतर जाने में बड़ा ही कष्ट होता है। यहाँ से बहुत गाँवों के रहनेवाले जानते ही नहीं कि साबुन क्या चीज़ है।

पहले रोमन लोगों ने ग्रीस को पराधीन बनाया। उसके बाद

गोलमाल में कुछ दिनों तक ग्रीस एक प्रकार की अधूरी स्वाधीनता का उपभोग करता रहा। उसके उपरान्त सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ से तुर्क लोगों का अधिकार हो गया। अन्त को सन् १८३० की ३ री फ़रवरी के दिन लन्दन में प्रकाशित प्रोटकल-पत्र (Protocol of London) द्वारा अँगरेज़, फ्रेंच और रूसियों के आश्रय मे निकट के पाँच द्वीपों सहित ग्रीस के वर्त्तमान स्वाधीन राज्य की स्थापना हुई। इसके बाद सन् १८३२ मे यूरोप की प्रधान शक्तियां ने एक जर्मन-प्रिन्स को ग्रीस का सिंहासन दिया। ३० वर्ष राज्य करने के बाद उस प्रिन्स को राज्य-शासन के अयोग्य बतला कर ग्रीक लोगों ने अपने देश से भगा दिया। इसी समय भारतेश्वरी विक्टोरिया के मँझले पुत्र को ग्रीक लोगों ने एकमत होकर अपना राजा बनाना पसन्द किया; किन्तु अनेक कारणों से डेन्मार्क के एक राजकुमार को ग्रीस का सिंहासन दिया गया। यही प्रथम जार्ज नाम से ग्रीस के वर्त्तमान राजा हैं। इनको केवल ४,०००० पौण्ड की सलाना वृत्ति मिलती है। उसमे बड़े कष्ट से अपने पद की मान-मर्यादा की रक्षा करते हुए यह अपना गुज़ारा करते हैं। राज-काज के लिए सात विभागों के सात मन्त्री हैं। वे भी बहुत मामूली—साल में ४२८ पौण्ड—वृत्ति पाते हैं। राजा अक्सर अकेले ही छाता सिर पर लगाये पैदल टहलने जाया करते हैं। रविवार को प्रायः तीसरे पहर वह अपने परिवार सहित ट्रामगाड़ी पर चढ़ कर घूमने निकलते हैं। राजा और उनके सारे परिवार के आदमी बहुत ही अच्छे स्वभाव के और नम्र हैं। प्रजा अपने राजा के बर्ताव से बहुत ख़ुश हैं। वर्त्तमान समय के एक ग्रीक-तत्त्व का अनुसन्धान करनेवाले यात्री ने इस सम्बन्ध मे लिखा है—"The King appears to be extremely popular The Greeks believe they have

drawn a prize in the lottery of royalties, and seem to have an absolute conviction that their King is wise enough to get them out of any hole, the politicians may take into."

यूरोप खण्ड में ग्रीस अत्यन्त 'डेमक्रटिक' देश है। यहाँ के समाज में सम्भ्रान्त या प्रतिष्ठित कहलानेवाली कोई श्रेणी नहीं है। ग्रीक-तत्त्ववेत्ता पण्डित महाफ़ी (Mahaffy) कहते हैं— "Every common mule-boy is a gentleman and fully your equal, sitting in the room at meals, and joining in the conversation at dinner." इन्होंने यह भी लिखा है कि ग्रीक लोगों को यह दृढ़ विश्वास है (कि वे अनेक वातों मे—खासकर विद्या और बुद्धि में अन्यान्य जातियों की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं)। इस देश में साम्यवाद इतना प्रचलित है कि एक आदमी ने महाफ़ी महाशय से स्पष्ट कहा था कि ("विदेशी राजा पसन्द करने का प्रधान कारण यह है कि हम लोग अपने में से किसी का इस तरह का प्रभुत्व कभी सह नहीं सकते")। मुसलमानों के राज्य-काल में ग्रीस एक प्रकार से मुर्दे की हालत में था। इन वहुत दिनों तक किसी सभ्य जाति के संसर्ग मे न आने के कारण यहाँ की प्रजा के मानसिक भावों में विशेष हेर फेर हो गया। प्रथम राजा के अमल में प्राण-दण्ड की व्यवस्था चलाने में शासकों को वड़ी चेष्टा करनी पड़ी थी। ग्रीक लोग समझते हैं कि मनुष्य के प्राण लेने का मनुष्य को कुछ भी अधिकार नहीं है। इस समय इस विषय को ग्रीक लोग वहुत कुछ समझ गये हैं, तथापि वहाँ ऐसा नियम प्रचलित है कि प्राण-दण्ड की आज्ञा होने के वाद दो वरस वीत जाने पर उसकी तामील होती है। इस देश के आईन के अनुसार किसी भी अपराधी को एक अनिर्दिष्ट समय तक विना विचार के जेल मे रक्खा जा

सकता है । यहाँ की अधिकांश प्रजा ग्रीक-चर्च के ईसाई-सम्प्रदाय की अनुयायिनी है । राज्य में यहूदियों के भजन-मन्दिर और मुसलमानों की मसजिदें भी हैं । रोमन-कैथलिक के साथ ग्रीक-चर्च की सब बातें मिलती हैं । केवल दो तीन बातों में अन्तर है । प्रधान मतभेद है पवित्रात्मा के सम्बन्ध में । ग्रीक-चर्च के अनुयायियों का मत है कि पवित्रात्मा केवल 'पिता' से प्रकट है, 'पुत्र' के साथ उसका कुछ सम्बन्ध नहीं । राजधानी में रोमन-कैथलिक और यहूदी लोग एक साथ एक क़ब्रिस्तान में गाड़े जाते हैं । इटली के दक्षिण भाग की तरह इस देश में भी बाल्य-विवाह का चलन है । १३ से १५ तक में लड़कियों का और १६ से २० तक में लड़कों का ब्याह कर दिया जाता है । पिता माता ही ब्याह ठीक करते हैं और लड़कीवाले को कुछ अधिक दहेज़ देना पड़ता है । क्वाँरी लड़कियाँ अक्सर अपनी सारी सम्पत्ति आभूषण के रूप में सिर पर पहने रहती हैं । पहले कहा जा चुका है कि आयर्लेण्ड में सब देशों की अपेक्षा 'दोगले' कम हैं; परन्तु ग्रीस इस बात में आयर्लेण्ड से भी श्रेष्ठ है । किन्तु बहुत लोग ग्रीस और टर्की को यूरोप-खण्ड के बाहर बतलाते हैं । ग्रीस में ज़ार-ज सन्तानों की औसत एक हज़ार में चौदह के हिसाब से है । इस देश की और एक विशेषता यह है कि यूरोप भर में केवल यहीं स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की संख्या अधिक है । ग्रीक लोग बहुत कम शराब पीते हैं, और इसलिए वे विशेष प्रतिष्ठा पाने के योग्य हैं । देश में बहुत शराब बनती है; लेकिन स्थानीय लोग बहुत ही कम शराब का इस्तेमाल करते हैं । खाने पीने पर भी ये सदा संयम की दृष्टि रखते हैं । ग़रीब लोग एक दफ़ा और धनी लोग दो दफ़ा भोजन करते हैं । एक अँगरेज़ किसान एक दफ़ा में जितना भोजन करता है उतने में ग्रीक-परिवार के ६ आदमी गुज़र कर

लेंगे। ग़रीब लोग अधिकतर फल-मूल पर ही गुज़र करते हैं। राज्य में ज़मींदार पहले बिल्कुल थे ही नहीं; अब दो चार हो गये हैं। तुर्क लोगों की अमलदारी में राज्य की दो-तिहाई ज़मीन पर सुल्तान का ख़ास अधिकार था। जब ग्रीस स्वाधीन हुआ तो वह ज़मीन प्रजा के हाथ बेच डाली गई। ज़मीन का लगान अब भी मुसलमानी रीति के अनुसार फसल का दसवाँ हिस्सा लिया जाता है। कोई कोई नक़द देता है, नहीं तो अधिकांश लगान फसल में पैदा हुई चीज़ से ही अदा किया जाता है।

शिक्षा के सम्बन्ध में ग्रीस अनेक राज्यों से अच्छी स्थिति में है। सामान्य प्राइमरी शिक्षा से लेकर कालेज की शिक्षा तक सर्वसाधारण को मुफ़्त दी जाती है। आईन के अनुसार सात से लेकर बारह बरस तक के बच्चों को स्कूल में भेजना हर एक का कर्त्तव्य है। यहाँ के बच्चे ख़ुद पढ़ने के बड़े शौक़ीन हैं। हज़ार अटकाव होने पर भी वे स्कूल में ग़ैरहाज़िर नहीं होते। कालेज के लड़के तो ठीक हमारे देश के ग्रेजुएटों की तरह तन-मन से पढ़ने मे तत्पर देख पड़ते हैं। इसका फल यह हुआ है कि शिक्षित लोगों के मारे सारे देश के नाकों दम है। यहाँ एक कारीगर मिलना मुश्किल है, मगर कालेज के सनदयाफ़्ता सज्जनों की भरमार है। यहाँ के बहुत लोग कहते हैं, अब शिक्षा की ज़रूरत नहीं है, अन्त को देश में खेती होना बिलकुल बन्द हो जायगा। शिक्षित बहुत से हैं, नौकरियाँ कम हैं। बहुत से बेकार शिक्षित लोग हमारे देश की तरह जमा हो होकर राजनैतिक व्याख्यानबाज़ी में लग जाते हैं। एक तो व्याख्यानबाज़ी और तर्क की तेज़ी ग्रीक लोगों की बपौती ही है, दूसरे अब उस पर यूरोप का रङ्ग चढ़ गया है। फल यह हुआ है कि जहाँ देखो तहाँ चार ग्रीक जमा

होकर राजनैतिक तर्क-वितर्क कर रहे हैं। एक ग्रीक पण्डित ने दुःख के साथ लिखा है—"We manufacture nothing but professors and writers, whilst what Greece requires are men to cultivate her waste lands, artisans and engineers." ठीक हमारी ही ऐसी दशा है। अन्तर यही है कि ग्रीस देश का चरवाहा तक तर्कशास्त्री है। यह बात ग्रीस के लिए दोष हो गई है, लेकिन हमारे यहाँ होती तो गुण हो जाती। राज्य भर में कुल एक लाख के लगभग विद्यार्थी हैं। उनमें कुल २०००० स्त्रियाँ हैं। इससे जान पड़ता है कि स्त्री-शिक्षा के बारे मे ग्रीस कुछ पिछड़ा हुआ है। १८०० के लगभग प्राइमरी स्कूल हैं। उनके लिए देश की सब म्यूनीसिपेल्टियाँ अपनी आमदनी का छठा हिस्सा देती हैं। इन स्कूलों के समर्थ छात्रगण १० से ५० लेप्टा तक मासिक वेतन देते हैं। इनके सिवा ६०० के लगभग ग्रामर-स्कूल (छोटे विद्यालय) और ३०० से ऊपर हेलेनिक अर्थात् उच्च श्रेणी के स्कूल हैं। ३३ जिम्नेसियम (Gymnasium) अर्थात् कालेज और एथेन्स के विश्वविद्यालय हैं। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत चिकित्सा-शास्त्र के विभाग में विद्यार्थिनी स्त्रियाँ भी भर्ती की जाती हैं। यूरोप के अनेक राज्यों में स्त्री-जाति को यह अधिकार अभी तक नहीं प्राप्त हुआ। ग्रीस में सभी विभागों में तनख़्वाह कम मिलती है। विश्वविद्यालय में ५२ प्रोफेसर और १२ फेलो (Fellow) हैं। सालाना २०० पौण्ड से अधिक तनख़्वाह किसी को नहीं मिलती। ग्रीस की प्रजा में हर सत्रह आदमियों में एक छात्र मिलेगा। गृहस्थों के नौकर-चाकर छुट्टी पाते ही पुस्तक पढ़ते या हिसाब सीखते हैं।

जल-वायु के सम्बन्ध में इटली, स्पेन आदि के इस लाटीट्यूड

प्रदेश से ग्रीस बिलकुल विभिन्न है। जाड़े में जैसी कड़ी सर्दी पड़ती है वैसे ही गर्मियों मे करारी गर्मी होती है। मरु-भूमि का पास होना ही शायद इसका कारण है। ग्रीस को लोग "धूलिमय" कहते हैं, लेकिन यह बदनामी ग्रीस के उत्तर-भाग को ही दी जा सकती है। दक्षिण-भाग में अनेक जलसम्पन्न प्रदेश हैं। बहुत जगह पानी के निकास का अच्छा प्रबन्ध न होने के कारण मलेरिया फैला करता है। उसमें अनेकों बच्चे नष्ट होते हैं और नौजवान लोग दुबले व कमज़ोर हो जाते हैं। मुझे तो इस अञ्चल के नगर, गाँव या राह में शायद एक भी मोटा आदमी देखने को नहीं मिला। ग्रीस में तरह तरह के फल-मूल मिलते हैं; लेकिन यहाँ का पीले रंग का 'पिच्' फल बहुत ही स्वादिष्ट और मीठा होता है।

दक्षिण-उपद्वीपों के साधारण नियमानुसार ग्रीक लोग सुस्त होते हैं; वे समय की क़दर करना कम जानते हैं। रेल की गाड़ी जब किसी बड़े स्टेशन में कुछ देर के लिए ठहरती है तब जल-पान करने के लिए यात्री लोग गाड़ी पर से उतर जाते हैं; बाद को गाड़ी छूटने का घंटा दो-तीन बार बजने पर भी—एंजिन के सीटी देने पर भी वे लोग फुर्ती नहीं करते। जब देखते हैं कि गाड़ी धीरे धीरे खिसकने लगी तब ज़रा जल्दी से लपक कर गाड़ी पर चढ़ते हैं। ग्रीस के सब निवासी ग्रीक नहीं हैं। राज्य में अधिकतर तीन जातियों के मनुष्य रहते हैं—ग्रीक, अलबेनियन और वालाचियन। इनकी भाषा, पहनाव और आचार-व्यवहार जुदा जुदा है और परस्पर हेल-मेल भी कम है। वालाचियन और अलबेनियन लोग ग्रीकों की लड़की ले लेते हैं, परन्तु अपनी लड़कियाँ उनको नहीं देते। इस जाति के लोग पहले "ब्रिगाण्ड्" अर्थात् दस्यु-व्यवसायी थे। ग्रीक लोग तीक्ष्ण-बुद्धि, उत्सुक, ज्ञानोपार्जननिरत, शिक्षाचतुर, मानसिक तेज रखने-

वाले, देशहितैषी, स्वाधीनताप्रिय, साम्यवादी, सभ्य, भव्य और सदा प्रसन्न-मुख रहते हैं। आत्म-हत्या और उन्माद को वे शायद जानते ही नहीं। पराधीनता—विशेष कर तुर्की अत्याचार की अधीनता—के कारण कई एक भारी दोष भी ग्रीक लोगों में घुस गये हैं। उनमें दुष्ट उच्चाभिलाषा, धूर्त्तता, आत्म-गौरव, दम्भ, अर्थलोलुपता, अन्याय से अर्थोपार्जन की चेष्टा और कायरता ये दोष प्रधान हैं। अब पाठक लोग विचार कर देखें कि हमारे साथ पहले जैसी इस जाति की दशा मिलती थी, वैसी ही समता, युगयुगान्तर बीत जाने पर भी, इस समय भी है या नहीं। हममें और उनमें अन्तर केवल इतना ही है कि वे लोग यूरोप की आब-हवा के कारण इस समय भी कुछ मनुष्यत्व के सहारे खड़े हुए हैं और हम बिलकुल लेटे हुए हैं। इसके सिवा दोनों की एक दशा है। दोनों की स्वाधीनता चार आदमियों के अनुग्रह पर निर्भर है। हम जैसे आर्य-वंश से उत्पन्न हैं किन्तु हमारे शरीर और मन मे कुछ भी आर्यों की बात नहीं देख पड़ती वैसे ही वही हाल ग्रोकों का है। जो प्रतापी ग्रीक लोग साधारण संसार में और मानसिक राज्य मे महान् वीरों के योग्य कार्यों के द्वारा अमर हो गये हैं उनका कोई भी चिह्न उनकी वर्त्तमान पौध में नहीं देख पड़ता। बहुत दिनों से वे चिह्न इस जाति से विदा हो गये हैं। अनेक जातियों के मेल से आधुनिक ग्रीक लोग एक बिल्कुल नई ही जाति बन गये हैं। इसके सिवा कई शताब्दियों तक विदेशियों—ख़ासकर तुर्कों—के अत्याचार से ग्रीक लोगों की ठीक हमारी ही ऐसी दशा होगई है। अब तक ग्रीक लोग हमारी ही तरह पूर्व-गौरव की ख़ुमारी में चूर थे ; समझते थे कि भूतकाल का सब कुछ अच्छा था और वर्त्तमान का सब कुछ बुरा है। पण्डित फ़्रीमेन ने लिखा है—"Among the Greek themselves a vague re-

membrance of days long past—of days whose direct practical effect on modern affairs is slight indeed—has stood in the way of the development of a true and healthy national life." इसी रोग में ग्रीक लोग इतने दिनों तक अवनति की यातना भोग रहे थे। सुख की बात है कि अब यह भाव बहुत कम होगया है। एथेन्स, कोरिन्थ आदि स्थानों में मैंने जिन अँगरेज़ी-पढ़े चिन्ताशील लोगों से बातचीत करते समय उन लोगों की पहले की उन्नत अवस्था और भारत के साथ उनके संबन्ध की चर्चा चलाई, उन्होंने ही कहा कि "इतने दिनों तक इन सब बातों की आलोचना में हमारा समय नष्ट हुआ है। अब हम इस ओर ध्यान नहीं देते। अन्य चार जातियों के अनुग्रह से इस समय हम स्वाधीन हो सके हैं; अब हम लोग इसी के लिए पूरी चेष्टा करेंगे कि यूरोपियन जातियों में हमें भी कुछ जगह मिले। हमारी जाति की साधारण मूर्ख-श्रेणी को विश्वास है कि ईसाई-धर्म के प्रताप से प्राचीन काल के देवी देवता पहाड़ों आदि पर भाग गये और वहीं छिप कर रहते हैं। देवतों के अस्तित्व के सम्बन्ध में उनकी ऐसी दृढ़ धारणा है; किन्तु उन देवतों के दूर हो जाने से किसी प्रकार के 'अभाव' का अनुभव भी उन्हें नहीं होता। उसी तरह हम लोग पूर्वज महापुरुषों के प्रति समुचित भक्ति और श्रद्धा होने पर भी एक प्रकार से उन्हें भूल ही गये हैं। प्राचीन काव्यों में वर्णित वीर-कथाओं को कवि की कल्पना-मात्र समझ कर हम लोगों ने उन्हें वैसा ही स्थान दे रक्खा है। प्राचीन भारत के साथ हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध था, अथवा तुम्हारे साथ किस किस ज्ञान-विज्ञान का लेन-देन हमने किया है, इन बातों से इस समय पेट नहीं भर सकता। इत्यादि।" साधारण शिक्षित भद्र पुरुषों ने

प्राचीन-भारत के साथ प्राचीन-ग्रीस की वन्धुता की वात सुनकर धन्यवाद देकर ही टाल दिया। इसी से जान पड़ता है कि अव ग्राक जाति के दिमाग़ से प्राचीन गौरव की वू वहुत कुछ निकल गई है। निस्सन्देह यह उस जाति के लिए शुभ लक्षण है। दुःख की वात है कि हम लोग अभी तक उक्त प्रकार के मोह से छुटकारा नहीं पा सके हैं। ग्रीक लोग जैसे वर्त्तमान के अनुगामी हो रहे हैं वैसे वही हमारा भी कर्त्तव्य है। इसके सिवा, वातें वनाना, अप्राकृतिक अभिनव उपायों से जीर्णोद्धार का आन्दोलन करना, पङ्कोद्धार का परामर्श देना, तालियाँ पीट कर—रफ़ू करके—मान-मर्यादा वनाये रखने की चेष्टा करना सव व्यर्थ है। केवल प्राचीन गौरव की स्मृति पर अकड़ना अपने को आप मिट्टी वनाना है। कवि कहता है—

> "Are we not creatures of one hand divine,
> Formed in one mould, to one redemption born,
> Kindred alike where'er our skies may shine
> Where'er our sight first drank the vital morn?"
>
> —*Manzoni*

भगवान् के यहाँ से कोई आर्य या अनार्य की छाप लेकर नहीं आया। सभी नर-शरीर-धारी जीव मनुष्य नाम के अधिकारी और परमात्मा की प्रधान प्रिय वस्तु हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि आख्यायें तो यहाँ कल्पित हुई हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि भेद-सूचक शब्द भी विधाता के निकट घृणित हैं। इस पृथ्वी-गृह में उन्होंने मनुष्य-मात्र को स्थान दिया है। सवको चाहिए कि मिल कर ज्ञान, प्रेम और पुण्य की उन्नति करें। भगवान् की कभी यह इच्छा या अभिप्राय नहीं कि हम सव लोग आपस में भेद-भाव की कल्पना करके एक दूसरे को हीन-दृष्टि से देखें। सृष्टि उत्पन्न करनेवाला एक

है और सारी मनुष्यमण्डली उसका एक परिवार है। इस सत्य पर दृष्टि देने से हर एक को यही जान पड़ेगा कि सारी पृथ्वी के मनुष्यों को मिलकर उन्नति करनी चाहिए। एक अंश को चढ़ कर दूसरा अंश उन्नति करेगा तो किसी समय उस उन्नत अंश को अवश्य विपत्ति का सामना करना पड़ेगा। यदि स्थानीय अथवा अवस्थागत किसी कारण से एक अंश उठने में समर्थ हो तो अपनी रक्षा के लिए उसका कर्त्तव्य है कि उस अंश के लोग अपने आस-आप के असमर्थ भाइयों को भी हाथ का सहारा देकर उठाने की चेष्टा करें। यदि इस कर्त्तव्य के पालन में वे कुछ त्रुटि करते हैं तो फिर उनका अधःपतन अनिवार्य हो जाता है। प्राचीन हिन्दू, ग्रीक और रोमन लोग इसका प्रमाण हैं। हिन्दुओं की म्लेच्छों के प्रति, ग्रीकों की वार्वेरियनों के प्रति और रोमनों की पेरिग्रिनियों के प्रति विजातीय उपेक्षा रहने के कारण उक्त तीनों जातियाँ प्रकृति के कठोर नियम के अनुसार घोर अवनति को प्राप्त हो चुकी हैं। यदि हिन्दू-लोग अनार्य-शूद्रों को, ग्रीक लोग परोसी भिन्न जातीय जीवों को और रोमन लोग परदेशी पराजित लोगों को क्रमशः अपने साथ मिलाकर उनको समान उन्नत पद का अधिकारी बनाने की चेष्टा करते तो इनमें से किसी का भी ऐसा अधःपतन न होता।

स्वीज़र्लेंण्ड ।

The mountains of this glorious land
Are conscious beings to mine eye
* * * *
—O ye everlasting hills!
* * * *
Can there be eyes that look on you,
Till tears of rapture make them dim?

—*Montgomery*

आल्प्स् (Alps) । सन् १८६१ की यात्रा मे कर्फ्यू से त्रिण्डिसी, नेपल्स, रोम, फ्लोरेन्स और मिलन होता हुआ स्वीज़र्लेंण्ड गया । मिलन की सड़क पर जगह जगह थर्मामेटर लगे देख कर मैं समझ गया कि आल्प्स् की आब-हवा में पहुँच गया । मिलन से सवेरे रवाना होकर लम्बार्डी (Lombardy) के अन्तर्गत कामो (Como)—झील के किनारे बने हुए कामो-नामक प्रथम स्टेशन पर पहुँचा । रेल पर से झील की मनोहर शोभा देखते देखते इटली की सीमा के बाहर निकल गये । शियासो (Chiasso) स्टेशन से चिर-तुषारावृत पहाड़ों का सिलसिला मिला । शियासो मे खड़े पहाड़ पर चढ़ने की रेल का एक नया ही ढङ्ग देखा । तीन लाइन पटरी के ऊपर छोटी छोटी गाड़ियाँ चलती हैं । बीच की लाईन से डबल पटरी रहती है । एंजिन के अगल बगल और नीचे छोटे-बड़े अनेक पहिये होते

हैं। इस देश की रेल्वे मे पैन्ट्सूमैन का काम सब औरतें ही करती हैं। उनके हाथ में झंडी और कमर मे बिगुल लटकता रहता है। पैरों में काठ का जूता चमड़े से बँधा रहता है। शियासो के बाद लुगानो (Lugano) झील मिली। उसके किनारे कुछ देर तक चल कर हमारी गाड़ी पुल के द्वारा उस झील के पार पहुँची। यहाँ पर अनेक पहाड़ी झरने थे। झील में एक स्टीमर खड़ा था। अब धीरे धीरे हमारी गाड़ी पहाड़ पर चढ़ने लगी। दोनों ओर नदी और रापिड् बह रहे हैं और झरने ज़ोर से गिर रहे हैं। उनके बीच से होकर गाड़ी पहाड़ पर चढ़ रही है। देख कर आनन्द और विस्मय के मारे शरीर में रोमाञ्च हो आया। झील के किनारे की पर्व्वत-माला पर गाँव आदि के मनोहर दृश्य देखते देखते जब खूब ऊँचे पर पहुँच गये तब वहाँ से नीचे नदी, झील, गाँव, बाग़ और उपत्यका आदि का दृश्य एक परम सुन्दर चित्र के समान जान पड़ने लगा। इसके बाद बेलिञ्जोना (Bellinzona) स्टेशन मिला। स्टेशन के चारों ओर अगणित झरने थे। नीचे से पहाड़ के ऊपर तक एक मोटा तारों का रस्सा लगा हुआ था। बेलिञ्जोना स्टेशन के बाद ध्यान देकर मैंने देखा, आगे पीछे दो एंजिन हैं। इसके बाद दो दफ़ा पहाड़ की प्रदक्षिणा करके ऊपर रेल चढ़ी। यहाँ की इञ्जीनियरी अद्भुत है। इसके बाद एइरोलो (Airolo) स्टेशन मिला। उसके बाद १० मील का सेन्ट-गाथार्ड (St. Gothard) टानेल देख पड़ा। इतना लम्बा टानेल पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। अबसे पहले अनेक टानेल पार हुए थे, किन्तु अब की बार विशेष बन्दोबस्त के साथ सब खिड़कियाँ बन्द कर दी गईं। बीच बीच मे जलती हुई लालटेनें लुप से निकल जाती थीं; ऊपर से टप-टप करके पानी टपक रहा था। इसी तरह २० मिनट तक गाड़ी

चलती रही । इसके बाद गोसेनेन (Goeschenen)) स्टेशन पर आने पर प्रकाश मिला । यहाँ पर भोजन का समय हो जाने के कारण बहुत देर तक गाड़ी खड़ी रही। उतर कर मैंने कुछ जल-पान किया और वहाँ की कुछ चीज़ें (Curiosities) ख़रीदीं । ज़रा देर स्टेशन मे इधर उधर घूम भी आया। सामने बर्फ़ से ढका हुआ पर्वत का शिखर था और इधर उधर भीषण गर्जन-शब्द के साथ कई एक रापिड (Rapid) बह रहे थे । कई एक यात्रियों और स्टेशन के कर्मचारियों के सिवा और कोई सनकता भी न था । मानों यह स्थान पृथ्वी से अलग ही था । यह स्टेशन ७,००० फुट के लगभग ज़मीन की सतह से ऊँचा है । सुना कि पास ही एक आश्रम (Hospice) है, उसमे यात्रियों की बड़ी ख़ातिरदारी होती है। यहाँ से रेल बड़े वेग से नीचे उतरने लगी। अन्त को तीसरे पहर लूज़र्न (Luzern) झील के किनारे बने हुए फ्लूलेन (Fluelen) स्टेशन पर पहुँचने पर स्टीमर मिला । यहाँ पर झील शुरू होने के कारण मुसाफ़िर लोग अपनी इच्छा के अनुसार लूज़र्न नगर तक रेल पर अथवा स्टीमर पर जा सकते हैं । झील की सैर करने की इच्छा रखनेवाले लोग स्टीमर पर बैठ गये ।

लूज़र्न झील । यहाँ का नौका-विहार एक बड़े मज़े का मनोरञ्जन है । चारों ओर बर्फ़ से ढकी हुई पर्वत-माला है । उसके भीतर सुन्दर छोटे छोटे नगरों से शोभित किनारेवाली झील में स्टीमर पर जाना बहुत ही आनन्ददायक होता है। यह झील २५ मील लम्बी और ५१० फुट गहरी है। इसके चारों ओर का दृश्य बहुत ही सुन्दर है । एक अँगरेज़ यात्री लिखता है—"It is distinguished above every lake in Switzerland, perhaps in Europe, by the beauty and sublime

grandeur of its scenery." इसी के किनारे स्वीज़र्लैण्ड की स्वाधीनता का सूत्रपात हुआ और जगत्प्रसिद्ध विलियम टेल (William Tell) की वीरता प्रकाशित हुई। इन सब विषयों के प्रधान अँगरेज़ी के ग्रन्थ में लिखा है—"The lake of—Lucerne has extraordinary interest for the physical geographer, for the lover of natural scenery, and for all who feel sympathy with the story of Swiss independence"—*Encyclopædia Britannica.*

इस प्रसिद्ध झील को विदेशी लोग लूज़र्न या लूसर्न कहते हैं। किन्तु इसका स्थानीय नाम है "वियेर्वाल्डस्टाटर्सी" (Vierwaldstattersee)

लूज़र्न। यह कान्टन (Canton) अथवा खण्ड का प्रधान नगर है। झील से रय़ूस (Reuss) नदी निकली है। उस नदी के दोनों तटों पर और झील के किनारे नगर बसा हुआ है। २२,००० के लगभग लोगों की वस्ती है। पहले इस नगर में चहारदीवारी और उसके टावर थे। उनके कुछ कुछ भग्नावशेष अभी तक खड़े हुए हैं। जैसा छोटा सा नगर है वैसी ही छोटी सी लाइब्रेरी, म्यूज़ियम, टाउन हाल आदि सब कुछ हैं। नदी के ऊपर दो छाये हुए और दो खुले हुए पुल हैं। यहाँ प्रधान देखने की चीज़ है नगर के सिरे पर पहाड़ में ढाल वल्लम से चोट खाये हुए सिंह की खुदी हुई मूर्ति। सन् १७९२ की १० वीं अगस्त को फ्रेञ्च-विप्लव के आरम्भ में राजा के जो भक्त और विश्वासी स्वीस-रक्षक (Swiss Guards) विद्रोही प्रजा के हाथों मारे गये थे उनका यह स्मारक-चिह्न है। प्रसिद्ध कारीगर थरवाल्डसन ने इसका डिज़ाइन बना दिया था। और एक देखने की चीज़ है ग्लेसियर बाग़ (Glacier Garden)। यहाँ युगयुगान्तर

की नहरें, निशान, गढ़े आदि सब ग्लेसियर-चिह्न पत्थर पर अंकित हैं। सभी पर्यटक स्वीकार करते हैं कि—

"The position of the town is singularly beautiful." होटल में जिस जगह खड़े होकर देखो, सामने सुन्दर दृश्य देख पड़ेगा। जिस खिड़की से बाहर झाँको, प्रकृति की मनोहर छटा मन को मोहित कर लेगी। नगर के जिस स्थान पर जाकर देखो, रमणीयता के सिवा कुछ भी कुत्सित नज़र नहीं आता। इस प्रदेश का सूर्योदय और सूर्यास्त, दोनों ही, समान सुखदायक हैं। दोनों ही दृश्य चित्ताकर्षक हैं। वर्फ़ से ढकी हुई सफेद चोटियों-वाले पहाड़ी सिलसिले के पीछे से ऊपर चढ़ने के समय सूर्यदेव जैसे वहाँ विपरीत ओर के और आसपास के श्वेत शिखरों पर और झील के पानी पर स्वर्णवर्ण किरणें छिटका कर दर्शकों को पुलकित कर देते हैं वैसे ही अस्त के समय भी।

बाज़ेल (Basel)। यद्यपि इसका स्थानीय नाम है बाज़ल, किन्तु फ्रेञ्च लोग इसे बाल् कहते हैं और इसी से कन्टिनेन्ट में यही नाम प्रचलित है। राईन नदी के दोनों तटों पर बसे हुए इस वाणिज्य-प्रधान नगर का नम्बर देश भर में दूसरा है। यह स्वयं एक कान्टन या ज़िला है। स्थानीय विश्वविद्यालय के अध्यापक महामति इरास्मस (Erasmus) ने यहीं पर पोप की शक्ति के साथ घोर संग्राम किया था। अँगरेज़ लोग कहते हैं—"Erasmus sapped a solemn creed with a solemn sneer बाज़ल में ही इरास्मस का देहान्त हुआ था और नगर के प्रधान गिर्जे (मिन्स्टर) में वह गाड़े गये। बहुत लोग इस स्थान को तीर्थस्वरूप समझते हैं। चित्रकार हाल्बिन इसी नगर में पैदा हुए थे। इस गिर्जे में उनके हाथ के कई चित्र सुशोभित हैं।

यह नगर ईसाई-धर्म-प्रचार के काम का एक प्रधान स्थान है। यहाँ से ईसाईमत के प्रचारक लोग देश-विदेश में भेजे जाते हैं। नदी के ऊपर का प्रधान पुल सुन्दर और चौड़ा है। राईन नदी जैसी अन्य स्थानों में है वैसी ही यहाँ भी है। सौन्दर्य से दोनों किनारों को सुशोभित किये हुए मदविह्वल भाव से यह नदी सागर की ओर बहती चली जा रही है। यह नगर कई पण्डितों का जन्मस्थान होने के कारण प्रसिद्ध है। नगर की लाइब्रेरी में दो लाख से अधिक छपे ग्रन्थों और पाँच हज़ार हस्तलिपियों का संग्रह है। इसके सिवा स्थान के माफ़िक म्यूज़ियम, चित्रशाला, पशुशाला और कई एक सुन्दर गिर्जे नगर की शोभा बढ़ा रहे हैं। यहाँ की लोकसंख्या एक लाख के लगभग है।

स्वीज़र्लेण्ड की साधारण अवस्था। देश प्राचीन है। रोमन अमलदारी में इस देश को 'हेल्वेशिया' कहते थे। राज्य का परिमाण १६,४६६ वर्ग मील का अर्थात् हमारे यहाँ के चार बड़े ज़िलों के बराबर है। राज्य में २२ विभाग या कान्टन हैं। ३७½ लाख से कुछ ऊपर लोग यहाँ बसते हैं। उनमें दो हिस्से रोमन कैथलिक, तीन हिस्से प्रोटेस्टेन्ट और बहुत थोड़े यहूदी और अन्यान्य सम्प्रदायवाले हैं। धर्म-विश्वास के सम्बन्ध में सब लोग स्वतन्त्र हैं। राज्य के तीन ओर की तीन जातियाँ (जर्मन, फ्रेंच, इटलियन) देश में रहती हैं और इसी कारण देश के तीन अंशों में तीन भाषायें प्रचलित हैं। राज्य का शासन साधारण परतन्त्र-प्रथा के अनुसार होता है। एक प्रेसीडेन्ट होता है, वह सात मेम्बरों के साथ राज्य के साधारण कार्यों का सम्पादन करता है। प्रेसीडेन्ट की सालाना तनख़्वाह ५४० पौण्ड और मेम्बरों की सालाना तनख़्वाह ४८० पौण्ड होती है। सन् १६१२ में ४१ लाख पौण्ड के लगभग राज्य

की आमदनी हुई थी और ख़र्च आमदनी से कुछ अधिक ही हुआ था । इस साल राज्य पर ऋण ५० लाख पौण्ड से कुछ अधिक था । हर-एक कान्टन (ज़िले) पर उसकी आमदनी, ख़र्च और ऋण का भार रहता है । भिन्न भिन्न ज़ोन (Zone) की तरह तरह की लताओं और वृक्षों के साथ तम्बाकू, पाट और सन इस देश में पैदा होता है । धातुओं में आस्फाल्ट (Asphalt) धातु अधिकता से पाई जाती है । जङ्गल बहुतायत से हैं । लकड़ी अधिक होने के कारण यहाँ के मकान अधिकतर लकड़ी के ही बने हुए हैं । शिक्षा के सम्बन्ध में स्वीज़र्लेण्ड को उच्च स्थान प्राप्त है । प्राथमिक शिक्षा मुफ़्त दी जाती है, और वह शिक्षा हर एक प्रजा को अवश्य ग्रहण करनी पड़ती है । देश के किसी किसी अंश मे पाँच से लेकर सोलह बरस तक हर एक बालक को आईन के अनुसार अवश्य स्कूल में पढ़ना पड़ता है । छात्र और छात्रियों की संख्या प्रायः बराबर ही है । प्रति वर्ष म्यूनिसिपेलिटी और राज्य की ओर से शिक्षा-विभाग के लिए न्यूनाधिक १½ करोड़ फ्रेंक ख़र्च किये जाते हैं । हर एक छात्र की शिक्षा मे ३५ फ्रेंक के लगभग लगता है । प्राथमिक विद्यालयों के सिवा हर एक कान्टन में एक एक कालेज है । देश के चार प्रधान नगरों में चार यूनिवर्सिटियाँ स्थापित हैं । इनके सिवा बच्चों और बालिग़ लोगों की शिक्षा के लिए जुदे जुदे स्कूल हैं । यूरोप के सभी देशों में थोड़े बहुत पहाड़ हैं, लेकिन स्वीज़र्लेण्ड को तो पर्वतमय कह सकते हैं । पहाड़ों पर हमेशा चढ़ने उतरने के कारण यहाँ के मनुष्य मजबूत और कष्ट सह सकनेवाले होते हैं । पहाड़ी जातियाँ सभी देशों मे सुस्थ और सबल हैं । यहाँ की फ़ौज १½ लाख के लगभग है । यहाँ का सिक्का फ्रांस के सिक्के के अनुसार है । पैसे को रापेन (Rappen) कहते हैं । दस रापेन का एक बाज़न

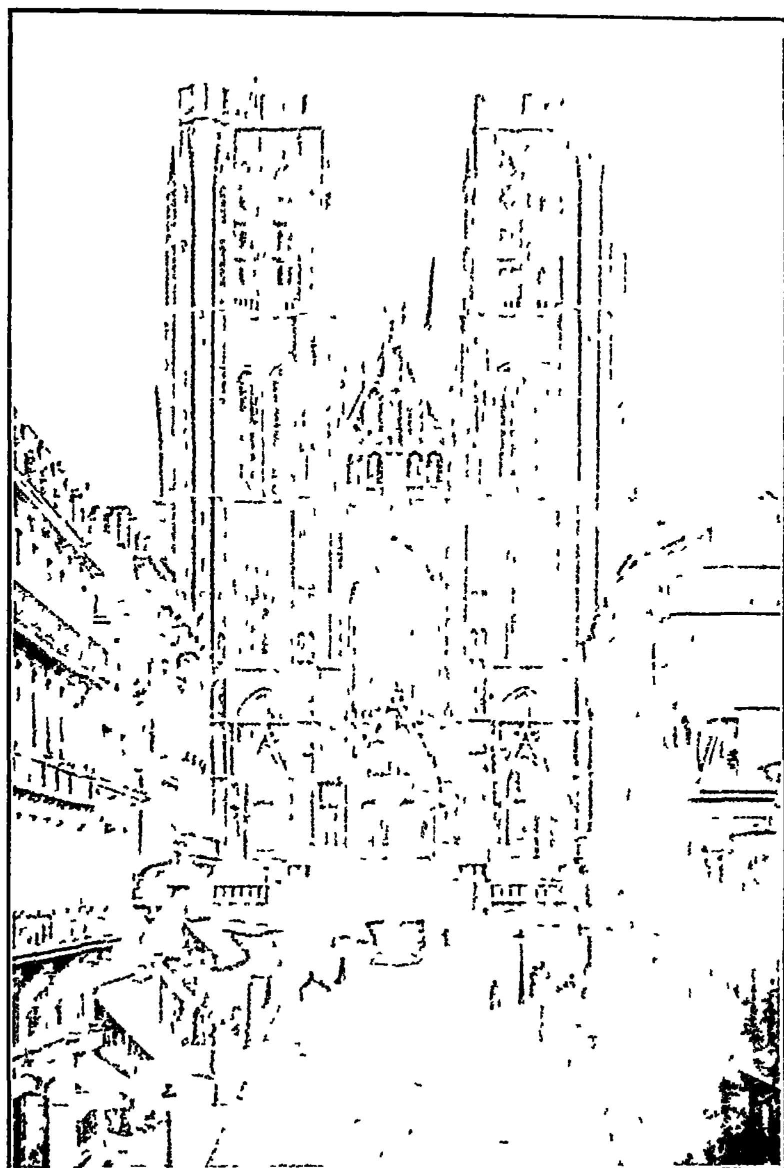
(Batzen) अर्थात् छोटा सा चाँदी का सिक्का भी चलता है । राज्य के ३४ वैंक नोट जारी करते हैं । सिक्के पर हेल्वेशिया (Helvetia) की मूर्त्ति और नाम अंकित है । यह बात किसी तरह अस्वीकार नहीं की जा सकती कि आल्प्स आदि पर्वतों ने यूरोप को सजीव बना रक्खा है । चारों ओर गम्भीर दृश्य देखते रहने से हृदय कुछ-न-कुछ उन्नत होगा ही । पण्डितवर रास्किन ने जो लिखा है वह गम्भीर उपदेश देनेवाला है । वह लिखते हैं—

"The feeding of the rivers and the purifying of the winds are the least of the services appointed to the hills. To fill the thirst of the human heart with the beauty of God's working,—to startle its lethargy with the deep and pure agitation of astonishment,—are their higher missions. They are as a great and noble architecture; first giving shelter, comfort and rest; and covered also with mighty sculpture and painted legend,"—Ruskin. सारे यूरोप में स्वीज़लैण्ड ऐसे छोटे देश को साधारणतन्त्र की स्वाधीनता शायद वृद्ध आल्प्स् की कृपा से प्राप्त है ।

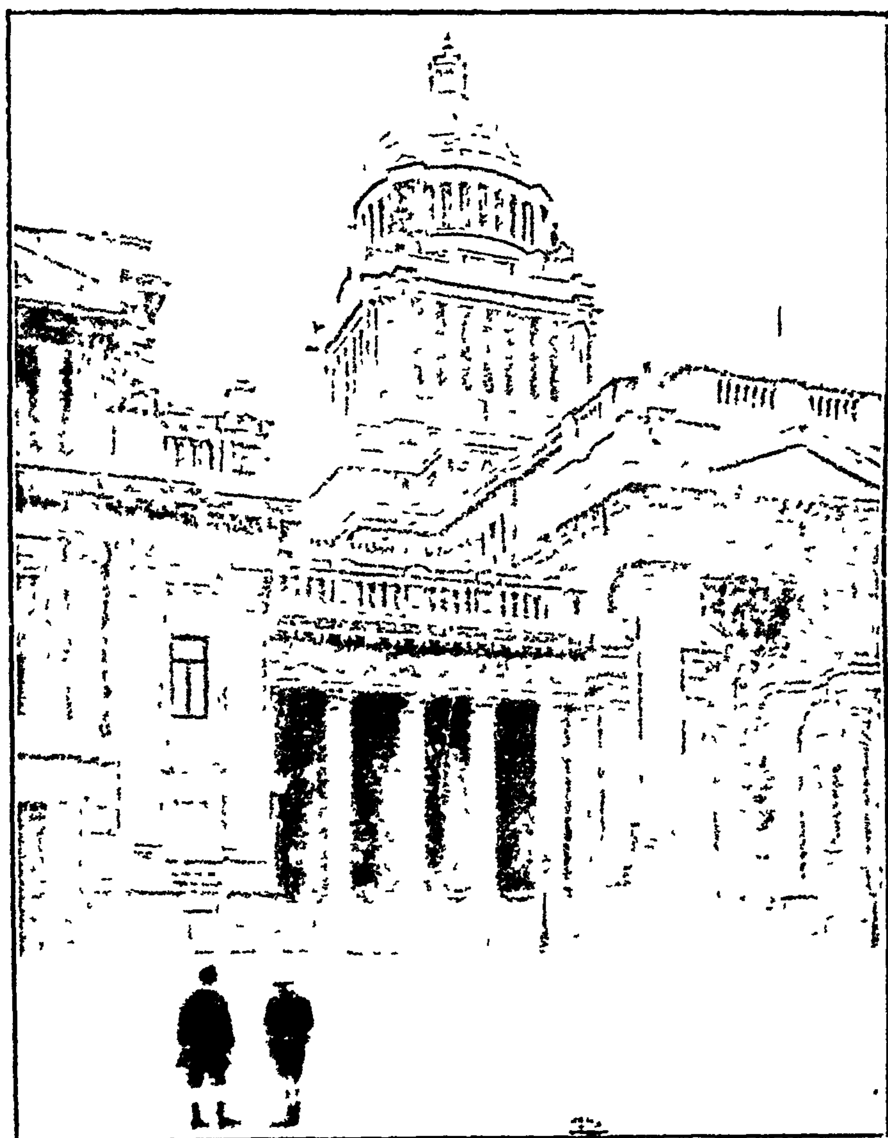
बेलजियम ।

ब्रुशल्स (Brussuls) । वाल् या वाज़ेल् से मेयॉज्, कोलोन होकर बेलजियम (Belgium) की राजधानी ब्रुशल्स मे पहुँचा । फ्रेंच लोग इस नगर को ब्रक्सेल कहते हैं । यह नगर सेईन नदी के किनारे पर बसा हुआ है । तीन प्रधान अँगरेज़-कवियों (बायरन, स्काट और सदी) ने ब्रुशल्स की बड़ी तारीफ़ की है । नगर का घेरा ७ मील का है । जन-संख्या कुछ अधिक दो लाख है । यह नगर दो हिस्सों में बँटा हुआ है । एक को ऊँचा या नया शहर और दूसरे को नीचा या पुराना शहर कहते हैं । ऊँचा शहर सूखा और स्वास्थ्यकर है । नीचे शहर की पुरानी बस्तियों मे सीलन बड़ी है । गर्मियों मे यहाँ अनेक रोग फैल जाते हैं । नगर नदीतट पर बसा हुआ है, यह बात पहले कही जा चुकी है । नदी पर अनेक खम्भे खड़े करके उनके ऊपर बुलवर्ड स्थापित किये गये हैं । पुराना ब्रुशल्स पञ्चकोण और बुलवर्डों से घिरा हुआ है । रास्ते खूब पक्के, साफ़ और रात को खूब प्रकाशित रहते हैं । नगर की सफ़ाई और शोभा देखकर बहुत लोग उसे छोटा-पेरिस कहते हैं । शहर सचमुच ही एक चित्र के समान मनोहर है । नगर में १४ स्क्वायर हैं । हर एक स्क्वायर एक बाज़ार है । ये स्थान अत्यन्त सुन्दर और सुरुचि का परिचय देनेवाले हैं । यात्रियों की राय में यहाँ की आलीवर्टी (Allee Verte) और पार्क से बढ़ कर हवा खाने की जगह यूरोप भर में और नहीं है ।

आलीवर्टी के दोनों किनारों पर पेड़ों की तीन तीन कतारें हैं। पार्क ५२ बीघे ज़मीन पर बना हुआ है। मनोहर रास्तों में थोड़े थोड़े फासले पर पत्थर की बनी हुई अनेक मूर्तियाँ रक्खी हैं। नगर मेंअनेक प्रकार की मूर्तियों के फुहारे हैं। उनमें प्रसिद्ध (Manneken Pis) नामक फुहारे में (एक छोटी सी मनुष्य-मूर्त्ति के मूत्र-द्वार से जल की धारा निकलती है) सन् १,५०० में स्थापित टाउनहाल की भारी इमारत का टावर ३६४ फुट ऊँचा है। उसकी चोटी पर १७ फुट चौड़ी सेन्ट माइकेल की ताँबे की मूर्त्ति खड़ी है। गिर्जों में दो गिर्जे प्रधान हैं; एक तो गुडुल (St Gudule) और दूसरा नट्रडाम दोनों ही गिर्जे अत्यन्त सुन्दर और सुसज्जित हैं। गुडुल गिर्जे के अन्तर्गत १६ चैपेल, चित्रसमूह, भास्कर-कार्य और प्रसिद्ध नक्काशीदार लकड़ी की वेदी देखने की चीज़ है। यहाँ के विचारालय की भारी पत्थर की इमारत ६५६ × ५५४ वर्ग फुट की है। उसका बीच का 'हाल' २७६ फुट ऊँचा है। इसके भीतर छोटे-बड़े २७० 'हाल' और ८ धर्माधिकरण बने हुए हैं। यह इमारत बनने में २० लाख पौण्ड ख़र्च हुए हैं। नगर के किनारे कोस भर का एक मनोहर उपवन (Bois de la Cambre) बहुत ही सुन्दर विहार-स्थान है। रविवार को बहुत लोग वहाँ जाकर खाने-पीने और मनोरञ्जन में ही दिन बिता देते हैं। यहाँ अनेक प्रकार के प्राचीन वृक्ष, सरोवर और ऊँचे-नीचे अनेक भूमि-खण्ड हैं। इनके सिवा राजमहल, राजा के भाई का महल, आरेन बर्ग के ड्यूक (Duke of Arenberg) का महल, पार्लियामेन्ट भवन, उच्च श्रेणी का बटानिकेल गार्डेन, पशुशाला, म्यूज़ियम, म्यूज़ियम के अन्तर्गत तीन लाख छपे ग्रन्थों और बीस हजार हस्तलिपियों से सुसज्जित लाइब्रेरी, उत्कृष्ट चित्र-शाला, आधुनिक चित्रावली, मूर्त्तियों का संग्रह,



सेन्ट गुडुल गिर्जा—पृ० ५८२



विचारालय—पृ० ५८२

जन्तु-शव धातु-संग्रह और शिल्प आदि की स्थायी प्रदर्शिनी, २४५ फुट का कांग्रेस-स्तम्भ (Congress Column), जगत्प्रसिद्ध भूगोल के जानकार मार्केटर (Gerardus Mercator) आदि कई प्रसिद्ध विद्वानों की स्मारक-मूर्त्तियाँ, सन् १८३० में देश की स्वाधीनता के लिए युद्ध मे मरे हुए वीरों की समाधि के ऊपर स्थापित पेट्रिया (Patria) अर्थात् स्वाधीनता देवी की मूर्त्ति (इस मूर्त्ति के पैरों के ऊपर पराधीनता का कटा हुआ सिर पड़ा हुआ है), और अन्यान्य बड़े आदमियों के महल-मकान आदि इस नगर की शोभा बढ़ाते हैं। (इस नगर मे एक विचित्र ढङ्ग देखा गया। वियर शराब की गाड़ियाँ फेरी लगाती फिरती हैं; रास्ते में लोग खड़े खड़े शराब लेते और पी लेते हैं।) इस नगर के जिस घर में वाटर्लू-युद्ध की पहली रात को डचेज़ आफ़ रिचमेण्ड ने बाल-नाच का उत्सव कराया था वह घर भी यात्रियों को दिखलाया जाता है। इस उत्सव का उल्लेख करते समय इतिहासवेत्ता एलिसन ने लिखा है—"Many brave men were there assembled amidst scenes of festivity and surrounded by the smiles of beauty, who were ere long locked in the arms of death."—Alison और कवि बायरन ने अपनी मनोमोहिनी भाषा में गाया है—

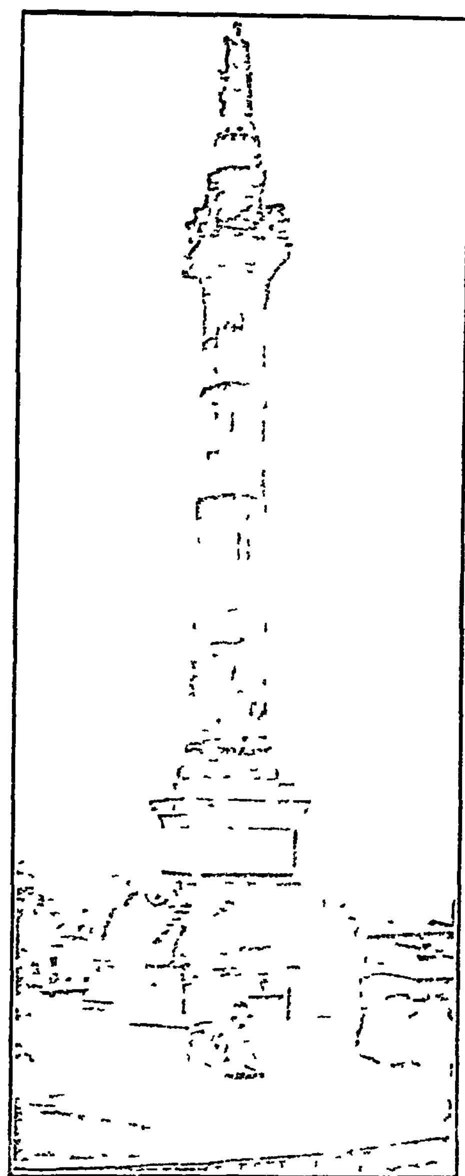
"Did ye not hear it? No, 'twas but the wind,
"Or the car rattling o'er the stony street,
"On with the dance! let joy be unconfined,
"No sleep till morn, when youth and pleasure meet
"To chase the growing hours with flying feet,
"But, hark!—that heavy sound breaks in once more,
"As if the clouds its echo would repeat,
"*And nearer, clearer, deadlier than before!*
"Arm! arm! it is! it is!—the cannon's opening-roar"

यहाँ के भले आदमियों के घर के ऊपरी खण्ड में खिड-

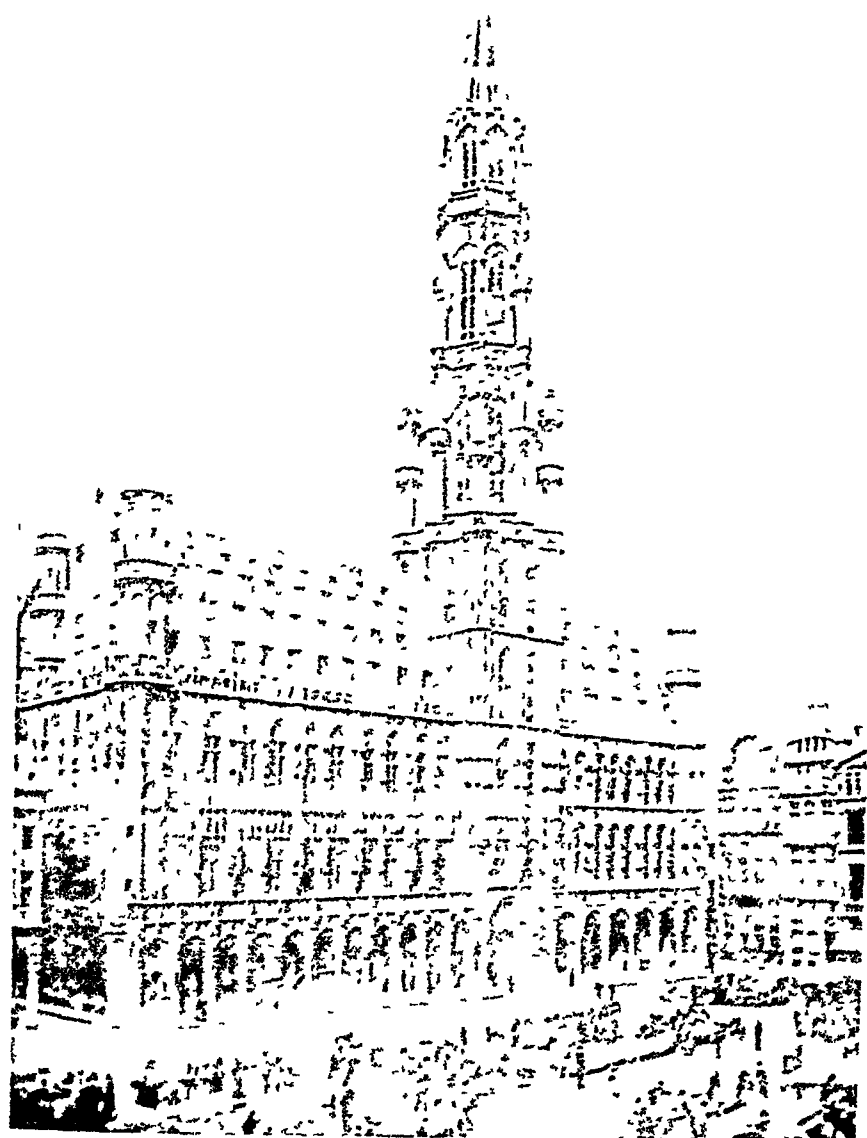
कियों के बाहर इधर-उधर दो बड़े बड़े आईनें रक्खे रहते हैं। जान पड़ता है, रास्ते में आने जानेवाली गाड़ियों आदि को देखने के लिए ही यह व्यवस्था की गई है। बेलजियम की राजधानी और अन्यान्य नगरों में वेश्याओं के लिए बड़े कड़े नियम जारी हैं। उनसे टेक्स लिया जाता है। अब तो कम हो गया है, लेकिन कुछ दिन पहले इस नगर में भयानक व्यभिचार फैला हुआ था; व्यभिचार के अनेक रूप देख पड़ते थे।

वाटर्लू का मैदान। एक दिन सवेरे इस यूरोपखण्ड के कुरुक्षेत्र को देखने गया। यद्यपि ख़ास वाटर्लू में स्टेशन है; लेकिन मैं ब्रान्लालू (Brain l'Allend) स्टेशन में उतरा। क्योंकि युद्धक्षेत्र यहाँ से निकट पड़ता है। स्टेशन पर उतरते ही बहुत औरत-मर्द दुभापियों ने आकर यात्रियों को घेर लिया। हम लोगों ने उनमें से किसी की भी सहायता नहीं ली; म्यूज़ियम-होटल* की गाड़ी पर बैठ कर उक्त होटल में पहुँचे। वहाँ के बूढ़े दुभापिये को साथ लेकर मैदान में गये। मैदान के बीच में एक स्तूप (Mound) है। उसके ऊपर "बेलजियन्-सिंह" मूर्त्ति (Belgian Lion) सुशोभित है। छोटे पहाड़ ऐसे एक ऊँचे ढूह के ऊपर पीतल की यह भारी सिंह-मूर्त्ति युद्ध के स्मारकचिह्न-रूप से स्थापित है। सन् १८३२ में एण्टवर्प नगर पर आक्रमण करने के लिए फ़्रेञ्च पल्टनें इधर से गई थीं। उन्होंने इसकी पूँछ तोड़ डाली थी; किन्तु अब फिर उसकी मरम्मत हो गई है। इस स्तूप पर चढ़ कर चारों ओर देखने लगा।

* सार्जेण्ट-मेजर काटन साहब वाटर्लू-युद्ध में ७ नं० (Hussars) पल्टन में थे। युद्ध समाप्त होने पर सब सामान इकट्ठा करके उन्होंने यह म्यूज़ियम स्थापित किया था। उन्हीं की एक आत्मीय महिला इस होटल और म्यूज़ियम की मालकिन हैं।



कांग्रेस-स्तम्भ—पृ० ५८३



ड्यूक श्राफ़ श्राग्नवर्ग का महल—पृ० ५८२

मन में एक अभूतपूर्व भाव का उदय हो आया । मैं सोचने लगा कि यही उस महासमर का मैदान है जिसे कवि बायरन ने "The first and last of fields, king-making victory" कहा है । दुभाषिया उँगली के इशारे से भिन्न भिन्न स्थान दिखा कर बरज़बान सबक़ की तरह सब युद्ध का वर्णन करने लगा । यथा—इस स्थान पर से वेलिङ्गटन ने आक्रमण किया था, इधर से ब्लूशर पहुँचे थे, इस अंश से नेपोलियन ने अन्तिम धावा किया था, इस जगह पर से फ्रेंच सैनिक चिल्ला उठे थे—"Tout, est perdu-la Garde repoussee!" (अर्थात्—सर्वनाश ! गार्ड पल्टन हट गई), इस जगह पर सेनापति बारट्राँ से "Tout a present est fini! Savouns nous." (अर्थात्—सब समाप्त हो गया, अब अपनी अपनी जान बचाओ) कह कर, विदा होकर, घोड़े पर नेपोलियन भागे थे । इस सुविस्तृत मैदान में युद्ध-सम्बन्धी दृश्य अनेक हैं । यथा Church of Waterloo, Farms of St. Jean, La Haie Sinte, Caillow and Frischemont; Hongoumont., Belle Alliance, Prussian Monument, Sir Alexander Gordon Monument (Aid-de-camp of Wellington. Died 18th June, 1815). इत्यादि । कुछ को पास जाकर देखा; कुछ को दूर ही से देख लिया । इस प्रकार मैदान की सैर करके होटल में लौट आये । कुछ विश्राम करके म्यूज़ियम देखने लगे । म्यूज़ियम में नेपोलियन के नाम और मुकुट-चिह्न से सुशोभित sulls नेपोलियन के हाथ का बनाया एक पुल का नक़्शा, कई एक खोपड़ियाँ और अस्त्र-शस्त्र आदि बहुत सा सामान देखा । यहाँ उस समय का एक टाइम्स अख़बार शीशे के भीतर रक्खा हुआ है । उसमे युद्ध के कई दिन पहले प्रकाशित नेपोलियन के घोषणापत्र का अविकल अनुवाद छपा हुआ है । कैसी तेज़ी और

घमण्ड के साथ वह लिखा गया था यह दिखाने के लिए इसकी नक़ल नीचे दी जाती है ।

PARIS, *17th June*,

General Order,

Avesnes, *June 14th*, 1815.

Soldiers! This day is the anniversary of Marengo and of Freidland, which twice decided the destiny of Europe Then as after Austerlitz, as after Wagram we were too generous We believed in the protestations and in the oaths of Princes whom we left on the throne Now however coalesced among themselves, they would destroy the independence and the most sacred rights of France They have commenced the most unjust aggressions, let us march then to meet them Are they and we no longer the same men?

Soldiers! at Gena, against these same Prussians, now so arrogant you were one against three, and at Montmirail one against six Let those among you who have been prisoners of the English, detail to you the hulks and the frightful miseries they suffered. The Saxons, the Belgians, the Hanoverians, the soldiers of the confederation of the Rhine, lament, that they are compelled to lend their arms to the cause of the Princes, the enemies of justice and the rights of all nations, they know that the coalition is insatiable! After having devoured twelve millions of Poles, twelve millions of Italians, one million Saxons, six millions Belgians, it must devour the second rank of Germany The mad men! a moment of prosperity blinds them

The oppression and humiliation of the French people are beyond their power If they enter France they will find their tomb. Soldiers! we have forced marches to make, battles to fight, dangers to encounter; but with steadiness victory will be ours, the rights, the honour, the happiness of the

country will be reconquered To every Frenchman who has a heart, the moment has arrived to conquer or perish

NAPOLEON

The marshal Duke of Dalmatia, Major-General

इस घोषणापत्र को पढ़ कर मुझे सेनापति कैम्बेल की याद आ गई। सिपाही-विद्रोह के समय लखनऊ-उद्धार के लिए आलम-बाग़ पहुँच कर उन्होंने ९३ नं० हाइलेण्डर-पल्टन को जिन चुने हुए शब्दों के द्वारा स्वाभाविक उद्वेग के साथ करुणा-पूर्ण भाव से उत्तेजित किया था उनके साथ तुलना करने से जाना जा सकता है कि नेपोलियन का यह घोषणापत्र कैसा दम्भ से भरा और असार है। सेना-पति कैम्बेल का भी घोषणापत्र नीचे उद्धृत किया जाता है।

After a prolonged cheer of rather a sort of welcome—Sir Colin Campbell to the 93rd (Highlanders) at (Allumbagh) on their march to Lucknow

Ninety-third, when I took leave of you in Portsmouth, I never thought I would see you again I expected the bugle, or may be the bagpipes, to sound a call for me to go somewhere else long before you would be likely to return to our dearly loved home But another commander has decreed it otherwise, and here I am prepared to lead you through another campaign And I must tell you, my lass, there is a world of difficulty and danger before us, harder work and greater dangers than any we encountered in the Crimea But I trust to you to overcome the difficulties and brave the dangers The eyes of the people at home, I may say, the eyes of Europe and of the whole of christendom are upon us, and we must relieve our countrymen, women, and children, now shut up in the Residency of Lucknow The lives at stake are not merely those of soldiers, who might well be expected to cut themselves out, or to die sword in hand But we have to

rescue helpless women and children from a fate worse than death. When you meet the enemy you must remember that he is well armed and well provided with ammunition, and that they can play at long bowls as well as you can, especially from behind loopholed walls So when we make an attack you must come to close quarters as quickly as possible; keep well together and use the bayonet. Remember that the cowardly sepoys who are eager to murder women and children, cannot look an European in the face when it is accompanied with cold steel Ninety-third, you are my own lads I rely on you to do this work

A voice from the ranks called out in reply.

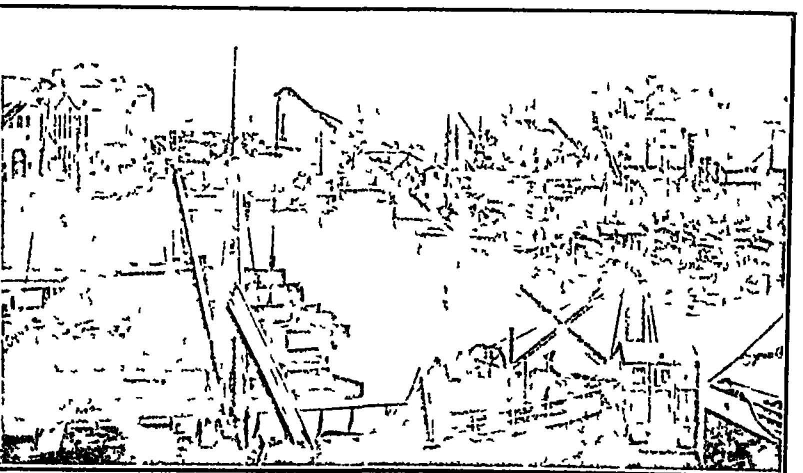
"Aye, aye, Sir Colin, ye ken us and we ken you; we will bring the women and children out o' Lucknow or die wi' you in the attempt"

The whole regiment burst into another ringing cheer, which was taken up by the whole line.

पाठकगण, देखिए, यह दृश्य कैसा वीरों के योग्य और मनोहर है। दुःख और विपत्ति की भयानकता समझाकर असहाय अबलाओं और बच्चों के लिए सैनिकों के हृदय में करुणा-सञ्चार करने में सेनापति ने कैसा महत्त्व का परिचय दिया। गोरों की फ़ौज ने भी अपने सेनापति की बात सुनकर उल्लास के साथ समर में सच्चा साहस दिखाने का प्रण किया। यही है ब्रिटिश लोगों की वीरता और महानुभावता। अँगरेज़ों का स्वभाव ही यह होता है कि वे काम करते हैं, बकते नहीं हैं।

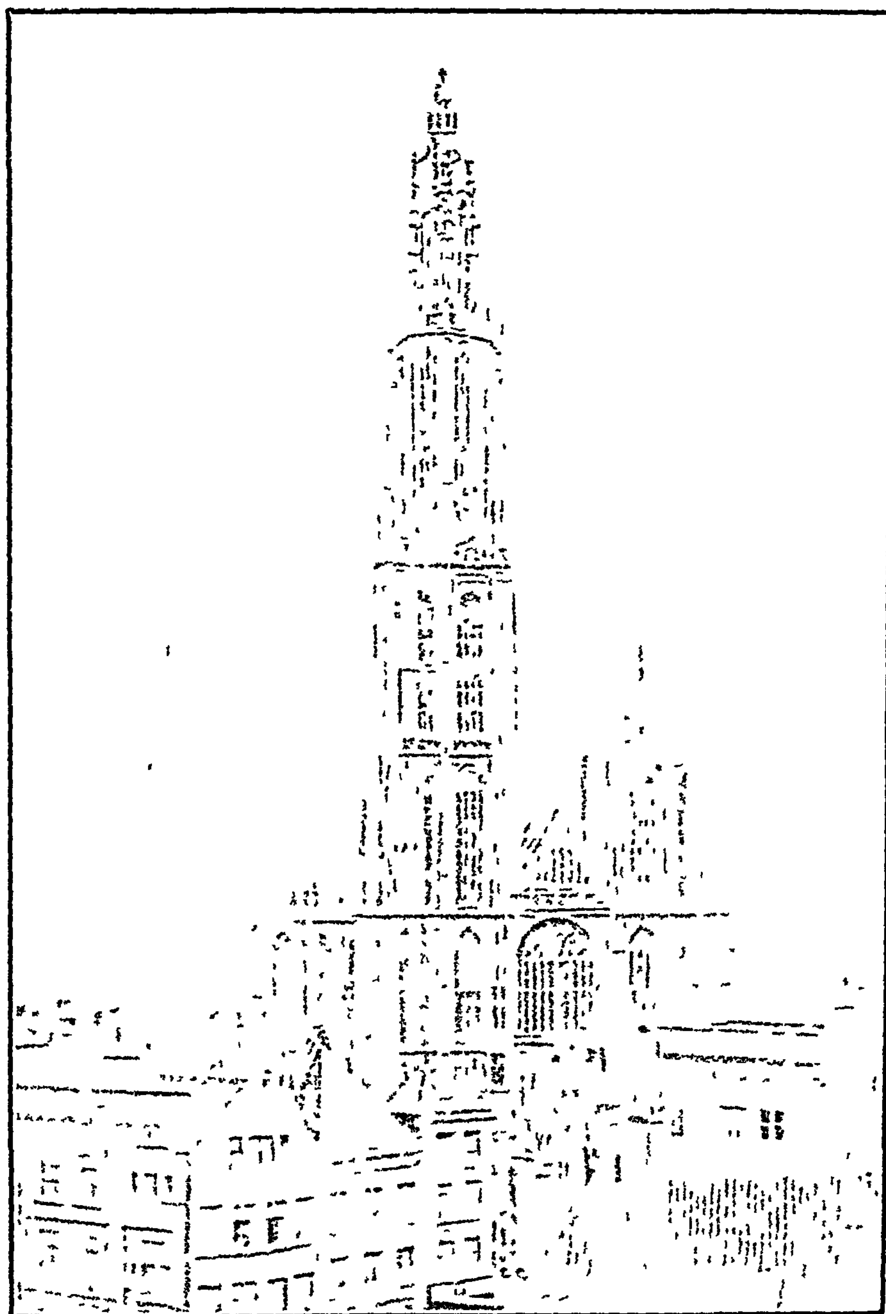
वाटर्लू-युद्ध के सम्बन्ध में अनेक जातियों के अनेक मनुष्यों के अनेक मत हैं। विदेशी समालोचकों को जाने दीजिए; हम लोगों में जो सज्जन नेपोलियन के पक्ष का समर्थन करते हैं उनसे मेरा केवल यही निवेदन है कि साधारण पेड़ का पत्ता तक जब विधाता





एन्टवर्प बन्दरगाह—पृ० ५८६





नट्डाम गिर्जा—पृ०-५६०

की इच्छा विना नहीं हिलता तब यह मानना ही पड़ेगा कि यह इतनी बड़ी घटना भी विधाता की इच्छा के अनुसार ही हुई है। नेपोलियन की अगर जय होती तो यूरोप की जो दशा होती उसकी कल्पना से रोमाञ्च हो आता है। नेपोलियन से कई भारी भूलें हुईं और उन भूलों से सौभाग्यशाली दूसरे पक्ष ने लाभ उठाया। विधता की इच्छा के अनुसार ऐसी अघटन-घटनायें सदैव हुआ करती हैं। सारांश यह कि धर्म-नीति से भ्रष्ट हुए विना कहीं कभी कोई नहीं हारा। रामायण और महाभारत के समय से लेकर आज तक इतिहास यही साक्षी दे रहा है कि "यतो धर्मस्ततो जयः"; अधर्म के मामले में हाथी भी मच्छड़ के द्वारा, चाहे जिस तरह हो, मारा जाता है। वाटर्लू-युद्ध मे तो मनुष्य मनुष्य की लड़ाई थी। धर्म की जय ही ईश्वर की इच्छा है।

एन्टवर्प (Antwerp) ब्रुशल्स से यहाँ आया। यह राज्य का प्रधान बन्दरगाह शेल्ड (Scheldt) नदी के किनारे पर है। इसका स्थानीय नाम है अँवेर (Anvers)। यहाँ २½ लाख आदमी रहते हैं। नगर के भीतर अनेक नहरें हैं, उनके द्वारा जहाज़ एक-दम शहर के भीतर आकर माल उतारते और लादते हैं। यहाँ के लम्बे चौड़े हार्बर मे भाटे के समय भी २८ फ़ुट पानी रहता है। यहाँ नेपोलियन ने कई एक उत्कृष्ट 'डेक्' बनवाये थे। उनमें २,००० जहाज़ ठहर सकते हैं। चालीस लाख पौण्ड ख़र्च करके दो मील का लम्बा बन्दर-घाट बनवाया गया है। अनेक पण्डित और कई चित्रकार इस नगर मे पैदा हुए हैं। यहाँ की चित्रशाला प्रसिद्ध है। पृथ्वी भर मे उसका तेरहवाँ नम्बर है। रुबेन्स के हाथ के 'मृत ईसा और मेरी' आदि तथा वान्डाइक के 'क्रूस पर ईसा' और 'क्रूस पर से ईसा को उतारना' आदि ७०० उत्तम चित्रों से यह चित्रशाला सुशोभित है।

स्थानीय प्राचीन नट्र-डाम् गिर्जा यूरोप में एक प्रथम श्रेणी का उपासना-मन्दिर है। इसमें ६ आइल (Aisle) और १२५ स्तम्भ हैं। ६ आइल का गिर्जा यूरोप भर में दूसरा नहीं है। यह ५०० × २५० वर्ग-फ़ुट का है। इसकी दो चोटियाँ हैं; उनमें एक अभी तक असम्पूर्ण पड़ी हुई है। दूसरी चोटी ४०३ फ़ुट ऊँची है। गिर्जे के भीतर रुबेन्स, मुरिलो आदि चित्रकारों के कई एक अत्यन्त उत्कृष्ट चित्र हैं। पश्चिम द्वार के बाहर एक लोहे का बना कुआँ देखने की चीज़ है। उसके पास ही रुबेन्स की मूर्त्ति खड़ी है। इसके सिवा उत्तम चित्र आदि से सुसज्जित और भी तीन बड़े गिर्जे हैं। सोलहवीं शताब्दी की बनी हुई टाउनहाल की इमारत भी बड़ी भारी है। एक्सचेञ्ज अथवा (Boures) भवन भी यहाँ का यूरोप भर में श्रेष्ठ था; दुःख है कि १८५८ में आग लगने से वह नष्ट होगया। अब जो दूसरा बना है वह भी बुरा नहीं है। बीच का फ़र्श १७० × १३५ वर्ग-फ़ुट है। चारों ओर ७० खम्भों पर रक्खी हुई डबल आर्केड्-दालाने हैं। नया क़िला और पशुशाला भी देखने लायक है। इस नगर का संकेत-चिह्न (Arms) दो हाथ हैं। इसी से इसका एण्टवर्प (Ant = हाथ, werp = छोड़ना) अर्थात् "हस्त-निक्षेप" नाम है। इसके सम्बन्ध में प्राचीन कहावत यह प्रसिद्ध है कि एन्टिगोनस (Antigonus) नामक दैत्य पहले यहाँ का स्वामी था। जो कोई उसे 'कर' नहीं देता था उसके दोनों हाथ काट कर वह शेल्ड् नदी में छोड़ देता था। पीछे से बार्बो (Barbo) नामक एक दूसरे दैत्य ने उसे मार डाला, और तब से वह आफ़त टली। हमारे यहाँ द्वारका-माहात्म्य में भी गोमती और कुश दैत्य के संबन्ध में ठीक ऐसे ही अत्याचार का वर्णन पाया जाता है। अब तक वहाँ गोमती में स्नान करनेवालों से वहाँ का राजा 'कर' लेता है।

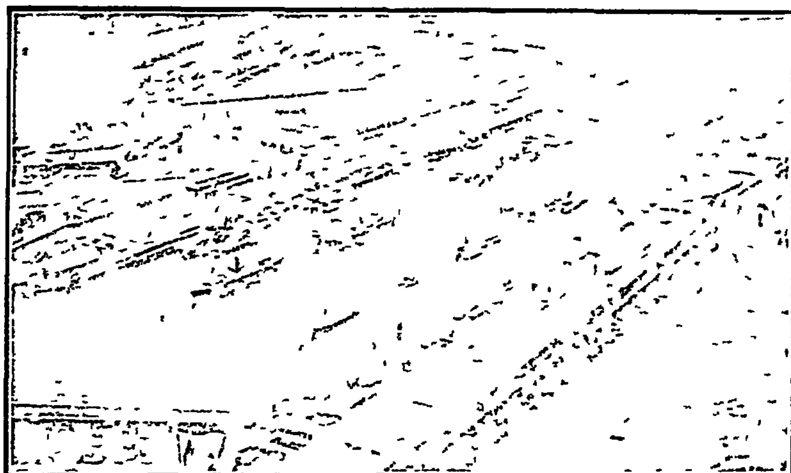
वेलजियम की साधारण अवस्था। सन् १७६५ तक यह देश आस्ट्रिया के अधीन रहा। सन् १८१५ में नेपोलियन ने इसे हालेण्ड के साथ जोड़ दिया। अन्त को सन् १८३० मे फ्रेञ्च-विप्लव के समय नेशनल कांग्रेस (जातीय सभा) ने राज्य की स्वतन्त्रता और स्वाधीनता की घोषणा कर दी। वर्त्तमान राजा अलवर्ट सन् १६०६ में सिंहासन पर वैठे थे। राज्य की शासन-प्रणाली वहुत ही अच्छी है। सारी क्षमता प्रजा के हाथ मे है और पार्लियामेण्ट सभा के द्वारा यहाँ का सव राज-काज होता है। साम्य और स्वाधीनता के सँवन्ध में तो वेलजियम एक आदर्श राज्य है। अपराधी को माफ़ी देने या उसकी सज़ा कम करने की क्षमता राजा को भी प्राप्त है। किन्तु यदि मन्त्रियों में से कोई अपराधी हो तो राजा केवल अपनी इच्छा से अपने उस अधिकार का व्यवहार नहीं कर सकता। राज्य में प्राणदंड की व्यवस्था नहीं है। जल-वायु के संवन्ध मे वेलजियम इँगलेंड से वहुत कुछ मिलता-जुलता है। केवल जाड़ा और गर्मी कुछ अधिक पड़ती है। देश के अधिकांश लोग वालून-फ्रेञ्च (Balloon) और फ्लेमिश (Flemish) भाषा का व्यवहार करते हैं। जर्मन-भाषा वोलनेवाले भी थोड़े से हैं। राज्य का घेरा ११,३७३ वर्ग-मील, अर्थात् हमारे यहाँ के वीस वाईस वड़े ज़िलों के वरावर होगा। उसमें ७५ लाख से कुछ अधिक आदमियों की वस्ती है। आवादी खूव घनी है; प्रत्येक वर्गमील में ५०० के लग-भग लोग वसते हैं। अधिकांश प्रजा रोमन कैथलिक धर्म को मानती है। थोड़े से प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के ईसाई और यहूदी भी हैं। सव धर्मों को राज्य एक ही दृष्टि से देखता है; किसी धर्म का पक्षपात नहीं किया जाता। सव धर्मों को राजकोष से समान सहायता मिलती है। सर्वसाधारण मे शिक्षा-प्रचार के लिए यहाँ की सरकार

विशेष चेष्टा करती है। राज्य के चार विश्वविद्यालय हैं। इनके सिवा शिल्प-शिक्षा और युद्ध-विद्या आदि की शिक्षा की व्यवस्था अलग है। यहाँ चार श्रेणी के स्कूल हैं—प्राथमिक, मध्य, उच्च और विशेष। प्राथमिक स्कूल ६,००० के लगभग हैं। अन्यान्य श्रेणी के स्कूल भी इसी हिसाब से स्थापित हैं। आईन के अनुसार हर एक म्यूनिसिपेलिटी को अपने इलाके में कम से कम एक प्राथमिक स्कूल अवश्य रखना पड़ता है। राज्य के और कम्यून अथवा म्यूनिसिपेलिटी के स्कूलों के अलावा बहुत से स्कूल पादरियों ने खोल रक्खे हैं। स्वीज़र्लेण्ड और बेलजियम मे दूध का कारोबार खूब है। बेलजियम से इँगलेण्ड को साल में २½ लाख पौंड का मक्खन रवाना किया जाता है। यहाँ १½ लाख फ़ौज है। युद्ध के समय एक लाख और जमा की जा सकती है। जहाज़ी सेना नहीं है। यहाँ आईन के अनुसार सभी को समर-विभाग मे कुछ दिन काम करना पड़ता है। राज मे एन्टवर्प को सबसे श्रेष्ठ और दृढ़ समझा जाता है। इसके सिवा और भी कई क़िले नये बनवाये गये हैं। सन् १९१२ में ३ करोड़ पौंड के लगभग राज-कर वसूल हुआ था। ख़र्च भी लगभग उतना ही हुआ। इस साल राज्य पर ९ करोड़ पौंड के लगभग ऋण था। यहाँ का सिक्का ठीक फ़्रांस के हिसाब से चलता है। सोने का भी सिक्का है। देश की राजधानी और अन्यान्य ९ नगरों में बड़े बड़े सरकारी दफ़्तरख़ाने (Archives) हैं। उनमें राज्य के इतिहास से संबन्ध रखनेवाले बहुत से प्रमाण-लेख बड़े यत्न से रक्खे हुए हैं। ब्रुशल्स और एण्टवर्प के दोनों दफ्तरखानों में ऐसे दो लाख के लगभग प्रमाण-लेख हैं। आर्त्त, दरिद्र, बूढे, अपाहिज, अनाथ बच्चे आदि असहाय प्रजा की सहायता के लिए राज्य में तरह तरह के बहुत से अन्तर्व्यवस्थान हैं। ये

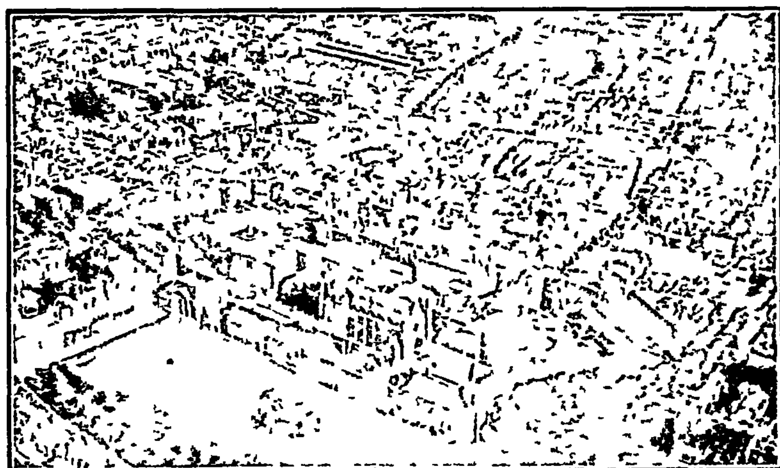
कम्यून (Commune) के द्वारा चलाये जाते हैं। किन्तु पूरा न पड़ने पर उस प्रदेश के सरकारी ख़ज़ाने से और अन्त को राज्य के ख़ज़ाने से आर्थिक सहायता मिलती है। दुखी और बेकार लोगों के लिए राजा और बड़े लोगों ने ऐसे अनेक कारख़ाने खोल रक्खे हैं जिनमें काम करते और खाने-पहरने को पाते हैं। इनके सिवा कुछ एक अनुष्ठान (Farm-hospitals) ऐसे हैं जिनमें असहाय बूढ़े और बच्चे परिश्रम-द्वारा एक दूसरे को सहायता पहुँचाते और इस प्रकार जीविका चलाते हैं। उन्होंने अपने मेहनताने के रुपयों से इन अनुष्ठानों को खोला है। खेती-पाती ही उनका प्रधान काम है।

हालेण्ड

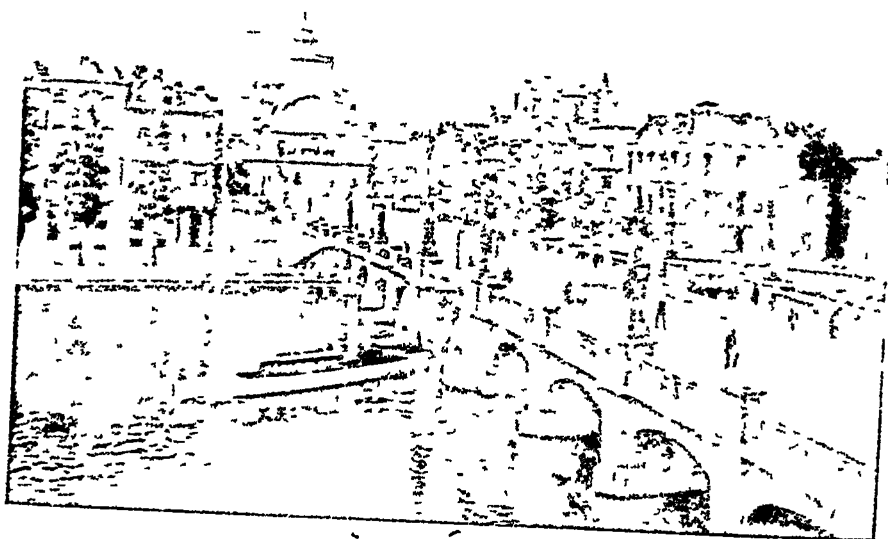
र टरडाम (Rotterdam)। एन्टवर्प से रेल पर चढ़ कर हालेण्ड (Holland) राज्य के द्वितीय नगर रट्टरडाम में पहुँचा। नगर नहर-मय है। नहरों के ऊपर पुल बने हुए हैं। एक तरह का वेनिस नगर जान पड़ता है। बड़े बड़े जहाज़ सड़क के किनारे खड़े रहते हैं। गाड़ी, घोड़े, नावें और जहाज़ पास ही पास चला करते हैं। यह नगर म्यूज़ (Meuse) नदी के किनारे अवस्थित और उस नदी की रट्ट (Rotte) नामक शाखा पर डाम अर्थात् बाँध बाँध कर बसाया गया है। इसी से इस का नाम रट्टरडाम पड़ा। वृक्षों की छाया से सुरक्षित सड़क सहित नदी-तट को वूम्पियेस (Boompjes) कहते हैं। नगर का यह अंश भारी भारी लट्ठे (Piles) गाड़ कर उनके ऊपर बनाया गया है। शहर में बड़े बड़े चार पाँच छः खण्ड के लाल ईंटों के मकान बने हैं और उनकी खिड़कियों के आस पास ब्रुशल्स की तरह बड़े बड़े शीशे रक्खे हुए हैं। स्थानीय स्त्रियाँ मस्तक पर सींग ऐसा एक सोने का विचित्र गहना पहनती हैं। ग्रूट-कर्क (Groot Kerk) अर्थात् बड़ा गिर्जा (यहाँ प्रसिद्ध नाविक 'एड्मिरल डि विट् Admiral De Witt आदि कई लोगों के स्मारक स्थापित हैं) आदि कई एक सुन्दर भजनालय, एक्सचेञ्ज (Beurs), एकमात्र स्कायर ग्रूट मार्कट् (Groote Market) अर्थात् बड़ा बाज़ार, बाज़ार में



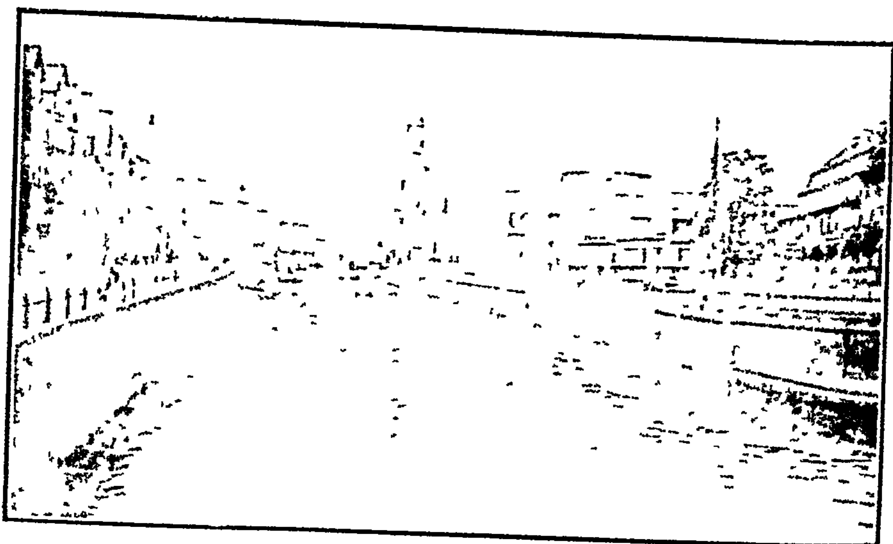
रट्टरडाम—पृ० ५६४



हेग—पृ०५६५



शीश-महल—पृ० ५९९



नहर और म्यूज़ियम, कोपेनहेगेन—पृ० ६०७

स्थापित इरास्मस्की मूर्ति, नाविक-निवास (Sailors' Home), प्रचीन ओलन्दाज़ी चित्र-कला के उस्तादों के हाथ के चित्रों का संग्रह (Boyman's Museum), वटानिकेल और जिओलोजिकेल गार्डेन, कर्क-स्ट्राट (Kerk Straat) में अवस्थित इरास्मस्का जन्म-स्थान और रहने का घर [इसमें इस समय पान-भवन (Tavern) स्थापित है], म्यूज़ नदी के ऊपर का भारी पुल—ये इस नगर के प्रधान दृश्य हैं। यहाँ दो लाख के लगभग आदमी वसते हैं। साल में एक बार एक सप्ताह तक रहनेवाला मेला (Kermis) यहाँ लगता है।

हेग (Hague)। इस नगर का स्थानीय नाम है श्रावनहग (S' Gravenhage)। किन्तु अँगरेजों में हेग और फ्रेंच ढंग से कन्टिनेन्ट के सब लोग इसे हग, अथवा ला-हग कहते हैं। स्थानीय नाम का अर्थ है काउन्ट का पार्क (Counts' Park)। काउन्ट द्वितीय विलियम ने यहाँ शिकार का अड्डा स्थापित करके गाँव वसाया था। यूरोप-खण्ड के सारे प्राचीन नगर चहारदीवारी से घिरे हुए थे। किन्तु इस नगर में कभी चहारदीवारी नहीं रही। इस कारण अनेक स्थलों पर "यूरोप में सर्वप्रधान ग्राम" कह कर इसका वर्णन किया गया है। नेपोलियन का भाई जिस समय इस देश का राजा था उस समय उसने इस की विशेष उन्नति की थी। हालेण्ड में यह "the handsomest the most fashionable and the most modern-looking town" है। सचमुच साफ़-सुथरी चौड़ी-सीधी सड़कों, वृक्ष-राजि-शोभित स्कायरों और मनोहर सुन्दर इमारतों ने नगर की शोभा को विशेष रूप से वढ़ा रक्खा है। नगर में नहरें भी हैं। यहा के रायल म्यूज़ियम आदि कई स्थानों में प्राचीन ओलन्दाज़ी चित्रकारों के हाथ के वहुत से चित्र रक्खे हैं। हाग्श् (Hagsch) म्यूज़ियम में कुछ

ऐतिहासिक सामान है। उसमे राजा तीसरे विलियम की कमीज़, वेस्टकोट और काँटेदार एक लकड़ी का गोला रक्खा है। गोले का सम्बन्ध स्पेन के विरुद्ध किसी ऐतिहासिक घटना से है। दुभापिये को अच्छी तरह मालूम न होने के कारण वह ठीक ठीक बतला नहीं सका। यहाँ प्राचीन समय में राजा को स्टाडहोल्डर (Stadtholders) अथवा नगराधिप कहते थे। उनके महल को इस समय पुराना महल कहते हैं। नगर के विशेष रूप से रमणीय अंश विवरवर्ग (Vyverberg) स्कायर और विवर-झील के पास यह महल बना हुआ है। यहाँ पर अनेक सुन्दर मकानात हैं। इस महल के अन्तर्गत रायल लाइब्रेरी मे तीन लाख ग्रन्थ, अनेक प्राचीन सिक्के और रत्न रक्खे हुए हैं। बड़ा हाल १३० × ६२ वर्ग-फुट का है। इसकी ऊँचाई ६९ फुट है। इसी हाल में देश के प्रधान आदमियों ने स्पेन की स्वाधीनता के विरुद्ध क़सम ली थी। नये महल में रानी थीं। इसलिए उसे नहीं देख सका। रानी वग़ैरह जब अन्यत्र चली जाती हैं तब सर्व-साधारण उस महल को देख सकते हैं। इस राज्य की राजधानी आम्स्टर्डाम (Amsterdam) होने पर भी राजा हेग में ही रहते हैं। इसलिए पार्लियामेण्ट-भवन और राज-मन्त्रियों के दफ़्तर आदि सब इसी जगह हैं। हेग मे एक जिओलो-जिकेल-गार्डेन और एक ओपेरा-भवन है। नगर में अनेक मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। उनमें से नहर के किनारे स्थापित यूरोप के प्रसिद्ध अद्वैवादी दार्शनिक यहूदी कुल-तिलक स्पिनोज़ा (Spinoza) की मूर्त्ति बहुतों के लिए तीर्थ-स्थान से बढ़कर है। सामने काग़ज़ है, एक हाथ में क़लम लिये दूसरे हाथ पर गाल रक्खे पण्डितवर जैसे कुछ सोच रहे हैं। स्पिनोज़ा का जन्म आम्स्टर्डाम में हुआ था। पेण्डुलम-घड़ी का आविष्कार करनेवाले प्रसिद्ध

ज्योतिषी हाइथेन्स (Christian Huygens) इसी नगर में पैदा हुए थे। किन्तु उनके सम्बन्ध का कोई चिह्न यहाँ नहीं देख पड़ा। यहाँ का 'बश' (Bosch [Bush]) अर्थात् वन-भवन एक मनोरम स्थान है। टापुओंवाली झीलों के चारों ओर बड़े बड़े वृक्षों का जङ्गल है और उसके भीतर यह भवन बना है। बाहर से तो यह घर सादा देख पड़ता है, किन्तु इसका भीतरी हिस्सा देखने के योग्य है। रास्ते-सड़कें, मकानात और स्थानीय सौन्दर्य में हेग यूरोप का एक उत्कृष्ट नगर है। दो लाख से अधिक लोग यहाँ रहते हैं।

शेवनिङ्गेन (Scheveningen)। हेग से तीन मील के फ़ासले पर जर्मन-समुद्र के किनारे यह छोटा सा नगर सैर करने लायक़ है। यहाँ जाने-आने के लिए हेग में रेल और गाड़ियाँ भी मिलती हैं। जाने के समय राजमहल से निकल कर दोनों ओर वृक्ष-श्रेणी से सुशोभित सुन्दर सीधी सड़क पर घोड़ागाड़ी पर गया। किन्तु लौटते समय रेल पर आया। यहाँ कई एक भारी इमारतें हैं। उनमें समुद्र-तट पर बना हुआ कुरहुइस (Kurhuis) विहार-भवन अत्यन्त रमणीय है। वहाँ अनेक प्रकार के तमाशे और मनबहलाव हुआ करते हैं। सामने रेती पर तम्बू के नीचे अनेक कुरसियाँ रक्खी रहती हैं; लोग पैसे देकर उन पर बैठते हैं और समुद्र की लहरों की लीला देखते देखते ताज़ी हवा खाते हैं। यहाँ मछलियों का खूब कारोबार होता है। जहाज़ भी यहाँ बनते हैं। यहाँ का डाइक (Dyke) देखने से मालूम पड़ा कि समुद्र की सतह के नीचे शहर बसा हुआ है। यहीं से विलियम और मेरी इँग्लेण्ड के सिंहासन पर बैठने के लिए गये थे और द्वितीय चार्ल्स अज्ञातवास के बाद फिर राज्य पाकर अपने देश को आये थे।

आम्स्टर्डाम। सन् १२०० में इसके पास मछुओं का एक छोटा

सा गाँव था । क्रमशः नगर बस गया और सन् १५७९ मे शुरू हुए भारतीय वाणिज्य-सम्बन्ध से इस नगर की समृद्धि का सूत्रपात हुआ । जुइडर-ज़ी(Zuyder Zee) की शाखा वाई (Ijory.) की प्रशाखा आम्स्टेल (Amstel) को बाँधकर उस पर यह नगर बसाया गया है; इसी से इसे आम्स्टेल—डाम या आम्स्टर्डाम कहते हैं । पहले यहाँ ६० फुट गहरी कीचड़ और बालूवाली गीली ज़मीन थी । वाई के ऊपर डाइक बाँध कर और इस ज़मीन पर लट्ठे गाड़ कर यह नगर बनाया गया है । दो बहुत बड़ी नहरें हैं; उन्ही से जहाज़ वग़ैरह यहाँ आते हैं । वाई के मुहाने (Ymuiden) पर अँगरेज़ इंजिनियरों ने जो हार्बर बनाया है उसमे २५ लाख पौण्ड की लागत आई है और उसका मुख ८५० फुट चौड़ा है । आस-पास के पियर (Piers) ५,००० फुट लम्बे हैं । नगर के भीतर से चार बड़ी नहरें निकली हैं । ३०० के लगभग पुलों से परस्पर संयुक्त ९० टापुओं पर लोग बसते हैं । आम्स्टेल के ऊपर का पुल ६१० फुट लम्बा है । यहाँ का राज-भवन पहले टाउन हाल था; लुई नेपोलियन जब यहाँ के राजा हुए तब सन् १८०८ मे उन्होंने उसे राज-भवन बना डाला । इसके बनने मे ७½ लाख पौण्ड ख़र्च हुए हैं और सन् १६४८ से बनना शुरू होकर सन् १६७५ मे यह बन कर तैयार हुआ है । १४,००० गड़े हुए लट्ठों के ऊपर यह इमारत बनी है । यह भवन २८२ फुट लम्बा और २३५ फुट चौड़ा है ; इसकी चोटी १९० फुट ऊँची है और उस पर एक मुलम्मा किया हुआ छोटा सा जहाज़ स्थापित है । इसके अन्तर्गत फेस्टिव हाल (Festive Hall) [सभा-गृह] १२० × ५७ वर्ग-फुट का है । उसकी ऊँचाई १०० फुट है । छत के सहारे के लिए कोई खंभा वग़ैरह नहीं है । इटलियन संगमरमर से सुशोभित हाल में बहुत से फ्रेस्को (Fresco) चित्र हैं । उनमें सिंहासन

पर स्पेनिश नाइटों (Knights) की पताका और ग्लोव कन्धे पर लिये अटलास (Atlas) की मूर्त्ति वनी है। उस मूर्त्ति के नीचे वैठी हुई न्याय-देवी की मूर्त्ति है। यहाँ के प्रधान म्यूज़ियम के द्वार पर बुद्ध-देव और गणेश की पत्थर की मूर्त्तियाँ और चीन देश के दण्ड-विधान के दृश्य आदि हैं। भीतर भी एक बुद्ध-देव की मूर्त्ति, बंगाली फल वेचनेवाला, माड़वारी, वेहना और जावा द्वीप की वरात की निकासी आदि वहुत से एशियाई व्यापारों की नक़लें हैं। इन सवको छोड़कर वहुत सी अन्यान्य सामग्रियां हैं, उनमे प्राचीन ओलन्दाज़ चित्रकारों के हाथ के अनेक चित्र हैं। नगर मे और भी कई म्यूज़ियम हैं। उनमें से एक (Trippenhuis Museum) में ४०० चित्र-पटों और ४,००० एनग्रेविंग चित्रो के अलावा वहुत से देश-विदेश के प्राचीन सिक्के रक्खे हैं। सिक्कों के संग्रह के सम्वन्ध में यह म्यूज़ियम एक पृथ्वी भर में प्रधान प्रदर्शिनी है। यहाँ की पशुशाला मे पशुओं का संग्रह भी वुरा नहीं है। अत्यन्त सुन्दर चमरी गऊ, माता के साथ खेल रहे तीन सिंह के वच्चे, सफ़ेद मृग और चिंगड़ी मछली के समान एक भारी जीव यहीं पहले-पहल देखा। यहाँ का शीशमहल (Paleis voor Volksvlit) ४४० × २८० वर्ग-फुट का है। उस का गुम्वद २०० फुट ऊँचा है। यहाँ हमेशा रँग-तमाशा हुआ करता है। इसके अन्तर्गत वाग़ भी मनोहर है। रोनेवालों का टावर (Schreijerstorm [Criers' Tower]) यहाँ पहले समुद्र-यात्रा करनेवाले लोग पृथिवी के अनेक देशों मे जाने के लिए जहाज़ पर चढ़ते समय आत्मीय वन्धु-गण से रोते रोते विदा होते थे। स्थानीय गिर्जों में चार गिर्जे खव वड़े, प्राचीन और सुसज्जित हैं। दो में कई एक प्रसिद्ध एडमिरलों के स्मारक स्थापित हैं। यहां यहूदी कारीगरों

के हीरा-तराश कारख़ाने बहुत हैं। इस काम को १०,००० के लगभग आदमी करते हैं। किसी किसी कारख़ाने में हीरा तराशने का चक्र (Cutting-wheel) मिनट में २,००० बार के हिसाब से घूमता है। पहले ज़माने में इस नगर के लोग बरसाती पानी जमा कर रखते थे और वही पिया करते थे; अब जल-कल के द्वारा दूर से पानी लाया गया है। चारों ओर जल रहने से यहाँ की हवा हमेशा ठंडी रहती है, जिससे लोगों को बुख़ार-खाँसी की शिकायत हो जाती है। किन्तु स्थानीय लोग ख़ूब सबल और स्वस्थ देख पड़े। विदेशियों के लिए इस नगर का जल-वायु उतना अच्छा नहीं है। यहाँ के अन्यान्य दृश्यों में वाण्डेल-पार्क (Vondel-Park), उत्कृष्ट सेलर्स-होम (नाविक-भवन), बड़ा डाकघर, कचहरी और रोगी, बूढ़े, अपाहिज, अंधे, गूँगे-बहरे, सिड़ी, विधवा तथा बे-मा-बाप के बच्चे आदि के लिए अस्पताल और आश्रम प्रधान दृश्य हैं। समुद्र की शाखा आम्स्टेल नदी नगर के भीतर होकर बही है। उसके पश्चिम तट पर नया शहर है। वहाँ की इमारतें और वृक्ष-श्रेणियों से शोभित सड़कें सराहने योग्य हैं। आईन के अनुसार २० से ५० वर्ष तक के नागरिक आग बुझानेवाले कर्मचारियों और नगर-रक्षक पुलिस के आदमियों में गिने जाते हैं। राज्य के सर्वसाधारण का हित करने के लिए यहाँ एक सभा स्थापित है। यह बिना किसी पक्षपात के सारी प्रजा की शिक्षा और उन्नति की चेष्टा में लगी रहती है। इस सभा की शाखायें देश के हर एक गाँव और नगर में स्थापित हैं। आम्स्टर्डाम में ६ लाख के लगभग आदमी बसते हैं।

ज़ान्डाम (Zaandam) और न्यूएन्डाम (Niewendam)। आम्स्टर्डाम और उसके आस पास के स्थान देखने में दस दिन

लग गये। उसी बीच में एक दिन ज़ान्डाम और एक दिन न्यूएण्डाम जाना हुआ। ज़ान्डाम को अँगरेज़ लोग सार्डाम (Saardam) कहते हैं। जहाज़ बनाने की शिक्षा के समय महात्मा पीटर जिस घर मे रहते थे वह घर कारुगेटेड लोहे के आवरण-द्वारा यत्नपूर्वक सुरक्षित है। इस घर में पीटर की खटिया, कुर्सी, टेबिल, उनका और उनकी स्त्री का चित्र एक छोटा सा पत्थर का जहाज़ रक्खा है। दीवार पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा है—"Niets is den Grooten Man be Klein" अर्थात् महान् पुरुष किसी प्रकार के व्यावहारिक काम को हीन नहीं समझते। ज़ान्डाम में दोपहर को सब भोजन के सामान में मछलियों ही की भरमार थी।

न्यूएन्डाम अथवा नये बाँध मे थोड़े दिन हुए डाइक बाँध कर उसके दोनों ओर लोग बसे हैं। बीच का हिस्सा सड़क के काम में आता है। बस्ती छोटी, लेकिन साफ़-सुथरी है। यह समलम्ब आकृति का गाँव एक अद्भुत दृश्य है; एक ओर पानी है और दूसरी ओर की नीची जमीन में खेत और गाय-बैलों के चरने के मैदान हैं। गाँव की बस्ती पानी की सतह से कुछ नीची है। यहाँ अन्दाज़न एक हज़ार आदमियों की बस्ती है।

हार्लिङ्गेन (Harlingen)। वर्त्तमान समय में नया डाइक बनते मैंने कहीं नहीं देखा था। बड़े बड़े प्राचीन नगरों में डाइक पहचानना भी कठिन है, क्योंकि उनके ऊपर और चारों ओर घर बन जाने से उनका असली रूप छिप गया है। अनुसन्धान करने से मालूम हुआ कि हार्लिङ्गेन में नया डाइक बन रहा है। इसीलिए आम्स्टर्डाम से ज़ुइडर-ज़ी पार हो कर हार्लिङ्गेन मे आया और आकर डाइक बनना देखा। पत्थर डालकर बहुत सा

पानी घेर लिया जाता है; उसके बाद पानी उलच कर वहीं पर जुड़ाई का काम होता है। यहाँ इसके सिवा और कोई प्रयोजन नहीं था; लेकिन भूख अधिक लग आने से भोजन मिलने का स्थान खोजने की आवश्यकता पड़ी। छोटी जगह थी; अँगरेज़ी जाननेवाला आदमी भी कोई नहीं मिला। अन्यान्य भाषाओं में अपना प्रयोजन सिद्ध करना चाहा, पर सफलता नहीं हुई। अन्त को हार कर एक कुली को हाथ के इशारे से समझाया और तब भोजन मिला। नगर छोटा है, १०,१२ हज़ार के लगभग लोग रहते हैं। प्राचीन नगर सन् ११३४ में समुद्र में डूब गया था। उसके बाद यह वर्त्तमान नगर बसाया गया है।

ग्रनिङ्गेन (Graningen)। हार्लिङ्गेन में केवल छः सात घंटे ठहर कर रेल पर सवार हुआ और वहाँ से चलकर आधी रात को ग्रनिङ्गेन पहुँचा। दूसरे दिन नगर की सैर करने, ख़ासकर लूथर की बाइबिल देखने बाहर निकला। यहाँ के विश्व-विद्यालय के अन्तर्गत एक म्यूज़ियम और लाइब्रेरी है। वहाँ जाकर अध्यक्ष की अनुमति लेकर लूथर की बाइबिल देखी। यह बाइबिल की पुस्तक इरास्मस की है और लैटिन भाषा में लिखी हुई है। लूथर ने इरास्मस से लेकर इस पुस्तक के हाशियों पर अनेक नोट करते हुए आदि से अन्त तक पढ़ा और जिल्द के बाद के सफ़े पर अपने हाथ से लिखा है—"Pestis ero vivens, moriens ero, tua Papa." D. M. Luth. इसका अर्थ यह है कि हे पाप, अगर ज़िन्दा रहूँगा तो तुम्हारे उत्पात का कारण होऊँगा, और अगर मर जाऊँ तो तुम्हारे लिए यमराज बनूँगा। मैं भारतवर्ष से लूथर की बाइबिल देखने आया हूँ, यह सुनकर डाइरेक्टर महाशय ने मेरी विशेष ख़ातिर की और अन्त को एक

खाता निकाल कर उस पर मेरे दस्तख़त करा लिये। बातचीत में मैंने कहा कि मैं बुडापेस्ट में लूथर का दान-पत्र देख आया हूँ। यह सुनकर उन्होंने खेद के साथ कहा कि यह सौभाग्य मुझे अभी तक नसीब नहीं हुआ।

हालेण्ड की साधारण अवस्था। इस राज्य का स्थानीय नाम है नेदरलेण्ड (Nederland)। इस राज्य की ज़मीन की माप ठीक बताई नहीं जा सकती; क्योंकि हर साल कहीं पर कोई समुद्र तट का स्थान जल-मग्न हो जाता है और कहीं पर समुद्र को बाँध कर नई ज़मीन बनाई जाती है। इस समय न्यूनाधिक १२½ हज़ार वर्ग मील का इसका घेरा होगा। इस राज्य मे ६१ लाख से कुछ अधिक लोग बसते हैं। उनमें ⅔ ओलन्दाज़ी संस्कृत सम्प्रदाय (Dutch Reformed Church) के प्रोटेस्टेण्ट कृस्तान हैं; शेष दस श्रेणी के प्रोटेस्टेण्ट, रोमन-कैथलिक और यहूदी हैं। ग्रीक-चर्च के अनुयायी लोग भी ४०,५० आकर बसे हैं। बेलजियम की तरह यहाँ भी सब पर राजा की समान दृष्टि और अनुग्रह है। सब धर्मों को राज्य से बराबर सहायता मिलती है। शिक्षा-प्रचार के सम्बन्ध में राज्य की ओर से पूरा प्रयत्न होता है। १० में ९ के हिसाब से यहाँ पढ़नेवाले विद्यार्थी पाये जाते हैं। विद्यार्थियों में स्त्री और पुरुषों की संख्या बराबर के लगभग होगी। राज्य मे ५,००० प्राइमरी स्कूल, १०० से अधिक प्रथम और द्वितीय श्रेणी के स्कूल, ५० टेक्निकेल स्कूल और १० जहाज़ी काम सिखाने के स्कूल हैं। चार प्रधान नगरों में चार यूनिवर्सिटियाँ स्थापित हैं। दो लाख से ऊपर सेना है। १२१ जहाज़ हैं। उनमे २१ लौहयान हैं। सैनिक विभाग में हर एक प्रजा को कुछ दिन काम सीखना पड़ता है। सन् १९१२ में २३ करोड़ गिल्डर राज-कर वसूल हुआ; ख़र्च इससे कुछ अधिक हुआ।

इसी साल ऋण था ११५ करोड़ गिल्डर। सोने और चाँदी का तथा नोट बराबर के भाव पर चलते हैं। चाँदी के सिक्के को गिल्डर (Guilder) या फ्लोरिन (Florin) कहते हैं। एक गिल्डर क़ीमत में दो फ्रेंक के बराबर होता है। यहाँ भी सिक्के में दाशमिक प्रथा प्रचलित है। इँग्लेंड की तरह इस देश में भी स्त्रियाँ राजगद्दी पर बैठ सकती हैं। वर्त्तमान रानी विल्हेल्मिना (Wilhelmina) सन् १८८० की ३१ वीं अगस्त को पैदा हुई थीं। जिस समय मैं इस देश में गया उस समय वह नाबालिग़ थीं। उनकी ओर से उनकी माता राज-काज चलाती थीं। वह सालाना १२½ हज़ार पौण्ड की वृत्ति पाती थीं। रानी की सालाना वृत्ति इस समय ३२½ हज़ार पौण्ड थी। रानी को उच्च शिक्षा दी जा रही थी। चाहे जो कोई रानी और उनकी माता से मुलाक़ात कर सकता है। पाँच दिन पहले महल के दरवान के पास रक्खी हुई एक किताब पर अपना नाम लिख आना पड़ता है। उसके बाद कोई विशेष आपत्ति अगर न उपस्थित हुई तो नियत दिन को उनकी मुलाक़ात होती है। इनके दरबार में राजसी रोब-दाब उतना नहीं है। इस कारण प्रजा भी रानी को हृदय से चाहती है। राज्य विशेष रूप से सर्वसाधारण के हाथों में ही है। प्रजा के प्रतिनिधि शासन करते हैं। तथापि अन्यान्य राज्यों की अपेक्षा यहाँ के राजों को कुछ ख़ास अधिकार प्राप्त हैं। ओलन्दाज़ लोगों के सम्बन्ध में अँगरेज़ों मे एक कहावत है "They speak little, laugh less." अर्थात् बातचीत कम, हँसी और भी कम। किन्तु मुझसे जिन ओलन्दाज़ भद्र पुरुषों से बातचीत हुई उनमें यह बात नहीं पाई गई। हार्लिङ्गन जाते समय जहाज़ पर दो ओलन्दाज़ भद्र पुरुषों से कई घन्टे तक बातचीत होती रही। उन्होंने दुःख के साथ कहा कि

"अँगरेज़ लोग कन्टीनेन्ट की जातियों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और उन्होंने हर एक जाति का एक एक घृणित नाम रख छोड़ा है। किन्तु हम लोग तो उनको गाली नहीं देते। हो सकता है कि वे लोग यूरोप की अन्यान्य जातियों की अपेक्षा अनेक बातों में श्रेष्ठ और क्षमताशाली हों; लेकिन उसके लिए इतना अहङ्कार कोई अच्छी बात नहीं है"। बातचीत और हँसी के सम्बन्ध में अँगरेज़ी कहावत ठीक भी हो सकती है; क्योंकि बहुत दिनों से बराबर अपनी प्रकृति और विदेशी शत्रुओं के साथ संग्राम करते हुए ज़िन्दगी बिताने के कारण उनका ऐसा स्वभाव हो गया हो। ज़मीन की अवस्था के अनुसार ये लोग परिश्रमी और कम ख़र्च करनेवाले हैं। जल से भी सदा इन लोगों को भिड़ना पड़ता है; इसी से ये साहसी और संयत हैं। जो कुछ हो, इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि ये लोग स्वाधीनताप्रिय, सरल और न्यायपरायण हैं। कन्टीनेण्ट के निवासियों के माफ़िक़ यहाँ के भी बहुत लोगों को यह आक्षेप करते देखा गया कि "अँगरेज़ों के पास बड़ी दौलत है; हमारे पास धन नहीं है"।

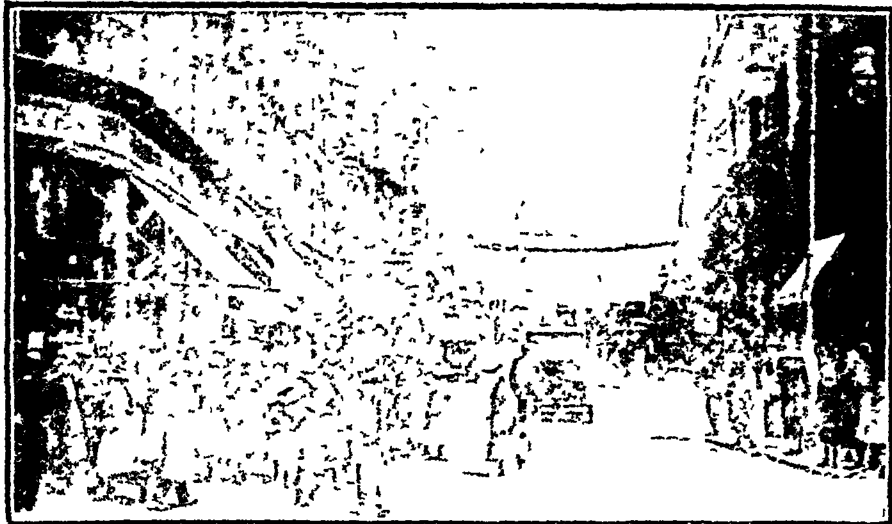
डेन्मार्क।

कोपेनहेगेन (Copenhagen)। जर्मनी की शेष सीमा लुबेक से विदा होकर स्टीमर पर डेन्मार्क की इस राजधानी में पहुँचा। यहाँ १२ दिन रहा। इसका स्थानीय नाम है क्योबेनहावन् (Kjobenhavn)। अँगरेज़ लोग कोपेनहेगेन कहते हैं। इसका फ्रेंच नाम कोपेनहागेन ही कन्टीनेण्ट में सर्वत्र प्रचलित है। यह नगर दो टापुओं पर बसा और प्राकृतिक तथा कृत्रिम सौन्दर्य से सर्वथा सुशोभित है। हालेण्ड की ठंडी आब-हवा से यहां आने पर जैसे विशेष गर्मी मालूम पड़ी। इस नगर में एक बड़ा और कई छोटे छोटे क़िले हैं। उनमें १,७०० तोपें रक्खी हैं चारों ओर के रम्पर्ट (Rampart) की लम्बाई ५ मील है। सामने ही हार्बर है। उसमें ५,००० जहाज़ मज़े में खड़े हो सकते हैं। नगर में १६ स्कायर हैं। उनमें एक अष्टकोण बना हुआ है, और उसके चारों ओर चार राजभवन हैं। बीच में १,२०० मन वज़न की राजा पञ्चम फ़्रेडरिक की घुड़सवार मूर्त्ति है। अन्य एक स्कायर से १३ सड़कें तेरह ओर को निकली हैं। वहां पर से शहर के अनेक स्थानों में जाने के लिए ट्रामगाड़ियां मिलती हैं। यहां की ट्रामगाड़ियाँ दो खण्ड की हैं। नगर के भजन-मन्दिरों में से कई एक के गुम्बद रूसी ढंग के बने हैं। प्रधान भजन-मन्दिर (Frue Kirke) के प्रवेश-द्वार के इधर-उधर डेविड और मोज़ेस की मूर्त्तियाँ हैं। आल्टर के पीछे भास्कर-कार्य के उस्ताद थरवाल्डसन (Thorvaldsen) की



टाउनहाल कोपेनहेगेन—पृ० ६०७





बर्मिंघम—पृ० ६२४

एक गिर्जा—बाथ शहर—पृ० ६३६

वनाई संगमरमर की भारी लम्बी-चौड़ी ईसा और द्वादश प्रेरित की मूर्त्ति खड़ी है। एक देव-मूर्त्ति घुटनों के वल वैठी है। अन्यत्र सोलह "टेरा-काटर" की मूर्त्तियाँ हैं (इस दृश्य में यह दिखलाया गया है कि जान-दि-वप्टिस्ट जङ्गल मे प्रचार कर रहे हैं)। गिर्जों के ऊपर से चारों ओर का दृश्य वड़ा ही मनोहर जान पड़ता है। नगर, हार्वर, पश्चिम ओर कई जङ्गल और झीलें, पूर्व ओर तरह तरह के जहाज़ों से शोभित समुद्र-खंड और दूर पर स्वीडेन का उपकूल दृष्टि-गोचर होता है। भास्कर-कार्य की कारीगरी में डेन्मार्क एक श्रेष्ठ देश है। उस पर भास्कर-विद्या के आचार्य थरवाल्डसन ने जन्म लेकर इस देश को एक विशेष उच्च पद पर पहुँचा दिया। थरवाल्डसन-म्यूज़ियम के फाटक के ऊपर चार घोड़ों (Quadriga) को हाँक रही पीतल की वनी विजया देवी की मूर्त्ति स्थापित है। यह म्यूज़ियम-भवन २३०×१२५ वर्ग-फुट का है। यह भवन दो खण्ड का और ४६ फुट ऊँचा है। वीच मे १ ६×५० वर्ग-फुट के खुले ऑगन मे महात्मा थरवाल्डसन की समाधि वनी है। जिस वाल्ट (Vault) में उनकी लाश का सन्दूक रक्खा है वह उनके जीवन-काल मे उन्हीं की इच्छा के अनुसार सजाया गया था। वाहर और भीतर की दीवारें सुन्दर उज्ज्वल वर्ण के चित्रों से सुशोभित हैं। यहाँ पर थरवाल्डसन के हाथ के ३०० काम और अन्यान्य वहुत से चित्र-पट आदि रक्खे हैं। एक कमरे मे वह असवाव उसी तरह सजाया रक्खा है जो जिस तरह उनके मरने के समय उनके कमरे मे रक्खा था। ऊपर की खिड़की के नीचे 'प्रतिभा' की मूर्त्ति है, जो इस तरह वनाई गई है कि मानों वहुत सी वाधाओं और विघ्नो को नाँघती-फाँदती गाड़ी पर अपने गन्तव्य स्थान को जा रही है। वेस्टीविउल में ज्योतिर्विद् कोपर्निकस्,

पोल-कुल-तिलक महावीर पानियाटौस्की, कवि शिलर, प्रसिद्ध गटे-नवर्ग और अन्य तीन महात्माओं की मूर्त्तियाँ खड़ी हुई हैं। इन सब स्वनामधन्य महापुरुषों के देशों के लोग थरवाल्डसन से उक्त महात्माओं की मूर्तियाँ बनवा ले गये थे। ये मूर्त्तियां उन्हीं मूर्त्तियों के नमूने हैं। भीतर थरवाल्डसन, नेपोलियन, बायरन आदि की अर्द्ध-मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। ईसा और उनके अनुचरों की मूर्त्तियाँ अलग एक कमरे मे रक्खी हैं। यहाँ की इस ईसा की मूर्त्ति की नक़ल नार्वे के अन्तर्गत ट्राञ्जेम नगर के गिर्जे में रक्खी है। यहाँ इसी तरह के ५२ कमरों में अनेकानेक दृश्य देखने को मिलते हैं। पहले जिस इमारत मे राजकुमार रहते थे उसी मे अब प्रधान म्यूज़ियम है। इसमें तीन विभाग हैं। एक यूरोप के उत्तर-खंड के प्राचीन तत्त्वों से सम्बन्ध रखता है। दूसरा शिल्प आदि से संबन्ध रखता है। तीसरा एथ्नोग्राफ़िकेल अर्थात् मानव-समाज से सम्बन्ध रखता है। जीव-तत्त्व-सम्बन्धी एक चौथा विभाग भी है। वह अन्यत्र स्थापित है। प्रथम विभाग में १२,००० से भी अधिक चीज़ों का संग्रह है। इस विषय का ऐसा सुन्दर श्रेणीबद्ध भारी संग्रह पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। स्कंडिनेविया में जो इस विषय का संग्रह देखा था उसकी अपेक्षा यह बहुत अधिक है। १ नं० के कमरे मे प्रस्तर-युग के सब अस्त्र-शस्त्र, बर्त्तन वग़ैरह रक्खे हैं। २ नं० के कमरे मे पित्तल-युग की ढालें, तरवारें और तरह तरह के पात्र रक्खे हैं। ३ नं० के कमरे में लोह-युग के अनेक सामान रक्खे हैं। इनके सिवा और भी बहुत सी चीज़ें यहाँ रक्खी हैं। जैसे एक प्रकार का कम्बल, बफ़्क़ की डिबिया और छुरे की म्यान, लकड़ी की डोंगी, पीतल की तुरही, तोप, ढाल, कवच, क्लाक-घड़ी, वाच-घड़ी, ताला तथा हाथीदाँत के काम वग़ैरह। मानव-समाज-सम्बन्धी विभाग

बुध और शनिवार के सिवा और दिन नहीं खुलता; इस कारण उसे देखने के लिए दुबारा आना पड़ा। तितल्ले पर ये ३५ कमरे हैं। इनमें एस्किमो जाति के लोगों की चमड़े की पोशाक, चमड़े की झोपड़ी में झिल्ली का पर्दा, और दक्षिण-अमेरिका के असभ्य स्त्री-पुरुषों की मूर्त्तियाँ, जो जङ्गल में तीर-कमान लिये कुत्तों के साथ घूम रही बनाई गई हैं, देखने से सचमुच ही डर मालूम पड़ता है। इनके सिवा जावा मे मिली हुई बुद्धदेव और गणेश की मूर्त्ति, बुद्ध-चरणाङ्कित ३½×२ फ़ुट का पत्थर, भारतीय दसों अवतारों के चित्र, बँगला-भाषा की पत्रिका (पञ्चाङ्ग) और पहली किताब, मिट्टी की बनी संन्यासी की मूर्त्ति, रुद्राक्ष की माला हाथ में लिये ब्राह्मण की मूर्त्ति, हमारे यहाँ के पाजेब, चन्द्रहार आदि अलङ्कार, मृदङ्ग, नूपुर, कंकण, मिट्टी का चूल्हा और बर्तन और हिन्दुस्तानी—ख़ासकर बङ्गाल की—'हाट' की नक़ल देखकर मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई। म्यूज़ियम से बाहर निकलने के बाद द्वार पर के आफ़िस मे कोई बात पूछने गया। वहाँ डाइरेक्टर महाशय से जान-पहचान होगई। मैं भारतवर्ष से कोपनहेगेन देखने आया हूँ, यह सुनकर उन्होंने बहुत प्रसन्नता प्रकट की और उसके बाद नृसिंहावतार के सम्बन्ध की चर्चा शुरू कर दी। उन्होंने अनेक पुराणों में वर्णित नृसिंहावतार का वर्णन कह सुनाया। मैं तो जैसे सन्नाटे मे आगया। क्या कहता, किसी तरह पीछा छुड़ाकर चल दिया। उन्होंने अपना पता बताकर मकान पर मेरा निमन्त्रण किया; लेकिन मैं इस भय से फिर नहीं गया कि कहीं यह कोई ऐसी चर्चा न छेड़ दें जिसके सम्बन्ध में मैं कुछ उत्तर न दे सकूँ। धन्य हैं ये लोग, जो इतनी दूर कोपनहेगेन में बैठे बैठे प्राचीन भारत के तत्त्वों की गवेषणा मे ऐसा परिश्रम कर रहे हैं। ज्ञान जहाँ

से जिस तरह प्राप्त हो उसे उसी तरह विना किसी आपत्ति के ये लोग प्राप्त कर लेते हैं। उसे पाने के लिए तन-मन से ये सर्वदा तैयार रहते हैं। अनुसन्धान करने से मालूम हुआ कि यह महाशय असीरिया, वैविलन और मिसर आदि के पुरातत्त्व के भी भारी जानकार हैं। यहाँ की पशुशाला में एक सुन्दर नील-गाय देखी; इसके शरीर के रोएँ तक खूब लम्बे थे। और एक नया पक्षी देखा; इसका आकार गिद्ध का ऐसा था; पर यह सुन्दर था। वटानिकेल-गार्डेन और गर्म देशों के उद्भिदों के लिए शीशे का महल भी देखने लायक है। इसमें कई एक नई तरह की घासें देखीं। सन् १६०४ में बना हुआ रोज़ेनवर्ग (Rosenborg) महल देखने के लिए एक दिन पहले टिकट लाना पड़ा। दूसरे दिन सब दर्शकों के जमा होने पर एक कर्मचारी अपने साथ ले जाकर सब दिखला लाया। यहाँ के सिक्के और मेडलों का संग्रह, वेनिस की बनी कांच की चीज़ों का संग्रह, शाही रत्न, अलङ्कार, आभरण आदि (Reglaia), प्रसिद्ध चाँदी का बना पान-शृङ्ग (Oldenburg Drinking-horn), पुराने टेबिल-चेयर आदि सामान देखने के योग्य हैं। इसके अन्तर्गत हाल (Riddersaal) कपड़े पर छपे हुए चित्रों (Tapestry) के द्वारा सुशोभित हैं। इसके एक कोने में भारी चाँदी का सिंहासन रक्खा है। और भी एक चीज़ यहाँ दर्शनीय है। वह है राजा पञ्चम चार्ल्स को उनके जिस प्यारे घोड़े ने पानी में डूबने से बचाया था उसका दो सौ वर्ष का पुराना शव; जो बड़े यत्न के साथ रक्खा हुआ है। यह दूर से बिलकुल ज़िन्दा जान पड़ता है। उनके शरीर के रोएँ और पूँछ के बाल खूब लम्बे हैं। इस महल के पीछे सुन्दर बाग़ है। उसमें डेन्मार्क देश के प्रसिद्ध पण्डित अण्डरसन (Hans Andersen) की मूर्त्ति स्थापित है। विश्वविद्यालय,

ख़ास राजमहल (Christiansborg), और भी कई एक भारी राज-भवन, ग्लिप्टोथिक (Glyptothek) भास्कर-कार्य का संग्रह, लुइस-पुल (Louises Bro), दो लम्बे-चौड़े थियेटर-भवन, एक्सचेञ्ज (Borsen)-भवन, समुद्र-तट पर स्थित लांगेलिनी (Langelinie), मोनूमेन्ट और एशियाई ढंग का टीवोली राजभवन (Bazarbyg-nengen-i-Tivoli), ये यहाँ के प्रधान दृश्य हैं। यहाँ की जन-संख्या पाँच लाख के लगभग है।

डेन्मार्क की साधारण अवस्था। किसी समय यह राज्य यूरोप में विशेष क्षमताशाली था; पर अब इसकी अवस्था साधारण है। इस देश मे कुछ नये प्रकार के पेड़ हैं। यूरोप मे अन्यत्र वैसे पेड़ साधारणत: नहीं देख पड़ते। राज्य की अधिकांश प्रजा लूथर-सम्प्रदाय को माननेवाली (Lutheran) है। अन्यान्य सम्प्रदाय के ईसाई बहुत कम हैं। उनमे २,००० से अधिक मर्मन् (Mormons) और ४०० के लगभग अर्विंगइल के (Irvingites) हैं। बप्टिज़्म, पूर्ण संस्कार और टीके (Baptism, Confirmation and Vacci-nation) के सर्टीफ़िकेट के विना यहाँ कोई अप्रेन्टिसी, नौकरी या व्याह नहीं कर सकता। राज्य में शिक्षा का प्रचार खूब है। प्रजा को आईन के अनुसार शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है; अर्थात् सात से चौदह वर्ष की अवस्था तक सबको स्कूल जाना पड़ता है। असमर्थ छात्रों से सरकारी स्कूलों मे फीस नहीं ली जाती। राज्य में १३ कालेज हैं। शिक्षा-कार्य के सम्बन्ध में सब स्कूल-कालेज कोपनहेगेन-यूनिवर्सिटी के अधीन हैं। शिक्षा-विभाग का काम चलाने के लिए एक कमेटी है, जिसकी देख-रेख स्वयं राजा करता है। इस कमेटी के सब सभासद् सम्पूर्ण स्वाधीनता के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं। इस देश में बहुत से छोटे छोटे

ज़मींदार (Bonder) हैं । ज़मीन का यहाँ स्थायी प्रबन्ध है। इससे इन ज़मींदारों की अवस्था अच्छी है। लेकिन ये किसानों से कुछ कुछ निर्दयता का भी व्यवहार करने लगे हैं। किसानों की दशा पर भी ये लोग कुछ ध्यान नहीं देते। तथापि ये लोग सुशिक्षित, ख़ास कर राजनैतिक विषयों के जानकार हैं। डेन्मार्क देश के लोग प्रफुल्लचित्त और शौकीन होते हैं। बहुत लोग फ्रेंच फ़ैशन आदि को बहुत पसन्द करते हैं। यहाँ की सेना १ लाख २६ हज़ार है। जहाज़ी सेना १,३०० के लगभग है। ३७ जङ्गी जहाज़ हैं। उनमें ४ लौहयान हैं। वर्त्तमान राजा दशम क्रिश्चियन (Christian X) सन् १९१२ में सिंहासन पर बैठे थे। यूरोप के अनेक राज्यों से इनकी नातेदारी है। सन् १८६४ में ३२ लाख पौण्ड राज-कर वसूल हुआ था। ख़र्च इससे कुछ अधिक हुआ था। इसी साल राज्य पर एक करोड़ पौण्ड का ऋण था। छः सात लाख पौण्ड की रक़म राज्य के रिज़र्व-फण्ड में रहती है। सिक्का नार्वे-स्वीडन का ऐसा है।

स्काटलेण्ड (Scotland) की यात्रा। कोपनहेगेन से स्टीमर पर स्काटलेण्ड को रवाना हुआ। राह में काटिगेट (Cattegat) के प्रवेश-द्वार के इस पार हेमलेट (Hamlet) का एलसिनोर (Elsinore) कैसल देख पड़ा। इसका स्थानीय नाम है हेल्सिंगोर (Helsingor)। उस पार स्वेडिश नगर हेलसिंगबोर्ज (Helsingborg) है। खाड़ी बहुत तङ्ग है। स्टीमर पर से दोनों किनारे बहुत अच्छी तरह देख पड़ते हैं। हमारा स्टीमर एलसिनोर कैसल के पास ही होकर गया। इस स्टीमर पर अन्यान्य यूरोपियन यात्रियों में दो स्काच भद्र महिलायें भी थीं। उनमें जो वृद्धा थीं वह भारत के भूतपूर्व लाट लार्ड डफरिन की कोई नातेदार थीं। जब उक्त लार्ड

साहब भारत में थे तब वह महिला कलकत्ते में आई और लाट साहब के भवन में रही थीं। एक दिन तीसरे पहर चाय पीते समय उन्होंने भारत की चर्चा चला कर लार्ड रिपन की व्यर्थ निन्दा के साथ ही लार्ड डफरिन की भारी सराहना शुरू कर दी। मैंने दुःखित होकर कहा—"हम लोग महात्मा लार्ड रिपन को देवतुल्य जानते और मानते हैं"। इसके उत्तर में उन्होंने भारत में आत्म-शासन के प्रचार का उल्लेख करके कहा—"तुम लोग अब भी अपने शासन की बागडोर अपने हाथ में नहीं ले सकते। कारण, सत्य-प्रियता अभी तक तुम लोगों मे देख नही पड़ती"। उस महिला की यह कड़ा चाबुक खा कर मैं तो जैसे सन्नाटे मे आ गया; मुझसे तो कुछ कहते ही न बन पड़ा। अन्यान्य यात्रियों में से एक दो ने मेरा पक्ष लेकर कुछ कहा। उसके उत्तर में उस महिला ने कहा—मेरे एक आत्मीय बन्धु भारत में एक उच्च पद-स्थ सैनिक कर्मचारी थे। कुछ दिनों के लिए उनको कई एक राजकुमारों को पढ़ाने का काम करना पड़ा। एक दिन एक बालक से बातचीत करते समय यही बात उन्होंने कही कि तुम लोगों में सत्यप्रियता नहीं देख पड़ती। बालक ने विशेष दुःखित होकर इसका प्रतिवाद किया तब उन्होंने उस बालक से कहा कि "तुम अपने माता-पिता से पूछना कि वे तुम लोगों को बचपन में झूठ बोलने की शिक्षा देते हैं या नहीं? पुत्र के सामने घर के बाहर अगर पिता कोई अनुचित काम करता है तो पुत्र को उपदेश देता है कि 'बेटा, मा के पास जाकर यों नहीं यों कहना'। ऐसे ही घर में माता से कुछ नुक़सान या अनुचित कार्य हो जाता है तो वह पुत्र से कहती है, 'बेटा, अपने बाप के आगे इस बात को ज़ाहिर न करना; अगर पूछें तो इस तरह कह देना'। इसी तरह तुम्हारे मा-बाप तुमको झूठ बोलना सिख-

लाते हैं।" दूसरे दिन बालक ने घर से आकर उनका कहना स्वीकार कर लिया।

वृद्धा के इस कथन का उत्तर क्या देता। केवल इतना ही कहा कि केवल एक उदाहरण से सारी जाति पर दोषारोप करना ठीक नहीं।

यात्रियों में दो "रेडिकल" (Radical) स्काच थे। वे जब अँगरेज़ों के दोषों की घोषणा करने लगते थे तब दूसरी जवान स्काच-महिला अत्यन्त शान्त भाव से उनको समझाती थीं कि "हम और अँगरेज़ एक जाति हैं; आपस में भेदभाव स्थापित करना उचित नहीं। इँग्लेंड के साथ जब से मिला तब से स्काटलेंड की अनेक प्रकार से आर्थिक उन्नति हुई है। इत्यादि।"

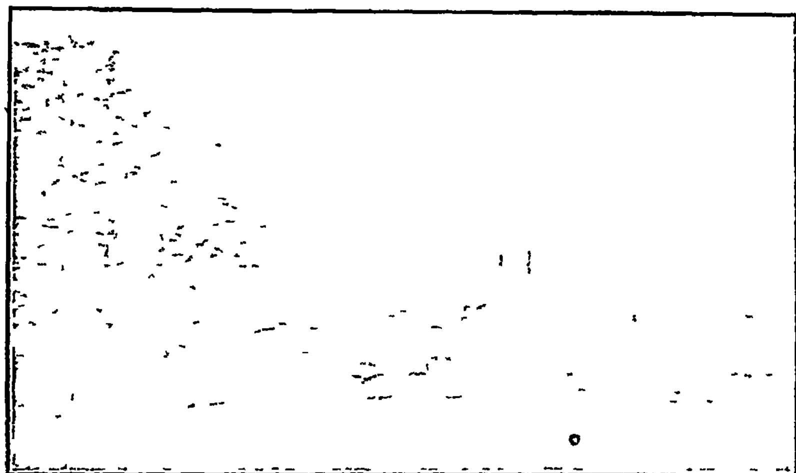
स्काटलेण्ड।

लीथ (Leith)। यथासमय एडिनबरा (Edinburgh) के बन्दरगाह लीथ नगर में पहुँचा। बीच में एक छोटी नदी बहने से नगर की बस्ती दो भागों मे बँट गई है। नई सड़कें बहुत अच्छी बनी हैं; लेकिन पुराने रास्ते तङ्ग हैं। यहाँ के अधिकांश घर पुराने ढङ्ग के हैं। हार्वर के दोनों पियर साढे तीन तीन हज़ार फुट के हैं। मुहाना ढाई सौ फुट चौड़ा है। नगर मे ३७ गिर्जे हैं। यहाँ के चारों 'ड ' १३० बीघे मे बने हुए हैं। उनके बनने में दस लाख पौंड से भी अधिक ख़र्च हुआ है। बारह नागरिक बोर्ड-स्कूलों (Board School) में ७,००० के लगभग विद्यार्थी पढ़ते हैं। पृथ्वी के अनेक देशों के जहाज़ इस बन्दर में आते जाते रहते हैं। यहाँ ७०,००० के लगभग आदमी बसते हैं।

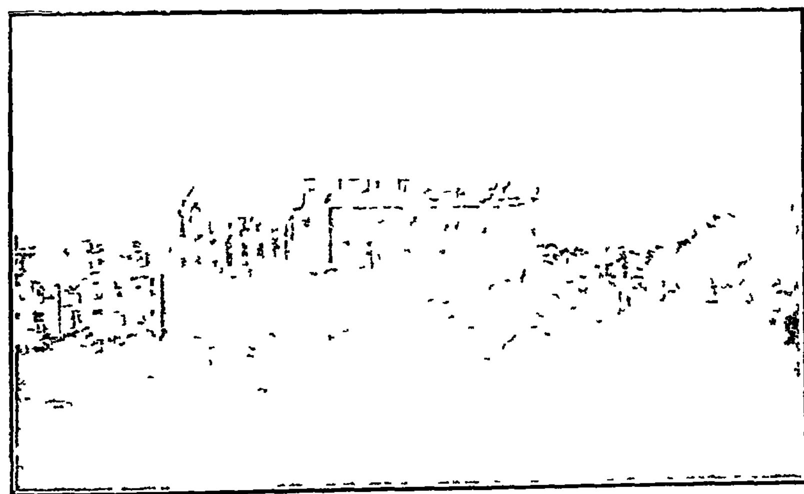
इडिन्बरा। यह स्काटलेंड की प्राचीन राजधानी और वर्त्तमान प्रधान नगर लीथ से दो मील पर है। रेल पर लीथ से यहाँ आया। यह नगर खूब ऊँची-नीची जगह पर बसा है और दो पहाड़ भी हैं। इससे नगर की एक विचित्र ही शोभा होगई है। बहुत ऊँचे स्थान पुलों के द्वारा परस्पर संयुक्त हैं। एक प्रसिद्ध स्काच चित्रकार ने कन्टीनेन्ट-भ्रमण के बाद यहाँ फिर आकर कहा था कि बहुत से सुन्दर नगरों का दृश्य यहाँ एक ही जगह

देखने को मिलता है। यथा—"What the tour of Europe was necessary to see elsewhere I now find congregated in this one city. Here are alike the beauties of Prague and of Salzburg; here are the romantic sights of Orvietto and Tivoli; and here is all the magnificence of the admired bays of Genoa and Naples. Here indeed to the poetic fancy may be found realized the Roman Capital and the Grecian Acropolis" *Sir David Wilkie.*

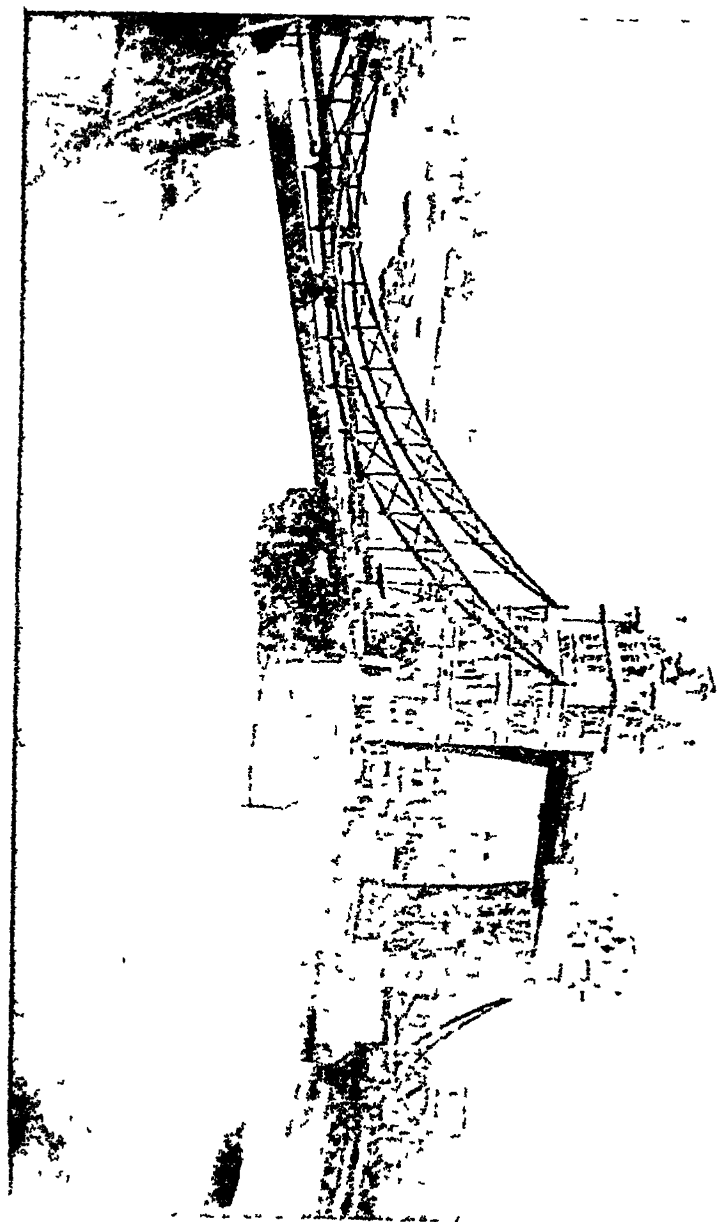
एथेन्स की शोभा दिखाने के लिए यहाँ के काल्टन (Calton) पहाड़ पर पार्थेनन का नकली महल बनाने को एक बार चेष्टा की गई थी। यात्रियों का कथन है कि ईजियन-सागर (Ægean Sea) से एथेन्स का और फोर्थ् समुद्रशाखा (Firth of Forth) से एडिनबरा का दृश्य दूर से एक ही तरह का देख पड़ता है। एक पहाड़ पर २१ बीघे ज़मीन के ऊपर प्राचीन कैसल बना हुआ है। पर्वत की चोटी पर सबसे पुरानी इमारत सेन्ट मार्गरेट गिर्जा बना हुआ है। कैसल में राजमहल का भग्नावशेष और उसके अन्तर्गत एक 'हाल' मौजूद है। यहाँ इँग्लेण्ड के राजा पहले जेम्स का जन्म हुआ था। प्राचीन राजों के रत्न, आभूषण आदि, स्काटलेण्ड के राजा चौथे जेम्स को पोप की दी हुई एक सुन्दर तरवार, अनेक समयों के बहुत से अस्त्र-शस्त्र, और पन्द्रहवीं शताब्दी में बनी हुई एक भारी तोप (Mons Meg) इस कैसल में रक्खी है। इस पहाड़ के पास की नीची ज़मीन पहले पानी से भरी हुई थी। इस समय उस पर एक सुन्दर बाग़ लग गया है। नगर का एक हिस्सा पुराना और दूसरा हिस्सा नया है। प्राचीन खण्ड के पूर्व-प्रान्त में हालीरूड (Holyrood) महल है। यहाँ पर प्रसिद्ध रानी मेरी रहती थीं। इसी के अन्तर्गत



लज़र्न झील (स्वीज़र्लेंड)—पृ० ५७६



हालीरूड महल, स्काटलेण्ड—पृ० ६१६



गिर्जे में उनका व्याह हुआ था। उनका प्रिय सचिव रिज़ियो (Rizzio) सन् १५६६ में इसी भवन में मारा गया। भारतेश्वरी विक्टोरिया की एक मूर्त्ति यहाँ स्थापित है। नगर के वीचोवीच पार्लियामेन्ट-भवन है। इस समय उसमें प्रधान-विचारालय हैं। जिस भारी हाल मे पार्लियामेण्ट के अधिवेशन होते थे उसमें इस समय वैरिस्टर, वकील और उनके मवक्किल वैठते हैं। इसके अन्तर्गत एक लाइब्रेरी है; उसमें तीन लाख पुस्तकों का संग्रह है। राज्य में पाँच पुस्तकालय ऐसे हैं जिन्हें कापीराइट के नियमानुसार ग्रंथकारों और प्रकाशकों से हर एक पुस्तक की एक एक कापी पाने का अधिकार राज्य से प्राप्त है। यह लाइब्रेरी भी उन्हीं मे से एक है। इस पुस्तकालय से मिला हुआ रजिस्ट्रो आफ़िस है। उसमें कई कमरे Fireproof हैं। उनमे आग नहीं लग सकती। उन्हीं कमरों में देश के आदमियों की क़ीमती दलीलें-लेख आदि वड़े यत्न से सुरक्षित हैं। एडिनवरा मे दो म्यूज़ियम हैं। जातीय पुरातत्त्व के म्यूज़ियम में लोहे, पत्थर और पीतल की वहुत सी प्राचीन सामग्रियाँ, अस्त्र-शस्त्र, यन्त्र आदि और सोने, चाँदी और पीतल के तरह तरह के अलङ्कारों का संग्रह है। सामने लिखा है—"Look and learn." अर्थात् देखो और सीखो। शिल्प और विज्ञान के म्यूज़ियम में नियमित रूप से लेक्चर दिया जाता है। वहाँ ८०० आदमियों के वैठने की व्यवस्था है। इसके सिवा काल्टन पहाड़ पर का मानमन्दिर, चिकित्सा-विद्यालय, विश्व-विद्यालय, विज्ञान-सभा, वटानिकेल और जिओलोजिकेल गार्डेन आदि वहुत से ज्ञानोपार्जन के उपाय मौजूद रहने और मनोविज्ञान की आलोचना के सम्वन्ध में जगद्व्यापिनी सुख्याति होने के कारण एडिनवरा को लोग "आधुनिक एथेन्स" कहते हैं। ट्रिनिटी-अस्पताल नामक

ख़ैरातख़ाने में १७२ ग़रीब नगर-निवासियों (Burgesses) को और उनकी स्त्रियों या सन्तानों को दस से बीस पौंड तक सालाना पेन्शन दी जाती है। पचास या इससे अधिक अवस्थावालों को ही पेन्शन मिलती है। पहले ये लोग अस्पताल की इमारत में रहते भी थे; लेकिन अब वह व्यवस्था उठ गई है। एक यहूदी भजन-मन्दिर को मिलाकर नगर में १२६ गिर्जे हैं। उनमें से अधिकांश गिर्जे स्काच-सम्प्रदाय के हैं। एडिनबरा नगर ह्यूम (David Hume), स्टेवार्ट (Dugald Stewart), बर्न्स (Burns), स्काट (Sir Walter Scott), नाक्स (John Knox) आदि बहुप्रसिद्ध मनीषी मनुष्यों की लीलाभूमि है। महात्मा नाक्स के घर में उनकी हस्तलिपि, उनकी इस्तेमाली बहुत सी चीज़ें और कई एक निर्यातन-यन्त्र (Instruments of torture)* यत्नपूर्वक रक्खे हुए हैं। स्काट जिसे घर में रहते थे वह भी दिखलाया गया। नगर की एक बस्ती में बहुत से मार्टरों (Martyrs) की क़बरें हैं। सत्रहवीं शताब्दी में धर्म-सम्बन्धी मत-विश्वास की विभिन्नता के कारण २०,००० के लगभग आदमी यहाँ मारे गये थे। उनमें से कुछ की समाधियाँ यहाँ हैं। एक स्थान पर सड़क के किनारे एक स्वामि-भक्त कुत्ते की क़बर और मूर्त्ति है। स्मारक मूर्त्तियाँ और स्तम्भ एडिनबरा में बहुत हैं। काल्टन पहाड़ की चोटी पर महात्मा नेलसन की और प्रधान सड़क के किनारे पर उपन्यास-तत्त्ववेत्ता स्काट की मूर्त्ति है। स्काट की मूर्त्ति २०० फुट ऊँचे मन्दिर में है। इसी तरह दार्शनिक ह्यूम, स्टेवार्ट व्यवस्था-शास्त्र के ज्ञाता मकेन्ज़ी (Sir George Mackenzie), गणितज्ञ प्लेफेयर (John Playfair), प्रसिद्ध कवि बर्न्स, मन्त्री

* धर्मसम्बन्धी मत-विश्वास जिनका जुदा होता था उन्हें कष्ट पहुँचाने के लिए इस यन्त्र का प्रयोग होता था।

मेलविल (Viscount Melville), विक्टोरिया के स्वामी प्रिन्स अलबर्ट, राजा चौथे जार्ज, मन्त्रिवर पिट, कवि रामज़े (Allan Ramsay), पण्डितवर विलसन (John Wilson), वेलिङ्गटन-ड्यूक आदि प्रसिद्ध पुरुषों के स्मारक स्तम्भ और मूर्त्तियाँ इस नगर में हैं। मन्त्री मेलविल की मूर्त्ति १३६ फ़ुट ऊँचे खम्भे के ऊपर है। प्रिन्स अलबर्ट की घुड़सवार मूर्त्ति के पैरों के पास और भी कई मूर्त्तियाँ हैं।

फोर्थ-सेतु (Forth Bridge)। एडिनबरा से एक दिन यह पुल देखने गया। यह पुल सन् १८८९ की १५ वीं नवम्बर को बन कर समाप्त हो गया था। कन्टीलिवर-प्रणाली (Cantilever principle) से यह भारी पुल बना है। चीना लोग इस हिसाब का व्यवहार बहुत दिनों से करते आते हैं; लेकिन उक्त प्रणाली से इतना भारी काम और कहीं नहीं किया गया। इञ्जीनियर एफेल ने लोहे पर लोहा रख कर एक भारी स्तूप अवश्य खड़ा कर दिया है; परन्तु यहाँ की कारीगरी और ही है। ८,२९६ फ़ुट अर्थात् पौने दो मील के लगभग लम्बा रेल्वे का पुल है। बीच के पाये सत्रह सत्रह सौ फ़ुट लम्बे हैं। पानी से १०० फ़ुट की ऊँचाई पर पुल का मार्ग है। उसके ऊपर ३५० फ़ुट लोहा है। सब लोहे के टुकड़ों को जोड़ने में ८० लाख रिवेट (Rivet) लगे हैं। सब मिला कर ३५ लाख पौण्ड के लगभग ख़र्च हुआ है। प्रिन्स आफ़ वेल्स ने इस पुल की स्थापना की थी। और एफेल आदि देश-विदेश के अनेक इञ्जिनियरों ने उपस्थित रहकर इसके निर्माता विश्वकर्मा फ़ाउलर (Sir Henry Fowler) महोदय को अभिवादन किया था।

इँग्लेंड।



न् १८६० की गर्मियों मे इँग्लेंड के मुफ़स्सिल की सैर करने निकला। पहले ते क्रिक (Crick) ग्राम में महात्मा स्मिथ George Smith of Coalville) के घर में मेहमान होकर महीने भर रहा। इस महान् सेवक (Philanthropist) पुरुष के जीवन के सम्बन्ध में दो चार बातें लिखकर फिर आगे का हाल लिखूँगा। कई वर्ष हुए, उनके पुत्र के पत्र से मालूम हुआ कि उनकी मृत्यु होगई। उस समय स्मिथ की अवस्था साठ वर्ष की होगी। किन्तु उस समय भी वह खूब तन्दुरुस्त सबल और जवानों की तरह परिश्रम में लगे रहते थे। वह ग़रीब के लड़के थे; इस कारण उन्हें लड़कपन से ही मज़दूरी करने के लिए लाचार होना पड़ा। इसी अवस्था में किसी तरह अक्षर पहचान कर उन्होंने खूब विद्योपार्जन किया। रात के समय उन्हें लिखने-पढ़ने के लिए अवकाश मिलता था। धीरे धीरे एक भारी ईंट के कारख़ाने के यह मैनेजर होगये; सालाना ७०० पौंड की तनख़्वाह मिलने लगी। कुछ दिनों तक यह काम करके कुछ रुपया जमा हो जाने पर नौकरी छोड़ दी। उनका उद्देश्य उच्च था। पर-दुःख-कातर स्मिथ ने पहला उद्योग उन बालक-बालिकाओं के उद्धार के लिए किया जो ईंट के कारख़ानों में मज़दूरी करते थे। इस महाव्रत के पालन में इस सत्य-सन्ध वीर पुरुष ने विषम प्रलोभन को पद-दलित कर दिया। अन्त

को जान पर आ बनी । सब ईंट के कारख़ानों के मालिकों ने पहले धन, उच्च पद आदि के प्रलोभन से इन्हें संकल्प-भ्रष्ट करना चाहा; पर जब उनका यह उद्योग सफल न हुआ तब उन्होंने छिपे तौर से उन्हें मरवा डालने तक की चेष्टा की । किन्तु जिसका सहायक ईश्वर हो उसका मनुष्य क्या कर सकता है ? उन्होंने "The cry of the children from the Brickyards of England." नामक एक ग्रन्थ लिखकर उसके द्वारा उन लड़कों के कष्टों की ओर देश की दृष्टि फेरी और अन्त को उनका उद्योग सफल हुआ । जिस रात को पार्लियामेन्ट मे उनकी भारी चेष्टा के बल से ईंट के कारख़ानों में बालक मज़दूर न रखने का आईन पास होगया उस दिन वह बहुत ही प्रसन्न हुए । स्मिथ का पहले का जमा किया हुआ ढाई हज़ार पौंड के लगभग धन इस 'बिल' के पीछे ख़र्च होगया । उस रात को, जिस दिन बिल पास हुआ, स्मिथ के पास केवल एक पेनी थी । इस स्वार्थत्याग को तो देखिए ! यह ख़बर जब मैंने अख़बार में पढ़ी तब दस मिनट तक मेरी आँखों से आनन्द के आँसू बहते रहे । उस समय स्मिथ महाशय से मुझसे जानपहचान नहीं थी । इस प्रकार प्रथम उद्योग में सफलता प्राप्त करने पर धर्मवीर ने दूने उत्साह के साथ काम शुरू कर दिया । कुछ दिन के बाद नहर में काम करनेवाले बालक-बालिकाओं* की शिक्षा और स्वास्थ्य आदि की देखरेख के सम्बन्ध में उन्होंने एक आईन पास कराया । इसके बाद जिप्सी लोगों के बालक-बालिकाओं के उद्धार के लिए उद्योग करते ही करते महात्मा ने शरीर-त्याग कर दिया । उस

---

* इँग्लेण्ड में अनेक नहरें हैं । उनमें जो नावें चलती हैं उनके मल्लाह सपरिवार सदा नावों पर ही रहते हैं । उनके लड़के और उनकी मातहती में काम करनेवाले लड़की-लड़के ।

समय राज्य के समाचारपत्रों में इस प्रकार आन्दोलन हुआ था। यथा—"What Mr. George Smith did for the Brickyard and Canal children is now a matter of history; and many will be interested in the effort he has been making to bring the Gypsy children within reach of legislation. We wish Mr. Smith's Bill every success."

स्मिथ स्वयं एक भिक्षुक थे। अपने और परिवार के पालन का भार देश के ऊपर इन्होंने छोड़ रक्खा था। कहाँ से कौन भेजता था, इसका कुछ ठीक न था; किन्तु अक्सर डाक-द्वारा २० पौंड के नोट उनके नाम आते थे। उनकी स्त्री और लड़की-लड़के बहुत ही सुन्दर और सुखी हैं। स्मिथ सदा निश्चिन्त और प्रसन्न रहते थे। वह कभी कभी परिवार में आकर आराम करते थे; नहीं तो अक्सर ग़रीबों की सेवा और सहायता के लिए लन्दन और देहातों में घूमा करते थे। स्मिथ महाशय इसी शरीर से स्वर्गभोग कर गये। मैंने कभी उनको उदास या अप्रसन्न नहीं देखा। सर्वदा भगवान् का नाम लेते थे और विधाता के विधान पर निर्भर रहते थे। दीन-दुखियों की सेवा करना ही उनका काम था। ऐसा आदमी शायद ही कोई हो जो उनसे प्रेम न करता हो। राजराजेश्वरी तक उनको इस तरह पत्र लिखती थीं।

Buckingham Palace, January 17th, 1876.

Sir,—I am desired to acknowledge your letter to the Queen and to say that Her Majesty takes much interest in the endeavours which you make to ameliorate the condition of this class of the labouring population.

I have &c.,

Thos. Biddulph.

बहुत लोगों ने स्मिथ का जीवनचरित लिखा है। ऐसा कोई सप्ताह नहीं बीतता था जिसमे उनकी कुछ न कुछ प्रशंसा अख़बारों में न छपती हो। उनके अपने लिखे कई एक सुन्दर ग्रन्थ हैं। स्मिथ का और एक भारी काम यह है कि वह शिक्षा, धर्मोपदेश, परस्पर-सहानुभूति इत्यादि स्थायी उपायों के द्वारा दुख-दरिद्रता दूर करने की चेष्टा के लिए एक "प्रेम का दल" (Band of Love) स्थापित कर गये हैं। भारतेश्वरी और उनकी कन्या बियेट्रिस इस दल के साथ सहानुभूति रखती थीं। स्मिथ महाशय ने मुझे भी इस दल में शामिल कर लिया था। क्रिक मे रहते समय कई दिन मैं उनके साथ इस दल के काम में शरीक हुआ था। नार्दम्पटन के दो अख़बारों में उसके सम्बन्ध मे यों लिखा गया था—

"On Sunday and Monday the George Smith of Coalville Band of Love at the Cavin, Crick, and Buckby Wharf were honoured by the visit of Mr —a high-caste native from India. His addresses were most interesting, and many cheers were given when he referred to the reverence the people of India have for their great mother Queen Victoria His reference also to the manners and customs of India brought forth much laughter and cheering. The love-room was on the two occasions crowded almost to suffocation, and no doubt great will be the result of Mr.—having become a "brother" Mr.—has been initiated into the Band of Love. He will no doubt return to India with pleasant memories of his visit to the founder of the Band and Rugby School. Dr. Percival, the Head Master of Rughby School and Mrs. Percival kindly invited Messrs —and Smith

to lunch, and they were shewn over the Art Museum and extensive premises of the Rugby School, of world-wide reputation as the first in many respects of the public schools in England."—*Northampton Mercury.—Herald.*

महात्मा स्मिथ के जीवन में अनेक अद्भुत घटनायें हुईं; जिनके द्वारा विधाता की विशेष कृपा उन्हें इतनी दूर अग्रसर कर सकी। इस जगह पर उन सब बातों की आलोचना करने की ज़रूरत नहीं। यहाँ पर केवल इतना ही कहना है कि महात्मा स्मिथ का जीवन एक यथार्थ या सच्चे जीवन का सजीव उदाहरण है। स्मिथ के मार्ग का कुछ भी अनुसरण कर सकें तो हमारे आत्मा और देश का विशेष कल्याण हो। जितने दिनों तक महात्मा स्मिथ का मेहमान बनकर उनके घर में रहा उतना समय बड़े सुख से बीता। उसे मैं हमेशा स्मरण करता रहूँगा। मैंने उनके कार्य में सहायता के लिए कई बार कुछ देना चाहा; पर उन्होंने किसी तरह उसे स्वीकार नहीं किया। हमारे देश के अनेक लोगों की धारणा है कि अँगरेज़ लोग आतिथि-सत्कार करना नहीं जानते। पर यह कोरा भ्रम है। महल्ले के आदमी तक मेरा खूब सत्कार करते थे।

क्रिक (Crick)। स्मिथ का गाँव क्रिक बहुत छोटा है। किसी समय यह गाँव खूब समृद्धिशाली था। स्थानीय गिर्जा और उसके पादरी की सालाना ६०० पौंड की तनख्वाह इसका प्रमाण है। गाँव के रास्तों में रोशनी नहीं है। केवल एक दूकान, एक सराय (Roadside Inn) और एक छोटा सा डाकघर है। रेल्वे स्टेशन ४ मील के फ़ासले पर है। चारों ओर मैदान और खेत हैं। पाँच छः सौ से अधिक आदमी नहीं बसते। उनमें से अधिकांश गृहस्थ किसान हैं। पुराने ढङ्ग के छप्परदार एक खण्ड और दो खण्ड के

मकानात हैं। मुझे वहाँ लोग लन्दन-निवासी जानते थे। रास्ते में सभी लोग मुझे अभिवादन करते थे। स्मिथ के वाल-वच्चों के साथ जिसके घर या (farm) में घूमने जाता था वही खूब सत्कार करता था। जिस समय वहाँ मैं था उस समय एक अमेरिकन यात्री स्मिथ के घर में मेहमान हुआ था। उसका उद्देश्य केवल स्मिथ का वृत्तान्त जानकर उसे अमेरिका के समाचार-पत्रों में छपाना था। स्मिथ का नाम ऐसा ही जगत्प्रसिद्ध है। यहाँ से स्मिथ के साथ नार्दम्पटन (Northampton) और रगवी (Rugby) गया। उनके वाल-वच्चों के साथ फिर वारविक (Warwick), लेमिंगटन (Leamington), आशवी (Ashby St. Ledger) और शेक्सपियर की जन्मभूमि स्ट्रेटफ़ोर्ड (Stratford-upon-Avon) देखने गया। आशवी में प्रसिद्ध विद्रोही गाईफ़ाक्स (Guy Fawkes) का घर और जिस घर मे वैठकर कुचक्र रचा गया था वह भी देख आया।

नार्दम्पटन। नेन (Nen) नदी के किनारे पर के छोटे से पहाड़ और उसकी चोटी पर यह नगर वसा है। जन-संख्या ६०,००० के ऊपर है। उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम को दो वड़ी सड़कें गई हैं। उनसे नगर चार समान भागों मे वट गया है। एक प्राचीन कैसल, दो नई वनावट के गिर्जे और सन् १४५० में वना हुआ प्रसिद्ध टामस वेकेट (Thomas Becket) नामक अस्पताल, ये प्राचीन दर्शनीय कीर्त्तियाँ हैं। दोनों गिर्जों में एक तो नार्मन-राजा विलियम के समय का है और दूसरा नाइट-टेम्पलर लोगों ने जेरुस्स-लेम के अनुकरण पर वनवाया था। इमारतों में टाउनहाल, जेल-ख़ाना और पागलख़ाना देखने योग्य और प्रधान हैं। इँग्लेण्ड में यहाँ जूते वनाने के प्रधान कारख़ाने हैं। उनके सिवा अनेक वियर

शराब की भट्टियाँ, मैदा और काग़ज़ की मिलें, ईंट के कारखाने, भेड़ों के बाज़ार आदि नगर को गुलज़ार बनाये हुए हैं। नगर के बीच में एक लम्बा-चौड़ा बाज़ार और उसके बीच में एक फुहारा है।

जिप्सी जाति (Gipsy)। नार्दम्पटन नगर के बाहर इस समय जिप्सी लोगों ने दो चार दिन के लिए अपना अड्डा क़ायम किया था स्मिथ के साथ उनकी मंडली देखने गया। जिप्सी लोग इँग्लेण्ड में कहाँ से आये, इस बारे में इतिहास साफ़ साफ़ कुछ नहीं बताता। किन्तु उन लोगों की भाषा के द्वारा जान पड़ता है कि वे भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम अंश से निकल कर यूरोप के अनेक देशों और आफ्रिका के उत्तर खंड में पहुँच गये। ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी में वे इँग्लेण्ड में जाकर बसे। वे अपने को 'ड़ोम' कहकर अपना परिचय देते हैं। मेरी समझ में यह 'डोम' भारत का 'ड़ोम' शब्द ही है। यूरोप में उन्हें ईजिप्ट से आया जानकर लोग जिप्सी नाम से पुकारने लगे। उनकी भाषा में आठ कारक और भारत के अनेक शब्द पाये जाते हैं। जैसे घर—घेर; एक—येक; करा—कोरा; ते—ते; ऊपर—अप्रो; अन्दर—अन्द्र; तत्ता—ताते; जाना—जावा इत्यादि। हमारे देश के नट-बाज़ीगर आदि असभ्य गृह-हीन लोग जिस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते हैं उसी ढङ्ग से ये लोग भी रहते हैं। यूरोप में रहने के कारण इन लोगों में यह अन्तर होगया है कि जिप्सी लोग गर्म कपड़ों का इस्तेमाल करते हैं और सारी गृहस्थी एक घोड़े की गाड़ी में लादकर इधर-उधर घूमते-फिरते हैं। इनका सारा परिवार और सामान उसी गाड़ी के भीतर रहता है। यूरोप की आब-हवा के कारण इनका रङ्ग भी सुन्दर होगया है; किन्तु आँखें और बाल

अभी तक हिन्दुस्तानियों के ऐसे घने काले होते हैं। भारतीय डोमों का डिलिया बनाने-बेचने का रोज़गार अभी तक इनसे नहीं छूटा। ये लोग गाँव के बाहर मैदान मे गाड़ी-घोड़ा-सहित ठहरते हैं। चोरी करने में भी ये बंद नहीं हैं। इन सब कारणों से विश्वास होता है कि ये लोग भारतीय नट-बाज़ीगर आदि का ही संशोधित संस्करण हैं। इँग्लेण्ड में ये लोग २,००० से अधिक हैं। इनमें एक राजा या दलपति और रानी होती है। कभी कभी डिलिया-टुकनी बेचने के लिए जिप्सी लोग लन्दन की सड़कों पर गाड़ी-घोड़े लिये धीरे धीरे जाते देखे जाते हैं। इनकी स्त्रियाँ भोली-भाली अँगरेज़-महिलाओं को हस्तरेखा देखने आदि का ढोंग करके खूब ठगती हैं। साल के भिन्न भिन्न समयों में इँग्लेण्ड और वेल्स अनेक स्थानों में हज़ारों मेले लगते हैं उनमे ये लोग जाते और अनेक असत् उपायों से खूब पैसा पैदा करते हैं।

रगबी स्कूल (Rugby School)। यह छोटा सा नगर एवन (Avon) नदी के किनारे पर है। यहाँ १२,००० के लगभग लोगों की बस्ती है। यहाँ का प्रधान दृश्य स्कूल है। स्कूल के हेडमास्टर डाक्टर पर्सीवाल (Dr Percival) और उनकी दयामयी पत्नी ने मध्याह्न भोजन का निमन्त्रण दिया था, इसी से रगबी जाना पड़ा। भोजन के बाद मास्टर साहब ने सब स्कूल दिखाया और उसका सारा वृत्तान्त कह सुनाया। एक छात्र (स्मिथ के लड़के) ने भी बहुत सी बातें बतलाईं। रानी इलिज़ाबेथ के राज्य-काल में, सन् १५६७ में, शेरिफ़ (Laurence Sheriffe) नामक उनके एक अनुचर ने इस स्कूल को स्थापित किया था। रगबी के निकटस्थ ब्राउन-सोवर (Brownsover) ग्राम में शेरिफ़ का जन्म हुआ था। वहाँ

की सम्पत्ति, उनका रगबी ग्राम में बना हुआ महल और लन्दन की चौबीस बीघे ज़मीन (इसकी सालाना आमदनी ५,००० पौण्ड है) शेरिफ़ उक्त स्कूल के लिए दान कर गये हैं। २० वीं अक्तूबर को उनके नाम का ख़ास दिन (Founder's Day) माना जाता है। स्कूल चलाने का काम १२ ट्रस्टियों के हाथ में है। इस भारी विद्यालय के एक खण्ड का नाम है "नया बड़ा स्कूल" (New Big School) यह सन् १८८५ में बना था। कोई धूमधामी उत्सव होने पर यहाँ सब लोग जमा होते हैं। नहीं तो केवल बुधवार और शुक्रवार को प्रातःकाल यहाँ "प्रार्थना" की जाती है। इस हाल में २० चित्रपट हैं; उनमें स्काटलेण्ड की रानी मेरी का चित्र सबसे श्रेष्ठ है। लड़कों की शिक्षा के लिए स्कूल के हितैषी सज्जनों ने जो नया आर्गन बाजा (Organ) दिया है वह यहाँ रक्खा है। यहाँ से भारी फाटक होकर छठी श्रेणी के घर (Sixth from Room) में जाना होता है। इस घर के द्वार के ऊपर एक भारी शीशा है। उसमें सन् १६०० से जितने हेडमास्टर हुए हैं उनके चित्र अंकित हैं। अनेक प्राचीन ग्रन्थों का यहाँ संग्रह है। हर एक विद्यार्थी के लिए अलग अलग एक एक छोटा डेस्क है। पुराने चौक के आँगन के दक्षिण ओर बड़ा स्कूल है। यहाँ केवल मङ्गल, वृहस्पति और शनिवार को छात्रों के नाम की पुकार होती है और कभी कभी कोई "श्रेणी" बैठती भी है। इसके एक कोने में केम्ब्रिज और आक्सफ़ोर्ड से वृत्ति पाये हुए छात्रों के नामों की सूची और दूसरी ओर एक प्राचीन टूटा हुआ आर्गन बाजा रक्खा है। इस कमरे में स्कूल का एक नक़शा टँगा हुआ है। उसमें छात्रों के टहलने के लिए निर्दिष्ट स्थान दिखलाये गये हैं। स्कूल का गिर्जा सन् १८२० में बना और सन् १८६७ में बढ़ाया गया। इस गिर्जे

की दीवार १७ चित्रित शीशों से आवृत है और दश शीशे स्मारकचिह्न हैं। उनमें से एक शीशा क्रीमिया के युद्ध में मरे हुए ३३ आदमियों का और एक शीशा भारत के सिपाही-विद्रोह में मरे हुए १२७ रग्बी-छात्रों का स्मारक है। इस गिर्जे में प्रसिद्ध शिक्षक डाक्टर आर्नल्ड (Thomas Arnold) की समाधि है। यहाँ के बड़े आर्गन की क़ीमत ३०० पौण्ड है। इसके सिवा एक बड़ी लाइब्रेरी, म्यूज़ियम, कारख़ाना (Workshop), मानमन्दिर, तैरना सीखने के लिए छाया हुआ जलाशय और कसरत आदि का जिम्नेसियम (Gymnasium) भी इस स्कूल के अन्तर्गत है। छात्रों को नित्य विविध काम करने होते हैं। छः बजे जगने की घंटी होती है। सब छात्र उठ बैठते हैं। सात बज कर दस मिनट होने पर पाँच मिनट तक और एक घंटी बजती है। सवा सात पर सब लड़के अपने अपने क्लास में आकर बैठ जाते हैं। ठीक सात बजे एक और भी घंटी हो जाती है। वह घंटी गिर्जा में उपस्थित होने की है। गिर्जे में हेडमास्टर एक प्रार्थना का गीत गाते हैं; लड़के भी उसमें शामिल होते हैं। पीछे विधिपूर्वक प्रार्थना पूर्ण करके अपने अपने क्लास में आकर आठ बजे तक पढ़ते हैं। उसके बाद कलेवा करने की छुट्टी होती है। इस समय कुछ लड़के ऐसी खाने की चीज़ें ख़रीदने बाज़ार जाते हैं जो स्कूल में नहीं मिलतीं। कलेवा करने के बाद सवा नौ बजे से सवा बजे तक क्लास में पढ़ना पड़ता है। डेढ़ बजे दोपहर को भोजन की घंटी बजती है। मङ्गल, बृहस्पति और शुक्रवार को छोड़ कर तीसरे पहर तीन बजे से छः बजे तक फिर स्कूल लगता है। इन तीन दिनों में, उक्त समय में, सब लोग खेलते-कूदते हैं। विशेष कारण के सिवा अगर कोई छात्र खेल में शरीक नहीं होता तो उसे दण्ड मिलता है। छः बजे चाय पीने के बाद और गर्मियों में सवा सात बजे के बाद फिर

कोई लड़का बाहर निकलने नहीं पाता। साढ़े सात बजे से नव बजे तक पाठ याद करके मामूली भोजन के बाद सब सो रहते हैं। बड़े दिन की छुट्टियों के बाद स्कूल खुलने पर पश्चाद्धावन (Paper-chasing) और स्रोतोल्लङ्घन (Brook-jumping) के खेल शुरू होते हैं। कई छोटे छोटे स्रोत इस जगह से बहकर एवन नदी में गिरे हैं। क्रमशः इन झरनों के तङ्ग हिस्से से चौड़े हिस्से को नाँघते नाँघते आगे-पीछे छोटे-बड़े सब बालक कीचड़ और जल से लथ-पथ हो जाते हैं। अगर कोई इस खेल से भागता है तो सब मिल कर उसे पानी में डाल देते हैं। उसकी दुर्दशा देखकर रास्ता चलनेवाली बुढ़ियों के दया प्रकट करने पर भी वह खुद खुश होता है। ईस्टर-टर्म के समय दो तीन दिन बालिग़ लड़के एक एक करके पाँच सात कोस दौड़ जाते हैं। कई साल हुए, इस दौड़ के खेल में एक आदमी चौदह माइल एक घंटे चार मिनट में गया था। उक्त टर्म के अन्तिम समय में तरह तरह की कसरतें होती हैं। एवन के किनारे तम्बू डालकर एक अड्डा स्थापित होता है। वहाँ एक मील लम्बा सर्पाकार टेढ़ा-मेढ़ा एक स्रोत है। उसे बारम्बार नाँघकर समाप्त करना (Steeple-chase) पड़ता है। दूसरे टर्म में क्रिकेट का खेल शुरू होता है। इसमें सबको शरीक होना पड़ता है। स्कूल के आठ खंड हैं। उनमें परस्पर लाग-डाँट रहती है। अन्त को लन्दन के लार्ड-मैदान में मार्लबरो कालेज के छात्रों के साथ मैच (Match) खेलकर क्रिकेट का खेल समाप्त होता है। इसके बाद फ़ुटबाल शुरू होता है। इसमें अनेक लड़के विशेषरूप से चोट खा जाते हैं। रग्बी-खेल यहीं का आविष्कार है। इस खेल के संबन्ध में हेडमास्टर ने कहा—"No foreigner who once sees a Rugby foot-ball match can ever forget it; for it instils into his mind a

determination which has brought the English nation to its present position." खेलों में विना किसी विशेष कारण के अनुपस्थित होने पर वेंत तक की सज़ा दी जाती है। हेडमास्टर के अलावा ३२ शिक्षकों और दो निरीक्षकों (Marshal) के द्वारा स्कूल का सब काम होता है। हेडमास्टर का पद ऊँचा होता है और उसे अच्छी तनख़्वाह मिलती है। ये लोग प्रायः विशप या आर्च-विशप के उँचे पद को पा जाते हैं। पर्सीवाल महाशय, थोड़े दिन हुए, ४,२०० पौंड वार्षिक वेतन पर हरफ़ोर्ड (Hereford) के विशप का पद पा गये हैं। यह सुशिक्षित हैं और छात्रों की नैतिक उन्नति के संवन्ध में विशेष यत्न करते थे। छात्र और शिक्षक गण सभी इन पर बड़ी श्रद्धा रखते थे। यहाँ के शिक्षक लोग विश्वविद्यालय का गाउन और टोपी (College-Cap) पहन कर स्कूल में आते हैं।

वारिक। यहाँ का एवन नदी के तट के पहाड़ पर वना हुआ प्राचीन कैसल प्रसिद्ध है। उसके संवन्ध में एक आदमी ने लिखा है—"The most magnificent of the ancient feudal mansions of English nobility still used as a residence." ऊँचे स्थान पर होने के कारण यह वहुत दूर से देख पड़ता है। १४ वीं शताव्दी मे वने हुए इसके तीनों टावरों में एक १४७ फुट ऊँचा है। इसके अन्तर्गत वड़ा हाल और पारिवारिक कमरे आदि सन् १८७१ में आग में जल गये थे। वे फिर से वनाये गये हैं। लकड़ी का वना हुआ एक स्थानीय अस्पताल विचित्र ढङ्ग का है। नगर में १४,००० आदमी रहते हैं।

लेमिंगटन। वारिक से दो मील के फ़ासले पर, लीम और एवन नदी के संगम पर, यह नगर वसा हुआ है। यह नगर धातुओं के

झरने (mineral spring) के लिए प्रसिद्ध है। इससे मिले हुए हम्माम में नहाने के लिए वहुत से स्थानों से रोगी आते हैं। अनेक वृद्ध लोग अन्त को यहाँ आकर रहते हैं। चारों ओर शिकार का स्थान रहने से वहुत से वड़े आदमी भी आया करते हैं। यहाँ के घर और रास्ते सव साफ़ हैं। नगर में दो सुन्दर वाग़ हैं। २०,००० से अधिक आदमी यहाँ रहते हैं।

स्ट्रेटफोर्ड (Stratford-upon-Avon)। अँगरेज़ी जाननेवाले लोगों के लिए यह स्थान तीर्थ-स्वरूप है। यात्रियों में फ़ी सैकड़े नव्वे अमेरिकन यहाँ आते हैं। उन लोगों ने ५।७ हज़ार पौंड की लागत से नगर के वीचों वीच चौराहे पर एक फुहारा स्थापित किया है। इसमें लिखा है—"Honest Water which ne'er left man i' the mine." शेक्सपियर के घर में उनका जन्मस्थान, बैठने की जगह और कुर्सी दिखलाई जाती है। सव लोग एक एक वार उस कुर्सी पर वैठे। पृथ्वी के प्रधान तमाशा दिखलानेवाले वर्नम ने इस घर को खरीद कर समूचा उठाकर अमेरिका ले जाने का विचार किया था और उस के लिए खूव धन भी देने के लिए तैयार थे। किन्तु अँगरेज़ उसे क्यों देने लगे ? तभी से यह घर विशेष यत्न के साथ सुरक्षित है। नदी-तट पर गिर्जे में शेक्सपियर की समाधि देखने गया। यह स्थान निर्जन है। गिर्जा छोटा नहीं है। सामने नदी वहती है। गिर्जे के चैन्सिल (Chancel) में कवि का शव गड़ा है। ऊपर के पत्थर पर वड़े वड़े अक्षरों में खुदा है—

Good friend for Jesus' sake forbeare,
To dig dust encloased heare,
Blese be y spares thes stones,
And curst be he y moves, my bones

इस लेख की तीसरी लाइन की पहली y के सिर पर एक e और दूसरी तथा चैाथी लाइन की y के ऊपर एक एक s है। यहाँ के मोनूमेन्ट में शेक्सपियर की एक अर्द्धमूर्त्ति है। हाथ में क़लम और काग़ज़ है। चोटी के ऊपर एक मनुष्य की खोपड़ी है। आस पास दे। बच्चों की बैठी हुई मूर्त्तियाँ हैं। एक बच्चे के पास और एक खोपड़ी है। मोनूमेन्ट के नीचे लिखा है—

Indigio Pylivm, genio Socratem, arte Maronem ,
Terra tegit, Popvlvs maeret, Olympvss habet
Stay Passenger why goest thou by so fast ?
Read if thou canst, whom envious Death hath plast
Within this monument Shakespeare with u home,
Quick nature dide Whose name doti decky iombe,
Far more ten cost Sichally He hati writt,
Leaves living art, But page to servf his witt

Obibit ano do 1616
Ætatis 53 Die 23 ap

नागरिक टाउन हाल के सामने शेक्सपियर की स्मारक मूर्त्ति है। पैरों के पास चारों ओर कई काल्पनिक मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। टाउन हाल के भीतर शेक्सपियर और नाट्याचार्य गैरिक के दे। चित्रपट रक्खे हैं। पहले के फ्रेम के ऊपर और नीचे लिखा है—

This case was made from a portion of the waste wood, which formed part of the old structure of Shakespeare's house"

उसके नीचे लिखा है—

"This portrait of Shakespeare after having been in the possession of Mr William Oakes Hunt, Town-cherk of Stratford-upon-Avon and his family for upwards of a century, was

restored to its original condition by Mr. Simon Collins of London; and being considered a portrait of much interest and value was given by Mr Hunt to the town Stratford-upon-Avon."

नगर का पुराना थियेटर (Shakspeare Memorial Theatre) तोड़ कर सन् १८७७ में ३०,००० पौंड खर्च करके नया बनवाया गया है। यहाँ कवि की पत्नी का आवास-भवन Anne Hathaway's Cottage) भी दिखलाया जाता है। एवन नदी बहुत छोटी है। किन्तु रमणीयता उसमें खूब है। और वह रमणीयता कवि के नाम के साथ सम्बन्ध रखने के कारण और भी कुछ बढ़ी हुई जान पड़ती है। नदी के ऊपर एक १४ पायों का पत्थर का बना पुल है।

बर्मिंघम (Birmingham) इँग्लेण्ड में चौथे और मध्य-प्रदेश (Midland) का प्रधान नगर बर्मिंघम-राज्य का एक विशेष स्थान है। चार लाख से ऊपर यहाँ आदमी रहते हैं। नगर का आकार अर्धगोलाकार है। इसके पास एक छोटी नदी बहती है। दक्षिण और पश्चिम ओर जङ्गल है। नगर के रास्ते टेढ़े और तङ्ग हैं। बीच में कुछ खुली जगह (Bull-ring and High Street) है। यहाँ पर ७०,००० पौंड की लागत से बना हुआ ४,३८० वर्गगज़ का भारी बाज़ार (Market Hall) है। इसमें ६०० दूकानें लगने की व्यवस्था (Stalls) है। नये रास्ते में एक्सचेञ्ज, रायल सोसाइटी, पोस्टआफ़िस, ग्रामर स्कूल, रायल थियेटर, टाउन हाल आदि की इमारतें खड़ी हैं। टाउनहाल में ५,००० लोगों के खड़े होने की और २,५०० लोगों के बैठने की व्यवस्था है। यहाँ के रेल्वे स्टेशन की शीशे की छत एक पाया है। यह ११००×२९० वर्गफ़ुट की और ८० फुट ऊँची है। नगर की शोभा के लिए नेल्सन, भाफ़ की मेशीन बनाने-

वाले वाट (James Watt), आक्सिजेन का आविष्कार करनेवाले प्रिस्टले (Priestley) आदि कई प्रसिद्ध पुरुषों की मूर्त्तियाँ आदि स्थापित हैं। गैस-लाइट का आविष्कार करनेवाले मर्डाक (Murdoch) इस नगर के रहनेवाले थे। किन्तु उनका कोई चिह्न देखने को नहीं मिला। यहाँ का एञ्जिन बनाने का कारख़ाना पृथ्वी भर में श्रेष्ठ है। पीतल का काम न्यूनाधिक १०,००० आदमी करते हैं। साल भर में १४ लाख मन यह धातु ख़र्च होती है। इस नगर में लोहे के निब एक सप्ताह में दो करोड़ बनते हैं। ख़ैरात के सम्बन्ध में भी इस नगर की प्रसिद्धि कम नहीं है। स्त्रियों और बच्चों के तरह तरह के अस्पताल सर्वसाधारण की सहायता से चलते हैं। उनमें सालाना ३०,००० पौंड ख़र्च होता है। उनमें एक होमियोपैथिक अस्पताल है। इसके ६०० आदमियों के रहने लायक़ एक पागलख़ाना और तीन वर्कहाउस (Workhouse) अथवा बेकार लोगों के लिए कारख़ाने हैं। उनमें न्यूनाधिक २,००० आदमी काम कर सकते हैं। नगर में एक सेशन अदालत, चार बैङ्क, दो बड़े थियेटर, दो म्यूज़िक-हाल, कई एक छोटे थियेटर, कई एक अच्छे पुस्तकालय और पाठ-भवन और एक म्यूज़ियम है। फ़्री लाइब्रेरी पहले-पहल खोलने के दिन वक्तृता में कहा गया था—"We have here made provision for our people—for all our people—of God's greatest and best gifts unto man."—*Dawson.* यह वहाँ पर लिखा है। म्यूज़ियम के नीचे के खण्ड में भारतबन्धु जान ब्राइट (John Bright) एक संगमरमर की मूर्त्ति है। इस म्यूज़ियम के भिन्न-भिन्न कमरों में बहुत से चित्रपट और अनेक प्रकार की आधुनिक और पुरानी चीज़ों में निम्नलिखित सामग्री रक्खी है। २,००० वर्ष से भी अधिक पुरानी कसौटी के पत्थर की बनी

एक बुद्धदेव की एक जन्तु की पीठ पर बैठी हुई मूर्त्ति। यह गंगा-तट पर बने हुए किसी टूटे हुए बुद्ध-मन्दिर से सन् १८६३ में मिली थी। सन् १८६२ में सुल्तानगञ्ज में मिली हुई उक्त महा-पुरुष की एक और मूर्त्ति। दिल्ली के अन्तिम बादशाह की हीरा-मोती-मानिक-टकी टोपी। उक्त बादशाह की बेगम के ऐसे ही क़ीमती कड़े, अँगूठी, अँगुश्ताना आदि। दिल्ली-पति की सुवर्ण-रत्न-खचित तरवार की मूठ। चन्द्रहार, चिक आदि औरतों के गहने। पञ्जाब के झरोखे-जालियाँ। भारत की तरह तरह की पुरानी बन्दूकें और भैंसे के सींग, हाथी-दाँत, चन्दन की लकड़ी की अनेक प्रकार की कारीगरियाँ। चीन और जापान का मीने का काम (Enamel) जैसा कि यूरोप में अनेक चेष्टा करने पर भी नहीं बन सका। बर्मिंघम से पाँच दैनिक और दो साप्ताहिक अख़बार निकलते हैं। शिक्षा के सम्बन्ध में यहाँ अनेक 'अनुष्ठान' हैं। सन् १५५२ में जो ग्रामर-स्कूल स्थापित हुआ था उसकी सम्पत्ति की आमदनी उस समय केवल इक्कीस पौण्ड थी। अब उसी सम्पत्ति की आमदनी १५,००० पौण्ड हो गई है। इस ३०० वर्ष से अधिक समय में नगर की कैसी उन्नति हुई है, सो केवल इतने ही से जान लिया जा सकता है। हाई स्कूल बनने में ७१,००० पौण्ड ख़र्च हुए हैं। इसमें ६०० और इसके मातहत चार छोटे स्कूलों में १,५०० लड़के पढ़ते हैं। 'मध्य देश के अनुष्ठान' (Midland Institute) नामक शिक्षालय में विज्ञान, भाषा, साहित्य, इतिहास आदि बहुत से विषयों का ज्ञान कराया जाता है। विज्ञान के विद्यार्थी ६०० और अन्यान्य विषयों के विद्यार्थी १,६०० यहाँ शिक्षा पाते हैं। कौन्स-कालेज को विश्वविद्यालय की ऐसी क्षमता प्राप्त है। अब यहाँ केवल चिकित्सा और धर्मशास्त्र

पढ़ाया जाता है । मेसन का वैज्ञानिक कालेज नया खुला है । इसके लिए महात्मा मेसन (Sir Josiah Mason) एक लाख पौण्ड की सम्पत्ति दे गये हैं । विज्ञान आदि की शिक्षा और आलोचना के लिए यूरोप मे अनेक लोग ऐसा दान कर गये हैं। इसके सिवा अनेक छोटे स्कूलों में ५०,००० के लगभग विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं । नवीन नियम के अनुसार वहुत से बोर्ड-स्कूलों की स्थापना हुई है । उनमें दो लाख पौण्ड का ख़र्च और १६,००० वालकों की शिक्षा का प्रवन्ध है । इस नगर मे धनकुवेर कोई नहीं है; मगर थोड़ी वहुत सम्पत्ति सबके पास है । जो लोग इस समय अपने कारख़ानों मे सैकड़ों लोगों से काम कराते हैं उनके वाप-दादों ने एक समय ख़ुद मज़दूरी की थी । कहने का मतलव यह कि स्थानीय मध्यवित्त श्रेणी के साथ उच्च और नीच की समान घनिष्ठता है और उसके द्वारा सब लोगों मे परस्पर प्रेम भी खूब है । स्वामी और सेवक मे यहाँ ऐसा सद्भाव है कि वर्त्तमान सभ्य जगत् के अन्यान्य स्थानों की तरह यहाँ के मज़दूर हड़ताल (Strike) वहुत कम करते हैं । नगर-निवासी लोग भले, भव्य और राजनीति मे निपुण हैं । उच्चारण की विलक्षणता के कारण यहाँ की निम्न श्रेणी की वातें समझने में मुश्किल पड़ी थी; किन्तु फ़ोर्थ-ब्रिज के निकटस्थ गाँव की तरह नहीं । वहाँ की वातचीत तो किसी तरह समझ में ही नहीं आती थी । वर्मिंघम से महापुरुष राममोहन राय की समाधि देखने के लिए ब्रिस्टल को रवाना हुआ ।

ब्रिस्टल (Bristol) । एवन और फ़ोम (Avon and Frome) नदियाँ मिल कर ब्रिस्टल के भीतर से वही हैं । यहाँ आने का प्रधान उद्देश्य था राजा राममोहन राय की समाधि देखना । होटल में उतरते ही आर्नो-वेल नामक क़ब्रिस्तान (Arno's Vale Ce-

motry) में गया । प्रवेश करते ही प्रातःस्मरणीय महापुरुष का सुनहला मसोलियम देख पड़ा । राजा के बन्धु प्रसिद्ध द्वारकानाथ ठाकुर ने यह मन्दिर बनवाया है । ऐसी सुन्दर समाधि इस जगह और न थी ।

समाधि पर खुदा हुआ है—

"Beneath this stone rest the remains of Rajah Ram Mohon Roy Bahadoor. A conscientious and steadfast believer in the unity of the Godhead. He consecrated his life with entire devotion to the worship of the Divine Spirit alone. To great natural talents, he united thorough mastery of many languages, and early distinguished himself as one of the greatest scholars of his day. His unwearied labours to promote the social) moral and physical condition of the people of India, his earnest endeavours to suppress idolatry and the rite of Sutti and his constant zealous advocacy of whatever tended to advance the glory of God and the welfare of man live in the grateful memory of his countrymen. This tablet records the sorrow and pride with which his memory is cherished by his descendants He was born at Radhanagore in Bengal in 1776, and died at Bristol Sept. 27th, 1833 "*

राममोहन से कुछ ही दूर पर और एक बंगाली की समाधि है । उनकी समाधि पर लिखा है—"Joguth Chunder Gangooly, 1860." द्वार पर के आफ़िस में एक वृद्धा बैठी थी । उसके पास पहुँचने पर उसने कहा—मैंने द्वारकानाथ ठाकुर को देखा था । इसके बाद एक पुस्तक निकाल कर उस पर लिखने को उसने

---

*इस समाधि के बनवानेवाले द्वारकानाथ की समाधि लन्दन के उपनगर केन्सल-ग्रीन (Kensal Green) क़बरिस्तान में ऐसी दशा में है कि उसे सहज में खोजना कठिन है । वहाँ के आफ़िस में बहुत अनुसन्धान करने पर नम्बर जान कर उसे ढूँढ़ा ।

कहा। मैंने उसमें लिख दिया—"Visited the Rajah's tomb, 8th August, 1890." आज मेरा जीवन पवित्र हुआ। बहुत दिनों का मनोरथ पूरा हुआ। काशी, जेरुस्सलेम और मक्का जैसे हिन्दू, ईसाई और मुसलमानों के लिए हैं वैसे ही यह महातीर्थ बंगालियों के लिए हैं। महापुरुष की समाधि की प्रदक्षिणा करने के बाद घुटने टेक कर दयामय के श्रीचरणों में दो बूँद आँसू गिराये। इसके सिवा मुझ सरीखे नराधम से और क्या हो सकता था? हस्ताक्षर की पुस्तक में देखा, केशवचन्द्र आदि देश के कुछ आदमियों के ही उसमे हस्ताक्षर हैं; अधिकांश विलायत में आने जानेवाले बंगालियों के हस्ताक्षर उसमें नहीं हैं। ब्रिस्टल की विशेष दर्शनीय चीज़ों में पशुशाला भी एक है। उसमे एक काले रंग का अद्भुत सिंह देखा। और देखने लायक़ है क्लिफ्टन-पुल (Clifton Suspension Bridge)। यह ७०२ फ़ुट लम्बा और पानी से २५० फ़ुट ऊँचा है। पुल पार होकर उस पार अनेक उपवन और "विला" हैं।

बाथ (Bath)। ब्रिस्टल से १२ मील पर दक्षिण-पूर्व ओर सोमार्सेटशायर का प्रधान नगर बाथ एवन नदी के किनारे बसा हुआ है। इसके चारों ओर की प्राकृतिक शोभा जैसी मनोहर है वैसी ही इसकी पत्थर की बनी. इमारतें भी सुन्दर हैं। बाथ नगर अनेक कारणों से इँगलेण्ड का एक सुन्दर नगर समझा जाता है। नदी के ऊपर अनेक पुल हैं। नगर की चहारदीवारी बने हुए पहाड़ों के ऊपर मनोहर महल बने हुए हैं और चारों ओर के मनोरम प्राकृतिक दृश्य एक अपूर्व शोभा दिखला रहे हैं। पहाड़ों से घिरे रहने के कारण हवा यहाँ की अत्यन्त कोमल और मधुर है तथा जल में बहुत सी स्वास्थ्यकर धातु (Minerals) मिले रहने के

कारण अनेक तरह के रोगियों के लिए यहाँ का जल विशेष लाभ-दायक है । इस कारण स्वास्थ्य-प्राप्ति के लिए बहुत से लोग यहाँ आया करते हैं । सब मिला कर साल में दस पन्द्रह हज़ार आदमी आते हैं । स्थानीय लोगों की संख्या ५०,००० के लगभग है । यहाँ का गिर्जा प्रसिद्ध है और थियेटर मुफस्सिल के थियेटरों में श्रेष्ठ है । स्थानीय निम्नश्रेणी के लोगों में बहुत लोग s की जगह z का उच्चारण करते हैं । जैसे सोमर्सेट को ज़ोमर्ज़ेट ।

बोर्नमाउथ (Bournmouth) । इँग्लेण्ड के उपकूलस्थ नगर गर्मियों में खूब गुलज़ार रहते हैं । बालक बूढ़े जवान सब आकर दस पन्द्रह बीस दिन खूब आनन्द से रेती के टीलों पर विहार कर जाते हैं । बोर्नमाउथ एक ऐसा ही छोटा स्थान (Watering Place) है । ६,००० आदमी यहाँ रहते हैं । यह नगर हेम्पशायर (Hampshire) के उपकूल में अवस्थित है । पीछे पहाड़ और सामने समुद्र रहने से हवा इतनी कोमल है कि यहाँ के लोग कहते हैं कि उन्होंने कभी बर्फ़ गिर कर ज़मीन पर जमते नहीं देखी । दमा-खाँसी के बहुत से रोगी यहाँ रहते हैं । उनके लिए यहाँ कई आश्रम भी स्थापित हैं । यहाँ का पियर (Pier) ८०० फुट लम्बा है । पहाड़ के ऊपर घर और समुद्र-तट की जंगली सड़क बहुत ही मनोहर है ।

एन्फ़ील्ड (Enfield) । लन्दन से एक बार घूमता हुआ यहाँ आया और कई दिन रहा । नगर छोटा है । २०,००० के लगभग लोग रहते हैं । यहाँ पर एक पुराने महल का अवशेष है । अधि-कांश स्थानीय लोग यहाँ के प्रसिद्ध बन्दूक़ के कारखाने में काम करते हैं । मार्टिनी-हेनरी (Martini-Henry) बन्दूक़ यहीं बनती है । इसके पास पहले शिकार का जङ्गल था । इस समय जंगल

काट कर लन्दन के बहुत से सौदागरों ने विहार-बाग़ और विलास-भवन बनवाये हैं। उनमें से एक में लन्दन-प्रसिद्ध फाटक टेम्पल-बार (Temple-Bar) स्थापित किया गया है। रास्ते मे टूटे प्राचीन फाटक का रहना ठीक न समझ कर लन्दन के एक प्रसिद्ध बियर-कारख़ाने के अधिकारी (Brewer Sir W. Meuxe) ने इसे ख़रीद लिया और यहाँ लाकर लगवा दिया। उन्होंने इस फाटक को यहाँ अच्छी हालत में रक्खा है। नगर में न रह कर कई दिन तक ज़रा दूर पर बने हुए सराय्-होटल (Inn) मे ठहरा। वहाँ की मालकिन सदा मेरी सेवा-शुश्रूषा पर ध्यान रखतीं और कहती थीं कि "आप लन्दन के भद्र पुरुष हैं, हम लोग देहाती हैं। हमारा भोजन आपको कैसे पसन्द आ सकता है?" साफ़ मैदान के बीच ट्रङ्क-रोड (Trunk Road) के किनारे इस होटल में मैं बड़े मज़े से रहा।

राम्ज़गेट (Ramsgate)। अस्वस्थता के कारण सन् १८९० के शीतकाल में महीने भर से अधिक समुद्र-तट पर रहा। यहाँ और निकटस्थ मार्गेट नगर (Margate) मे कई एक समुद्र-जल के हम्माम हैं। वहाँ ओज़न (Ozone) मिले पानी मे स्नान करने से रोगियों को विशेष लाभ होता है। नगर समुद्र से उठे हुए खड़े पहाड़ पर बसा है। बोर्नमाउथ की तरह गर्मियों में अनेक स्थानों से बहुत से लोग आब हवा बदलने के लिए इस स्थान मे आकर दो चार सप्ताह रहते हैं। उसी से यहाँ के होटल और बोर्डिंग-हाउसों का काम साल भर चलता है। एक १,५०० और दूसरे १,२०० फुट के दो पियरों से १५० बीघे पानी घेर कर एक कृत्रिम हार्बर बनाया गया है। इसमे ४०० जहाज़ ठहर सकते हैं। इँग्लेण्ड के कृत्रिम हार्बरों मे यही सबसे बड़ा है। पियरों पर टहलने

से ख़ूब आराम मिलता है। एक पियर के मुहाने पर रोशनी-घर (Light-house) है। वहाँ से समुद्र का सुन्दर दृश्य और साफ़ दिन में दूसरे किनारे पर फ्रेंच-उपकूल देख पड़ता है। इस बन्दरगाह में नावें और जहाज़ बनते हैं और अनेक मछली के पकड़नेवाले रोज़गारी जहाज़ (Fishing Smacks) भी रहते हैं। यहाँ की लोक-संख्या २५,००० के लगभग है। इस साल का बड़ा दिन यहीं हुआ था। लन्दन में इस समय दूकानें और बाज़ार बहुत गुलज़ार रहते हैं। किसी किसी बड़ी दूकान के सामने विचित्र पोशाक पहने एक आदमी पिता-क्रिसमास (Father Christmas) बन कर तीसरे पहर फुटपाथ पर टहलता है। यहाँ दो तीन दिन पहले ही से सन्ध्या के समय छोटे छोटे बालक-बालिकाओं के झुण्ड भले आदमियों के द्वार पर "क्रिसमास-केरोल *" गाकर भिक्षा माँगते हैं। २५ दिसम्बर का दिन ईसा का जन्म दिन माना जाता है। लेकिन यह ठीक नहीं मालूम कि उनका जन्म-दिन कौन है। प्राचीन काल में जब जूलियन (Julian) प्रथा के अनुसार साल गिनना शुरू नहीं हुआ था तब ६ ठी जनवरी को ईसा का जन्मदिन माना जाता था। पीछे से रोमन-सम्राट् प्रथम जूलियस के द्वारा वर्त्तमान नियम प्रचलित होने पर वह महोत्सव दिसम्बर की २५ तारीख़ को मनाया जाने लगा। परन्तु बाइबिल के वर्णन के अनुसार

---

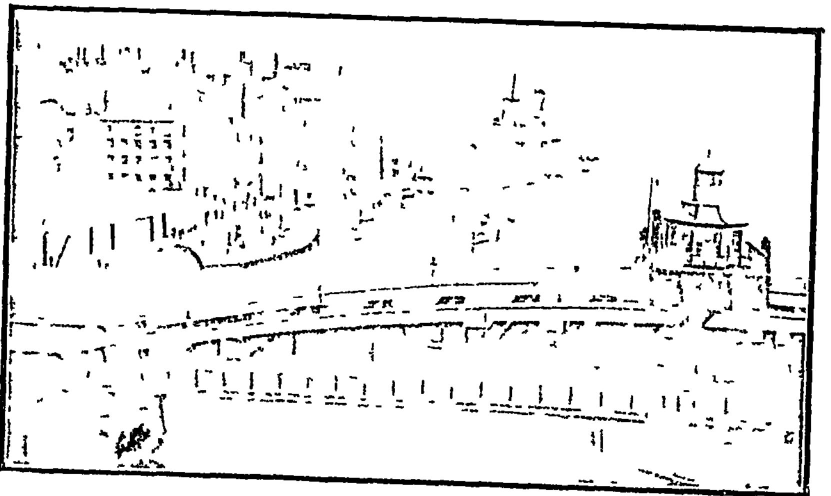
* Hark! the herald angels sing,
Glory to the newborn King,
Peace on earth and mercy mild,
God and sinners reconciled,
Hark! the herald angels sing
Glory to the newborn King—(*Christmas Card*).

जून या जुलाई महीने में अर्थात् पालस्टाइन प्रदेश की ग्रीष्मऋतु के मध्य-समय में ईसा का जन्म-काल होना चाहिए। क्योंकि उक्त ग्रन्थ में ऐसा लिखा है कि उस समय भेंड़ चरानेवाले रात को साफ़ आकाश के नक्षत्रों की रोशनी में भेड़ें चरा रहे थे। जूड़िया-भूमि में गर्मियों में सूर्य की बड़ी कड़ी धूप होती है, दिन को जानवरों को मैदान में निकालना माना उन्हें मार डालना होता है। इसी कारण वहाँ इन दिनों रात को भेड़ें चराई जाती थीं। यह ईसा का जन्म-दिन गर्मियों से सर्दियों में कैसे चला गया, यह बतलाना कठिन है। हाँ, यह निश्चित है कि ईसा से पहले यूरोप मे सूर्य देव के उद्देश्य से इस समय एक महापर्व होता था। उसी की जगह पर अब यह त्योहार मनाया जाने लगा है। बड़े दिन को सूर्योदय के अनुसार अब भी साल के फलाफल का अनुमान किया जाता है। किन्तु साधारण मनुष्यों मे यह विश्वास है।

राज्य के लाइफ़-बोट-स्टेशनों (Life-boat station) में राम्ज़-गेट एक प्रधान स्थान है। नावों के सिवा एक स्टीमर यहाँ के बन्दरगाह मे हमेशा काम पड़ने पर उसे करने के लिए तैयार रहता है। उसमे २४ घण्टे भाफ बना करती है। राज्य का उपकूल ५,००० मील है। साल में पृथ्वी के अनेक स्थानों से सात आठ सौ करोड़ पौण्ड के दाम की तरह तरह की तिजारती चीज़ों और अगण्य यात्रियों से भरे छः लाख से अधिक तरह तरह के जलयान यहाँ आते जाते हैं। उनमें दो लाख से अधिक माँझी-मल्लाह काम करते हैं। उन जहाज़ों मे साल भर में २,००० के लगभग जहाज़ सम्पूर्ण नष्ट हो जाते हैं या टूट फूट जाते हैं। इन दुर्घटनाओं से सात आठ सौ के लगभग जानें भी जाती हैं। इस प्रकार की विपत्तियों से रक्षा करनेवाले कई इन्स्टीट्यूट भी राज्य मे हैं। ३०० के लगभग

नावें उनके पास हैं। जर्मनी, फ़ांन्स और अमेरिका में भी ऐसे इन्स्टीट्यूट बहुत काम कर रहे हैं। किन्तु इस काम में पहला नम्बर इँग्लेण्ड का ही है। साल में कम से कम तीन जहाज़ों और ९०० के लगभग जानें इँग्लेण्ड के द्वारा बचाई जाती हैं। नावों की ऐसी व्यवस्था है कि किसी तरह उनके डूबने की संभावना नहीं। जहाँ पहाड़ में टक्कर लगने की आशङ्का से नाव नहीं जा सकती वहाँ राकेट (Rocket) छोड़ कर उसके साथ डबल रस्सी विपत्ति में पड़े हुए जहाज़ पर पहुँचाई जाती है। इस रस्सी के द्वारा (Life-buoy) भेज कर उनकी सहायता से लोग किनारे पर लाये जाते हैं। इस उपाय से भी साल में छः सात सौ जानें बचाई जाती हैं। घोर तूफ़ान या कठिन कुहासे के अन्धकार में संकट में पड़े हुए, जीवन की आशा छोड़ कर दीन दृष्टि से देख रहे, विदेशी जहाज़ों के मल्लाह प्रश्न-द्वारा जब कप्तान के मुख से सुन पाते हैं कि वे ब्रिटिश-उपकूल के पास हैं तब तुरन्त जीवन की आशा से उनके चेहरे खिल उठते हैं और वे दृढ़ विश्वास के साथ उच्च स्वर से कह उठते हैं कि "अब भय नहीं है, हम इँग्लेण्ड के निकट हैं; इशारा करो, अभी सहायता मिलेगी।" यह क्या इँग्लेण्ड के लिए कम गौरव की बात है?

मार्गेट। यह राम्ज़्गेट के बहुत ही पास है। बीच बीच में यहाँ घूमने आता था। कभी कभी तो दिन भर यहीं बीत जाता था। नगर के पुराने हिस्से के रास्ते अच्छे नहीं हैं। किन्तु नये हिस्से के रास्ते और घर साफ़-सुथरे हैं। चारों ओर गाड़ियों पर या पैदल टहलने के रास्ते सुन्दर हैं। यहाँ का पत्थर का ९०० फ़ुट लम्बा और ६० फ़ुट चौड़ा पियर ९०,००० पौण्ड की लागत से बना है। पियर के बाद लकड़ी की 'जेटी' (Jetty) है; उसके मोहरे पर



न्यूकैसल—पृ० ६४५



वाइगो—पृ० ६७२

वाडाहस—पृ० ६७५

रोशनी-घर है। समुद्र से खड़े पहाड़ के ऊपर २,५०० फुट लम्बा टेरेस (Terrace) है। उसके ऊपर से सामने समुद्र का दृश्य बहुत ही मनोहर जान पड़ता है।

टाइन के तट पर बना हुआ न्यू कैसल (Newcastle-upon Tyne)। सन् १८६१ में एडिनबरा से यहाँ आया। रोमन-साम्राज्य की अमलदारी में यहाँ एक पल्टन की छावनी थी। उसके बाद सन् १०८० में नार्मन-नरपति विलियम ने कैसल बनवाकर नगर बसाया। नदी से तीन पहाड़ निकले हैं। उन्हीं के ऊपर और उनकी चोटियों पर बस्ती है। पुराने रास्ते और गलियाँ अच्छी नहीं हैं। नये रास्ते चौड़े और साफ़ हैं। यहाँ का प्रधान गिर्जा (St Nicholas Church) सन् १३५९ में बना था। इसकी मुकुटाकार चोटी देखने में बड़ी सुन्दर है। यह चोटी नगर की सब इमारतों से ऊँची है। अदालत का मकान एथेन्स के न शीसियस-मन्दिर के अकरण पर बना है। एक सड़क पर अर्ल ग्रे (Earl Grey) का मोनूमेन्ट स्थापित है। ऊँचे स्तम्भ की चोटी पर उनकी खड़ी मूर्त्ति है। एक पहाड़ पर प्राचीन कैसल का भग्नावशेष है। उसका ८० फुट ऊँचा टावर व्यास मे ६२×५४ वर्ग फुट है। उसकी दीवार १४ फुट घन है। उद्भिद् और मांस आदि खाने की चीज़ों का बाज़ार ९ बीघे में बहुत ही सुन्दर बना है। नदी के ऊपर तीन पुल हैं। उनमे एक डबल है; अर्थात् जल के ऊपर ८६ फुट की ऊँचाई पर पैदलों और घोड़ागाड़ियों का रास्ता है। उसके २५ फुट ऊपर रेल चलती है। नदी-तट की 'की' (Quay) सुन्दर बनी है। साहित्य और विज्ञान से सम्बन्ध रखनेवाले कई इन्स्टीट्यूट, कालेज, स्कूल, अस्पताल, पागलख़ाना, जेलख़ाना, मान्शन-हाउस, एक्सचेञ्ज आदि की कई यहाँ की इमारतें देखने लायक़ हैं।

कोयला, नोन और जहाज़ बनाने के स्थानीय कारखाने प्रसिद्ध हैं। जन-संख्या डेढ़ लाख से ऊपर है।

इँग्लेण्ड की साधारण अवस्था। सन् १८६६ मे १० करोड़ से अधिक राज-कर वसूल हुआ था। साढ़े नव करोड़ के लगभग इसी साल ख़र्च भी हुआ। इस साल जातीय ऋण था न्यूनाधिक ६८ करोड़। टकसाल से साल में अन्दाज़न एक करोड़ पौंड के सोने के सिक्के बनकर निकलते हैं। विक्टोरिया का ख़र्च था ३,८५,००० पौंड। उसमें ६०,००० पौंड उन्हें अपने लिए मिलता था। शाही-महल के नौकर-चाकरों की तनख़्वाह साल में १,३१,२६० पौंड होती है। उनकी गृहस्थी का सालाना ख़र्च १,७२,५०० पौंड था। प्रिन्स आफ़ वेलस की वृत्ति सालाना ४०,००० पौंड थी। प्रिन्स की स्त्री की वृत्ति १०,००० पौंड और सन्तानों की वृत्ति ३६,००० पौंड थी। विक्टोरिया की बड़ी लड़की (जर्मन-सम्राट् की माता) की वृत्ति ८,००० पौंड थी। द्वितीय राजकुमार (ड्यूक आफ् एडिनबरा) की वृत्ति २५,००० पौण्ड थी। जब की बात मैं लिख रहा हूँ तब १०,००० पौंड ही रह गई थी। जर्मन-साम्राज्य के अन्तर्गत पैतृक सम्पत्ति के अधिकारी होने पर उन्होंने १५,००० पौंड छोड़ दिये। तृतीय पुत्र (ड्यूक आफ् कनाट) की वृत्ति २५,००० पौंड थी। चतुर्थ राजकुमार की विधवा स्त्री और अन्य राजकुमारियों में से हर एक की वृत्ति ६,००० पौंड थी। विक्टोरिया के छोटे चाचा की दो लड़कियाँ थीं। एक (यह स्वामी के साथ इँग्लेण्ड में रहती थीं) की वृत्ति ५,००० पौंड और दूसरी (इनके स्वामी एक जर्मन प्रिन्स थे और यह सुसराल में ही रहती थीं) की वृत्ति ३,०,० पौंड थी। राज-कोष से १२ पण्डितों को १,१५० पौंड सालाना पेन्शन दी जाती थी। इस जगह पर एक बार इँग्लेण्ड के साथ फ़ान्स का

मिलान कीजिए। वहाँ एक वर्ष एक करोड़ सैंतालीस लाख पौंड राज-कर वसूल हुआ था। पृथ्वी के और किसी देश में इतने टेक्स नहीं हैं। खर्च भी आमदनी के बराबर ही हुआ था। ऋण था १२४ करोड़ पौंड। इसका सूद ही सालाना २५ करोड़ पौंड से अधिक देना पड़ता है। ऐसा भारी ऋण कभी किसी राज्य पर नहीं हुआ। ऋण का प्रधान कारण है सन् १८७० में जर्मनी की लड़ाई। उसमें ३७,१५,००,००० पौंड खर्च हुए थे और २,३०,००,००० पौंड विजेता लोगों को दण्ड देना पड़ा था। ब्रिटिश सरकारी आफ़िसों का खर्च इस प्रकार है—लार्डसभा का सालाना खर्च ४१,५५६ पौंड। कामन-सभा का ५२,०३५ पौंड। ट्रेज़री का ६०,५५३ पौंड। होम-डिपार्ट का ३२,२२६ पौंड। फ़ारेन आफ़िस का ६०,०५० पौंड। औपनिवेशिक विभाग का ४१,६६४ पौंड। इंडिया आफ़िस का १,३३,८०८ पौंड। कर्मचारियों का वार्षिक वेतन इस प्रकार है—प्रधान मन्त्री के दो पदों का अलग अलग १०,००० पौंड। अन्य चार मन्त्रियों का अलग अलग ५,००० पौंड। आयर्लेण्ड के लार्ड लेफ्टिनेन्ट का २०,००० पौंड। प्रधान प्रधान सेनापतियों का ६,६३२ पौंड। लार्ड चैन्सलर का १०,००० पौंड। एटर्नी-जेनरल (Attorney General) [हिन्दोस्तान का एडवोकेट जेनरल] का ८,२२५ पौंड। (इसके सिवा फ़ीस ५०,००० पौंड की औसत से)। चार साधारण अपील अदालतों के जजों का अलग अलग ६,००० पौंड। सुप्रीमकोर्ट के अपील-विभाग के "मास्टर आफ् दि रोल्स" (Master of the Rolls) का ६,००० पौंड। पांच जजों का अलग अलग ५,००० पौंड। हाईकोर्ट के चान्सरी (Chancery) विभाग के पाँच जजों का अलग अलग ५,००० पौंड। हाईकोर्ट के क्वीन्स बेञ्च (Queens Bench) विभाग के लार्ड चीफ़ जस्टिस का ८,००० पौंड

श्रौर अन्य चौदह जजों का अलग अलग ५,००० पौंड [सन् १४६६ में लार्ड चीफ़ जस्टिस का वेतन १६० पौंड मात्र था] । ख़ास लन्दन शहर के रेकार्डर (Recorder) अथवा प्रधान जज का ४,००० पौंड । लन्दन नगर के भिन्न भिन्न खण्डों की नीचे की दीवानी अदालतों के जजों में से एक का १,८०० पौंड श्रौर दस का अलग अलग १,५०० पौंड । पच्चीस नागरिक फ़ौजदारी अदालतों के मजिस्ट्रेटों में से एक का १,८०० पौंड, तेईस का अलग अलग १,५०० पौंड श्रौर एक का १,००० पौंड। कंटर्वरी के आर्च-विशप का १५,००० पौंड श्रौर यार्क के आर्चविशप का १०,००० पौंड । इँग्लेण्ड के भिन्न भिन्न स्थानों के ३३ विशपों का १,८०० से १०,००० पौंड तक। दोनों ब्रिटिश टापुओं के शिक्ष-विभाग का ख़र्च एक करोड़ पौंड से अधिक है । डाक-विभाग का ख़र्च सात लाख पौंड के लगभग है । राजकीय पार्क श्रौर विहार-बाग़ का ख़र्च १०,००० पौंड श्रौर ब्रिटिश-म्यूज़ियम का ख़र्च डेढ़ लाख पौंड से अधिक है । Pound सेना अफ़सरों को मिलाकर, एक लाख पैंतीस हज़ार है । इसके सिवा मिलिशिया (Militia) फ़ौज एक लाख चालीस हज़ार है । जहाज़ी सेना पचपन हज़ार (फ़्रान्स की जल-सेना से कुछ अधिक) है । ५०० जङ्गी जहाज़ों में से अस्सी लौहयान हैं। दूसरे के लिए फ्रेञ्च-प्रजा बनना जैसा कठिन है वैसे ही ब्रिटिश-प्रजा का स्वत्व पाना सहज है । इस सम्बन्ध में इँग्लेण्ड ख़ूब उदार है । राज्य के आईन के अनुसार निम्नलिखित व्यक्तिगण ब्रिटिश-प्रजा के सब स्वत्वों को पा सकते हैं। एक, जिन लोगों ने ब्रिटिश-साम्राज्य के किसी अंश में जन्म लिया हो, उनके पिता-माता विदेशी हों तो कोई हानि नहीं। दूसरे, ब्रिटिश-द्वीप में उत्पन्न व्यक्तियों की सन्तान श्रौर सन्तान की सन्तान;

उसका जन्म चाहे जिस देश में हुआ हो। तीसरे, आईन की प्रथा के अनुसार जिन विदेशी प्रजाओं ने स्वदेश छोड़ कर ब्रिटन की अधीनता स्वीकार कर ली हो। इस सम्बन्ध में केवल हम लोगों का ही भाग्य बुरा है। किन्तु भारत में भेद-भाव या अलगाव रहने पर भी दोनों ब्रिटिश-द्वीपों में पैर रखते ही हमारा रंग का दोष मिट जाता है; वहाँ हममें और ब्रिटिश-प्रजा मे कोई अन्तर नहीं रह जाता। देहातों के किसान आदि साधारण श्रमजीवी लोगों के शिक्षित न होने पर भी उनमे भव्यता और एक प्रकार का वैर-भाव विशेष रूप से देख पड़ता है।—

"Honour and shame from no condition rise,
Act well thy part, there all the honour lies"

—यह महावाक्य उनमें से अनेक का आदर्श सा हो रहा है। सुशिक्षितों के उच्च गुण निम्नश्रेणी मे भी पहुँच गये हैं। इसके प्रमाण में यहाँ पर दो घटनाओं का उल्लेख किया जाता है। लङ्काशायर (Lancashire) की किसी खान के नीचे से कल के द्वारा पिता और पुत्र ऊपर निकल रहे थे। इतने मे उन्होंने देखा कि उनके बोझ से तेहरी रस्सी की दो लड़ें टूट गई हैं। तीसरी लड़ भी टूटने ही को है। वह केवल एक आदमी का बोझा सह सकती है; दो का नहीं। ऐसी विपत्ति के समय विना किसी प्रकार की चिन्ता के पिता ने पुत्र को सम्बोधन करके इतना कहा कि "God bless thee, lad, sit thee still, it we'ant had two. Don't fret, I shall soon be with Jesus" (अर्थात्, ईश्वर तुमको आशीर्वाद करें, स्थिर होकर बैठो, यह दो आदमियों को चढ़ा नहीं सकती, शोक न करना, मैं शीघ्र ही ईसा के पास उपस्थित होऊँगा।) और नीचे के गहरे अन्धकार में फाँदकर प्राण

दे दिये। धर्म की शिक्षा और अभ्यास के विना ऐसे संकट के समय किंकर्त्तव्य-विमूढ़ न होकर कर्त्तव्य स्थिर कर लेना कभी सम्भव नहीं। एक घटना और इस प्रकार है। एक समय केन्शाम और ब्रिस्टल के बीच के टानेल के निकट दो कुली रेल के बाँध के ऊपर पत्थर सजा कर रख रहे थे। अचानक एक भारी शिला लुढ़क कर रेल-लाइन के ऊपर आ गई। इसी समय टानेल के भीतर मेल-ट्रेन का शब्द सुन कर सैकड़ों जानें बचाने के उद्देश्य से एक कुली दौड़ता हुआ लाइन पर से उस पत्थर को हटाने गया। दूसरा कुली "Quick for your life, Jim!" कहने भी न पाया था कि पत्थर हट गया; किन्तु वह उच्च हृदय का कुली गाड़ी के नीचे पड़ कर मर गया। परार्थपरता और कर्त्तव्यबोध खूब प्रबल न होने से घड़ी भर की देर न करके इस तरह पराये के लिए जान देना बहुत ही कठिन है। यहाँ के किसान आदि थोड़ा पढ़े-लिखे लोग भी कहते हैं कि "ईसा ने हमारे लिए प्राण दे दिये, इस कारण पराई सेवा में प्राण तक दे देना सर्वथा हमारा कर्त्तव्य है"। यूरोप के अन्यान्य देशों की अपेक्षा इँग्लेण्ड के किसान मुझे उन्नत और उदार जान पड़े। लन्दन या बड़े बड़े शहरों के मज़दूर जितना राजनैतिक आन्दोलन करते हैं उतना वहाँ के देहाती आदमी नहीं। साधारण लाइब्रेरी और पाठागार इँग्लेण्ड में बहुत हैं। वे भी सर्वसाधारण प्रजा को शिक्षित बनाने में बहुत कुछ सहायता करते हैं। इस बात में ब्रिटिश-द्वीप सब देशों से श्रेष्ठ है। लन्दन में १०० के लगभग ऐसे अनुष्ठान हैं; और, सारे राज्य में ३०० से भी अधिक हैं। फ़ान्स में ८० से अधिक न होंगे। उनमें भी पेरिस में शायद ही २० हों। सारे जर्मन-साम्राज्य में १०० से कुछ ऊपर हैं। इटली में ७० से अधिक न होंगे। रूस में केवल १२ हैं।

अमेरिका के यूनाइटेड स्टेट्स (United States) में १०० के लगभग हैं।

कुसंस्कार यहाँ भी कम नहीं हैं। गण्डमाला रोग (Scrofula) के सम्बन्ध में पहले यहाँ विश्वास था कि राजा या रानी के उस पर हाथ फेर देने से वह अच्छा हो जाता है। राजा दूसरे चार्ल्स को इसके लिए एक लाख रोगियों के शरीर पर हाथ फेरना पड़ा था। पण्डितवर जान्सन को भी उक्त रोग बचपन मे था और उनके शरीर पर रानी अने (Anne) ने हाथ फेरा था। इस तरह के अनेक कुसंस्कार या अन्धविश्वास इस समय भी अनेक शिक्षितों और अशिक्षितों में देख पड़ते हैं। पाठकगण की जानकारी के लिए दो श्लोक यहाँ पर उद्धृत किये जाते हैं। किस वार में जन्म लेने से लड़का कैसा होता है, इसका विवरण इन श्लोकों में है—

"Monday's child is fair of face,
Tuesday's child is full of grace,
Wed'day's child is full of woe,
Th'day's child has far to go,
Friday's child is loving and giving,
Sat'day's child works hard for its living,
But the child that's born on the Sab'th day,
Is blythe and bonnie and good and gay."

लड़के जब सोने जाते हैं तब उनकी मातायें आदि यह मन्त्र (Go-to-bed rhyme) पढ़ती हैं—

"Mathew, Mark, Luke and John
God bless the bed I lie on'
Four corners to my bed,
Four angels lying spread;
Two to foot and two to head,
Four to guard me when I'm dead"

लोकचरित सभी जगह समान है। हम लोग जैसे अपने परोसियों को "डरपोक माड़वारी," "हुज्जती बङ्गाली" आदि शब्दों से दूषित ठहराने में नहीं शरमाते वैसे ही इँग्लेण्ड में भी अनेक लोगों के मुख से "Canny Scotch," "Silly Irish" "Lying Welsh" आदि वाक्य सुन पड़ते हैं। भिन्न भिन्न कौंटी या ज़िलों में भी परस्पर इसी तरह के श्लेष वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। इसके प्रमाण में नीचे एक कविता उद्धृत की जाती है—

"Cheshire for men, Derbyshire for lead,
Berkshire for dogs; Devonshire for tin;
Belfordshire for naked flesh Wiltshire for hunting plomes,
And Lincolnshire for boys; And Middlesex for sin."

अब लन्दन के निकट मुर्दे जलाने के लिए एक कारख़ाना स्थापित हुआ है। इँग्लेण्ड में सबसे पहले सन् १७६९ की २६ वीं सितम्बर को शव-दाह किया गया था। लन्दन की एक विधवा ने वसीयतनामे में अपनी यह इच्छा प्रकट की थी कि उस की लाश जलाई जाय। श्राद्ध-भोज की रीति भी अब प्रचलित नहीं है, किन्तु सन् १७६० में "फ़ार्मर केल्ड" (Farmer Keld) के श्राद्ध के उपलक्ष में १,३२० रोटी, ८ टुकड़े हैम-मांस, ८ टुकड़े......के पश्चाद्भाग, ३९ मन......मांस, ३ मन भेड़ का मांस, उससे भी अधिक पनीर और १,२०० बोतल बियर शराब के द्वारा ६ पेनी दक्षिणा सहित १,००० ग़रीबों को भोजन कराया गया था। विवाह में हम लोगों के यहाँ जैसे वर और बधू को प्रतिज्ञा करनी पड़ती है, इँग्लेण्ड में भी ३०० वर्ष पहले वैसे ही प्रतिज्ञा करने की रीति प्रचलित थी। यथा—"J. N. *undersygne* the N. for my wedded wyfe, for better, for worse, for richer, for porer, yn sickness and in helthe, tyl deth us departe as holy churche

hath ordeyned, and thereto plygth the my trowthe." स्त्री इतना न कह कर साधारण भाव से कहती थी—"To be bonere and buxom in bedde and at the borde." (अर्थात् वर कहता था कि "अच्छे में, बुरे में, अमीरी में, ग़रीबी में, तन्दुरुस्ती की हालत में और बीमारी मे धर्म की आज्ञा के अनुसार मैं इसे व्याहता स्त्री समझूँगा और इससे वैसा ही व्यवहार करूँगा। यह शपथ मैं अपनी मृत्यु तक के लिए करता हूँ"। स्त्री साधारणतः अधीनता स्वीकार करके कहती थी कि "शय्या में और भोजन के टेविल पर मैं सदा प्रफुल्ल और सुन्दर भाव से रहूँगी"।)

जङ्गल-महल। संसार में जङ्गल की विशेष उपयोगिता है। जङ्गल हमसे पहले पृथ्वी पर उत्पन्न हुए थे। मनुष्य जब निराश्रय अवस्था मे पृथ्वी पर आया तब जङ्गल ने ही उसे आश्रय दिया। किसी किसी जगह इस समय भी जङ्गल ही मनुष्य के लिए आश्रय है। पशुओं के लिए तो कहना ही क्या है? लट्ठे, जलाने का ईंधन और औषध-पत्र आदि अत्यन्त प्रयोजनीय सामग्री तो हमको हमेशा जंगल से ही मिलती है। इसके सिवा जङ्गल के द्वारा हवा की गर्मी और जाड़े की कमी तथा धरती की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है। पहले इँग्लेण्ड में बहुत से जङ्गल थे। उनमें से बहुत से इस समय कट गये हैं। जो कुछ जंगल हैं उनमें से कुछ तो राजा की ख़ास सम्पत्ति हैं और कुछ स्थायी बन्दोबस्त के अनुसार ठेके पर दिये हुए हैं। लन्दन के निकटवर्त्ती एपिंगवन (Epping Forest) देखने के लिए उसके पास के बकर्स्ट-ग्राम Bucchurst Hill में जाकर एक दिन रहा। जंगल १०।१२ मील का लम्बा है। चौड़ाई तीन मील से अधिक न होगी। जगह जगह पर यह जंगल

बहुत तंग है। जङ्गल का बहुत हिस्सा घूमकर देख आया। भीतर खूब सफ़ाई है। जगह जगह बेञ्चें रक्खी हैं।

वाणिज्य और सामुद्रिक शक्ति। ऐसा वाणिज्य-प्रधान देश पृथ्वी पर और दूसरा नहीं है। ३७,००० के लगभग जहाज़ ख़ास ब्रिटिश-पताका उड़ाते हुए दिग्दिगन्तर में भ्रमण करते फिरते हैं। समुद्र-मार्ग का आधे के लगभग माल (तीस वर्ष के लगभग हुए इस माल की क़ीमत १२० करोड़ पौंड कूती गई थी। इसमें से ७५ करोड़ पौंड का माल ब्रिटिश-द्वीप के हिसाब में आता है।) ब्रिटिश-साम्राज्य के जहाज़ लादते हैं। केवल स्टीमरों का हिसाब लगाने से और भी अधिक पर्त्ता पड़ता है। अर्थात् सब जातियों के स्टीमरों पर जितना माल लदता है उसका दो-तिहाई विशाल ब्रिटिश साम्राज्य के स्टीमरों पर चालान होता है। इँग्लेण्ड में मुक्त-वाणिज्य (Free Trade) की प्रथा प्रचलित है। चिकोरी, काफ़ी, कोको, शराब, तम्बाकू, समूची धातुएँ और सूखे फल, इन्हीं चीज़ों पर चुङ्गी है। इँग्लेण्ड के कारीगर विदेशी बनी हुई चीज़ों (Manufacture) के ऊपर महसूल लगवाने के लिए अनेक बार चेष्टा करके भी सफलमनोरथ नहीं हुए। ब्रिटिश-साम्राज्य की रक्षा के लिए इँग्लेण्ड को ३½ करोड़ पौंड से भी ऊपर सालाना ख़र्च करना पड़ता है। उसमें २ करोड़ से अधिक स्थल-सेना में (इसमें से अधिकांश ख़र्च भारत को देना पड़ता है।) और १½ करोड़ जल-सेना में ख़र्च होता है। समुद्र में इँग्लेण्ड की बड़ी ज़बर्दस्त ताक़त है। जिब्राल्टर, माल्टा, अदन आदि स्थान हाथ में रहने से भूमध्यसागर में तो उसका एकाधिपत्य ही देख पड़ता है। एक महाशय कहते हैं—"As long as our Navy is maintained at its proper strength, and is efficiently

officered and manned, it should not be possible for a serious expedition to leave the enemy's port without a British fleet being immediately in pursuit."—*T. A. Brassey*.

लन्दन ।

लन्दन का हाल पहले ही यथाशक्ति लिखने की चेष्टा की जा चुकी है। सब हाल लिख सकना तो मनुष्य की शक्ति के बाहर ही है। तथापि और दो-एक बातें यहाँ पर लिखकर इँग्लेण्ड और लन्दन से विदा होने की इच्छा है।

वाईकौन्ट हिन्टन (Viscount Hinton)। यह लार्ड पुलेट (Earl Poulett) के बड़े लड़के और उत्तराधिकारी हैं। पिता की इच्छा के विरुद्ध अपनी प्रतिष्ठा के अयोग्य लड़की से शादी कर लेने के कारण पिता ने कुपित हो इनको घर से निकाल दिया था। उसके बाद जीविका चलाने के लिए इन्होंने कुछ दिन थियेटर में काम किया। पीछे से हमने उनको राह में साधारण भिक्षुकों की तरह अर्गन बजाकर भीख माँगते देखा। अर्गन के सामने उनका नाम और वंश-मर्यादा लिखी हुई थी। रास्ते में अगर कोई उनसे कुछ राजनैतिक प्रश्न करता था तो वह उसे उसका भी उत्तर देते थे।

डाक्टर का मेहनताना या फ़ीस। डाक्टरों की फ़ीस के सम्बन्ध में इँग्लेण्ड में बहुत अच्छा नियम है। जो डाक्टर ग़रीबों की बस्ती पूर्व-विभाग अर्थात् ईस्ट-एन्ड में २½ या ३½ शिलिंग फ़ीस लेते हैं वे ही वेस्ट--एन्ड (पश्चिमविभाग) में धन-कुबेरों में आकर रहें तो उन्हें

अनायास ही एक से दो गिनी तक फ़ीस मिलेगी। साधारणतः डाक्टर लोग रोगी की अवस्था के अनुसार फ़ीस लेते हैं। जो मनुष्य जितना घर का किराया देता है उससे उसी हिसाब से फ़ीस ली जाती है। इस तरह एक एक डाक्टर को २१ शिलिंग से १०१ शिलिंग तक फ़ीस मिल जाती है। रात को सब डाक्टर डबल-फ़ीस लेते हैं। जो बाहर जाने का नियत समय है उसके अलावा दूसरे समय मे दिन को बुलाने से ड्योढ़ी फ़ीस देनी पड़ती है। एक घर में एक से अधिक रोगी देखना पड़ता है तो प्रति रोगी आधी फ़ीस देनी पड़ती है। छः महीने या एक साल बाद डाक्टर लोग फ़ीस वसूल करने के लिए बिल भेजते हैं। उसमे फ़ीस और दवा के दाम एक ही में जोड़कर लिख दिये जाते हैं। किसी को अगर कुछ सन्देह हो तो वह उस डाक्टर की डिस्पेन्सरी मे जाकर अपना हिसाब देख सकता है।

महान् पुरुषों का सम्मान। महात्मा रेनन का कथन है कि—"Lavaleue morale de l'homme est en proportion de la faculte d' admirer." (The moral worth of the man is in proportion to his faculty to admire)—*Ernest Renan* अर्थात् मनुष्य की असली क़ीमत ठीक करने मे देखना चाहिए कि उसमें गुण की प्रशंसा करने की वृत्ति कितनी विकसित है; अर्थात् हम जितना और के गुण की प्रशंसा जी खोलकर कर सकते हैं उतना ही हम उन्नत हैं। लन्दन में रहते समय मुझे इस बात के अनेक प्रमाण मिले हैं कि अँगरेज़ जाति का इस बात में अव्वल नम्बर है। हर साल पहली मई को सभ्य-संसार के अनेक स्थानों मे श्रमजीवी लोग किसी प्रकाश्य स्थान मे एकत्र होकर परस्पर की उन्नति की आलोचना करते हैं। लन्दन में भी यह कार्य

होता है । उस दिन कलेवा करने के वाद अनेक सम्प्रदायों के लोग अपना अपना झंडा लिये वाजे गाजे के साथ हाइड पार्क के सुविस्तृत मैदान में जाते हैं । सन् १८९० की इसी तारीख को १० लाख के लगभग आदमी वहाँ जमा होकर सारे दिन लेकूचर आदि देने के वाद निकल रहे थे । इसी समय सपत्नीक महात्मा ग्लाडस्टन गाड़ी पर सवार छिपे तौर से सामने से आ रहे थे । अचानक एक व्यक्ति की दृष्टि उधर पड़ गई । उसने जैसे टोपी उतार कर ग्रैण्ड ओल्ड मैन (Grand old man) कहा वैसे ही सब लोगों ने टोपी उतार कर उच्च स्वर से यही कहना शुरू किया । यह दृश्य वड़ा ही मनोहर था । वहुत लोगों को मालूम होगा कि वृद्ध मन्त्रिवर को पुस्तकों का वड़ा शौक़ था । किसी पुस्तक की दूकान मे वह जाते थे तो उस दूकान के द्वार पर उन्हें केवल एक वार देखने के लिए इतने लोग जमा हो जाते थे कि पुलिस की सहायता के विना उनका वाहर निकलना कठिन हो जाता था । जव मैं लन्दन में था उस समय भारतवन्धु जान ब्राइट, धर्मात्मा कार्डिनल मैनिङ्ग (Cardinal Manning), जगत्प्रसिद्ध पादरी स्पार्जन (Revd. Spurgeon) कई वड़े आदमियों की मृत्यु हुई । उनकी इस जीवन की अन्तिम अवस्था उपस्थित होने पर लोगों मे जैसी घवराहट और चिन्ता थी तथा उनके मरने पर लन्दनवासियों ने उनके प्रति असामान्य सम्मान दिखाकर जैसे महत्त्व का परिचय दिया उससे हम विशेष ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

वीर-पूजा करना मनुष्य का स्वभाव है । केवल मनुष्य ही का स्वभाव क्यों, जीव-जगत् में सर्वत्र ही श्रेष्ठ का सम्मान और समर्थ की पूजा होते देखी जाती है । सिंह पशुओं का राजा है । मधुमक्खियों में भी रानी होती है । वानरों का झुण्ड सरदार के विना नहीं रहता ।

यह स्वभाव किसी तरह दोष मे नहीं गिना जाता। बल्कि इसके न होने से ही अनेक जगह अनेक अनिष्ट हो जाया करते हैं। जिस जाति या सम्प्रदाय मे वीर-पूजा की प्रवृत्ति है ही नहीं या कम है वह जाति नैतिक जीवन में निस्सन्देह उतनी ही गिरी हुई है। इसका सजीव उदाहरण हमारा देश है; जहाँ किसी की प्रशंसा सुन पड़ना बहुत कठिन है। दस जनों के सामने जी भर कर किसी की भी प्रतिष्ठा करना हमारे देश से उठ सा ही गया है। अगर कोई उदार-चेता पुरुष कहीं किसी पुरुष की सोलहो आने प्रशंसा करता है और वह प्रतिष्ठित पुरुष सम्पूर्ण रूप से उस प्रकार की प्रशंसा के योग्य होता है तो भी उसे सुनकर कम से कम दो चार आदमी "किन्तु" लगाकर उस पुरुष की दो एक साधारण त्रुटियों को अतिरञ्जित करके बखानते हैं और उस प्रशंसा करनेवाले को लज्जित करने के लिए पूर्ण चेष्टा किये बिना नहीं रहते। छिद्रानुसन्धान की अत्यन्त नीच वृत्ति हम लोगों में इतनी प्रबल हो उठी है कि हम किसी की सोलहो आने प्रशंसा सुन नहीं सकते। किसी प्रतिष्ठित और गुणी पुरुष मे यदि एक-दो सामान्य दोष भी हो तो उन पर ध्यान न देना ही धर्म है। पानी छोड़ कर दूध पी लेनेवाले हंस की तरह दोष की ओर दृष्टि न करके केवल अवश्य अनुकरणीय गुणों को जी खोल कर प्रशंसा करना ही उच्च वृत्ति है। केवल स्वजातीय मनुष्यों पर ही हमारा यह कोप नहीं है। हममें से कुछ लोगों मे परोत्कर्षासहिष्णुतारूपी यह कुसंस्कार ऐसी घृणित अवस्था को पहुँच गया है कि हम किसी की भी कोई अच्छी बात देख कर भी उसकी प्रशंसा करना कैसा, यदि किसी तरह उसमे कोई नुक्स नहीं निकाल पाते तो बहुत व्यथित होते हैं। इस बारे में यूरोप—ख़ास कर इँग्लेण्ड—का पद बहुत ऊँचा है। वहाँ किसी को आप कोई चीज़ या कोई

लेख दिखलाइए तो वह देखनेवाला निस्सङ्कोच "वहुत उत्तम है" कह कर उसकी प्रशंसा करेगा। यहाँ तक कि वहाँ का अँगरेज़ परम शत्रु की भी प्रशंसा सुन कर उसका अनुमोदन करने में पश्चा-त्पद न होगा। आत्मीय समझ कर उत्साह पाने की आशा से अगर कोई आनन्द के साथ अपनी कोई कृति या चीज़ दिखलाता अथवा किसी विषय का उल्लेख करे तो उसकी उलटे निन्दा करना या दोष दिखाकर उसे हीन वनाने की चेष्टा करना निस्सन्देह वड़े नीच पुरुष का काम है।

यहाँ पर एक घटना मुझे याद आगई। एक मेरे मित्र ने बड़े प्यार के साथ दो वहुत ही सुन्दर कुत्ते मुझे उपहार में दिये। कुत्ते ऐसे सुन्दर और वढ़िया थे कि देखनेवाला तारीफ़ किये विना नहीं रह सकता था। उन कुत्तों के मेरे घर आने के दूसरे दिन संयोगवश दो तीन अँगरेज़-रमणियाँ और एक अँगरेज़ मुझसे मिलने के लिए आये। सवने कुत्तों को देख कर "वहुत अच्छे हैं" "वड़े ही सुन्दर हैं" "ऐसे कुत्ते कम देख पड़ते हैं" इत्यादि वाक्यों से वारम्वार उनकी प्रशंसा की। उसके कई दिन वाद मेम की पोशाक पहने, अच्छी तरह अँगरेज़ी पढ़ी-लिखी, किन्तु मातृभाषा को भूली हुई, एक ईसाइन होगई प्रतिष्ठित वंग-महिला ने मेरे यहाँ पदार्पण किया। मेरी स्त्री ने वैसे ही आनन्द के साथ अन्य अँगरेज़ महिलाओं के समान इस महिला को भी वे कुत्ते दिखाये। कुत्ते देखकर उस रमणी ने कुछ भी नहीं कहा। मेरी स्त्री ने कुछ क्षुब्ध होकर कहा—"कल अमुक अमुक मेम और साहव इन्हें देख कर इनकी ख़ूब वड़ाई कर गये हैं। आपकी क्या राय है?"। इसके उत्तर में उस देशी मेम ने कहा—"हमारे यहाँ भी इनसे अच्छे कुत्ते थे। कुत्ते पालना झंझट है। इसी से अव मैं कुत्ते नहीं रखती"। इसके वाद घर-गृहस्थी की वात-चीत शुरू हुई।

वह—आपका लड़का कैसा पढ़ता-लिखता है ?

मेरी स्त्री—अब की परीक्षा में उसका दूसरा नम्बर आया है।

वह—क्लास मे शायद चार ही पाँच लड़के हैं ?

मेरी स्त्री—नहीं जी, चालीस पचास के लगभग होंगे ।

इस पर भी उस रमणी को विश्वास नहीं हुआ। लड़के को बुलाकर पूछा कि क्लास मे कितने लड़के हैं। और, जब मालूम हुआ कि क्लास के ४०।५० लड़कों में उसका दूसरा नम्बर आया है, तब मनही मन दुःखित हुई।

यह हाल मुझे सुना कर मेरी स्त्री ने कहा—"केवल मेमों की ऐसी पोशाक पहन लेने से कुछ नहीं होता, उनकी ऐसी बुद्धि और सूझ बूझ भी तो चाहिए"। इसी से मैं भी कहता हूँ कि परश्रीकातरता, डाह आदि भाव हमारी अस्थि-मज्जा में ऐसे घुस गये हैं कि सहज में उनको हृदय से दूर कर सकना असंभव ही है। यहाँ तक कि बचपन से विलायत में शिक्षित आज-कल के बड़े नामी "भारतोद्धार करनेवाले" स्वजाति-वत्सल" एक दो हिन्दुस्तानी भाइयों को भी इस ईसाइन रमणी से भी नीच-प्रकृति का मैंने पाया !

लन्दन के कई एक दृश्य। लन्दन के दृश्यों का कुछ कुछ हाल पहले कहा जा चुका है। पुस्तक बढ़ जाने के ख़याल से बहुत कुछ छोड़ दिया है। तथापि यहाँ पर और दो एक बातों का उल्लेख आवश्यक प्रतीत होता है। रायल-एकोयेरियम में मोम की मूर्तियों के द्वारा फ्रेञ्च-विप्लव की कुछ घटनायें दिखाई जाती हैं। उन घटनाओं मे से राजा रानी की हत्या के बाद मोची साइमन के घर में पितृ-मातृ-हीन राज-कुमार की दुर्दशा का दृश्य देख कर दर्शक के आँसू नहीं रुक सकते।

"नायेगारा" का दृश्य भी बहुत सुन्दर देखा । जान पड़ता था, जैसे सचमुच ही सामने जल गिर रहा है। जिस युद्ध के सम्बन्ध में वेलिंगटन ने कहा था कि "The hardest battle I ever fought and the greatest victory I ever won" उसी युद्ध में कैसे उद्वेग के साथ केवल टोपी के इशारे से "Up, Guards, and at 'em", कह कर उन्होंने सेना को धावा करने का हुक्म दिया । यह दृश्य भी बहुत अच्छे ढंग से दिखलाया गया था। फ्रेंच-सेना की आशु-पराजय देखकर किंकर्त्तव्य-विमूढ़ अवस्था में घोड़े पर कठपुतली की तरह निस्तब्ध खड़े हुए नेपोलियन का दृश्य भी बहुत ही शिक्षाप्रद था । एक घण्टे मे दर्शक की सहायता से फ्रेंञ्च-विप्लव की घटनाओं के दृश्य देखे । इस युद्ध में जय पाने के बाद समरभूमि मे बैठ कर वेलिंगटन ने राजा के पास जो लम्बा-चौड़ा पत्र लिख कर भेजा था वह सन् १८१५ की २२ जून के टाइम्स में विस्तार के साथ प्रकाशित हुआ था। सन् १८८५ की ७ नवम्बर के टाइम्स में ट्राफलार-युद्ध के वृत्तान्त सहित लार्ड कलिंगउड का पत्र प्रकाशित हुआ था। इन दोनों टाइम्स की संख्याओं को मैं लन्दन से खोज कर अपने साथ लेता आया हूँ। लेकिन स्थानाभाव से वे पत्र यहाँ पर प्रकाशित नहीं किये जाते । ऊपर लिखे दृश्य आदि के सिवा "वाइल्ड ईस्ट" (Wild East) देखा। ओलिम्पिया के भारी मैदान में अलजीरिया, मरक्को आदि देशों के कुछ मर्द, औरतें और लड़के मँगा कर अरब आदि असभ्य मुसलमान-राज्यों का जीवन प्रत्यक्ष-रूप से दिखलाया गया था। अर्थात्, उसी तरह दल के दल घुड-सवार लुटेरों की लीला, गृहस्थों के दैनिक आचार-व्यवहार वहाँ के निवासियों के द्वारा दिखलाये गये थे। पेरिस के हिपोड्राम में

एम दफ़ा इसी तरह "वाइल्ड वेस्ट" (Wild West) देखा था। वहाँ बफेलो-बिल (Buffalo Bill) नाम से प्रसिद्ध एक अमेरिकन तमाशे-वाले ने अनेक अमेरिका के आदिमनिवासियों के द्वारा घोड़े की पीठ पर से भैंसे का शिकार आदि दृश्यों से उनका जंगली जीवन दिखलाया था।

विज्ञापन के सम्बन्ध में यूरोप में, ख़ास कर इँग्लेण्ड मे, जो कुछ देखा उससे मुझे मालूम हो गया कि ये लोग रोज़गार जमाने के लिए जी खोल कर पैसा ख़र्च करने में कुछ भी कसर नहीं रखते। लब्धप्रतिष्ठ अर्थात् प्रसिद्ध हो चुके रोज़गारी तक विज्ञापन-प्रचार के लिए, लोगों का ध्यान विज्ञापन की ओर आकृष्ट करने के उद्देश्य से, नित्य नये नये ढग निकालते हैं—रंग-तमाशे, विचित्र गाड़ी-घोड़े और सवार निकाल कर विज्ञापन का प्रचार करते हैं। एक दिन देखा, एक बाल बढ़ाने की दवा बेचनेवाले की दूकान मे शीशेदार दरवाज़े के पास लम्बे लम्बे बाल खोले तीन सुन्दरी युवती बैठी हैं। फुटपाथ पर खड़े हुए अनेक आदमी उनके बालों की तारीफ़ कर रहे हैं। अद्भुत विज्ञापन था। यूरोप के, ख़ास कर इँग्लेण्ड के, बालक बूढे जवान औरत मर्द सबको पृथ्वी के भिन्न भिन्न भागो के सिक्के, डाक-टिकट आदि आधुनिक चीज़ों और प्राचीन विचित्र चीज़ों तथा प्रसिद्ध आदमियों के हस्ताक्षरों के संग्रह का बड़ा शौक है। अपने अपने सामर्थ्य के अनुसार इन चीज़ों का संग्रह सभी करते हैं। एक मध्यवित्त श्रेणी की गृहस्थ-महिला के पास अनेक देशों के नये-पुराने सोने के सिक्के इतने देखे कि उनका संग्रह करने में उसके एक लाख से कम रुपये न ख़र्च हुए होंगे। उसी महिला के घर में भारत की ३०० से अधिक जातियों के लकड़ी के बने सिर रक्खे हैं और उन पर भिन्न भिन्न प्रकार की पगड़ियों

होते हैं। लन्दन में एक पारसी ने हिन्दुस्तानी चीज़ों की दूकान खोली है। यह छोटे पैसे का २ पैसे का, मामूली गुल का पंखा २ शिलिंग को, इसी तरह सब चीज़ें बेचता है।

लन्दन के इण्डिया (ब्रिटिश-म्यूज़ियम के कई एक मित्रों में से पारसी साहब (Lord. Popularly A. Lyon) एक भारी पण्डित हैं। एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका का १४ नम्बर का "डिक्शनरी" (Dictionary) शीर्षक लेख इन्हीं का लिखा हुआ है। इसी में सारी भाषाओं के कोषों का सारा विवरण इनने विस्तारपूर्वक लिखा गया है। इतने बड़े पण्डित होने पर भी वह ऐसे सरल और विनीत हैं कि मैं कभी कभी अपने अँगरेज़ी लेखों को संशोधन के लिए उनके पास ले जाता था तो वह कहते थे कि "अच्छा लिखा है, हाँ, अगर मैं होता तो इस बात को इस तरह लिखता या इस शब्द की जगह यह शब्द लिखता; इत्यादि।" [illegible] किसी बात में प्रश्न करने पर उस सम्बन्ध में सूक्ष्म उत्तर देते थे, अथवा उस विषय की किसी पुस्तक का नाम लेकर वहाँ देखने को कहते थे। मैंने एक बार उनसे पूछा कि "आप देशपर्यटन करने क्यों नहीं जाते?" इसके उत्तर में उन्होंने कहा—"मैं इस म्यूज़ियम में ही पृथ्वी के भूत, भविष्य, वर्तमान को देखता रहता हूँ। और कहाँ जाऊँ?" थोड़े दिन हुए, इनकी मृत्यु हो गई। दूसरे मित्र थे रॉबिन्सन (William Robinson); यह भी [illegible] हुए थे। रॉबिन्सन की ज़िन्दगी भारतवर्ष के वेद, पुराण और उपनिषदों की आलोचना में ही बीती। सांसारिक दृष्टि से अत्यन्त असन्तुष्ट होने पर भी आदमी बड़े अच्छे थे। [illegible] होने [illegible] और अमेरिका में जो [illegible] मैंने उनके पास से उनमें से एक [illegible] और दूसरे का [illegible] ग्रहण किया गया है।

पढ़कर पाठकगण आप समझ लेंगे कि वह आदमी कैसे थे । इँग्लेण्ड के "नेटिव" हम लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इसका भी आभास इन पत्रों के द्वारा प्राप्त हो जायगा ।

"My dear friend,——As you were not at your seat to receive my farewell when I had to leave the Reading room this afternoon, and as there is a possibility of some hindrance to my seeing you before you start on your hemispheric journey tomorrow, I write this note to express my best wishes and prayers for your safe and pleasant journey, leading to a happy return to your distant home, and a long and prosperous career after your arrival there—I am sure that after our extremely pleasant and unclouded friendship of the past three years, you will need neither words nor letter of mine to assure you of my regret at parting, nor of the warm interest I shall always take in hearing of your future welfare Yet such words are always pleasant to receive, although there is somewhat of pain in giving them utterance I have no doubt your recollections of your neighbour at L 2 (यह उनके आसन का नम्बर था) will be a life-long pleasure to you, and I shall always recollect with equal pleasure the pleasant intercourse I have had with L 3 (यह मेरे आसन का नंबर था) from the first day he spied some Devanagari characters on my paper and opened up a conversation with me —You will not forget, I hope, that my interest in you extends also to your country just as much now as it did then, and I am hoping and trusting for more established health, more means, more leisure to resume and carry on to an end, my several works on Indian subjects which you know of, and which I trust may prove of benefit to the good cause

of India's prosperity. But there—you must not think that in this farewell note I want to speak of more than personal friendship and attachment, which I trust will ever endure until we find ourselves (though not at present of exactly on faith) yet received with welcome to happiness with our common God and Father, whom I am sure both desire (according to the light he has given us) to serve truly for the rest of our lives—And now, if I do not see you again, Farewell. As our great poet writes,—

'If we do meet again, we shall smile.—If not,—why then this parting was well made'—your very sincere and affectionate friend."

दूसरा पत्र अमेरिका, न्यूयार्क, में मिला था। उसका कुछ अंश यों है—

"I hope you will have had a pleasant voyage across the Atlantic, following in some part there of the possible track of *the great Columbus himself* * * * Americanisms are to be avoided by every *good and true Englishman such as you and I are* * * When you publish your impressions of all *your travels in English, you must be sure to give me the* opportunity of reading them, for I am sure there is no one of your friends here who will follow them with more sincere interest, and more personal regard for yourself.

इन मित्रों के अलावा सौभाग्यवश चार पाँच ऐसे मित्र मिल गये थे कि उनसे विदा होते समय सचमुच ही मुझे बहुत कष्ट हुआ। उनमें दो विश्वविद्यालय के उपाधिधारी युवक अत्यन्त सरल और सहृदय थे। ये कैम्ब्रिज और आक्सफ़ोर्ड से जब पहले लन्दन में आकर

रहे थे तब देखने-सुनने आदि में मुझसे मामूली सहायता इनको मिली थी। इसके लिए उक्त दोनों युवकों की मातायें लन्दन में मुझसे मिलने और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए आईं। यह देखकर मुझे वास्तव में लज्जा लगी और विस्मय भी हुआ *। इसी से कहना पड़ता है कि अँगरेज़ों की सी जाति पृथ्वी पर दूसरी नहीं है। लन्दन के बाहर सैर करते समय कुछ दिन मुझे एक परिवार के

---

* केम्ब्रिज के B. A. और लन्दन की डाक्टरी सनद पाये हुए युवक डफ़्टन (Dufton) और उनकी माता के पत्रों के कुछ अंश देखने से पाठकों को अँगरेज़ों का चरित समझने में बहुत कुछ सुभीता होगा। डफ़्ट के साथ परिचय होने के तीन महीने बाद एकाएक लीड्स (Leeds) से उनकी माता का निम्नलिखित पत्र पाकर मेरे विस्मय की सीमा नहीं रही।

Dear Sir,—Will you favour me with your autograph in both your own and English characters, to be placed with other notable ones Allow me to thank you for your *kind interest* in my dear son, which I appreciate very much With kind regards

I remain,

———ESQ. *yours very sincerely*

Pundit. Sarrah Tempest Dufton

इसके बाद थोड़े दिन हुए यहाँ इसी वृद्धा विधवा का एक लम्बा चौड़ा पत्र मुझे मिला है। उसमें एक जगह पर वह लिखती हैं—"The other day while waiting for my son at the British museum my thoughts reverted to the day when I had the honour and pleasure of meeting you in the same spot, and I thought of you for a long time as my son did often tell me about your life and friendship which, I am sure, he values highly for

साथ रहना पड़ा। उसी अवसर में अचानक पैर में चोट लग जाने से दो तीन दिन मुझे खटिया सेनी पड़ी। उसी समय घर के मालिक; पुरखा, युवक-युवती, पुत्र-कन्या आदि सबने मेरी जैसी सेवा की उसका वर्णन एक मुख से नहीं किया जा सकता। मुझे किसी प्रकार की कमी न जान पड़े, इस खटके के मारे घर का एक आदमी हर घड़ी मेरे पास बैठा मुझसे बातचीत करता रहता था। घर के सब आदमी मुझसे यही कहा करते थे कि "तुम्हारा जो जी चाहे, तुम्हें जो दरकार हो, सो निःसंकोच होकर हमसे कहो; इसे तुम अपना ही घर समझो"। मैं साहस के साथ कह सकता हूँ कि

---

many reasons—your wonderful kind nature and deep sympathies would be a treasured remembrance always that can never be forgotten by my son. You seem to have the art of fully expressing your heart's thoughts —a life with a *power* which few have. My dear husband would have much appreciated your gifts and friendship, had he known you." डफ़्टन के भेजे अनेक सुन्दर पत्र मुझे मिले हैं। उनमें के कुछ अवतरण यहाँ पर उद्धृत कर देने से पाठकगण अँगरेज़ों की उच्च श्रेणी की कृतज्ञता का भाव समझ सकेंगे। "In reply I am sorry to say I have not yet been able to read more than two books of Carlyle. I agree with you and call them excellent. I now really do admire everything he has written."

"* * * It was a great trial to me, but I often think of your words and sayings to me, many of them have sunk into my heart so as not to be forgotten. * * *"

वैसी अवस्था मे अगर घर पर होता तो भी इससे अधिक मेरी सेवा नहीं की जा सकती थी। जब मैं उन लोगों से विदा हुआ तब परिवार के सब आदमी बच्चों की तरह रोने लगे। यह क्या स्वर्गीय दृश्य नहीं है? विदा होने के समय बप्टिस्ट (Baptist) मतावलम्बी एक सम्प्रदाय (Congregation) ने मुझसे अँगरेज़ों के धर्म के सम्बन्ध मे प्रकाश्य वक्तृता के द्वारा अपनी सम्मति प्रकट करने के लिए अनुरोध किया। उनके मत-विश्वास आदि के सम्बन्ध मे मुझे जो कुछ भ्रम या प्रमाद जान पड़ा उसे भी मैंने बेखटके प्रकट कर दिया। इससे वे लोग अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। वहाँ से आते समय अनेकों आदमियों ने यही पूछा कि "आपने हममें क्या क्या दोष देखा, सो बतलाते जाइए।" इसके उत्तर मे मैंने कहा—"दोष क्या देखूँ? तुम्हारे विशेष गुण देख कर ही मैं मुग्ध हूँ"। मेरे यों कहने से सन्तुष्ट न होकर उन्होंने कहा—"देखो, हममें जो गुण हैं वे तो हैं ही। उन्हें कोई छीन नहीं ले जा सकता। अब हमे अगर अपने दोष भी मालूम होंगे तो हम उन दोषों

You first opened my mind to the reception of ideas Be assured I could never forget you. I wish I could see you at least once again." यह तो सब हुईं अँगरेज़ों की बातें और भाव; अब एक पारसी महिला की लिखावट देखिए। वह अपने हर एक पत्र मे प्रायः लिखती है—"I am very much pleased to hear of your family, but you know how highly interested I am about all that interests you, and I think it is a pity you write to me without saying a word of yourself." इस महिला के साथ पेरिस मे एक जगह महीने भर के लगभग रहना हुआ था। इससे केवल इतना ही सम्बन्ध था। सचमुच बातचीत मे तो इन लोगों को कोई पा नहीं सकता।

को दूर करने की चेष्टा करेंगे । हम लोगों में अनेक दोष हैं" । वास्तव में यही यथार्थ महत्त्व और उन्नति का लक्षण है ।

विदाई । जिस दिन पहले यूरोप के नगर मेसिना में पदार्पण किया, जिस दिन नेपोली और विस्यूवियस देखा, जिस दिन खाड़ी पार होकर डोवर में आया और लन्दन के असाधारण लोकारण्य में पहुँचा वह एक दिन था और आज भी एक दिन है । देखते ही देखते तीन वर्ष का समय बीत गया और मेरी यूरोप-यात्रा भी समाप्त होगई । पहले-पहल यहाँ आने पर सोचता था कि कब फिर प्राणप्यारी जन्मभूमि के दर्शन होंगे; और आज भारी दुःख के साथ इँग्लेंड से—ब्रिटिश-म्यूज़ियम से—विदा हो रहा हूँ । पहले दिन और अन्तिम दिन में कितना अन्तर है !

ब्रिटिश-म्यूज़ियम से विदाई का दिन । आज मन बड़ा ही व्याकुल है । हे म्यूज़ियम, तुमको छोड़ते सचमुच छाती फटी जाती है । तुम्हारे इस अक्षय ज्ञान-भाण्डार में आज कई वर्षों से ज्ञानोपार्जन करके अपनी बुद्धि को पवित्र कर रहा हूँ । किन्तु हाय, मनुष्य की शक्ति तुम्हारे आगे बिलकुल ही हेय है । इतने समय में मैं तुम्हारे ज्ञान-सागर का एक बूँद भी नहीं प्राप्त कर सका । मुझे अफ़सोस है कि मैं अपना सारा जीवन तुम्हारे इस परम पवित्र घर में क्यों नहीं बिता सका । सवेरे से एक पहर रात गये तक तुम्हारे पवित्र मन्दिर में रहने पर भी कभी जी नहीं ऊबा । किसी किसी दिन तो पढ़ने की धुन में यह भी नहीं मालूम हुआ कि कब दिन बीत गया । मैं इसके लिए परमपिता को हृदय से कोटिशः धन्यवाद देता हूँ कि उसने मुझसे अयोग्य अधम को ऐसे महा-पवित्र तीर्थस्थान में पहुँचा दिया । सारांश यह कि "Ars longa, vita brevis." लाख वर्ष की आयु होने पर भी तुम्हारे मन्दिर में

ज्ञानमय की पूजा समाप्त करना असम्भव है। इस समय २० लाख के ऊपर ग्रन्थ हैं। उनके अलावा हर साल ४०,००० के लगभग नवीन ग्रन्थ तुम्हारे मन्दिर में जमा होते हैं! मनुष्य की क्षुद्र क्षमता इस योग्य कदापि नहीं कि वह इस दौड़ मे तुम्हारे साथ दौड़ सके! अच्छा विदा! कल से अव तुम्हारे दर्शन करने न आ सकूँगा। संसार के निष्ठुर नियम के अधीन होने के कारण तुमको छोड़ कर जाना ही पड़ेगा। तुमने केवल ज्ञान ही नहीं दिया, पृथिवी के चारों खण्डों के अनेक देशों के असंख्य प्रकार के जीवों के साथ परिचय भी करा दिया। तुमने कार्यतः सार्वभौमिकता, प्रेम और भ्रातृभाव की शिक्षा दी है। तुम्हारे माहात्म्य का वर्णन मनुष्य से नहीं हो सकता। तुम्हे इस जगत् की राजधानी लन्दन मे स्थापित करनेवाली ब्रिटिश-जाति धन्य है।

इँग्लेण्ड से विदाई। हे इँग्लेण्ड, तुम्हारे गुणों का वखान वहुत दिनों से सुनता था। किन्तु उस पर विश्वास नहीं होता था। किन्तु यहाँ कई साल रह कर तुम्हारी यथार्थ महिमा आँखों से देखी और उससे मुझे एक नया जीवन प्राप्त हो गया। इसमे कोई सन्देह नहीं कि धन, मान और यश में तुम पृथ्वी के शिरोमणि हो। यह दूसरी वात है कि प्राकृतिक नियम के अनुसार तुम्हारे कुछ पुत्र बुरे चरित्रवाले भी हैं। किन्तु तुम्हारे पुत्रों मे से अधिकांश अत्यन्त उत्कृष्ट चरित्रवाले हैं। बुरे चरित्र के पुत्रों की संख्या वहुत कम है। सच है कि तुम्हारे कुछ पुत्र तुमसे अलग होने पर वाहर जाकर विकारग्रस्त हो जाते हैं। किन्तु वह तुम्हारा दोष नहीं है, दोष है उनकी व्यक्तिगत मूढ़ता और स्थानीय जल-वायु का। तुम्हारा कलेवर छोटा है; पर तुम सारी पृथ्वी को अपने हृदय में स्थान देने के लिए तैयार हो। सारांश यह कि तुम्हारा अति उदार स्वाधीन सार्व-

भौमिक भाव जगत् की हर एक जाति के लिए आदर्श है । विदेशी लोगों के साथ तुम्हारे यहाँ के बालक, बूढ़े, जवान सब बहुत अच्छा व्यवहार करते हैं। तुम्हारी शासन-प्रणाली और राजकीय व्यवस्थायें पृथ्वी भर में सर्वश्रेष्ठ समझी जाती हैं; सब मेशीन का ऐसा काम होता है । तुम धन्य हो कि तुम्हारे बच्चे हर एक स्वदेशी और विदेशी अधिवासी को सब तरह की स्वाधीनता देने के लिए सब समय तैयार रहते हैं । तुम्हारे यहाँ की एक किराये की गाड़ी के कोचवान ने एक बड़े भारी स्काचमैन से कहा था—"Whether you are a mackintosh or an umbrella, does'n't matter, I must have my fare" अर्थात् "आप चाहे बर्साती कोट हों चाहे छाता, मुझे इससे क्या मतलब; मैं अपना किराया चाहता हूँ"। ऐसी सरस स्वाधीन उक्ति और कहीं मैंने नहीं सुनी । सभी बातों में तुम जगत्पूज्य हो रहे हो । इस जड़ लेखनी के द्वारा तुम्हारे गुणों का वर्णन सर्वथा असम्भव है ।

स्पेन ।

या त्रा । सन् १८९२ के फ़र्वरी महीने में लन्दन छोड़ कर "लिसवन" जहाज़ पर सवार हुआ । चार-पाँच अँगरेज़ मित्र 'डक' तक आकर जहाज़ पर सवार करा गये । जहाज़ चल दिया । मेरे मित्र किनारे पर खड़े खड़े रूमाल हिलाने लगे; मैं उदास मन से उनकी ओर ताकता रहा । जब तक जहाज़ दिखाई दिया तब तक वे किनारे खड़े रहे । क्रमश: टेम्स नदी पार होकर हमारा जहाज़ समुद्र में आगया । संध्या के समय वाइट (Isle of Wight) द्वीप की आलोकमाला देखते देखते कुछ दूर जाने के बाद इँग्लेण्ड हमारी नज़रों से ग़ायब हो गया । तब ठीक स्वदेश से विदेश जाने की ऐसी उदासी छा गई । मेरे साथ एक कुत्ता भी यात्री था । उसके साथ कोई आदमी न था; केवल गले में एक टिकट लटका कर वह छोड़ दिया गया था । बिस्के (Biscay) उपसागर मे यात्रियों को कष्ट मिलने की बात पहले सुनी थी; किन्तु सौभाग्यवश मुझे कुछ भी कष्ट नहीं हुआ । चौथे दिन स्पेन के अन्तर्गत वाइगो (Vigo) बन्दर में हमारा जहाज़ पहुँच गया ।

वाइगो । यहाँ एक सौ के लगभग बैल जहाज़ पर चढ़ाये गये । उनके चढ़ाने मे तीन दिन लग गये । इसका कारण यह था कि एक तो वे ठीक समय पर वहाँ पहुँचे नहीं, दूसरे कल के द्वारा चढ़ाये

गये। वाइगो बहुत पुराना नगर है। पहले इसका नाम था वाइकस स्पाकोरम (*Vicus Spacorrm*)। शहर एक फ़ियोर्ड के किनारे बसा है। सामने का प्राकृतिक हार्बर पहाड़ से घिरा होने के कारण बहुत ही सुरक्षित और सुन्दर है। आँधी तूफ़ान के समय अनेक ब्रिटिश-जंगी जहाज़ यहाँ ठहरते हैं। यह छोटा सा शहर पहाड़ पर बसा हुआ है। पुरानी चहारदीवारी का कुछ हिस्सा और नगर के पीछे के पहाड़ पर बने हुए पुराने ज़माने के दो कैसल अभी तक मौजूद हैं। नगर के पुराने रास्ते तंग, ऊँचे-नीचे और अत्यन्त टेढ़े-मेढ़े हैं। निवासियों की आँखें और बाल हम लोगों की तरह काले हैं। सुन्दरी स्त्रियाँ हमारे देश की तरह सिर पर जल-भरे पात्र लिये जाती देख पड़ीं। समुद्र-तट पर बहुत से स्कालप (Scallop) ढेर के ढेर पड़े थे। इनका आकार ढकनदार वर्तन का ऐसा होता है। लन्दन में यह एक शिलिङ्ग का मिलता है और अनेक होटलों में इसमें भोजन परोसा जाता है। मैंने कई एक उठाकर अपने पास रख लिये। यहाँ के कई निवासी बास्क (Basque) भाषा में गाना गाते देख पड़े। यह भाषा किसी भी यूरोपियन भाषा से नहीं मेल खाती। मेरे सहयात्री एक अँगरेज़ से एक कुली बालक मज़दूरी के लिए झगड़ा करने लगा। वह कुली उक्त अँगरेज़ को बड़ी ही अकथ्य भाषा में गाली देने लगा। वैसी गालियाँ यूरोप में और कहीं नहीं सुनने में आई। वह अँगरेज़ स्पेन की इस भाषा को जानते थे। उन गालियों का मतलब मुझे समझा कर वह हँसने लगे। वाइगो में सब लोग खुशी से अँगरेज़ी सिक्का ले लेते हैं। यहाँ उत्कृष्ट शेरी-शराब बहुत ही कम दामों में मिल जाती है। नगर की जन-संख्या १५,००० के लगभग होगी। यहाँ से लिसबन को रवाना हुआ।

वाडाहस (Badajos) अँगरेज लोग इसे वाडाजस कहते हैं। किन्तु स्पेन की भाषा मे 'ज' का 'ह' उच्चारण करते हैं। लिसवन हो कर यहाँ आया। खाईं, चहारदीवारी और पहाड़ पर वने हुए क़िले आदि के द्वारा सुरक्षित यह नगर गोयाडियाना (Guadiana) नदी के किनारे पर वसा है। नदी के ऊपर २८ पायों का एक पुल है। यहाँ का प्रधान गिर्जा क़िले की तरह सुदृढ़ वना है। स्थानीय प्राचीन कन्वेल्ट मठों में सरकारी दफ़्तर वग़ैरह हैं। आर्सेनल, कई एक गिर्जे, अस्पताल और स्कूल आदि यहाँ के प्रधान अनुष्ठान हैं। वाडाहस रोमन अमलदारी के समय का वसा नगर (*Pax Augusta*) है। वहुत दिनों तक यह मुसलमानों के अधिकार में रह चुका है। उसका चिह्न-स्वरूप एक छोटे पहाड़ के ऊपर मूर-दुर्ग का भग्नावशेष इस समय भी देख पड़ता है। सन् १२३५ में यह मुसलमानों के हाथ से निकल कर ईसाई राजा के अधिकार मे आया। सन् १८१२ में अँगरेज़ी सेना ने आक्रमण करके इस नगर को दो दिन तक लूटा। यह नगर चित्रकार मोरेल्स (Luis de Morales) का जन्म-स्थान है। यहाँ २५,००० के लगभग लोग रहते हैं।

सिवील (Seville)। वाडाहस से प्रधान युद्धक्षेत्र टालाविरा (Talavera) और प्राचीन नगर मेरिडा (Merida) होते हुए सिवील मे आये। मेरिडा में गोयाडियाना नदी के ऊपर ८१ पायों का २,५७० फुट लम्वा रोमन अमलदारी का एक पुल है। प्राचीन समय के एक आकिडक्ट का भग्नावशेष भी देख पड़ता है। रेल्वे लाइन के किनारे पहाड़ के ऊपर अनेक मूर-राज्य के समय के कैसल वने हुए देख पड़े। सिवील स्पेन का एक प्रधान नगर है। यह गोयाडालकिवर (Guadalquiver) नदी के किनारे वसा है। रोमन-समय में इसका नाम था हिम्पालिस (Himpalis)। मुस-

लमान लोग इसे इपूरविलिया कहते थे। किन्तु वर्त्तमान स्थानीय नाम है सिवीला। नगर मे आधा मुसलमानी ढङ्ग देख पड़ता है; मुसलमान साम्राज्य के चिह्न बहुत से बने हुए हैं। साधारण लोगों के घर लखनऊ शहर के ढंग के हैं। बड़े आदमियों के घर भी हमारे पश्चिमोत्तर प्रदेश के ऐसे बने हैं। तथापि इन सब घरों में कुछ कुछ यूरोप का भाव मिला हुआ है। बड़े बड़े घरों के चौड़े आँगनों (Patios) में वृक्ष-लता और फुहारे देख पड़ते हैं। घरों की छतें हमारे देश की ऐसी बराबर और पुष्प-वृक्षों आदि से सुशोभित देख पड़ीं। राह में एक दिन एक अन्धा "गिटर" (Guitar) के साथ गाना गा रहा था और उसके साथ एक लड़का कास्टानेट (Castanet) बजा रहा था। सुर, तान, गिटकिरी वग़ैरह सब मुझे अपने देश का ऐसा जान पड़ा। अनेक मध्य और निम्नश्रेणी की महिलायें राजपूताने की स्त्रियों की तरह दोनों ओर पैर लटका कर घोड़ों पर सवार होती हैं। घोड़े की पीठ पर अक्सर मुसलमानी ज़ीन और रकाब लगाई जाती है। भारत के ऐसे टट्टू, ख़च्चर और गधे इस तरफ़ बहुत देख पड़ते हैं। भिश्ती और मशक का भी ख़ूब चलन है। रात को चौकीदार लोग ख़ूब ज़ोर से चिल्लाते हैं। इसी तरह बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनसे जान पड़ता है कि यह देश बहुत दिनों तक एशियाई जाति के अधिकार में रह चुका है। उधर जैसे बुडापेस्ट से मुसलमानी ढंग शुरू होता है, वैसे ही इधर भी वही हाल देख पड़ता है। नगर के भीतर के मुसलमानी महल वग़ैरह के अलावा बाहर भी पहाड़ के ऊपर मूर लोगों के बनवाये कई क़िले हैं। पुल के पास नदी-तट पर बहुत काँकड़े बिकते हैं। यहाँ काँकड़े को कॉगरेहो कहते हैं। होटलों में मच्छड़ों का भारी उपद्रव है। मशहरी में एक नई किफ़ायत देखी। वे ऐसी बनी हुई

होती हैं कि सारे शरीर के बदले केवल कमर तक उनके भीतर रहती है।

नागरिक दृश्यावली। यहाँ का प्रधान गिर्जा बहुत बड़ा है। यद्यपि बाहर से वह इतना अच्छा नहीं मालूम पड़ता; किन्तु उसके भीतर की कारीगरी बहुत ऊँचे दर्जे की है। इसकी लम्बाई ४१५ फुट, चौड़ाई ३०० फुट और उँचाई १५० फुट है। गुम्बद ज़मीन से ७२ फ़ुट ऊँचा है। घेरे में रोम के सेन्ट पीटर गिर्जे के बाद ही इस गिर्जे का नम्बर है। पहले यह मसजिद थी। बाहरी हिस्सा उसी मसजिद के १०० खम्भों पर रक्खा हुआ है। भीतर ७२ स्तम्भ और ९३ जोड़ी किवाड़े लगे हैं। यहाँ पर ईसा की माता मेरी की (एक चाँदी की और एक लकड़ी की) दो मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। चाँदी के सिंहासन पर विराजमान दूसरी मूर्त्ति आदमक़द है। उसके दोनों हाथ चलते हुए और केश सुवर्ण के बने हैं। अन्यान्य बहुत सी विचित्र सामग्रियों में एक भारी आर्गन बाजा और एक २५ फ़ुट ऊँचा पीतल का शमादान (Candelabrum) देखने लायक़ है। मुरिलो आदि चित्रकारों के हाथ के कई उत्कृष्ट चित्र भी यहाँ रक्खे हैं। इसके सिवा कोलम्बस-लाइब्रेरी (Columbus Library) और कोलम्बस के पुत्र फ़र्डीनण्ड (Ferdinand) की समाधि भी इस गिर्जे में है। सेन्ट फर्डीनण्ड की लाश इस गिर्जे मे स्थापित है। वह लाश साल मे तीन दफ़ा खोली जाती है और उसके दर्शन करके उनके भक्त लोग सन्तुष्ट होते हैं। बहुत लोगों की धारणा यह है कि यहाँ जो कोलम्बस की समाधि बनी है वह असली नहीं है। कोलम्बस का शव क्यूबा(Cuba) द्वीप की राजधानी हावाना (Havannah) में गाड़ा गया था। गिर्जे में जो घण्टे का टावर है वह ३४० फुट ऊँचा है। उसकी

चोटी पर १४ फ़ुट ऊँची पीतल की बनी धर्म (Faith) की मूर्त्ति स्थापित है। नीचे का हिस्सा मुसलमानों का बनवाया है; लेकिन ऊपर का हिस्सा ईसाई-अमलदारी का बना है। ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियों की जगह कई एक "इनक्लाइनेड प्लेन" (Inclined plane) की व्यवस्था है। प्रधान गिर्जे के अलावा सिवील में अनेक गिर्जे हैं। उनमें से एक मे मुरिलो के हाथ के कई एक अत्यन्त उत्कृष्ट चित्र रक्खे हैं। यहाँ का मुसलमानी अलथाज़र (Alcazar) महल सन् ११८१ का बना हुआ है। इस महल का वर्णन यहाँ पर असम्भव ही है। इसके कमरे, हाल, आँगन, संगमरमर से मण्डित रास्ते आदि सबमें बादशाही कारखाने नज़र आते हैं। भीतर की कई दीवारों में, अर्बी अक्षरों में, कुरान के अंश-विशेष अंकित हैं। इसी महल के अन्तर्गत एक सुन्दर दसकोना टावर (Torre del Oro) नदी-तट पर विराजमान है। अलथाज़र के सिवा और भी कई मुसलमानी महल हैं। उनमें से एक में ११ आँगन और ६ फुहारे हैं। अन्य एक महल का संगमर्मर का "कालोनेड" भी देखने लायक है। यहाँ की चित्रशाला भी अच्छी है। उसमें मुरिलो, वेलासक्वोयेज़ (Velasquez), कास्टिलो (Castillo) आदि प्रधान प्रधान देशी चित्रकारों के हाथ के बने बहुत से चित्र शोभायमान हैं। मुरिलो और वेलासकोयेज़ इसी नगर में पैदा हुए थे। इस चित्रशाला के अलावा सन टेल्मो (San Telmo) महल की चित्रशाला भी बुरी नहीं है। यहाँ के एक्सचेञ्ज-भवन (Lonja) में 'स्पेनिश लोगों की युद्ध-यात्रा' और 'कार्टेज़ (Cortez), पिज़ारो (Pizzaro) आदि के द्वारा देश-जय' से सम्बन्ध रखनेवाली ३०,००० पुस्तकें (Arohivo de Indias) रक्खी हैं। सिवील का चुरट का कारख़ाना प्रसिद्ध है। इसमें २४ आँगन हैं। उसका घेरा ६६२ × ५२४ वर्गफ़ुट का है। उसमें

५,००० के लगभग आदमी काम करते हैं। साल में २५,००० मन तम्बाकू यहाँ काम में लाया जाता है। इस देश मे हलकी शराव भी वहुत तैयार होती है। होटल मे भोजन कीजिए तो भोजन के साथ जो शराव दी जाती है उसके दाम नही जोड़े जाते। यहाँ के वृष-युद्ध के थियेटर (Bull ring) * का देश मे दूसरा नंवर है। इसमें १८,००० दर्शकों के वैठने के लिए जगह है। सिवील मे अनेक थियेटर, चार स्कायर, एक विश्वविद्यालय, कई स्कूल और अस्पताल हैं। नदी के किनारे किनारे सवा मील की लंवी सड़क (Paseo) टहलने लिए वड़ा ही सुन्दर स्थान है। नदी के दूसरे किनारे पर वसे हुए ट्रियाना (Triana) उपनगर मे सम्राट् ट्रेज़न, हेड्रियन और थियोडोसियस का जन्म हुआ था। नगर के एक किनारे पर एक झील है। उसके किनारे दो प्राचीन स्तम्भ (Almeda de Hercules) खड़े हैं; उनकी चोटियों पर मूर्त्तियाँ शोभायमान हैं। नगर का टाउन हाल (Ayuntamiento) और पाइलेट महल (Casa de Pilato) दर्शनीय है। पाइलेट-महल ईसा के अभियोग का विचार करनेवाले पाइलेट के जेरुस्सलेम मे वने हुए भवन के अनुकरण पर वना है। नगर के वाहर की वस्तियाँ वड़ी गन्दी हैं। रास्तों मे जगह जगह ऐसी कीचड़ रहती है कि चलना भारू हो जाता है। हमारे देश के ऐसे मामूली कुत्ते रास्तों मे घूमते फिरते हैं। सिवील से थोड़े ही फ़ासले पर होयेल्वा (Huelva) है। यहाँ

* बुल फ़ाइट (Bull fight) देखने के लिए जी चाहता था। परन्तु यह दृश्य वड़ा ही निठुर होता है, इसी से नहीं गया। पेरिस मे नक़ली वुल-फ़ाइट देखा था। उसमे और सव वातें दिखाई गई थीं। केवल अन्त को वैल की जान नहीं मारी गई। फ्रेंच-आइन के अनुसार ऐसी निष्ठुर क्रीड़ा निषिद्ध है। स्पेन के सुप्रसिद्ध वृष-योद्धा मज़ान्टिनी (Mazantini) इस साल वुल-फ़ाइट में मर ही गये।

से कोलम्बस ने अमेरिका-यात्रा की थी। गोयाडालकिवर नदी के किनारे पर बने हुए 'पासेओ'-मार्ग में गाड़ी पर एक दिन जी भर कर घूमा। उसके बाद शाम को किनारे पर बैठ कर सोचने लगा। मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि इस नदी के किनारे बैठ कर भारत को पत्र लिखूँगा। शायद भारत का कोई आदमी उस दिन तक वहाँ नहीं गया होगा और शायद सिवील के डाकघर से मेरा यह पत्र ही पहला बंगला-भाषा मे लिखा पत्र रवाना हुआ होगा। विधाता की लीला अपरम्पार है। इन्हीं सब बातों को देख कर कहना पड़ता है कि वह विश्व-बाज़ीगर हम लोगों को जिस तरह नचाता है हम उसी तरह नाचते हैं।

कादिज़ (Kadiz)। अँगरेज़ लोग इसे केडिज़ कहते हैं। किन्तु स्थानीय नाम कादिज़ है। यह अत्यन्त प्राचीन नगर है। इसका पुराना नाम आगादिर (Agadir) या गादिस (Gades) है। वर्त्तमान जन-संख्या ७०,००० के लगभग है। सिवील से रेल की सवारी पर यहाँ आया। क्रमशः जितना ही नगर के पास पहुँचने लगा उतना ही दृश्य मनोहर जान पड़ने लगा। ५ मील लंबे, मगर चौड़ाई में तंग, भूमिखण्ड के छोर पर हर्म्यमालाशोभित और समुद्र से घिरा हुआ नगर बसा है। जहाँ से उपद्वीप शुरू होता है वहाँ पर अनेक नोन के ह्रद और हमारे देश के ऐसे खपरहित देख पड़े। ७ मील की चहारदीवारी से यह नगर घिरा हुआ है। फाटक ५ हैं। चहारदीवारी के बाहर समुद्र-तट पर बना हुआ प्रमानाड, ख़ासकर आलामेदा (Alameda) नामक अंश, टहलने के लिए बड़ी अच्छी जगह है। नगर की इमारतें ऊँची हैं और उन पर हमारे देश की ऐसी चूने की अस्तरकारी की हुई है। बहुत सी सड़कें तंग भी हैं। प्रधान स्कायर (Plaza de San

Antonio) के वृक्षादि शोभित मध्यस्थल में संगमरमर की वेंचों पर बैठ कर बहुत लोग समय विताते हैं। यहाँ के निवासी बड़े ही आलसी और ठग जान पड़े। बहुतो का रंग गहरा-मैला है। मूर लोगों के साथ इनका बहुत कुछ मेल पाया जाता है। कादिज़ में निम्नलिखित स्थान देखने लायक़ हैं। दो गिर्जे, १००० रोगियों के रहने लायक़ अस्पताल, १२,००० दर्शकों के बैठने लायक़ बुल-फ़ाइट का थियेटर, पर्मिट, १७२ फ़ुट ऊँचा रोशनी-घर, सान-जुयान अस्पाल, ज़नाना अस्पताल, त्यागे हुए बच्चों के लिए आश्रम, मानमन्दिर, मेडिकल स्कूल, सामुद्रिक-विद्यालय, फ़्री-स्कूल, गणित और वाणिज्य सिखाने का स्कूल, जेलख़ाना, पागलख़ाना और दो रंगमञ्च आदि। यहाँ की चित्रशाला के चित्र अच्छे नहीं हैं। यही यूरोप की अन्तिम चित्रशाला है। इसे देख कर कवि ड्राइडन की यह उक्ति याद आगई—"The pencil speaks the tongue of every land." सुप्रसिद्ध इस देश के चित्रकार मुरिलो यहाँ के एक गिर्जे में चित्र अंकित करते करते पाढ़ पर से नीचे गिरकर बहुत ही घायल हो गये थे। उसी अवस्था में सिवील में जाकर उन्होंने शरीर-त्याग कर दिया। उनके हाथ का वह असम्पूर्ण चित्र अभी तक यहाँ सुरक्षित है। नारगिली में तम्बाकू पीने के सिवा इस स्थान का ग्रीस के साथ बहुत कुछ सादृश्य देख पड़ता है। बहुत दिनों तक मुसलमानों की अधीनता और संसर्ग के कारण इन दोनों स्थानों में, किसी किसी बात में, समान परिवर्त्तन देख पड़ता है। कवि की ग्रीस के सम्बन्ध में यह उक्ति—

> "The Greece? but living Greece no more!
> "So coldly sweet, so deadly fair,
> "We start—for soul is wanting there!"

स्पेन के इस प्रदेश में पूरी तौर से घटित होती है।

सुरसिक कवि वायरन दोनों स्थानों—एथेन्स और कादिज़—की सुन्दरियों को देख कर मुग्ध हो गये थे। एथेन्स की सुन्दरियों के बारे में उनकी यह उक्ति है—

"Maid of Athens ere we part
"Give oh! give me back my heart,
"Or since that has left my breast,
"Keep it now and take the rest.
"Hear my vow before I go.
"Zoi maw sas a-g-a-p-o"

(अन्तिम चरण के ग्रीक शब्दों का अर्थ है कि—"प्राण, तुम्हें मैं प्यार करता हूँ।")

और कादिज़ की रमणियों के सम्बन्ध में उनका मत यह है—

"Oh never talk to me again
"Of foreign lass or British ladies;
"For't has not been your lot to see
"The winsome, bright-eyed girl of Cadiz."

वास्तव में कादिज़ की सुन्दरियों के काले काले नेत्रों के कटाक्ष बड़े ही तीक्ष्ण होते हैं। वायरन जैसे रसिक व्यक्ति का उनसे मोहित हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं। फ्रेञ्च-नीति-तत्त्ववेत्ता गिजो ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ के एक स्थान पर लिखा है—"The southern nations have the reputation of being eaten up by aphrodisiac appetites."—Yves Guyot." अर्थात् दक्षिण-यूरोप की सब जातियाँ काम-शत्रु के द्वारा जर्जर कह कर प्रसिद्ध हैं। गिजो की इस बात को कादिज़ ने पूरी तौर से प्रमाणित कर दिया है। सन्ध्या के बाद सड़कों और

गलियों मे आप देखिए। आप देखेगे कि कितने ही बालक अनेक भाषाओं में नवागत विदेशी लोगों से चिकनी-चुपड़ी प्रलोभन की बातें करके जान-पहचान बढ़ा रहे हैं। अनेक लोगों के मुख से यह भी सुना कि स्थानीय महिलाओं के "फाण्डाङ्गो"–नृत्य मे लुभाकर अनेक परदेशी रसिक विपत्ति में पड़ चुके हैं।

जिस दिन सवेरे कादिज़ से चला उस दिन भारी तूफ़ान का सामना करना पड़ा। किनारे से जहाज़ तक पाव मील का फ़ासला होगा। किनारे से जहाज़ तक जाने के लिए चार "पेसेता" किराया चुका कर डोंगी की। कुछ दूर जल में ले जाकर उसका माँझी चिल्लाने लगा—"Mucho malo tiempo." (अर्थात् बड़ी बुरी आँधी है।) अन्त को उसने यह कहा कि इस समय अगर आप दो "होला" (डालर) अर्थात् दस पेसेता दें तो मैं जहाज़ तक पहुँचा सकता हूँ। मैं इस पर राज़ी नहीं हुआ। इस पर वह डोंगी को चक्राकार घुमा कर उसमे पानी भरने का और डोंगी डूबने का भय दिखाने लगा। पानी के थपेड़ों से मेरे कपड़े-लत्ते और असबाब आधे के लगभग भीग गया। भारी संकट मे पड़ कर लाचार मैंने उसे दस पेसेता देना स्वीकार किया। तब फिर वह डोंगी को जहाज की तरफ़ ले चला। जहाज़ के नीचे डोंगी पहुँचने पर उसने पहले किराया ले लिया, फिर असबाब जहाज़ पर रखने दिया। यूरोप भर मे कहीं ऐसा व्यवहार नहीं देखने में आया। यथा समय जहाज़ रवाना हुआ। किन्तु विख्यात युद्ध-क्षेत्र ट्राफलगर अन्तरीप के सामने ही से लौट आने के लिए लाचार हुए। भारी तूफ़ान आगया। कप्तान इस भय से जहाज़ लौटा लाया कि कहीं उक्त अन्तरीप के पहाड़ से जहाज़ टकरा न जाय। तीन दिन तक

कादिज़-बन्दरगाह में ठहरना पड़ा। उसके बाद तूफ़ान कम होने पर मैं मरक्को को रवाना हुआ।

जिब्राल्टर (Gibraltar) —

कहीं नदिया, कहीं नाला, कहीं दरिया-किनारा है।
कहीं जङ्गल, कहीं सहरा, कहीं मैदां बियाबां है॥

अनेक स्थानों में घूमघाम कर अन्त को जिब्राल्टर में उपस्थित हुआ। (यहाँ से अमेरिका की यात्रा शुरू हुई) यहाँ की खाड़ी के इस पार उस पार दो ऊँचे पहाड़ हैं। उन्हें "हरक्यूलिस का स्तम्भ" कहते हैं। अँगरेज़ लोग संक्षेप में इस स्थान को "जिब" कहते हैं। इसका प्राचीन नाम है "काल्पे" (Calpe)। मुसलमान लोग इसे "जेब-उल-तारीख़" कहते थे। उनकी बनाई "तारीख़" यहाँ के कैसल के भग्नावशेष में मौजूद है। यह भूमध्यसागर का द्वार है। इसी कारण इस नगर का चिह्न एक चाभी है। यह चिह्न नगर-प्रवेश के फाटक पर रक्खा है। यहाँ से आफ़्रिका का अटलास पहाड़ और अन्य एक पर्वत देख पड़ता है। इस नगर पर अँगरेज़ों का अधिकार है। यहाँ सर्वदा सामरिक नियम (Martial Law) जारी रहता है। शाम के बाद ८ बजे तोप दगने पर फाटक बन्द हो जाता है। इसके बाद गवर्नर की आज्ञा विना कोई विदेशी प्रजा नगर में रात नहीं बिता सकती। छोटे उपद्वीप के ऊपर जिब का पहाड़ है। डेढ़ मील लम्बी वालुकामय योजक-भूमि को "साधारण भूमि" (Neutral Ground) कहते हैं। उसके उस पार स्पेन का राज्य है। स्पेन की प्रजा के यहाँ आने में जैसी कड़ी जाँच होती है वैसी ही जाँच स्पेन के अधिकार में यहाँ की प्रजा के जाने पर भी होती है। जहाज़ से उतर कर डोंगी

पर चढ़ते समय वहाँ के कर्मचारी ने रङ्ग से मुझे स्पेनिश समझ कर मेरी चीज़ों की जाँच शुरू की। लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि मैं ब्रिटिश-प्रजा हूँ तब उसने मुझसे माफ़ी माँगी और बिना जाँच किये ही मुझे जाने दिया। जिब उत्तर-दक्षिण २½ मील लम्बा और पौन मील चौड़ा है। दूर से जिब का पहाड़ मरुभूमि जान पड़ता है। किन्तु पास पहुँचने पर उस पर बहुत से वृक्ष देख पड़ते हैं। यह पहाड़ ३ मील लम्बा और ½ मील चौड़ा है। कहीं कहीं पर इससे ड्यौढ़ी चौड़ाई है। इसका सर्वोच्च शिखर १,६०० फ़ुट ऊँचा है। पर्वत पर अनेक सुन्दर गुफायें होने के कारण इसे "गुफाओं का पहाड़" (Hill of caves) कहते हैं। उनमें १,१०० फ़ुट की ऊँचाई पर बनी हुई २०० फ़ुट लम्बी सेन्ट माइकेल की गुफा (St. Michael's cave) बहुत ही विचित्र है। मालूम पड़ता है कि उसे किसी कारीगर ने बनाया है; लेकिन है वह कुदरती। प्राकृतिक स्तंभों (Galleries) के ऊपर ७० फ़ुट ऊँची छत है। इस गुफा के संबन्ध में कप्तान ब्रोम लिखते हैं—"Nothing can exceed the beauty of the stalactites; the form clusters of every imaginable shape—statuettes, pillars, foliages, figures. Even the American visitors have been compelled to acknowledge that, as regards beauty and picturesqueness even the Nammoth Cave would not come near them."—*Captain Brome.* इस पहाड़ पर एक तरह के बिना पूँछ के बन्दर रहते हैं। सन् १७०४ से इस स्थान पर ब्रिटानिया का अधिकार है। कई बार आक्रमण होने पर यह स्थान अँगरेज़ों के हाथ से नहीं गया। अन्तिम आक्रमण फ्रेंच और स्पेनिश लोगों ने मिलकर किया था और यह आक्रमण तीन वर्ष तक जारी रहा। यहाँ देखने लायक़ स्थान या

वस्तुएँ बहुत नहीं हैं । स्थान बहुत ही छोटा है । सेना वग़ैरह मिलाकर सब जन-संख्या २५,००० के लगभग होगी । यहाँ की समरसज्जा देखने योग्य है । पहाड़ पर खुदी हुई दो तीन मील लम्बी और चौड़ी गेलरियाँ (Galleries), जिनमें अनायास गाड़ी चल सकती है, बनी हैं और ऊपर नीचे भारी तोपें रक्खी हैं । यहाँ का हार्बर बहुत ही सुरक्षित है; चार-पाँच जंगी जहाज़ हमेशा मौजूद रहते हैं । एक अँगरेज़ सज्जन लिखते हैं—

"Of all our coaling stations (Gibraltar, Malta, Aden, Ceylon, Singapore, Hongkong, Sierra Leone, Ascension, St. Helena, Cape Town, Simons Bay, Port Castries, Port Royal, Bermuda, Falkland Islands), Gibraltar and Malta alone can be considered open to attack by a powerful fleet, and against such an attack they must be defended. The Straits of Gibraltar is by far the most important strategic point in the British Empire. Gibraltar is insecure and inconvenient in many respects as a port, but for want of a better in the immediate neighbourhood it is the base on which must rest that British fleet on which the main burden of the defence of the Empire will fall.— *T. A. Brassey.* यहाँ के, सिन्ध-प्रदेश के, कुछ आदमी जिब्राल्टर में बिसाती की दूकान रख कर खूब कमाई करते हैं । चारों ओर से अपने देश को जाते समय गोरे यहाँ आते हैं । वे इन दूकानदारों से बहुत सा एशियाई सामान ख़रीदते हैं । उनसे दसगुनी बीस गुनी क़ीमत ली जाती है । यहाँ अँगरेज़ों के और स्पेन के भी सिक्के चलते हैं । आठ दिन तक भारी तूफ़ान आने के कारण मुझे दस दिन यहाँ ठहरना

पड़ा। मैं जिस होटल में ठहरा था उसमें चारों ओर के यात्री थे। उनमें एक पेन्शनयाफ़्ता भारतीय सेना के कर्नल भी थे। वह अक्सर मेरे पास बैठकर मुझसे बातचीत करते थे। मरक्को में गधों पर चढ़ने की रीति का प्रसंग उठाकर उन्होंने कहा—"जान पड़ता है, आप कभी गधे पर न चढ़े होंगे। क्योंकि बैतालपचीसी में लिखा है, घी के बिना भोजन, असंस्कृत भाषा और गधे की सवारी निन्दनीय है।" मेरी और कर्नल साहब की यह बातचीत हिन्दी में ही हुई। वह अक्सर हँसी-तमाशे में ही समय बिताते थे। एक दिन दोपहर को केवल हम दोनों एक जगह बैठे हुए थे। उस दिन उन्होंने गंभीर भाव से बातचीत करते करते कहा— "आप तो सारे यूरोप की यात्रा किये जाते हैं। देश में जाकर अपने भाइयों से कहिएगा कि स्त्रियों की स्वाधीनता और स्त्री-शिक्षा के बिना कोई देश उन्नति नहीं कर सकता। आशा है, यूरोप देखकर आप इस बात को अच्छी तरह समझ गये होंगे कि आपका देश हज़ार शिक्षित होने पर भी उसका आधा अंश गहरे अज्ञान में डूबा हुआ है*। हम लोग ये बातें कहें तो भारत के लोग हम पर चिढ़ सकते हैं; किन्तु आप अगर इस सत्य की साक्षी देंगे तो शायद वे सुनेंगे। मेरी यही हार्दिक कामना है कि आप लोग उन्नत होकर यूरोप के समकक्ष बनें। इत्यादि।" जिब्राल्टर के स्पेनिश-निवासी बहुत सवेरे से ही सड़कों और गलियों में ऐसा शोरगुल मचाते हैं कि एशिया का धोखा हो जाता है। अब जिब्राल्टर का कुछ माहात्म्य भी सुन लीजिए। जिब्राल्टर के सिर पर यूरोप, दाहनी ओर

---

*"No man ever lived a right life who had not been chastised by a woman's love, strengthened by her courage and guided by her discretion"—*Ruskin.*

अमेरिका, वाईं ओर एशिया और नीचे आफ़्रिका है। जिब्राल्टर की सीमा पर स्थित अन्तरीप यूरोपा पाइन्ट (Europa Point) पर खड़े होने से देख पड़ता है। सामने के किनारे पर आफ़्रिका देश देख पड़ता है, दाहनी ओर जाने से अमेरिका में और वाईं ओर जाने से एशिया में पहुँच सकते हैं। बीच में जल के सिवा कोई भूमि-खण्ड नहीं है। अतएव इस स्थान को चार महादेशों के चौराहे पर विद्यमान एक तीर्थस्थान कह सकते हैं। स्थानीय होटलों में चारों ओर के यात्री जमा होते हैं। ऐसे पवित्र तीर्थस्थान से वहुत दिनों की अभिलापा * पूर्ण करने के लिए अमेरिका की ओर चला। इधर कई दिन का भयंकर तूफ़ान देखकर यात्रा के समय मैंने सोचा कि अगर दुरन्त अटलान्टिक अथवा दुस्तर पासिफ़िक सागर में यह जीवन की नाव डूब जाय तो फिर जननी जन्मभूमि के दर्शन न होंगे। किन्तु यदि भवकर्णधार करुणावरुणालय की कृपा-कोर हुई तो फिर माता के दर्शन

---

*इस यात्रा के वर्ष से २९ वर्ष पहले मैंने अमेरिका-यात्रा की चेष्टा की थी। कलकत्ते में उस समय अमेरिकन मिशनरी डाल साहव (Rev. C. H. A. Dall) ने मेरे प्रश्न के उत्तर में मुझे यह पत्र लिखा था—

Calcutta, 1st February, 1872.

My Friend,—I have received your letter not without a feeling of gladness to see that there are men like you in India longing to run round this little world, and see the different rooms our Father has created for His one Family of man. The deluge of prejudices and difficulties you shall have to meet with and plunge through would fairly test your courage and sincerity, but would be trifles to look back upon when you once get into the Promised Land:—The reward would be great the work being great too, the higher the wages you know the harder the work etc.—C. H. A. Dall.

आज कितने ही दिनों के वाद विधाता की कृपा से वह इच्छा पूर्ण हुई।

करके जीवन को चरितार्थ कर सकूँगा। सितम्बर और मार्च में अटलान्टिक महासागर का भयानक रूप होता है। मेरी यह यात्रा मार्च महीने में हो रही थी। जहाज़ हिलकोरों के मारे विपरीत ओर—एशिया की तरफ़—हटता जाता था। अन्त को जहाज़ पर चढ़ कर भारत-माता की ओर सतृष्ण दृष्टि से देखते देखते मैं गाने लगा—

भासिलाम, भासिलाम, भासिलाम अकूले।
यदि हरि देन कूल, पहुँचिवो कूले॥
नतुवा एई जीवन-तरी मा! डूविलो अतले।
भासिलाम, भासिलाम, भासिलाम, अकूले॥

स्पेन की साधारण अवस्था। स्पेन की कुछ रीतियाँ फ़ान्स की ऐसी हैं। माता या किसी बड़ी बूढ़ी परिवार की स्त्री (Duenna. फ़ान्स में Bonne कहते हैं) के साथ विना युवती स्त्रियाँ रास्ते में नहीं निकलतीं। अगर विलकुल अकेले ही जाने का मौक़ा आ पड़ता है तो वे किसी से वातचीत नहीं करतीं। व्याह आदि में भी फ़ांस की चाल प्रचलित है; अर्थात् माता पिता के सामने के सिवा कोई व्याह की इच्छा रखनेवाला युवक अपनी होनेवाली पत्नी के साथ वातचीत नहीं कर सकता। माता पिता या कन्या के अभिभावक के अनुमोदन विना व्याह ठीक नहीं हो सकता। कन्यापक्ष को दहेज़ भी भारी देना पड़ता है। यहाँ की स्त्रियाँ वहुत सुन्दरी होती हैं। अधिकांश स्त्रियों की आँखें और वाल हमारे यहाँ के ऐसे काले होते हैं और स्वर भी मीठा होता है। अनेक स्त्रियाँ सिर पर छोटी चादर ऐसा कपड़ा (Mantilla) वाँधती हैं। वह पीठ तक लटका रहता है। सवके हाथ में अक्सर एक पंखा रहता है। इस कारण

देश में पंखे की दूकानें वहुत हैं। हम लोगों की तरह इस देश के पुरुषों का अधिकांश समय बाहर ही बीतता है। विदेशी लोगों के साथ विशेष घनिष्ठता रहने पर भी यहाँ के पुरुष अपनी स्त्रियों से उनका परिचय नहीं कराते। यूरोप भर में यहीं यह प्रथा देखने में आई। होटलों में अक्सर एक तरह का पुलाव खाने को मिलता है। मांस भी कुछ कुछ हमारे ही यहाँ का ऐसा बनता है। तरकारी के साथ छोटे छोटे मांस के टुकड़े भी पकायें जाते हैं। प्राकृतिक नियम के अनुसार यहाँ के आदमी वहुत उद्यमशील नहीं जान पड़ते। दक्षिण-इटली की तरह 'मिनियाना' (Miniana) अर्थात् 'कल' शब्द का ख़ूब प्रचार है। ओवरकोट (Overcoat) इस तरह वनाया जाता है कि उसे शाल की तरह ओढ़ भी सकते हैं। पल्टन के कप्तान तक इस तरह ओवरकोट में एक हाथ छिपा कर घूमते हैं। सड़कों, काफ़ीख़ानों आदि में जुए और लाटरी का बड़ा चलन है। नाच-गाने-वजाने का यहाँ के लोगों को बड़ा शौक है। वुलफाइट में साल में २,५०० के लगभग वैल और ४,००० के लगभग घोड़े मरते हैं। यहाँ के आदमी बड़े क्रोधी और बदमिज़ाज हैं। बात बात में ख़ून-ख़राबा और लड़ाई-झगड़ा हो जाता है। औरतों ही के लिए अधिकतर लड़ाई-दंगे होते हैं। कहीं कोई झगड़ा-बखेड़ा होने पर लोग पहले ही पूछते हैं कि इस झगड़े का कारण रमणी कहाँ है? वहाँ के लोगों की यही धारणा है कि स्त्रियों के ही कारण लड़ाई-झगड़ा हो सकता या होता है। यहाँ की आबहवा अच्छी है। ज़मीन में उपजाऊ शक्ति भी अच्छी है। कौले, जलपाई, अंगूर, शहतूत, चावल, मटर की फलियाँ आदि चीज़ें कम पैदा होती हैं। दक्षिणाञ्चल में कार्क (Cork) के वहुत और घने जंगल और रेशम के कारख़ाने हैं। न्यूनाधिक २५,००० सरकारी और ६,००० बे सर-

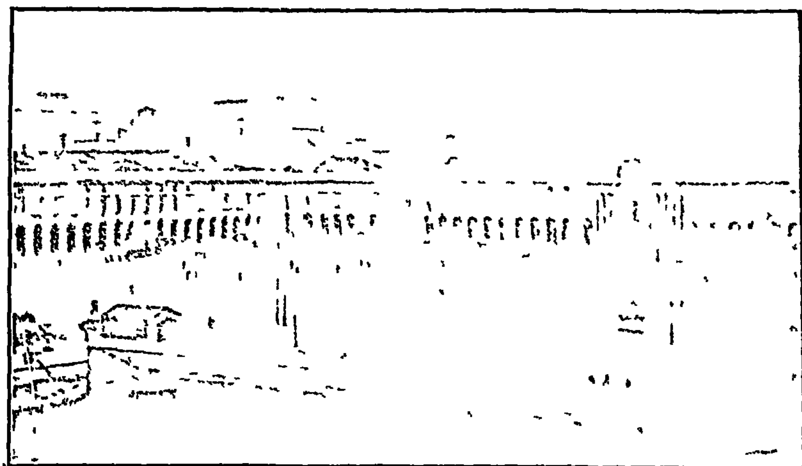
कारी प्राइमरी स्कूलों में सर्वसाधारण को आईन के अनुसार वाध्य हो कर शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। यहाँ के १० बड़े प्रदेशों में एक एक विश्वविद्यालय है। इसके सिवा खेती, इंजिनियरी, चित्रकला और गाने-बजाने की शिक्षा की व्यवस्था राज्य की ओर से है। सन् १८९५ मे तीन करोड़ पैाण्ड के लगभग राजकर वसूल हुआ था। खर्च इससे कुछ अधिक हुआ था। राज्य पर साढ़े सात करोड़ के लगभग ऋण था। शान्ति के समय एक लाख से अधिक सेना रहती है। युद्ध के समय पाँच लाख के लगभग जमा की जा सकती है। इसके सिवा उपनिवेशों से ढाई लाख के लगभग सेना मिल सकती है। जंगी जहाज़ १२० हैं। उनमें केवल ४ लौहयान हैं। राज्य की हर एक प्रजा को कुछ काल सेना-विभाग का काम सीखना पड़ता है। सेना की हालत कुछ वहुत अच्छी नहीं जान पड़ी। राज्य में रोमन-कैथलिक धर्म ही अधिक प्रचलित है। पृथ्वी भर मे स्पेन में इस धर्म का जैसा आधिपत्य है वैसा अन्यत्र नहीं। पुरोहित-पादरियों का प्रजा पर एकाधिपत्य है। हर साल यहाँ से अनेक प्रकार से बहुत साधन पोप के भाण्डार में चला जाता है। इस देश के चाँदी के सिक्के का नाम 'पेसेता' (Peseta) है। आकार और क़ीमत मे वह फ़्रांस के फ़्रैंक के समान होता है। किन्तु आज-कल सोने की दर के हिसाव से उसके दाम वहुत कुछ घट गये हैं। यहाँ भी दाशमिक प्रथा प्रचलित है। यहाँ भी नोटों का खूब चलन है। स्पेन की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं जान पड़ती। शासन की व्यवस्था भी उतनी अच्छी नहीं है। रास्तों में अक्सर चोरियाँ-डकैतियाँ हो जाती हैं। मैं जब यहाँ गया था उसके कुछ दिन पहले की बात है कि एक गांव का मजिस्ट्रेट या मेयर (Mayor) अपने दो सहकारियों के साथ किसी गृहस्थ के घर चोर कह कर पकड़े

गये थे। इस घटना का रहस्य सुनिए। एक गृहस्थ के घर में कई मेहमान आये थे। मेहमानों ने कई सैनिकों की सहायता से तीन चोर पकड़े और उनको पकड़ कर मेयर को ख़बर देने गये। घर में न मेयर थे और न उनके दोनों सहकारी ही अपने अपने घर में थे। सब लोग लौट आये। सवेरे चोरों की नकाब हटाने से मालूम हुआ कि मेयर साहब और उनके सहकारी ही ख़ुद चोर हैं। इस देश में आईन बनाकर फांसी की सज़ा उठा दी गई है। उस समय स्पेन की राजगद्दी पर ११ वर्ष के बालक राजा अलफन्सो (Alphonso) थे। इनका जन्म सन् १८८६ में हुआ था। राजमाता इनके नाम से पार्लियामेंट की सहायता से राज-काज चलाती थीं। बालक राजा की तन्दुरुस्ती अच्छी न थी। उन्हें सदा डाक्टर की देख-रेख में में रहना पड़ता था। किन्तु बिलियर्ड (Billiards) खेलने में ये बड़े निपुण थे, अनेक स्याने खिलाड़ियों को भी हरा देते थे। स्पेन का घेरा १,९६,१७३ वर्ग मील का है। जन-संख्या दो करोड़ के लगभग है। प्रायः सारा देश ७०० वर्ष तक मुसलमानों के अधिकार में रह चुका है। अमेरिका-आविष्कार के १०० वर्ष बाद तक यूरोप में यह श्रेष्ठ राज्य माना जाता था।

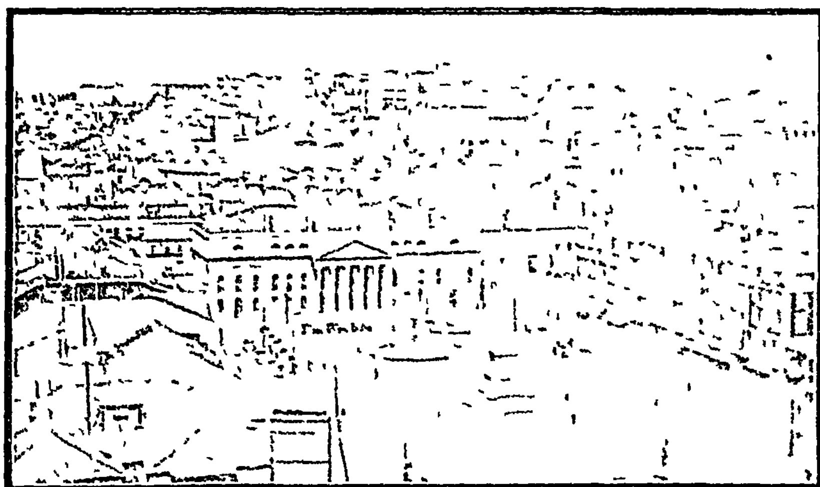
पुर्त्तगाल।

लिसवन (Lisbon)। वाइगो से यहाँ आया। जहाज़ के लंगर डालने पर यात्रियों के आत्मीय-स्वजन उनको लेने आये। गोल्डेन हार्न से कान्सेन्टिनोपुल का और टेगस (Tagus स्थानीय नाम है Tejo) से लिसवन का दृश्य वहुत ही मनोहर देख पड़ता है। टेगस नदी के दक्षिण ओर अर्द्धचन्द्राकार नगर वसा हुआ है। लिसवन नगर कई एक पहाड़ों के ऊपर वसा हुआ है, इस कारण सीढ़ीनुमा ऊँचे सफ़ेद मकानात नदी से देखने में वड़े ही सुन्दर जान पड़ते हैं। लिसवन का सा सौन्दर्य्य लिसवन के सिवा और कहीं नहीं देखने को मिल सकता। दिन के उज्ज्वल सूर्य के प्रकाश में तो यह नगर सुन्दर जान ही पड़ता है; लेकिन चाँदनी मे जो इसका सौन्दर्य देख पड़ता है वह वर्णन नहीं किया जा सकता। आकाश में चन्द्रमा है, नीचे घरों की रोशनी और नदी-तट की गैस पर की रोशनी है, नदी के भीतर विचित्र लैटिन (Lateen) नावें हैं। यह दृश्य अलिफ़लैला के अनैसर्गिक अद्भुत दृश्य के समान जान पड़ता है। नगर का स्थानीय नाम है लिसवोया (Lisboa)। यह पाँच मील लम्बा और तीन मील के लगभग चौड़ा है। यहाँ की जन-संख्या तीन लाख के लगभग है। पुराने रास्तों की व्यवस्था अच्छी नहीं है। किन्तु सन्

इधर-उधर ऊँचे और सुन्दर मकानात बने हुए हैं। लिसबन में चार प्रधान स्कायर हैं। उनमें जो नदी-तट पर बना हुआ है उस (Praca do Commercio) में राजा जोजेफ़ की, पीतल की, घुड़सवार मूर्त्ति स्थापित है। इन्हीं के राज्यकाल में भूडोल आया था और नगर के नष्ट अंश फिर से बने थे। डामपेड्रो (Praca do Dom Pedro) स्कायर के मध्यस्थल में इस तरह रङ्गीन पत्थर जड़ा हुआ है कि उस पर चलने से, समतल होने पर भी, यह डर लगता है कि नीचे की ओर चले जा रहे हैं। इस स्कायर में एक फुहारा और एक स्तम्भ है। स्तम्भ की चोटी पर एक मूर्त्ति है। नीचे भी एक मूर्त्ति स्थापित है। नगर में सात थियेटर और एक "वुलरिंग" है। शहर के भीतर और बाहर कई एक छोटे-बड़े राजमहल बने हुए हैं। ३१ फुहारों के द्वारा नगरनिवासियों को पीने के लिए पानी मिलता है। यह जल १० मील लम्बे आक्विडक् के द्वारा एक प्राकृतिक झरने से लाया जाता है। यह जल एक उपत्यका को जहाँ पर ३५ पायों के पुल पर से पार होता है वह २६३ फ़ुट ऊँचा स्थान है। सन् १४९७ में वास्को-डि-गामा (Vasco da Gama.) स्थानीय नाम है डा-गामा) ने भारत की ओर यात्रा की थी वहाँ पर मूर लोगों का बनवाया एक कैसल था। सन् १५०० में उक्त कैसल के साथ एक गिर्जा बनवाया गया। ज़िरोनिय गिर्जा और उसके अन्तर्गत अनाथाश्रम (Mosterio dos Geronymos) लिसबन का एक प्रधान दृश्य है। अध्यक्ष की अनुमति लेकर भीतर गया। वहाँ बे मा-बाप के बालकों के पढ़ने और रहने की सुन्दर व्यवस्था देख कर चित्त को बड़ी प्रसन्नता हुई। यात्रा के पहले वास्को-डि-गामा ने इसी भजनालय में कई रातें प्रार्थना करने में बिताई थीं। सेन्ट रोक (Igreja de S. Roque)



प्राका-डो-कमासियो—पृ० ६६४



डामपेड्रो—पृ० ६६४

स्वाधीनता-देवी न्यूयार्क—पृ० ७०६

न्यूयार्क के ऊँचे मकानात—पृ० ७२३

गिर्जे में वप्टिस्ट सेण्ट जान का संगमरमर और चाँदी का वना "चैपेल" वड़ा सुन्दर है। इसके वनने मे डेढ़ लाख पौण्ड के लगभग ख़र्च हुआ था। पुर्त्तगाल की भाषा के 'इग्रिज़ा' शब्द से ही 'गिर्जा' शब्द निकला है। नगर के एक स्थान पर "स्वाधीनता की वस्ती" (Avenida da Liberdade) है। वहाँ सड़क के वीच में एक भारी स्तम्भ की वेदी के ऊपर ज़ञ्जीर से खुली हुई पुर्त्तगाल देश की मूर्त्ति स्थापित है यहाँ के दृश्यों मे म्यूनिसिपल महल, आर्सेनल, टेक्निकेल स्कूल, भारी तम्वाकू का कारख़ाना, जूयोवाग़, दो रेल्वे-स्टेशन, अनेक गिर्जे और मूर्त्तियाँ आदि प्रधान हैं। कान्स्टेन्टिनोपुल की तरह यहाँ भी ऊपर चढ़ने के लिए एक रेल्वे-लाइन है। यहाँ चुङ्गी का अत्याचार अधिक है। जहाज़ पर से उतरते ही यात्रियों का सामान पुंखानुपुंख रूप से जाँचा जाता है। गोवा आदि स्थानों की वहुत सी काले रंग की प्रजा भी लिसवन में देख पड़ी।

सन् १७५५ की १ नवम्वर को भयानक भूकम्प से यह नगर नष्ट हो गया था। उसका चिह्न-स्वरूप एक मकान का भग्नावशेष उसी अवस्था मे रक्खा गया है। १० वजे के समय यह भयङ्कर भूडोल आया था। उसमें वहुत से लोग मकानों के नीचे दव कर मर गये। उसके साथ ही एकाएक नदी का पानी भी ५० फ़ुट चढ़ आया और नगर उसी में जैसे तैरने लगा। अन्त को दुष्ट लोगों ने आग लगा दी। वह आग आठ दिन तक नहीं वुझी। उससे क़रीव क़रीव सभी नगर नष्ट सा हो गया। किसी अँगरेज़ भद्रपुरुष ने अपनी आँखों से सव हाल देख कर यों लिखा है—

"The terror of the people was beyond description; nobody wept,—it was beyond tears;—they ran

hither and thither, delirious with horror and astonishment—beating their faces and breasts—crying *misericordia*, the world's at an end; mothers forgot their children, and ran about loaded with crucifixed images. Unfortunately many ran to the churches for protection; but in vain was the sacrament exposed; in vain did the poor creatures embrace the altars; images, priests, and people, were buried in one common ruin. * * The prospect of the city was deplorable. As you passed along the streets, you saw shops of goods with the shop-keepers buried with them, some alive crying out from under the ruins, others half buried, others with broken limbs, in vain begging for help; they were passed by crowds without the least notice or sense of humanity. The people lay that night in the field, which equalled if possible the horrors of the day; the city all in flames; (many thousands of trembling fugitives had collected in the great square, when it was discovered that flames were spreading in every quarter. Taking advantage of the universal panic and confusion, a hand of miscreants had fired the city), and if you happened to forget yourself with sleep, you were awakened by the trembling of the earth and the howlings of the people. Yet the moon shone, and the stars, with unusual brightness. Long wished for day at last appeared, and the sun rose with great splendour on the desolated city in the morning. Some of the boldest, whose houses were not burnt, ventured home for clothes, the want of which they had severely felt in

the night, and a blanket was now become of more value than a suit of silk." लेखक महाशय कहते हैं कि "ऐसे समय भी चन्द्रमा और तारागण ने उदित होकर किरण जाल फैलाना बन्द नहीं किया और दूसरे दिन सूर्यदेव ने विशेष तेज के साथ इस विनष्ट नगर के ऊपर अपनी किरणें विकीर्ण करने में कुछ कसर उठा नहीं रक्खी।" इन शब्दों के द्वारा दर्शक महाशय यह दिखाते हैं कि इस तरह की एक राजधानी ५०,००० के लगभग मनुष्यों-सहित नष्ट हो गई; लेकिन चन्द्र-सूर्य ने कुछ भी उधर ध्यान नहीं दिया। वास्तव मे यदि यह सारी पृथ्वी चूर्ण हो जाय तो उससे संसार की अत्यन्त साधारण क्षति ही होगी; एक चींटी के मरने से बढ़ कर हानि न होगी। ये भूडोल आदि उत्पात उस ईश्वर के विशेष विधान हैं। इन्हीं के द्वारा महामोह में डूबे हुए जीवों को चेत होता है। वर्षा, आँधी-तूफ़ान आदि की अवाई जानने के लिए विज्ञान की सहायता से उपयोगी यन्त्रों का आविष्कार हुआ है। भूमिकम्प जानने के लिए भी एक यन्त्र बना है। लेकिन उससे संसार का कुछ उपकार नहीं होता; क्योंकि वह भूमिकम्प के आने की सूचना नहीं दे सकता। हाँ, भूमिकम्प शुरू होने पर मामूली से मामूली भूमिकम्प का पता चल जाता है। विसूवियस के मानमन्दिर में इस प्रकार का सर्वश्रेष्ठ यन्त्र स्थापित है। इसे (Electromagnetic Seismograph) कहते हैं। भूमिकम्प शुरू होते ही इसके द्वारा निकटस्थ कर्मचारी के घर का अलार्म-घंटा (Alarm-bell) बजता है और एक घड़ी लगी रहती है सो वह बन्द हो जायगी। और एक घड़ी रहती है, उसका लंगर खिसक जाता है और उसकी गति से थोड़ा सा लिपटा हुआ काग़ज़ खुल जाता है और उसके ऊपर

पेन्सिल का निशान बन जाता है । इस प्रकार अनायास भूकम्प का समय और उसका हलकापन या भारीपन केवल जाना जा सकता है । पहले से सावधान होकर प्राण बचाने का कोई उपाय अभी तक नहीं निकला । अचानक उपस्थित होकर मोहान्ध पुरुषों को ज्ञान देना ही भूकम्प का उद्देश्य जान पड़ता है । राजधानी से ६ कोस पर समुद्र है । इसी समुद्र जाने के मार्ग में नदी-तट पर एक पन्द्रहवीं शताब्दी का विचित्र ढंग का टावर देख पड़ता है । नदी के किनारे और मुहाने पर कई एक छोटे छोटे क़िले स्थापित हैं । यहाँ से माड्रीड (Madrid) जाने का विचार था; लेकिन वहाँ शीतला-रोग फैलने और राह में अराजकता (Anarchists) का उत्पात सुनकर वहाँ जाने का साहस नहीं हुआ ।

पुर्त्तगाल की साधारण अवस्था । राज्य का घेरा ३४,६०६ वर्ग मील का है । जन-संख्या एक करोड़ के लगभग है । सन् १८६५ में एक करोड़ पौण्ड से कुछ अधिक राज्य की आमदनी और उतना ही ख़र्च हुआ था । ऋण १५ करोड़ के लगभग था । शान्ति के समय ४०,००० सेना रहती है और युद्ध के समय डेढ़ लाख तक जमा हो सकती है । जङ्गी जहाज़ों में ३६ स्टीमर और १६ पाल-दार जहाज़ हैं। नौ-सेना ४,००० के लगभग होगी । यहाँ रोमन-कैथलिक धर्म ही प्रधान है । यहाँ का शिक्षा-विभाग धर्मसम्प्रदाय के हाथ में नहीं है । आईन के अनुसार लड़की-लड़कों को स्कूल भेजने के लिए बाध्य होने पर भी अनेक लोग इस विषय में विशेष शिथिल पाये जाते हैं । इसी कारण प्रजा में सैकड़ा पीछे ८२ आदमी निरक्षर हैं । राज में न्यूनाधिक ४,००० सरकारी प्राइमरी स्कूल, २२ लाइसियम (उच्च विद्यालय) हैं । इनके सिवा अनेक वे सरकारी मध्य-श्रेणी के स्कूल हैं । राजधानी में एक युद्ध-संबन्धी स्कूल और २८ शिल्प और मज़दूरी

सिखाने के स्थान हैं। राजा डाम्-कार्लस (Dom Corlos) की अवस्था उस समय चौंतीस वर्ष की थी। सन् १८८९ में वह सिंहासन पर वैठे थे। तीन साल राज्य करने के बाद राज्य की आर्थिक अवस्था देखकर इन्होंने अपनी वृत्ति का ⅙ हिस्सा आपसे छोड़ दिया। लेकिन उससे राज्य का कुछ विशेष उपकार नहीं हुआ। कारण, मन्त्री लोग केवल अपना ही घर भरने मे लगे रहते हैं। फिर सुप्रवन्ध कौन करे? ग्रीस-राज की तरह यह भी छाता लगाये पैदल या ट्रामगाड़ी पर घूमने निकलते हैं। (लेकिन अब पुर्त्तगाल में राजा नहीं है। राजा को प्रजा ने भगा दिया है और प्रजा-परतन्त्र-प्रणाली स्थापित होगई है)। यहाँ के रुपये का हिसाव विचित्र ही है। स्पेन में भी पहले यही हाल था। सारा हिसाव 'रेज़' के द्वारा होता है। लेकिन 'रेज़' नाम का कोई सिक्का नहीं है। एक रेज़ $\frac{1}{20}$ पेनी के लगभग क़ीमत का होता है। ऐसा क्षुद्र आर्थिक मान (Monetary unit) पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। राज्य की अवस्था शोचनीय है। सुवर्ण का नाम नहीं है. चाँदी भी मुश्किल से देख पड़ती है और पैसा भी कम है; केवल नोटों से ही सव काम चलता है। दो पेनी तक के नोट वाज़ार में चलते हैं।

यूरोप से विदा। जिब्राल्टर आकर यूरोप से विदा होना पड़ा। सारे यूरोप में पर्यटन करके मैंने यही देखा कि यूरोपियन लोग जाति, धर्म, आचार-व्यवहार आदि में साधारणतः एक हैं। स्त्रियों का ये लोग यथोचित सम्मान करते हैं। ये कहते हैं—

"Men make the laws, women make the manners of nations." कवि ने भी कहा है—

"Woman's cause is man's. they rise or sink
Together dwarfed or God-like, bond or free"

वास्तव में यह बिलकुल ठीक है कि सुशिक्षिता माताओं ने ही यूरोप की वर्त्तमान उन्नति की है। इस बात पर ध्यान देना हमारा परम कर्त्तव्य है। यह बात किसी को बतानी न होगी कि सबकी अपेक्षा क्षुद्र महादेश होने पर भी यूरोप सारी पृथ्वी पर हुकूमत कर रहा है। इतिहास के पण्डित रसेल लिखते हैं—

"Europe is the theatre on which the human character has appeared to the greatest advantage, and where society has attained its most perfect form, both in ancient and modern times Its history therefore will furnish us with everything worthy of observation in the study of men and kingdoms."

—*W. Russel.*

इस मन्तव्य को इतिहास के सभी विद्यार्थी अच्छी तरह समझ सकते हैं। भारतवर्ष के संबन्ध में यूरोप के लोगों को बहुत ही कम जानकारी हासिल है। अनेक यूरोपियनों से बातचीत करके मुझे इस बात का परिचय प्राप्त हुआ है। यहाँ तक मेरे हिन्दू होने पर भी वे विश्वास नहीं करते थे। उनमें से कई लोगों ने इसी प्रकार की बातें कहीं कि "आपको तो हम ठीक अपने ही समान पाते हैं। केवल रङ्ग कुछ काला है। सो ऐसा रंग यूरोप के दक्षिण-अंश में अक्सर देखा जाता है। हमने सुना है कि भारत के लोग आधे असभ्य, आधे नंगे और घोर कुसंस्कारग्रस्त होते हैं। वे और किसी जाति से हेल-मेल बढ़ाना नहीं चाहते, अन्य जातियों के साथ खाते-पीते नहीं। फिर आप अपने को कैसे भारत का हिन्दू बतलाते हैं? हाँ, यह हो सकता है कि आपके पूर्व-पुरुष यूरोपियन थे। बहुत दिनों ग्रीष्म-प्रधान भारत में रहने के कारण आपका रंग कुछ काला पड़

गया हो। इत्यादि।" यह बात पहले भी कही जा चुकी है कि अनेक जगह यह समझाने में भी बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा कि भारतवर्ष कहाँ पर है।

मरक्को।

ञ्जीर। इसका स्थानीय नाम है ताञ्जा। जन-संख्या २०,००० के लगभग है। उनमें ४०० के लगभग यूरोपियन हैं। यह शहर पहले पुर्त्तगीज़ लोगों के अधिकार में था। सन् १६६२ में इँगलैण्ड के राजा ने ब्याह के दहेज़ में पाया। परन्तु वहाँ का शासन व्ययसाध्य देखकर वह मूर लोगों को दे दिया गया। वर्त्तमान समय में इसके ऊपर बहुतों की नज़र पड़ी है। परन्तु अभी तक कान्स्टेन्टिनोपुल की तरह इसकी भी दशा है। कोई इस पर हस्तक्षेप नहीं कर सकता। क्योंकि यह भू-मध्यसागर के प्रवेशद्वार पर बसा हुआ है। कादिज़ से जलमार्ग होकर एक बजे के समय यहाँ पहुँचा। उस समय ख़ूब पानी बरस रहा था। जहाज़ से किनारे पहुँचानेवाली डोंगी का माँझी मेरी यूरोपियन पोशाक देख कर अन्यान्य लोगों की अपेक्षा दसगुना किराया मुझसे माँगने लगा। उससे कम पर किसी तरह राज़ी होते न देखकर लाचार उतना ही दिया। समुद्र से ऊपर को अम्फ़ी-थियेटर की तरह नगर उठा हुआ है। चारों ओर चहारदीवारी और एक छोटा सा क़िला भी है। यहाँ सभी बातें पूर्वी ढंग की हैं। रास्ते बहुत ही बुरे हैं। यहाँ कई तरह के मनुष्य बसते हैं। असल मूर लोगों का डील-डौल बहुत ही सुन्दर और सुडौल होता है। पोशाक-पहनावा सबका क़रीब क़रीब मुसलमानी ढंग का है। लड़के

मौल्वी के सामने चटाइयों पर पालथी मारे बैठे हिल हिल कर क़ुरान पढ़ते हैं। भिश्ती पीठ पर पानी-भरी मशक लादे कटोरा बजा कर सड़कों पर पानी पिलाते फिरते हैं। दूकान-पाट बाज़ार आदि का ढंग हमारे ही देश का ऐसा है। स्त्रियाँ आँखों में और भौंह के बीच में काजल और हाथों में मेहँदी लगाती हैं। टर्की से इतनी दूर होने पर भी यहाँ टर्की की अनेक बातें देख पड़ती हैं। यहाँ के लोग अपनी सन्तान का उल्लेख "कुत्सित, कदाकार" आदि शब्दों में ही करते हैं और अगर कोई किसी के लड़के की ओर अधिक देर तक देखता है तो उसकी माता या और कोई निकटस्थ अभिभावक, नज़र से बचाने के लिए, फ़ौरन उस बच्चे के सिर पर थुक थुका देता है। बच्चों के खिलाने-पिलाने का कोई नियम नहीं; वे जब जो कुछ पाते हैं वही खा लेते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। मेरा जो दुभाषिया था वह जाति का मूर किन्तु यूरोपियन ढंग का था। काम चलाने भर की अँगरेज़ी, फ्रेंच और स्पेनिस भाषा उसे मालूम थी। उसने नगर के सब प्रधान दृश्य दिखलाये और उनके सम्बन्ध की जानने योग्य बातें भी समझाईं। नगर में देखने की चीज़ "कस्बा" क़िला और बाज़ार है। इसी क़िले में यहाँ का गवर्नर रहता है। यहाँ रास्ते को 'बाब', बन्दरगाह को 'मार्सा' और बाज़ार को 'सक' कहते हैं। नगर के बाहर मैदान में घूमते फिरते रहनेवाले सौदागरों की ऊँट और गधों की छावनी एक नया ही दृश्य है। इस शहर के एक तरफ़ समुद्र और तीन तरफ़ मरुभूमि है। मैं जिस होटल में ठहरा था वह ऐन समुद्र-तट पर था। वहाँ से बन्दरगाह और समुद्र देखने की बड़ी बहार थी। धन्य है यूरोपियन लोग, जिन्होंने ऐसी मरुभूमि में भी इन्द्रभवनतुल्य होटल स्थापित करके आनेवाले यात्रियों के आराम का ऐसा अच्छा प्रबन्ध कर रक्खा

है। ऐसे उद्धत राजा के राज्य में इस प्रकार के खाने-पीने और आराम के स्थान का होना सचमुच ही विस्मय की बात है! इस समय राज्य में कुछ गड़बड़ी मच रही थी। इस बारे में होटल के अधिकारी से पूछने पर उसने मुझे अभयप्रदान किया। कहा, इस समय यहाँ इसीलिए अँगरेज़ी, फ्रेंच, इटलियन और स्पेनिस जंगी जहाज़ मौजूद हैं। होटल में भोजन के समय टेबिल सजाने के लिए टब में लगे हुए अन्यान्य छोटे वृक्षों के साथ फल-फूल-शोभित एक तरह का कौले का पेड़ भी रक्खा जाता था। मरक्को की खजूर खाकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। ताञ्जीर रोमन अमलदारी का बसा हुआ शहर है। उस समय इसे "तिञ्जिस" कहते थे। नगर से एक अँगरेज़ी का, एक फ्रेंच भाषा का और तीन स्पेनिस भाषा के अख़बार प्रकाशित होते हैं। यूरोपियन अधिवासी लोग अपने अपने प्रबन्ध से अपने अपने देश के जहाज़ों पर अपनी अपनी डाक भेजते हैं, यहाँ के सुलतान का कोई प्रबन्ध नहीं है। थोड़े दिन हुए, राजधानी से बन्दरगाहों तक डाक जाने-आने का प्रबन्ध सुलतान ने किया है। जो कुछ हो यूरोप की सीमा पर मुसलमानी राज्य का बना रहना साधारण बात नहीं! ऐसा भी एक समय होगया है जब मरक्को और स्पेन के पश्चिम प्रान्त से गंगा तीर तक मुसलमानों के घोड़े दर्प के साथ दौड़े हैं। महम्मद के धर्मबल का प्रत्यक्ष प्रमाण यूरोप में मूर और तुर्कों का प्रभाव है। उक्त पैग़म्बर की अमित शक्ति के द्वारा अनुप्राणित होकर अरब लोग जो एक समय प्रबल प्रतापी हो उठे थे उसकी ज़ेरबारी को यूरोप अभी तक नहीं मिटा सका। क्रिस्तान-यूरोप में अब तक मुसलमान ज़ोर से क़ुरान पढ़ते हैं, और यूरोप की नदी गोयाडाल्कविर के किनारे क़ुरान के अंकित अंशों से सुशोभित राजमहल अभी तक विराजमान है।

मरक्को की साधारण अवस्था। अरबी नाम 'मर्राकुश' से मरक्को शब्द की उत्पत्ति हुई है। देश का स्थानीय नाम "मग़रिब उल आक्सा" (अरब लोगों का पश्चिम प्रान्त) है। सहारा की ओर सीमा अनिर्दिष्ट रहने के कारण राज्य का परिमाण ठीक तौर से निश्चित नहीं है; अन्दाज़न तीन लाख से अधिक वर्ग-मील का घेरा होगा। जन-संख्या भी पचास लाख से अधिक न होगी। उसमे १,५०० के लगभग ईसाई, दो लाख कृष्णकाय हवशी, तीन लाख यहूदी और बाक़ी सुन्नी-सम्प्रदाय के मुसलमान हैं। ७० लाख पौण्ड के लगभग राज-कर वसूल होता है। यह राज-कर सुल्तान की गृहस्थी और राज्य-शासन मे ख़र्च होता है। यह कर वसूल करने के लिए १०,००० के लगभग सिपाही नौकर हैं। छोटा या बड़ा कोई भी कर्मचारी नियमितरूप से तनख़्वाह नहीं पाता। अतएव अनेक असत् उपायों से ये लोग पैसा पैदा करते हैं। पल्टन की रसद के संबन्ध में भी कमसरियट की कोई व्यवस्था नहीं है। इस कारण वे लोग भी कूच के समय गाँव वग़ैरह लूट कर अपने खाने-पीने का प्रवन्ध करते हैं। समुद्र-तट की किसी किसी जाति की जीविका ही लूट-मार करना है। सेना ८०,००० है। उसमे १०,००० से सुल्तान की ख़ास हवशियों की पल्टन मे है। शेष सेना मे आधी के लगभग तनख़्वाह पाती है, और आधी के लगभग केवल युद्ध के समय जमा हो जाती है। सेना की देख-रेख और शिक्षा का काम अँगरेज़, फ्रेंच और इटलियन कर्मचारियों के हाथ मे है। वन्दूक आदि के कारख़ाने भी इन्हीं के अधिकार मे हैं। सुल्तान की उपाधि "अमीर उल मोमिन" (अर्थात् विश्वासियों के प्रधान) है। सुल्तान अपनी ज़िन्दगी मे ही यह वतला जाते हैं कि उनके बाद राज-छत्र किसे मिलेगा। सुल्तान के मरने के वाद शुक्रवार को दोपहर की नमाज़ के समय सर्वसाधारण के अनु-

मोदन से उसी पुरुष के सिर पर सुल्तानी छत्र लगाया जाता है। तुर्कों के सुल्तान जैसे शेख़-उल-इस्लाम के अधीन हैं और (कम से कम नाम-मात्र को) उनके जैसे "मजलिसे ख़ास" (प्रिवी कौन्सिल) है वैसे यहाँ कुछ भी नहीं है। सुल्तान ही राज्य और धर्म के हर्ता-कर्ता हैं। वर्त्तमान सुल्तान का नाम अब्दुल अज़ीज है। सन् १८६४ मे यह सिंहासन पर बैठे थे। मूर लोग बड़े ही घमंडी होते हैं। इसका कारण यही है कि वे घोर मूर्ख होते हैं। उनके मत से रेल, तार इत्यादि सामग्रियाँ काफ़िरों के लिए हैं, मुसलमान के लिए तो केवल क़ुरान पढ़ लेना ही काफ़ी है, विज्ञान आदि अन्य विषयों को सीखने की ज़रूरत नहीं है। मूर लोग बड़े लड़ाके होते हैं। "तेरा बाप बैल की तरह पलँग पर पड़े पड़े मर गया (अर्थात् युद्ध मे नहीं मरा)," यह इनके यहाँ बड़ी भारी गाली है। स्थूल शरीर होना स्त्रियों का सुन्दरता में दाख़िल है। "फ़ुलाँ स्त्री इतनी सुन्दर है कि एक ऊँट के बराबर है," यह यहाँ बड़ी तारीफ़ की बात समझी जाती है। ब्याह की बातचीत पक्की होने पर कन्या को बराबर ऊँट का दूध और अन्यान्य चर्बी पैदा करनेवाली चीज़ें खिलाई जाती हैं। मरक्को के रुपये का नाम है "मित्काल"। आकार में हमारे यहाँ की दुअन्नी के बराबर होता है। इसका मूल्य तीन पेन्नी से कुछ अधिक है। पैसे को ब्लँकिन या मजूना कहते हैं। एक मित्काल के ४० ब्लँकिन मिलते हैं।

अमेरिका ।

अटलान्टिक (Atlantic)। पहले कहा जा चुका है कि जिब्राल्टर से मैंने अमेरिका की यात्रा शुरू की। जहाज़ पर केवल हम चार जने फर्स्ट-क्लास के यात्री थे। बाक़ी ८०० के लगभग इटलियन और सिसिलियन (Sicilian) स्त्री-पुरुष और बालक-बालिका निम्नश्रेणी के यात्री थे। इनमें से कुछ उपनिवेश में बसने के लिए और कुछ धनोपार्जन के लिए अमेरिका की ओर जा रहे थे। हम सब यात्रियों को न्यूयार्क (New York) ही जाना था; कारण, अटलान्टिक सागर में और कहीं जहाज़ के किनारे लगने की जगह नहीं है। कप्तान आदि अफ़सरों ने कहा—बारह, तेरह, अधिक से अधिक चौदह दिन में पहुँच जायँगे। सन्ध्या के समय जहाज़ का लंगर उठाया गया। खाड़ी होकर हमारा जहाज़ अटलान्टिक में पहुँच गया। कई दिन पहले भारी तूफ़ान आ चुका था। दो तीन दिन अच्छी तरह बीते। उसके बाद धीरे धीरे हवा ज़ोर पकड़ने लगी। सामने की तेज़ हवा के कारण जहाज़ की चाल धीमी पड़ने लगी। सबको यही आशङ्का हुई कि नियत समय पर जहाज़ न पहुँच सकेगा। अफ़सर लोगों की बातचीत से मालूम हुआ कि "मार्च और सितम्बर में अटलान्टिक का रूप भयानक रहता है, भारी उपद्रव होते हैं। क्या होगा, यह नहीं कहा जा सकता।" अन्त को दो दिन (५२ घंटे तक) विपरीत पवन का

भारी तूफ़ान सहना पड़ा। उस समय गल्फ़स्ट्रीम (Gulf Stream) मे अटलान्टिक के वीचोवीच हमारा जहाज़ था। मेरे साथी अन्य तीन यात्री वरावर लेटे ही रहे। कप्तान, अफ़सर और माँझी लोग दिन-रात घवराये से रहते थे। दो दिन मुझे अकेले ही विताने पड़े। दिन को कभी कभी ऊपर के डेक में चढ़कर भीतर की ओर दरवाज़ा पकड़े खड़े खड़े तुरन्त समुद्र-रूपी भगवान् की लीला देखा करता था। चारों ओर और कुछ भी नहीं देख पड़ता था। केवल श्वेत वर्फ़ से आच्छादित शिखरवाली पर्वतमाला के समान फेने से भरी उत्ताल तरंगमाला की वहार नज़र आती थी। जान पड़ता था, जैसे पर्वत-समूह और उनके वीच की उपत्यकायें लगातार स्थान-परिवर्त्तन के साथ साथ अपना रूप वदल रही हैं। जहाज़ खड़ा हो होकर कभी इधर और कभी उधर झुककर मृदु मन्द-गति से वड़ी मुश्किल से अपने मार्ग पर जा रहा था। इस दृश्य को जीवन मे कमसे कम एक वार अवश्य देखना चाहिए। अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त मनोहर, दारुण भयानक भाव के भीतर समुद्र की अत्यन्त मनोमोहिनी मूर्त्ति देख पड़ती है। तुमुल तूफ़ान में अटलान्टिक का अतुलनीय अद्‌भुद वेष हो जाता है। आँधी शान्त होने पर तीसरे पहर इटली की स्त्रियों और वालिकाओं ने ईश्वर को धन्यवाद देकर ऐसे सुन्दर भाव से मिलकर गाना शुरू किया कि उनकी भाषा न समझ सकने पर भी सुननेवालों का मन मोहित हुए विना नहीं रह सकता। इसके वाद थोड़ी वहुत प्रतिकूल वायु को झेलता हुआ हमारा जहाज़ वारह दिन की जगह अठारह दिन में न्यूयार्क पहुँचा। अटलान्टिक के जहाज़ों में जुए खेलने का ख़ूव चलन है। हमारे इस जहाज़ पर भी जुआ हो रहा था। ऊपर निम्नश्रेणी के इटलियन लोग, सेलून पर कप्तान और दो यात्री अवकाश मिलते ही

जुआ खेलने लग जाते थे। इन दोनों यात्रियों में एक आयरिश और दूसरा अमेरिकन युवक था। अमेरिकन युवक नेपल्स का वाइस-कौंसल था, छुट्टी लेकर घर जा रहा था। इस अमेरिकन भद्रपुरुष ने जहाज़ पर मुझसे कुछ कर्ज़ लिया था। उसे अदा न करके जहाज़ छोड़ने के समय और कुछ ठगने के लिए बारम्बार चेष्टा करते देखकर मैं सबके साथ जहाज़ से नहीं उतरा। जाने के समय उसने अपना पता बतला कर मुझे अपने घर में मध्याह्न-भोजन का निमन्त्रण दिया। वहाँ भी कुछ ठगने की ही उसकी मंशा थी।

न्यूयार्क। बन्दरगाह के मुहाने पर रोशनी का जहाज़ (Light Ship) एक देखने की चीज़ थी। पास के छोटे टापुओं में किले बने हुए हैं। उसके बाद समुद्र-तट पर स्वाधीनता-देवी की विराट् मूर्त्ति देखी। यह मूर्त्ति फ्रान्स ने अमेरिका को उपहार के तौर पर दी है। मूर्त्ति का घेरा इतना बड़ा है कि उसके उठे हुए हाथ (एक हाथ में एक पुस्तक सी है। उस पर लिखा है, चौथी जूलाई १७७६; और दूसरा हाथ उठा हुआ है।) के अग्रभाग में बिजली की रोशनी स्थापित है। हाथ पोला है और उसके भीतर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। उन सीढ़ियों पर चढ़कर लोग रोशनी तक जाते हैं। मूर्त्ति के नीचे का चबूतरा और भी ऊँचा है। बन्दरगाह मे पहुँच कर अख़बारों मे देखा कि गत तूफ़ान मे अनेक स्थानों में बहुत से जहाज़ नष्ट होगये। जहाज़ से उतर कर कहाँ जाऊँगा, इसका कुछ निश्चय न होने के कारण साधारण वाहक-गाड़ी (Express) में अपना असबाब नहीं दे सका। अनेक कम्पनियों की ये गाड़ियाँ ही लोगों का असबाब लादकर यथास्थान पहुँचा देती हैं; कुलियों की व्यवस्था नहीं है। हडसन (Hudson) नदी के खेवा-घाट पर जाने के लिए कुली खोजकर हैरान होगया। बड़ी मुश्किल

से एक आदमी मिला। उसने $\frac{1}{8}$ मील तक असबाब लेजाने के लिए आधा डालर (Dollar. हमारे यहाँ के १॥ रु० से भी कुछ अधिक) माँगा। मैंने लाचार स्वीकार कर लिया। तब उसने दो चीज़ें आप लीं और दो चीज़ें ले चलने के लिए, बिना किसी संकोच के, मुझसे कहा—"You can carry the other two." मैं तो सुनकर दङ्ग होगया। इतने थोड़े रास्ते के लिए मामूली असबाब का भाड़ा १॥) रु० देकर भी दो चीज़ें मुझे लादनी पड़ीं। क्या करता? स्वीकार कर लिया। उस कुली ने खेवाघाट में पहुँचा कर अत्यन्त साफ़ सुथरी 'जेटी' के ऊपर होकर एक सुन्दर लकड़ी के कमरे मे बिठला कर किराया माँगा। मैंने उसे मुसाफ़िरख़ाना समझ कर कहा—"जहाज़ आने दो, इतनी जल्दी क्यों कर रहे हो?" इसके उत्तर में कुली ने कहा—"You are already on the boat, she will leave immediately." अर्थात् "आप जहाज़ के ऊपर बैठे हैं, अभी छूटेगा," मैं आप ही बेवकूफ़ बन गया। उसको भाड़ा देकर दूसरे दर्वाज़े से कमरे के बाहर जाकर देखा, सचमुच ही मैं स्टीमर के ऊपर था। आश्चर्य यही है कि स्टीमर छूटने के पहले तक मैं जेटी (Jetty) और स्टीमर के संयोगस्थल को नहीं भाँप सका। उस पार जाकर फिर कुलियों की गड़बड़ में पड़ गया। मेरे संकट और तकलीफ़ को देखकर एक बालक ने ६ सेन्ट (Cent) लेकर मेरी सहायता की और मेरा असबाब ट्रामगाड़ी पर चढ़ा दिया। कुक कम्पनी के आफ़िस से संवाद आदि लेकर होटल में असबाब रखकर सर्क्यूलर नोट (Circular Note) भुनाने के लिए एलिवेटेड रेल्वे (Elevated Railway) द्वारा वाल स्ट्रीट (Wall Street) में गया। लन्दन में धरती के नीचे रेल चलती है और यहाँ २५-३० से ७० फ़ुट तक ऊँचे पर रास्ता चलनेवालों के सिर के ऊपर रेल

चलती है। स्टेशन वग़ैरह सब कारख़ाना ऊपर ही हैं। रेल के कारण नीचे के रास्तों में प्रकाश नहीं जा सकता। वे सदा भीगे और कीचड़ से भरे रहते हैं। इस रेल की सड़क पर नित्य आफ़िस वग़ैरह खुलने के समय और उसके एक घंटे बाद तक बैंकों की ओर एक ट्रेन के बाद दूसरी ट्रेन छूटा करती है। वालस्ट्रीट लन्दन की लम्बार्ड स्ट्रीट (Lombard Street) के समान है। धनवानों के समागम के सम्बन्ध में इसका नम्बर लंबार्ड स्ट्रीट के नीचे ही है। बैंक में नोट भुना कर देखा कि दो बिजली की मशीनों में बराबर फ़ीते के समान काग़ज़ के टुकड़े छप छप कर बाहर निकल रहे हैं। पूछने से मालूम हुआ कि एक में एक्सचेंज से और दूसरी में ब्रेञ्चों से बराबर तरह तरह की ख़बरें आती हैं। एक रेलवे-स्टेशन में खड़ा हुआ मैं रेल की अपेक्षा कर रहा था, इतने में एक लेडी ने पास आकर मुझसे पेन्सिल माँगी और नोटबुक में न जाने क्या लिखकर पेन्सिल मुझे देकर चली गई। यूरोप में—ख़ास कर इँग्लेण्ड में— अपरिचित स्थल पर ऐसा नहीं देखा जाता। यहाँ चारों ओर लोग जैसे बिजली की तरह जाते आते देख पड़ते हैं [इँग्लेण्ड के प्रसिद्ध पण्डित हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) ने अमेरिका के लोगों को धनोपार्जन के लिए भारी परिश्रम करते देख कर प्रकाश्य वक्तृता द्वारा उन्हें लोभ की बाढ़ रोकने के लिए उपदेश दिया था। दुःख की बात है कि उनकी बात को कोई मान नहीं सका। क्योंकि अटलान्टिक सागर के उस पार जीवन-संग्राम इतना तीव्र है कि शरीर और मन की भारी हानि देख कर भी वे सावधान होने में असमर्थ हैं]। दूकान पर कोई चीज़ ख़रीदिए तो इँग्लेण्ड के दूकानदार कहते हैं—

"Thank you, sir, very much obliged. Anything else this morning?" किन्तु अमेरिका में यह कुछ नहीं है। सभी

जैसे लापर्वाह हैं, अपने धन्धे में या घमण्ड में आप ही मस्त हैं; शिष्टाचार या लौकिकता दिखाने के लिए जैसे किसी को अवकाश ही नहीं है।

दृश्य आदि। न्यूयार्क अमेरिका का सर्वोत्कृष्ट नगर है। रोज़गार और सम्पत्ति में इस नगर का पृथ्वी भर मे दूसरा नम्बर है। उपनगर वग़ैरह की आबादी मिलाकर यहाँ की जन-संख्या २५ लाख के लगभग है। उपनिवेश के लोगों मे से एक-तिहाई आदमी यहीं उतरते हैं। ख़ास-नगर के दोनों ओर दो नदियाँ बहती हैं। दोनों में १४ वर्ग-मील के लगभग लम्बा जहाज़ ठहरने की जगह है। बन्दरगाह के एक जल-खण्ड (Upper Bay) में चौदह और दूसरे जल-खण्ड (Lower Bay) में अठासी वर्ग-मील का जहाज़ों के ठहरने का स्थान है। अमेरिकन लोगों के मत से उनके देश में जहाँ जो है वह पृथ्वी भर मे सर्वोत्कृष्ट है। चमक-दमक और दिखावा अमेरिकन लोगों का ख़ास स्वभाव है। किन्तु हार्बर वास्तव में सर्वोत्कृष्ट है। यह नगर सन् १६५६ में बसा था और इसकी उन्नति सन् १८०७ से शुरू हुई है। तीन मील लम्बी सड़क का नाम है ब्राड्वे (Broadway)। उसी से चारों ओर को सड़कें निकली हैं। इस सड़क और अन्य एक सड़क के सिवा और सड़कें इतने बड़े प्रसिद्ध शहर के लायक़ नहीं हैं। दो एक भिन्न संख्याओं के द्वारा सारी सड़कों के नाम रक्खे गये हैं। जैसे चतुर्थ आविनिऊ, पैंसठवीं स्ट्रीट इत्यादि। यूरोपियन नगरों की तरह सड़कों में पेशाव आदि करने (Water-closet) के स्थान नहीं हैं। इसके लिए पब्लिकहाउसवालों (कलवरिया के मालिकों) के साथ सरकार ने प्रबन्ध कर लिया है। वहीं रास्ते चलनेवाले लोग पेशाव आदि करते हैं। स्क्वायर आदि मिलाकर छोटे-बड़े ३० साधारण विहार-स्थान

हैं। उनमें मध्यपार्क (Central Park) में २५,००० बीघे से अधिक ज़मीन लगी है। अर्थात् वह २½ मील लम्बा और आध मील चौड़ा है। वहाँ की वृक्ष आदि सब सामग्री देखने लायक़ है। तीसरे पहर धनी लोग यहाँ आते हैं। उस समय यह स्थान ख़ूब गुलज़ार होता है। सब बड़े बड़े होटल एक स्क्वायर में हैं। उपनगर के एक टापू (Coney Island) मे इतना बड़ा एक होटल है कि उसमे एक साथ ४,००० आदमी भोजन करने बैठ सकते हैं। मोनूमेन्टो में वाशिंगटन, लाफ़ेइट (Lafayette), और लिंकन (Abraham Lincoln) की मूर्त्तियाँ प्रधान हैं। ब्रूकलिन-ब्रिज (Brooklyn Suspension Bridge) अपने ढंग के पुलों मे, पृथिवी भर मे, श्रेष्ठ है। आधे मील से कुछ कम चौड़े पानी के ऊपर ५,९८९ .फ़ुट लम्बा और बीच मे १,५९३ .फ़ुट का एक "स्पान" डेढ़ करोड़ डालर की लागत से बना है। पाँच करोड़ डालर की लागत से छोटे बड़े ५०० से अधिक गिर्जे बनवाये गये हैं। उन सबका सालाना ख़र्च ४० लाख डालर है और सबमे चार लाख से अधिक उपासना करनेवालों के बैठने की जगह है। इस नगर मे आठ से लेकर दस बरस तक की अवस्था के बालक आईन के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने के लिए बाध्य हैं। ९,००० के लगभग शिक्षक और चार लाख से अधिक विद्यार्थी हैं। २० लाइब्रेरियाँ हैं; उनमे तीन बड़ी हैं। इनके सिवा कूपर (Cooper) नामक एक व्यक्ति छः लाख डालर ख़र्च करके एक पाठ-भवन और एक विज्ञान-शिल्प का स्कूल स्थापित कर गये हैं। वहाँ बहुत से लोग मुफ़्त ज्ञानोपार्जन करके कृतार्थ हुआ करते हैं। वह इस लाइब्रेरी को सालाना ख़र्च के लिए और भी दो लाख डालर दे गये हैं। इस नगर मे ९०० से अधिक समाचारपत्र और सामयिक पत्र प्रकाशित होते हैं। उनमें ५०

दैनिक पत्र हैं। इस नगर से प्रकाशित "न्यू-यार्क हेरल्ड" नामक दैनिक पत्र की सात लाख के लगभग कापियाँ बिकती हैं। शायद संसार में इससे अधिक किसी अख़बार की बिक्री न होती होगी। लंदन में भी इसका एक संस्करण प्रकाशित होता है। इस समाचार-पत्र के दिये ख़र्च से महात्मा लिविंगस्टन की खोज के लिए स्टान्ले भेजे गये थे। ऐसे ऐसे महान् कार्यों की सहायता करना एक विशेप विज्ञापन समझना चाहिए। सन् १७८३ की २८ नवम्बर को ब्रिटिश सेना ने यहाँ से विदा होकर स्वदेश की यात्रा की थी और सन् १७८९ की ३० अप्रैल को वाशिङ्गटन इस नगर में राज्य के प्रेसीडेण्ट चुने गये थे। इस नगर के समान धनी शहर पृथ्वी पर दूसरा नहीं है। पहले ज़मींदारों की यहाँ प्रधानता थी, किन्तु इस समय नगर के मुखिया सौदागर लोग हैं। विद्या-बुद्धि या और कोई गुण यहाँ नहीं पूछा जाता। यहाँ की सब तरह की मान-मर्यादा रुपया है। इस नगर के चालीस आदमी २ लाख से लेकर ३० लाख डालर की अस्थावर सम्पत्ति पर टेक्स देते हैं। स्थावर सम्पत्ति का तो शुमार करना ही कठिन है। वान्डर बिल्ट महल (Vanderbilt-Palace) बनने में ५० लाख डालर के लगभग रक़म ख़र्च हुई है। अब ख़याल कीजिए कि इस आदमी की सम्पत्ति कितनी होगी! वर्त्तमान समय में प्रधान धनी किरोसिन तेलवालें राकफ़ेलर John D. Rockafeller, the Standard Oil King) हैं। इनकी सम्पत्ति कितनी है, यह निश्चय करके बतलाना कठिन है। इनकी सालाना आमदनी दो करोड़ डालर है। इनके पास इतनी सम्पत्ति होने पर भी लोग इनकी बड़ी निन्दा किया करते हैं। समाचार-पत्रों में वह छप भी जाती है। धन के बल से बहुत से मध्यवित्त सौदागरों से लागडॉट करके इन्होंने उनको फ़क़ीर सा बना दिया है। स्वार्थसाधन के लिए अनेक

असत् उपायों का सहारा लेने में भी ये कुछ संकोच नहीं करते। "एटिना" नामक मासिक पत्रिका में इनके विरुद्ध अनेक बातें प्रकाशित हुई हैं। जैसे—

Mr John D Rockefeller is supposed to be the richest man in the world. His enormous wealth is alike his power and his curse It represents on the one hand the coercive force, the honeyed bribe, the stifling gag, on the other it marks blasted hopes, betrayed trusts, individual ruin, national degradation, and, withal a shrivelled soul The mental organisation of the "Great Oil King" is superlatively selfish, bold, keen, selfish calculation, almost brutal in its indifference to moral law or human weal or woe, planned the attack and aimed the fatal below No consideration save that alone of ultimate safety before the law, no scruple between him and the desired end, to attain which he hallowed any means There are worse men than Rockefeller, but there is probably not one, however, who typifies the grave and startling menace to the social order Men of conscience and noble purpose are beginning to all that to temporise and condone the principles and methods that he stands for is to invite the living death—Arena—Aust, 1905

पृथ्वी के प्रधान धनी आदमी के विरुद्ध ऐसा निन्दित अपवाद प्रकाशित होना निस्सन्देह बड़े ही दुःख की बात है। इनका शरीर, वृद्धावस्था में, अजीर्ण रोग में बहुत ही ख़राब होगया है। अगर कोई इनका यह रोग अच्छा कर सके तो यह उसे तीस चालीस लाख डालर तक देने के लिए तैयार हैं। किन्तु बड़े बड़े वैज्ञानिक डाक्टर कहते हैं कि अत्यन्त लोभ और धनोपार्जन की चेष्टा से ही इनका स्वास्थ्य ख़राब होगया है। यह पहले लड़कपन में १५ रुपया मासिक वेतन पर किसी आफ़िस में मामूली नौकर का काम करते थे; किन्तु आज धनकुबेर हो रहे हैं। यह बात इनकी असाधारण बुद्धि और उद्योग

का परिचय देती है; इसमें कोई सन्देह नहीं । अब यह गिर्जों वग़ैरह में खूब दान करते हैं और प्रकाश्यरूप से कहते हैं कि धनोपार्जन की अपेक्षा धन देने में मुझे अधिक सुख मिलता है ।

न्यूयार्क का अद्भुत चीज़ है वहाँ की आत्महत्या-सभा (Suicide Club) । ऐसी सभायें पृथ्वी पर कभी कहीं स्थापित नहीं हुईं । यह ख़ास अमेरिकन आविष्कार है । इस सभा के सभ्य लोग आत्महत्या में परस्पर एक दूसरे की सहायता करते हैं । अनेक चेष्टायें करके पुलिस उनके इस काम को बन्द नहीं कर सकी । दारुण जीवन-संग्राम में निराशा होना ही इसका एक ख़ास कारण जान पड़ता है । सभा के सभ्यों का यह भ्रातृभाव वास्तव में बड़ा ही विचित्र है ।

नायेगारा * ।—

"Hail! Sovereign of the World of Floods! whose majesty and might
"First dazzles, then enraptures, then o'erawes the aching sight:
"The pomp of Kings and Emperors, in every clime and zone,
"Grows dim beneath the splendour of thy glorious watery throne"

J S Buckingham

---

* "Nature has many water-falls and cataracts, but only one Niagara The power and majesty of the Almighty is here more grandly exhibited and realized than in any other scene on earth. The Falls cannot be described, there is too much sublimity, majesty and overwhelming grandeur for mortal to comprehend or explain"—*T Tugby*

न्यूयार्क से इस जगत्प्रसिद्ध स्थान मे आया। सभी कहते हैं— "Niagara never disappointed any traveller" वास्तव मे यह बात सच है कि कल्पना करके इसके बारे मे चाहे जितना सोच लीजिए, पर यहाँ आकर उससे कहीं अधिक देखिएगा। कोई स्थान देखने के पहले सभी आदमी मन ही मन उसका चित्र कल्पित कर लेते हैं। परन्तु अक्सर ऐसा होता है कि वहाँ जाने पर आशा के अनुरूप दृश्य नहीं देख पड़ता। किन्तु यहाँ ठीक उसका उलटा है। नायेगारा-जलप्रपात अमेरिका का गौरव और विधाता की शक्ति और गाम्भीर्य के प्राकृतिक विकास का प्रधान दृश्य है। हर साल लाखों आदमी दूर दूर के देशों से आकर इस महातीर्थ में सर्वशक्तिमान् की अनन्त शक्ति की पूजा करते हुए नायंगारा की प्रशंसा कर जाते हैं। गाइड के साथ गाड़ी पर १४ मील घूम कर सब देखने मे दिन भर लग गया। यहाँ के आदिम निवासी रेड-इंडियनों के 'ओनायाकारा' शब्द से नायंगारा शब्द की उत्पत्ति हुई है। इसका अर्थ है—भयानक शक्तिशाली जल-वज्र। ३३ मील लंबी और आधे मील से लेकर तीन मील चौड़ी नायेगारा नदी समुद्र से ५७३ फ़ुट ऊँची एराइ[1] (Erie) झील से निकल कर उसकी अपेक्षा ३२८ फ़ुट नीचे स्थित अन्टेरियो (Ontario) झील में गिरती है। जहाँ जल-प्रपात है वहाँ पर नदी का घेर ४,७५० फ़ुट है। वहीं पर जल के ऊपर ४० फ़ुट

[1] इसका जल १६,००० वर्ग-मील मे है और गहराई ६० फ़ुट। इसमें तीन बड़ी बड़ी झीलों का पानी आकर गिरता है। सुपीरियर (Superior) यह ३५,००० वर्ग-मील के घेरे में ६०० फ़ुट गहरी झील है। मिचिगान (Michigan), यह २२,४०० वर्ग-मील के घेरे मे १,२५० फ़ुट गहरी झील है। ह्यूरन (Huron), यह २,३०० वर्ग-मील के घेरे मे १०,००० फ़ुट गहरी झील है। यह सब जल-राशि नायेगारा में गिरती है।

ऊंचा और १,००० फुट चौड़ा छाग-द्वीप (Goat Island) है। उस पर १८२ बीघे घना जंगल भी है । यहाँ पर यह नदी बीच से फट गई है और दो धारायें हो गई हैं। यह द्वीप अमेरिकन तट से १४०० फुट और कनाडा (Canada) के तट से २,८०० फुट के अन्तर पर है। कनाडा के बड़े अथवा अश्वनाल* प्रपात (Horse-Shoe) की उँचाई १५० फुट और चौड़ाई १,८०० फुट तथा घेर चौथाई मील का है। अमेरिकन प्रपात १६४ फुट ऊँचा और ६०० फुट चौड़ा है। जिस गढ़े में पानी गिरता है उसका घेरा १,००० फुट है। गिर रहे पानी की चादर २० फुट मोटी और परिमाण हर मिनट में एक करोड़ अस्सी लाख (अमेरिकन लोगों के हिसाब से दो प्रपात में साढ़े अठारह करोड़ घन-फुट होता है। घन-फुट था साढ़े चार करोड़ मन के लगभग है। नायेगारा की प्रधान दर्शनीय चीज़ हैं, छाग द्वीप के पुल से प्रपात के पीछे के रापिड, उछलने के पहले बड़ाही भयानक वेग होता है! नीचे ताकने से जान पड़ता है कि अभी बहा ले जायगा। इस वेग की गति घंटे में ३० मील के हिसाब से है। बीच मे तीन बीघे का स्नान-द्वीप (Bath-Island) है। इस द्वीप मे एक बड़ी भारी कागज़ की 'मिल' है; जिसमें प्रवाह की शक्ति से सब काम लिया जाता है। इसके बाद छोटा सा लुना-द्वीप (Luna Island) है। इसके ऊपर खड़े होने से जान पड़ता है कि यह जैसे सचमुच काँप रहा है। यहाँ से थोड़ी दूर पर १३२ सीढ़ियों से ८० फुट नीचे उतर कर बरसाती-कोट (Waterproof)

---

*सन् १८२९ में यहाँ से एक निकम्मा जहाज़ "Detroit" कई एक जीते हुए पशुओं (भैंसे, हरिण, भालू और अन्यान्य कई छोटे जीव) समेत छोड़ दिया गया था। कहना न होगा कि यह नीचे पड़ कर रापिड में चूर चूर हो गया था।

पहन कर पवन-गुहा (Cave of the Winds) में जाना होता है। यह गुफा १०० फुट ऊँची और १०० फुट की है । इसका व्यास ६० फ़ुट है। सामने स्वच्छ चादर सा जलप्रपात है । प्रपात से और इस गुफा से ४० फ़ुट का फ़ासला है। गुफा के भीतर हमेशा जैसे आँधी चला करती है। जल और हवा के शब्द के मारे कुछ भी नहीं सुन पड़ता। जल के फुहारों (Spray) में सुन्दर इन्द्रधनुष की शोभा देखने को मिलती है। यहाँ छोटे छोटे तीन द्वीप और उनके पुल हैं। नदी के किनारे किनारे प्रास्पेक्ट्-पार्क (Prospect Park) की राह है। यह पार्क ३० बीघे का है। यह लोहे के कटहरे से घिरा हुआ ऊँचा स्थान है। नीचे ही भयानक प्रवाह है। अनेक लोग यहाँ से गिर कर आत्महत्या कर चुके हैं। प्रवाह की शक्ति से चलनेवाली रेलगाड़ी से उतर कर नाव पर उस पार जाने आने में यद्यपि अभी तक कोई दुर्घटना नहीं हुई, तथापि बहुत ही डर मालूम पड़ता है। चक्करदार रापिड (Whirlpool Rapids) और जल के चक्कर एक जगह हैं। यहीं पर प्रसिद्ध तैराक वेब (Captain Webb) साहब, सन् १८८३ की २४ वीं जूलाई को, असीम साहस दिखाने में डूब कर मर गये थे। यहाँ पर एक बार एक छोटा सा स्टीमर (Maid of the Mist) चलाया गया था। इस समय और एक नया स्टीमर रक्खा गया है। यात्री लोग चाहें तो किराया देकर उस पर से जल-विहार का मज़ा ले सकते हैं। उक्त परीक्षाओं के अलावा प्रसिद्ध बाज़ीगर ब्लाण्डिन (Blondin) साहब और एक स्पेन की लेडी (Maria Spelterina) ऊँचे पर बँधी हुई रस्सी के ऊपर चल कर नदी-पार गये थे। एक व्यक्ति (Sam Patch) पवन-गुहा के ऊपर से दो बार फाँदे थे। दूसरी बार उनकी मृत्यु हो गई। सन् १८७६ की २१ वीं मई को एक आदमी

(Peer) नवीन सस्पेन्शन-बृज या झूलने-पुल से १६० फुट नीचे नदी में फाँदे थे। विशेष सौभाग्यवश वह मरे नहीं। अनेक लोगों ने इस स्थान पर से भी फाँद कर आत्महत्या की है। समय-प्रवाह के फेर से नायेगारा की शकल बहुत कुछ बदल गई है। यहाँ तक कि पचास साल पहले के टेबिल-रक आदि कई दृश्य बिलकुल ही ग़ायब होगये हैं। यह बतलाना बहुत कठिन है कि कितने युग-युगान्तर से नायेगारा इसी तरह बह रहा है। भूतत्त्ववेत्ता लोगों के मत से हैमयुग के पहले से यह प्रपात मौजूद है। मि० टग्बी लिखते हैं कि इसे केवल वर्त्तमान अवस्था में पहुँचते पहुँचते कम से कम ३५,००० वर्ष लगे हैं। यथा—"It is roughly calculated that the Falls must have taken at least 35,000 years to cut their way from the escarpment of Queenston to their present position."— *T. Tugby*. प्रपात के पास ही एक म्यूज़ियम है। जगह जगह पर विचित्र वस्तुओं की दूकानें हैं। किन्तु वे चीज़ें बड़ी महँगी हैं। नायेगारा शहर और प्रपात के पास की दूकाने स्त्रियों ने रक्खी हैं। विदेशी भद्रपुरुषों को ठगने के लिए वे ख़ूब चेष्टा करती हैं। दृश्यावली के दो स्थानों में फोटोग्राफी की दूकानों में दृश्य-सहित अपनी दो तसवीरें उतरवाईं। प्रपात में एक तरह का सफ़ेद पत्थर (Spar) और पत्थर बन गया काठ (Petrified wood) मिलता है। उस लकड़ी और पत्थर की बनी कई चीज़ें भी ख़रीदीं। नायेगारा के सम्बन्ध में एक रमणी की कविता और एक पर्यटक का मत नीचे उद्धृत किया जाता है।

"Thou dost speak
"Alone of God, who poured thee as a drop
"From His right hand—bidding the soul that looks
"Upon thy fearful majesty be still,

"Be humbly wrapped in its own nothingness,
"And lose itself in Him"—*Mrs Sigourney*

"It is a scene which poets and authors have tried for years but always failed to tell Niagara is still, and must always be, unpainted and unsung It has flowed for thousands of years as it thunders now, yet in its mighty rush fresh beauties may be seen every or the melting of Canadian snows"

प्रपात के निकटवर्त्ती दो बस्तियों मे ८,००० आदमी बसते हैं। स्थानीय ६ बड़े बड़े होटल गर्मियों मे खूब चलते हैं। जाड़ों मे दो के सिवा और बन्द से रहते हैं। मैं जिस होटल मे था उसके मैनेजर ने कहा कि गर्मियों में पंजाब से एक मुसलमान सौदागर यहां आता और शाल-रूमाल बेचकर बहुतसा रुपया कमा ले जाता है। शौक की चीज़ों की दूकानों को भी उसी समय अच्छा फ़ायदा हो जाता है। निकटस्थ आदिमनिवासियों के गाँव, उनका विचित्र वेष और झोपड़े (Wigwam) देखकर उनके हाथ की बनी दो एक चीज़ें ख़रीदीं। असभ्य-जीवन सब जगह एक सा है। बदन की स्त्रियाँ (Squaw) बच्चों (Pappoese) को पीठ मे (छोटा नागपूर-प्रदेश की कोल जाति की तरह) बाँध कर घूमती हैं। पुरुषों मे बहुत से कोट पतलून पहनने लगे हैं। इस जाति के स्त्री-पुरुषों का रूप विकट होता है। इनका चेहरा मंगोलियन-जाति का बिगड़ा हुआ चेहरा मालूम पड़ता है। नदी के दूसरे किनारे पर बसा हुआ क्लिफ्टन (Clifton) गाँव खूब साफ़-सुथरा है। वहाँ के पार्क मे विक्टोरिया की एक सुन्दर मूर्त्ति स्थापित है। एक भद्रपुरुष के साथ भारतवर्ष और अमेरिका के सम्बन्ध में बहुत कुछ बातचीत हुई। यहाँ खेती की नई मेशीनें देखीं। इस पार उस पार नाम-मात्र के लिए दो क़िले बने हैं।

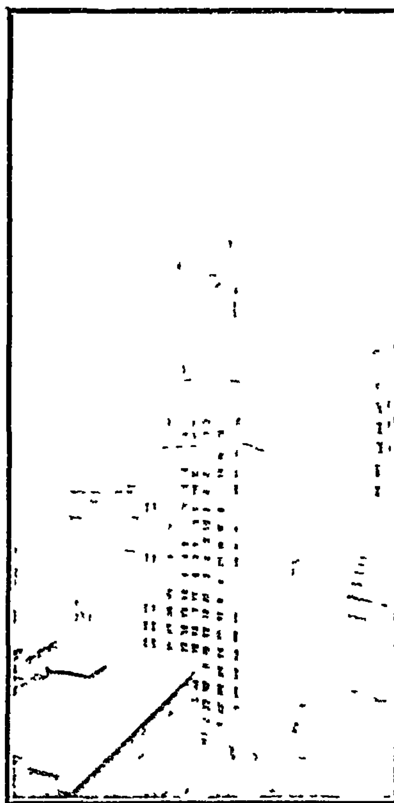
रेल के रास्ते में। नायेगारा से रेल पर चढ़कर शिकागो

(Chicago) गया। गाड़ी स्टेशन से चल कर प्रपात के पास दस मिनट खड़ी रही। यात्रियों में से बहुत से उतर कर देखने गये। हर एक ट्रेन यहाँ पर इसी तरह ठहरती है। नदी पार होकर कनाडा-राज्य के भीतर होकर कई घंटे तक रेल चली। इसी समय एक कनाडा के भद्रपुरुष के साथ बातचीत हुई। एक साम्राज्य की प्रजा होने के कारण उन्होंने कुछ सहानुभूति प्रकट की। कनाडा की सीमा पर आधे मील से कुछ कम घेरे की डिट्रांया या डिट्रयेट नदी पार होना पड़ा। एकाएक एक यात्री ने कहा—"हम लोग नाव के ऊपर हैं!" गाड़ी से उतर कर देखा, सचमुच ट्रेन समेत हम लोग स्टीमर पर नदी पार हो रहे हैं। कब ट्रेन स्टीमर पर सवार हुई, इसकी खबर मुझे नहीं हुई। एक जर्मन चीत्कार करके बारम्बार अपना विस्मय प्रकट करने लगा। दूसरे किनारे पर पहुँच कर ट्रेन जब फिर पटरी पर चढ़ाई गई उस समय सब मैंने अच्छी तरह देख लिया। पार जाकर, अगर स्टीमर की अपेक्षा ऊँचा जल हुआ तो अधिक पानी निकाल लिया जाता है और अगर नीचा हुआ तो आवश्यकता भर पानी भर कर, पानी बराबर कर लिया जाता है।

शिकागो। रात के दस बजे रेल से उतर कर होटल में गया। सबेरे होटल के जूते पर ब्रुश करनेवाला दरवाज़े आकर पुकारने लगा। पूछने से उसने जूते पर ब्रुश कराई १० सेन्ट (५ पेनी) माँगे। भारत में एक पैसे में और लन्दन में एक पेनी में, न्यूयार्क में तीन पेनी में और यहाँ पाँच पेनी में जूते पर ब्रुश होता है। पाठकगण, देखिए तो, भारत और अमेरिका में कितना अन्तर है! यूरोप के किसी भी होटल में होटल के जूते पर ब्रुश करनेवाले को कुछ भी नहीं देना पड़ता। किन्तु अमेरिका की सभी बात निराली है। सबेरे का भोजन कर चुकने के बाद मुलाटो (Mulatto) परोसनेवाले ने मुझे मेक्सिको

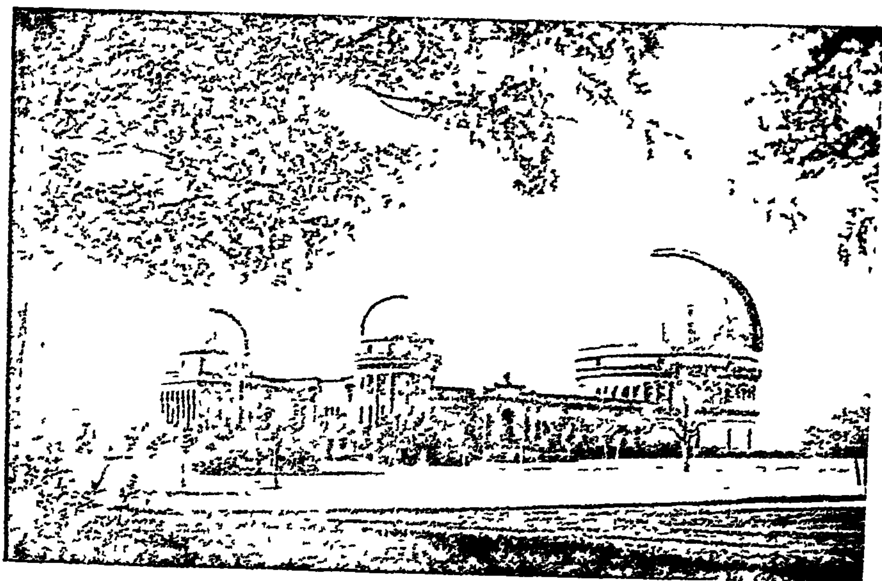


शिकागो—पृ० ७२३



ऊँचा गिर्जा—पृ० ७२५

आडिटोरियाम भवन—पृ० ७२५



मान-मन्दिर—पृ० ७२६

निवासी समझ कर वर्ण-भेद के सम्बन्ध में उस देश की बात पूछी और इस सम्बन्ध में अमेरिका में भी अत्याचार होता है, यह कह-कर दुःख प्रकट किया। उसने कहा—"हमारे यहाँ रङ्ग का भेद बड़ा ज़बर्दस्त है। मेरे पिता स्काचमैन और माता निग्रो थीं। सम्पूर्ण काले या आधे काले लोग हज़ार विद्वान् या बुद्धिमान् हों तो भी वे किसी बात में गोरों के बराबर उन्नति करने नहीं पाते। हम लोग यहाँ बड़े कष्ट से रहते हैं। इत्यादि।" शिकागो नगर २०,००० वर्ग-मील के घेरेवाली मिसिगान झील के किनारे बसा है। यह नगर ६ मील लंबा और ५ मील चौड़ा है। यहाँ की सब सड़कें शतरञ्ज के ख़ानों के समान सीधी हैं। शहर के भीतर शिकागो नदी (आदिम-निवासी इसे शाकाकोया, अर्थात् वज्र, कहते थे) और उसकी दो शाखायें बहती हैं। इनके ऊपर ३५ पुल बने हैं। यहाँ की जन-संख्या ८ लाख के लगभग है। इतनी जल्दी जल्दी पृथ्वी के किसी और शहर की उन्नति शायद न हुई होगी। सन् १८७१ में एक मामूली कारण से आग लग गई। उसमे २५० आदमी और २० करोड़ डालर की सम्पत्ति नष्ट होगई। इस प्रकार नगर का ध्वंस होने पर यहाँ के निवासियों ने बहुत थोड़े समय में नया नगर बनवा लिया। एक अँगरेज़ दर्शक का कहना है कि "शिकागो नगर के निवासी उसे पृथ्वी का श्रेष्ठ नगर बनाने की चेष्टा में व्यस्त हैं। प्रत्येक नगरनिवासी का यही उद्देश्य है कि, जहाँ तक हो सके, शीघ्र धनसञ्चय करो।" यथा—

"The collective purpose of Chicago is to become the biggest city on the earth. The individual purpose of every citizen of Chicago is to make the greatest possible number of dollars in the shortest possible space of time"—*Sir H T. Wood.*

यहाँ शूकर-मांस के बेकन (Bacon) बनाने के बड़े बड़े कारख़ाने हैं। वहाँ बड़ी फुर्ती से काम होता है। मालिकों को इस रोज़गार से बड़ा मुनाफ़ा है। इसके सिवा और भी अनेक प्रकार की चीज़ों के कारख़ाने नगर को समृद्धिशाली बनाते हैं। पृथ्वी के अनेक स्थानों में घूमकर भी कहीं ऐसा एक अभिनव अनुभव नहीं प्राप्त हुआ। रात को यहाँ पहुँचा था। सवेरे और दिन भर देखा, नगर का हर एक स्थान अन्धकार से आच्छन्न सा जान पड़ा। नित्य यही हाल रहा। मैं इसका कारण कुछ भी नहीं समझ सका। पीछे एनीबेसेन्ट की एक पुस्तक पढ़ने से जाना कि यहाँ नित्य जितनी जीव-हत्या होती है, उतनी और कहीं नहीं। इस कारण इस नगर के चारों ओर एक मील तक आकाश अन्धकार-पूर्ण रहता है। साधारण भाव से इस गूढ़ सत्य को समझना कठिन है; किन्तु जो लोग भूर्लोक और भुवर्लोक के घनिष्ट सम्बन्ध को जानते हैं वे अनायास ही इस तथ्य को समझ लेंगे। मारे गये पशुओं के भय-विद्वेष-क्रोध से इस अन्धकार का सम्बन्ध है। शिकागो शहर राज्य के केन्द्र में जिस झील के किनारे है उस झील में दो भारी झीलें और मिली हैं। उन झीलों के दूसरे तट पर कनाडा का अधिकार है। इन सब कारणों से रोज़गार के लिए शिकागो नगर एक विशेष सुभीते का स्थान है। बहुत लोगों के मत से ऐसी प्राकृतिक सुविधा अन्य किसी नगर को नसीब नहीं है। झील के किनारे समतल हैं। चारों ओर सैकड़ों मील के समतल मैदान के सिवा और कुछ नहीं देख पड़ता। अतएव प्राकृतिक सौन्दर्य का तो वहाँ लेश भी नहीं है। किन्तु वहाँ के निवासी जिसे ज्ञान से बढ़कर चाहते हैं उस धन के कमाने के लिए वहाँ की सब सामग्री उपयुक्त है। नगर के मध्य-स्थ आधे वर्ग-मील स्थान में बहुत

से लोग जीविका प्राप्त करते हैं। इतने स्थान में इतने लोगों की जीविका और कहीं नहीं चलती। इस बारे मे शिकागो का अव्वल नम्बर है। अहंकार और तड़क-भड़क इस देश का—ख़ास कर शिकागो का—धर्म हो रहा है। जहाँ पर जो कुछ देखा वहाँ उसके संबन्ध मे अमेरिकनों के मुँह से यही सुनने में आया कि उमसे बड़ा या उत्तम स्थान अथवा वस्तु पृथ्वी भर पर और कहीं नहीं है। प्रदर्शिनी की तैयारी देखता हुआ अन्यान्य स्थानों मे गया। दस, वारह, चौदह खण्ड के मकान यहाँ बहुत से बने हुए हैं। अब सुनने मे आता है कि १६-२० खण्ड तक के मकान बन गये हैं। आडिटोरियम भवन (Auditorium)। बाहर से भवन बड़ा भारी देख पड़ता है, किन्तु भीतर जाकर देखा तो थियेटर उसके उपयुक्त नहीं जान पड़ा। अन्त को पूछने से जान पड़ा कि ऊपर सब नन्द है। यहाँ मब कल का कारख़ाना है। जितने दर्शक जमा होते हैं उतनी छत खोलकर बैठने की जगह कर दी जाती है। इस मकान का साज-सामान भी विचित्र और क़ीमती है। थियेटर के एक शिला-खण्ड (Tablet) पर निम्नलिखित अवतरण खुदा हुआ है—

"I wish that this great building may continue to be to all your population that which it should be. Opening its doors night to night, calling your people away from cares of business to those enjoyments and entertainments which develop the souls of men and inspire those whose lives are heavy with daily toil and in this magnificent and enchanted presence life then for a time out of dull things into those higher things where men should live" Benjamin Harrison, President of the U. S. at the dedication of the Auditorium December 9, 1889. इसी भवन के एक ओर

मानमन्दिर है । शिकागो में अनेक पार्क हैं । इतने पार्क बहुत ही थोड़े नगरों में होंगे । सबसे बड़ा पार्क १,८०० बीघे का, डेढ़ मील लम्बा, झील के किनारे पर है । इसके अलावा तीन से लेकर हज़ार बीघे तक के छोटे-बड़े चौदह विहार-स्थान भी इस नगर में हैं । नगर के अधिकांश लोग बिजली की ट्रामगाड़ियों (Cable) पर चलते हैं । अब तो शायद एक भी घोड़ा सवारी के काम में न लाया जाता होगा । शिक्षा के संबन्ध मे, अमेरिका भर मे, शिकागो का अव्वल नम्बर है । यहाँ एक भी निरक्षर आदमी नहीं है, यह कहना भी कुछ अत्युक्ति न होगा । विश्वविद्यालय के मानमन्दिर में एक २३ फ़ुट लम्बी Forcal length दूरबीन है । नागरिक गिर्जे २५० के लगभग हैं । उन सबकी सम्पत्ति डेढ़ करोड़ डालर के लगभग होगी । यहाँ ७ मेडिकल कालेज, १० अस्पताल, १०० से ऊपर अनेक प्रकार के आश्रम और दातव्य-सभायें, १६ थियेटर, २४ बड़े और छोटे होटल, ७ लाइब्रेरियाँ और १ उच्च श्रेणी की लाइब्रेरी है । व्यभिचारिणी स्त्रियाँ, त्यागे हुए बच्चे, आत्मीय-स्वजन-विहीन, बुड्ढे, अपाहिज, बेकाम होगये सैनिक, बे-मा-बाप के लड़की-लड़के आदि बहुत से निराश्रय विपन्न व्यक्तियों की सहायता के लिए अलग अलग आश्रम भी यहाँ बने हुए हैं । १०० के लगभग दान-समितियाँ और अन्यान्य प्रकार के फ़ायदे पहुँचानेवाली सभायें स्थापित हैं । ५०० से अधिक फ़्रीमिशन और अन्य श्रेणी के गुप्त सम्प्रदायों की समितियाँ हैं । शिकागो से १०० के लगभग दैनिक और साप्ताहिक समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं । नगर के एक आमोद-भवन में मिली क्रिस्टाइन नाम की दो जुड़वा निग्रो-महिलायें दिखलाई जाती हैं । उनके सिर और धड़ अलग अलग हैं । चार हाथ और चार पैर हैं । नितम्ब और कमर एक है । उसके

ऊपर से दोनों के शरीर अलग अलग हैं। यूनाइटेडस्टेट के किसी प्रदेश में, सन् १८५१ मे, इनका जन्म हुआ था। मस्तक दो होने के कारण दोनों अलग अलग सोचती और बोल सकती हैं। वे चलती किस तरह हैं, यह मैंने नहीं देखा। क्योंकि जब तक हम बैठे रहे, वे बैठे बैठे बातचीत करती और गाना गाती रहीं। संगीत-विद्या मे पारदर्शिता और मधुर स्वर होने के कारण एक को "Two-headed Nightingale" पदवी मिली है। इँगलेण्ड और अमेरिका के प्रसिद्ध डाक्टरों ने परीक्षा करके कहा है कि—

"Christine Milhe is a phenomenon of the Siamese twin order, but far more wonderful, for instead of two bodies connected with a ligature there is only one torso, the body separating a little above the waist. There are two distinct busts and pairs of shoulders, two heads, four arms, four legs Anatomical examination has proved that the lady has two sets of lungs and two digestions It is certain there are mentally two perfect individualities, for conversation may be carried on with each of the two persons mysteriously blended into one, and each having a very pretty gift of singing, they perform duets in parts They also dance very gracefully, and appears to have no difficulty in moving about, and in no way differs in appearance from two animated ladies, who for short have agreed to pass an hour tied together nearly back to back" कितने ही स्थानों में कितनी ही ऐसी ऐसी विधाता की आश्चर्य-लीलायें होंगी। इँगलेण्ड के ब्रिस्टल नगर मे दो जुड़वा भाई देखने में आये थे। उनका आकार-प्रकार, गठन, शरीर का वज़न, हँसी, रोना, बातचीत, वृत्तियां, धर्म-

मत, रोज़गार आदि तो ठीक तुला हुआ एक सा था ही, उसके अलावा उनकी स्त्री और सन्तान (एक के छः लड़कियाँ और छः लड़के थे; दूसरे के भी इतने ही बच्चे थे) भी बहुत कुछ मिलती जुलती थीं। शिकागो में और एक विचित्र बात देखी। लिबीप्रिजन (Libby Prison) नामक जेलखाने की समूची इमारत (इसमें प्रसिद्ध घरेलू युद्ध या (Civil War) के समय क्रमशः ४०,००० क़ैदी रक्खे गये थे) रिचमण्ड (Richmond Va) से शिकागो लाई गई है। रिचमण्ड से शिकागो ६०० मील के लगभग है। यह इमारत १३२ फुट लम्बी और ११० फुट चौड़ी चार खण्ड की है। इस समय यहाँ एक म्यूज़ियम स्थापित है। उसमें इतनी देखने की चीज़ें हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। केवल कुछ चीज़ों के नाम यहाँ लिखे जाते हैं। सोलहवीं शताब्दी की एक घड़ी, उसी समय की युद्ध-सज्जा और अस्त्र-शस्त्र आदि, पेरू देश के इनकास (Incas) मनुष्यों की कई खोपड़ियाँ, सभापति गारफ़ील्ड लिङ्कन आदि महात्मा लोगों के अन्तिम समय की इस्तेमाली चीज़ें, प्रेसीडेन्ट का (ग़रीबी की हालत का) हल और आदिम अमेरिकानिवासियों के बनाये लौहविहीन छकड़े। चित्रों में दो चित्र मुझे बहुत पसन्द आये। एक तो ओलन्दाज़ चित्रकार मोरो (Sir Antonio Moro) के हाथ का बनाया हुआ कोलम्बस का (जीवित अवस्था) चित्र और दूसरा क्रीतदास निग्रो का चित्र; जिसमें उसकी ज़ंजीरें कट गई हैं और वह ग़ुलामी से छूट गया है। यहाँ असंख्य हस्तलिपियाँ हैं। उनमें स्वाधीनता के घोषणा-पत्र के दस्तख़तों की हू बहू नक़ल (Facsimile) भी रक्खी है।

अन्तिम रेल-यात्रा। यद्यपि जापान में जाकर फिर एक बार रेल पर चढ़ना पड़ा। किन्तु घर की ओर जाने के मार्ग में यही अन्तिम

रेल की सवारी थी। इसके पहले भी महल-गाड़ी (Palace or Pulman Car) मे यात्रा की थी, किन्तु इस बार शिकागो से सान-फ्रानसिस्को (San Francisco) तक बराबर ६४ घंटे रेल पर ही बिताने पड़े। अमेरिका की रेलगाड़ी मे एञ्जिन से गार्ड की गाड़ी तक जा सकने की व्यवस्था है। पुलमैन या पैलेस-गाड़ियाँ सर्वोत्कृष्ट श्रेणी की गाड़िया होती हैं। हर एक ट्रेन मे चार पाँच पैलेस-गाड़ियाँ होती हैं। इसका सब सामान बादशाही समझना चाहिए। दिन को हर एक दो आदमियों के लिए एक टेबिल और उसके दोनों ओर दो गद्दीदार कुर्सियाँ रक्खी रहती हैं। रात को मैशीन के द्वारा इस जगह पर दो पलँग बन जाते हैं। उनमे ऊपर से नीचे तक पर्दा पड़ा रहता है। मज़े में कपड़े उतार कर सोइए। तकिया-बिछौना-चादर सब आला दर्जे का होता है और नित्य बदल डाला जाता है। इसके सिवा बहुत ही सजा हुआ ड्राइंगरूम, चुरट पीने का कमरा (Smoking Saloon), पाखाना, नाई की दूकान, नहाने का प्रबन्ध, भोजन की गाड़ी आदि का ऐसा अच्छा प्रबन्ध है कि गाड़ी चलते रहने मे भी आप किसी बात के लिए अटके नहीं रह सकते। इन सब स्थानों मे हर एक बैठक के नीचे एक पीकदानी रक्खी रहती है। अमेरिकन लोग भी तमाखू खाते और खूब थूकते हैं। बैठक के आस पास बिजली की घंटी (Electric-bell-button) रहती है। घंटी बजाकर हर जगह आप कर्मचारियों को बुला सकते हैं। सब जगह छोटे छोटे आईने भी रक्खे रहते हैं। बीच बीच मे स्टेशन पर बर्फ़ के बक्स में बर्फ़ भर दी जाती है। बक्स के ऊपर गिलास रक्खा रहता है। जब चाहो कल घुमा कर बर्फ़ का पानी पी लो। स्त्री-पुरुष और एक बालक मिलाकर हम दस यात्री एक गाड़ी में थे। यात्रा भर हम लोग एक परिवार के ऐसे आदमी जान

पड़ते थे। दिन में तीन वार भोजन के लिए वुलाये जाते थे, और होटल अथवा भोजन की गाड़ी (Dining Car) से भोजन कर आते थे। एक दूसरे का न्यौता भी करता था। तरह तरह की वातें और आलोचनायें भी होती थी। रविवार के दिन यथाविधि उपासना भी हुई थी। ज़रूरत की सब चीज़ें तो गाड़ी में ही मैाजूद थीं; उनके अलावा फल, फूल, चित्र, पुस्तक, टोपी, रूमाल, स्थानीय अखवार आदि भी गाड़ियों में विकते थे। ऐसी चीज़ों के वेचनेवाले ५० मील के वाद वदल जाते हैं। एक दिन दोपहर को चुरट पीने के कमरे में मैं अकेला वैठा हुआ था। इसी समय एक अमेरिकन "फ़ार्मर" (Farmer) अन्य गाड़ी से वहाँ आकर उपस्थित हुए और सहसा झोली भर अपना परिचय (मेरे इतने वीघे ज़मीन है, इतने वैल हैं, इतनी भेड़ें हैं, इतने आदमी नौकर हैं, इतने का रोज़गार होता है, इत्यादि,) देकर मुझसे मेरे वारे में पूछने लगे। मैंने संक्षेप मे टालने के लिए कह दिया कि मैं एक वेकार साधारण मुसाफ़िर हूँ। इसके वाद उन्होंने कहा— "I see you speak American very well. I am told, people in England speak American.") अर्थात् आप तो अमेरिकन भाषा में खूब अच्छी तरह वातचीत करते हैं। मैंने सुना है कि इँग्लेण्ड के लोग अमेरिकन भाषा वोलते हैं। इसके उत्तर मे मैंने कहा—"इँग्लंण्ड के लोग अमेरिकन भाषा नहीं वोलते, अमेरिकन लोग ही अँगरेज़ी वोलते हैं।" इस पर उन्होंने कहा—"क्या जानें, मैं अपने देश के वाहर की उतनी खवर नहीं रखता।" इस मार्ग के अनेक स्टेशनों पर अमेरिका के आदिमनिवासी स्त्री-पुरुष और लाइन के किनारे किनारे जगह जगह पर उनके झोपड़े देख पड़े। मिसोरी (Missouri) नदी पार होकर कुछ देर वाद लाइन के किनारे एक जगह पर देखा, एक

भारी बोर्ड (Board) पर बड़े बड़े अक्षरों में "Divide of the Continent" (अर्थात् महादेश का मध्य स्थान) लिखा हुआ था। राकी पहाड़ (Rocky Mountain) के बाद जगह जगह पर बहुत दूर तक लकड़ी के बने घेरों (Snow-shed) के भीतर से रेल चलती थी। सर्दियों में यहाँ पर बर्फ़ से रेल का रास्ता रुक जाता है, इसलिए यह व्यवस्था की गई है। एक बार इसी तरह बर्फ़ से राह रुक जाने के कारण एक ट्रेन को कई दिन तक जङ्गल में ठहरना पड़ा था। उस अवस्था में यात्रियों को भोजन आदि का बड़ा कष्ट हुआ था। एक जगह देखा कि एक नदी (Humboldt) भू-गर्भ में प्रवेश करके ग़ायब हो गई है। फिर वह कहाँ जाकर निकली है, इसका पता आज तक अनेक अनुसन्धान करने पर भी नहीं लगा। वैसी दस बीस नदियों को रखने के लिए माता पृथ्वी के उदर में यथेष्ट स्थान है। अमेरिका की बहुत सी धरती मरुभूमि (Prairie) की तरह ऊसर पड़ी हुई है। उसका बहुत सा हिस्सा वास्तव में रहने लायक़ नहीं है। क्रमशः इसी प्रकार के घास-फूस और वृक्ष से शून्य ऊसर के भीतर होकर चलते चलते जब केलीफ़ोर्निया (California) में रेल आई तब उज्ज्वल हरियाली और वृक्ष-लता आदि से शोभित स्थान देखकर चित्त प्रसन्न हुआ। सानफ़्रान्सिस्को पहुँचने में और दो तीन घण्टे की देर थी। सब लोग चीज़-वस्तु सँभाल सँभाल कर रख रहे थे। इसी समय अचानक एक बड़े ज़ोर का धक्का लगा और गाड़ी रुक गई। अधिक चोट किसी के नहीं लगी। केवल एक लेडी के सिर में मामूली चोट आई। गाड़ी से सबने उतर कर देखा कि लट्ठों से लदी खड़ी हुई एक खुली गाड़ी (Truck) के धक्के से हमारी गाड़ी का एंजिन ख़राब हो गया है। यह छोटा स्टेशन था; यहाँ यह ट्रेन ठहरती नहीं।

साइडिंग (Siding) की स्विच (Switch) ठीक न रहने से यह दुर्घटना हो गई। यहाँ से साक्रामेण्टो (Sacramento) स्टेशन से तार देकर नया एंजिन मँगाया गया; तब डेढ़ घण्टे के बाद वहाँ से गाड़ी चली। दोपहर के बाद एक खाड़ी (Carquinez Strait) पार होने के लिए दो एंजिनों सहित सारी ट्रेन एक भारी जहाज़ (Solano) पर चढ़ाई गई। डिट्रायर स्टीमर की अपेक्षा यह बहुत बड़ा था। डिट्रायर स्टीमर पर भी ट्रेन के अलावा बहुत सी जगह थी; जिस पर हम टहले थे। किन्तु यह स्टीमर बहुत बड़ा था। केवल इस पार से उस पार ले जाने के लिए इतना बड़ा जहाज़ पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। इसके बाद सानफ्रानसिस्को में पहुँचने के पहले छः मील घेरे का उपसागर (San Francisco Bay) पार होते समय सब यात्री परस्पर बिदाई के दुःख का अनुभव करने लगे। जो बालक हम लोगों के साथ था वह इतने दिन साथ रहने से मुझे बहुत प्यार करने लगा था। उतरते समय उसने माता के साथ मुझे अभिवादन किया। उसकी आँखों में आँसू भरे देख कर मुझसे भी रोये बिना नहीं रहा गया।

सानफ्रानसिस्को। पहले यहाँ रेतीली धरती थी; किन्तु इस समय एक समृद्धिशाली नगर बसा हुआ है। धन्य है यूरोपियन लोगों का उत्साह और उद्यम! यहाँ आकर उन्होंने मरुभूमि के ऊपर अच्छी मिट्टी बिठलाई और उसे एक उपजाऊ भूमि बना दिया है। केलीफ़ोर्निया का जल-वायु इटली के जल-वायु से मिलता-जुलता है; इसी से इटली के बहुत से आदमी यहाँ आकर बसते जाते हैं। सन् १८५० में तीन बार नगर जल जाने से ७५ लाख डालर के लगभग सम्पत्ति विनष्ट हो गई। उसके बाद यह नया नगर बना है। यहाँ की वर्त्तमान जन-संख्या चार लाख के लगभग है।

रास्ते शिकागो के ऐसे सीधे हैं। यहाँ के टकसाल, पर्मिट, टाउन हाल, फ़्रीमिशन-मन्दिर, आमहाउस, ७ थियेटर, कई एक बड़े बड़े होटल, ११ स्कायर, तीन मील लम्बा और आध मील चौड़ा (३,००० वीघे से अधिक) पार्क और उसके अन्तर्गत काच-गृह में रक्खे हुए ग्रीष्म-प्रधान देशों के विचित्र विचित्र वृक्ष और लतायें, १०० गिर्जे, १५ दान-समितियाँ, ६१ फ़्री स्कूल, १८ साधारण पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, होमिओपेथिक और एलोपेथिक मेडिकल कालेज आदि स्थान देखने योग्य हैं। मैं जिस होटल (Palace Hotel) में ठहरा था उसमें १,२०० आदमियों के ठहरने की व्यवस्था थी। छठे खण्ड में सुन्दर 'प्रमानड' बना था। सब जगह बिजली की रोशनी और पुष्प-वृक्ष सुशोभित थे। यह भी होटल देखने योग्य है। समुद्रतट पर एक रेस्टराँ (Restaurant) है। वहाँ दिन में अनेक बार गाना-बजाना हुआ करता है। उसके सामने के समुद्र-खण्ड में छोटे पहाड़ पर बहुत सी सील मछलियाँ (Seal) रहती हैं। बहुत से दर्शक लोग उक्त रेस्टराँ के बरामदे में बैठकर सील मछलियों की कलोलें और तैरना देखा करते हैं। उक्त स्थान के निकट ही सुट्रो (Sutro) नामक एक इटलियन करोड़पती का सुविस्तृत मनोहर बाग़ और विलास-भवन आदि भी देखने योग्य है। बहुत सा धन ख़र्च करके उक्त धनी ने यह बाग़ की जगह निकाली है। इस नगर में बहुत से चीना रहते हैं। उनके रहने के लिए स्थान अलग ही है। इस प्रदेश में जब पहले सोने की खान निकली तब सब चीजें बड़ी महँगी हो गईं। रहनेवालों ने यह निश्चय कर लिया था कि ताँबे और चांदी का व्यवहार उठाकर सब सिक्के सोने के ही चलावेंगे। उस समय एक डालर से कम में जूते पर ब्रुश तक नहीं फिरता था। लेकिन कुछ ही दिनों में इस

पागलपन का कुफल फलते देखकर, अन्यान्य प्रदेशों के उपदेश के अनुसार, स्थानीय व्यवस्थापकों को फिर लाचार होकर पुरानी प्रथा स्वीकार करनी पड़ी। साल में चार करोड़ डालर का सोना अब भी यहाँ उठ जाता है। अख़बारों की धूम राज्य में सब जगह एक सी है। पहले दिन सन्ध्या के समय होटल में बैठा मैं पत्र वग़ैरह लिख रहा था। इसी समय दो अख़बारों के रिपोर्टरों ने मेरे पास 'कार्ड' भेज कर बातचीत करने के लिए प्रार्थना की। मैंने सुन रक्खा था कि उन लोगों से अगर कोई आदर के साथ नहीं मिलता तो वे रूठ कर उस मनुष्य के देश भर की निन्दा अख़बार मे छाप देते हैं। इसी से पत्र लिखना बन्द करके उनसे बातचीत करने लगा। उन्होंने पहले भारतवर्ष के सम्बन्ध में अनेकानेक प्रश्न करके बहुत सी बातें पूछीं और उसके बाद मेरे भ्रमण-वृत्तान्त की कुछ बातें लिख कर वे विदा हुए। दूसरे दिन सवेरे देखा, दोनों अख़बारों मे सारी बातचीत छपी हुई है। केलीफ़ोर्निया-उपकूल मे अत्यन्त मनोहर तरह तरह की सेवार देख पड़ती है। कोई कोई सेवार तो ऐसी विचित्र होती है कि विविध वर्ण के रेशम से बनी जान पड़ती है। यात्री लोगों के हाथ बेचने के लिए बेचनेवाले सुखा कर उसे रख छोड़ते हैं। कई साल हुए यह नगर भ्रालेडोले मे नष्ट हो गया था। किन्तु अब पहले से भी अच्छा नगर बन गया है। यहाँ के निवासी ऐसे ही धनी हैं।

अमेरिका की साधारण अवस्था। यद्यपि सारे देश का नाम अमेरिका है, परन्तु यूनाइटेड स्टेट्स के लोग अपने को ही 'अमेरिकन' कहते हैं। यूरोप में अमेरिका कहने से यूनाइटेड् स्टेट्स ही समझा जाता है। अनेक जाति के लोग यहाँ आकर बसे हैं। उनके मेल से एक नई ही प्रकृति की जाति का संगठन हो रहा है। इस कारण

इस देश की किसी बात पर "एक मत" नहीं प्रकाशित किया जा सकता। यह विशाल राज्य घेरे मे सारे यूरोप के बराबर है। न्यूयार्क और सानफ़ानसिस्को के 'समय' मे तीन घंटे का अन्तर है, किन्तु दोनों जगह की भाषा और सिक्का एक है। यह कम गौरव की बात नहीं है। जुदे जुदे प्रदेशों के आईन-क़ानून और रस्म-रवाजें भिन्न भिन्न हैं। केवल सर्वसाधारण के लिए ज़रूरी बातों का निश्चय वाशिंगटन की प्रधान सभा करती है। कहीं पर स्त्री और पुरुष दोनों को राज-कर्मचारियों के पद मिल सकते हैं, और कहीं पर यह नियम नहीं है। दक्षिण-अमेरिका मे कृष्णकाय निग्रो लोगों पर जैसा अत्याचार होता है वैसा अत्याचार उत्तर-अमेरिका मे नहीं होता। दक्षिण-अमेरिका मे ये लोग गोरों के साथ न एक गाड़ी मे बैठ सकते हैं और न होटल मे रह सकते हैं। यहाँ तक कि सड़क पर वे किसी गोरे से बात नहीं कर सकते। इस बारे मे अमेरिकन लोग कहते हैं कि "हम लोगों को सभ्य हो चुके आदिम-निवासियों के साथ खाने-पीने मे कोई आपत्ति नहीं; किन्तु निग्रो लोगों के साथ हमको घृणा होती है। उसका कारण यह है कि गुलामी की नीचता अभी तक उन लोगो के हृदय से दूर नहीं हुई. ख़ास कर स्त्रियों के सतीत्व के सम्बन्ध मे उनका बड़ा ही हीन भाव है।" अमेरिकनों में अधिकांश लोग अँगरेजों की सन्तान हैं। तथापि अब उनमें और अँगरेज़ों में बड़ा अन्तर होगया है। अहङ्कार और व्यर्थ का आडम्बर करना उनके स्वभाव में दाखिल हो गया है। इस सम्बन्ध मे एक अँगरेज़ सज्जन लिखते हैं— "Indeed that form of self-conceit which is content with a supreme confidence in one's own merits is an English rather than an

American-quality. John Bull has for so long been taught to consider himself as the salt of the earth, and so thoroughly believes the fact, that he is quite satisfied on his own country's merits being admired."
—*Sir H. T. Wood.* अमेरिकन लोगों का कहना है—
"We do brag, but any how we don't cant." ।
इँगलेंडवासी लोग (स्काच और आयरिशों को छोड़ कर) विशेष प्रतिपत्तिशालिनी जाति होने पर बुद्धि के तीक्ष्ण होने के सम्बन्ध में वे यशस्वी नहीं हैं । एक अँगरेज़ ने खुद लिखा है— "I need not say that, in real sound stupidity the English are unrivalled. In fact what we approbriously call stupidity, though not an enlivening quality in common society, is nature's favourite resource for preserving steadiness of conduct and consistency of opinion. It enforces concentration ; people who learn slowly. learn only what they must. The best security for people's doing their duty is that they should not know anything else to do, the best security for fixedness of opinion is that people should be incapable of comprehending what is to be said on the other side." * किन्तु अमेरिकन लोग, अँगरेज़-वंशज होने पर भी, मुझे प्रखर बुद्धिशाली जान पड़े। अमेरिका में और पासिफ़िक

---

*एमर्सन लिखते हैं कि जर्मनी में घूमते समय राइन नदी के ऊपर स्टीमर पर एक जर्मन-युवती ने एक अँगरेज़ यात्रियों के दल को फारेनर (विदेशी) कहा। इस पर उस दल की एक लेडी ने क्रुद्ध होकर कहा था कि ' No, we are not foreigners ; we are English, it is you that are foreigners." "अर्थात् "इतनी बड़ी स्पर्धा। हम विदेशी हैं ? हम अँगरेज़ हैं, तुम्हीं विदेशी हो" । इसका कारण यह है कि इँगलेंड में अँगरेज़ लोग

जहाज़ पर भिन्न भिन्न स्थानों के अमेरिकनों के साथ तीन सप्ताह तक मुझे रहना पड़ा; मगर कभी कोई मोटी बुद्धि की बात देखने में नहीं आई। इनकी जान-पहचान और बात-चीत का ढंग पूर्वी ढंग से मिलता-जुलता है। ये खुलकर मिलते हैं। यह बात अँगरेज़ों की प्रकृति के ठीक विपरीत है। बात-चीत में फ्रेंच लोगों की तरह ये बहुत से शब्द ख़र्च कर डालते हैं। इनके धनोपार्जन के सम्बन्ध में पहले ही कहा जा चुका है कि इस काम में कोई जाति इनकी बराबरी नहीं कर सकती। एक कहावत है कि एक स्काचलेडी ने अपने पुत्र को विदेश भेजते समय कहा था—"Make money, my boy, make money honestly if you can, but make money" (जिस तरह हो धनोपार्जन करो, अच्छे उपाय से मिले तो अच्छी ही बात है; नहीं तो जिस उपाय से हो रुपया पैदा करना चाहिए।) यह उक्ति इस समय अमेरिका पर पूरी तरह से लागू हो रही है। वहाँ रुपये के लिए लोग क्या नहीं करते? अमेरिकन लोगों के लिए यह भी कम निन्दा की बात नहीं है कि वहाँ अगर नौकरी ख़ाली होती है तो उसके नोटिस में लिख दिया जाता है कि "कनाडियन प्रार्थी आदर के साथ स्वीकृत होगा।" इसका कारण यही है कि देश में स्वदेशी युवकों की ईमानदारी पर उतना विश्वास नहीं किया जाता। अमेरिकनों के धन के

जर्मन, फ्रेंच आदि सब जातियों को साधारणतः फारेनर कहते हैं। केवल शब्दार्थ के अलावा इस शब्द में कुछ व्यङ्ग्य या उपेक्षा का भाव भी प्रकट होता है। इसी से यहाँ पर वह अगरेज़-महिला 'फारेनर' शब्द से इतनी चिढ़ी। किन्तु यह उसकी समझ में नहीं आया कि पृथ्वी के सभी भिन्न देशीय व्यक्तियों को स्थानीय लोग परदेशी कह सकते हैं। यह कोई गाली नहीं है। इस पर बिगड़ना स्थूल बुद्धि का ही लक्षण या प्रमाण है।

संग्रह* और व्यय के सम्बन्ध में पहले ही लिखा जा चुका है। वाल्ट-रबिल्ट के न्यूयार्कवाले महल के गृहप्रवेशोत्सव के दिन ६,००० पौण्ड ख़र्च हुए थे। १,००० पौण्ड के तो केवल फूल ही ख़र्च हुए थे। इस महल के अन्तर्गत बाग़ में २५,००० पौण्ड की लागत का एक मकान बना हुआ था। वह मकान केवल कुछ फूलों की क्यारियाँ बनाने के लिए खोद डाला गया! हम लोग जैसे यहाँ दूकानों में सस्ती चीज़ खोजते हैं वैसे यहाँ के लोग दूकानों पर बढ़िया चीज़ खोजते और पूछते हैं—"Nothing more expensive?" (इससे अधिक दाम की नहीं है?)। राज्य में बहुत सा धन होने के कारण सब चीज़ें बहुत महँगी हैं। इँग्लेण्ड से चलते समय मेरे इष्ट-मित्रों ने किराये की गाड़ी करने के लिए मना कर दिया था। नायेगारा में गाड़ी करके देख लिया। १४ मील घूमने के लिए १० डालर किराया और एक डालर 'बकसीस' देनी पड़ी। पाश्चात्य लोग धनोपार्जन में इतने व्यस्त हैं कि कोई कोई रविवार तक को छुट्टी नहीं मनाते। पृथ्वी के अन्यान्य देशों में लोग साल में कम से कम एक महीने की छुट्टी लेकर आराम कर लेते हैं। किन्तु अमेरिका में यह नियम नहीं है। अगर कोई छुट्टी ले भी लेता है और दिल-बहलाव में समय बिताता है तो सर्वसाधारण उसका नाम धरते हैं। किन्तु ये सब दोष एक गुण से ढक गये हैं। जन्म

---

* वर्त्तमान समय में ऐसे सौ से ऊपर आदमी हैं जिनमें से हर एक की सम्पत्ति ५० लाख पौण्ड से भी अधिक है। पहले कहा जा चुका है कि राक-फ़ेलर की आमदनी एक करोड़ डालर के ऊपर है। अमेरिका में ऐसा ही सुना था। किन्तु पीछे विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ कि उनकी सम्पत्ति हर साल डेढ़ करोड़ डालर के हिसाब से बढ़ती जाती है। अमेरिका का रुपया इँग्लेण्ड की अपेक्षा दूने हिसाब से बढ़ता जाता है। आस्टर (Astor) की सम्पत्ति राकफ़ेलर की सम्पत्ति से कुछ अधिक होगी; किन्तु आमदनी कम है।

भर जी-तोड़ परिश्रम से बहुत सा धन जमा करके वह धन अपनी सन्तान की बाबूगीरी के लिए न रख कर उसका अधिक अंश सर्वसाधारण के हित के कामों मे दे देना, शायद अमेरिका ने ही संसार को पहले-पहल दिखलाया है। इसलिए अमेरिकन लोग जगत् के धन्यवाद के योग्य हैं। इन लोगों ने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया है कि "घराने की इज्ज़त" "वंश-मर्यादा" आदि हानवों की सेवा के लिए धन-संग्रह करके यह समझना कि उसके द्वारा पुत्र-पौत्र आदि के प्रति हम अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं, सरासर भूल है। जमा किया हुआ आवश्यकता से अधिक धन ढेर के ढेर रोगों का कारण बन जाता है। उत्तराधिकार में भारी धन पाकर सारे अनर्थों की जड़ आलस्य के शिकार बन कर लोग संसार का और अपना भी घोर अकल्याण करते हैं। अमेरिकनों का कहना है—"Idlers are th e worst thieves that plague and infect the community" अर्थात् पीढ़ी दर पीढ़ी यह आलस्य का प्रवाह जारी रहा तो शरीर और मन का बेजान होना अनिवार्य है। यह बतलाना न होगा कि हृदय में बल न होने से किस प्रकार की नीच श्रेणी की कायरता आ जाती है। शारीरिक हीनता का फल है लड़का गोद लेना। लड़का गोद लेकर वंश-रक्षा की चेष्टा करना घोर मूर्खता है। किसी ग़रीब के लड़के को मूर्खता, आलस्य, भोग-विलास और प्रबल पराक्रमी काम-क्रोध आदि छः शत्रुओं के बीच में हाथ-पैर बाँध कर छोड़ देना निस्सन्देह घोर महापाप है। यूरोप अमेरिका आदि पाश्चात्य देशों मे कितने ही धन-कुबेरों के सन्तान न होने पर अन्त समय वे अपनी सारी सम्पत्ति लोक-सेवा के लिए अर्पण कर गये हैं। सब लोगों के इसी मार्ग पर चलने के कारण वहाँ करोड़ों रुपया सर्व-

साधारण की उन्नति के कामों में लगा हुआ है। स्त्री-पुरुषों की शिक्षा के लिए न्यूनाधिक ४०० विश्वविद्यालय और उच्च श्रेणी के कालेज राज्य में हैं। इनके सिवा अनेक विषयों के छोटे-बड़े स्कूल असंख्य हैं। अमेरिका में बिलकुल ही ग़रीब का लड़का भी अपनी प्रतिभा के बल से राज्य के प्रधान का पद पा सकता है। गारफ़ील्ड, लिंकन आदि ग़रीब ही के लड़के थे। एक दिन लन्दन के किसी काफ़ीख़ाने में एक अमेरिकन और एक अँगरेज़ से इस बात पर तर्क-वितर्क हो रहा था कि इँग्लेण्ड श्रेष्ठ है या अमेरिका। उसमें इसी बात का उल्लेख करके ब्रादर जोनाथान (Brother Jonathan) ने जानबुल (John Bull) को चुप कर दिया था। केवल विद्या-बुद्धि के बल से कोई कहीं राजा नहीं हो सकता।

अख़बारों को तो इस देश की ख़ुराक समझना चाहिए। केवल न्यूयार्क स्टेट में दोनों ब्रिटिश द्वीपों से अधिक अख़बार छपते और प्रकाशित होते हैं। इँग्लेण्ड में एक प्रवाद प्रचलित है कि अमेरिका के किसी गिर्जे में एक दिन पादरी साहब 'उपदेश' में नरक का वर्णन कर रहे थे। क्रमशः श्रोता सब सोने लगे। यह देखकर उनको जगाने के लिए पादरी साहब ने तीव्रभाव से नरक-यन्त्रणा का बयान करना शुरू किया। लेकिन उनकी यह चेष्टा सफल नहीं हुई। अन्त को जब वह उच्च स्वर से कह उठे कि "There is no newspaper in hell."—(नरक में अख़बार भी नहीं हैं) तब सब चौंक कर जाग पड़े और बोले—"No newspaper in hell!"—(नरक में अख़बार नहीं हैं !)। अख़बारों की उन्नति के लिए जी खोल कर रुपया ख़रचना तो एक साधारण बात है। संवाद-संग्रह की चेष्टा और व्यग्रता भी यहाँ अद्भुत देख पड़ती है। नया गाँव बसते ही उसके साथ ही स्थानीय अख़बार भी

होना चाहिए। गाँव की उन्नति के साथ साथ उस पत्र की भी ग्राहक-संख्या और पूँजी बढ़ती है। गाँवों मे स्थानीय अख़बारों के दफ़र देखने लायक़ होते हैं। यहाँ के अख़बारों में यही एक बड़ा भारी दोष है कि इतने बड़े राज्य में एक भी ऐसा अख़बार नहीं जिसमे सारे देश के स्वार्थ की बात रहती हो। सभी अपने अपने नगर और प्रदेश के स्वार्थ पर ध्यान रखते हैं। बिना अख़बार के एडीटर भी इस देश में हैं। मैंने देखा है कि सात आठ सौ आदमियों की संख्यावाले एक छोटे गाँव में (उस समय तक वहाँ से कोई अख़बार नहीं निकलता था) एक आदमी डाकघर के बाहर एक कोने मे एक कुर्सी डाले बैठा रहता था। यही उसका दफ़र था। सवेरे गाँव के चारों ओर घूम कर, ख़बरें प्राप्त कर, आफिस के सामने एक पीपे पर खड़े होकर, हर एक श्रोता से पाँच सेन्ट दक्षिणा लेकर, वह सब ख़बरें सुनाता था। दिन मे तीन चार बार ऐसे ही ख़बरें सुना कर वह एक डालर के लगभग कमा लेता था। रेल का हाल पहले ही लिखा जा चुका है। रेल का सब प्रबन्ध बहुत ही उत्तम है। स्टेशन का नाम पुकारने का ढङ्ग जुदा है। "कण्डाक्टर" हर एक गाडी में जाकर निकटस्थ और उसके आगे के स्टेशन का नाम पुकार जाता है। न्यूयार्क से पश्चिम ओर ४,००० मील लम्बी (६० घण्टे के लगभग समय की राह) अनेक लाइनें निकली हैं। उनमे से एक लाइन मे चार जोड़ी पटरियाँ ओर-छोर तक बिछी हुई हैं। पृथ्वी की और किसी लाइन में चार जोड़ी पटरियाँ अभी तक नहीं बिछाई गईं। किसी किसी नगर मे बिजली से चलनेवाली ट्रामगाड़ियाँ हैं। साधारणतः सर्वत्र बिजली की ट्राम चलने मे अभी विलम्ब था। नायेगारा-जलप्रपात की शक्ति को मनुष्य-सेवा मे लगाने के लिए जो चेष्टा हो रही है

उससे कैसा भारी परिवर्त्तन होगा, यह अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। अमेरिका सब प्रकार की स्वाधीनता की लीला-भूमि है। यहाँ राजनैतिक, सामाजिक और गृहस्थी की, सब तरह की स्वतन्त्रता देखने में आती है। घर का मालिक, मालकिन, पुत्र, कन्या, सबका अपना अपना ढङ्ग है। कोई किसी के काम में दस्तन्दाज़ी नहीं करता। एक यूरोपियन महिला ने इस सम्बन्ध में लिखा है—"Each has his friends, his Social duties, his separate existence, and disposes of his time as seems best to himself." इससे अच्छाई भी है, बुराई भी है। उक्त प्रकार की स्वाधीनता से बहुत सी औरतें पुरुषों के समान उन्नत होकर समाज और देश की शिरोमणि बन गई हैं। और, कोई कोई गृहस्थी के प्रति, समाज के प्रति, संसार के प्रति उदासीन हो गई हैं। अनेक यात्रियों ने इस बात पर लक्ष्य किया है कि वहाँ बड़े बूढ़ों के प्रति सन्तान, शिष्य, भृत्य इत्यादि समुचित श्रद्धा-भक्ति नहीं दिखाते। यहाँ की भाषा में भी क्रमशः अनेक परिवर्त्तन हो रहे हैं। जैसे—Railway-station की जगह depot, Boots की जगह Shoes, Shoes की जगह Slippers, Jug की जगह Pitcher, Ship-captain की जगह Skipper, Zed की जगह Zee इत्यादि। इसके सिवा नकी सुर (Nasal twang) और "guess," "calculate," "Slogdologise," "Skedaddle" आदि अमेरिकनपना Americanism) तो है ही। लिञ्च (Lynch) प्रथा इस देश का एक भयानक व्यापार है। निग्रो लोगों के लिए ही इसका अधिक प्रयोग होता है। इसका खुलासा वृत्तान्त यह है कि गाँव या नगर के बहुत से लोग मिलकर अपराधी को बलपूर्वक हाजत से निकाल लाते हैं और बिना

विचार के ही उसकी जान ले लेते हैं। स्त्रियों से सम्बन्ध रखने-वाले अपराध में ही—ख़ास कर जिस जगह आईन के विचार से दोषी व्यक्ति के छूट जाने की आशङ्का होती है—प्रायः ऐसी घटना होते देखा जाता है। आदिमनिवासियों में से अधिकांश के लिए एक ख़ास प्रदेश नियत कर दिया गया है। वहाँ ये लोग सरकारी वृत्ति पाते हैं। ये लोग रेल पर भी बिना क़िराया दिये यात्रा कर सकते हैं। किन्तु गाड़ी के भीतर नहीं बैठने पाते। अमे-रिका की गाड़ियों मे आस-पास दरवाज़े नहीं होते; दोनों सिरों पर होते हैं। उन्हीं दरवाज़ों के बरामदों में बैठ कर ये लोग यात्रा करते हैं। यहाँ की शासन-प्रणाली सम्पूर्णरूप से प्रजा के हाथ में है। हर एक प्रदेश अपने अपने यहाँ की व्यवस्था कर लेता है। सारे राज्य का अध्यक्ष एक प्रेसीडेण्ट तीन साल के लिए चुन लिया जाता है। प्रेसीडेण्ट को सालाना ५०,००० डालर वेतन मिलता है। जब की बात मैं लिख रहा हूँ तब मेकिन्ले (Mackinley) प्रेसीडेण्ट थे। यहाँ के सिक्के का नाम डालर है। यह सोने, चाँदी और काग़ज का (नोट) होता है। सबकी क़ीमत बराबर है. सोने की दर के अनुसार यहाँ का सब काम होता है। किसी किसी साल टकसाल से आठ नव करोड़ डालर के सोने के सिक्के जारी होते हैं। ताँबे के सिक्के को सेन्ट कहते हैं। एक डालर के सौ सेन्ट होते हैं। पाँच सेन्ट के निकल के सिक्के को डाइम (Dime) कहते हैं। अफ़सरों को मिलाकर ३०,००० से अधिक सेना न होगी। जल-सेना १२,००० के लगभग है। जङ्गी जहाज़ों में छः पालदार जहाज़ हैं। इनको देख कर यूरोप को सीखना चाहिए। सारे यूरोप के बराबर के राज्य की रक्षा के लिए इतनी थोड़ी सेना है। ये लोग कहते हैं कि केवल थोड़

वीच में आदिमनिवासियों का किया उपद्रव शान्त करने ही के लिए इतनी भी सेना रखनी पड़ती है। जिस वर्ष में वहाँ था उसके पहले साल ३२ करोड़ डालर के लगभग आमदनी थी और ख़र्च उससे चार-पाँच करोड़ अधिक हुआ था। ऋण भी एक सौ करोड़ डालर के लगभग था। इस राज्य का घेरा ३५,८१,४४५ वर्ग-मील का है। जन-संख्या १० करोड़ के लगभग है। उनमें १½ करोड़ के लगभग कृष्णकाय निग्रो (सन् १७९० में केवल ७½ लाख थे। निम्न श्रेणी की सेवा और नौकरी ये ही लोग करते हैं।) और तीन लाख आदिमनिवासी ('रिज़र्वेशन' में एक लाख से अधिक, उसके बाहर भी उतने और ६०,००० के लगभग सभ्य हो गये) हैं। यूरोप के अनेक देशों से कितने ही प्रकार के निम्नश्रेणी के लोग हर साल झुण्ड के झुण्ड यहाँ आकर बसते जाते हैं। आश्चर्य तो यही है कि इन हीन श्रेणी के लोगों मे समय समय पर कितने ही अच्छे अच्छे आदमी निकल आते हैं। देश में प्रवेश करते समय हर एक से कह दिया जाता है कि "यहाँ आकर तुम सम्पूर्ण स्वाधीन हो गये। इस समय तुम अपने कर्ता, शासक, पुलिस, मजिस्ट्रेट सब कुछ हो। यह समझ कर शान्त-भाव से उन्नति की चेष्टा में जीवन लगाओ। इत्यादि।" इस मन्त्र से वे जैसे नवजीवन प्राप्त कर पहले के चरित्र और अभ्यास आदि को भूल कर शान्त कामकाजी नागरिक बन जाते हैं। जैसा यह सुविस्तृत देश है वैसे ही यहाँ की आवहवा, जीव-जन्तु और वृक्ष आदि भी तरह तरह के हैं। दक्षिण-अमेरिका में चावल और आम पैदा होते हैं। उत्तर-अमेरिका के दारुण शीत में वैसे ही फल और अन्न आदि पैदा होते हैं। उत्तर और दक्षिण-अमेरिका के आदमियों की शकल-सूरत भी अलग अलग है। आँधी आदि का उपद्रव कभी कभी बड़ा ही

भयानक होता है। खनिज पदार्थ आदि चारों ओर खूब पैदा होते हैं। कितने ही प्रदेशों में ऐसी प्राकृतिक गैस पैदा होती है कि वहाँ जलाने की गैस बनानी नहीं पड़ती। अनेक लोग समझते हैं कि अमेरिका के लोग धर्म के संबन्ध मे उदासीन हैं। किन्तु वास्तव मे यह बात नहीं है। यथार्थ सारवान् ईसाई धर्म का प्रभाव ब्रिटिश-द्वीप और अमेरिका मे ही देख पड़ता है। स्वाधीन चिन्ता का प्रवाह बिना किसी रुकावट के जारी होने के कारण एकेश्वरवादी क्रिस्तान-धर्म (Unitarianism and Universalism) का प्रादुर्भाव और उन्नति इसी राज्य में विशेषरूप से देख पड़ती है। धर्मयाजक लोग सालाना चौदह पन्द्रह हज़ार डालर तक वेतन पाते हैं। अमेरिका में और एक महान् और विराट् व्यापार शुरू हुआ है। आरेगन (Oregon) प्रदेश के सलेम (Salem) नगर मे एक सार्वभौमिक सभा* स्थापित है। पृथ्वी के अनेक देशों के लोग उसके सभ्य बनाये जाते हैं। सभा के नियमानुसार हर एक महीने की २७ तारीख़ को हर एक सभ्य को सब काम छोड़कर १२ से १२½ बजे तक आध घंटे, जो जहाँ होता है वहाँ, सारे संसार की शान्ति और उन्नति के लिए ईश्वर की प्रार्थना करनी पड़ती है। इसी लिए सलेम में जब १२ बजते हैं तब

---

*"Whole-world Soul-Communion —The 27th day of each month, and from 12 p m to half past 12 p m being the time fixed and inspirationally communicated through THE WORLD'S ADVANCE-THOUGHT for Soul-Communion of all who love their fellow-men REGARDLESS OF RACE AND CREED—The object being to invoke, through co-operation of thought and unity in spiritual aspiration, the blessings of universal peace and higher spiritual light

पृथ्वी के अन्यान्य स्थानों की घड़ियों का समय ठीक करके उसकी सूचना दे दी जाती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि किसी समय अमेरिका एक अद्भुत देश हो जायगा।



पाश्चात्य जगत् से विदाई।

पाश्चात्य जगत् या सभ्य जगत् (यूरोप और अमेरिका) के निकट विदा होते समय पाठकों से कुछ निवेदन करूँगा।

"Ich dien" I serve * एकाएक स्थूल दृष्टि से देखने से जान पड़ता है कि यूरोप व्यक्तित्व-प्रधान और भारत समाज-प्रधान देश है। किन्तु ज़रा ग़ौर करके देखने पर ठीक इससे उलटा देख पड़ेगा। "एकान्नवर्त्ती परिवार" आदि अनेक प्रकार के बाहरी बन्धनों

---

* प्रिन्स आफ़ वेल्स के शिरोभूषण में "इश डीन" ये दो जर्मन-शब्द उज्ज्वल अक्षरों में लिखे रहते हैं। इनका अर्थ है "मैं सेवा करूँ।" हमारे देश के एक साधारण धनी को भी ऐसा वाक्य असह्य होगा। किन्तु पृथ्वी के सर्वप्रधान साम्राज्य का भावी सम्राट् संसार-सेवक कह कर अपना परिचय देने में कुछ भी संकोच नहीं करता। बल्कि इस वाक्य को वह अपना गौरव समझता है। प्रिन्स की स्त्री और कन्यायें साधारण गृहस्थ की तरह छोटे बड़े सब घर के कामों में लगे रह कर परिवार की सेवा के बाद बाहर के धनी और गरीब लोगों की भी ख़बर लेती हैं। पूर्व और पश्चिम में इतना अन्तर है। सन् १३४६ के क्रेसी (Creacy) युद्ध में बोहेमिया के अन्धे राजा दो नाइटों (Knight) की सहायता से घोड़े पर चढ़कर समर में गये और वहीं मरे थे। कई एक ostrich plumes और नीतिवाक्य (motto) उक्त अन्ध नरपति के शिरोभूषण थे। तत्कालीन प्रिन्स आफ़ वेल्स युद्ध-भूमि से इस मोटो को ले आये थे। तभी से यह मोटो इँग्लेण्ड के प्रिन्स आफ़ वेल्स के सिर पर सोहता है।

के चिह्न रहने पर भी भारत सम्पूर्ण रूप से व्यक्तित्व-प्रधान देश होगया है । आज-कल यहाँ अपने ही अपने स्वार्थ पर सबकी दृष्टि देख पड़ती है । और यूरोप में, सब तरह की सोलहो आना व्यक्तिगत स्वाधीनता के साथ आबाल-वृद्ध-वनिता सबके अपने पैरों के बल खड़े रहने पर भी, समाज के लिए, देश के लिए, यहाँ तक कि समय समय पर पृथ्वी की दूसरी सीमा पर स्थित पर-देशी जन-समाज के हित के लिए बहुत से लोग प्राण तक देने को तैयार रहते हैं । सारी मनुष्य-जाति का, या अधिकांश मनुष्यों का, न हो सके तो ख़ाली अपने देश का या अपने समाज का कल्याण करने की चेष्टा करना हर एक मनुष्य के जीवन का प्रधान उद्देश्य होना चाहिए । सरल ज्ञान और विवेचना के अनुसार यथाशक्ति इसी मार्ग पर चलना हम सबका कर्त्तव्य है । अनेक लोग कहते हैं कि धर्म (Formulated religion) के शासन विना मनुष्य अपनी अपनी पाशव प्रवृत्ति के अनुसार यथेच्छाचारी हो जायँगे, एक दूसरे का गला काटने में कुछ भी संकोच न करेगा । अतएव चाहे जिस तरह हो, एक धर्म का भय होना ही चाहिए । उसके बिना समाज को सुश्रृङ्खला से ठीक रखना असम्भव ही है । दूसरी ओर बहुत से समाजतत्ववेत्ता पण्डितों का मत है कि अनैसर्गिक अमानुषी (Superhuman) शक्ति की कल्पना द्वारा शासन करने की कोई आवश्यकता नहीं देख पड़ती । कठोर प्राकृतिक नियम का अनुयायी समाज अपना प्रबन्ध आप कर लेगा । जो लोग सर्वसाधारण की हानि करके या अशान्ति पैदा करके अपनी निकृष्ट स्वार्थपरता चरितार्थ करने में कुछ भी संकोच नहीं करते (या चेष्टा करते हैं) उनका दमन या उन्हें दूर करना अवश्यंभावी है । ये लोग कहते हैं कि केवल पुण्य के प्रताप से जातीय समुन्नति होती है । जिस समाज में परस्पर असद्भाव,

अविश्वास, हिंसा-द्वेष है, जहाँ सर्वसाधारण के हित के लिए किसी मामूली स्वार्थ का त्याग करने के लिए कोई तैयार नहीं, ऐसे कायर-हीन और जघन्य स्वार्थपरता के दुर्गन्धमय अन्धकूप-रूप आत्मघाती समाज का विनाश अनिवार्य है। यदि कहीं इस तरह का अत्यन्त दूषित कदर्य समाज विद्यमान देखा जाय तो निश्चय जानना चाहिए कि उसके द्वारा अलक्षित भाव से विश्व-संसार का कोई शुभ उद्देश्य सिद्ध हो रहा है। अगर ऐसा न होता तो वह समाज कब का नष्ट हो जाता। चोर को भी न्याय और कर्त्तव्य का ज्ञान है। नित्य नर-रक्त से हाथ कलंकित करनेवाले महापापग्रस्त दस्युरत्नाकर (पीछे से वाल्मीकि) के कठिन पाषाणसदृश हृदय में भी माता-पिता के प्रति कर्त्तव्य का ज्ञान ऐसा सुदृढ़ था कि केवल उन्हीं के लिए ऐसा घोर कर्म वह करता था। अन्य किसी के साथ पूरी तौर से सम्बन्ध न रहने की निर्लिप्त अवस्था में ऐसा होना असंभव है। हमारे ऊपर जिनका दावा है, ऐसे कुछ लोगों के साथ सम्बन्ध बिना पूर्ण स्वतन्त्र भाव में व्यक्तित्व की सम्यक् उपलब्धि सर्वथा असम्भव है। ईश्वर * के सिवा सब कुछ अपेक्षा रखनेवाला है। अतएव अन्य के साथ तुलना या सम्बन्ध के अलावा किसी भी विषय का निर्देश नहीं पाया जाता। यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि मत-विश्वास का धर्म संसार से बिलकुल उठ जाय तो कुछ परिवर्त्तनों का होना अवश्यम्भावी है। अनेक ऐसे विषय,

---

* शास्त्रकार लोग कहते हैं कि ईश्वर ने अपने को व्यक्त करने के लिए विशेष सृष्टि की है। जब वह अकेले थे तब व्यक्तिहीन अव्यक्तावस्था थी। वह अपने आनन्द में आप मग्न हो रहे थे। जीव को साथी और जिम्मेदार बनाकर वह सुखी हुए। यद्यपि इस मत में अनेक तर्क किये जा सकते हैं; किन्तु इस बात में गंभीर सत्य या उपदेश निहित है।

जिन्हें हम अब दृढ़ संस्कारवश घृणा की दृष्टि से देखते हैं, उस समय निर्दोष जान पड़ेंगे। जिस काम से किसी की कोई बुराई या किसी को कोई कष्ट नहीं होता, किन्तु केवल अन्धविश्वास या भ्रान्त मत के कारण वह काम अब दोषजनक जान पड़ता है, उस काम मे तब किसी को आपत्ति न होगी। बल्कि अनेक समय वह प्रयोजनीय जान पड़ेगा। ध्रुव, प्रह्लाद, ईसा, पाल, नानक, चैतन्य आदि को उनके जगत्पूज्य महोच्च पद से नीचे घसीटने का कोई कारण न होगा। किन्तु बुद्ध, कपिल, मिल, कोम्ट, ब्रूनो, स्पिनोज़ा आदि को नास्तिक कहकर संसार जिस दृष्टि या भाव से देखता है उससे कहीं अधिक उन्नत और पूजा योग्य समझने या स्वीकार करने में ज़रा भी सोच-विचार न होगा। जो कुछ हो, केवल सामाजिक हित (The greatest good for the largest number) के सम्बन्ध में उपयोगिता के अनुसार समान रूप से सब कामों का विचार बहुत ही आवश्यक होगया है। जो लोग समाज में अशुभ या अहित काम करें उनके संशोधन की चेष्टा पहले और पीछे समाज की मर्यादा और जीवन की रक्षा के लिए, चाहे जिस उपाय से हो, अच्छी तरह शासन समुचित है। अच्छी तरह देखा गया है कि जिस जाति या समाज के द्वारा संसार में बराबर अमंगल बुलाया जा रहा हो उसका अन्तिम परिणाम विनाश है। हज़ार सफ़ा धर्ममत हो और चाहे जितना उसमें व्रत नियम याग-यज्ञ आदि बाहरी अनुष्ठानों की धूम हो, किन्तु किसी तरह वह उस समाज की रक्षा नहीं कर सकता। क्योंकि एक आदमी के लिए दस आदमी नहीं भोग सकते। यह उत्तम नियम जब से यह पृथ्वी बनी है तब से बराबर अपना काम करता आ रहा है। हमारे यहाँ के अनेक धर्मप्रचारक और धर्मयाजक इस लोक

को छोड़कर परलोक के लिए व्यस्त धर्मव्रतधारी महोदय कहते हैं कि ईश्वर-पूजा अर्थात् केवल ध्यान-धारणा, जप-तप आदि ही हमारा प्रथम और प्रधान कर्तव्य है। उसे करके अवकाश मिलने पर मनुष्य-सेवा, जीव-प्रेम आदि कम आवश्यकीय विषयों पर मन लगाया जा सकता है। आत्मा की मुक्ति के लिए इन सब छोटे छोटे कामों के करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु भगवान् ने अपने प्रिय साधु-सन्तानों के द्वारा वारम्बार संसार में इस सत्य का प्रचार किया है कि "जीवदया, भगवान् के नाम में रुचि और मनुष्य-सेवा, ये तीनों वातें एक साथ होनी चाहिए", "जो भगवान् की इन क्षुद्र सन्तानों में से निपट साधारण सन्तान के प्रति भी किसी प्रकार की त्रुटि हो तो उसे भगवान् के प्रति हुई त्रुटि ही जानना चाहिए", "जो कोई अपने उस भाई को, जिसे वह चर्मचक्षु से देखता है, प्यार नहीं कर सकता वह उस ईश्वर पर प्रेम कैसे करेगा जिसे उसने कभी देखा ही नहीं।" इन सब वाक्यों के द्वारा स्पष्ट प्रतीत होता है कि ईश्वर की आराधना और मनुष्य की सेवा एक ही चीज़ है। जो भगवद्भक्ति ऊपर से उतरकर नरलोक की सेवा में नहीं नियुक्त होती वह असम्पूर्ण असार और अलीक है। और जो भ्रातृ-सेवा पृथ्वी पर से ऊँचे उठकर स्वर्गीय पिता की आराधना में परिणत नहीं होती वह भी अपूर्ण, भ्रान्त और अशुद्ध है। परितृप्त अथ च असन्तुष्ट भोगविलास की तलाश करनेवाले पुरुष और जाड़ा-गर्मी-वर्षा सहनेवाले त्यागी संन्यासी के मुख से ही यह वात अच्छी मालूम पड़ती है कि यह जीवन निष्फल है। प्रथम प्रकार के पुरुष कहते हैं कि विलास अच्छा है, किन्तु वहुत ही शीघ्र चुक जाता है। सुख तो आग में पारे की तरह उड़ जाता है; केवल दुख ही दुख हाथ लगता है।

अतएव यह जीवन असुख और अमंगल का कारण है । और विरक्त लोग भोगी की ये सब बातें सुनकर और स्वीकार करके कहते हैं कि इस शरीर से जब वासना-तृप्ति की कोई सम्भावना नहीं है तब इसे कष्ट देकर भविष्यत् की आशा रखना ही युक्तिसङ्गत है। किन्तु क्षुद्रतावश व्यक्तित्व के तंग घेरे से बाहर देखने की सामर्थ्य न होने के कारण दोनों का ऐसा संकुचित और असंगत मत है। इस पर दोनों का ही लक्ष्य नहीं है कि छोटी बड़ी सब तरह की वासनाओं का सम्बन्ध जन-समाज के साथ है, एक व्यक्ति के साथ नहीं । इस समय हममे दधीचि की ऐसी सहानुभूति का होना तो दूर रहा एक महल्ले के मनुष्यों से दूसरे महल्ले के मनुष्यों की सहानुभूति भी नहीं पाई जाती । किन्तु यूरोप इस ओर बहुत कुछ अग्रसर हुआ है । अतएव इस समय इस बात में हमें उसी को अपना आदर्श बनाना चाहिए ।

स्थूल दृष्टि से देखने में तो संसार में सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक जान पड़ेगा । इसी से कवि ने कहा है—

> "Count o'ver the joys thine hours have seen;
> "Count o'er the days from anguish free;
> "And know whatever thou hast been;
> "'Tis something better not to be"

कवि ही क्यों, चिन्ताशील मनुष्य-मात्र दैनिक घोर परिश्रम के बाद विश्राम के समय चारों ओर देखकर अपने से आप ही प्रश्न करते हैं कि "इतना परिश्रम करने से क्या लाभ हुआ ?" प्रतिध्वनि इसका स्पष्ट उत्तर देती है कि "कुछ भी नहीं । सभी पोला, मुलम्मा है । मनुष्य केवल हवा के पीछे ही दौड़ता है ।" प्राचीन समय से ही यह प्रश्न होता चला आता है । भारत के दर्शन-शास्त्र आदि

में तो इसका पिष्टपेषण ही हुआ है. किन्तु कर्मप्रधान पाश्चात्य जगत् में भी इस पर ऊहापोह कम नहीं हुआ *। किन्तु यह सब हताश का व्यक्तिगत विलापमात्र है। निराशा से सन्देह की उत्पत्ति होती है और संशय को बहुत समय तक बनाये रखने से वह अन्त को अशिववाद (Pessimism) और नास्तिकता में लेकर डाल देता है! इस भयङ्कर प्रबल प्रवाह में, बिना जाने, अपने को डाल देने से Schopenhaur, Heine, Lenau, Von Hart-

* अत्यन्त प्राचीन काल मे मिडास राजा (Midas King of Phrygia) के प्रश्न के उत्तर मे वन-देवता सिलिनस (Satyar Silenus) ने कहा था कि पृथ्वी पर जन्म न होना ही श्रेष्ठ है। और अगर जन्म हो ही तो जितना ही शीघ्र मौत आजाय उतना ही अच्छा। वर्तमान युग मे कवि बायरन ने आदम के लड़के ईश्वरद्रोही केइन (Cain) की दुहाई देकर जीवन के सम्बन्ध में विशेष दुःख प्रकाशित किया है। —

"——————I was unborn
I sought not to be born, nor love the state
To which that birth has brought me

* * * * *

They have but one answer to all question, "'Twas *his* will,
And *he* is good" How know I that? Because
He is all-powerful, must all-good too follow?
I judge but by the fruits—and they are bitter—
Which I must feed on for a fault not mine"

इसके पहले मैनफ्रेड (Manfred) के मुख मे कहला चुके हैं— "But grief shall be the intstructor of the wise; sorrow is knowledge" इसके द्वारा समझना होगा कि "The gloomy heat of unbounded and exuberant despair becomes at last oppressive to us." (घोर निराशा का असीम अन्धकार हमारी बुद्धि को ढक लेता है)। बायरन के सम्बन्ध मे गेटे की यह उक्ति बहुत ही ठीक है।

man, Byron, Chateaubriand आदि कितने ही देशों के कितने ही असाधारण धीशक्तिसम्पन्न महामहोपाध्यायगण ने हिंस्र-जन्तुपूर्ण, घोर तिमिराच्छन्न, झंझावायुताड़ित, विपत्संकुल, अविश्वास-सागर में पड़कर निरवच्छिन्न अमङ्गल की विभीषिका के सिवा और कुछ भी नहीं देख पाया । मनुष्य-समाज की क्रमोन्नति और नरलोक का दुःख दूर करने के लिए सभ्य जगत् मे जिन उपायों का अवलम्बन किया जाता है उनकी उपलब्धि यदि ये लोग कर सकते तो फिर निराशा का कोई कारण न था । हो सकता है कि सुख (कम से कम प्रयास के द्वारा) अप्राप्य सामग्री है । परन्तु केवल इसी बात से दुःख को दूर या कम करने की चेष्टा को भी किसी अंश में दूषित या हानिकारक नहीं कह सकते । मेरी समझ में हमारे यहाँ के पढ़े लिखे समझदार लोग यथाशक्ति और भाइयों के दुःख दूर करने के स्वार्थत्याग का आदर्श यदि बन जाय, मानव-प्रेम के साथ ईश्वर की आराधना करना सीख लें तो फिर उन्हें यह जीवन कभी असार और दुःखमय न जान पड़े ।

संसार में इस मोहजनित स्वार्थपरता के कारण ही बहुत सी उन्नति रुकी हुई है । चाहे जिस तरह देखिए, पराये हित के लिए चेष्टा करने के अलावा मनुष्य अपनी यथार्थ सत्ता की उपलब्धि में सर्वथा असमर्थ है । इसी से हज़ार मोह-मूढ़ होने पर भी मनुष्य सोचता है कि "मेरे न रहने पर इन लड़के-वालों का क्या होगा ?" यह परार्थ-भावना का बीज अपने परिवार में उत्पन्न होता है और अभ्यास बढ़ाने से सारे विश्व में विस्तृत हो जाता है । जितना ही आप इस भावना को विश्व के प्रति बढ़ा सकेंगे उतना ही आपको जीवन सुखमय जान पड़ेगा । उदार परोपकारनिरत और संकुचित-चेता क्षुद्रस्वार्थ पर के हृदय के भीतर देखने का अवकाश मिलने

से ऊपर लिखे सिद्धान्त की सचाई स्पष्ट देख पड़ती है। तब समझ में आता है कि "The happiest life is one which is largely concerned with the life of others, one in which a man's thoughts are taken away from himself and fastened upon the needs and interests of those about him" केवल सुख-दुःख की बात नहीं है। आचार्यों के मत में अगर वैसा न कर सके तो महापाप होता है। यहाँ तक कि केवल अपने आत्मा की रक्षा के लिए अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण जो कोई पराई भलाई सोचने या करने का अवकाश नहीं पाता वह भी अपराधी है। भूत, भविष्य, वर्त्तमान के सारे जीव हमारे हैं और हम इस जीव-समष्टि का एक सामान्य अंश-मात्र हैं— इस मुक्तिदायक महामन्त्र में दीक्षित हुए बिना रक्षा कहाँ हो सकती है? क्षुद्र परमाणु से प्रकाण्ड ब्रह्माण्ड तक, सबसे हमको यह शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए कि—

> "To cut the link of brotherhood, by which
> One common maker bound me to the kind"

अर्थात् संसार से अलग होना अस्वाभाविक है और इसी से सर्वथा दुःख और विपत्ति का कारण है। "Fellowship is heaven, and lack of fellowship is hell . fellowship is life, and lack of fellowship is death"—यही हमारा मूलमन्त्र होना चाहिए।

अपना भरोसा और पराया उपकार। पाश्चात्य जगत् के ये दो गुण हमारे लिए अवश्य अनुकरणीय हैं। त्रिभुवनपालक परमपिता परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के हर एक जीव को प्रयोजन के माफ़िक़ शक्ति दी है। उसके द्वारा वे सुख से, स्वस्थ-शरीर होकर, स्वच्छन्द मन से अपनी जीविका चलाते हैं। उस शक्ति के उपयोग से स्वाधीन

भाव का अवलम्बन ही जीव का धर्म है । (जो लोग पैतृक धन-सम्पत्ति न पाने के कारण अपने को अभागा समझते हैं वे ईश्वर की अकृतज्ञ विद्रोही सन्तान हैं । वे ईश्वर की दी हुई शक्ति के अपव्यवहार से नाश को प्राप्त होते हैं और अपने जीव को पराधीन बनाकर व्यर्थ दुःखभागी बनते हैं)

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम् ।
एतद्विद्यात्समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥

यह हमारे शास्त्र की बात है । किन्तु हम ऐसे सुन्दर वाक्य का पूर्ण रूप से अनादर करके चलते हैं । सर्वदा आवश्यक कामों में सोलहो आने पराये ऊपर निर्भर करके अकर्मण्य जड़पिण्ड की तरह ज़िन्दगी बिताना घोर विडम्बना है । इसका अनुभव करके भी इस ओर हम ध्यान नहीं देते । उधर यूरोप की ओर देखिए । इँग्लेण्ड का भावी सम्राट् लडकपन से जहाज़ के खलासियों के साथ परिश्रम करके शरीर को ऐसा सबल स्वस्थ बना लेता है कि उसे, हज़ारों अनुचरों के रहते भी, किसी काम के लिए किसी का मुँह ताकना न पड़े ।

हम लोग नाम पैदा करने के बड़े शौक़ीन हैं । अतएव मैं प्रार्थना करके कहता हूँ कि काम के बिना नाम कभी नहीं होता, यह कुञ्जी हमको कभी न भूलनी चाहिए । प्रातःस्मरणीय, महापुरुषगण केवल धनोपार्जन करके ही अपना नाम नहीं अमर कर गये हैं । हमारे शास्त्र का शासन-वाक्य है कि स्वार्थपर और कृपण का नाम भी न लेना चाहिए । स्वार्थपरता न्याय की जड़ में कुठाराघात करती है । जो कुछ न्याय और कर्त्तव्य के विरुद्ध है वह क्षणस्थायी है । स्वार्थपर और कृपण के सामने चाहे कोई कुछ भी कहे, लेकिन पीछे लोग गालियाँ ही देते हैं । ज़िन्दगी भर यह दशा रहती है;

उसके बाद मरने पर मामूली जानवरों की तरह घड़ी भर में सारा संसार उसे भूल जाता है। जो लोग महान् हैं उनका मूलमन्त्र है—My fellowmen first, myself second अर्थात् मनुष्य-मण्डली, उसके पीछे मैं। ऐसे जो नामी महापुरुष हो गये हैं वे किसी सांसारिक विषय मे लिप्त न थे। मनुष्य-लोक के मामलों मे आवश्यकता भर मन लगाकर वे कीड़े, आग और चोरों की शक्ति से नष्ट या विकृत न होनेवाले अक्षय अजर अमर प्रेम के प्रचार के लिए अपना जीवन अर्पण कर गये हैं। ऐसे ही पुरुष, जिन्होंने संसार का आध्यात्मिक बल बढ़ाया है, संसार के पूजनीय हो रहे हैं—मरने पर भी उनका नहीं मरा। अतएव "महाजनो येन गतः स पन्थाः" इस वाक्य को स्मरण कर पहले के साधु महात्मा लोगों के पदाङ्क का अनुसरण करते हुए ज्ञानोपार्जन के साथ ही साथ मन-वाणी-काया से पराये हित मे लगे रहना ही इस जीवन का असल काम है। इससे इस लोक मे विमल सुख, परलोक में स्वर्ग और संसार में अनन्त काल तक कीर्त्ति प्राप्त होती है। मनुष्य-जन्म सफल हो जाता है।

स्त्री-स्वाधीनता आदि। पहले कहा जा चुका है कि स्त्रियों के सम्बन्ध मे हमे कुछ बातें यूरोपियनों से सीखनी होंगी। हमारा शास्त्र कहता है, "कन्याप्येवं पालनीया रक्षणीयातियत्नतः।" किन्तु इसका पालन प्राचीन समय मे हुआ करता था। इस समय कहीं कहीं स्त्रियों को स्वाधीन बनाने, पर्दा उठाने और लिखाने-पढ़ाने की कोशिश होने लगी है। कहीं कहीं "अल्पविद्या भयङ्करी" के अनुसार कुछ कुफल भी फला है। किन्तु क्या किया जाय? स्त्रियों की स्वाधीनता का अपव्यवहार भी कहीं कहीं पर ज़ोर शोर से होने लगा है। शरीर का रोग और समाज की कोई व्याधि एक ही चीज

है। आँखों में उँगली डालकर दिखाये विना प्रतीकार की बिलकुल आशा नहीं है। बँधे हुए जानवर को एकाएक छोड़ देने से वह अवश्य यथेच्छ व्यवहार की चेष्टा करेगा। अतएव यथासम्भव स्वाधीनता देकर ज्ञान-दानपूर्वक स्त्रियों को आदर की दृष्टि से देखना इस समय हमारा कर्त्तव्य है। याद रखिए, समुद्र मथने से पहले हलाहल किन्तु पीछे अमृत निकला था। कुछ कुदृष्टान्तों के कारण उन्नति के मार्ग में काँटे रूँधना कभी बुद्धिमानी नहीं है। पाश्चात्य जातियों से स्त्रियों को समुचित सम्मान देकर और सम्मान पाने योग्य बनाकर हमें उन्नति के मार्ग में अग्रसर होना चाहिए। यथेष्ट पढ़ने-लिखने पर स्त्रियाँ कभी लक्ष्यभ्रष्ट नहीं हो सकतीं।

विवाह। विवाह के विषय में भी हमें पाश्चात्य जगत् के दिखाये मार्ग पर चलना चाहिए। सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार शाटोब्रियाँ ने अपने एक ग्रन्थ में व्यंग्य के तौर पर लिखा है—"घूमते घूमते पूर्वाञ्चलस्थ भारतवर्ष नामक देश में पहुँचा। वहाँ दुखी सुखी, ग़रीब अमीर सब व्याहे हुए हैं। व्याह न करना महापाप गिना जाता है। जातीय धर्म के अनुशासन से हर एक को व्याह करना पड़ता है। इस कारण, मैंने भी एक व्याह कर लिया; इत्यादि।" इस व्यंग्य का मतलब यही है कि पृथ्वी पर ऐसा विचित्र देश उन्होंने कहीं नहीं देखा कि जहाँ भरण-पोषण के लिए कुछ ठिकाना या जीविका चलाने की योग्यता हो या न हो, किन्तु एक व्याह करना ज़रूरी समझा जाता हो। यह बात तो किसी को समझानी ही नहीं पड़ेगी कि असमर्थ होने पर भी व्याह करने से सर्वदा व्यक्तिगत झगड़ा उठकर सारे समाज को घोर विपत्ति में डाल देता है। प्रसिद्ध समाज-तत्त्ववेत्ता और चिकित्सा-विद्या-विशारद ऐकून साहब कहते हैं—"Marriage often interferes with

work and success in life, and its result is that the poor man never reaches the bodily health or social happiness he might otherwise have reasonably expected."—*W. Acton* पाश्चात्य जगत् का हर एक भद्रपुरुष इस बात को अच्छी तरह समझता है कि विवाह के द्वारा अनेकों के शरीर और मन की और उसके द्वारा समाज की उन्नति में विशेष विघ्न उपस्थित होता है। हमारे देश की दुर्दशा और दुःख-दारिद्र्य अभाव आदि का एक मूल कारण असमर्थ-विवाह भी है। इस बारे में बहुत शीघ्र सावधान हो जाना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। इसके अलावा यूरोप और अमेरिका में जो स्त्री पुरुष अविवाहित रहते हैं उन्हीं में अधिकतर परोपकारी समाजसेवक देख पड़ते हैं। उन्हीं को ही यूरोप और अमेरिका की इस उन्नति का प्रधान सहायक कहना चाहिए। सभी अगर स्त्री-पुत्र-परिवार लेकर झगड़े में पड़ जायँ तो फिर समाज और देश की ओर कौन ध्यान देगा? पाश्चात्य अविवाहित नर-नारी-गण केवल स्वदेश की सेवा ही नहीं करते; वे पृथ्वी के अन्य अनेक देशों में भी लोकसेवा कर रहे हैं। क्षणिक सुख की सामग्री विवाह से वञ्चित होने की बात सुन कर मुझ पर बहुत से लोग खड्गहस्त हो सकते हैं, किन्तु कुछ दिन के सामान्य उपभोग की बात छोड़ कर, संकीर्ण-स्वार्थपरता-शून्य हृदय से ऊपर की ओर दृष्टि कर, ज़रा सोच कर देखने से अनायास ही समझा जा सकता है कि उससे—विवाह न करके लोकसेवा और ईश्वराराधन में लगे रहने से—कैसा पवित्र और निर्मल सुख मिलता है। आश्चर्य की बात तो यह है कि हमारे देश के अनेक शिक्षित भाई भी दूरदर्शिता को तिलाञ्जलि देकर अक्षम पुत्र को ब्याह के बन्धन में बाँधते कुछ भी संकोच नहीं करते। अनेक लोग कहते

हैं, "क्या करें ? वृद्धा माता और स्त्री को सन्तुष्ट करने के लिए ऐसा करना पड़ा।" कैसी अन्धेर की बात है ! भविष्य पर विचार करने की शक्ति न रखनेवाली स्त्रियों के कहने से अनायास ही एक नाबालिग़ हिताहित-बोधशून्य बालक को हाथ-पैर बाँध कर पानी मे डाल देने के समान निष्ठुर काम करने के लिए इनका विवेक राज़ी हो जाता है। सारे देश का ख़याल न करें; कुछ एक रोगी अपुष्ट ग़रीब सन्तानों के द्वारा दुःखभार से दबी हुई जाति के सिर पर और भी भारी बोझ रखने की बात पर भी ध्यान न दें; किन्तु परिवार और वंश की भावी दुर्दशा का भी ख़याल क्या इन्हें नहीं होता ? यूरोप, अमेरिका मे अक्षम आदमी की कौन कहे, दो सौ रुपये महीने के नौकर तीस वर्ष के युवक से भी ब्याह का ज़िक्र कीजिए तो वह हँस कर कहेगा—"अभी ब्याह ? कैसे सर्वनाश की बात है !" और एक बात है। समाज में कुछ ऐसे आदमियों की बड़ी ज़रूरत रहती है जो किसी तरह पीछे हटना न जानते हों। केवल वे ही समाज के लिए, देश के लिए, जाति की उन्नति के लिए प्राण तक देने को तैयार रह सकते हैं। यह बड़ा ही गम्भीर विषय है। इसकी पूरी तौर से आलोचना करने का यह स्थान नहीं है। केवल मोटी मोटी कुछ बातें इशारे के तौर पर यहाँ कह दी गई हैं। पाठकों से यही अनुरोध है कि एक बार वे इस पर विचार कर देखें। बाल्य-विवाह के सम्बन्ध में तो अधिक कहने की ज़रूरत नहीं है। हमारे ही यहाँ के एक महाशय लिखते हैं—
"Early marriage is a gigantic cancer at the hearts' core of our society, the eradication of which is essental as the first step to national regeneration." यह निस्सन्देह गम्भीर विवेचना का विषय है।

पासिफ़िक (Pacific) जहाज़। न्यूयार्क में कुली का झंझट देखकर रास्ते में उस विडम्बना से बचने के लिए बहुत ज़रूरी कुछ चीज़ों को पास रख कर सब सामान एक-दम सानफ्रांसिस्को को रवाना कर दिया था। कागज़ की रसीद के बदले चमड़े से लटकाये हुए कई पीतल के निदर्शन (Token) मिले थे। सानफ्रान-सिस्को में उन्हें ही फेर कर अपना सब असबाब सँभाल लिया। इस बारे में अमेरिकन रेलवे ने बड़ी अच्छी व्यवस्था कर रक्खी है। लन्दन से यार्क जाने में लगेज को ब्रेकवान (Break-van) में रखवा देने पर भी निश्चिन्तता नहीं होती। रास्ते के (Changing) स्टेशनों में अगर उस लगेज की ख़बर न लेते रहिए तो गड़बड़ हो जाना बहुत सम्भव है। और यहाँ ४,००० मील के लगभग दूरी पर बहुत दिन पहले असबाब भेजने से भी कुछ गड़बड़ी नहीं हुई। यहाँ से उक्त जहाज़ पर चढ कर स्वदेश-यात्रा की। कई एक मिशनरी मर्द और औरतें चीन और तिब्बत में धर्मप्रचार करने जा रहे थे। वे ही मेरे सहयात्री थे। उनको जहाज़ पर चढाने के लिए बहुत से लोग 'जेटी' पर खड़े थे। यात्रियों का सब असबाब जहाज़ पर पहुँच चुकने पर वे लोग सम-स्वर से उत्तेजक धर्म-सङ्गीत गाने लगे। धर्मप्रचारक लोग जहाज़ के ऊपर थे और बन्धु-बान्धव-गण नीचे थे। उन्हें खड़े होकर आँसू-भरी दृष्टि से ईसा के क्रूस पर चढ़ने आदि आत्मत्याग की महिमा गाकर विपत्ति-भवन विदेश-यात्रा के लिए धर्मप्रचारकों के हृदय में बल-सञ्चार करते देख कर हम सब मुग्ध हो गये। क्रिस्तान धर्म-वीरगण धन्य हैं जो हज़ारों विघ्न-बाधायें आपद-विपद रहते भी ऐसी जगहों में जाकर ईसा की महिमा का प्रचार करने में लगे

हुए हैं । पुरुष पादरी लोगों में से हर एक के पास पोशाक के साथ साथ एक एक बिनी हुई लम्बी चोटी थी । चीनी भाषा में इस चोटी को 'किओ' कहते हैं । पूछने से मालूम हुआ कि किओ-हीन मनुष्य को देख कर उसे एक अस्वाभाविक विचित्र व्यापार समझ कर वे लोग उसके पास जाना या उसे अपने पास आने देना नहीं चाहते । इसी कारण वे भी एक एक "False Kio" लिए जा रहे थे । किन्तु आज उन्हीं चीनियों की वह लम्बी चोटी कहाँ है ? ४०० वर्ष की विदेशी गुलामी का चिह्न चोटी-सम्राट् के साथ ही साथ इन लोगों ने एक दिन में उड़ा दी । इसी को एकता और विश्वास के माफ़िक़ काम करने की शक्ति कहते हैं । इस जहाज़ का प्रबन्ध बहुत अच्छा था । "प्रशान्तसागर" सचमुच ही प्रशान्त है । जहाज़ों में सर्वत्र जैसे गुफा के भीतर रात बितानी पड़ती है । किन्तु प्रशान्त मूर्त्ति पैसिफ़िक सागर के जहाज़ पर ऊपर के डेक पर सुन्दर कमरा ऐसा दरवाज़ेदार केबिन बना है । आँधी की आशङ्का होती तो ऐसी व्यवस्था न की जाती । इसके सिवा इस जहाज़ पर रोशनी, पलँग, खाने-पीने आदि का प्रबन्ध बहुत ही उत्कृष्ट था । दिन को डेक के ऊपर तरह तरह के खेल, धूमपान के कमरे में बातचीत गपशप होती थी । रात को सेलून पर नाच गाना बजाना आदि होता था । इसमें सत्रह दिन बीतते जान भी नहीं पड़े । एक अँगरेज़ के और मेरे अलावा चालीस अमेरिकन थे । ये बहुत ही खुली तबीयत के खुशमिज़ाज आदमी थे । कभी कभी नीचे के खण्ड में उतरकर जहाज़ की मेशीनरी देखते थे । एक जगह पर स्क्रू (Screw) के हर एक चक्कर (Revolution) की संख्या एक जगह पर निर्दिष्ट हो रही थी । वह एक मिनट में १,४०० मर्तबा के हिसाब से

थीं। कभी कभी शाम को भोजन करने के उपरान्त मिशनरियों के साथ तर्क-वितर्क होता था। कप्तान और अन्यान्य यात्री मुझे भिड़ा कर आप मज़ा देखते थे। कप्तान कहते थे कि जिस देश मे रमाबाई जैसी स्त्रियाँ पैदा होती हैं वहाँ अमेरिकन धर्मप्रचारक क्या करने जाते हैं? रमाबाई इसी जहाज़ पर जापान से चीन गई थीं। उनके ऊपर कप्तान की बड़ी श्रद्धा थी। वह और अन्यान्य यात्री कहते थे कि अमेरिका के अनेक स्थानों मे रमाबाई-क्लब स्थापित हैं। १८० डिग्री में (180th Parallel of Longitude) बृहस्पतिवार १४ वीं अप्रैल को छोड़कर शुक्रवार १५ वीं अप्रैल मानी गई। नहीं तो २४ घन्टा समय बढ़ने के कारण जापान में पहुँच कर तारीख़ के शुमार मे गड़बड़ी होती। उक्त हिसाब से अमेरिका को आते समय इस स्थान पर दो दिन की एक तारीख़ गिनी जाती है। दूसरे दर्जे मे सङ्कटापन्न बीमार एक चीनी यात्री स्वदेश मे मरने के लिए जा रहा था। रास्ते मे ही उसकी मृत्यु हो जाने से उसके एक आत्मीय ने जाहज़ के डाक्टर को उसकी फ़ीस देकर शव की आँतें वग़ैरह निकलवा कर उसे बक्स में बन्द कर लिया। सुना कि मृत्यु निकट अनुमान कर अमेरिकाप्रवासी चीनी लोग फुर्ती के साथ अपने देश को भागते हैं। पहले कहा जा चुका है कि जहाज़ के अधिकांश यात्री जापान जानेवाले अमेरिकन थे। केवल मैं और एक अँगरेज़ हांगकांग तक आनेवाले थे। जो अमेरिकन यात्री जापान में उतरे उनमे दो आदमी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने जा रहे थे। ये जापान में कुछ दिन रह कर कलकत्ते आये थे। पासिफ़िक जहाज़ पर भारतवर्ष के संबन्ध मे जो इनका एक उच्च भाव देखा था वह भाव यहाँ पहुँचकर देश की दशा देख कर बिलकुल ही बदल गया जान पड़ा। ये कभी अपने देश से बाहर नहीं निकले थे। जापान

मे पहुँचकर पूर्वी रङ्ग ढङ्ग देखकर ये तो जैसे सन्नाटे में आ गये। ये लोग कभी कल्पना भी नहीं कर सके थे कि एक समुद्र के उस पार इतना परिवर्त्तन देखने को मिलेगा ।

—— —

जापान ।

याकोहामा । अमेरिका छोड़ने के बाद अठारहवें दिन सवेरे ५,२०० मील का समुद्र पार होकर जापान के प्रधान वन्दरगाह याकोहामा में पहुँचा । जापानी उपकूल के पास पासिफ़िक सागर ५८ मील गहरा है । पश्चिमी ओर अनेक प्रकार के पूर्वी जहाज़ों से भरा हुआ यह वन्दरगाह खूब गुलज़ार है मछली पकड़नेवाले छोटे जहाज़ और 'डाँड़' तथा 'पाल' से चलनेवाले जंग-जहाज़ एक नई ही चीज़ थे । 'शम्पेन' नाव पर किनारे पहुँच कर आदमी के द्वारा खींची जानेवाली जिनी-रिक्शा गाड़ी पर चढ़कर नगर देखने निकला । इस गाड़ी को एक ही आदमी बड़े वेग से घसीट ले जाता है । अगर अधिक मेहनत करनी पड़ती है तो बीच बीच में शराब पी लेता है । ये मनुष्य-घोड़े तली में नरम घास-दार एक तरह का जूता या मोज़ा पहनते हैं । सन् १८५३ में याकोहामा एक छोटी सी मछुओं की बस्ती थी । इस समय सुन्दर नगर बन गया है । जनसंख्या ७०,००० के लगभग है । अमेरिकनों की आवाजाही खूब रहने के कारण इस नगर में एक प्रकार की मिश्रित जाति पैदा होगई है । इस जाति के लोग खूब सुन्दर और सुडौल होते हैं । नगर में निम्नलिखित दृश्य प्रधान हैं । समुद्र का वेग कम करने के लिए वप्र (Breakwater), शहर की तरहटी से कानागावा तक दो मील का बाँध (Causeway), जल की कल (Waterworks),

विदेशी लोगों की ब्लफ़ (Bluff) नाम की बस्ती, सरकारी बाग़, आर्सेनल, बेकार ग़रीबों के लिए कारख़ाना और आश्रम (Workhouse), कई एक देव-मन्दिर और छोटे से पहाड़ पर बना हुआ घन्टा-टावर, (इस घन्टे से नगर भर की घड़ियाँ मिलाई जाती हैं। आग लगने की सूचना भी इसी घन्टे से दी जाती है।) नगर में सात विदेशी बैङ्क और पाँच अस्पताल हैं। अस्पतालों में एक देशी है। पाँच जापानी थियेटरों में एक उत्कृष्ट श्रेणी का है। सरकारी बाग़ के पास सवेरे से दोपहर तक एक बाज़ार लगता है। तीसरे पहर भी सागपात बिकते और नीलाम होता है। नगर के 'मत्सुकागेगाको' स्कूल को देखने गया। वहाँ के शिक्षकों से बातचीत करके बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई। स्कूल में लड़के और लड़कियाँ एक साथ पढ़ते हैं। देशी भाषा के अलावा साधारण अँगरेज़ी भी सिखलाई जाती है। विद्यार्थी लड़के और लड़कियाँ पतले कागज़ (Tssue Paper) पर कूची से लिखते हैं। शिक्षक की आज्ञा से एक बालक और एक बालिका ने मेरे सामने लिखकर दो कागज़ मुझे दिये। लिखने का ढँग फ़ारसी की तरह उल्टा और ऊपर से नीचे की ओर है। याकोहामा में मसान और क़बरिस्तान दोनों हैं। मसान का ख़र्च धनी, ग़रीब और मध्यवित्त सबसे भिन्न भिन्न निर्दिष्ट हिसाब से लिया जाता है। दाह के बाद चिता की भस्म वहाँ गाड़ दिया करते हैं। कोई कोई मुर्दे का दाँत घर ले आते हैं। शव बैठा ही बैठा गाड़ा जाता है। इसी से क़बरिस्तान में समाधियाँ ख़ूब पास ही पास हैं। इसके सिवा विदेशी क्रिस्तान-जातियों के लिए अलग क़बरिस्तान है। नगर में बहुत से चाया अर्थात् चाय पीने के अड्डे हैं। इन सब स्थानों में औरतें ही दूकानदारी करती हैं। इन औरतों का चाल-चलन वैसा अच्छा नहीं जान पड़ता। यहाँ का सबसे बढ़कर कुत्सित दृश्य है

'जानकिनो' नाच। इसमें एक स्त्री बैठकर सितार ऐसा एक बाजा बजाती है और तीन औरतें नाचती हैं। ये नाचनेवालियाँ धीरे-धीरे कपड़े वगैरह उतार कर बिलकुल नग्न हो जाती हैं। भद्रपुरुषों के सामने जैसा यह अश्लील दृश्य दिखाया जाता है वैसा पृथ्वी की सभ्य या असभ्य किसी भी जाति में नहीं देख पड़ता। इस वीभत्स व्यापार का सम्बन्ध काफ़ी पीने के अड्डों से होने के कारण विदेशी भद्रपुरुष बिना जाने नाच देखने लगते हैं, किन्तु पीछे यह दृश्य देखकर खीझकर उठ जाते हैं। रेल-स्टेशन पर यात्रियों की काठ की तली-वाली चट्टियों की खटखटाहट के मारे कान नहीं दिया जाता। स्त्री, पुरुष और धर्मयाजकों की विचित्र पोशाकें देखने में बड़ा मजा आता है। स्टेशनों के सब कर्मचारी भद्र और भव्य हैं।

टोकियो। रेल की पटरी के दोनों किनारे गाँव, अन्न के खेत और मनोहर पुष्प-शोभित वृक्ष आदि देखते देखते १८ मील का रास्ता तय करके योकोहामा से वर्त्तमान राजधानी टोकियो में पहुँचा। यही जापान की पहली रेल है। सन् १८७२ में यह लाइन खोली गई थी। स्टेशनों के नाम अँगरेज़ी और जापानी भाषा में लिखे रहते हैं। टोकियो का पुराना नाम है जेडो। इसका घेर २९ वर्ग-मील और आबादी चौदह लाख के लगभग है। सन् १८६८ में * प्राचीन प्रथा उठ जाने पर सम्राट् साइकियो † से यहाँ आये

* इस समय के पहले 'शोगुन' अर्थात् सैन्याध्यक्ष ही राज्य के हर्त्ता-कर्त्ता-विधाता बन बैठे थे और इँगलेण्ड की प्राचीन फ्यूडल-प्रथा (Feudal System) की ऐसी व्यवस्था हो रही थी। सम्राट् तो एक प्रकार से न होने के बराबर थे।

† प्राचीन राजधानी क्यूटो का नाम साइकियो रख दिया गया था। इसका अर्थ है पश्चिमी राजधानी।

और तभी से इसका नाम टोकियो (अर्थात् पूर्वी राजधानी) रक्खा गया। राजधानी समतल भूमि के ऊपर है। बीच बीच में ५० से १०० फुट तक ऊँचे छोटे छोटे पहाड़ भी देख पड़ते हैं। नगर के भीतर से एक नदी और कई नहरें निकली हैं। नदी के ऊपर लकड़ी के बने पाँच पुल हैं। नगर के केन्द्रस्थ "निहोनबाशी" या "सूर्योदय-सेतु" से चारों ओर की दूरी का शुमार किया जाता है। थोड़े दिन पहले टोकियो में विदेशियों पर दारुण अत्याचार होते थे। अब उनके लिए अलग सुरक्षित बस्ती बना दी गई हैं। रास्ते बहुत सीधे नहीं हैं। कुछ एक तो बहुत ही तंग हैं। प्रधान सड़क का नाम है गिञ्जा। उसके किनारे अनेक ईंटों के मकान हैं। नहीं तो साधारणतः सब लकड़ी के बने घर हैं। इसी रास्ते मे ट्रामगाड़ी चलती है। यहाँ की सड़क पर कभी कभी बैलगाड़ी या टट्टू देख पड़ते हैं। चार बड़े पार्क हैं; उनमें से एक मे विस्तृत जलाशय है। दूसरे में दयादेवी का मन्दिर और सुन्दर पुष्प-शोभित अनेक 'सुकारा' या 'चेरी' के पेड़ हैं। तीसरे का नाम है शिवा। यह ३६० बीघे में है। यहाँ शिवा का मन्दिर है। आँगन में बहुत से कसौटी के पत्थर फैले हुए हैं। वहाँ रक्खा हुआ जूता पहन कर और अपना जूता वहीं छोड़ कर भीतर प्रवेश करना पड़ता है। वहाँ जाकर देखिए, धर्मयाजक लोग एकत्र बैठे हुए धर्मग्रन्थ पढ़ते हैं और उपासक लोग सामने बैठे भक्ति के साथ सुनते हैं। सम्राट् का उपासना का कमरा और उपासना का एक लिपटा हुआ कागज़ दिखलाया गया। नगर के बीच में सम्राट् का, काठ का, महल है। उसका हाता १,५०० बीघे से अधिक है। तेहरे भारी भारी पत्थरों से बनी दीवार है। और चौड़ी खाई चारों ओर है। पहले दो दीवारों के बीच की जगह में उमरा लोग आकर साम्राज्य की प्रथा के अनुसार साल में छः

महीने के हिसाब से रहते थे। शेप छः महीने साम्राज्य की शान्ति के लिए ज़ामिन के तौर पर उनका परिवार अटका रक्खा जाता था। अब वहाँ सरकारी आफ़िस वगैरह हैं। बिलकुल भीतर मिका-डोका महल और बाग़ हैं। राजधानी में एक विश्वविद्यालय और ७०० के लगभग सरकारी तथा बेसरकारी स्कूल हैं। इनमे दो हज़ार के लगभग शिक्षक काम करते हैं। इस काम में राजकोष से सोलह लाख 'येन' सालाना ख़र्च किया जाता है। नगर की शान्ति-रक्षा के लिए ५,००० और आग बुझाने के लिए २,००० पुलिस है। शहर का स्वास्थ्य बुरा नहीं है। यहाँ १,००० के क़रीब साधारण हम्माम हैं; उनमे नित्य तीन लाख के लगभग आदमी स्नान करते हैं। नहाने मे बहुत ही गर्म पानी का इस्तेमाल किया जाता है। स्नान करनेवाले को केवल एक 'सेन' देना पड़ता है। वह भी देने में जो असमर्थ हैं वे सूर्यास्त के समय घर के सामने सड़क पर स्नान कर लेते हैं। लेकिन पुलिस देख लेती है तो पकड़ ले जाती है। नवीन आईन के अनुसार यों नहाना निषिद्ध है। स्नान के साथ ही देह दबाने का भी चलन है। अन्धे लोगों की यही जीविका है। पहले इन सब स्थानो मे स्त्री और पुरुष बिलकुल नङ्गे होकर एक ही जगह स्नान करते थे। इसमें किसी प्रकार का संकोच कैसा, लज्जा को ही वे अस्वाभाविक समझते थे। अब आईन बनाकर यह प्रथा रोक दी गई है। वेश्याओं के लिए "गाङ्गिरो" नाम की एक अलग बस्ती है। वेश्याओं से टेक्स लिया जाता है और उन्हें अनुमति-पत्र (गर्म लोहे की सलाक़ से लिखा हुआ 'फण्डा' या टिकट) दिया जाता है। यह वेश्याओं की बस्ती चारों ओर खाईं से घिरी हुई है। उस खाई के बाहर वेश्यावृत्ति करने से उन्हें अदालत से कठिन दण्ड भोगना पड़ता है। सन् १८५५ में

इस नगर में १८ दिन तक भूकम्प हुआ था। उसके साथ ही आग भी लगी थी। इसमें अगणित जीव मर गये और नगर का अधिकांश नष्ट होगया। दारुण शीत के समय बराबर मैदान में कष्ट भोग कर लोगों ने अपने प्राण बचाये थे।

जापान की साधारण अवस्था। विगत रूस-जापान-युद्ध मे जापान ने पृथ्वी भर को सन्नाटे में डाल दिया है। केवल तीस चालीस बरस में इतनी उन्नति जापान के सिवा और किसी देश के इतिहास में नहीं देख पड़ती। सैन्यआदि की सुव्यवस्था, लड़ाई के मैदान में शूरवीरता, दया-दाक्षिण्य आदि सद्गुणों से काम लेना, अभ्युदय के समय अविचलित-चित्त बने रहना, स्वदेश-प्रेम, अप्रतिहत उद्यम, उत्साह और परिश्रम, विवेचना और दूरदर्शिता आदि दिखाकर जापान ने यूरोप तक को विस्मित बना दिया है। वह अभी इटली और एशिया के समकक्ष हो रहा है; भविष्यत् में कौन कह सकता है कि जापान भी इँगलैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि बड़ी शक्तियों के बराबर की शक्ति न बन जायगा। एक अँगरेज़ का मन्तव्य नीचे उद्धृत किया जाता है—

In the arts of peace, not less than in those of war, has this Island Empire rushed to the front in the short space of thirty years. While it has astonished the world by the efficiency and perfection of its naval and military organisation, it has not less charmed the world by its humanity in battle, and by its moderation in the hour of victory. Success has not for a moment caused it to lose its head It has shown wisdom and forethought as well as grit and clash; and looking to the patriotism of the people, the able character of their rulers, the unflagging national industry, the resources of the country and the methods by which its present position has been attained, it seems certain that Japan will continue the course of her

marvellous advance, and will speedily become one of the most important factors in the fashioning of the world's history. Already she may be said to have mounted to the level of Italy and Russia, she will not, we may be sure, fail to attain the higher level occupied by Great Britain, France, Germany and the United States "—

JOSEPH WHITAKER, F S A

जापान को स्थानीय लोग 'दाई निप्पन' कहते हैं। निप्पन शब्द का अर्थ है सूर्य का उत्पत्तिस्थान। चीनी लोग इस देश को "जि:-पेन" (उनके मतानुसार जहाँ से सूरज आते हैं) कहते थे। इसी शब्द के अनुसार पश्चिमी लोग इसे जापान कहने लगे। चार बड़े और ४,००० से अधिक छोटे छोटे टापुओंवाले इस साम्राज्य का घेरा १५ लाख वर्ग-मील के लगभग होगा। यह दोनों ब्रिटिश-द्वीपों की अपेक्षा कुछ बड़ा है। यहाँ पाँच करोड़ के लगभग आदमी बसते हैं। जापान इस पृथ्वी का बहुत पुराना साम्राज्य है। जापान का २,५०० वर्ष का लिखा हुआ इतिहास है और मिकाडो अर्थात सम्राट् की १२१ पीढ़ियाँ तभी से बराबर सिंहासन पर बैठती आती हैं। जापान के वर्त्तमान सम्राट् सन् १९१२ में सिंहासन पर बैठे थे। हमारे यहाँ के सूर्य-वंशी चन्द्रवंशी नरपतियों की तरह मिकाडो के भी आदि-पुरुष देवता थे। टर्की के सुल्तान को जैसे यूरोपियन लोग "सब्लाइम पोर्ट" अर्थात् "महिमान्वित फाटक" कहते हैं वैसे ही जापानी लोग मिकाडो को "महोच्च द्वार" कहते हैं। डेढ़ करोड़ पौण्ड के लगभग राजकर वसूल होता है। खर्च इससे कुछ कम होता है। ऋण चार करोड पौण्ड के लगभग था। शान्ति के समय ८०,००० सेना रहती है; किन्तु युद्ध के समय २६ लाख तक जमा की जा सकती है। जहाज़ी सेना १०,००० है। जंगी जहाज़ ३१ हैं।

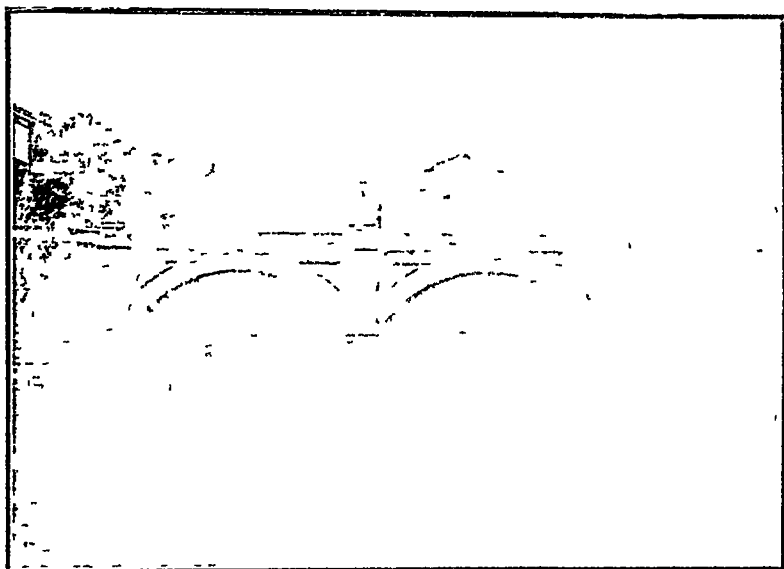
उनमें एक लौहयान है। यहाँ भी हर एक प्रजा को बाध्य होकर कुछ दिन फ़ौज का काम सीखना पड़ता है। अगर कोई चाहे तो वह एक निर्दिष्ट रक़म देकर छुटकारा भी पा सकता है। स्थलयुद्ध और जलयुद्ध की शिक्षा के लिए पाँच स्कूल हैं। रोज़गारी जहाज़ सब मिलाकर ७५० हैं। इनमें २०० से अधिक स्टीमर, ८० जहाज़ और बाक़ी जंक-श्रेणी के जलयान हैं। जापान के रुपये को येन कहते हैं। आकार में यह अमेरिकन डालर के समान होता है। पहले इसका मूल्य कुछ निश्चित न था; एक्सचेञ्ज के हिसाब से चलता था। किन्तु अब सुना जाता है कि सोने की दर पर इसका चलन निश्चित हो गया है। पैसे को सेन कहते हैं। सेन के १/१० को 'रिन' कहते हैं। यहाँ भी दाशमिक प्रथा प्रचलित है। यूरोपियन जातियों की तरह जापानियों ने भी अपने यहाँ के निपट दरिद्र, असहाय, बे-मा-बाप के, स्वजनहीन व्यक्तियों के भरण-पोषण के लिए विशेष व्यवस्थायें कर दी हैं। इस कार्य के लिए प्रादेशिक सरकार के ख़ज़ाने और साम्राज्य के धनभाण्डार से तो सहायता मिलती ही है; उसके अलावा ज़मींदारों के ऊपर सालाना टेक्स भी लगा है। इसमें एक करोड़ 'येन' से अधिक जमा हो जाता है। इस व्यवस्था के द्वारा साल में ३०। ३२ लाख ग़रीबों का भरण-पोषण हुआ करता है। साम्राज्य भर में १३५ बड़े बैंक हैं। उनके सिवा उनकी शाखायें (Branches), ६०० से अधिक सेविंग बैंक और छोटे बैंक हैं। इँगलेंड के रथचाइल्ड-परिवार की तरह यहाँ भी ३०० वर्ष का प्राचीन एक धनी परिवार है। उनके हाउस का नाम 'मित्सुई कम्पनी' है। इन्होंने पहले एक तरह की शराब (साके) बनाकर और बेंचकर बहुत रुपया पैदा कर लिया। अन्यान्य बड़े रोज़गारों में इनका एक प्रधान बैंक और

३० शाखा-बैंक हैं। उनमें १,००० से ऊपर क्लर्क काम करते हैं। ३०० वर्ष से यह सारा परिवार एक ही में रहता है। सारी सम्पत्ति में सबका समान अधिकार है। लाभ-हानि के साथ किसी का सम्बन्ध नहीं है। परिवार का हर एक आदमी एक निर्दिष्ट मासिक वृत्ति पाता है। भाषा के बारे में जापान की प्रशंसा नहीं की जा सकती। कम से कम यह तो जरूर ही कहना पड़ेगा कि ऐसे विकट शब्दों का व्यवहार शायद ही किसी देश की भाषा मे होता हो। पाठकों की जानकारी के लिए कुछ शब्द यहाँ पर लिखे जाते हैं। मैं = वाताकुशी; हम लोग = वाताकुशी-दोमो, एक = हितोत्सू: अस्तित्व = गोजारिमास; करना = कोशिरा-येमास; कलसी = मिद्जुमागो। छोटे छोटे शब्द भी हैं, किन्तु संख्या मे ऐसे लम्बे लम्बे शब्द ही अधिक हैं। छोटे शब्द भी कूछ उद्धृत किये जाते हैं। चित्र = ए; थाली = सारा; सुवर्ण = किन्; चाँदी = गिन्; कुर्सी = ईसु; काग़ज़ = कामी; क़लम = पेन; रोशनाई = इंक; जापानी स्याही = सुमि; ओवर-कोट = काप्पा; सूर्य = हि; प्रातःकाल = आपा; दस = तो; हज़ार = सेन, दस हज़ार = मान; दस लाख = ओकू; लिखने की कलम = फूदे इत्यादि। अन्यान्य भाषाओं की तरह जापानी भाषा में भी पेन, इंक आदि अनेक अँगरेज़ी शब्द चल गये हैं। जापानी भाषा में क़सम का प्रतिशब्द नहीं है। यह उनके लिए कम प्रशंसा की बात नहीं है। नर्म काग़ज़ या कपड़े से मढ़ा हुआ लकड़ी का टुकड़ा ही जापानियों का तकिया होता है। वह छोटा इतना होता है कि केवल गर्दन उस पर रहती है, सिर नीचे लटका करता है। स्त्री-पुरुष दोनों की पोशाक विचित्र है। सिर ढकने की कोई चीज़ किसी के नहीं रहती। केवल पुलिस के सिर पर टोपी देख पड़ती है। उनके सिवा सब बंगालियों की तरह सिर

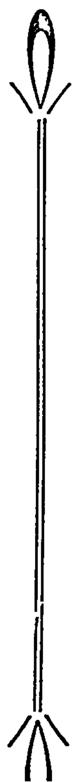
खोले रहते हैं। बाल सँवारने का स्त्री और पुरुष दोनों को बड़ा शौक़ है। रमणियाँ खूब लम्बे घने बालों में तेल लगाती हैं। स्याने लोगों के सिर के बाल तीन जगह से मुँड़े होते हैं। बीच में टापुओं की तरह तीन चोटियाँ देख पड़ती हैं। आज-कल अनेक स्त्री-पुरुष यूरोपियनों की पेशाक पहनने लगे हैं। राजकर्मचारियों को यूरोपियन पेशाक अवश्य ही पहननी पड़ती है। स्त्रियाँ देखने मे खूब सुन्दरी होती हैं। किन्तु व्याह के बाद दाँत काले करके और भौंहें मुँड़ाकर वे अपने सौन्दर्य को बहुत कुछ नष्ट कर डालती हैं। वर्त्तमान सम्राट् की माता के दाँत सफ़ेद ही रहे; उन्होंने काला मसाला दाँतों पर कभी नहीं मला। उनकी देखादेखी अब शहरों में रहनेवाली भद्रमहिलायें दाँत काले नहीं करतीं। किन्तु देहातों में अभी दाँत काले करने का वैसा ही चलन है। स्त्रियाँ मुँह में पाउडर और ओठों में लाल रंग लगाती हैं। तीन साल तक के बच्चों के सिर मुड़े रहते हैं। सिर खुले रखने के अलावा जापानी लोग बहुत कुछ हिन्दुस्तानियों से मिलते-जुलते हैं। वहाँ उच्च और नीच दोनों श्रेणी के लोगों की आकृति और प्रकृति में विशेष अलगाव देख पड़ता है। निम्नश्रेणी के लोग गर्मियों में केवल कमर तक ढके रहते हैं। जापानी लोग हमारी तरह भोजन को 'भातखाना' कहते हैं और "धूम-पान" शब्द का व्यवहार करते हैं। ये लोग बंगा-लियों की तरह मछली-भात खाकर ज़िन्दगी बिताते हैं। जापान में मांस मिलना कठिन है। बौद्ध साधक लोग यहां चाय पीकर रात को जागते थे। वे ही इस देश मे चाय लाये थे। अब तो देश में चाय की बड़ी ही भरमार है। चीना लोगों की तरह जापानी भी चाय पीते हैं। इस राज्य में भी पहले यूरोपियनों में से पोर्च्युगीज़ लोग ही आये थे। वे सन् १६०० में यहाँ अपने साथ तम्बाकू

लाये थे । परन्तु सम्राट् की आज्ञा के अनुसार उसका खाना-पीना निषिद्ध था । पीछे से सन् १८५१ में उस समय के मिकाडो की अनुमति से तम्बाकू पीने का चलन होगया और अब हमारे देश की तरह आने वाले की ख़ातिर तम्बाकू से की जाती है । यह विश्वास भी भारत ही के समान जापान मे है कि पारलौकिक कल्याण के लिए पुत्र का होना परम आवश्यक है । स्त्रियों के लिए भी यह नियम है कि वे लडकपन मे मा-बाप के, जवानी में स्वामी के और रँडापे मे पुत्र के अधीन रहें । पूर्व पुरुषों का वार्षिक श्राद्ध भी होता है । स्त्रियाँ भारत की तरह सम्पूर्ण रूप से पुरुषों के अधीन होने पर भी वे "गृहलक्ष्मी" कहलाती हैं । १६ बरस के लड़के के साथ १३ बरस की लड़की का ब्याह कर दिया जाता है । लड़कीवाले को बहुत ख़र्च करना पडता है । जापानी लोग ब्याह के बाद कन्या के गोत्र बदल जाने को उसके मरने के समान मानते हैं । मरने पर जैसे घर की सफ़ाई होती है वैसे ही सफ़ाई कन्या का ब्याह हो जाने पर की जाती है । यहाँ की तरह वहाँ भी ब्याह के दलाल हैं । वे ही दोनों पक्ष के बीच मे पड़कर ब्याह की बातचीत पक्की करते हैं । छः साल छः महीने छः दिन की अवस्था में बालक को विद्यारंभ कराया जाता है । पहले यहाँ डोलियों (कागो) और पालकियों (नरीमन) का चलन था और उच्च श्रेणी के आदमियों के सामने नीच जाति के आदमी घोड़े पर चढ़कर नहीं निकल सकते थे । जापान में, दोनों जानुओं पर दोनों हाथ रखकर नमस्कार और पृथ्वी पर पड़कर प्रणाम करने की रीति प्रचलित थी । घर की मालकिन घर में जब लौट कर आती है तब चाकर-नाकर और सन्तानगण दरवाज़े पर जाकर भूमिष्ठ होकर उसे प्रणाम करते हैं । दूकानदारों को समाज में उतनी श्रद्धा से नहीं देखते । जापान के कई

आचार और रीतियाँ कुछ कुछ हमारी ऐसी हैं । पैदा होने के सातवें दिन बच्चे का नामकरण होता है। एक महीने के बाद सिर मूँडकर नहला कर सँवार सिङ्गार कर बच्चे को उसकी माता स्थानीय मन्दिर में ले जाती और इष्ट-देवता की पूजा करती है । बच्चे को पाँच वर्ष की अवस्था तक दूध पीने देते हैं । बच्चे लड़कपन से ही पिता-माता के प्रति यथोचित भक्ति-श्रद्धा दिखलाना सीखते हैं । जैन आदि कई सम्प्रदायों की तरह श्वेत वस्त्र का व्यवहार जापानियों का शोक-चिह्न है । साम्राज्य के आईन के अनुसार मा-बाप के मरने पर सन्तानों को अवश्य शोक-चिह्न धारण करना पड़ता है । टोकियो के विश्वविद्यालय और युद्ध-शिल्प आदि अनेक विषयों के सौ से ऊपर स्कूलों के अलावा जुदी जुदी श्रेणियों के ३०,००० से अधिक स्कूलों में ८०,००० हज़ार के लगभग अध्यापक और अध्यापिकायें २५ लाख के लगभग छात्रों और १० लाख छात्रियों को पढ़ाती हैं । पहले-पहल ५०० के लगभग अध्यापक और कुछ अध्यापिकायें यूरोप और अमेरिका से मँगाई गई थीं । उनमें अमेरिकन आधे के लगभग थे । इस समय भी अनेक विदेशी अध्यापक और अध्यापिकायें हैं । इसके अलावा बहुत से छात्र शिल्प, विज्ञान, दर्शन आदि सीखने के लिए सरकारी खर्चे से यूरोप और अमेरिका में भेजे जाते हैं । राजनीति और शिक्षा से संबन्ध रखनेवाली अनेक बातों में विशेष रूप से जर्मनी, फ्रांस और अमेरिका का ढङ्ग पकड़ा जाता है। इस राज्य में छोटे-बड़े सब मिलाकर २० साधारण पुस्तकालय हैं । सन् १८९२ में २०,००० से अधिक पुस्तकें (इनमे ७,००० के ऊपर मौलिक ग्रन्थों के प्रथम संस्करण थे), ८०० संवादपत्रों की २४½ करोड़ के लगभग कापियाँ प्रकाशित हुई थीं । हाथीदाँत, चीनी मिट्टी के वर्तन, लाख



टोकियो का एक पुल—पृ० ७६८











सिङ्गापुर के बन्दरगाह—पृ० ७८६

(Lacquer,, मीना और कागज़ की कारीगरी के लिए जापान प्रसिद्ध है। जापानी लोग दरवाज़े के किवाड़ों से लेकर हाथ के रूमाल तक का काम कागज़ से ही निकालते हैं। जापान में अमरूद, सेव, चेरी, कौले आदि के फल-फूलवाले वृक्ष वहुत हैं।

जापान में विकृत वौद्धधर्म प्रचलित है। देव-देवी, भूत-प्रेत, दानव-दैत्य आदि का भी अभाव नहीं है। यहाँ के पहाड़ झील आदि प्राकृतिक दृश्यों के साथ एक न एक अद्भुत पौराणिक कहानी का संवन्ध है। मन्दिर आदि में, हमारे देश के जैनों का ऐसा ओघा (एक तरह की वुहारी) और आईना रक्खा रहता है। यहाँ के ये वौद्ध मांसभक्षण करते हैं। केवल घी-दूध आदि गोरस को नहीं छूते।

साधारण पहाड़ और ज्वालामुखियों के लिए जापान प्रसिद्ध है। ज्वालामुखी पहाड़ों में १०० से अधिक तो अव वुझ गये हैं। शेष २० पहाड़ों से इस समय भी धुआँ और आग में गली हुई धातुओं की धारा वाहर निकलती है। इन ज्वालामुखियों के उत्पात से वीच वीच में वहुत से प्राणियों और मकानों का विनाश हो जाता है। भूकम्प जापान की नित्य की घटना है। साल में ५०० वार के लगभग वहाँ भूकम्प होता है। पृथ्वी भर पर और कहीं भूकम्प की इतनी अधिकता नहीं देख पड़ती। सौभाग्य की वात यही है कि इस साधारण हालेडोले से उतनी हानि नहीं होती। महाविघ्न-रूप भारी भूकम्प वीस वरस में एक वार होता है। वहुत से ज्वालामुखी पहाड़ों और गर्म झरनों के होने के कारण यहाँ इतना अधिक भूकम्प हुआ करता है। भूकम्प के सम्वन्ध में हमारे यहाँ जैसे वहुत सी किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं वैसे ही जापान में भी। जापानियों का विश्वास है कि पृथ्वी एक वड़े भारी सो रहे मत्स्य

के ऊपर रक्खी है। वह मच्छ जब जग कर अपने पक्ष फटफटाता है तब भूकम्प होता है।

पहले कहा जा चुका है कि इतने थोड़े समय में इतनी बड़ी उन्नति करके जापान ने सारी पृथ्वी को विस्मित कर दिया है। मुझे देखने से यह तो नहीं मालूम पड़ा कि वे नैतिक भाव से उन्नत होकर एक भारी जाति बन गये हैं। ऐसा विश्वास नहीं होता कि पूर्वी जातियों के सब दोष उनसे दूर हो गये हैं। क्योंकि अभी तक निम्न श्रेणी के जापानियों में घोर कुसंस्कारग्रस्त और अन्धकार में पड़े हुए आदमी बहुतायत से पाये जाते हैं। हाँ, यह बात अवश्य स्वीकार करने योग्य है कि निम्नश्रेणी को उन्नत बनाने के लिए वहाँ विशेष यत्न किया जा रहा है और समय पाकर वे लोग अवश्य उन्नत हो जायँगे। किसी बोतल में कार्क लगा कर समुद्र में चिरकाल तक छोड़ रखिए तो भी उसमें एक बूँद पानी नहीं जायगा और साधारणतः मुँह खोल कर पानी में डाल दीजिए, थोड़ी ही देर में वह भर जायगी। सरल मन से किसी का मुँह न ताक कर सत्य को प्राप्त करने और उसका पालन कर दृढ़ प्रतिज्ञा करने से ही स्थायी उन्नति हस्तगत हो सकती है। प्रोफ़ेसर टिण्डल ने एक जगह पर कहा है—"The first condition of success as an honest receptivity and a willingness to abandon all preconceived notions, however cherished, if they be found to contradict the truth."—*Tyndall.* प्राण-प्रिय पूर्व संस्कार सत्य के विरोधी हों तो उसी घड़ी उन्हें छोड़ देना ही उचित है। उन्नति का प्रथम और प्रधान उपाय यही है। जापानी लोग इस सत्य को समझ कर इसी मार्ग में अग्रसर हुए हैं। उनके यहाँ किसी अन्य जाति से खुलकर हेलमेल

पैदा करने में कोई रुकावट नहीं है। वे अन्य जातियों के उत्कृष्ट ग्रन्थों का अपनी भाषा में अनुवाद करके 'सत्य'-संग्रह करते हुए उन ग्रन्थों के भावों को अपना लेने में ज़रा भी नहीं हिचकते। यही कारण है कि इतनी फुर्ती युगयुगान्तर का कूड़ा हटा कर उन्नति के मार्ग को उन्होंने साफ़ कर लिया है। एक देशदर्शिता और अकेले रहने का भाव सदा से सर्वनाश का कारण होता आया है। सभ्य जगत् के सब लोग इस समय हेलमेल करने के लिए बाध्य हैं; इसके सिवा और गति नहीं है। क्योंकि यह विधाता की इच्छा नहीं है कि मनुष्य मनुष्य में विद्वेष भाव रहे। परस्पर को न जानना न समझना ही विद्वेष का कारण है। अच्छी तरह जानने और समझने से विद्वेष कभी रह ही नहीं सकता। जापान में निम्नश्रेणी के लोगों को उच्च श्रेणी के पुरुषों के समान राजनैतिक अधिकार देकर सर्वसाधारण को उन्नति करने का अवकाश दिया गया है। सन् १८६७ के विप्लव के पहले की सब व्यवस्थायें बदल देने में जापान ने ज़रा भी देर नहीं की। सम्राट् को देवता (एक पुतले के समान जड़पिण्ड) बनाकर शोगुन लोगों ने सब अधिकार अपने हाथ में कर रक्खे थे। उन्नति-शील देशहितैषियों ने मिकाडो को उस अवस्था से निकाल कर राज्य का सब भार उनके ऊपर रख दिया। यूरोपियन प्रथा की शासन-प्रणाली स्थापित करने में किसी ने कोई आपत्ति नहीं की। इस समय दो विभागवाली नियमबद्ध पार्लियामेन्ट सभा के द्वारा सब राज-काज होता है। इस तरह हारीकारी*, अपराधी को

---

* पहले सब भले आदमी—ख़ास कर राजकर्मचारी—सदा दो तलवारें अपने पास रखते थे। एक तो किसी के द्वारा अपमानित होने पर उसे मारने के लिए और दूसरा प्राणदण्ड होने पर जल्लाद की तलवार पड़ने से पहले अपने मार लेने के लिए।

दोष स्वीकार कराने के लिए यातना देना * आदि निन्दित प्रथायें उठा दी गईं । जिन दोषों के कारण हम कुछ कर नहीं पाते वे दोष उनमें नहीं हैं । हमको भी इस समय अपनी उन्नति का ध्यान आया है और हमारा देश भी जापान की उन्नति देखकर उसे आदर्श मानने लगा है । अतएव मेरा निवेदन यही है कि "The world is ruled in the long run by fact and not by chimera." कार्लाइल के इस वाक्य को याद रखने से हमारे लिए अच्छा होगा। कार्लाइल ने और एक जगह लिखा है—"Him that is loyal to wisdom, wisdom *will* reward and him only." सच्चे ज्ञान के अनुसरण विना किसी प्रकार के सुफल की आशा नहीं की जा सकती । केवल कार्यहीन लम्बी चौड़ी सतेज वक्तृताओं से तो यही प्रकाशित होता है कि "दुर्बले सबला नाड़ी सा नाड़ी प्राणघातिका ।"

---

* पहले आईन था कि उत्तम प्रमाण रहते भी असामी जब तक आप अपना अपराध न कबूल करे तब तक उसे दण्ड न दिया जाय । इसी कारण विचार के बाद अनेक यंत्रणायें पहुँचा कर अपराध कबुलवाया जाने लगा था ।

चीन ।

हांगकांग । जापान से हांगकांग जाने के दिन सवेरे होटल से विदाई की भेंट करने के लिए अमेरिकन यात्री लोग जहाज़ के कप्तान, अफ़सर और मुझसे मिलने आये थे। उसके बाद फारमूसा-टापू के यात्री एक अँगरेज़ को और मुझको लेकर जहाज़ चीन देश की ओर चला। चार दिन में हांगकांग पहुँचे। वहाँ दूसरे जहाज़ के लिए तीन दिन ठहरना पड़ा। यहाँ का स्थानीय नाम है हियांग-कियाग अर्थात् मीठा सोता। चीन-साम्राज्य के अन्तर्गत कांगटंग प्रदेश के सम्मुखस्थ ३० वर्ग-मील का यह टापू और उपकूल की कुछ ज़मीन, सन् १८४२ में, अँगरेज़ों ने चीनियों से पाई थी। उस समय यहाँ कई एक घर बने थे और मछुओं तथा समुद्री डाकुओं के सिवा और कोई नहीं रहता था। सन् १८५१ में, आस्ट्रेलिया में, सोने की खान निकलने के बाद चीनी कुली यहाँ से आस्ट्रेलिया को जाने लगे। तभी से हांगकांग की उन्नति होने लगी। सारे उपनिवेश की जन-संख्या पौने चार लाख के लगभग है। इनमें गोरे ११,०००, फ़िरङ्गी और हिन्दुस्तानी ३,०००, स्थानीय और गोवा-प्रदेश के पोर्च्युगीज़ १,००० और बाक़ी चीनी हैं। राजधानी 'विक्टोरिया' में ही २½ लाख आदमी रहते हैं। बन्दरगाह की सेम्पिन-नौकाओं पर भी २५,००० के लगभग लोग रहते हैं। इन नौकाओं

पर रहनेवाले भाँझी लोग जन्म भर सपरिवार पानी पर ही रहते हैं। विक्टोरिया की सड़कें साफ़-सुथरी हैं। गैस और बिजली की रोशनी से नगर जगर-मगर हुआ करता है। रात को सामने समुद्र पर से नगर की शोभा बड़ी विचित्र—आरव्योपन्यास के अद्भुत दृश्य की तरह—देख पड़ती है। यहाँ नागरिक नियम के अनुसार (हैट-कोट-धारी जीवों के अतिरिक्त) नेटिव लोग आठ बजे के बाद बिना पास के घर के बाहर नहीं निकल सकते। इस नगर की छतों पर सुन्दर बाग़ ऐसे वृक्ष-लता-शोभित बड़े बड़े बरामदे शोभायमान हैं। नगर पहाड़ पर बसा हुआ है। अनेक जगह सीढ़ियों के समान ऊँची-नीची जगह पर तह की तह बाग़ों और मकानों की निराली ही शोभा देख पड़ती है। सवारियों मे सीडनचेयर (Sedan-chair) का ख़ूब चलन है। गाड़ियाँ बहुत कम हैं। समुद्र-तट पर भारी दीवार के द्वारा प्रधान सड़क सुरक्षित है। यहाँ कई एक सरकारी बाग़, गवर्नमेन्ट-हाउस, गिर्जा, बिशप का महल, टाउनहाल और म्यूज़ियम, ये प्रधान दृश्य हैं। शिक्षा के लिए गवर्नमेन्ट विशेष यत्न करती है। ११० सरकारी स्कूल हैं। १६ स्कूलों में केवल चीनी भाषा सिखलाई जाती है। ९,००० के लगभग यहाँ विद्यार्थी पढ़ते-लिखते हैं। इसके सिवा कई बेसरकारी स्कूल भी हैं। उनमे २,५०० विद्यार्थी पढ़ते हैं। विक्टोरिया में १० बैंक हैं। सात अख़बार भी यहाँ से निकलते हैं। उनमें पाँच अँगरेज़ी के (दो दैनिक, तीन साप्ताहिक आदि), एक चीनी भाषा का (एक दिन अन्तर देकर निकलता है) और एक पोर्च्युगीज़ भाषा का (साप्ताहिक) है। अधिकांश यूरोपियन राजधानी मे ही रहते हैं। आज-कल कुछ यूरोपियन उपकूल मे भी जाकर रहने लगे हैं। वहाँ पर भी सुन्दर सुन्दर महल, मकान वग़ैरह बनने लगे हैं।

यहाँ के बाज़ीगर प्रसिद्ध हैं। वे हमारे देश के बाज़ीगरों से बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं। इस टापू मे "आर्माडिलो" और स्थलकच्छप देखने को मिलते हैं। खाने की सामग्री यहाँ बहुत ही थोड़ी होती है: सब कुछ बाहर ही से आता है। राजधानी के जिस हिस्से मे चीनी रहते हैं वह उतना साफ़ नहीं है। सन्ध्या के समय हर एक घर के सामने घंटा बजाकर धूप-धूम के साथ आरती होती है। विक्टोरिया पहाड़ की चोटी १,८२५ फुट ऊँची है। चोटी पर चढ़ने के लिए 'फुनीक्यूलर'-रेल्वे है। कुछ दूर चढ कर बादलों के बीच से जब गाड़ी जाती है उस समय एक नये प्रकार की अभिज्ञता प्राप्त होती है। ऊपर कई एक उद्यान, विलासभवन और होटल हैं। हांगकांग ब्रिटिश-साम्राज्य में प्रधान और पासिफ़िक-सागर का एक श्रेष्ठ बन्दरगाह है। बहुत से जहाज़ यहाँ आते जाते हैं। १० वर्ग-मील तक बने हुए हार्वर बहुत ही सुरक्षित हैं। यहाँ के रुपये को डालर कहते हैं। इसका मूल्य ४ शिलिंग २ पेनी है। पैसे को सेन्ट कहते हैं। यहाँ भी दाशमिक प्रथा प्रचलित है। पासिफ़िक के किनारे के अन्यान्य स्थानों की तरह मेक्सिको डालर यहां भी चलता है। यहाँ एक गवर्नर है। उसको सालाना ३२,००० डालर की वृत्ति मिलती है। २५ लाख डालर के लगभग राजकर वसूल होता है। खर्च कभी कभी उतने से अधिक होता है। ऋण $3\frac{1}{2}$ लाख पौण्ड के लगभग है।

चीन की साधारण अवस्था। इस भारी राज्य की सच्ची ख़बर पाना बहुत ही कठिन है। तथापि यूरोपियन यात्रियों और राजनैतिक पुरुषों ने यथाशक्ति चेष्टा करके अनेक बातें प्रकाशित की हैं। इस साम्राज्य के १८ प्रदेश हैं। राज्य का घेरा ३५ लाख वर्ग-मील के लगभग है। जन-संख्या ४० करोड़ के लगभग है। उनमें

११ लाख ईसाई और ३ करोड़ मुसल्मान हैं। जो बन्दरगाह विदेशियों के लिए खुले हैं उनमें ४,००० के लगभग ब्रिटिश-प्रजा, १,००० से अधिक अमेरिकन, १,००० के लगभग जापानी, ७०० के लगभग जर्मन, ५०० फ्रेंच और ४०० स्पेनिश रहते हैं। सेना ७ लाख के लगभग है। उसमें ७,००० के लगभग उच्च पद के कर्मचारी हैं। सिपाहियों का वेतन पाँच से दस शिलिंग तक है। सवार लोग एक पौण्ड के लगभग पाते हैं। उसमें घोड़े की खुराक भी है। पैसे को कैश कहते हैं। २७ कैश की एक पेनी होती है। चाँदी के सिक्के कई तरह के हैं। दो एक यूरोपियन ढंग के भी हैं। हांगकांग बन्दरगाह में चीनी पैसा बहुत है। चाँदी का सिक्का भी थोड़ा बहुत है। एक प्रकार से साधारण शिक्षा का प्रचार अवश्य है; लेकिन अभी अधिकांश लोग निरक्षर ही हैं। गत युद्ध में हारने से चीन की आँखें कुछ खुली हैं। अब पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के ग्रन्थों का अनुवाद भी होने लगा है। युद्धविद्या के स्कूलों की ओर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाने लगा है। राज्य और धर्म दोनों का ही मालिक सम्राट् समझा जाता था। अब चीन मे प्रजा-पर-तन्त्र-शासन-प्रणाली प्रचलित है।

प्रणाली-उपनिवेश ।

(Straits Settlements.)

यात्रा । हांगकांग में तीन दिन रह कर चौथे दिन दोपहर को स्टीमर पर चढ़ कर, जहाज़ के कमरे में सामान रखकर यात्रा के झंझटों से निश्चिन्त होगया। भारतवर्ष की आबहवा में पहुँचने का आभास मुझे जहाज़ पर ही मिल गया। कमरा ठीक करके डेक के ऊपर टहलते टहलते कप्तान के कमरे की तरफ़ गया तो उन्होंने रंग से मुझे फिरंगी समझा और एकाएक दफ़्तर से बाहर आकर कड़े स्वर में मुझसे बोले — तुम क्या मुझसे मिलना चाहते हो ?

मैंने कहा—नहीं, इस समय मुझे आपसे कोई प्रयोजन नहीं है।

कप्तान—तब तुम यहाँ क्यों आये ? अपने दर्जे में जाओ।

मैं—क्यों ? मैं एक पहले दर्जे का यात्री हूँ Why? I am as good a first class passenger as anybody else.) ।

साथ ही पाकेट से टिकट निकाल कर दिखाया। अप्रतिभ होकर परिचय पूछने पर कप्तान ने जब जाना कि मैं यूरोप से आ रहा हूँ तब वह कुछ अपनी करतूत पर सकुच गये।

चीना डाकुओं के भय से स्टीमर पर अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र रक्खे हुए थे। जहाज़ के नौकर-चाकर सब चीनी थे। खाने के

समय पंखा खिँचने का प्रबन्ध था। कमरे पर गर्मी मालूम पड़ने के कारण बहुत रात गये तक वहीं बिताना पड़ता था। इस मार्ग में एक जल स्तम्भ (Waterspout) देख पड़ा। समुद्र झील की तरह बराबर शान्त ही रहा।

सिङ्गापुर। आठवें दिन तीसरे पहर विषुव रेखा के अत्यन्त निकटवर्त्ती स्थान सिङ्गापुर (इसका असल नाम सिंहपुर है। शायद हिन्दुओं का बसाया हुआ यह नगर है) के बन्दरगाह में जहाज़ पहुँचा। यहाँ सब भारत का रङ्ग-ढङ्ग है। २७ मील लम्बे और १४ मील चौड़े एक छोटे टापू के उपकूल पर स्थित कई एक छोटे पहाड़ों पर नगर बसा हुआ है। समुद्र के जल तक पहाड़ पर उज्ज्वल हरे रङ्ग की लतायें और वृक्ष शोभायमान हैं। हरियाली की ऐसी बहार और कहीं नहीं देखने को मिली। इस देश में सीलन बड़ी है और घने जङ्गल भी बहुत हैं। बेंत और बाँस के ही जङ्गल अधिक हैं। चारों ओर बड़े बड़े नारियल के बाग़ हैं। नगर में काकातुआ और "हीरामन" तोते आदि जानवर अनेक जगह बिकते देख पड़े। बन्दरगाह से दूर पर सुमात्रा बोर्नियो का उपकूल देख पड़ता है। राजधानी में एक लाख से अधिक मनुष्य रहते हैं (उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में सारे द्वीप में कुल १५० आदमी रहते थे।) उनमें अधिकांश मलय, मुसलमान, चीनी, मद्रासी, यूरोपियन हैं। फिरङ्गी भी बिलकुल कम नहीं हैं। हिन्दुओं के मन्दिरों, मुसलमानों की मसजिदों और चीनियों के जास-भवनों की संख्या बराबर ही होगी। समुद्र-तट पर मनोहर मकानात बने हुए हैं। उनमें सरकारी महल और कार्यालय आदि देखने योग्य हैं। देसी जलयानों के अलावा साल में १०,००० के लगभग जहाज़ इस बन्दरगाह में लङ्गर डालते हैं। प्रधान द्वीप के अन्तर्गत ७० छोटे छोटे साधारण टापू हैं।

सन् १८२४ में यह सम्पत्ति 'जोहोर' के सुलतान से १३,५०० पौंड की ख़रीदी गई थी। सुलतान को उसके लिए ५,४०० पौंड सालाना वृत्ति भी मिलती है।

पिनांग। यह नगर भी १५ मील लम्बे और ५ मील चौड़े एक टापू पर बसा हुआ है। यहाँ २½ लाख लगभग आदमी बसते हैं। उनमें नागरिक प्रजा एक लाख के लगभग है। पिनांग सब बातों में सिङ्गापुर के समान है। अदन की तरह यहा भी स्थानीय बालक और युवक जहाज़ के सामने के समुद्रजल में ग़ोता लगाकर दुअन्नी-चवन्नी तक निकाल लाते हैं। इस तरह जल में डूबे रहने पर भी इनके बीमारी नहीं होती, यही आश्चर्य की बात है। सिङ्गापुर में और यहाँ मैंगोस्टिन-नामक एक फल खाकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई। सन् १७८५ में कप्तान लाइट नामक एक अँगरेज़ ने उपकूलस्थ केदा-राज्य की राजकुमारी से ब्याह करके यह टापू दहेज़ में पाया था। तभी से यहाँ बस्ती हुई। पहले यह स्थान जन-शून्य था। उनके मरने के बाद सन् १८०० में अँगरेज़ों ने उपकूल पर की कुछ जगह राजा से ख़रीद कर धीरे धीरे उपनिवेश स्थापित कर लिया और समुद्री डाकुओं को शान्त करने के लिए एक क़िला भी बनवा दिया।

प्रणाली-उपनिवेश की साधारण अवस्था। हांगकांग प्रदेश की तरह यह भी एक ब्रिटिश-उपनिवेश है और वहीं का पैसा सिक्के आदि का भी चलन है। सिङ्गापुर में एक गवर्नर रहता है उसका वार्षिक वेतन ३३,८८० डालर है। वह कई टापुओं और मलय-उपद्वीप के कुछ अंश का शासक होता है। सब मिलाकर यहाँ का घेरा १,४७२ वर्ग-मील है। साल में ४० लाख डालर के लगभग राजकर वसूल होता है। खर्च उससे कुछ कम है। इसलिए ऋण बिलकुल नहीं

है। विलायती और स्थानीय आईन के द्वारा 'विचार' का कार्य होता है। इस देश में अनेक प्रकार के फल मिलते हैं। उनमें मैंगोस्टिन फल बहुत अच्छा होता है। अनानास और चकोतरे भी अच्छे होते हैं। एक प्रकार का कटहल की जाति का कटीला डुरियेन नामक फल यह होता है। उसे लोग खूब खाते हैं। उसमें प्याज़ की ऐसी तीव्र गन्ध आती है।

स्वदेश-दर्शन। पिनांग बन्दर में दो दिन जहाज़ ठहरा। वहाँ से रवाना होकर सात दिन में कलकत्ते पहुँच गया। बङ्गोपसागर में जहाज़ पर से केवल अंडमन-टापू देख पड़े थे। पहुँचने के दिन प्रातःकाल भोजन करने के समय एक स्काच भद्रपुरुष के साथ मैं बात-चीत कर रहा था। उसमें भी कप्तान की कुछ भद्रता देखने को मिली। सुनिए—

भद्रपुरुष—मिस्टर सेन, तुम अब देश में पहुँच कर शायद कई दिन तक अपना देसी भोजन विशेष आग्रह के साथ खाओगे।

मैं—देसी भोजन नये कैसे। यह मछली-भात ही तो हमारा ख़ास भोजन है।

कप्तान—नहीं—नहीं, उनके प्रश्न का मतलब यह है कि तुम अपने लोगों में जाकर वर्त्तमान सभ्यभाव से रहोगे या अपनी पुरानी असभ्य-अवस्था में लौट जाओगे?

कप्तान के यों कहने पर वह भद्रपुरुष बहुत ही अप्रतिभ होकर बारम्बार मुझसे क्षमा-प्रार्थना करते हुए कहने लगे—"मेरा अभिप्राय यह कभी न था। बहुत दिनों के बाद घर जाकर हम लोग जैसे पारिज़ (Porridge) आदि स्काच-भोजन को बड़े ही आग्रह और प्रसन्नता के साथ खाते हैं, इसी अभिप्राय से मैंने यह प्रश्न किया था।" यह भद्रपुरुष एक धर्मभीरु सच्चे ईसाई थे। जहाज़ पर सदा

परमेश्वर का नाम लिया करते थे। इसके लिए घोर स्वेच्छाचारी नास्तिक कप्तान उनको सुना सुना कर ईसा की निन्दा और ईश्वर की अवहेला किया करता था। डायमन्डहार्बर के बाद कप्तान के अनुकरण पर एक अति धृष्ट आस्ट्रेलियन युवक (Adventurer) भी जहाज़ के माँझियों को दिखाकर मुझसे कहने लगा—"इन लोगों में शायद तुम्हारे अनेक बाल्यबन्धु और सहपाठी होंगे।" इत्यादि।

जहाज़ से उतर कर बेलेव्यू-होटल मे कई दिन ठहरा। पहली रात को इतने दिनों के अभ्यासवश जो कुछ रेज़गारी और रुपये ऊपर थे उन्हें तकिये के नीचे रखकर सो गया। जिस होटल में ठहरा वहीं इस तरह रख लेता था, परन्तु कहीं एक पैसा भी नहीं गया। किन्तु यहाँ सवेरे उठकर देखा, रुपया पैसा सब नदारत! पृथ्वी के अन्य स्थानों के और भारत के नौकर चाकरों में इतना अन्तर है।



भू-प्रदक्षिण समाप्त हो गया। कलकत्ते से पश्चिम ओर यात्रा करके बराबर पश्चिम ओर चलकर फिर कलकत्ते मे आकर उपस्थित हो गया। पृथ्वी अण्डे के समान गोल न होती तो ऐसा होना असम्भव था। जो कुछ हो, कई शताब्दी पहले ऐसी परिक्रमा करना असम्भव था*। धन्य है यूरोपियनों की विद्या, बुद्धि, विज्ञान,

* एक पण्डित कहते थे कि शुकदेवजी ने एक बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा की थी। इसके प्रमाण मे पण्डितजी ने यह श्लोक सुनाया था—

"मेरोर्हरेर्वर्षं वर्षं हैमवतं ततः।
क्रमेणैव समागम्य भारतं वर्षमासदत्॥
स दृष्ट्वा विविधान् देशान् चीनहूणनिषेवितान्॥"

क्षमता और साहस कि उन्होंने इस कठिन काम को सहज बना दिया। भीरु कह कर बदनाम बङ्गाली भी यह काम कर सकते हैं। दोपहर के समय सेक्सटेन्ट (Sextant) के द्वारा समय-निरूपण तो सहज बात है, जहाज़ के माँझी लोग तूफ़ान में आन्दोलित अनन्त समुद्र के भीतर घोर अँधेरी रात को भी यह बतला सकते हैं कि जहाज़ किस समय कितनी डिग्री लाटीट्यूड (Latitude) लाङ्गीट्यूड (Longitude) पर है। सारा समुद्र इनके निकट ऐसा ही नख-दर्पण-सदृश हो रहा है।

